

प्रकाशक :

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद

राजसंस्करण

मूल्य ० रुपय

मुद्रक :

बीरगंजनाथ घोष,
नाया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

माननीय
श्री आचार्य युगल निशोर जी
प्रिन्सिपल
उत्तर प्रदेश
को
सदर और स्नेह
सम्पिंत

—माताप्रसाद गुप्त

प्रस्तावना

बड़े बपों से इच्छा थी कि मगन की 'मधुमास्ती' का एक संपादित संस्करण तैयार करें। किन्तु मैं जन्म हूँ 'पुष्पीराज रास' के संपादन तथा कुछ अन्य कार्यों में लग गया था। इसीलिए इस कार्य को मैं न कर सका था। इसी बीच डॉ. शिव मत्याल मिश्र ने रचना की एकछत्ता (जिला फतेहपुर) में प्राप्त एक प्रति के पाठ को परिष्कृतपूर्वक संपादित कर प्रकाशित किया। एक ही प्रति का होने तथा अन्य कुछ कारणों से भी रचना का यह पाठ सतोपजनक नहीं माना हुआ। इसीलिए मैंने फिर भी इस सुन्दर कृति के एक संपादित संस्करण की आवश्यकता समझी और समस्त प्राप्त प्रतियाँ की सहायता से यह कार्य ह्म पर अवकाश मिलने पर किया। कार्य को अधिक से अधिक पूर्ण बनाने के लिए कृति की आवश्यक वैचारिक और पाठ-विषयक भूमिका देने के अतिरिक्त मैंने अर्थ मुख्य भाषा की भाषा परक टिप्पणियाँ और अन्त में उनकी अनुसन्धी भी की हैं। आशा है कि यह प्रयास हिन्दी के मध्ययुग की एक सुंदर कृति के अनुमीलन में अपना दक्षिणित योग प्रदान कर सकेगा।

आमार-निवेदन अथ है। रामपुर की प्रति के पाठ का उपयोग करने के लिए वहाँ के जगन्नाथ साहब के पुस्तकालय के अधिकारियों का और अथ प्रतियों के उपयोग के लिए भारत बसा मगन गाराजमी के महाशय पंडित राम कृष्णदास जी का हृदय से कृतज्ञ हूँ। एकछत्ता की प्रति का पाठ डॉ. शिव मत्याल मिश्र के संपादन द्वारा मुझ में होने के कारण उसी का उपयोग मैंने इस कार्य में किया है। अतः मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। जोड़ ही समय में इस सुंदर रूप में रचना को प्रकाशित करने के लिए मित्र प्रकाशन प्राइवेट लि. इलाहाबाद और विजय रूप में उनकी गौरव प्रबन्धनाला ने सयोगक तथा उनके पुस्तक विभाग के अध्यक्ष श्री श्रीकृष्ण दास जी का आभारी हूँ। मगन की आवनी प्रस्तुत करने तथा अथ के लिए इस रचना की पाठलिपि तैयार करने में भरे शिष्य और 'मध्ययुगीन प्रभाव्यान्' के सम्पादकों का आभार अनाहुरपाठ्य में सरी महाभवा की है। इसके लिए मैं उन्हें हृदय से आभारार्पित करता हूँ।

प्रकाशकीय

मित्र प्रकाशन की 'गौरव ग्रंथमाला' प्रकाशित करने की नवीन योजना के अन्तर्गत प्रथम पुष्प व रूप में मजबूत हुए 'मधुमास्ती' पाठका की सेवा में प्रस्तुत है। डाक्टर माताप्रसाद जी गुप्त ने 'मधुमास्ती' के इस संस्करण में संपादित पाठ के साथ पाठान्तर वर्ष छद्मानुक्रमकी आदि का समावेश करके ग्रन्थ का अत्यन्त उपयोगी बना दिया है और उस प्रामाणिकता प्रदान कर दी है। विस्तृत वैचारिक एवं पाठ-विषयक सूचिका के कारण ग्रन्थ का समझन तथा समझा सूझान करने के सम्मक साधन भी प्राप्त हो गये हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी हुए 'पद्ममावत' की ही भाँति मजबूत हुए 'मधुमास्ती' का भी सर्वत्र आदर हुआ और सूफी साहित्य में अध्ययन-अनुमीलन में इस महान् ग्रन्थ में पूरी सहायता मिली-इसमें कोई सन्देह नहीं।

'मधुमास्ती' का यह राज सम्पन्न प्रकाशित कर हम अपने का गौरवामित्त अनुभव करते हैं। आशा है कि विज्ञ हिन्दी समाज द्वारा 'मधुमास्ती' का स्वागत होगा।

श्रीकृष्ण दास

अध्यक्ष

पुस्तक विभाग

विषय-सूची

	पृष्ठ
भूमिका :	
मनन का जीवन-मूल	१३
मनन की रक्षा	१६
मनन का जीवन-दर्शन	१८
मनन का प्रेम-दर्शन	२२
प्रतिष्ठा	२७
प्रतिष्ठा की त्रिपि-वर्णना	२८
प्रतिष्ठा का पाठ तर्क	३२
संपादन-सिद्धांत	४१
कथासार	४२
मधुमासवी :	
संपादित पाठ पाठोत्तर तथा ज्ञान	१
परिशिष्ट : प्रसिद्ध ग्रंथ	४८३
शब्दानुक्रमणी	४८९

भूमिका

मंसून का जीवन-वृत्त

मंसून ने जो कुछ आत्मात्मिक मधुमासनी' म किए हैं उन्हीं में हम उनका विषय म जानते हैं (हमें कोई अन्य मूख उनका जीवन-वृत्त-संबंधी तरफा व लिए प्राप्त नहीं है। व आत्मात्मिक रचना व प्रारम्भ म ज्ञात हैं। "नम म (१) छंद ? — १३ म उन्हाणे दाह-ग-वर्णन मसाम दाह मूर की प्रमसा की है (२) छंद १४—२१ म मुक्त दाह मुहम्मद गीब का मुक्तानुवाद लिया है (३) छंद २२—२३ में खिया की का गुणगाय किया है (४) छंद २४—३१ म ज्ञान विद्याम-स्वान कुमार का वयन किया है और (५) छंद ३ — ४३ म 'मधुमासनी' की रचना व विषय का उल्लेख किया है। नीचे इन वार्त्तों विषयों पर बर्त के द्वारा किए हुए कथना पर विचार किया जा रहा है।

(१) सलीम शाह मूर

(बर्त ने रचना का आरम्भ मसीम दाह क राज्य बाल्य म किया। यह मसीम दाह मूर का पुत्र का और १५ हिजरी (१५५५ ई) में दाहदाह क देशाल्य व जमरार मायक हुआ था।^१ उस वर्ष जैमा मसून न आग छंद ३ में कहा है मधुमासनी का प्रथम उन्हाण प्रारम्भ किया इसलिा उन्हाण दाह-ग-वर्णन मसीम दाह मूर की प्रमसा का है। मसून न लिगा है कि मसीम दाह का व्यक्तित्व मसा का हि काबुल तथा हिन्द का डार एक हुआ गया था उत्तर म हमयिरि (मुमर के पाम के एक पवत) म मकर दक्षिण म मधुबन तक उमरी आन थी पश्चिम म लम तथा साम लम उसकी आन बन मर के और पूर्व म मधुन-नट तक उसकी बुवाई हुआ गई थी

पञ्चा तप गम्भा जमलारा। काबिक हिन्द मएउ एक बारा।

उत्तर हेम गिरि लहि पर्वतामी। बकिन मतबय लहि आना।

पविष्ठ^२ मएउ लम माम लाई। पूरक जलनिधि तीर दाहाई। (११ १—३)

विष्णु मर विवरण अपन अत्युक्तिपुन आन हुआ है। मसीम दाह व मबब का शय उल्लेख उमरक पञ्चम श्याद-मरणा तथा उसकी बानमाकता का है का 'नी प्रकार अत्युक्तिपुन है। इस प्रकार बदा-बदा कर दाह-ग-वर्णन की प्रमसा करना जम मग म एसा आन होता है एक प्रकार की काय लडि-मी हा गर् थी। उमम लब्धमाकता का लम माह ही रहा नरगा था।

(२) शाख मुहम्मद गीब

दाह मुहम्मद गीब दाहागी मप्रवास म मुरा मग था। मसून ने इन्टर वल मग वल ने

मल बह जय बियि पियाग। (१४ १)

और लिगा है कि शिम पर वाह हूय म मरालूय हुआ मरग था उसका के गहज ही बयाकर गया बना रने व

जा कहे मया आउ मैउ कर्ही। मरग बाला पात्र मिर धरही। (१४ ३)

मुहम्मद गीब एक मल मात्र न था के अपन युग क एक प्रयावनारी राजनीति व्यक्ति भी था। बाबर की उन पर बरी मरुदा था और कहा गया है कि उनकी आज्ञा म ही बाबर ने हुमायूँ का छत्र लिया था

बापुनू साह बुलाए सिस। महा पीर पीरनि मत भेद्य।
हिरई साहि पीर नरि यमै। पुन दिनाए चारि आपनै।
बाबर साहि बुझियौ सोइ। इनम पातस्याह को होइ।

बटनि के नाम

हिमाळै मिरजा। कामगार मिरजा। आसूरी मिरजा। हिम्नाम मिरजा।
छेप इसारति कीनी ईस। मिरजा छत्र हिमाळै सीस।
मुनि री बाघ घरी पित माहि। अति सुख पायी बाबा साहि।
कुछ दिन बीते जागरे गए। बाग बहुत छह बरसन बये।
बीनी छत्र हिमाळै सीस। छह बरसन की छई जसीस।

(अध्याय कृत सोपावन आख्यान) १

मंसन ने उपर्युक्त उद्धरण में सम्भवतः इसी घटना की ओर संकेत किया है। हमारी पर उनका प्रभाव होता मत स्वाभाविक था। इसी कारण वे छरसाह मूर के कोप भाजन भी थे।

वे काफी दिना तक दुर्गम स्थानों में भ्रमण करते रहे थे। मंसन ने कहा है कि बारह वर्षों तक वे प बदरी नाम के ऐसे स्थान पर छिपे रहे जहाँ सूर्य और चन्द्रमा भी नहीं दिखाई पड़ते थे

बारह बरिस तहां पै बुदे। जहां सूर सति बिन्दि न परे।
बिन्दि बिराम और चयावन ठाळै। कलिजुग नु घबरी ओहि नाळै।
बहु दिनि परबत बिन्दिम जगमा। तहां न बेहू मानुस पमा।
तहां जाड ने जपड बिचाता। री अहार बम जामुनि पाता।
मन मंसन मारि बस किया। स्थान महारम अत्रि पिसा।

साहस उदित अपान साधि री कीन्हि सिद्धि अबराधि।

बारह बरिस रहे बन परबत लाए जो बहू समायि॥ (२१)

यह भ्रमणवास सम्भवतः उन्हे छरसाह का कोपभाजन बनने के कारण करना पड़ा था और छरसाह की मृत्यु के बाद ही १५२ हिजरी में उन्होंने कथावित् इस भ्रमणवास का स्थापन किया था इसकी ओर मंसन ने आगे संकेत दिया है

सन नी ली बावन जब गए। सनी पुरप बलि परिहरि गए।

तब हम निम लपकी अमिलाना। कथा एक बापठ रण माना॥ (१९ १२)

इस उद्धरण में आई हुई वाक्यावली 'सनी पुरप बलि परिहरि गए' स्पष्ट नहीं है। 'गायुदग' (< सत्पुर्णि < सत्पुष्प) वाक्य का प्रयोग कवि ने एक ली सलीम शाह के लिए किया है

त्रिनिमी पनि धुनगाहक हम भी चारि निषान।

परमुस मंसन सायुदग नरब गरिग मुबान॥ (१ १—७)

और दूसरे वाक्य मुहम्मद शीम के लिए किया है

बाबा भी मुनगाहक शीम मुहम्मद पीर।

बुत कुल मिरमल सायुदग मरब गरिग समीर॥ १५ १—७)

विशेष्य स्थल पर 'सनी पुरप' शब्द मुहम्मद शीम के लिए ही प्रयुक्त जाना जाता है। 'बलि' सम्भवतः उनसे उस भ्रमण-वास की वापसआव की ओर संकेत करता है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका

१ पैगिए डॉ इयाम मनाहर पाठय 'मंसन के पुर वाक्य मुहम्मद शीम' हिन्दुस्तानी
जुलाई-नवंबर १९५९, पृ ९।

है। संभवतः ९५२ हिजरी में धारणाह के देहान्त के अनंतर ही दाख मुहम्मद सीम की उक्त अज्ञात-नाम से भूमि मिल चुकी थी।

तत्कालीन इतिहास में दाख मुहम्मद सीम की हुमायूँ और उसके बाद अकबर का असाधारण हिमायती बताया गया है। और कहा गया है कि अकबर के मना-नायक का बुनारगढ़ पर अधिकार जिसान में इन्होंने बड़ी भारी सहायता की थी किन्तु अकबर के शासन-काल मपीछ इनकी उतनी आवश्यकता न हुई जितनी पहले होती थी इसलिए ये अकबर के दरबार में कुछ दिनों तक रहकर भी खासियर बने गए न। ९७ हिजरी में आपसे में इनका देहावसान हुआ था।^१

संज्ञन ने लिखा है कि उन्होंने दाख मुहम्मद का दर्शन करके लगायाम ही निद्रि प्राप्त की थी जम पारम के परमेश भीम होइ पाइ।

निद्रि में येख मुहम्मद देखि किनु साहय निद्रि पाइ॥ (११ ६—७)

संज्ञन ने अपने इन गुद सीम मुहम्मद की निद्रियों की प्रशंसा बहुत बिम्बार से की है बड़ी निद्रि क दाख की है, जो कि उनके लिए स्वाभाविक था।

(३) सिख खाँ

सिख खाँ भी उस युग का एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व है। संज्ञन ने लिखा है कि वह दाह (धारणाह बख्श मलीमसाह गूर) की दारिणी भुजा के मनुष्य था और अप समस्त गूर बाई भुजा के मनुष्य से दारिणि भुजा साहि के भारी। जहि निद्रि लड़ा साह बिनि पाई। (२२ ६)

बड़ अनी सब गूर सराही। बाँ भुजा रूप सब साही। (२१ ४)

इस सिख खाँ का नाम भी कहने से

महावीर जग ऊपर गौना। बाहू बाणि सुबानिक सोना। (२१ ५)

एसा आन होता है कि संज्ञन इन सिख खाँ के इपापान न। असमय नहीं कि अपनी रचना का संज्ञन ने उसे समर्पित भी किया है।

बान नरण बलि नहि मिल नुन गार्क समार।

मुनन मनु मित्र करी बठ कर गई करबार॥ (२१ ६—७)

(४) बुनारगढ़

रचना की भूमिका से संज्ञन ने एक 'अनूप गढ़' में बसने वाली बर्नाली नयरी का बयान किया है जो कि अपनी सुरक्षित स्थिति में लड़ा के समान थी। जो पूर्व में जरफी मपी तथा उत्तर और पश्चिम में मया म लाई के समान घिरी हुई है। नना ही नहीं। बकि न बनावा है कि गणा ग' के भीतर तक चली गई है।

गढ़ अनूप बनि नगनि बर्नाडी। बनिभुग भू भेजा भी पायी।

पुस्त दिमा जग्गी चिरि आई। उत्तर पछिम गय गड लाई।

देग बनी आइ नहि बही। गढ़ भीतर पंथा बनि बही।

साहि मरम जो लापाहि आई। जहि जारि मिर ठेगा लाई।

ऊपर छात्रा जनबन भीनी। ऐ' बही मुरमरि मरगायी।

नपर अनूप सोहाबनि भी गड बिगम अपम।

बरबन हाय न आई किनु जस पुख बरम॥ (१४)

इस 'चतुर्दशी' के संबंध में अनेक कल्पनाएँ की गई हैं। इसे म्यासिपर सब तक सिद्ध करने का दल निया गया है। निम्नु यह 'चरथादि' का अपभ्रंस है और इन समय बुनार के नाम से प्रसिद्ध है, इस तथ्य का डॉ० रामसमोहर पांडेय ने सुक्तिपूर्वक सिद्ध किया है।^१

(५) ग्रंथ और इसका रचना-काल

मंझन म लिखा है कि १५२ हि. य जय सती पुरप (मुहम्मद गीम ?) कलि (अष्टाव-कास ?) का परिश्राम कर [बुनार के निकटवर्ती सहन-पर्वत-वन प्रदेश से] भये गए उन (मंझन) के मन के कवा कहने की अभिलाषा उत्पन्न हुई

सन भी सै बाबल जब भए। सती पुरप कलि परिहरि गए।

तब हम बिष उपजी अभिलाषा। बचा एक बापड़ रम भासा। (३९, १-२)
इस रचना में कवि ने प्रसाद-गुण का प्रमुखता दी है और उसने कहा है कि इस गुण के मयादन के निमित्त उसने अन्य गुणों का परित्याग कर दिया है

मैं छायेन गुन कर परमादू। गुह कालहु जो बाद सबादू। (३९, ५)

इसी प्रकार उन्होंने कहा है कि जो ममस्त रमा से 'राजरम' (भुनार ?) है उसका वर्णन इन काव्य में किया है

रम अमेन सबसार कर सुनहु रमिक है नाम।

जो मम रस यह राजरम ना कर का बलान॥ (४३, ९-१०)

और उन्होंने इन प्रभाविकापी अलाङ्कार-पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है

मा मम वही सुरम रस बापी। गुह काल है पय अभिकापी। (३९, ४)

मंझन की कला

मंझन ने रचना के प्रारम्भ में कहा ईश्वर, उसके नवी बार लकीकाओं काहू-ए-बलत वीर और आश्रमराज का सुनयाम किया है उन्होंने बचन वा भी सुनयाम किया है। वे बचन का अमर मानते हुए कहते हैं कि उसकी उत्पत्ति परबरील मानव में नहीं हुई है उसका उत्पत्ति उन परमेश्वर से हुई है जो ममस्त प्राणियों में व्याप्त है यदि मानव से उसकी उत्पत्ति होती तो वह अमर नहीं हो सक्ता था

अचरिजु एक मारे बित अहूई। कोउ न अरब साहिबर कहई।

बचन केर उत्पत्ति मुह छेऊ। मानुग बोल अचर^० कहूँ बज^०।

रहै न बचन केर गति अहो। कैगै बचन अचर^० होई गग।

वेगह ममहि बिपारि के बचन बचन शिव साह।

बचन मम ॥ लाहुर जा बचन मम साह॥ (२४, १-७)

मंझन ने यचना दे कि आदि नृपति के भी पूर्व बचन में कवि मग म जाि मागार के रग में बचनार लिया और फिर वही बचन गमग म भये और पुने कहा म व्याप्त हुआ बचन के द्वारा ही वह विभुवन-भाव रचा भी अखण्ड में व्यक्त हुआ

प्रबसति आदि निशिटहु न पाग। हरि मग बचन गगह बीनार।

एकै बचन आदि उवाग। मल मर हाड बाग मयमार।

बचन के बाग जान मम मोई। बचन हुनें भा परमद मोई।

काहुं सुख्य न रेखा थी काहुं न जानेउं ठाई।

बचन हूँ मा परगट विभुवन नाथ सोमाइ ॥ (२५ २—७)

बचन को मंत्रन जगत् का अमृत्यु पदार्थ मानते हैं और कहते हैं कि उसका वर्णन नहीं हो सकता है क्योंकि न उसका काल रूप है और न उसकी काल रेखा है।

बचन अमात्र पदार्थन बचन न मर्त उगति।

बचन एम विभवा कर जान रूप न रेख ॥ (२६ १—७)

इस प्रकार बचन का मतलब दिव्य अवतार का मानते हैं। वे उसका एक पवित्र दाय क रूप में स्वीकार करते हैं जो असी रचना में जो उस पवित्र दाय का अद्वैता रूपन का यत्न करते हैं।

मनन इमस्मि एव मर्तकं बनि हूँ वे अमात्रयक बचन जो विभवा म बचन चाहते हैं और यदि जरा भी विचलित न बिनी प्रवार बच जाने हैं ता उन पर पड़तात हुए अविनय बर्ण विषय पर आ जात हैं। उदाहरणार्थ नाथक और नाथिका यो के प्रथम साक्षात्कार न अनन्तर निरा घट्ट हो जात हैं। यहाँ पर बनि निरा के युक्त-अवयुक्त का निरूपण करने लगता है (छंद ६६) और निरा की अनुमतिना को भिन्ना ब्रह्मात हुए बाधन अवस्था की अनुमतिना में उनका मुक्तता करता है (छंद ६७)। विन्दु गया ही उस स्मरण आता है कि यह विचलित हो रहा है वह पड़तात हुए अपन बर्ण विषय पर सम्प्राप्त आ जाता है।

हरि हरि कहा एउ बहु छेऊ। वा विन्दु कहै निम्न का बहेऊ।

बुद्ध बान कहि मँ कर्त्त। बीच नीरि मोहि हरि कै परी।

अर ही पलटि कहौ मुनु बाठा। अम बृन्दार मुख निरा माता। (६८ १—१)

पुनरावृत्तिना में वह बचन चाहता है। इमस्मि बिनी विषय का वर्णन यदि हा स्थला पर जाने बाधा है ता वह यत्न करता है कि एक हा कार आण। उदाहरणार्थ जब बचन की नाथिकाएँ अपन अपन माता-पिता में बिना भेदर अपन-अपन पतिना के साथ रहन के लिये उनका अनुमाना में जाती है उस समय माता-पिता में अलग हान न उनका बुद्ध का वर्णन न कर बनि आम स्वमुखात्मक के लिए प्रत्याग करने न प्रथम में उनका वर्णन करने का बचन देता है।

बचना में न बलात्ता समदल राजकुमारि।

दुकी बुद्धि जब अलिहति तब निउ बहू बिचारि ॥ (४६१ १—७)

बहु मार्गीयता की मर्त्यताओं का भी ध्यान रखता है। नाथिका का स्व-निर्णय-वर्णन करत हुए वह उसने गृहस्थाप का बचन इमस्मि नहीं करना चाहता है कि उस पुत्रता की लाज है।

गुहजन मात्र मर्ति मन मानतें। ती नहि भदन बंधार ब्रह्मात ॥ (१७ २)

और उनका कुछ जमा न बचन में स्वयं भी उनका मर्त्यता में अविभूत होन की बात वह स्वीकार करता है।

बेनि निउब बिहति विन लाया। परग विनि मनमथ मन जाया।

मुगुल अम बनि मन महारई। भरमेउ जीउ विउ कहा न जाई। (७ १—४)

विन्दु यह हान हुए भी वह स्वयं अपन पात्रों की अपेक्षाओं और बचन का ध्यान रखता है। उदाहरणार्थ उसने प्रमुखा नाथिका का आत्म-निर्णय-वर्णन किया उसने उसका लिए यह अनिवार्य हो गया कि वह उसका मातृगुण अपेक्षाओं हाव भावार्थ का वर्णन न कर सके। इस बचन का वह अनुभव करता है और पात्रों को विचलित दिव्यता है कि इस बचन की पुनि वह आम नाथिका न सम्पूना ब्रह्मात्मिक बचन कर करता।

मात्रन बरनि भिपति पछितावेउ। नम न जगाह मियाह ब्रह्मातेउ।

अब जगाह एम बाग बहाई। अब एम बचन मुनन रम पाई। (१९ १—७)

यह ध्यान देने योग्य है कि अपनी इन विशेषताओं में वह अपने समकालीन और सहचरों ज़ायसी से बहुत भिन्न है। ज़ायसी के लिए विषयान्तर भी प्रायः उतना ही महत्वपूर्ण है जितना प्रस्तुत विषय। उनकी रचना 'पञ्चमावत' ऐसे विषयान्तरों से भरी हुई है। ऐसे प्रसंगों में कभी-कभी तो वे स्वयं का सुन पकड़ कर एक सर्वथा भिन्न और अनसंख्य विषय भी पर चले जाते हैं। उदाहरणार्थ 'दिया = दिया हुआ' प्रदत्त का गुणगान करते हुए वे ज़ायसी साँस में दिया = दीपक की भी बात कह छ जाते हैं और तदनन्तर दोनों को किसी प्रकार पाड़ देते हैं।

मनि जीवन खी ताकर दिया। ऊँच जगत यह आकर दिया।
दिया सो सब अप तप उपरही। दिया बराबर षण किछु माही।
एक दिया सेहँ दस युग लाहा। दिया देखि बर भर मुख चाहा।
दिया सो काज बुहँ षण आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सो पावा।
दिया करे आगें जजिआरा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा।
दिया भौंकि मिथि करे अँजोरा। दिया नाहि बर मूसहि चोरा।
हातिम करम दिया खी सिखा। दिया जहा बरमहि यह सिखा।

निरमल पंख कीन्हु तिहु जिगहू रे दिया कछ हाथ।

किछ न कोउ लै जाइहि दिया जाइ वै साथ ॥ (१४५)

ज़ायसी पुनरावृत्तियाँ स भी पसरते नहीं हैं। नायिका जलमिग को बार बजित करते हैं एक बार रत्नसेन के समस्त दुमरी बार अमावसीन के समस्त उनकी रचना में फूसों फसा पाड़ा हाथिया पदिया खेकनार आदि क वर्णन बार-बार आते हैं। नायिका के अंगों का वर्णन करने में मंसून ने गुणजन की साज का जस्ता संकोच किया है। ज़ायसी ने ईसा संकोच नहीं किया है। ज़ायसी और मंसून अतः स्वभावतः एक दूसरे से बहुत भिन्न लगते हैं।

मंसून सब पुछिए ती उखुष्ट कथा-बार भर हैं। महाबाध्य-बार बनने का उगह तनिक भी मोह नहीं है। उनकी रचना केवल प्रेम-रसिक के लिए है। जो प्रेम के तत्त्वों के सरल निरूपण मात्र में रुचि रखता है उसके लिए मंसून की रचना एक परम उत्कृष्ट द्रव्य है। किन्तु जो गिरे बाध्य रसिक हैं उन्हें वह नहीं मनुष्ट कर सकती है। मंसून की कला विषय के उत्तरदायित्व पूर्ण निर्वाह सतर्कता सचता और मुखरि का परिचय देती है। उनका कव्य है प्रेम रस बाध्य रस नहीं और उसी की दृष्टि से हम मंसून की इस दृष्टि को देखना चाहिए, और यह कहना अनावश्यक होगा कि इस दृष्टि से देखने पर उनकी सफलता स्वतः बिलम्ब पड़ती है।

मंसून का जीवन-दर्शन

कुछ दिनों पूर्व जब कि मंसून का अध्ययन अपनी प्रारंभिक अवस्था में था और उनकी 'मधुमासरी' की गदित प्रतियाँ ही आकाशवाणी को देखने को मिली थीं। यह बिबाध वाली समय तक चलता रहा कि मंसून हिन्दू थे या मुसलमान। रचना के प्रारम्भ के अद्य भी यदि छाड़ दिया जाए तो गन्धमुख यह निश्चय करना कठिन हो जाएगा कि मंसून का धर्म क्या था। रचना में कथा-भाग में केवल एक पंक्ति लगी आती है—जिस पर किसी आलोचक का ध्यान भी जान की समावस्था कम ही हो सकती थी। बर्षा-वृष्टि पत्र-व्यवहार के एक सामान्य प्रसंग में आती है—जिसमें रचयिता का मुसलमान होने का स्पष्ट संकेत मिलता है। क्योंकि इमम एक हिन्दू पात्र में पत्र-विनय में ईश्वर के नहीं का उल्लेख कराया गया है।

प्रथमहि सवरी नाउं नोमाई। ओ भरिपुरि रक्षा सभ ठाई।

दूजें सेउ नाउं देखि केरा। उठरब पार लागि जेहिबरा। (४२६ १—२)

स्पष्ट ही उद्धृत बूधरी पंक्ति की विचार-धारा इस्लाम की है। किन्तु अन्यथा रचना के पूरे कथा भाग में ऐसे कोई संकेत नहीं मिलते हैं जिनसे स्पष्टक मुसलमान ज्ञात होता हो। पूरी कथा में हिन्दू वातावरण का निर्वाह किया गया है, यथा : सपरब हिन्दू मित्रों की दिखाई गई है

हम तुम्ह^०साथ बजा बह कीनी। रात्र बह्य हरि अंतर दीनी। (१२८ ५)

बधा कीन्ह बिधि अंतर राखी। रात्र बह्य हरि कहूँ ई साखी। (१३ ५)

आदिहि सपरब ओ हम तुम्ह^०किएऊ। रात्र बह्य हरि अंतर दिएऊ। (१३१ २)

सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल से बनी गई है

ब्रह्म मानुस कर आदि गरुडा। ब्रह्म ब्रह्मक बह् ब्रह्म कर बासा। (११५ १)

और प्रबंधकार के लिए यही उचित भी था क्योंकि उसकी रचना के समस्त पात्र हिन्दू थे। यही नहीं बल्कि रचय परमात्मा को 'ब्रह्म' कहता है :

पंडित मुनिजन ब्रह्म विचारी। (१४)

वचन की उत्पत्ति बह् हरि मुख से बताता है :

प्रथमहि आदि सिरि के पारा। हरि मुख बचन सीन्ह ओतारा। (२५ २)

उस आदि शब्द को बह् ओकार कहता है :

एकै बचन आदि उकारा। अछ मय होइ व्यापासर्वसारा। (२५ १)

बह् विधाता के द्वारा चार वेदा का निर्माण कहता है :

चारि वेद विषयै निरमएऊ। (२१ २)

ईश्वर-अन्धता में उसे बह् 'एकैकार' कहता है

प्रम प्रीति मुख निधि के बासा। दुइ जब^० एकैकार^० विधाता। (१ १)

बानु ठाउं बेरसै^० सभ ठाई। निरनून एक ओकार घोसाई। (२ ४)

और कथा भाग में बह् हरि-स्मरण करता है :

हरि हरि कहाँ गएउं बह् खेऊं। का किछ कहूँ सिद्धेउ^० का नहेऊ।

कुबर काउ बहिन पै सई। बीच नीर मोहि हरि सै पई। (६८ १—२)

इसलिए भंडन अवस्थ ही एक उदार मुसलमान कवि था।

ऊपर प्रथम उद्धृत अपवाद अतः किस प्रकार मुख्य कथा में आ गया यह विचारणीय है। अन्यत्र हम देखेंगे कि भंडन एक सतर्क और सघन लेखक थे। मुख्य कथा भाग में वे जानबूझ कर इस प्रकार का स्पष्ट इस्लामी कबल नहीं का सकते थे। अपने धार्मिक संस्कारों के कारण अवधीते ही वह इस प्रकार का बचन कर गए, ऐसा प्रतीत होता है।

जिसी भी अन्य मुसलमान लेखक में इतनी उदारता बदाचित् नहीं मिलती है। किन्तु वे के मुसलमान इसमें कोई गलतही नहीं है। उन्होंने रचना के आदि में ही ईश्वर-अन्धता के बाद मुहम्मद साहब की बन्दगी की है (छंद ७-८) और चार खमीफाओं को स्मरण किया है (छंद ९) और उपरंतर पाँच वरुण का गुच्छगान (छंद १-११) करके अपने युग के मुख्य मुहम्मद धीम का अत्यंत प्रशंसापूर्ण उल्लेख किया है (छंद १४-२१)। हिन्दू प्रतीका का प्रयोग उनकी उदार धार्मिक कृति का ही परिचायक है।

किन्तु मंगल का जीवन-दर्शन प्रेम-मूलक है। उनके विचारों का प्रासाद प्रेम की नींव पर बड़ा है। इसीलिए रचना के आदि में ही वहाँ उन्होंने ईश्वर चार स्रष्टीकाओं धाँहे-बनत पीर, मामयदाता और शब्द-ब्रह्मा का गुणगान किया है। उन्होंने प्रेम और तबन्तर प्रेम का स्पष्ट प्रतिपादन किया है। उनका कहना है कि प्रेम समागम म अमृत्य वस्तु है। विभाटा ने प्रेम [को व्यक्त करने] के लिए ही ससार को उत्पन्न किया और जमी प्रेम को ग्रहण कर वह स्वर्ण भी व्यक्त हुआ। प्रेम की ज्योति से ही सृष्टि में प्रकाश हुआ। इसलिए प्रेम का समस्त ससार में मही है। विरला ही कोई मामयदान इस प्रेम के सुहाग का प्राप्त करता है। जो इस प्रेम के यज्ञ में जीवन की साहुति बैठा है वही [वास्तविक] राजा है। इस प्रेम की हाट में क्रय-विक्रय करना ही जीवन की सबसे बड़ी उपयोगिता है।

प्रेम अमोक्षिक मग सबसारा। जहि बिजयम सो बनि औतारा।
प्रेम लागि ससार उपाबा। पम गहा बिधि परगट आबा।
पम जोति सभ सिस्टि अबोग। दोसर म पाब प्रेम क भोरा।
बिरला कोइ जाके छिर भागु। सो पाब यह पम सोहागु।
सबद जेन चारिहु जुग बाबा। पम पब मिर बेह सो राजा।
पम हाट चहु बिधि है पसरी नै बनिजौ ज कोइ।
काहा औ फल माहुक बनि डहुकाई कोइ ॥ (२८)

उनका कहना है कि ससार में जो कुछ भी इच्छित-गम्य है वह प्रेम से परे कुछ भी नहीं है। प्रेम ही जीवन की ज्योति है, वह मृत्यु के परे अमरत्व देने वाला है।

पम पदारथ जगल अमासा। मिठनै बिज जागहु यह बोला।
देखा मुना जहा लमि हाई। पम बिबजितु किछ नहि सोई।
पम दिया जाक पट बारा। तैहि नम आदि अत जबिबारा।
बिरह जीउ जहि क बट हाई। सदा अमर रहै मरै न साई। (२९ २-५)

मंसज हमी प्रेम से हम विषय ज्ञान की उत्पत्ति मानते हैं जिसमें आत्मानुभूति प्राप्त होती है और जो जीव का सृष्टि के समस्त इन्द्र से ऊपर न जाकर 'आदि जानब' की उपलब्धि कराता है।

जहि बिज परै पम कै रेला। जह देखै तह देख अदेला।
उपनि आब हिम जो पुनि म्याना। जह देखै तह आपु अपाना।
पुनि जो ज्ञान बिरिय पर बई। मरबस है बीमार नहि मेई।
बतहु भिस्टि यह रहै न बहू। जह देखहि तह आवि अनहू। (३१ १-४)

मंसज का कहना है कि यह प्रेम मीमंसे में नहीं प्राप्त होता है। यह तभी प्राप्त होता है जब कि हमारा ईश्वर दया-का हम किसी को प्रदान करता है।

कौनी पाठ परे माई पादब विरह बटि औ निधि।

जा बह दद दयाल दया बरि गापावे यह निधि ॥ (३२ १-७)

यहाँ तब तक कि एक मामाग्य मुमकमान गुरी ही बहे जा मगने हैं। प्रारम्भ में गुरी पर्यं का बिनाम बाहे प्रिम प्रसार हुआ हो। बाद में चम्बर उममें मन्नाम म भमारीना वर भिया बा जीव बह भारतीय अइतबार जिसके लिए मयूक मीमं गुरी मना को जीवन की बलि देनी पड़ी थी। गुरी पर्यं में बहुत-कुछ बहिष्कृत हो गया था। किन्तु मंसज मने अपमान विमर्श पड़ते हैं। वे जीव का ही इस सृष्टि का नेत्र-बिन्दु मानते हैं और कहते हैं सृष्टि का गुरु म यही बीपन है। मंसज के समस्त गुण-गुण इसी जीव का अनुभूत होते हैं जो कि देश में भिन्न है। वे कहते हैं

गुरु दीपक तेहि मिस्त्रि के घटा । बबहुं जीउ जमि जानसि देहा ।

हुन मुन मम मयमार कर जन माई तेन हाउ ।

मा मम परमि जाइ ताहि दोसर और नकाउ ॥ (३ ५-७)

ये कहते हैं कि 'तेरा ही मुन जिभुवन का ओग्यबस्य है। समस्त मृष्टि तेरा ही मुन क लिए बर्नम है, तेरी ही श्योनि म जिभुवन म प्रजाग विकीष हुआ है। समस्त मृष्टि म व्यक्त तु ही है। सब कुछ तु ही है। दूसरा कोई नहीं है। तू सबन व्याप्त है। तू ही सब-कुछ है। तू पूर्व है, और सर्वत्र तेरा ही कर्तृत्व-आत्मार है'

तैं जळ निबि सब निधि कर भरा । बाहे भरमि मरळ बम परा ।

तोर बन्न ठिरभुवन जगारा । मरळ मिस्त्रि मुन दरपन ताउ ।

तोरिय ओसि मरळ परवाया । मिर्नुसाऊ पाताळ अमाधा ।

मरळ मिस्त्रि सहू परगट तुही । भरबम गुरु शमर काड मही ।

जा कोइ ज्ञान साह पै जाबा । मा का जाइ जहि नहि किछु सोबा ।

कोन मा ठाउ जहा तैं नाही तीनि भुवन उबिमार ।

मिरगु बनु तैं मरबम पूरे सब ठा तार बबहार ॥ (३१)

एक समकमान होने के लिये यह कष्टन के लिए ममन म एव अमापारण साहम और निर्मीकता की वस्यता करनी पड़नी है। यह विचार-धारा उन युग के सामान्य सूक्तियाँ की पक्ति म निबाल कर ममन की एम सूकी संघों की काटि म ला बिगलनी है जो इन्धाम मे लगाव रखते हुए भी भारतीय सईतबाह के कुने हुए समर्पक थे। यह ममन की एक बड़ी निक्षपता है।

ममन भारतीय याग-माधना म भी बिदवान रखते थे। उन्हाम जीव का यह स्वल्प प्रतिपादित करने के अनंतर ही रचना के साहि म माय की क्रियाओं का उपप्रेम किया है। यद्यपि उन एक धीम स्वान ही प्रदान किया है जो नीच उद्बुन उचन विषय की प्रारम्भिक मध्यावनी म प्रवृत्त है। ये कहत हैं कि कर्म-योग म भी उन अवैधिक मुन का अनुमन किया जा सकता है। यदि प्राणामाम के द्वारा शरीर की बुद्धि की जाग और तदर्थतर अनाहन नाश की अनुमति की जाए। इसी अनाहन नाश म स्थित होन पर कैलाठ (मिथकोक) का मुग प्राप्त हुना है। किन्तु ममन का कहना है कि करोड़ म कोई बिरला ही ध्येति [इस प्रक्रिया मे] वह कैलास मुन भाग पाता है।

अब मुन करम बाग चिछ आई । मिरगुन रप बैमु ली लाई ।

तन मा उग्य लहि सहि स्वामी । अमिनि हीय कै ज्ञान बभाया ।

मरळ पवन अमिनि उदगरई । तौ मरळ बाया कर जगई ।

तौ रहि मरळ मात धुनि होई । जी सहि बन्ट गहें रघु नाई ।

भी तही बुनि मों बर बाया । ताही ओसि भीतर बबिमाना ।

कोटि माहि बिग्या जन बाई मायइ वह बबिनाम ।

मुग मरिष सह बाय जय जहा निबन्ट बसाय ॥ (३२)

परिचरि मुनि बुद्धि भी म्याना । क्या बबरजिग साबहि ध्याना ।

तौ ममाधि तौ लागै जहा । मापु अपान पावतु तहा ।

निगमन जहा मिगजन मूना । तहा मापु ली जापु बिग्या ।

ज्ञान पार जग्या ममाना । तहा मापु गउं जापु अपाना ।

सह्य ममाधि लग्य तैं तहा । मापु मंडं जापु पाउ मुनि जहा ।

सहज अन्तर्लक्ष्य साहसिक नियम मोड़ रहे मूर्ति।

जहाँ न तू भी काऊ भी एकी करतूति।। (१३)

✓ इस प्रकार हम संसार में प्रेम, ज्ञान और योग के तत्त्व स्पष्ट रूप से मिलते हैं। किन्तु ऊपर के उनके कथना को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो ज्ञात होगा कि संसार के अनुसार चरम स्थिति अद्वैतता की है जो ज्ञान का एक स्वाभाविक परिणाम है, और उस ज्ञान की प्राप्ति प्रेम की साधना सहोती है जो जीवन की एकमात्र स्वीकृत वस्तु है। कर्मयोग से भी उस अन्तर्लक्ष्य सुख की अनुभूति संभव है जो ज्ञान से सम्यक् है किन्तु कर्मयोग की यह साधना सब के लिए नहीं है क्योंकि में किसी-किसी को ही प्राप्य है। कहा जा सकता है कि वह जीवन-साधना जिसकी प्राप्ति सब के लिए समान रूप में सम्यक् है संसार के अनुसार प्रेम की है।

३. मन का प्रेम-दर्शन

संसार ने अपने प्रेम-दर्शन को बहुत स्पष्ट रूप से विवृत करने का यत्न किया है। मुझे स्मरण नहीं पड़ता है कि किसी भी अन्य हिन्दी सूफी कवि ने इतनी पूर्णता के साथ उसे प्रस्तुत करने का यत्न किया है। यह विवृति कथा नाम के कैलक में उस समय उपस्थित की है जब कथा-नायक मनोहर कथा की नामिका मधुमास्ती से पहली बार अप्सराभा की सहायता से शास्त्राचार-काम करता है। मधुमास्ती के प्रसन्न करने पर वह विस्तार के साथ वह इस प्रेम का इतिहास उसके सामने रखता है। वह कहता है कि उन दोनो का यह प्रेम चिरतन और धारण है—उसने उसकी प्रीति और उसने [बिरह जनित] दुःख का सबस घटी क्षण से है जिस क्षण से विवाहा ने उनके प्राणा की मूर्ति की वस्तुतः उसकी प्रीति के नीर से उसकी मूर्तिका (घड़ी निर्माण क तत्त्वा) को साध कर ही उसके शरीर को रचना हुई है।

फहै कुबेर सुनु पम पिमारी। तौहि माहि प्रीति पुन बिधि सारी।
एहि जग जीव न माहि तौहि काबा। मैं जिउ है तोर दुख बसाहा।
मैं न जानु तारे दुख गुनारी। तारे दुख सँ माहि जाहि बिहारी।
जहि दिन घिरेउ काम बिधि भोग। तैहि दिन मोहि बरमेउ दुग तोरा।
बर नामिनि ताहि प्रीति के नीर। मोहि माटी भा छानि लोकर।

पुन दिन सँ जानहुं गुनारी प्रीति के नीर।

मोहि माटी बिधि मानि कै तौ वह भिरेउ शरीर॥ (११३)

संसार के अनुसार मादि भग (शरीर) में जब प्राण भी नहीं आया था तभी प्रेमिका के बिरह दुःख का दर्शन बिनामा ने प्रेमी का कण दिया था। इसी कारण यह बिग्न दुःख प्रेमी ने लिए उनके प्राणा से भी अधिक शिव है और उस दुःख पर वह जाने गहवों सुनी का वाग्य के लिए प्रयत्न करता है। उसके लिए उस दुःख के एक क्षण में जो आनंद है वह अनुभूति में भी उस प्राण नहीं है।

मैं नम तजि नरनेउ दुग तोरा। मोर जिउ तार तार जिउ मोरा।
पान जाहि पण हान न आया। बिधि तार दुग मोहि तब दगाया।
जो र बिदग्धि नही मैं तोही। तार दुग अधिन देव बिधि माही।
मैं एहि दुग पर बनिहारी। मग्न मुग्न लहि दुग पर सारी।
कोन जीवि पानी दुग बापा। दुग के नम नम निधि न राजा।

एक निमित्त दुख कहुँ नाहिं पूरै आरिहु जुग क मयाह ।

कौन कौन गुन बरमब तेहि दुख के परमाह ॥ (११४)

उसके अनुसार इस बिछड़-दुख ने मनुष्य का मूर्छित क आदि ही म अपना घाम बनाया था जीव ने उनी समय से अपने को जीव करके जाना जिस दिन वह दुख मूर्छित म समाया इसलिये उस दुख पर प्रती बनो जगत्—“होके और परलोके”—के समस्त सुखा को त्यागकर करने को तयार रहता है, यथाकि यही दुख वह जगत् है जिसने उसे अमरत्व प्रदान किया है प्रेमिका के इसी बिछड़-दुख ने कारण प्रती का समार में अगम ग्रहण करना सफल होता है

दुख मानुस कर आदि गरासा । ब्रह्म कबल महु दुख कर बासा ।

जहि दिन तेहि दुख सिस्ति समासा । तेहि दिन तें जित कै जित जाना ।

माहि न आयु उपजत दुख तोरा । तोर दुख आदि मयानी मोरा ।

अब सै बहौं दुख क काँवरि । दुइ जग देउ सुख मरछावरि ।

मैं अपना है तोर दुख सिमा । मरि कै अब मो अमृत पिया ।

तोर दुख मयुमाकति मुनबाएक संसार ।

पहि जिय माहि तोर दुख उपजा बनि मो जग बीनार ॥ (११५)

मंसन के अनुसार प्रेम इसी दुख पर मरब होकर उसका मापी बना वह मनुष्य क जग म इसीसिम्ह आया कि उसने दुख का निवास था

मुनिउ आहि दिन मिमि उपार्ह । प्रीति परेबा बिहेत उडार्ह ।

दीनिउ लोके हूँ डि कै आवा । आयु जाय बहु ठार न पावा ।

तब छिरि मोहि बट पैसैठ आई । रहेउ सोमाइ न मएउ उडार्ह ।

प्रीति मुनन तब पूछी बावा । कहुगुई कम मानुस बट रावा ।

कहेमि दुख मानुस कर आवा । जहाँ दुख तहँ मोर वेवावा ।

ओहि ठाँ दुख होइ अब भीतर प्रीति होइ अब ताहि ।

प्रीति बाध ना जानै अपुरा पहि सरीर दुख नाहि ॥ (११६)

मंसन कहते हैं कि इस प्रेम का रहस्य यह है कि प्रती और प्रेमिका आदि में एक मात्र ही जाने हैं इतना ही नहीं वे बलुन एक होने हैं और तबमगर दिया हा जाने हैं जैसे एक ही जल न दो मिट्टियाँ मानी गई हो अबका एक ही जल दो प्रवासियों में बहने लगा हो अबका एक ही बीरक दो बच्चा में प्रवास दो लगा हो अबका एक ही जीव दो शरीरों में संश्रित हुआ हो अबका एक ही अग्नि दो प्याना पर जला दी गई हो अबका एक ही जलन के दो द्वार निमित्त दिए गए हो

तैं मैं दुबो तब नच बागी । भी मंतन एक बहु मयामी ।

भी मैं नुई बुद एक मरीरा । बुद मंगे मानी एक मीरा ।

एक बारी बुद बहै मयामी । एक दिया बुद घर जियारी ।

एक जीव बुद बट संचार । एक अग्नि दु ठाएँ बारा ।

एकै हम बुद कै बीनारे । एक महिन बुद किए कुनारे ।

एकै जोनि अप पुनि एकै एन परान एक बह ।

आनुहि आयु जा रद नाइ नाहै तहि करकौन नदेह ॥ (११७)

ममन प्रसी और प्रेमिका को एक दूसरे से सर्वदा अविच्छेद्य बताते हैं
 तै जो समुद्र सहस्रि मैं तोरी। तै रवि मैं बप किरनि बंभारी।
 माहि आपुहि जनि जानु निरास। मैं सरीर तुह प्राण पियारा।
 मोहि तोहि को पारै बेमरार्द। एक जाति तुह भाउ देनार्द।
 मन गियान बसु देख्यो हरी। हम तुम्ह दृढ़ परिषे कब केरी।
 अजह मोहिम भीन्हेनि बारी। मगरि वसु बिल आदि किन्हारी।

अवसा कब वस कर अह जो पुहु जिय केर।

होम आपु यह परिषे मई नर घर जित केरि॥ (११८)

कमल ममन का कहना है जब प्रेमी को प्रेमिका का साक्षात्कार हो जाता है ममन मृष्टि उसे उगी से व्याप्य बिलती है। जब प्रेमिका का रूप उसके लिए रूप मात्र नहीं उस परम रूप का चिन्म हो जाता है जो समस्त सृष्टि में व्याप्य है उस प्रेमिका के रूप के साध्यन से वह उस दिव्य रूप का साक्षात्कार करता है जो उचित और शिव है जो विभुवन का महा जीव है जो नानात्म में अपना विधान करते विभुवन में व्याप्य हुआ है और उसका भोग कर रहा है

अब कहि विनु जिय जीवन लाग। आपु देखि तोहि जीउ समारा।
 देखत यिन पहिबाला सोही। इह रूप बई छबरा मोठी।
 इह रूप तब अहेउ छपामा। इह रूप अब मिलिउ मनाना।
 इह रूप मजली ओ जीऊ। इह रूप विभुवन कर जीऊ।
 इह रूप परगट बहू भेला। इह रूप अब राक नरेमा।

इह रूप विभुवन जग बेरम मदि पवास आयाम।

साइ रूप परगट में देला तुब माध परपाम॥ (११९)

ममन के अनुसार प्रसी को फिर वह प्रमिता का रूप ही अपने भीतर रूप मात्र की ममता का दर्शन कराता है

इह रूप परगट बहू रपा। इह रूप बहू माउ बनूपा।
 इह रूप तब नैलक जोली। इह रूप गध गापर मानी।
 इह रूप मज कुलग्ग बावा। इह रूप रम भवर बरामा।
 इह रूप सहिहर ओ मूरा। इह रूप जग बुरि बनूरा।
 इह रूप अल आदि निजाना। इह रूप परि घर मो बिलाला।

इह रूप अब घर ओ सहिहर माउ अनेप देगाउ।

आपु गवाँ वा रे काँ रेनी गो विनु केरी पाउ॥ (१२०)

कहना नहीं होया कि जन-योग का इतना विराट् निरूपक हिन्दी श्रुति साहित्य में अम्यन नहीं मिलता है।

मुमन-ममन ने मे ममन का यह प्रेम-योग मुमन ही प्रतीत हुआ किन्तु बन्धुन यह आपन दुर्गम है क्योंकि ममन प्रतीति दुर्गम का माध देने पर ही गमन हुआ है। ऊपर के उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि प्रारम्भ में ही गया माध माधिया म करता है

मैं जिउ है तान दुग्न बेनागा। (११३ २)

जीवन का मित्र म ममन पुत्रात् दुर्गम माध केना हैनी-ममन नहीं है। उमता और ममिता का प्रथम पक्षिम मी दुर्गम म प्रारम्भ हुआ है

मैं न आबु तार दुल्ह बुलारी। तारे दुल सेठ माहि खादि भिन्हारी। (११३ ३)

मोहि न आबु उपजउ दुल तारा। तार दुल खादि सचाली मोरा। (११५ ३)

बम्बुत उमके प्राणा का जिस दिन बिबाठा न निर्माण किया था उमी दिन उस उस प्रमिता के बिछाह का दुल भी बिगारि पड़ा था

जेहि दिन गिरेउ खास बिधि मोरा। तहि दिन मोहि बरमेउ दुल तोरा। (११३ ४)

प्राण खादि घट होन न माबा। बिधि तोर दुल मोहि तब बरमाबा। (११४ २)

मह दुल त्याग कर उसने प्रमिता के इस बिरह-दुःख का सबकन किया अपन जीव को उसे दे डाला तथा उमी क जीव को अपना समझने लगा

मैं मय तजि संकरेउ दुल तोरा। मार बिउ तोर तोर बिउ मारा। (११४ १)

उसम इसी दुल का जीवन का परम पुरपार्थ मान लिया और इस पर उसने अपने समस्त सुखों को बार दिया

मैं एहि दुल केर बहिहारी। महम मुक्य एहि दुल पर बारी। (११४ ४)

इस दुल में ही वह समस्त संभव सुखा का आम्बादन करन लगा

एक निमित्त दुल कह नहि पूरै चारिहु जुय न मबाव। (११४ ६)

वह जब दुल की यही कीबरी बहन करने लगा और बाना जगल क सुखा का उस पर स्वीकार कर दिया

जब लै बही दुल क काबरि। दुइ जग बेउ मुक्य नेउछाबरि। (११५ ४)

और यह सब वह बकन क बाद भी नायक कहता है कि उसम अपन-आप का दख प्रमिता का दुल उसक विनिमय में छिया है पहले कह मरा है तब उस अमृत-पान करन का मिसा है

मैं अपना बै तोर दुल मिसा। मरि की बर मा अमृत पिया। (११५ ५)

यह प्रमाण मयमुख मजन क अनुसार मरण क बिना नही प्राप्त होता है यही इस प्रम-मापना की सबसे बड़ी दुगमता है।

कथा की समाप्ति करते हुए श्री लालक ने एक मान यही मन्देश दुहराया है। वह कहता है कि इन जगत न अमरत्व लाभ करन का एकमात्र उपाय है प्रेम म मरना। मरे हुए का मृत्यु नहीं मारती है इसलिए प्रेम में या मरण का अनुभव कर लेता है उग बाल भी नहीं मार मरता है एक बार प्रेम का यह साधक मर कर जीवन प्राप्त करता है सो काम उसक निश्चय भी नहीं जाना है इसलिए यदि कोई होना जगल में बाल के मय में उबरना चाहता है तो उस प्रेम की धारण म माना चाहिए

अमर न होन जोइ जग हारै। मरि जा मरै तेहि मायु न मारै।

पम की आधि मही जई माबा। मो जग जनिम नाम मउ बाबा।

पम मरनि जइ आपु उबाग। मा म मरै बाहू क मारा।

एक बार जो मरि बिउ पावै। नाम बहरि [तेहि] निमर न भावै।

मिरिनु क [छम] जनिम हाइ बया। मिहूँ अबर ताहि कै बया।

जो बिउ जानहि पास भी पम मरग बरि नेम।

फोरे बुहु जग बाल भी मरन नाम जग पम॥ (५२८)

मधुमाखरी का मारी कहानी इसी प्रकार मर कर अमर होन की कहानी है। अम्बराना की हया का प्रथम मातापिता होने क बाद ही मुष्ताकम्हा में नायक नायिका ने अमर कर दिया जाना है और वह मरण क चप्पा का अनुभव करना है। पमा क प्रयत्ना म उस नायिका स पुनर्मिथन का सीमाय प्राप्त (घ)

होता है किन्तु नायिका की माता दोनों को सुप्तावस्था में पुनः अलग कर देती है और वह पुनः मरण के कष्ट का अनुभव करता है। उसका तीसरी बार का ही नायिका से मिलन उसकी जन्म-जन्मांतर की आकांक्षा को पूर्ण करता है और उनका स्थायी मिलन प्रमाणित होता है। ठीक यही दृष्टा नायिका की भी हुई है। दूसरे साक्षात्कार जबवा पुनर्मिलन के अनंतर तो म केवल उसे मरण की वह याचना मायनी पड़ी है जो नायक को भी मायनी पड़ी है। उसको पक्षि-योगि में भी अवतरित होना पड़ा है जिससे मुनि स्नान करने के अनंतर ही वह इस योग्य हो सकी है कि अपने प्रेमी से मिलन का साध उठा सके। निस्संदेह नायिका की स्थिति कवि ने अधिक दृढनीय चित्रित की है और उसने अपने काव्य में बारहमासे की भी जो कल्पना की है, वह उसके इसी पक्षि-रूप में अवतरित होने पर की है।

यह है प्रेम की साधना का मरण-मार्ग। जायसी भी इसी मरण-मार्ग का उपदेश अपने प्रम-काव्य 'पद्मावत' में करते हैं। वे दोनों कवि दो विभिन्न सूफी संप्रदायों के थे। और मसन कहन को जायसी के परवर्ती थे किन्तु उस युग में जो इतिवृत्त के बीच पाँच वर्षों का अन्तर एक प्रकार से कुछ नहीं था जब कि यातायात तथा कृतियाँ के प्रकाशन के साधन नितांत अविकसित थे। इसलिये दोनों की प्रेम-साधनाओं में मरण-मार्ग की वह समान अनिवार्यता एक प्रकार से उत्कांक्षीन समस्त सूफी प्रेम-साधना में उसकी अनिवार्य स्थिति की बार मकेस करती है। अभी तक वह जायसी की ही प्रेम-साधना की विशिष्टता ज्ञात होती थी किन्तु मसन की रचना में तत्कालीन सूफी धर्म में उसकी व्यापक प्रतिष्ठा को प्रमाणित कर दिया।

इस प्रेम-साधना में एक ही बात ऐसी है जो प्रायः पाठकों को परकर में डाल देती है वह है इस प्रेम की शारीरिकता यह प्रेम जहाँ एक ओर आध्यात्मिक है, वहाँ दूसरी ओर मांसल भी है। जायसी ने इस शारीरिकता को केवल मायन और नायिका के विवाह के अनंतर मुलनामा में दिलाया है मसन उसे इनके पूर्व भी दोनों के बानो बार के मिलन में चित्रित करते हैं मधुमालती के समय जब म अष्टराएँ जब मनोहर को पहुँचाती हैं तो वे दोनों आत्मिक सुखनादि का सुख-स्नान करते हैं और जब वेमा उन्हें अपनी चित्रमार्गी में मिलाती है तो भी आत्मिक सुखनादि की ममरत फलाई प्रताप में जाती है विवाह के अनंतर जब वे मिलते हैं तब ता इन सब की अनिवार्यता स्वयं निरूपित है। अन्तर यही है कि विवाह के पूर्व के दोनों बार के मिलन में मुरत रम का आस्वादन के वायव्यपूर्ण नहीं करते हैं और उन्हे के विवाह के अनंतर ही मिलते हैं। जायसी में विवाह के पूर्व मायन-नायिका का मिलन बसल मिश्र-मिश्र में होता है और वह भी शक्तिहीन है। उसमें दृग शारीरिक अनिवार के लिए अवसर नहीं है। विवाह के अनंतर मुरत रम का पूर्ण परिपाक उनमें भी हुआ है। प्रश्न यह है कि इस शारीरिकता का उपर्युक्त आध्यात्मिकता से क्या संबंध है। मेरी समझ में दूसरा उत्तर यही है कि मन मना में जीवन को एक समग्र रूप में देना है। उनका जीवन-मर्त्य शारीरिक आवश्यकताओं की उल्लास नहीं करना है यह अवश्य है कि वह शारीरिक आवश्यकताओं को मर्यादित रखने का उपदेश करता है। इस शारीरिकता के अभाव में पुरुष और स्त्री की प्रेम-रस्यता मिथ्या होती इसलिये सूफी गायिका की यह मर्यादित शारीरिकता उनकी आध्यात्मिक प्रेम-साधना का एक ऐसा अंग है जो उनकी दृष्टि में उन्हे स्वयं में बाधक नहीं होता है। भारतीय मायनाओं में प्रायः शारीरिकता का संपूर्ण निषेध मिलता है क्योंकि भारतीय पाठक प्रायः इन प्रेम-काव्यों में इन प्रकार की शारीरिकता को देखकर यह लौकिक प्रेम वास्तव मात्र समझ बैठता है अथवा बहुधा उनका मन पड़ जाता है कि यह दाँट शारीरिक प्रेम का वाक्य माने या लौकिक प्रेम का। किन्तु इन प्रकार के पूर्वबहनें मसन द्वारा दत्ते पर ही हम समझें इन सूफी मना की प्रेम-साधना का मर्म ठीक-ठीक ग्रहण कर पाएँ।

प्रतिर्या

मंजन की 'मनुमास्ती' की बबल बार प्रतिर्या प्राप्त हैं और प्रस्तुत नाम में उन चारा का उपयोग किया गया है। ये प्रतिर्या इन प्रकार हैं

(१) यह प्रति रामपुर से वहाँ के नवाब साहब के पुस्तकालय में है। इसमें बबल प्रारम्भ का एक पत्र नहीं है जिसके कारण रचना का प्रथम छत्र नहीं रह गया है। प्रति सुरक्षित है। जिस दिनों 'मनुमास्ती' की एकदस्ता की प्रति मयाचार-मया में बिजलत हुई थी मरे एक एम ए के छात्र श्री बिद्याराम 'बमल' ने मुसल कहा कि रामपुर में उसकी जो प्रति नवाब साहब के पुस्तकालय में है उसकी प्रतिकृति यदि मैं उपयोगिता समझूँ वह कर ले सारत है। मैंने कहा यह अच्छा ही होगा और तत्तुनार कुछ छुट्टियों में उन्हीं वहाँ जा-आकर प्रतिकृति कर लानी और वह मुझ छाकर दे बी। यह प्रतिकृति उन्होंने फ़ारसी लिपि में ही की थी क्योंकि मूल प्रति भी फ़ारसी लिपि में है। दो वर्ष हुए जब मैंने रचना का सुपावन प्राप्ति किया। उक्त पुस्तकालय के लाइब्ररियन को प्रति को कुछ दिनों के लिए मेज़न के लिए लिखा और उनके पास का प्रस्तुत सम्स्करण के लिए उपयोग करने की अनुमति पाही तो प्रति को भजन में उन्होंने अनमर्षना प्रष्ट की किन्तु वहाँ बाकर उस मिसाल और उसका पाठ का प्रस्तुत सम्स्करण के लिए उपयोग करने की अनुमति प्रदान की। इसके लिए मैं उन पुस्तकालय के अधिकारियों का आभारी हूँ। समयाभाव में मैं रामपुर बाहर प्रति का उपयोग नहीं कर सका और भी बिद्याराम 'बमल' की प्रतिकृति का ही उपयोग इन सम्स्करण के लिए कर रहा। अतः मैं इस प्रतिकृति के लिए श्री बिद्याराम 'बमल' एम ए० का आभारी हूँ।

इसकी पुष्टिवा इस प्रकार है

मस्बा मयमासत तस्नीक प्रतिक्रि मंजन कतारीक पागम सज्जक बबलत घाम रात्र मंह दाब
बर मुक़र्रम बिमाक़न बकबराबाब बर हबेबी लमी दर मरहूम हमगाइ नवाब हुसैन अमी ली
बर बहद बादशाह मुहम्मद गाह ठाबी बयान फ़काह आमी आदिमुक़मुक़ फ़कीर उक् मस्ताह
बज्रमुहम्मद नबिरन मिया बन्तुल रहमान मस्लिमह मुनबतिल उम्ब बबो सराय तमान
पु० ११९२ हिबते।

इसकी एक अन्य प्रतिकृति भारत क्या भजन हिन्दू विश्वविद्यालय बारापानी में और एक माइना-ग्रिप्स कोरी शैवगत आर्काइव्स नई दिल्ली में है।

भा यह प्रति भाग्य कलाभजन बारापानी में है। यह प्रति भी फ़ारसी लिपि में लिखित है। यह बाबार में ९ × ७" का सममय होगी। यह प्रति आदि मध्य और जल में नुटित है, जिसके भाग्य प्रस्तुत सम्स्करण के छत्र १—३५ ४१—३८, १ ७—११ ५४८ तथा ५३ इसमें नहीं है। यह बहुत ही माधवानी से लिखा हुआ है और फ़ारसी के लिपि-विम्हा का प्रयोग हममें की पूर्णता के साथ किया गया है।

भा यह प्रति भी उपयुक्त भारत क्या भजन में है। यह अत्यधिक नुटित है। यह मायोदास की लिखी हुई है और प्रायः प्रतिया में कदाचित् मयमे प्राचीन है। यह बादि में प्रस्तुत सम्स्करण के छत्र ८९ तर जोर कि उसका बा प्रस्तुत सम्स्करण के छत्र ३४३ में ८०० तक नुटित है। जिस समय मैं इस प्रति के पाठ का मिलान करन गया यह प्रति नहीं मिल सका। इसका स १९९९ में सावधानी से

(४७) २ १७८ २, १८३ ३ १८९ १ १९८ ४ २५४ ५, २५५ ३ २५७ ६
 २६४ ३ २६५ १ २९१ ४ २९२ ७ २९७ ६ ३ ६ ७ ३ ८ १ ३२१ ५
 ३४२ १ ३५४ २, ३५४ ३ ३५४ ४ ३५४ ५ ३५४ ६ ३५४ ७ ३६५ ४
 ३७१ १ ३७७ ६, ५११ ४ ५११ ५ ५११ ६ ५१३ ३ ५१३ ४ ५२ ५)
 मेंड़>मेड़ (१२ १) हुहार>हुहार (१२ १) अक़ाई>अक़ाई (१३४ १)
 अक़ाई>अक़ाई (१७९ ५) अक़ावा>अक़ावा (१८ ३) मोड़ह>मोड़ह
 (१९६ १) बड़>बड़ (२१६ ५) काड़>साड़ (२२८ २) उक़ावति>उक़ावति
 (२५८ १) ओक़म>ओक़म (२७३ ५) ओड़ि>आड़ि (२७४ १) मक़ाइय>
 मक़ाइय (३९९ ४) ।

(६) 'ह' के भी बिना बिन्दु के मिले होने से उसे 'ह' समझने के कारण बड़ावा>बड़ावा
 (४८ ५) कूड़ि>कूड़ि (५५ १) बड़ाई>बड़ाई (११३ १) बड़ावहि>
 बड़ावहि (११३ ४) बाडा>बाडा (२१ ५) काड़ा>माडा (२१ ५)
 डाडम>डाडम (२४८ १) काड>काड (४२२ ३) काडि>बाड (५१५ ४)
 ठाड>ठाड (५१५ ५) ।

(७) 'न' को 'र' पढ़ने के कारण हुनेउ>हरेउ (२८९ ४) अंतरन>अंतर (४८४ १) ।

(८) 'ब' और 'व' के एक समान मिले होने से 'ब' को 'व' पढ़ लेने के कारण अमबन>
 अमबन (२ ७ ३४ ५) बारा>बारा (११ १) सबाई>सबाई (५४ ४
 ७३ ४ २३१ १ २३२ १ २३६ ४ २८७ ४ २८९ ५ ४२५ ५ ४३१ ७)
 बार>बार (१४६ १) बिबि>बिबि (२२१ ६) बर>बर (४७९ १) ।

(९) 'म' को 'स' पढ़ने के कारण मग>सग>सग>संघ (२२९ ३) मुग=मुग
 (४२८ ३) ।

(१०) 'ब' और 'व' के एक समान मिले होने से 'ब' को 'व' पढ़ने के कारण कबलावठ
 >कबलावठ (१५३ ७) अबधि>अवधि (३७८ १) नव<नव (४१ १)
 निबारे>निबारे (४११ ४) ।

(११) व्यंजन डित्त नुचक बिन्दु को 'मू' पढ़ने के कारण मवरम्भुज>मवरम्भुज>मवरम्भुज
 (३३४ १) ।

(१२) पुनरावृत्ति-नुचक २ को न समझ कर छोड़ देने के कारण बडि२>बडि (२ ५ ३) ।

ए०

ए प्रति सामग्री में मिलित है किंतु इनमें फारसी लिपि में गवशिन या बिट्टियों की भरमार है मवा

(१) अवार' वा बिाह न जाने में अनुमान में उसे 'अवार' या 'उवार' समझने के कारण
 आन>आन (२१५ ७) बोन>बोन (२६ १) बुमार>बुमार (३१५ ६)
 बार>बार (३१५ ७) मगरह>मुनिनिह (३३९ ६) बुअर>बुअर (४५ १
 ५३४ ७) महमहा>महमहा (४ ९ ७) ।

(२) उर वा बिाह न लभ जाने में या उन पर ध्यान न आने कारण नाभि>नाभ (८ १)
 अरि>अर (९ ४) अमि>अम (९१ ६) मिग>मरा (११३ ७)

राधि>राध (१३३ ७) छादि>छाड (१५१ ३) बधि>बंध (१५१ ९)
 सिधि निधि>सिध निध (१७४ १) मिरह>मरह (३१९ ३) बधि>बध
 (३२९ ४) हुति>हीत (३५९ २) बाहि>बाह (३६९ ५) बीम्हति>
 बीम्ह (३८४ १) राउरि>राउर (५३४ २)।

- (३) 'पेम' का चिह्न न लगने होनेसे या उस पर ध्यान न आने के कारण एकोकारि>
 एककारी (१ १) हरिगुन>हरिगन (४३६ ५)।
- (४) 'बे' को 'प' पढ़ने के कारण भएउ>पठौ (११ ३) वस>पसु (२८८ २)
- (५) 'ऐ' और 'ऐ' के एक से मिलने जाने से 'ऐ' को 'उ' पढ़ने के कारण करबट>करबठ
 (१८७ ४) ठहराना>बहराना (२६२ २)।
- (६) 'उ' और 'ऐ' के एक समान मिल होने से अथवा उ के ऊपर लग हुए चिह्न पर
 ध्यान न आने के कारण बड़>बर (२६ १)।
- (७) 'बाक' को 'माक' समझने के कारण बाके>जाग (२८ ४) बुटिसा>पुटिसा
 (९२ २) बोक>बोके (१ १ १)।
- (८) 'माक' को 'काक' समझने के कारण अगनित>एकत (८१ ३) गाड>नाड
 (४ २ २) ग>क (५ ३ १)।
- () 'उ' सूचक 'बाब' को 'ओ' सूचक समझने के कारण महु>मोहि (२४ ४)
 हुवे>होवे (८१ १) हुति>होत (३५६ २) हुत>होत (५३२ २ ५३२ ३
 ५३६ ३)।
- (१) 'ओ' सूचक 'बाब' को 'उ' सूचक समझने के कारण वीराए>बुरावे (४ १)।
- (११) 'नू' को 'दे' पढ़ने के कारण जनि>जे (२७ १) जनि>ज (१५८ ५)।
- (१२) बीब के 'है' को न पढ़ने के कारण गहबर हिय>गहबरी (२१८ २)।
- (१३) 'हे' को पूर्ववर्ती बर्ण से मिलाकर पढ़ने के कारण पहिराएधि>फिराएधि (४५२ ३)।
- (१४) बठ के 'है' को न पढ़ने के कारण महि>म (२९ ३ १४६ ३ २३७ ५ २४५ २)।
- (१५) 'बि' को अलग पढ़ने के स्थान पर पूर्ववर्ती बर्ण से मिलाकर पढ़ने के कारण भोगइ>
 भोगी (३२ १) भय>भई (८८ ४) भिय>भै (११८ २) बरिये>बरी
 (४३६ ४) हिय>है (४९४ १) मेरई>मरै (४९९ १)।
- (१६) 'बे' को 'ई' के स्थान पर 'ए' अथवा 'ऐ' के रूप में पढ़ने के कारण बिछी>बिछे
 (७६ ४) घडी>गडे (९१ १) बरिबारी>बरिबारे (३ २) बही>बहै
 (१५२ १) बरी>बरे (२२१ २) परिहरी>परिहरे (२२१ २) पीह>पह
 (२७२ ५) बरबानी>बरबाने (३६२ ७) हूती>हुते (४७२ १) बही>बहै
 (५७ ४)।
- (१७) 'बे' को 'ए' के स्थान पर 'ए' समझने के कारण भ>भै (८४ २)।
- (१८) 'बे' का 'ए' या 'ऐ' के स्थान पर 'ई' पढ़ने के कारण बगाने>बगानी (८७ ३)
 गाने>गानी (८७ ३) बीबी>बीबी (८८ १) मेक>मीक (८८ २)
 परै>परी (१४५ ३) बमकी>बमकी (२२९ ५) परिहरे>परिहरी (२३ ६)
 भाए>भाई (२७७ ५) मुहाए>मुहाई (२७७ ५) धाए>धाई (२८५ १)

भाए > भाई (२८५ १) साजे > साजी (२८६ २) बाजे > बाजी (२८६ २)
 तोरे > तारी (२९२ ४) मोरे > मारी (२९२ ४) रहे > रही (३५७ ५) साए
 > साह (३५० ३) मपुरे > मपुरी (४८९ ७)।

उपपुनर्ग ने अतिरिक्त कुछ उदाहरण यद्यपि कम ही ऐसे भी मिलते हैं जिनमें दोनों लिपियों में संबंधित विट्तिमा एक गांव मिलती हैं और प्रारम्भ के पूर्व भी नावरी लिपि से संबंधित विट्तिमा हुईं जात हानी हैं यथा

अमहन > अनहन (ना) > अनहन (फा) > अननी (१६) आनति > आनती
 (मा) > आनमी (फा) > आनती (१४९ ७) मरि > मरी (ना) > मरी
 (फा) > मरी (३१ ६)।

इनमें से अंतिम स्वतंत्र की विट्तिमा में भी हैं। आज हम देखते हैं कि मा तथा ए में पाठ-विट्ति संबंध भी है इसलिए इस प्रकार का विट्ति-माध्य स्थापक है।

एक बात और। प्रति की लिपि से निम्न लिपि से संबंधित विट्तिमा इस प्रकार ऊपर के विवेचन से प्रकट हुआ सब से कम मा में हैं। मा में उसकी अपनी लिपि फारसी से संबंधित विट्तिमा भी समस्त प्रतिया की तुलना में कम है। इसलिए मा अत्यंत सतक पाठ-परंपरा की प्रति प्रभावित होती है। मा के बाद मा का स्थान इस विषय में आता है। किन्तु हम देख चुके हैं कि मा का नेत्रक ए-विट्ति प्राप्त हुआ है जिससे उपपुनर्ग प्रकार की विट्तिमा की संख्या इसकी कम न समझनी चाहिए जिसकी ऊपर है। फिर भी यद्यपि प्रतिया की अपेक्षा कम ही होनी चाहिए। अतः मा प्रति की भी पाठ-परंपरा काफी सतक ज्ञान होती है। यह प्रति भी बहुत प्राचीन है इसलिए अचमक नहीं कि मूल के निश्चय ज्ञान के कारण ही हम प्रकार की विट्तिमा जमा अधिक नहीं। उपपुनर्ग के बाद रा आती है। रा का कोई पूर्वज नावरी में था और काफी अभाववादी संलिखा हुआ था उपपुनर्ग से यह प्रभावित है। ए का स्थान उनके भी बाद आता है। उसका कोई पूर्वज फारसी लिपि में था जो बहुत अभाववादी में लिखा हुआ था। यह उपपुनर्ग विवेचन से स्पष्ट जात होता है।

प्रतियों का पाठ-संबंध

नीचे प्रतिया की उन निश्चित पाठ विट्तिमा पर मध्यम में विचार दिया जा रहा है जो एक से अधिक प्रतिया में समान रूप से पाई जाती हैं और छान्तर इस विट्ति-माध्य के आधार पर उक्त प्रतिया के परस्पर विट्ति-संबंध और मूल में उनके समान पाठ-गद्य की स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

(१) मा० मा० ए०

(१) १ ३ ५ स्थिति पाठ है

मरग बाह 'जैम कुट्ट पगारा'।

मरग कुट्ट जैम जैम बगहारा।

'जैम कुट्ट पगारा' में स्थान पर मा में बनी 'जैम पगारा' या मा 'जैम जैम पगारा' और ए में 'जैम जैम पगारा' है। जैम व्यवहार यह और गुमुबिनी का ही कोट-प्रति है यह और भी है।

(२) ३५५ स्वीकृत पाठ है

मानहि^३ वात ऊपरि रं जावै ।

संघी सेठ जोरी नहि फायै ।

‘मानहि’ के स्थान पर मा ए में ‘मानिहि’ और मा म ‘मान’ है। किन्तु ‘मानिहि’ और ‘मान’ सर्वथा असंगत हैं। प्रसंग से ‘मानहि’ (कर्म ही से) ही सित होता है, यद्यपि यह पाठ खेप प्रति रा में भी नहीं आता है और इसके स्थान पर उसमें पाठ ‘मूठी’ आता है जो स्पष्ट ही प्रसिद्ध है।

(३) ३२४४ स्वीकृत पाठ है

भोर दुख मोहि पूछति कहा ।

आपुहि पूछु बिहे बस कहा ।

‘बिहे बस कहा’ के स्थान पर मा मा में किये बहु कहा’ और ए में किये जो कहा’ है। पूर्ववर्ती चरण का ‘कहा’ के स्थान पर इनमें भी ‘काहा’ है जिससे मा मा ए के पाठ में तुक की पुनर्वक्ति है।

(४) ४५७४ स्वीकृत पाठ है

‘सीस’ बरौ मोहि पाव सपाई ।

‘सीस’ के स्थान पर सा में ‘सैन’ (सैन) तथा मा ए में ‘सैन’ है। इन पाठों की निरर्थकता स्वतः प्रकट है।

(५) ४६५ स्वीकृत पाठ है

इहा कुबौ तुम्ह नैन न्हा मोली ।

‘उहा’ नैन छीपनि यह मोली ।

द्वितीय चरण का पाठ इनमें है मा मा उहा नैन छीपन्ह गज मोली ।

ए उहा नैन छीप गज मोली ।

सीतों में ‘गज मोली’ नहीं होते के गज-अस्तित्व में होते हैं। इसलिये मा मा ए का पाठ स्पष्ट ही चिह्नित है।

(६) ४८७ ६—७ स्वीकृत पाठ है

राजकुमारि तुम्हारी बचा बहिनि है मोरि ।

कहिय सी ‘ताराचंद’ कहूँ बहूँ पाठि बहूँ जोरि ॥

मा मा में ‘ताराचंद’ कहूँ के स्थान पर ‘ताराचंद सेठ’ तथा ए में ‘ताराचंद नी’ है। ताराचंद से पाठ परमा की जोड़ी जाने को भी इसलिये ‘बहुँ पाठि जोरि’ और परमा ताराचंद को दी जाने को भी इसलिये ‘ताराचंद’ कहूँ राजकुमारि तुम्हारी—[जो] बचा बहिनि है मोरि—‘बहुँ’ की सार्वकला प्रमापित है। ‘ताराचंद’ कहूँ पाठि बहूँ जोरि’ का आशय होगा ‘ताराचंद से सेना की गान जोड़ूँ’ जो कि प्रसंग में अप्रसिद्ध नहीं है।

(७) ४८९ ९—७ स्वीकृत पाठ है

‘नगर जो’ जोय राय जो रायें पंच मंडित जेबनार ।

एक एक जन जायें गहन सग्न परचार ॥

मा मा ए में 'मयर जो' के स्थान पर 'बीयन' (बायन—मा) है। राजा ने नगर भर को आपबिध किया था।

मर घर नगर बधावा बाबा।

पुर पट्टम मेबते मय राजा।

इसलिए नगर-निवासियों को भोजन कराने की भी बात बड़ी जानी चाहिए, और वह यही जानी है। 'बीयन' पाठ अत्य प्रसिद्ध लगता है जो ब्राह्मणों का उल्लेख भोज के प्रसंग में न देकर किया गया लगता है।

(२) मा० ए०

(१) १३३ स्वीकृत पाठ है

औ मनुष्य बुद्ध बनी बसाई।

बाम बुद्धे केरि बसाई।

राय बुद्ध के स्थान पर मा म है काम बनीन (< कमान) से और ए मे है काम कमान से। मा ए की पाठ-विवृति स्पष्ट है बमान का नाम बन्नुजा का निर्माण करता नहीं है।

(२) १२७ ४ लडा ५ का स्वीकृत पाठ है

४ निमित्त लावि जो बापुहि नांवा।

तानहु 'नरक' माहिं था बाबा।

५ पाप पव च ४ यह लत राजा।

गगन' समी कल तेद पै बाना।

मा लडा ए म ड। १२७ २७ ४ छं १२६ की ४ है। इस अर्द्धांती के स्थान पर मा ए म है

निमित्त लावि पापी ना होई।

कै कै पाप निरनर मोई।

स्वीकृत पाठ में मा ए पाठ की यह अर्द्धांती १२६ की ४ है।

१२७ ४ लडा ५ के स्वीकृत पाठ में लरक तथा लरक का जो वाच्यत्व है वह उनके वास्तविक होने का समर्थन करता है। मा ए के आधार पर यदि स्वीकृत १२७ ४ स्वीकृत छं १२६ में जानी जाती है तो १२७ के कथन यहाँ का वाच्यत्व सम्भाव्य हो जाता है और १२६ में वह जगती लपट भी मिल जाती है।

(३) १७७ ४ स्वीकृत पाठ है

मन अवल्य बाहुं मयूड बिचारी।

बोहिन परेड भंडर मयू भाई।

मा ल में अर्द्धांती के दूसरे लक्षण का पाठ है

मा बोहिन परेड महर के भारी।

ए बोहिन परा मरि उ भारी।

हिन्दू लट' का वर्णन गुरुशि अर्द्धांती में मा पूरा है

मयूड लहरि दमयौड बिचारी।

निना भुजान बोहिन बछर्या।

और इस अर्द्धांती का पाठ मा ए म भी प्राप्त उदाहरण है।

(४) १८१ ९—७ स्वीकृत पाठ है

सुमर्षती और नागरि मममोहिनि धर्मसार।

बनि सिटिस्टि जेइ सिरजी बनि बनि भूतनि हारि॥

भा ए में 'भूतनिहारि' के स्थान पर पाठ 'मिरजनहार' है। चरण ७ के पूर्वांश में 'बनि सिटिस्टि जेइ मिरजी' का ही बुका है, इसलिये 'सिरजनहार' पाठ में स्पष्ट पुनरुक्ति होप है।

(५) १९१ ५ स्वीकृत पाठ है

'जोवन सो' किछु जानि न जाई।

भा में 'जोवन सो किछु' के स्थान पर 'जोवन सेउ' और ए में 'अब सीतुल' है दोनों में 'किछु' या उसके स्थान पर अन्य कोई भी मायाओं का अर्थ नहीं आता है, जिससे छन्द-दोष है।

(६) २२७ १—७ स्वीकृत पाठ है

सम पाछिउ सुख पेसहि कुंवर मुनावा रोइ।

किन्हु न 'जाई' जाना जानें बिधि का किजा का होइ॥

भा ए में 'जाई' शब्द नहीं है। प्रथम म आत होना है कि सातवें चरण तक कुमार का कथन चलता है जिसमें वह भविष्य के बारे में कहता है कि 'जाने बिधि का किज क्या होया यह कुछ भी नहीं जाना जाता है। किन्तु चरण की मायारों २१ से बढ़ाकर २४ करने के विचार से 'जाई' निकाल दिया गया समता है जिसमें भाव्य का अर्थ पूरा नहीं निकलता है।

(७) २४८ १ स्वीकृत पाठ है

डाइस के माटी जोइपवा।

उन पुनि निहुरि सीत मुइ लावा'।

'मुइ लावा' के स्थान पर भा ए में 'कर लावा' है। 'कर लावा' निरर्थक है, यह प्रकट है।

(८) २६१ ४ स्वीकृत पाठ है

'लाडे भये (?) बी फुंठ कटाटी।

कुंवर लीन्ह सब अब समायी।

भा. ए में अर्द्धांश के प्रथम चरण के स्थान पर है

भा एहि अंतर जाय न जाय।

ए एहि अंत जो भी मुइ जाय।

कहाँ भय समने का कोई प्रसंग नहीं है कुमार रासवत म युद्ध के लिए सज्ज हो रहा है, और जाने ही कहा जाता है

५ निमग्ग जीत बिरह कर भूना।

तेहि पर गोरख भेम अबभूना।

'निमग्ग' का अर्थ रचना मर में प्रायः 'निर्भय' है जो यहाँ पर भी है, यथा

१८४ ९ नीमल माजें बाभा निमग्ग तेउ सुख मोव।

१ ३ ९ निमग्ग बिता वकेसी बन मइ रहिनि निर्मक।

इसलिये भा ए का पाठ सयन नहीं है। समता है कि फ़ाग्वी में लिखे हुए उक्त चरण चरण के पाठ को ठीक ठीक न पढ़ सकने और इसलिये निरर्थक समझने के कारण भा ए के बिभी पूर्वज में यह पाठ-परिवर्तन किया गया।

(९) ३५३ ४ स्वीकृत पाठ है

यह कारिल कीं बहु 'छोई'।

कारिल जान होइ ली छोई।

भा ए में छोई के स्थान पर भी छोई है जिससे पुनर्बन्धित-पूर्व सुक-सोप आ जाता है।

(१) ३५७ २ स्वीकृत पाठ है

हरे पक्ष पय' अक्ष सुठोरा।

भा ए में 'पय' लक्ष नहीं है जिससे छव-जोप प्रकट है।

(११) ३८३ ९ स्वीकृत पाठ है

'जीन बचन सुनि कामिनि' कुवरहि कहीव हंकारि।

भा ए में वरम का पूर्वाह्न है

ए जीना बचन सब सुनि

भा जीना बचन सब कामिनि सुनि

'बचन' और 'सब' दोनों समानार्थी हैं इसलिए भा ए पाठ पुनर्बन्धित से दूषित है।

(१२) ३८७ ३

प्रामिषत अति कुल निरमला।

सोमबन जस 'पुनिव' कला।

भा में 'पुनिव' के स्थान पर 'सुख' तथा ए में 'सुख' की है। कुमार के व्यक्तित्व का वर्णन हा रहा है जो सोमवनी का। अतः 'सोमवनी' में 'पुनिव' (पुनिव) कला' ही पाठ सतत होना सुख बना अथवा सुख की कला' नहीं।

(१३) ४ ८ ५ स्वीकृत पाठ है

'औ सुंदार रितु परम जहाहा।

तफ्ती जयन मांह रितु जहाहा।

भा ए में पहले वाक्य के स्थान पर है

भा और जयन पर परम जहाहा।

ए औ जयन पर परम जहाहा।

भा ए परम की निरवर्तता और दो पाठ की जो स्वीकृत है साधवता और संगति प्रकट है।

(३) भा० भा०

(१) ३ ८ ३ स्वीकृत पाठ है

पुछेनि सुंदर नारी गा गारी।

नारें बिरह जो गा मोहि गारी।

दूनों वाक्य के स्थान पर भा भा में है

भा अरने बंधे माइ गीतुग गारी।

भा गणन जो मो मोहि गीतुग गारी।

रचना में गणन और 'गीतुग' एव-दूनों के विरोधी के रूप में आते हैं

गीतुग नारन न जानों बहु जो गा गारि गारि। १४ ७

सुंदर एक गाने में गेगा।

नारन गण गीतुग नार गेगा।

१४१ १

की गीतुग न नारन न जानों बहु जो गा गारि गारि। १४७ ७

कै सौतुल कै सपना कहा।
कहै सेउं पै पाइ न कहा। (१४८ १)

यह कैमें कै सपन कहाई।
सौतुल भाउ समै जहि पाई। (१४८ २)

सपन कही ली सपन न होई।
सौतुल कहा जाइ नहि सोई। (२२५ ५)

सौतुल सपन न जानी यहुं का देखै सोई।
सपन कही ली सौतुल सौतुल कही न होई॥ (२२५ ६-७)

सौतुल सपन न जा किछु कहा।
देखत चरित चरित होइ रहा। (१४६ २)

अत मा भा का पाठ विकृति-वर्णित है यह प्रकट है।

(२) ४३१ १ स्त्रीवृत्त पाठ है

अपने निकट 'बर बिक्रम' राजहि बीन्ह नेवास।

'बर बिक्रम' के स्थान पर मा भा म 'पाट पर' है। 'निवास' 'पाट' (= निहासन) पर नहीं किया जा सकता है अत पाठ-विकृति प्रकट है।

(३) ५ १७ स्त्रीवृत्त पाठ है

यमुनासति सेउं रानी कहै बात समुसाह।

कृपरि चलिनु तेहि देस कछ कहा सेउ कोउ नहि माह॥

'कहै बात समुसाह' के स्थान पर मा भा मे है

मा चापि हिये यह माह,

मा : कहै चापि हिय माह।

'हिये यह माह' और 'हिय माह' के स्थान 'चापि' निरर्थक है।

(४) ५ ३४ स्त्रीवृत्त पाठ है

औ पिय कर मन रखि जा पाई।

चित अपने मुख तुम्हें सेउं नई।

मा भा का पाठ है

मा ओह राजा बहु लोभी अहली।

चित अपनी मुख तेहि ली रहली।

मा बी राजा बहु बालम अहली।

चित अपनी मुख तुम्हें सेउं रहली।

पूर्व की अर्थात्नी है

छोह मुझनिनि बुहुं जग माहां।

जेह सेवा कै राखै माहा।

बाद की अर्थात्नी है

साई मेव अनन मुख मारै।

माइ मेव परतार सारै।

जा यहाँ पर 'राजा' के 'लोभी' या 'बालम' होने का कोई प्रमाण नहीं है। अतः इस प्रकार पठि की इच्छाओं की पूर्ति का।

(५) ५१७ ५ स्वीकृत पाठ है

तुम्हें खरन सर माँव हमारा।

करेहुँ जैसे मन मान तुम्हारा।

मा मा म द्वितीय खरण है मा परा अहै अब जानु तुम्हारा।

मा परा अहा अब जानु तुम्हारा।

मा मा का पाठ अबहीन है यह प्रकट है।

(४) मा० ए०

(१) २९१ १ स्वीकृत पाठ है

मुमठ कुबेर मधुमासति बाठा।

हरखित भण्ड पीत राउ^१ राठा।

‘पीत सत’ के स्थान पर मा मे ‘पिता मुनि’ और ए मे ‘पिता गी’ है। प्रकट है कि मा ग के पाठ सर्वथा असंगत हैं क्योंकि ‘पिता’ का कोई प्रयोग नहीं है।

(२) ३१ २ स्वीकृत पाठ है

कल धमनी माहि दूध पिपावा।

दूध ठाउ कम पिप न ‘पिपावा’^२।

मा ए मे ‘पिपावा’ के स्थान पर कमय ‘पिमाउ’ (=पिपावा) तथा ‘पिमाए’ है ‘पिपावा’ प्रत्यय खरण में आ चुका है और ‘पिप’ के सिध ‘पिमावा’ अधिक जाता भी है। इसलिए मा ए का पाठ दूषित है।

(३) ३२२ २ स्वीकृत पाठ है

काज न पारी कहि सनि जावै।

जिम न काज रहे पम के ‘जावै’।

जावै के स्थान पर भी मा ए मे कमय ‘जावै’ तथा ‘जावै’ है। मा ए पाठ म तुल्य-विपक्ष पुनर्बिध बोध प्रकट है। यह उत्तमा संगत भी नहीं है जिनका अन्य पाठ है।

(४) ४५४ ४ स्वीकृत पाठ है

वहीं भेर आपन तुम्हें काही।

‘वे ही लही भदु है काही।

दूतरे खरण के ‘वे ही लही’ के स्थान पर मा म ‘पुनि ही महल’ तथा ए म ‘कहि ही महल’ है। ‘पुनि’ ‘महल’ का कोई प्रयोग नहीं है।

(५) ४५ ६ स्वीकृत पाठ है

लाराखर बात यह ‘माई’ लप मिले बुबी कुमार।

माई के स्थान पर मा म मुनि भद तथा ए म मुनि भई है। मुनि भई की निरवैकता प्रगम में प्रकट है।

(६) ४६३ ४ स्वीकृत पाठ है

बचहुँ अहेरें मन बहराबाहि।

बचहुँ हाउ हेमरे सारवाह।

प्रथम खरण का पाठ मा मे है बचहुँ अहेरें हाउ जे साबाहि और ए म है बचहुँ पाउ जे हाउ साबाहि।

द्वितीय चरण का पाठ मा म है 'बबहुं आप आपुन विगावरी और ए म है 'बबही बोइ मिउ बहमावहि'।

'हुगुर' का अर्थ 'योगान' होता है। अर्थ जान न पान क ही कारण वाला मा तथा ए के पाठ म परिवर्तन किया गया है। (किंतु वालो के पाठा की यह बिडुलि कुछ असंग-असम ढग म मी हुई है इसलिये पुनः हमे वाला का बिडुलि-आम्भ नही कहा जा सकता है।)

(७) ४७ ६ स्वीकृत पाठ है

'भूरुहि पीपहि डोग गहें कर' बीरी चमकहि बान।

मा ए म चरण का प्रकाश है 'भूरुहि पम डारी कर गही'। यहाँ ता पम। और उसकी सनिया का साधारण मूल क झूठने का प्रयत्न है 'प्रम डारी' क पकड़ने का कोई प्रयत्न नहीं है।

(८) ५ १ ५ स्वीकृत पाठ है

समुधि समुलि सब माच जा लला'।

अब बिछुरन दुख कठिन 'दुहेला'।

यला' तथा 'दुहेला' के स्थान पर क्रमशः मा ए म 'जमी' और 'दुहमी' है। मा ए क पाठ का लिपि-रस प्रकट है '[हमने] लला' और 'दुख दुहेला' ही होता चाहिए।

(५) रा० ५०

(१) २ २ ३ स्वीकृत पाठ है

सम मुकुवागि लगा विमि डालहि।

बचन मुरम काफिय 'विमि' बालहि।

रा ए में दूसरे चरण का 'विमि' नहीं है। मूल प्रकट है।

(२) २८९ ७ स्वीकृत पाठ है

तन बनि मन बनि जीउ बनि पन बनि जग 'यधि' मग्न।

रा ए म चरण का अनिम 'बनि' नहीं है। मूल प्रकट है।

(३) ३२२ १ स्वीकृत पाठ है

यह मुनि ब'बल कभी बिमानी।

मुने अचर दुर अरिग लानी'।

अरिग लानी' के स्थान पर रा ए म है 'अमी बिहगनी'। रा ए का पाठ निरर्थक है और पाठ-बिडुलि स्वन प्रकट है।

(४) ३२८ ६ ७ स्वीकृत पाठ है

कीन दाय केहि जीगुन बचन कावाचन माहि।

'जीगुन इहै जा नवल गिरि पर में अम्पारेड ताहि॥

दोहे क दूसरे चरण का पाठ रा ए म है

रा जीगुन इहै जो गिरि यहँ यहँ अवस्था ताहि।

ए जीगुन इहै मरग गिरि परी अवस्था ताहि।

अवस्था' शब्द या प्रयोग 'मरग' या 'बिरति' के अर्थ में लया है तथा।

गहि अवस्था तें बग लानी। (२ ७ १)

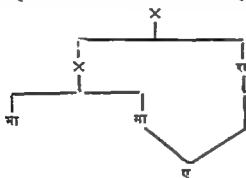
परी अवस्था सब अचुमानी। (२ ९ ४)

(३) मा भा के विहृति-नाम्न के उर्युक्त समस्त स्वयं मा भा ए के उर्युक्त विहृति नाम्न के स्वयं की भाँति रचना के समग्र बीबाई मात्र में हैं क्योंकि मा तथा भा दोनों उर्युक्त प्रकार में लक्षित हैं। अथवा विहृति-नाम्न के स्वयं का सत्ता समग्र बीबुनी होती।

(४) मा ए के विहृति-नाम्न के उर्युक्त स्थल रचना के समग्र त्रिहृई मात्र में हैं क्योंकि बीबा ऊपर कहा गया है मा का समग्र दोनिहृई लक्षित है। अथवा विहृति-नाम्न के स्वयं की सत्ता समग्र निगुनी होती।

(५) रा ए दोनों ही समग्र पूर्य प्रतियाँ हैं। इसलिए इनके ऊपर दिए गए निरिचय विहृति नाम्न के स्वयं में उन प्रकार की वृद्धि की समावना नहीं है जैसी ऊपर हमने अर्थों के मन्त्र में देखी है।

कथन यह प्रष्ट है कि विभिन्न प्रतियों के उर्युक्त प्रकार के मन्त्र निरिचय पाठ-विहृतिना की एक पर्याय रूप में बड़ी सत्ता पर आवागति है और इसलिए सुनिश्चित है। इन मन्त्रों का यदि हम देखा बिना डार क्लृप्त करना चाहें तो इन प्रकार करेंगे—



इससे ज्ञात होगा कि मा और मा एक कुरु की हैं, रा भिन्न कुरु की है। तथा ए दोनों कुरु के भिन्न का परिणाम है।

संपादन-सिद्धान्त

प्रतियों के उर्युक्त पाठ-मन्त्रों के आधार पर निम्नलिखित प्रकार में रचना का संपादन किया गया है।

- १ जो पाठ समस्त प्रतियों में समान है उसे स्वीकार किया गया है।
- २ जो मा और मा म म जिवी में और रा में है उसे स्वीकार किया गया है।
- ३ जहाँ पर मा मा म ए पाठ और रा में भिन्न पाठ है, वहाँ पर दोनों में म जो पाठ-विपर्यय समस्त अंतरण और बहिरंग समावनाका की दृष्टियों से मन्त्र प्राप्त हुआ है वह स्वीकार किया गया है।
- ४ ए प्रति का पाठ होना पायाजा के भिन्न का परिणाम होने के कारण रचना के पाठ-निर्धारण के लिए उसी स्वयं पर देखा गया है जहाँ पर मा और मा दोनों के समान रूप से लक्षित होने के कारण दो में म जिवी का भी पाठ प्राप्त नहीं है, और ए का पाठ रा के पाठ में भिन्न है।
- ५ रचना के प्रथम छंद में कथन ए का पाठ प्राप्त होने के कारण आवश्यक संपादनों के मात्र उगी को ग्रहण करना पड़ा है।

इन विद्वानों का प्रयोग न केवल विभिन्न स्वतंत्रों पर पाठ-निर्धारण के लिए किया गया है, बल्कि रचना के संर-निर्धारण के लिए भी—अर्थात् कौन से संज्ञा रचना के होने चाहिए और कौन से प्रसिद्ध इस प्रश्न के हल करने में भी इन्हीं विद्वानों का आश्रय लिया गया है।

रचना की दो स्वतंत्र धाराओं के पाठ प्राप्त हो जाने से पाठ-निर्धारण अपेक्षित प्रकार का ही सचा है। पाठ-संशोधन की आवश्यकता बहुत ही कम पड़ी है। छोटे-से-छाटे संशोधन भी तारक-चिन्तों द्वारा निरूपित कर लिए गए हैं जिससे उनके संबंध में कोई भ्रम न हो सके।

रचना का कथा-सार

(नीचे कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ इस संस्करण के छपों की हैं।)

(४४) कौशिकि यह नाम का न बर नगर का जहाँ का राजा मुरजमान था। उसकी कोई सत्ताम न थी। (४५) इन बीच एक सरस्वी बहती आया। (४७) बाद में वहाँ तक राजा ने उसकी सेवा की (४८) तो उसने स्वीकार करके एक पिंड दिया जिसे राजा ने अपनी पटरानी को गिलाया। (४९) परिणाम-स्वरूप वसुं मात में उस राजा के मन से एक राजकुमार का जन्म हुआ। (५०) पहिली में उसके छह-मध्याह्निक का बिहार कर उसका नाम मनोहर रखा। (५१) किन्तु उन्होंने बताया कि बीसहवें वर्ष और प्याछ मात की अवस्था होने पर इसे हमका प्रेमपात्र निम्नेवा जिसके निरुद्ध में यह वियोगी बनकर एक वर्ष तक किरता रहेगा। (५२) बीसवें वर्ष में कुमार ने विचार कर लिया (५८) और बाद में वर्ष तक में वह समस्त विद्याओं में पटु हो गया। (५९ ६१) राजा इस ही बला का अंत कुमार ने जब बाद में वर्ष में पदापन किया राजा ने उसका राजनिर्वाह कर दिया।

(६१) जब वह बीसह वर्ष और प्याछ मात का हुआ उसकी वह बह-बला आ गई जो अविद्यमानों में बसा रहती थी। (६४) एक दिन कुछ परदेसी मनुष्य आए जिनका मूल जन्म राजा के पास होता रहा। (६८) उत्तरतः जब कि राजकुमार मासी निम्न में जो राजा का कुछ अप्पराधों में उन दत्ता और उन्होंने उसकी सुवर्ता पर मुग्ध होकर उनके साधुल निम्नी क्रिया की गीत करने का निश्चय किया। (६९) उनका ध्यान महारत नगर के राजा निम्नराज की नन्हा मनुमान्ती की ओर गया (७०) और बीना के का भी तुलना करने के लिए वे उन उसरी धम्मा के साथ पड़ा उठा के गई बड़ी मनुमान्ती ध्यान कर रही थी और उसकी धम्मा मनुमान्ती की धम्मा के नाम समारर (७१) के समारर देवने बली गई। इनने में मनोहर जाय कर देवता है कि उसकी धम्मा के नाम मनुष्य की धम्मा है जो भी रही है। (७५) इन मनुष्यों का देवदत्त पूर्व (जन्म) की प्रीति उनके हृदय में अङ्गीत हो गई (७६ ९७) और यह उनका अब प्रत्यक्ष की धोखा या निरीक्षण करने लगा। (९८) उनने जाने मन में कहा कि हम धर्मिक का जन्म देना हम बला में पाव होया जिसने वह मनुष्यी प्रेम करेगी।

(९९ १००) इनने ही में वह मनुष्यी जाय गई और निम्न ही धूमरी धम्मा बिछी हुई और उन पर एक राजकुमार का देवदत्त बर इन वर्ष किन्तु पुन पैसे पारय कर (१११ १२) वह राजकुमार ने उनका परिचय आदि पुछने लगी। (१३) कुमार ने अपना परिचय दिया। (१४) उत्तरतः उनने उन मनुष्यी ने उनका परिचय पूछा। (१५) कुमार ने अपना परिचय दिया। (१६) कुमार उनने प्रेम में अधिकृत होकर अपना उनका मनो में निर पदा या कुमार ने उन राजा दिया और (११२) उनने इन प्रसार अथवा हा जान का पारय पूछा। (११३) इन प्रेम

क उत्तर में कुमार ने कहा कि जिस दिन विवाह में उसकी सृष्टि की उसी दिन से यह उसका प्रतीति था (११४ ११५) और उसके विरह में दुःख का मार बहुत करता रहा है, (११६) क्योंकि प्रीति उसी घट में निवास करती है जिस घट में दुःख रहता है। (११७) ये दोनों एक-दूसरे से सर्वथा अभिन्न थे (११८) वह (कुमार) घरीर का और वह (कुमारी) उसका प्राण थी (११९) जब तक वह बिना अपने जीव के जीवन व्यतीत करता रहा था जब ही उस बेस कर उसके घरीर में वह जीव वापस आया था। (१२१) कुमारी ने उसके प्रेम की यह बाधा सुनी तो पूर्व [जन्मा] की प्रीति का उसे भी स्मरण हो आया और दोनों प्रेम के माध्यम से अभिन्न हो गए। (१२२) कुमारी ने यह तथ्य स्वीकार करते हुए कहा कि उन दोनों को (जब) कोई भी वलग्न नहीं कर सकता था। (१२४) कुमारी की इस प्रेम बाधा को सुनकर कुमार के घरीर में राग जाग्रत हो उठा। (१२५) कामिनी के उदोर्ध्व के स्थान के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो कुमारी ने उस राका (१२८) और कहा कि यह अधर्म न कर पहले उन्हें राह बहाना और हरि को साक्षी लेकर यह वापस करनी चाहिए कि जन्म-जन्मान्तर में वे प्रेम का निवाह करें। (१२९) कुमार ने कहा कि जब मैं घरीर और प्राण की भाँति परस्पर अभिन्न था तो उनमें वापस की बात कैसी? (१३१) किंतु फिर दोनों ने परस्पर वापस की और दोनों ने अपनी-अपनी मुद्रिकाएँ परस्पर बदली। (१३२ १३४) दोनों प्रेम की समस्त लज्जता के साथ एक दूसरे से मिलते रहे (१३५) और सख्या बदल कर हो गए। (१३८) उत्तरांतर अम्बरानों ने लौटकर कुमार को उस सख्या के साथ जिस पर वह सोया हुआ था उसने वह वापस पहुँचा दिया।

(१३९ १४१) सखिया ने राजकुमारी को बताया और उसकी अस्त-व्यस्त अवस्था का कारण उससे पूछा तो उसने बताया कि स्वप्न में—जो सप्रत्यक्ष बीसा ही था—उसने एक राजकुमार को देखा था जिसने उसकी एही अवस्था की (१४२) वह प्रीति लगाकर और उसे छोड़ कर बला मया उसका विरह की पीड़ा इतनी उस की कि मरना उससे अच्छा था। (१४३ १४४) सखियों ने उसे बौध्द बनाया।

(१४५) वहाँ कुमार जब जागा मयुमास्ती के विरह में विकल हो उठा। (१४६ १४८) उसकी यह बला देखकर उसकी सहेला नामक बाय ने इसका कारण पूछा तो उसने सारी कथा सुनाई, (१४९ १५२) और उसे अपना यह निश्चय भी बताया कि अब वह मयुमास्ती को प्राप्त करने के लिए एक बार प्राणों की बाजी लगाए। (१५४ १५५) राजा और रानी (कुमार के माता पिता) ने कुमार की यह बला सुनी तो उन्होंने बौध्दों को बुलाया किंतु बीसा को कोई व्याधि कुमार के घरीर में शक्त न हुई। (१५६) राजा के एक महता (महामार्य) ने जब कुमार की यह बला देखी तो उसने भीष किया कि कुमार किसी के विरह में व्यथित था। (१६०-१६३) उनके पूछने पर कुमार ने जब रात्रि की सारी कथा सुनाई तो महता ने उसे किसी नारी के घर में पड़ कर जीवन को बरबाद न करने के लिए अनेक प्रकार से उपदेश दिया (१६४ १६५) किंतु कुमार पर उन उपदेशों का कोई प्रभाव न हुआ। (१६७-१६९) जब महता ने अपनी असफलता की बात राजा रानी को बताई तो दीह हुए आए और कुमार के घरवालों में गिर पड़े कुमार का उन पर क्या भाई और उसने उनसे महारस मगर जाकर मयुमास्ती को प्राप्त करने की अनुमति मानी। (१७ १७१) कुमार के माता-पिता ने अपनी बुद्धावस्था की ओर संकेत करते हुए उससे बहुतेरा कहा कि वह उन्हें छोड़ कर न जाए, (१७२ १७४) किंतु कुमार ने उनकी एक न सुनी और उसने मयुमास्ती की कोशिश में निरुत्ते के लिए घोड़ी का शेष बनाया। (१७५) राजा रानी ने पुनः एक बार समझाया किंतु उनका भी कोई प्रभाव कुमार पर न हुआ।

(१७५) सबरा हानै पर कुमार बस तथा परिग्रह के साथ चल पड़ा। चलते चलते वे सब समुद्र तट पर पहुँच गए। कुमार सब को लेकर जलबान पर चढ़ा। (१७७) बार माछ तक समुद्र में चले रहने पर जलबान चौर में जा पड़ा और जलबान के दूटने से वह समस्त बस-परिग्रह समुद्र के पट में चला गया। (१७८-१७९) कुमार आज किसी प्रकार बच रहा और समुद्र की एक लहर ने उसे बाकर उसे तट पर अक्षेप दाल दिया। (१८०) वहाँ पर एक घमा बन बा कुमार उसी बन में बस पड़ा।

(१८२) चलते चलते दूसरे दिन वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा वहाँ पर एक भीमड़ी थी। (१८३) उस भीमड़ी के भीतर जाने पर उसने सम्भा पर एक कुमारी को छोड़ी हुई पाया। (१८५) उसको इस निर्जन स्थान में देख कर कुमार को आश्चर्य हुआ। (१८८) राजकुमारी जब बोली उसने कुमार का देल कर उसका परिचय पूछा (१८९-१९१) और पूछा कि वह कैसे वहाँ आया बा। (१९२-१९४) कुमार ने भी उससे इसी प्रकार का प्रश्न किया। (१९५) कुमारी ने बताया कि वह चित्तविराट नगर के राजा चितसेन की बच्ची थी और पमा उनका नाम बा। (२०५) एक दिन वह अँदराई में रास रही थी जब कि मधुकरा के उत्पात से उसकी सहेलियाँ भावने लगी। (२०९) इसी समय एक राक्षस वहाँ आ निकला और वह उस हम बन पड़ में उठा लाया। (२१३) राक्षस का नाम मुनकर कुमार वहाँ से चलने को हुआ उस तक पमा उसके पीछे में चिग पड़ी। (२१७) कुमार ने उसे उठाया और वह उसके पुछ से प्रविष्ट हो उठा। (२२२) कुमारी ने बताया कि राक्षस के आने में अभी बहुत बिलब बा और जब तक वह उसे अपनी बार्धा न सुनाए वह उसे जाने नहीं दे सकती थी। (२२३) कुमार ने वह मुनकर बताया कि वह अपनी ब्रह्मिका मधुमाक्ष्मी की लीज में निष्ठा बा। (२२४) तदनंतर उसने अपने वैद्यादि का विवरण दिया और उस राक्षि की घटना सुनाई जिसने कारण वह मधुमाक्ष्मी पर अनुरक्त हुआ बा। (२३२-२३९) पमा ने प्रेम और विरह की घराहना की और उसे यैयँ बोधाया। (२४०) तदनंतर उसने मधुमाक्ष्मी के स्वयं में उसे बताया प्रारंभ किया।

(२४१) उसने बताया कि मधु उसकी बाल-सहेली थी केवल एक वर्ष से जब से वह राक्षस के द्वारा हर कर वहाँ छाई गई थी वह उसके बारे में नहीं जानती थी। (२४५) कुमार वह सुन कर उसके पीछे पर चिग पड़ा और मधु के बारे में बताया बा अनुरोध उससे करने लगा (२४७-२५०) उसने बताया कि जिस प्रकार मधु जब अपनी बी बी लीज में थी उसी उसकी माता उसको लेकर एक ज्वनर पर उनके घर आई थी और लोग भी बाठाभी में परस्पर स्नेह-मर्षण विचर हुआ बा जिसने परिणाम-स्वरूप मधु की माता बचन-बड़ होकर प्रत्येक बाल की शिरीषा को उसे लेकर उनके घर आनी रही थी। (२५१) अतः उसने कहा कि यदि कुमार उसके पर बाकर उसका हान और अपना उत्पद उसके दुट्टु शिरी को बलागा उसके घर के लोग उसे मधु में भिन्ना देने (२५२) और तदनंतर उम्मा उत्पद सिद्ध हो जाता। (२५३) वह विवरण सुनते ही कुमार प्रभुस्मित हो उठा। (२५४) उसने पमा से कहा कि अब उसने उसे बहिन मान लिया बा और अब वह उसे छोड़ कर नहीं जा सकता बा। (२५५-२५६) पमा ने उसे बहुतसा ममाया बा जिसके लिए वह अपने प्रालों को मर्द में न दाले (२५७-२५८) किन्तु कुमार ने कहा कि वह अब राक्षस को मार कर ही बनी में जा सकता बा। (२६०) इसने से पमा ने कहा कि राक्षस के लीजने की क्या हो गई थी कुमार लीजने लगा कि अग्नि उसका पाग नहीं दे अब वह राक्षस का निज प्रकार में मार सकता बा। पमा ने कहा कि अग्नि वह उसे दे सकती थी। (२६१) तदनंतर राक्षस ने द्वारा मारे बा प्राचियों के भी अग्नि वहाँ पर से उस सब का मार पमा ने कुमार के सामने राग दिया और बुधारा ने उसके से आने बाग के अग्नि में दिया।

(२६२) राक्षस आ पहुँचा। (२६३) उसने कुमार ग प्रश्न किया कि वह नीन या और बा। अपने बाग देने के लिए बगी भागा बा। (२६५) कुमार ने कहा कि वह उस पार कर बनी को ले

जाता। (२६६) यह मुमते ही राक्षस उस पर झपट पड़ा कुमार ने भी तलवार बसाई जिसके परिणाम-स्वरूप राक्षस का एक मस्तक और बा मुड़ाएँ टूट गए। पर राक्षस उन्हें उठा कर चला गया और एक धन में फिर उस मस्तक और उस मुड़ावा का समानर युद्ध करने के लिए लौट आया?। (२६८) इस युद्ध में म किमी की भीत हुई और म किमी की हार। इतन में रात आ गई और राक्षस अपने चारे की खोज में चला गया। (२६९) पमा ने अबसर पाकर राक्षस के पुनर्जन्म का रहस्य बताया कि राक्षस का जीव वहाँ से बलिष्ठ दिवा की बाटिका के एक अमृत-बुल में बसता था उस अमृत बुल के उलटने से ही वह मर सकता था बताया नहीं। (२७ २७२) यह सुनकर कुमार पमा के साथ उस बुल के पास गया और दानों ने मिलकर उस जगह से काट फेंका। (२७३) राक्षस रात्रि का अन्त होने पर मोटा और उसने पुन कुमार को युद्ध के लिए ललकारा। (२७४) दोनों ने समाधान युद्ध हुआ जिसमें आह्न हाकर राक्षस उस अमृत बुल के बुल की भार बीदा बिनु (२७५) जब वह अमृत-बुल उस काट कर गिराया हुआ मिला उसने निराग होकर अपने प्राय स्थाय दिए।

(२७८) तदनंतर वे वहाँ से चलेकर चित्तबिस्तार नगर आ गए। (२८६) चित्रसन को जब यह समाचार मिला वह बचावे के साथ वह पमा का घर लिया लाए। (२९१) चित्रसन ने जब पमा ने अपने उद्धार की कथा बही (२९२) उन्होंने कुमार को बुलाकर उसका बड़ा सम्मान किया। (२ ४) चार दिनों के पश्चात् कुमार ने पमा से बिदा लेकर मधुमासली की लाज में जाना चाहा ता वेमा ने कहा कि दूसरे ही दिन डिरीया भी जिस दिन मधु ब्रह्मण्य जाती और तब वे एक-दूसरे से निक जाते। उनमें कहा कि वह सबरा हात ही चित्रमारी में आ बैठता ता वहाँ पर वह उन स्नर आ जाती।

(२९६) दूसरे दिन मधुमासली आई। (२९ १ १) पमा ने मधु के पूछने पर अपने उद्धार की सारी कथा उस बताई और उस प्रसंग में उसने उसके प्रसी राजकुमार का भी साधार उत्प्रेम किया। (३ २ ३ ४) पहलू तो मधु ने यह स्वीकार करने में आना-जानी की कि किमी राजकुमार ने उसका कई प्रम प्रमय रहा था (३ ९) बिनु जब कुमार से मेलका कर पमा ने उसकी वह मुद्रिका उस गियाई जिस उसने कुमार का दिया था (३ ७) मधु का वह स्वीकार करना पड़ा। (३१५ ३१६) तदनंतर पमा ने उस में जाकर चित्रमारी में मनोहर में मिलाया।

(३१७-३२) मिलन पर मनाहर ने मधु में अपनी विरह-कथा बही (३२२ ३२३) तो मधु ने भी उसे अपनी विरह-कथा सुनाई। (३२८ ३३४) मनोहर ने तदनंतर उसमें अचरामृत का पान कराने और अपने मुल का वर्णन कराने का अनुरोध किया तो मधु ने उसने यह बचन चाहा कि जब तब दानों का वम-विषाह न हो जाए दानों में मुरत-मुल न हो और मनोहर ने इस बचन का पाकर मधु उसमें निरप कर मो रही।

(३३५) मधु के मौन ने मे अत्यन्त विचित्र हाहा देग कर उसकी माता अपमन्त्री का बिना हुई। (३३६) पमा की माता मधुरा ने उसका बहुतेरा समाधान कर उस रातना चाहा (३३७) बिनु अपमन्त्री ने उसकी एक न सुनी और वह स्वयं चित्रमारी में जा पहुँची। (३३९) जब उसने वहाँ मधु और मनाहर का परस्पर लिपटकर मोले हुए देखा वह अत्यधिक क्रुद्ध हुई और पमा को बुला-मला करने लगी ता मधु का वहाँ से आई थी। (३४) पमा ने बला के मिलन और प्रम का पूर्ववर्ती प्रमन बताया और कहा कि दानों में प्रम विजय था। (३४१) यह सुन कर स्वयंमन्त्री ने पमा में कुमार का परिचय प्राप्त किया (३४४) और स्वीकार किया कि उसका वयन ठीक लग रहा था क्योंकि मधु के वयन में किमी ने किमी अन्य को हेम-मम-जटित पर्यंक ला रखी थी। (३४५) तदनंतर उसने

दोनो को एक-दूसरे से असंग कराने पर प्रसुप्त मनोहर को कर्मगिरि तथा प्रसुप्ता मधु को अपने घर भिजवाया और मधुरा से बिदा होकर वह स्वयं भी अपने घर आ गई।

(३४६) जब कुमार जागा वह सिर पीट-पीट कर रोने लगा और (३४७) मधुमास्य की ओर से वह पुनः निकल पड़ा। (३४८) उधर मधु जब जागी वह भी बिस्तर से ध्वनित होकर स्नान करने लगी। (३४) स्वप्नवती न भर जाकर मधु को जब इस प्रकार स्नान करते और बिसरते देखा (३५ ३५१) उसमें उस बहुत कुछ समझाया। (३५२) किंतु जब उसने देखा कि मधु किसी प्रकार भी उसकी सिला पर नान नहीं बै रही है और मधु और मनोहर के संयोग की बात से उसके कुछ भी निदा होगी उसने मंत्र पढ़ कर मधु के ऊपर जल फेंका और मधु पसी हो गई। (३५३) पसी होकर जब वह उड़ गई, रात्री बहुत पछलाई और राजा भी अत्यधिक दुखी हुए। दोनों बहुत रोए।

(३५५) मधुमास्यी पसी होकर मनोहर की ओर से निकल पड़ी। (३५६) इसी बीच उसने मनोहर की सादृष्टि का एक अन्य राजकुमार देखा वह पानेरि वड़ का ताराचव था। (३५७) वह उसके बीराहर (श्रावण) पर आ बैठी कुमार ताराचव की वृष्टि भी उस पर आ पड़ी। (३६) कुमार ने जल बिछवा दिया (३६१ ३६२) जिसमें मधु पसी स्वतः जाकर इस विचार से बैस गई कि समझ था कि ताराचव की सहायता से उसे मनोहर का पता लग जाता।

(३६३) ताराचव ने उस सोने के पिन्ड में डाल दिया और उसके सामने पशिया के समस्त प्रकार के छात्र रखे। (३६४) वितु तीन दिन के बीच जाने पर भी मधु पसी ने कुछ नहीं खाया और न इसी कारण कुमार ताराचव ने कुछ खाया। (३६५ ३७१) कारण पूछने पर मधु ने अपनी सारी कथा उसे सुनाई। (३७२) मधु की इस वार्ता को सुन कर ताराचव ने सब कुछ छात्र कर उसका उद्धार करने का उसे वचन दिया। (३७३) उसमें कहा कि पहले वह महारस नगर जाकर उसे पसी से पुनः मनुष्य करावेगा और तदनंतर उसे महाहर से मिलाने का यत्न करेगा। (३७६) अतः वह मुहूर्त और कुमारों को साथ लेकर मधु का पिन्ड का सिन्धु हुए महारस नगर को जाने के सिन्धु निरल पड़ा।

(३८) ने महारस नगर पहुँच गए। (३८७) जब राजा और रानी को मधु के जाने का समाचार मिला वे ढौंढे हुए आए और (३८३) मधु तथा कुमार को घर भिजा आए। (३८३) रानी ने मंत्र पढ़कर मधु पर जल छिड़का और वह पुनः अपने पूर्ववर्ती वारी रूप में आ गई। (३८४ ३८५) रानी-राजा ने तदनंतर मधु को ताराचव को देना चाहा किंतु (३८६ ३८७) कुमार ने बताया कि दोना न भाई-बहिन न संबंध की वचन-बद्धता हुई थी इसलिए यह संबंध समझ नहीं था कुमार ने कहा कि इन ता मनोहर मिल जाता तभी उन मुग होंगे।

(४) रानी-राजा ने यह सुनकर जबों के वहाँ पत्रिका भेजी जिसमें उन्होंने समस्त घटनाएँ लिखीं और (४१) मधु ने महेय-बाहकों में से बहुलाया कि यदि महाहर उनकी आपत्तारी में नहीं हो ता यह उगे मिथ्या। (४२ ४१३) इसके साथ ही उसने पिछले बाहक माग का भयना बिगड़ पुन भी उनके द्वारा बहुलाया। (४१४ ४१७) साथ ही उसने मनोहर से कहने के लिए उसने अपना बिगड़-मुग भी कहा। (४१८ ४२) जिस समय महेय-बाहक जबों की पत्रिका लेकर मधु का महेय मुना रहे थे और जबों उनके महेय का उत्तर दे रही थी उसी समय उसकी एक लगी ने आकर सूचना दी कि उसका धर्म-मधु वह राजकुमार योगी के रूप में आया हुआ था। (४२१ ४२२) वह मुने ही जबों दीड कर उगे सिवा आई और मधु के जो समाचार थे उगे सब मुनाए। (४२३ ४२५) जबों ने तदनंतर राजा रानी का उनकी पत्रिका का उत्तर देने हुए लिखा कि यदि उन्हें मधु का विवाह महाहर

के साथ करता था तो वे भिकट भा आते। उसने मधु को भी उसके संदेश के उत्तर में एक पत्रिका लिख भजी। कुमार मनोहर ने भी मधु को एक गुप्त पत्रिका उस संदेश-बाहका के द्वारा भेजी (४२९-४२९) जिसमें उसने अपना अग्रम्य प्रभ और विरह-निवेदन किया। (४३१) संदेश-बाहकों ने ले जाकर उन पत्रिकाओं को राजा-रानी तथा मधु को दिया।

(४३१) मनोहर का कुशल-समाचार पाकर सब को बड़ी प्रसन्नता हुई और एक शुभ दिन निश्चित कर विक्रमराज ने प्रमाण कर दिया। (४३२) उनके साथ रागिनी और मधुमासती भी थी। (४३३) इस दिन बरक कर वे डोरिया घर पानी जा पहुँचे। (४३३) वही घर उन्होंने चित्रसेन और पद्मा को बुलवा भेजा। (४३५) चित्रसेन और पद्मा वहाँ आ गए। (४३८) विवाह की तिथि निश्चित हुई। (४४१) उस तिथि पर मनोहर तथा मधुमासती का विवाह हुआ। (४४७) विवाह के अनंतर दोनों सुरत-अवस्था पर सुख-आत्मा में मिले। (४४८) दोनों ने सुखपूर्वक परस्पर आस्मिन् किया (४४९-५१) तदनंतर दोनों ने सुख-सुरत का साम किया। (४५५-५८) विक्रमराज ने विवाह के प्रसंग में बहुत सा दावज दिया।

(४५८) मनोहर ने दूसरे दिन ताराचंद के पास जाकर इच्छा-साधन किया (४५९) और यह इच्छा प्रकट की कि कुछ दिनों तक वे दोनों साथ-साथ रहें। (४६१) विक्रमराज से उन्होंने जब यह इच्छा प्रकट की तो उन्होंने भी इसका समर्थन किया। (४६३) दोनों मित्र साथ-साथ रहने लगे। (४६४-६६) एक दिन उन्होंने आलेख की योजना की और उसके अनंतर सूर्या म स्नान करके वे एक क्रीड़ा करने लगे। (४६७) इसी समय पद्मा मधु को चित्रसारी में झूलने के लिए सिद्धा गई। (४६९) चौथे पहर जब वे वहाँ झूल रही थीं तब कुंआर बापस लौटे और घर पर दोनों कुमारियों में से किसी को म पाकर वे भी चित्रसारी चले आए। (४७१) ताराचंद पीछ जा रहा था कि उसकी दृष्टि अचानक पद्मा पर पड़ी जो झूले पर वेन भर रही थी। उसका अचल उठ रहा था फलतः उसके उरोज ताराचंद की दृष्टि म आ चुक और वह वहीं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। (४७२) मधुमासती को यह सूचना दी गई कि ताराचंद मूर्च्छित पड़ा था। (४७३-४७४) यह सुनकर वह और मनोहर वहाँ आ गए, और कुछ बेत होने पर ताराचंद को वे राजमंदिर में लिवा गए। (४७६) गुणियों ने उसे देखा तो बताया कि इसके घरीर में कोई रक्तना नहीं था। उन्होंने कहा कि इसका जी नहीं (किसी से) लगा हुआ था और जब उसको यह देखा तो तभी इसे बेत होया। (४७७) मधुमासती ने उसके निःकल आकर एकान्त में पूछा तो उसने बताया कि जिसने उसका जीव हर लिया था उसका नाम वह नहीं जानता था। (४७८) वह खड़ी झूल रही थी। (४७९-४८४) तदनंतर उसने उसके लल गिला का वर्णन किया। (४८५) मधु ने कहा हो न हो यह पद्मा ही हो सकती थी और जो कोई भी होती उसका पता लगा कर वह उसे बचा सकती थी कि क्या संभव था।

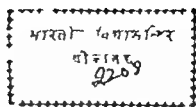
(४८६) मधु ने आकर यह बात मनोहर से कही तो मनोहर ने कहा कि इन संबंध म कोई बढिनाई नहीं थी क्योंकि जब वह पद्मा को गालस से उबार कर लाया था पद्मा को उसके माता-पिता ने उसे अपित किया था किंतु उसे तब पद्मा का स्वीकार करने की न कोई जरूरत नहीं थी इसलिए उसने वह स्वीकार नहीं किया था अब वह पुन उसे संकर ताराचंद को ब्याह गयता था। (४८७) यह वह कर मनोहर चित्रसेन के पास पहुँचा और उससे अपना विचार व्यक्त किया। (४८८) राजा ने यह सुनते ही कहा कि वह तो पद्मा को उसे पहले ही से पूछा था और वह बाहे जिसके साथ पद्मा को ब्याह गयता था। यह सुनते ही दोनों ब्रूया में ब्याहणी हान लगी और (४९१) घूम सज में ताराचंद और पद्मा का भी विवाह हो गया। (४९१-९२) रात्रि में दोनों सुख-अवस्था में मिले और उन्होंने प्रथम समागम का मूल अनुभव किया।

(४९४) वर्षा भर दोनों राजकुमार वहाँ रहे। (४९५-४९७) तदनंतर दोनों ने विश्वसेन से अपने-अपने देसा को जाने का प्रस्ताव किया जिसे उन्होंने स्वीकार किया। (४९८) विश्वसेन विक्रमराज के पास आए और उन्होंने उन्हें कुमारों का प्रस्ताव सुनाया। विक्रमराज ने भी कन्या का नौना देना स्वीकार कर लिया। (५०१-५०४) दोनों राजकुमारियों की माताओं ने उन्हें उपवास किए, (५१०-५१८) और दोनों राजकुमारियाँ ने माता-पिता तथा सखी-सहेलियाँ से बिदा ली। (५१९-५२२) तदनंतर दोनों राजकुमार उन्हें लेकर चले पड़े। चार पड़ावों तक वे साथ रहे फिर वे भी एक-दूसरे से बिदा हुए। (५२३-५२५) मधुमाक्ष्मी ताराचंद से व्रतज्ञतापूर्वक बिदा हुई (५२६-५२८) और इसी प्रकार यमा ने मनोहर से व्रतज्ञतापूर्वक बिदा ली। (५२९-५३१) तदनंतर राजकुमारियों ने एक-दूसरे से बिदा ली।

(५३१) ताराचंद ने मानगढ़ के लिए प्रस्थान किया और मनोहर ने कर्नगिरि की ओर अपना टोहा हाँवा। वो बरसों में मनोहर कर्नगिरि पहुँचा। (५३४-५३५) जब लोगो को कुमार के लौटने का ख़बरेस मिला तब तब भर में बधाई बजने लगा। (५३७) दूसरे दिन प्रातः वाम कुमार मधु के साथ घर आ गया और वह माता-पिता के चरचा में पड़ कर उनसे मिला।

(५३८) (मनोहर और मधुमाक्ष्मी की प्रीति) प्रेम की शरण में जाकर ही कोई काल के कष्ट से बच सकता है। (५३९) प्रेम की शरण-शाला ऐसा स्थान है जहाँ अमृत घोमित होता है और जब तक बाम्य-शरीर बना रहता है प्रेमी का नाम भी इस संसार में बना रहता है।





मधुमालती

प्रेम प्रीति सुखनिधि न दाता । तुझ जग^{*१} एकोनारि^{*२} विभाता ।
 बुधि प्रगास नाही सुख ताह^{*१} । तुझ अस्तुति जे करो^{*२} गोसाह^{*३} ।
 तोनि भुयन बहुत^{*१} जुगत^{*२} राजा^{*३} (?) । आदि अत जग ताहि प छात्रा ।
 पंडित मुनिजन ब्रह्म बिचारी । तुझ अस्तुति जग काहु^{*१} न सारो ।
 एक जीमि^{*१} म^{*२} कैस सारो^{*३} । सहस जीमि^{*१} बहु^{*२} जुग महि^{*१} पारो^{*३} ।

तीनि भुयन घट घट मह^{*१} अनन^{*२} रूप बेलाम ।

एक जीमि^{*१} कहु ताहि क^{*२} कस अस्तुति कर हवाम ॥

पाठान्तर—यह छंद बेचड ए म सुरसित है छंद समस्त प्रतिमा यहाँ संक्षिप्त है। अन्त ऊपर हमका पाठ बीबी की हम्ब-बीब के विषयक मामाण्य भुटिया का परिहार करके ए के अनुमात्र दिया जा रहा है और नीचे ए में प्राण पठ के साथ प्रत्याविन मगोबना का कारण-निर्देश किया जा रहा है।

- (१) १ ए जुग 'जुग' अनंयन है क्योंकि 'जुग' चार है दे इसी छंद की अर्थानिमा ३ ५।
 २ ए एककारी 'एककारी' निरर्थक है आगे २४ में 'एककार' आया है जो 'एकोनार' की फारसी लिपि अनिय विहित है। वही शब्द यहाँ भी प्रयोग मित्र है केवल रूप समता इकायें हो गया है।
- (२) १ ए ताह। २ ए करो। ३ ए गोसाह। इन १ २ ३ में अनुनासिक का बिंदु छूट गया है, जो बीबी के सखों में प्राय होता है।
- (३) १ ए बहु। २ ए तै। इन १ २ म अनुनासिक का बिंदु छूट गया है। ३ ए दाता 'दात्रा' का तुक परवर्ती चरण के 'छात्रा' से गही मिलता है अन्त इसके स्थान पर 'राजा' का सुझाव दिया जा रहा है।
- (४) १ ए बाहु अनुनासिक का बिंदु छूट गया है। २ में यह पाठ यहाँ भी कर्ता के रूप में आया है अनुनासिक मुक्त है।
- (५) १ ए जीम। २ ए मी। ३ ए पारो। ४ ए जीम। ५ ए बहु। ६ ए न। ७ ए पारो। १ ४ म काश्मी लिपि के कारण अबकी 'जीमि' का 'जीम' हो गया है। २ ३ ५ में अनुस्वार का बिंदु छूट गया है। ६ 'न' पाठ से छंद में मात्रा की कमी हो जाती है फारसी लिपि में 'नहि' और 'न' प्राय एक ही प्रकार से लिखे जाते हैं इसलिए यह मूल हुई है। ७ ए पारो अनुस्वार का बिंदु छूट गया है।
- (६) १ ए न 'न' प्रयोग मित्र नहीं है यह फारसी लिपि से लिखा हुए 'मह' का पाठ-प्रमात्र से हुआ प्रतीत होता है। २ ए अनोन 'अनीन' अर्थहीन है यह संभवतः मापरी क अनवन < अनवन (क्याकि 'ब' भी 'न' के समान लिखा जाता था) के फारसी लिपि से लिखे जाने पर पाठ प्रमात्र के कारण हुआ है। जायसी के 'पद्मरात्र' म भी यह मूल हुई है और अनेक स्थानों पर हुई है (दे प्रमृण लक्षक द्वारा संपादित जायसी-रूपा बनी) की भूमिका पृ २४-२९)
- (७) १ ए जीम फारसी लिपि के कारण अबकी 'जीमि' का 'जीम' हो गया है। ७ ए के

‘कै’ ‘कै’ का विद्वत्पाठ लगता है ‘ताहि’ ईश्वर के लिए आया हुआ है, प्रच्छन्न कर्ता ‘मनुष्य’ के लिए नहीं बल्कि ‘अस्तुति’ स्त्री कर्म के अनुसार ‘कै’ के स्थान पर ‘कै’ स्त्री० प्रत्यय होना चाहिए, जो इसी प्रकार ध्वनि में प्रायः सर्वत्र आता है।

अर्थ—(१) हे प्रेम-प्रीति और शुक्तिमित्र के बस्ता जो दोनों जगत् [इहलोक और परलोक] में एकोकार [कहे जाने वाले] बिजाता हो, (२) मुझे तुम्हारे [शुचिमान के] अनुरूप बुद्धि का प्रकाश [प्राप्त] नहीं है कि मैं हे स्वामी तुम्हारी स्तुति करूँ। (३) तुम्हें तीनों भुवनों (आकाश पाताल और मृत्युलोक) में और चारों मुणों (सप्त ब्रह्मा, व्यापार, और कर्म) में राजा (?) रहे हो और आदि तथा अंत में अवश्य ही जगत् तुम्हीं को (तुम्हारा अंग बन कर) शोभा देता है। (४) पक्षियों, पुनियों और ब्रह्म-विचारकों [में से] किसी ने तुम्हारी स्तुति जगत् में नहीं की है (कोई नहीं कर सका है)। (५) एक जिज्ञासे [बहु स्तुति] मैं कैसे करूँ? सहस्र जिज्ञासों से चारों मुणों से भी नहीं कर सकता हूँ।

(६) जो तीनों भुवनों में घट-घट में अनवन (भिन्न-भिन्न प्रकार के) स्थानों में बिखरता हो (७) एक जिज्ञासा तुम्हीं बताओ हवास (चेतना) [के साथ] उसकी स्तुति किस प्रकार करे?

टिप्पणी—(१) एकोकार = एक + ओंकार। (२) प्रयास < प्रकाश। (३) छात्र < छात्र [दे] = शोचता चमकना। (४) अनवन < अग्न्य अर्थ = भिन्न-भिन्न प्रकार के।

[२]

एक^१ अनग^२ भाउ परमैसा^३ । एक रूप बाछै^४ बहु भसा ।
तीनि लोक जहवाँ लहि^५ ठाह^६ । भोग क^७ अनवन^८ रूप गोसाह ।
बरता बरै जगत जत^९ चाहै । जमु वा जमु^{१०} रहै जमु^{११} चाह ।
बाबु ठाउ^{१२} बरसै^{१३} सम^{१४} ठाह । निरगुन एक ओंकार गोसाह ।
गुप्त रूप परगट^{१५} सम^{१६} ठाह । बाबु^{१७} रूप बहु रूप^{१८} गोसाह ।

त्रिभुवन पूरि अपूरि कै एक जोति मम^{१९} ठाउ^{२०} ।

जोतिहि अनवन मूरति मूरति अनवन भाउ ॥

पाठान्तर—ए मे उग्युल ५ बी बडाँली छर के प्रारम में आगी है और उग्युना बडाँली ४ तथा ५ के दूसरे चरण परम्पर स्थानांतरित है।

(१) १ ग रूप। २ रा अनेक। ३ ए परमैसा। ४ ए बाछे।

(२) १ ग मणि। २ ग साई। ३ ए जोगी ब। ४ रा अनन।

(३) १ ग मो। २ ए जमु। ३ ए आ।

(४) १ ग भाव। २ रा बनिवहि (?) ए बेमनी। ३ ए गब। ४ ग एववार।

(५) १ ग म यत्त घट्ट नदी है। २ ए गब। ३ ग ग भाव। त्रिभुवन प्राय बाबु है। ४ रा में यह पाठ नहीं है।

(६) १ ए गब। २ ए टाउ।

(७) १ ग भाउ।

अर्थ—(१) वह परमेश्वर एक होने हुए अनेक हो कर [प्रकट हुआ] है और बहुत से रूप बाछे (चारव रिण) हुए भी वह एकरूप है। (२) तीनों तीनों (आकाश वायु, मृत्युलोक) में

वही तक भी स्थान है [वही तक] वह गोसाईं (स्वामी) मगधन (मित्र-मित्र प्रकार के) रूप धारण करके भोग करता है। (३) वह कर्ता जगत् में जितना (जो कुछ) चाहता है करता है वह धन (काल) होकर [पहुँचे] या [जाये] रहेगा और [अब भी] है। (४) वह बिना किमो [एक] स्थान पर रहे समस्त स्वामी पर बिकसता है तथा वह स्वामी निमग्न और एकोकार है। (५) वह मुक्त रूप होने हुए भी समस्त स्थानों पर प्रकट है, और किसी रूप का न होने हुए भी अनेक रूपों बाधा है।

(६) एक ही ज्योति तीनों भुवनों में समस्त स्थानों पर आपूर्ण रूप से पूरित हो रही है। (७) उस ज्योति को मूर्तियों निम्न-निम्न प्रकार की हैं और उन मूर्तियों के नाम निम्न-निम्न प्रकार के हैं।

टिप्पणी—(४) बाध < बध् < बध् = बिना। (६) अपूरि < आपूरित।

[३]

सुर नर नाग जहाँ लगि अहूँ^१ । कोटि बरिस जी अस्तुति कहूँ^२ ।
पाछें सम पछिताइ कहाँ^३ । जस त तस हम जानहि^४ नहि^५ ।
कोटि बरिस जी मन फिरि आब । बुधि बपुरी बहु कहाँ पाव ।
जगत क जन^६ अहार कर दाता । करता हरता एक विभाता ।
त्रिभुवन बहु जुग एव अकेला । आपु अपान^७ रूप बहु^८ सेला ।
अलख निरजन करता एक रूप बहु भेन ।
कतहू धान भिलारी कतहू आनि नरम ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बाही। २ ए नाही।

(२) १ ए पाछ मब पछितावा कहूँ। २ ए जान।

(३) १ रा जन। २ रा नहि (?)।

(४) १ ए जग जीवन।

(५) १ रा अनूप। २ ए भी।

(७) १ ए बाध।

अर्थ—(१) देवता नगुप्त तथा नाथ जहाँ तक (जितने) भी हैं वे [तब मिलकर] यदि करोड़ बरों तक उसकी स्तुति करें (करें) (२) तो पीछे वे भी पछता कर (हार कर) रहेंगे “बैसा तु है बैसा हम किसी को नहीं जानते हैं।” (३) करोड़ बरों तक यदि मन भ्रमण कर आवे तो भी बेचारी बड़ि [उसे] वहाँ वा सनेगी? (४) वही जगत् [भर] को धर्म तथा आहार देवेवाला, उत्तरा कर्ता हुता और विपाता है। (५) तीनों भुवनों और चारों मुनों में एक और अनेक; होकर भी अपने-आप उस [धर्म] आत्मा ने अनेक रूपों में लोक रच रचता है।

(६) वह कर्ता अलख (अदृश्य) और निरजन (नित्य) है और एक रूप का होने हुए भी अनेक रूपों का है; (७) वही पर उसका भिलारी का बाधा है तो वही पर आदि (सर्वोच्च) भोग का।

टिप्पणी—(१) बपुरी < बप्पुरी [रे] = बेचारी। (४) जन < जग। (५) अपान < अप्याप आरपन्। (७) धान < धन।

[४]

जो बहु भसन सोष समाना^१ । सो बैसे क जाइ बलानां ।
 त्रिभुवन भाउ जान सम^२ कोई । जो किछु भाउ होइ सो होई^३ ।
 चारिहु^४ जुग परगट न छपाना । बिरला कौनहु जानि पिछाना^५ ।
 परगट दसहु^६ दिसा उजियारा । सरख लीन^७ पै आपु निरारा^८ ।
 जइ अपुनां निमु^९ ओहि चित^{१०} लावा । बिधि ओहि पुनि यह गुपुत^{११} दसावा ।
 गुपुत रहै^{१२} परगट जग^{१३} बरस^{१४} सरख बियापक^{१५} सोइ ।
 दूषा कोइ न आइ और भवा^{१६} महि होइ^{१७} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जा येहि लीनि काक न समाना ।

(२) १ ए सब । २ रा भावै होइहि सई ।

(३) १ ए चारौ । २ ए बिरला बन काहु पहिचाना ।

(४) १ ए बसी । २ रा लीन्ह । ३ ए निरारा ।

(५) १ ए जे आपुही । २ ए मन । ३ ए बिधि बोही पै आपु ।

(६) १ रा में यह सख्य नहीं है । २ ए बेकरी । ४ ए सरबम्पापी ।

(७) १ ए और भवा । २ ए कोइ ।

अर्थ—(१) जो अनेक बेतों में लोक में समाना हुआ (व्याप्त) है वह किस प्रकार बलाना जा सकता है (उसका अर्थ किस प्रकार किया जा सकता है) ? (२) तीसरे भुवनों में हुए माद के सभी जानता है जो कुछ भाव होता है [उसमें] वही होता है । (३) वह चारों मुर्तों में प्रकट रहा है छिपा नहीं रहा है, फिर भी बिरला ही कोई उसको जानकर पहिचान सका है । (४) वह बसो विद्याओं में उज्ज्वल (स्पष्ट) रूप से प्रकट है, और सबलीन (समस्त पराबों में व्याप्त) होते हुए भी उनसे निराला (अलग) है । (५) जिसने भी अपना चित निमु (छिड़-छीक) उसी से समाना फिर उसी को बिचाता ने [अपना] वह तत्त्व रूप दिखाया ।

(६) वह गुप्त रहता है किन्तु प्रकट होकर जगत् में बिभक्तता है और वह सर्व-व्यापक है

(७) न दूसरा कोई है न हुआ है और न होगा ।

टिप्पणी—(१) बलान < बलाना < व्याख्यातम् = वर्णन करना । (४) उजियार < उज्ज्वल ।

[५]

जइ^१ जग जनमि न ताहि पहिचानां । आहर^२ जनम मूर्त पहिचानां ।
 जगत जनमि तइ लहा म लाहा^३ । जइ^४ तोहि बिनु ताहि गों निछ चाह्वा ।
 करना किछ मम इछा^५ मोही^६ । ताहि सने प आहो^७ छोही^८ ।
 जसे^९ त्रिज निस्थ^{१०} छोहि^{११} जाना । तमे^{१२} जीमि न जाइ^{१३} दगाना ।
 मन्तुपि गोमि करों म तोरी । जो मन गुनि मानों मा^{१४} योरी ।
 ग्यान पमि कर^{१५} गम जहवा^{१६} लगि^{१७} ओ मनि कर पठार ।
 तहवा^{१८} मनि स गमनब मागे वा प मभा^{१९} ॥

पाठान्तर—७ में भडाभी ५ व चरण परस्पर स्थानान्तरित हैं।

- (१) १ ए जा। २ रा अहार। ३ ए मृए।
- (२) १ ए सीन्हा ते साहा। ७ ए जा। ३ ए तये।
- (३) १ ए इच्छा। २ ए मोही। ३ ए तेहि मेनी परि जाहीं ताही।
- (४) २ रा का पात्र स्पष्ट नहीं है ए बीमे बिब निरबै ताहि। २ रा तैसा ए तैम। ए जाये।
- (५) १ ए जी मन गुनिये ली मब।
- (६) १ ए बी। ७ ए ममु जहाँ। ३ ए म यह इच्छ नहीं है। ४ ए बी।
- (७) २ ए तहँ ली व पब तनु तें तर भेटे पार।

अर्थ—(१) [हे स्वामी] जिसने भी जपन् में जन्म लेकर तुमने नहीं पहिचाना, उसका जन्म मरण हुआ और मरने पर वह पछाया। (२) उसने जपत् में जन्म लेकर [मोहन का] काम नहीं प्राप्त किया जिसने तेरे अतिरिक्त तुमसे और कुछ चप्परा। (३) हे कर्ता मेरे मन में [भी] कुछ इच्छा है, [और वह यह है कि] तुमसे मैं तुमसे को चाहता हूँ। (४) मेरे बीब ने जिस प्रकार निरक्षयपुत्रक तुमसे जान लिया है उस प्रकार जिह्वा से उसका बहाना (वर्णन) नहीं किया जा सकता है। (५) मैं तेरी कौन-सी स्तुति करूँ? ओ भी [स्तुति] मैं मन में विचार कर लाता हूँ [तेरी महत्ता के आगे] वह जोड़ी लगनी है।

(६) जहाँ तक भी ज्ञान-बली की वृत्ति है और [जहाँ तक भी] वृत्ति का प्रवेश है (७) वहाँ तक वे चले जायें किन्तु उसके आगे उन्हें कौन संभासेया ?

टिप्पणी—(१) आहार < अहस < अफल = निष्फल। (२) साह < काम। (४) बसान < बस्त्राव < व्याख्यान = बखान करना कहना।

[६]

माहिहि आदि अत हीं अता। एकहि अरथ रूप जो अनता।
 एक अहे^१ दोसर कोइ^२ नाही। तहि सम सिस्टि रूप मुख जाही^३।
 ओहि सों जियहि जामि परवाना^४। त्रिभुवन निकट एक प^५ पाना^६।
 दोसर ना कतहू^७ तुब जोरा। दरपन सिस्टि^८ रूप मुख ठोरा।
 तोर सोज सोजत सो पाव। जो आपुन^९ सम^{१०} सोज हेरावे।
 सम भेदनि कर भदिया^{११} ओ सम^{१२} रसिक सुजान।
 एहि सम सिस्टि पिछोडी^{१३} आपु एक गिरबान ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अर्द्धाली १ ४ ५ का क्रम रा में है ५, १ ४।

- (१) १ ए एक अरथ जो रूप अनता रा एक हि रूप अरथ अनता।
- (२) १ ए सज। २ ए जोड़। ३ ए आरि म भी मस्त न जाही।
- (३) १ ए निरक्षय बीड जाना प्रवाना। २ ए बी रा तै। ३ ए जाता।
- (४) १ ए दोसर नहीं कतहू जो। २ ए सिस्टि।
- (५) १ ए आपन। २ ए सब।
- (६) १ ए सब भेदी कर भेदि। २ ए सब।
- (७) १ ए सो सब सिस्टि पेछोरी। २ ए प्रवान।

अर्थ—(१) वह भावि का भी भावि और अंत का भी अंत है, वह एक ही अर्थ (परार्थ) है [मध्य] उसके जो रूप हैं वे अर्णव हैं। (२) वही एक मात्र है दूसरा कोई नहीं है, और उसी के मुख में सृष्टि के समस्त रूप [अंत में] बसे जाते हैं। (३) जो मैं उससे [उत्तमो ह्यसौ ते] प्रमाण [वस्तुस्थिति] को जानकर मैंने तीनों भुवनों के निकट [होते हुए] एकमात्र उसी को जाना है। (४) “[हि स्वामी] तेरा जोड़ा समस्तुभ्य” कहीं भी दूसरा नहीं है; समस्त सृष्टि वर्ण [के समान] है, जिसमें तेरा ही मुख नामा रूपों में दिखाई पड़ता है। (५) तेरा पता लोजते-लोजते वही प्राप्त करता है जो अपना सब लोज (जिहन) रेंवा देता है।

(६) तु समस्त भेदों का भेदिया (जानकार) समस्त रसों का सेवेयाना और मुमान (गामी) है (७) तथा समस्त सृष्टि के पीछे तू आप ही एकमात्र वीर्याव (देवता) है।”

टिप्पणी—(७) गिरवान < वीर्याव = देवता।

[७]

सुनहू अब तही क^१ बाता । परगट भा जहि^२ बिरह बिधाता ।
सहहि^३ सरीर सिस्ति जो^४ आवा । औरि सिस्ति सम^५ ओहि कर^६ भावा ।
उहई जोति प्रगट सम^७ ठाऊ । दीपक सिस्ति मुहम्मद^८ नाऊ ।
ओहि सगि वश्य सिस्ति उपराजी । त्रिभुवन पम^९ दुहुनी बाजी ।
नाउ^{१०} मुहम्मद^{११} त्रिभुवन राऊ । ओहिसागि भएउ^{१२} सिस्ति कर^{१३} चाऊ ।
वाकी अगुरी करिक^{१४} अग्या^{१५} बाव भएउ^{१६} बुद्ध सठ ।
पावनी घूरि^{१७} जो पायन सागी^{१८} अबल भएउ^{१९} ब्रह्मंड ॥

पाठांतर—(१) १ ए सुनहि अब ताकी । २ ए प्रगट जी बा ।

(२) १ ए लीमु । २ ए जो । ३ ए जो रा जब । ४ ए के ।

(३) १ ए बाकी । २ ए सब । ३ ए जो महमद ।

(४) १ रा रामहि ।

(५) १ ए नाव । २ ए महमद । ३ ए जी । ४ ए क ।

(६) १ ए करके रा में यह राख नहीं है । २ रा ए अग्या । ३ ए भयो ।

(७) १ रा म यह राख नहीं है । २ ए बाव जी । ३ ए भयो ।

अर्थ—(१) अब उसकी बातें सुनी जिसके बिरह में बिधाता [स्वयं] प्रगट हुआ। (२) अब बिधाता [उसके बिरह में] स्वयं ही शरीर धारण कर सृष्टि में आया, तब और समस्त सृष्टि उसी का भाव [हुई] । (३) तब वही ज्योति [जगत् में] तब स्वामी पर प्रगट हुई जो कि सृष्टि का दीपक है और जिसका नाम मुहम्मद है। (४) दीप में उसी के लिए सृष्टि उत्पन्न की और [उसी के कारण] तीनों भुवनों में प्रेम की बुझनी बजी। (५) त्रिभुवन के उस राजा का नाम मुहम्मद है और उसी के लिए [बिधाता को] सृष्टि की रचना का भाव [उत्साह] हुआ।

(६) उसकी रंगली की आवाज से ब्रह्मा को लड हो गया (७) और उसके पैरों की धूल समेत ही ब्रह्मांड अबल हो गया।

टिप्पणी—(२) राह < रचयम् ।

[८]

मूल मुहम्मद^१ सम^२ जय साक्षा । बिधि नो शास्त्र^३ मदु^४ सिर राखा ।
ओहि पटतर दोसर कोइ^५ माहीं । बह सरीर^६ यह सम^७ परिछाही ।
करता गुप्त समे पहिचाना^८ । प्रगट मुहम्मद^९ काहु^{१०} न जाना ।
अस्त लसिय^{११} जहि^{१२} पार न कोई । रूप मुहम्मद^{१३} काछे^{१४} सोई ।
रूप क मात^{१५} मुहम्मद^{१६} भरा । भरय^{१७} न दोसर^{१८} एक^{१९} करा ।
ऊच कहौ पुकारि कै जगत सुन^{२०} सम^{२१} कोइ ।
परगट नाउ^{२२} मुहम्मद^{२३} गुप्त जो जानिय^{२४} सोइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मईमद। २ ए सब। ३ ए काक।

(२) १ ए कोठ। २ ए बोह। ३ ए सब।

(३) १ ए सबै पहिचाना। २ ए मईमद। ३ ए काहु।

(४) १ ए कही। २ ए जो। ३ ए मईमद। ४ ए काछे।

(५) १ ए नाम। २ ए मईमद। ३ ए भरत। ४ ए दूसर। ५ ए पाकर।

(६) १ ए सुनी। २ ए सब।

(७) १ ए नाउ। २ ए मईमद। ३ ए गुप्त ठे जानेहु।

अर्थ—(१) मुहम्मद मूल रूप और अस्त जय उनकी शाखा हुआ बिघाटा ने नौ कस्त [मूय] का मुकुट उनके सिर पर रखता (जह समस्त जगत् का राजा बनाया)। (२) जिसके सादृश्य का दूसरा कोई नहीं है, वह [मुहम्मद] शरीर है और यह सब [जगत्] उसी की प्रतिष्ठाया है। (३) गुप्त (अच्छत) कर्ता (बिघाता) को तो सबने पहिचान लिया, किन्तु प्रकट मुहम्मद को किसी ने नहीं जाना। (४) जो अस्त है, और जिसके परे कोई नहीं दिखाई पड़ता है, मुहम्मद का रूप पारण किए हुए वही बिघाता है। (५) उस रूप का नाम [उसने] मुहम्मद रखा वह कोई दूसरा अर्थ (परार्थ) नहीं है, वह [बिघाता के साथ] एक ही (अनिस) कता है।

(६) मैं ऊँचे [स्वर से] पुकार कर कहता हूँ और जगत् के सब [प्राणी] इसे सुन लें; (७) [बिघाता के उत] प्रकट [रूप] का नाम मुहम्मद है जिसका गुप्त (अच्छत) रूप वह स्वयं मात है।

टिप्पणी—(१) मदु < मुकुट। (४) अस्त < अस्तव्य। (५) करा < कता।

[९]

अब^१ सुनु चहु मीत कै^२ बाता । सत नियाउ^३ सास्तर के^४ दाता ।
प्रथमहि अबाबकर^५ परवाना । सत गुर^६ बचन मत भिय^७ जाना ।
दूजे उमर नियाउ क^८ राजा । जेइ सत पिते^९ हुना बिधि काजा ।
तीजे ठाउ राउ चसमाना^{१०} । जेइ र भेद बेद का^{११} जाना ।
चौथे^{१२} अली सिध बहु^{१३} गुनी । दान खरग जेइ^{१४} साधी हुनी ।
सत आदि^{१५} सास्तर कर^{१६} अउर रहे सपारि^{१७} ।
परगट करम वै साथे^{१८} गुप्त हिये^{१९} करतार ॥

पाठान्तर—रा मे उपर्युक्त अर्द्धांती २ के चरण परस्पर स्वामांतरित

- (१) १ रा अब जो। २ ए. बी। ३ ए सत्य स्या
- (२) १ ए अबार्क। २ रा सत कर ए सत्य गुर
- (३) १ ए दूने उमर स्याम कर। २ ए बे मुत नि
- (४) १ ए सिने उसमान निरर्थ अस्याना। २ ए बे
- (५) १ ए बीये। २ ए बड़। ३ ए बे।
- (६) १ ए सत्य स्याव। २ रा में यह सत्य नहीं है।
- (७) १ ए अ साबा। २ ए हिये।

अर्थ—(१) अब चारों दिनों (मुहम्मद के उत्तराधिकारी चार को सत्य स्याव और घातक के बता दे। (२) प्रथम प्रमाण रूप से (मुहम्मद) के बच्चों को भी मैं मंत्र जाना। (३) दूधरे उमर के जो वे जिन्होंने विजातार के कार्य के लिए पुत्र और पिता का हुनन किया। (४) (अलीछा) उसमान माले हैं, जिन्होंने बेद (दिख जाल) का बेद अली सिंह के [गुल० बीये अली सिप बरियार—जायसी] जिन्होंने साबा (बश में किया)

(६) और जिन्होंने धामन के बादि सत्य को इकट्ठा किया में बर्ष की साधना की किन्तु गुप्त (प्रच्छन्न) रूप से हुदय में कतार की

निष्पत्ती—(१) मीत < मित्र। (२) मत्त < मत्र। (६) सचार करना समेटना।

[१०]

साहि सलेम जगत भा^१ मारी । जइ धूबी^२ घर^३
जो रे कोपि^४ परी^५ पां चाप^६ । इधर कर इ^७
नो गइ मान दीप सम^८ ठाक । मएव^९ मरम अति
भतरिग^{१०} कर^{११} अस राज सभाउ^{१२} । जग मह बोइ म
दमहुं लिा^{१३} मामी जग सवा । गगन सार भइ
प्रियिमी यति गुम^{१४} गाहक दम मो पारि
पर मुश्^{१५} गजन मापुगस गदव^{१६} गरिस्ट

पाठान्तर—(१) १ ए धुम। २ रा जिन्हें बहु बेरनी ए जेद

- (२) १ ए बीरि। २ ए बीरी पर। ३ ए चारी। ४ ए रा दवर का दशमन। ५ रा चारी।
- (६) १ ए मत्र। २ ए धी। ३ ए विनि क।
- (४) १ ए अथिग रा आरग। २ ए बी। ३ ए लारा
- (५) १ ए दमो दिया। २ ए मारी। ३ ए भा ग

(७) १ रा भुमि (?) । २ ए नक ।

अर्थ—(१) सखीय [घाह] जगत् में भारी बावसाह हुआ है जिसने [अपने] बल से समस्त मेदिनी (पृथ्वी) का भोग किया। (२) जब वह कुपित होकर पृथ्वी (घोड़े के पायदान) में पैर बाँधता (बधाता) है तब ईश का ईशवासन [भी] काँपने लगता है। (३) नील बंड और सात हीरों में सर्वत्र उसका भ्रम (भय) हो गया है और उसका नाम उससे भी आगे चला गया है। (४) उसने (जब) अतरिक्त [के राज्य] के समान [पृथ्वी का] राज्य संभाला जगत् में कोई [उससे] पूछ करके वाला शेष न रहा। (५) बसो विज्ञानों ने जगत् में उससे शंका मानी और उसके अद्वय की स्वात्मा से लंका [तक] में जलबली मच गई।

(६) वह पृथ्वीपति गुणग्रहक और अनुबंध [विद्याओं] का घर है (७) तथा दूसरों (राज्यों) की भुजाओं को नष्ट करने वाला सत्पुरुष, गुरु, गरिष्ठ और आग्नी है।

टिप्पणी—(१) भूज < भुज = भोग करना। (५) शार < स्वात्मा ।। (७) भुम < भुज । सापुरुष < सत्पुरुष । भुजान < भुजान ।

[११]

गरुडा तप गरुडा अवतारा^१ । काविल हिरु भएउ^२ एक वारा ।
उत्तर ह्रम गिरि रुहि परवाना^३ । वसिष्ठ सत मथ रुहि आना^४ ।
पच्छिड^५ भएउ^६ कम साम खाई^७ । पूरव जलनिधि^८ तीर दोहाई ।
नील बंड प्रियमी^९ भएउ^{१०} अनरु^{११} । धरम दुदिष्टिस्त सत हरिचद्र ।
दान अरग सरगहि^{१२} क साबा^{१३} । विभुवन सिस्टि न पटनर पावी^{१४} ।

नील बंड^{१५} असीसि^{१६} पिरधिमी^{१७} राज करु^{१८} जग माह ।

जी रुहि ससिहर^{१९} सूर पब कामेस जग पर छाह^{२०} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए गरुड तप गरुडे जीनारा । २ ए काविल हिरु मा ।

(२) १ ए जा प्रवाना ।

(३) १ ए पच्छिड पनी रा पछु भएउ । २ ए सवकाई । ३ रा पुरव जलनिधि ।

(४) १ ए में मथ पथ्य नहीं है । २ ए आगवु ।

(५) १ ए सरग करण । २ ए साबा । ३ ए साबा ।

(६) १ ए वेहि । २ रा सीस । ३ ए कक ।

(७) १ रा ससि जी । २ ए छाह ।

अर्थ—(१) उसके मुख तप और मुख अवतार से काविल तथा हिरु का द्वार एक हो गया। (२) उत्तर में ह्रम गिरि (सुमेरु के पास का एक पर्वत) तक उसके राज्य का प्रमाण हो गया और वसिष्ठ में सेगुबंध (रामेश्वर) तक उसकी आज्ञा हो गई। (३) पश्चिम में कम तथा दाम वेग उसकी खाई बन गए और पूर्व में जलनिधि के तट तक उसकी बुझाई हो गई। (४) नील बंड पृथ्वी में आनंद हो गया [यवोक्ति] धर्म में वह मुबिष्टिस्त तथा सत्य में वह हरिचंद्र हुआ। (५) अद्वय-वाच में स्वर्ग तक का ध्यान करता है तो भी तीनों भुवनों की सृष्टि में उसका समतुल्य नहीं पाता है।

(६) नील बंड पृथ्वी उसे आशीर्वाद देती है "भुम [तब तक] जगत् में राज्य करो (७) जब तक शक्ति पूर्व और पब की छाया जगत् पर नहीं रहे।"

टिप्पणी—(१) गरुडा < गरुड । (४) प्रियमी < पृथ्वी । (५) नी < लय = ध्यान । (७) ससिहर < राघवर = चंद्रमा । सूर < सूर्य । भुज < भुज < पब ।

[१२]

म्याइ किरति^१ जग ऊच उत्तगा । भेंड हुडार चरहि ए^२ सगा ।
 याइ बरान न मोहि आ^३ बही । गाइ क पोछि^४ सिध कर गही ।
 गरआ राज महा तप भारी । फूली निहकट^५ फूलवारी ।
 राजनीति बसि क^६ ससारा । बरी अबर सों मोलि^७ न पारा ।
 नीर सीर कर होइ बिचारा । जब चाहिअ^८ सब पाइअ बार ।
 हरस अनब उछाह^९ सुख सम^{१०} कोई रस^{११} मान ।
 बारि^{१२} दुख सताप भ^{१३} पुहुमी छाडि^{१४} परान^{१५} ।

पाठान्तर—(१) १ रा म्याइ करब ए म्याय करण ।

(२) १ ए जा मुह । २ ए गाइ क पूछि ।

(३) १ रा बहु कर्मक ए निकट नीर ।

(४) १ ए राजनीति जां कीन्ह । २ ए बीर अवधी त बोस ।

(५) १ ए चाही ।

(६) १ रा ए सब । २ रा म यह दख नहीं है ।

(७) १ रा सम । २ ए छाडि । ३ रा बरान ।

अर्थ—(१) उसके म्याय की कीर्ति जगत् में [यहाँ तक] ऊँची और उत्तुंग (अत्यंत ऊँची) है कि नेत्र तथा हुँकार (भेड़िए) [उसके राज्य में] एक साथ चरते हैं । (२) उसके म्याय का बरान (बरान) मुससे नहीं कहा (किया) जाता है । पाय की वृष्टि [उसके राज्य में] तिह्र अपने हाथ से बकड़े रहता है [किर भी उसका अनिष्ट नहीं कर पाता है] । (३) [उसके] महान् और भारी तप से [उसका] राज्य भी गुब (गारी) है, और उसमें बिना कीलों (कुत्तों) की फूलवाड़ी (मुख समृद्धि) फूल रही है । (४) वह संसार में ऐसी राजनीति [का निर्वाह] कर रहा है कि जली निर्बल से बीत नहीं सकता (उसका कुछ बिबाड़ नहीं जाता) है । (५) [उसके राज्य में] नीर और (सत्याचार्य) का बिचार होता है और इसके लिए जब चाहिए उसका द्वार मिल जाता है ।

(६) [उसके राज्य में] हर्य आनंद उससे और गुब है और सभी प्रेम धारते हैं; (७) बारिख दुख संताप और मय [उसके राज्य में] पुष्पी को छोड़कर भाग गए हैं ।

टिप्पणी—(१) किरति < कीर्ति । उत्तग < उत्तुङ्ग = अत्यंत ऊँचा । (२) बरान < बरपाय < व्याख्यान = वर्षन । (५) बार < द्वार । (७) पराय < पलाय < परा + अप = भागना ।

[१३]

बहि मुग नहीं दान क^१ बाता । रायन्ह पाट म क^२ कर दाना ।
 जब बोह दान कर^३ बार उबार^४ । करन आइ तह^५ हाथ पसार ।
 दान निमाम मरण मे बाज^६ । हतिम^७ करन भोज बलि राज^८ ।
 सन हरिष^९ दाम^{१०} बलि बग । भरम दुषिस्टि^{११} बलि^{१२} ओनरा ।
 गुन^{१३} बिद्या मरि भोज न पावा । साना बिजम^{१४} जाइ म लावा ।

सात दीप नो खड पिरिभिमीं चहुं दिसि हरख अनद ।
एक बिरह^१ दुख परिहरि दोसर ओर^२ न दद ॥

पाठांतर—(१) १ ए की। २ रा मुकुट।

(२) १ ए बबरे बान को। २ ए करन बाये को तब।

(३) १ ए गी बावै। २ रा हातिम। ३ ए कावै।

(४) १ ए हरिचंद्र। २ ए बानी। ३ ए जो।

(५) १ ए गान। २ ए जाय।

(६) १ रा हर।

(७) १ ए बीर। २ ए दूसर बीर।

अर्थ—(१) उसके बान की बात किस मुक्त से कहे [जबकि] वह राजाओं को पाद (सिंहासन) और मुकुट देता है? (२) जब वह बान का द्वार कोसता है तब कर्ण भी वहाँ भाकर [बान प्राप्त करने के लिए] हान पैसाता है। (३) [जब] उसके बान की बुझी स्वयं तरु बाहर बड़ी हातिम बर्ष भोज और बलि सज्जित हो गए। (४) सत्य में हरिचंद्र बान में बलि की कला, और कर्म में सुबिष्ट होकर वह कलि में अबतीत हुआ है। (५) पुत्र बीर बिद्या में उसकी समकक्षता भोज भी नहीं कर कर पाता है और साक्षा (वीर्य) में बिहम भी [उसके समकक्ष] नहीं लाया जा सकता है।

(६) सप्तो हीनों तथा नवो कडों में पुष्पी में चारों ओर जानक हो रहा है (७) और एकमात्र बिरह के दुख को छोड़कर [पुष्पी में] दूसरा इन्द्र नहीं है।

टिप्पणी—(१) महुक < मुकुट। (२) बार < द्वार। उबार < ऊबार < उव्पाटय = दोसना। (४) बरा < कला। (७) बर < इन्द्र।

[१४]

नख^१ वड़े जग बिधि पियारा^२ । ग्यान गदज^३ ओ^४ रूप अपारा^५ ।
सवरि नाठ^६ परस जो आव । ग्यान लाभ होइ^७ पाप गवारै ।
जाइह मया जीउ सेंठ^८ करहीं । सहज बोलाइ^९ ताज सिर धरहीं ।
जा नह^{१०} निस्ति^{११} करहि^{१२} प्रतिपारहि^{१३} । क्या कलन बोइ जग^{१४} डारहि^{१५} ।
बुझि गुरु सिस दिस्टि प्रतिपाला^{१६} । सो आपन^{१७} जम थोइ निवासा^{१८} ।

गुरु दरसन दुल भोवन भनि यनि दिस्टि जो भाउ^{१९} ।

जो^{२०} गुरु मिमज^{२१} दिमि^{२२} प्रतिपाल^{२३} सो चारिहु^{२४} जुग राउ ॥

पाठांतर—(१) १ रा सेख। २ ए बीर अपारा [दुख अपने छंद का प्रथम चरण]।

३ रा समृद्ध। ४ ए जे। ५ रा स्ववारा।

(२) १ ए सौरि पाव। २ ए हो।

(३) १ ए ते। २ ए बलाह।

(४) १ ए जाके। २ रा वृष्टि। ३ ए करहि। ४ ए जे।

(५) १ ए जे मिन गुरु मिस्ति न पाया। २ रा अपना। ३ ए भावै नाया।

(६) १ ए धन जे मिन्ति मुमाड।

(७) १ ए सो। २ ए सिल गुरु। ३ ए पाली रा प्रतिपासहि। ४ ए चारी।

अर्थ—(१) जगत् में बड़े शास्त्र (सोख घीस मुहम्मद) बिबाता के प्यारे थे; वे ज्ञान में गुरु और जप में अपार थे। (२) यदि कोई उनके नाम का स्मरण करके उनका स्पर्श करने आता, तो उसे ज्ञान-ज्ञान होता और वह अपने पाप नष्ट कर जाता। (३) जिसको वे भी मिल गया (ध्यापुर्ण प्रेम) करते उसको वे सहज ही बुलाकर उसके सिर पर ताज रक्त देते (राजा बना देते)। (४) जिसको वे अपनी वृष्टि में कर लेते उसका वे प्रतिपालन करते और इस जगत् में [ही] उसकी कामा के कर्तक को धो जाते। (५) जिसने उनके साथ गुरु-सिष्य वृष्टि का प्रतिपालन समझ-बूझ कर किया, उसने अपना यम (काल) थोकर निकाल जाता।

(६) गुरु का दर्शन बुद्धों को धो डालने वाला होता है, और वह वृष्टि बन्ध है बन्ध है जो गुरु-दर्शन पर मोक्ष (अमुराग) रखती है। (७) जो [साधक] गुरु-सिष्य वृष्टि का प्रतिपालन करता है वह चारों युगों में राजा होता है।

टिप्पणी—(१) पियार < प्रियाम्। गबज < गुरु।

[१५]

सुख^१ मुहम्मद^२ पीर^३ अपारा। सात समुद्र नाव कडहारा।
सुबहिर पाँउ जो आब^४ कोई। परबन^५ मुख देखत सुख^६ होई।
फुमि^७ दुहु^८ जग पूज मन आसा। परसत बरन पाप गा^९ नासा।
ग्यान छाड़ि^{१०} मुख^{११} और न बाता। दस ओ चारि मल सिधि दावा।
बिसमौ हरन न घट महि लाहे^{१२}। सतत रहहि लीन^{१३} लो माह।
दाता ओ^{१४} गुन गाहन गीस मुहम्मद^{१५} पीर।
दुहु^{१६} बूळ निरमल सापुरुस गद्यम गरिस्ट गमीर ॥

पाठांतर—(१) १ रा खे। २ ए महम्मद। ३ ए पीर।

(२) १ रा बेद जी। २ रा प्रबमहि ए प्रबम। ३ रा सिधि।

(३) १ रा ए पुनि। २ ए दुहु। ३ ए पी।

(४) १ ए छोड़ि। २ ए जे। ३ रा छई अस्त लहि या उजिवात [गुन अगने छत्र का झुमरा बरन]।

(५) १ रा बिनमी हसन ब घट लाहै ए बिन्मी हसन न जीव न लाहे। २ ए रहन। ३ ए भील रा भीन्। ४ ए माहे।

(६) १ ए नै वह गद्य नहीं है। २ रा गीन मुहम्मद ए भीन महम्मद।

(७) १ ए दुद।

अर्थ—(१) शेख मुहम्मद [जीस] अपार [शक्ति-संपन्न] पीर थे; वे सातों समुद्रों में भीरा के बन्धवार [जो भीति लहायक होते] थे। (२) उनके चरणों का स्मरण कर जो कोई [उनकी सेवा में] आता था, प्रथम तो उनका मुख देखते ही उसको सुख [प्राप्त] होता था। (३) तबर्नवर दोनो जगन्—इस्लाम और बरलाम—में उनके मन की आछाई पूरी होनी थी और उनके चरणों का स्पर्श करने से उनका पाप नष्ट हो जाता था। (४) ज्ञान के अतिरिक्त उनके मन में कोई और ज्ञान न होनी थी और वे अनुयायी [विद्यार्थी] तथा भक्त-निष्ठ थे। (५) वे अपने घट

(मंतकरण) में विस्मय (विचार) और हर्ष नहीं लाते वे और निरंतर कम (ध्यान) में लीन रहते थे।

(६) पीर मुहम्मद शीस बसता और पुन-प्राहक थे। (७) वे दोनों कुम्भों—इहलोक परलोक—में निर्मल सत्पुण्य गुण परिष्ठ और पंभीर थे।

टिप्पणी—(१) कंडहार < कर्नहार। (४) मंग < मंग। (५) ली < लय = तस्मीनता। (७) सापुरस < सपुरिम ~ सत्पुण्य।

[१६०]

सूर उद उदहल^१ ससारा । उद अस्त लहि^२ भा उजिआरा ।
आके नैन सूर उजिआरे । परम गिआन^३ चेताए^४ सार ।
आकर^५ जग गादुर ओतारा । ता कह^६ सूर उदै^७ अधियारा^८ ।
जो र^९ साहस^{१०} कलि ओटबै^{११} कोई । साहस सँउ^{१२} निस्वे^{१३} सिधि होई ।
सेख^{१४} मुहम्मद^{१५} सिद्ध^{१६} अपारा । साहस बामु^{१७} सिद्धि दनिहार ।
जस पारस^{१८} क परसत भीन हम होइ जाइ^{१९} ।
तिमि मे सेक^{२०} मुहम्मद^{२१} वख^{२२} बिनु साहस सिधि पाइ ॥

पाठांतर—(१) १ ए उजिअल। २ ए कलि।

(२) १ ए प्रमपव प्यान। २ रा म यहाँ 'वे' और है।

(३) १ ए आके। २ रा ठिन्हलहँ ए तावे। ३ ए उवत। ४ ए मंभ्यारा।

(४) १ ए मे यह खन्व नहीं है। २ रा सहस। ३ ए उदै। ४ रा सो ए वे। ५ ए निरबी।

(५) १ रा गेख। २ ए महुंगव। ३ ए पीर। ४ रा ए बाजु [अन्यत्र प्रायः 'बामु' जाया है]।

(६) १ ए जैन पाहन। २ ए ताम। ३ ए जाहि।

(७) १ रा गख। २ ए जा। ३ ए परसत। ४ ए पाहि।

अर्थ—(१) [जिस प्रकार] सूर्योदय से संतार उदयवान् होता है उसी प्रकार उनका प्रकाश उदयावस से अस्तावस तक हुआ। (२) जिसके नेत्र सूर्य [के प्रकाश] से प्रकाशित हैं उसके तारे (नेत्र-तारक) परम ज्ञान से चेतित हो जाते हैं। (३) किन्तु जिसका अवतार (अव्य) ही जगत् में गादुर (जमगादुर) का हुआ हो, उसके लिए सूर्योदय से भी अवकार ही रहता है। (४) यदि कोई कलि में साहस करे, तो साहस से निश्चय ही उसको सिद्धि [प्राप्त] होती है। (५) [किन्तु] शोध मुहम्मद [पीस] एते अपार सिद्धि थे कि [किसी के] बिना साहस लिए भी [उसको] सिद्धि देने वाले थे।

(६) अंतःस्पर्शमयि के स्पर्श करते ही गीन [पादु] भी हेम (स्पर्श) हो जातो है। (७) उसी प्रकार मैंने शोध मुहम्मद (पीस) को बैक कर बिना साहस के ही सिद्धि प्राप्त की।

टिप्पणी—(१) उदहल < उदहलस < उदयिन् = उदयवान् उपनि-गीत। (२) माटव < माउट < मा + वन् = चरना। (३) बामु < बग्ज < बग्ज = रहित बिना। (४) भीन < भिद = हीन म्ल रूप विमृश।

[१७]

परम तंत ली लीन^१ जो^२ जान । सो मन के आखर^३ पहिचान^४ ।
मन के आखर^१ बिखम अपारा । गुरू होइ सो^२ लाव पारा ।
चहे^३ मन के आखर^४ लखि आवै । सहज सो^५ आपु अपान गवाव ।
गुरू पीर चाहहु^६ परसादा । भीन्हहु मन हुतें छाडि विवादा^७ ।
प्रगट बला सम^८ काहु^९ दसा । पै बिरथा जन गुप्त सरसा^{१०} ।

य दोऊ बिधि निरमय^१ सिस्ति राउ^२ अग घीर ।

इन्ह वूनो मिथ ऊपर^१ गौस मुहम्मद^२ पीर ॥

पाठांतर—(१) १ रा कीन्ह। २ ए जे। ३ ए पर। ४ ए पहिचान।

(२) १ ए पर। २ ए गरबा हो सो।

(३) १ ए चेही। २ ए बर। ३ ए ते।

(४) १ ए जाहि रा चाह। २ ए ते भीहा मन बाव बेवारा।

(५) १ रा ए सब। २ ए काहु। ३ ए सुरेखा।

(६) १ ए यह वूनी बिधि निर्मया। २ ए राय।

(७) १ ए सिर ठाकुर। २ ए गौस महुमद रा गौस मुहम्मद।

अर्थ—(१) जो परम तरह में कय-भीन [होना] जानता है वही मन के अखर (बोल) पहिचानता है। (२) मन के अखर (बोल) अपार (अव्ययिक) बिषय होते हैं; यदि गुप्त होता है तो वह [सापेक्ष सिद्ध] जो उन मन के अखरों के] पार लगा देता है। (३) जो मन के अखरों (बोलों) को देख जाना चाहे, वह सहज भाव से स्वयं अपनेपन (आत्माभिमान) को मर्यादा दे। (४) यदि तुम गुप्त अथवा पीर का प्रसाव (घनकी कृपा) चाहते हो तो उन्हें मन से समस्त विबाध छोड़कर पहिचानो। (५) [ईश्वर की] प्रकट कला तो सभी कीई देखते हैं, किंतु उसकी गुप्त कला के संबंध में सरेख (आत्मी) बिरते जन होते हैं।

(६) ऐसे दोनों [प्रकार के आत्मी] विद्या के द्वारा लुब्ध के रागा और अज्ञान में पीर निमित्त होते हैं; (७) [किंतु] पीर पील मुहम्मद ऐसे दोनों [प्रकार के] सिद्धों के ऊपर [हए] हैं।

टिप्पणी—(१) तत < तत < तत । आनर < अखर । ली < लव = उत्सीनता । (५) राउर < संक्षिप्त = जिसमें उपर्युक्त से घटीर आदि का सोपन किया हो।

[१८]

ग्यान समुद अघाह गमीरा । जइ^१ सवा सो लागेउ^२ लीग ।
काहु^३ किण^४ मिर सौ मुझावा^५ । बोइ^६ अग थोइ ब आया ।
काहु^७ जाइ हाय^८ मुह^९ धोवा । काहु^{१०} पानि पिया क गोवा ।
बोइ जाइ दानि फिरि आवा । जियन^{११} गुफ्त^{१२} सम^{१३} काहु^{१४} पावा^{१५} ।
नागर^{१६} समुद के^{१७} नीर बिहना । प बिपला^{१८} मिर पुम्ब ब पूता ।
जावह^{१९} जगिअ^{२०} निमूये^{२१} तावह^{२२} तैमिअ^{२३} मिद्रि ।
रुमि अगा पीर बलिगुग महि^{२४} ग्यान परम^{२५} ब निर्दि ॥

पाठान्तर—उपर्युक्त अक्षरों ४ के बोधो वरण परस्पर स्थानान्तरित हैं।

- (१) १ ए जह। २ ए छाया।
- (२) १ ए काहु ते। २ रा छायावा। ३ ए कोठ।
- (३) १ ए काहु। २ रा हाव। ३ ए मुल। ४ ए काहु पानी पीअवो।
- (४) १ ए पुण्य। २ रा ए सब। ३ ए काहु। ४ ए मावा।
- (५) १ ए नातरि। २ ए में यह प्रत्यय नहीं है। ३ रा विरसे। ४ रा का
- (६) १ ए बीसी। २ ए निर्वी तन। ३ ए ताके। ४ ए तीसी।
- (७) १ ए में। २ ए जर्व।

अर्थ—(१) [पीर पीस मुहम्मद] ज्ञान के अथाह पंजीर समुद्र थे; जिसने भी उनकी सेवा की वह [अबसापर के] तीर (किनारे) लग गया। (२) किसी ने [ज्ञान के उस समुद्र में] तिर से दुबकी छपाई, तो कोई उसमें अंग छोड़कर ही [निष्कल] आया। (३) किसी ने जानकर उसमें हाव-मुह बोया तो किसी ने पोषण करके उसमें बानी पिया। (४) कोई आदर उसे देखकर ही लौट जाता। किन्तु जीवन का सुफल [देते] सभी किसी ने प्राप्त किया। (५) नहीं तो उस [ज्ञान-] समुद्र के तीर के किना ही रह गए क्योंकि अथर्व ही थे बिरसे थे जिनके कपाल (भाग्य) में पुन का यह पुण्य [संचित] था [कि उस ज्ञान-समुद्र के तपक में आते]।

(६) जिसको बैसा निश्चय था, उसको उस प्रकार की सिद्धि मिली। (७) पीर (पीस मुहम्मद) कस्मिया में ज्ञान और धर्म की निधि [के रूप में] अथर्व अवशिष्ट हुए।

टिप्पणी—(१) गोवा < गोवन। (५) पुण्य < पुण्य < पूर्व। पुन < पुण्य।

[१९]

ओ कोइ मन इच्छा कै आव । देखत मुख परतिग्या^१ पावै ।
ता^२ कह ब्रह्मग्याम बित^३ आवै^४ । ओ ली छोन^५ तत दखराव^६ ।
सोवत जो दिन^७ आपु गबावै । जसे^८ हाट मोंट धरि आव ।
करम बात पै^९ जानि न आई । जहि जसि^{१०} लौ तहि तसि अधिकारी^{११} ।
जोहि सिर पुत्र^{१२} करम क रेखा । तेह^{१३} जग सख^{१४} मुहम्मद^{१५} देखा ।
जो दिठिआर बिधि सिर^{१६} तिन्ह भट^{१७} बाबा तूर ।
ज गादुर क निरमए^{१८} तिन्ह अधिभारा^{१९} पूर^{२०} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए परतग्या।

- (२) १ ए था कह ब्रह्म ग्याम बितावै रा आकह ब्रह्म ग्याम अब आवै। २ रा सोह। ३ ए निशारी।
- (३) १ ए सेती जो दीन। २ ए सो जिन।
- (४) १ रा जो। २ ए जस रा जैसन। ३ रा बिधि पाई।
- (५) १ ए पूर्व। २ ए ते। ३ रा छेक। ४ ए मुहमद।
- (६) १ ए जो रे डीठा बिधि निरा। २ ए तेहि घर।
- (७) १ ए सिरा। २ ए अम्पारे। ३ ए मूर।

अर्थ—(१) यदि कोई मन में इच्छा करके आता था, तो उनका मुख देखते ही वह प्रतिगा

(साध्य तरह का निर्देश) प्राप्त कर लेता था। (२) उसको बिल में ब्रह्म का ज्ञान या ज्ञाता या भीरु स्मयी होने पर उसको [परम] तत्व दिखाई पड़ने लगता था। (३) [किन्तु] जो सोच अपने दिल में बाँधता था वह तो जैसे हाट में अपनी मोट (गठरी) रख (छोड़) जाता रहा हो। (४) किन्तु कम (साध्य) की बात जानी नहीं जाती है; जिसकी जैसे कम (तत्त्वज्ञानता) होती थी उसे उसी प्रकार अधिकता [सिद्धि] प्राप्त होती थी। (५) जिसके कपाल (माध्य) में पूर्वाभिज्ञत कर्मों की रेखा होती थी वही इस जगत् में शोक मुहम्मद [गीत] को देखता (उनका हसन करता) था।

(६) जिसको बिधाता ने दृष्टि वाले निर्मित किया था, [शोक मुहम्मद गीत के संदर्भ में माने से] उनके घटों (अंतःकरणों) में [ज्ञान का] त्वय बना; (७) किन्तु जिसको उसने पादुर (समगादुर) करके निर्मित किया था उनके घटों में पूरा अंधकार रहा।

टिप्पणी—(१) परमिष्या < प्रतिज्ञा = साध्य बचन या तरह का निर्देश। (२) (४) ली < लय = तत्त्वज्ञान। तत् < तत् < तरह। (३) हाट < हट = बापण बाजार। (५) पुष्प < पुष्प < पूर्व = पूर्वाभिज्ञत। (६) तुर < त्वय = तुम्हीं। विधि < दृष्टि।

[२०]

एहि^१ कलि जते^२ पड़ित भए । मूढ मुझाइ^३ सिद्धि लै गए ।
अरु अनग मूर्ख जग^४ आए । ते^५ सब^६ ब्रह्म पद^७ ध्यान चैताए ।
ध्यान ध्यान छुटि और न जाना । मेस बिमेल दुहु जग^८ राजा ।
जो कोई चारि दस सब^९ रहा । त छाडा दुहु जग^{१०} सध^{११} गहा^{१२} ।
या उन^{१३} मया विस्ति के^{१४} हेरा । त आपुहि दुहु^{१५} जग सों^{१६} फरा ।

हिंया अजोर नहि^{१७} पटतर^{१८} पाई कोटि सूर परगाम ।

सीनिउ शोक सबे जो बीठा^{१९} गहवा गरब^{२०} गरास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बेहि। २ ए जेठि। ३ ए मुझावे।

(२) १ ए जा। २ ए लो। ३ रा मब। ४ ए प्रमपब।

(३) १ ए हुमी जुग।

(४) १ रा ए मग। २ रा निहु छाबेर बहु छटि ए ते छाडा दुहु जुग। ३ रा ए मम। ४ ए रहा।

(५) १ रा बारह ए जगम। २ ए मरि। ३ ए दुहु। ४ ए जुग ते।

(६) १ ए शिया अवारिम। २ रा मे पाठ गपट ली है।

(७) १ ए सीनि लोर निज पी बना। २ रा मगब।

अर्थ—(१) इस कलि में जितने भी पड़ित (जाने) हुए, मूढ मुँझावर (उनकी शिष्यता ग्रहण कर) सिद्धि लेकर चले गए। (२) संसार में अनेक भ्रम भी आए, और वे सब भी [सिद्ध मुहम्मद गीत की दृष्टि से] ब्रह्म-पद के [हिंसे वाले] ज्ञान में जेतित हुए। (३) उन्हें भी ज्ञान-ध्यान छोड़ कर और कार्य न रहा—इस प्रकार वैष्णवी और वैष्णवियों दोनों ही [उनके संदर्भ में आकर] संसार के राजा हुए। (४) जो कोई चार दिन भी उनके साथ रहा, उसने दोनों जगत्—इहलोक और परलोक—को छोड़कर उनका संग बरखा। (५) जिसकी ओर उन्होंने मया (हृदयार्थ में) की दृष्टि करके देखा, उसने अपने को दोनों जगत्—इहलोक और परलोक—में मोड़ लिया।

(६) हृदय के प्रकाश की तुलना कोटि सूर्य का प्रकाश भी नहीं कर सकता है, (७) घरी कारण है कि [ऐसा ज्ञानी] पुरुष गर्व के घास से सोनो लोको को छोड़ बैठता है।

टिप्पणी—(२) जनेय < जनेक। (१) सूर < सूर्य।

[२१]

बारह बरिख^१ तहाँ गी^२ दुर। जहाँ सूर ससि बिस्टि न पर।
बिकट बिखम औ^३ मयावन ठाऊ। कलिभुग धुष दरी ओहि नाऊ^४।
बहु विसि परबत बिखम अगमा। तहाँ न केहू^५ मानुस गमा^६।
तहाँ जाइ क जपेउ^७ विधाता। क अहार बन जामुनि पाठा।
मन मसग मारि बन किया। ग्यान^८ महारम अत्रित पिया।

साहस उदित अपान साबि कै^९ ओन्हि सिद्धि अबराधि^{१०}।

बारह बरिख^१ रहे बन परबत एए जो^२ ब्रह्म समाधि^३।

पाठान्तर—(१) १ ए बरिख। २ ए धुष। त्रिभु बरि स्वाम का नाम अमली ब्रह्मानी में देता है। ३ ए में यह शब्द नहीं है, ए के। प्रत्युत केवल का मुद्राव है कि यहाँ 'गी' का जिस फारसी-लिपि के लेखन प्रमाण के कारण 'के' पड़ा गया। 'गी' तथा 'के' दोनों फारसी लिपि में एक ही प्रकार से लिखे जाते थे।

(२) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए बरिखर जो नाऊ।

(३) १ ए बनहुँ। ३ ए मगमा।

(४) १ ए जपा।

(५) १ ए गमा।

(६) १ ए साहस उठे अपान जो। २ ए राधि।

(७) १ ए बरिख। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए ब्रह्मा।

अर्थ—(१) वे बारह वर्षों तक वहाँ जाकर छिपे रहे जहाँ सूर्य और ससि भी दिखाई नहीं पड़ते थे। (२) वह बिकट विषम और मयावना स्वाम है कलिभुग में उसका नाम धुष दरी है। (३) [वहाँ] चारों दिशाओं में विषम और अगम्य पर्वत हैं, और वहाँ किसी प्रकार भी मनुष्य का गमन [संभव] नहीं है। (४) वहाँ जाकर उन्होंने बन की जामुन के पत्तों का आहार कर विधाता को जपा। (५) [वहाँ] उन्होंने मन के मसग (मसगज) को मारकर मन में किया और ज्ञान महारम के अमृत का पान किया।

(६) परित साहस के साथ आत्मा को साथ कर उन्होंने सिद्धि को अबराधि (आराध) किया (७) अब वे बारह वर्षों तक बनो-पर्वतों में ब्रह्म-समाधि लगाए बने रहे।

टिप्पणी—(५) मसग < मसगज = उमसत [हाथी]। (६) अपान < अपान < आरामन।

[२२]

अब सुनु सिजिर सान सिरयानी । रन अमिट बुभित्त गियानी ।
 गुन बिषा साहस सिधि पूरा । पडित पढ़ा चढ़े रन सूर, ।
 दाहिनि भुजा साहि ब भारी । जहि बिसि लड़ा सोइ दिसि गाढ़ी ।
 जा कह मया वचन मुख थोले । जिम धुव अबल न बबहू डोले ।
 महा दानि अस समुद हिलोरा । असत न मुख सों निकस थोरा ।
 रन सरूप ओ सूर छट रस बिद्या जान ।
 दानि करग सत साहस दस ओ चारि निधान ॥

पाठांतर—यह छंद केवल रा में है, ए में नहीं है। छेप प्रतिपां यहाँ लक्षित हैं।

अर्थ—(१) अब सिर देने वाले (बीर) जिस ली को (के विषय में) सुनो जो रन में बभित्त (बुझै) बुझिमान और जानी है (२) जो धुव बिद्या और साहस की सिद्धि में पूर्ण है, और जो [साहसों का] पढ़ा हुआ पंडित और चढ़ाई करने पर रन में दूर है (३) जो दाह की भारी दाहिनी भुजा [के लक्षण] है, और जो ऐसा है कि जिस विद्या (यत्ना) में लड़ा होता है, वही विद्या अपम (बुझै) हो जाती है (४) जो ऐसा है कि जिसकी मुक्त से मया (रुपापूर्ण स्नेह) में वह कोई वचन दे देता है वह वचन [उसके लिए] रा ब और अधिकतर हो जाता है और कभी टलता नहीं है (५) जो ऐसा महाबानी है जहाँ समुद्र की हिलोर होती है और जिसके मुख से बोड़ा भी बल्य नहीं निकलता है

(६) जो रन-स्वरूप है दूर है और [जीवन के] वट रस तथा विद्याओं को जानता है (७) जो लड़ावानी है तथा सत, साहस तथा चतुर्विध विद्याओं का निधान है।

टिप्पणी—(५) हिलोर < हिल्लोल = समुद्र की लहर।

[२३]

कटव माह एकै सहराहा । बादसाहि सह आपु सपहा ।
 खरग दरब अद रहिर पिमासा । हिलव सांग जस मूस उदासा ।
 सुनसाहि सिजिर मान प्रन दानों । अरि दरि जनु बिजुली बज ठानों ।
 चढ़ अनी सब सूर सराहीं । बाइ भुजा रूप सब जाहीं ।
 महाबीर जग ऊपय नौनी । बारह दानि सुपासिा सोनी ।
 दान खरग कवि महि मिरु गुन गाहक समार ।
 सुमन सजु जिअ करण जग कर गई करधार ॥

पाठांतर—यह छंद भी नेपथ्य रा में है, ए में नहीं है, छेप प्रतिपां यहाँ गहित हैं।

अर्थ—(१) “कट (लिख ली) कटक में एक ही लड़ावारी है ऐसी बावसाह ने स्वयं अपने-आप लड़ावारी की। (२) उसका लक्षण द्रव्य और रहिर का प्यासा [रहता] है और पतरी सांग इस प्रकार हिलती रहती है जैसे उदात्त मूल (बूझा) [हिलता रहता है]। (३) दान [सदय] लिख ली का [सजु-मान-विषयक] प्रभ मुनकर सजु के हृषय में मानो बिपुन और बय

उन जाते हैं। (४) उसकी मीनक (सेना) के चढ़ाई करने पर सभी दूर उसकी सराहना करते हैं, जिसकी बाईं मुखा-स्वल्प वे होते हैं। (५) यह मीना (जिज्ज ली) संसार के ऊपर (सत्ता में सर्वोच्च) महावीर है; यह बाह्य बघों का (करा) और सुवासिक (सुवासमुक्त) सेना है।

(६) कल्पवृक्ष में संसार भर में इस कल्प में ऐसा पुष्प-प्रादुर्भाव नहीं मिल सकता है। (७) जब वह (जिज्ज ली) द्वार में लम्बाय परकृता है यह सुनते ही शत्रु भी में डरने लगता है।

टिप्पणी—(१) संहराहा < कर्गापायक। सई < स्वयं। (२) बज < बज्ज < बज्ज। (३) बाह्य बघिन् < बाह्य बघिन् = बाह्य बघों का अर्थ लुप्त। (४) करवार < करवाठ = लम्बा लम्बा।

[२४]

अरे अर वचन कहाँ तोर बासा । औं कह हुतें तोर परगासा ।
औ कह हुतें उतपति भई तोरी । जहाँ माहिं सचरति बुधि मोरी ।
अचरिहु एक मोरें चित अहई । कोठ न अरस ताहि कर बहई ।
वचन करें उतपति मुहु सेऊं । मानुस बोल अम्बरें दहु कऊं ।
रहै न वचन केरें पति जहाँ । कसैं वचन अम्बरें होइ तहाँ ।
दसहु मनहि विचारि क वचन वचन हिय माहि ।
वचन ऐस ह ताकर जो बरतै सब माहि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अर। २ ए नहीं हुते।

(२) १ ए अर कहाँ ते। २ ए औ। ३ ए न। ४ ए सँचरै।

(३) १ ए मोर। २ ए जाई। ३ ए पावै।

(४) १ ए कैं। २ ए मोहि सेऊं। ३ ए अम्बर (< अम्बर) हो कोऊ, रा अमर बहूँ केऊं।

(५) १ ए कैं। २ ए जाहा। ३ ए कैंते। ४ ए हो। ५ ए ताहा।

(६) १ ए देखा। २ ए वचनै। ३ ए हिय (?) । ४ ए माह।

(७) १ ए विचन कैं। २ ए सब माह।

अर्थ—(१) अरे वचन (बोल) कहाँ तेरा निवास था और कहाँ से तेरा प्रकाश (प्रादुर्भाव) हुआ? (२) और कहाँ से तेरी उत्पत्ति हुई जहाँ मेरी बुद्धि भी नहीं संवरण कर पाती है? (३) [यह] एक आश्चर्य मेरे चित्त में है और कोई भी उसका अर्थ नहीं कहता है। (४) यदि वचन की उत्पत्ति मुझ से हुई, तो मनुष्य का बोल अमर किस प्रकार हुआ? (५) जब कि वचन का स्वामी (मनुष्य) नहीं रहता (मर्य हो जाता है) तब वचन किस प्रकार अमर होता है?

(६) मन में विचार करके देखो कि वचन का वचन भी [तुम्हारे] हृदय में है (७) और इस प्रकार का वचन उसका है जो सब में वर्तता (रहता) है।

टिप्पणी—(१) परमास < प्रमाप।

[२५]

बचन जो नहि^१ निरमलत बिभाता । कठ सुनत^२ कोई रस^३ बाता ।
 प्रथमहि^४ आदि सिस्टिहु के पारा^५ । हरिमुख बचन लीन्ह औतारा ।
 एक बचन^६ आदि उकारा^७ । भन मव^८ होइ म्पापा^९ सप्तसारा^{१०} ।
 विघन जगत बचन बड़ कीन्हा । बचन हुतें^{११} पशु मानुस^{१२} भीन्हा ।
 बचन क वाठ जान सब बोई । बचन हुतें परगट भा सोई^{१३} ।

काहु^{१४} सरूप म दखा ओ काहु^{१५} न जानत^{१६} ठाई ।

बचन हुतें भा^{१७} परगट त्रिभुवन नाथ गोसाईं ॥

पाठांतर—ए में उपयुक्त चौबी तथा पौचबी अर्द्धाक्षरों परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

(१) १ ए म रा बहि (<नहि) । २ ए कहुत । ३ रा कोउ रस ।

(२) १ ए प्रथम । २ ए सिस्टि के सारा ।

(३) १ ए मे यहाँ 'जे' और है । २ ए हुँकारा । ३ रा भन मव होइ म्पापा
 ए भन म्पापा । ४ ए सप्तसारा ।

(४) १ ए बचनहु ते । २ रा लीछे ।

(५) १ म ए अर्द्धाक्षी का पाठ है —

उपपति बचन सिस्टि के सारा । बचन बबहरी सब ससारा ।

(६) १ ए काहु । २ ए काहु । ३ ए जाना ।

(७) १ ए बचन नुने हुति ।

अर्थ—(१) यदि बिभाता बचन का निर्माण न करता तो कोई रस-वार्ता कहीं तक
 मुक्ता? (२) प्रथम ही और आदि कृति के बारे में हरिमुख में बचन से अवतार लिया । (३) वह
 एक (प्रथम) बचन आदि ओंकार का जो कि भला और बुरा होकर संसार में व्याप्त हो गया ।
 (४) बिभाता ने बचन को बचन में बड़ा बनाया क्योंकि बचन से ही पशु और मनुष्य पहिचाना
 जाता है । (५) बचन की बात सभी कोई जानता है [यद्यपि] भा (बड़ा) भी बचन से
 प्रगट (स्पष्ट) हुआ ।

(६) किसी ने उस (बड़ा) का बच नहीं देता और न किसी ने उसका स्तवन जाता; (७)
 वह त्रिभुवननाथ स्वामी बचन हैं ही प्रगट (स्पष्ट) हुआ ।

टिप्पणी—(१) कैत < विमत् = वितना । (२) सप्तसारा < सप्तसारा । (३) ठाई < स्थान ।

[२६]

बचन अमोल जगत भग^१ आपा । बचन हुतें गुरु ग्याम लगवावा ।
 पारि ब^२ विघन निरमाणऊ । बचन जगत महु परगट मएऊ^३ ।
 बचन मरण मनें भुद^४ आपा । ओ विघन जग बचन पटाया^५ ।
 जो किउ बचन ब^६ सगमरि^७ पावत । बचन ठाउ मोहु भुद^८ आपन^९ ।
 परपम^{१०} मानुग हा^{११} भोगरिया^{१२} । बटूरि अम्बर जुग पारि^{१३} न मरिमा^{१४} ।

यचन अमोल पणरय वरन न सकेउ उरखि ।
यचन एस विघना कर^१ जाक^२ रूप न रख ॥

पाठांतर—(१) १ ए बचन अमोलिज नय जे। २ ए बचनहु ते।

(२) १ रा चारि मो बेह निरमए। २ ए मो। ३ रा भए।

(३) १ ए बचन सरा मुई ते। २ रा मभावा।

(४) १ ए क। २ रा ए सरबरि। ३ ए बचन का ठाव सोइ भू। ४ रा बावा।

(५) १ रा प्रबमहि मानुष ह्राह औठरिया ए प्रथम मानुष मै औठरियै। २ रा ए अमर। ३ रा पाह। ४ ए मरियै।

(६) १ ए न सके उरेख।

(७) १ ए कै। २ ए जाकर।

अर्थ—(१) बचन जगत् में अमूल्य नय [के समुच्च] जाया [क्योंकि] युद्ध ने भी बचन से ही जान-बर्सान कराया। (२) जब विधाता ने चारो बैलों का निर्माण किया तब बचन जगत् में प्रकट हुआ। (३) बचन स्वयं से भूमि पर जाया और विधाता ने ही जगत् में बचन को भेजा। (४) यदि कुछ (कोई पदार्थ) बचन की समानता पाता तो बचन के स्थान पर वह भी भूमि पर अस्ता (अवतीर्ण) होता। (५) [विधाता] प्रथम तो मनुष्य होकर अवतीर्ण हुआ तदनंतर अमर [बचन] हो कर अवतीर्ण हुआ जो चारो युगों—सत भेता हापर और कलि—में नहीं मरा।

(६) बचन ऐसा अमूल्य पदार्थ है कि ने उसके बर्ष को उरेख (रेखाओं के द्वारा चिह्नित) नहीं सका। (७) विधाता का बचन ऐसा है जिसका नश्य है और न जिसकी रेखा है [और इसलिये जो अवर्णनीय है]।

टिप्पणी—(६) उरेख < उत्सिप् = रेखाओं के द्वारा कोई आकृति बनाना।

[२७]

प्रबमहि आदि पेम परबिस्ती^१ । तौ पाछे भइ^२ सकल सिरिस्ती^३ ।

उतपति सिस्ति प्रम सों^४ आई^५ । सिस्ति रूप भर पेम सवाई ।

अमर जनमि जीवन फल साही । पम पीर उपयो^६ जिय जाही ।

अहि जिय^७ पम न^८ आइ समाना । सहज मद^९ सेइ^{१०} बिछू न जाना ।

अहि जग दइख विरह दुग दिखा^{११} । त्रिभुवन कर राउ सो किया^{१२} ।

जनि कोई विरह दुख जिय माने^{१३} ओहि जग आवा^{१४} सुख ।

धनि^{१५} जीवन जग ताकर^{१६} आहि विरह दुख दुख ॥

पाठांतर—(१) १ ए प्रबिस्ति रा परबिस्ती। २ ए यह पाछे जो। ३ ए मिरिस्ति, रा मिरिस्ती।

(२) ए पेम ते। ३ रा जाही। ४ ए यह। ५ ए मवाई।

(६) १ ए उपजा।

(७) १ ए जिय। २ ए मैं यह धन्य नहीं है। ३ रा बिहिन। ४ ए ते।

(५) १ ए बेहि जगत बिरह बुल दैऊ। २ ए मैऊ।

(६) १ ए बे मानै। २ ए पुहु पुग और न।

(७) १ ए बन। २ रा ताहि कर।

अर्थ—(१) प्रथम ही [सब के] आदि में [ईश्वर के मन में मुहम्मद के लिए] प्रेम की प्रविष्टि हुई, और उसके पीछे [उसी प्रेम से] समस्त सृष्टि हुई। (२) उत्पत्ति (आदि) में सृष्टि प्रेम से ही [नस्तिस्व में] आई और सृष्टि के रूप में वह सब (समस्त) प्रेम भर गया। (३) अन्त में जन्म ग्रहण कर जीवन का कल उसी को प्राप्त हुआ जिसके जी में प्रेम-सीड़ा उत्पन्न हुई। (४) जिसके जी में प्रेम जाकर (उत्पन्न होकर) समाया नहीं उसने सृष्टि का मेद कुछ भी नहीं जाना। (५) जिस को संसार में ईश ने बिरह का दुःख दिया, उसको उसने तीनो भुवनों—माकाय पलायक और मर्त्यलोको—का राजा कर (बना) दिया।

(६) कोई बिरह को जी में कुछ न माने [क्योंकि] उसी के द्वारा अन्त में कुछ आया।

(७) संसार में उसी का जीवन धन्य है जिसे बिरह-दुःख का दुःख है।

टिप्पणी—(२) सिस्टि < सृष्टि।

[२८]

पम^१ अमोठिक मग सयसारा^२ । जहि^३ जिअ पम सो^४ धनि^५ ओतारा ।

पम सागि ससार उपावा । पम गहा विधि परगट आवा ।

पम जोति सभ^१ मिस्ति अओरा । दोसर^२ नपाव पेम बर^३ ओरा^४ ।

बिरहा बोइ^१ जाने^२ मिर भागू । सो पाव यह पेम^३ सोहागू ।

सवद लंक चारिहु जुग^१ बाजा । पम पय सिर^२ दड सो राजा ।

पेम हाट बहुत विसि^१ ह पसरी ग यनिओ ज सोइ^२ ।

लाहा ओ फल गाहक^१ जनि डहकारे कोइ ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्थांशियां ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए बचन (गुल २९१)। २ ए मंसाप। ३ ए बेहि। ४ ए मे यह शब्द नहीं है। ५ ए धन्य।

(३) १ ए पेम अओरी। २ ए दोओ। ३ ए दोर।

(४) १ रा मे यहाँ है और है। २ ए जाय (< जाने का सि)। ३ रा बिह। ४ ए पेम ब। ५ रा ओरा।

(५) १ ए चारी लंक। २ ए जीव।

(६) १ ए दिन। २ रा सगहि बनिय ओ बो^२ (बा परबनी करण क गुल म भी है)।

(७) १ ए गति १।

अर्थ—(१) प्रेम संगार में अग्रगण्य मग है; जिसके जी में प्रेम है उसका अन्तार (अन्त) धन्य है। (२) [विपादा में] प्रेम के लिए संगार को उत्पन्न दिया और प्रेम को ग्रहण कर (उसी को लाकर करने के लिए) वह प्रगट (स्वरग) हुआ। (३) प्रेम को व्योति से ही सृष्टि में प्रकट हुआ; [इसने लिए] प्रेम का दुःख ओड़ा (समजुय) नहीं चिन्मया है। (४) बिरहा ही कोई जिसके निर मे धाम्य होता है इस प्रेम के सोभाग्य को प्राप्त करता है। (५) यह धाम्य

(कपन) चारो युगों—सत वेता हापर और कति—में जैसे स्वर से बजा (प्रचारित हुआ) है कि जो प्रेम के पथ में सिर (जीवन) वेता है, वह पाया होता है।

(१) प्रेम की हाट चारो दिशाओं में फैली हुई है। हे लोगो, यदि चाहते हो तो उसमें जा कर बगिच करो (कप-विनय करो); (७) काम और फल के प्राप्ति कोई भी [अवसर छोड़ कर] मत हानि उठाओ।

टिप्पणी—(२) उपाय < उपाय < उन्-पादयु = उत्पन्न करना बनाना। (४) सोहाग < सीमाय। (६) हाट < हट = आपण बाजार।

[२९]

मिस्ति^१ मूल बिरहा जय आवा । प बिनु पुष्प पुष्पि^२ का^३ पावा ।
पम पनारम जगत अमोला । निहच जिअ^४ जानहु^५ यह बोला ।
देवा मुना जहो लुगि हार्^६ । पम बिबजित^७ बिछ नहि साह ।
पम निया^८ जाके घट बारा । तहि सभ^९ आदि अत उजिआरा ।
बिरह जीत जहि क^{१०} घट होई । सग अमर रहै मर न सोई ।
कोनौ पाठ^{११} पढ़^{१२} नहि^{१३} पाइस बिरह बुद्धि औ सिद्धि ।
जा कह^{१४} दह दयाल दया करि^{१५} सो पाव यह निद्धि ॥

पाठान्तर—रा में बोहे की धमिली यहाँ नहीं है, मूल से के अगले छंद क बाद आई हुई है।

(१) १ ए सिस्ति। २ ए व बिना पूर्व पुष्प क रा व बिनु पुष्प मुच्छ को।

(२) १ ए निरवै जीव जान।

(३) १ ए जहाँ छपु आई। २ रा बिरहधन। ३ ए बिर न रहाई।

(४) १ ए दीप। २ रा जाके घट बारा ए जाक हिय बरा। ३ ए सब।

(५) १ ए जाके। २ ए पुनि मरे न काई।

(६) १ ए पाट। २ ए पढ़। ३ ए 'न' (< 'नहि' का लि)।

(७) १ ए जाके। २ ए की।

अर्थ—(१) कृषि के मूल (आदि) में ही अमर में बिरह आय, बिनु बिना पुष्प के पुष्प के उसको किसने पाया? (२) प्रेम पदार्थ अपन में अमर्य है अपने जो में यह वील (वचन) निश्चय जान सो। (३) जहाँ तक देवा-मुना गया (ईश्वरगोचर हुआ) होया प्रेम से बिरहित हुए (कोई बरार्थ) नहीं है। (४) जिसके घट (अंतःकरण) में प्रेम का दीपक जला उसके लिए आदि और अंत उज्ज्वल (प्रकाश-पूर्ण) हैं। (५) जिसके घट (दरीर) में बिरह का (बिरह-पूर्ण) जीव होता है वह सदैव अमर रहता है, और मरता नहीं है।

(६) [चिनु] बिरह की बुद्धि (पावना) और सिद्धि किसी भी [दासबादि के] पाठ के पढ़ने से नहीं प्राप्त होती है। (७) जिसको बपाल और बपानिधि [ईश्वर] बया कर देने बैठा है वही यह निधि प्राप्त करता है।

टिप्पणी—(१) पुष्प < पूर्ण = पूर्वाश्रित। पुष्पि < पुष्प। (४) दिया < दीपक < दीपक। बर < उर = उल्लास।

[३०]

जहि जिअ पर पम की रेखा । जह देख सह मग अग्या ।
 उपजि आवहि जौ पुनि ग्याना । जह देखे सह आपु अपाना ।
 पुनि जौ ग्यान विरक्त पर दई । सरवस वै दोसर नहि नई ।
 कन्हु सिस्टि मह रहै न दह । जह देखहि सह आदि अनह ।
 तुह दीपक तहि सिस्टि क ग्रहा । कन्हु जौ जनि जानसि देहा ।
 दुख सुख सम सयसार कर जेत भाव सत होत ।
 सो सम परस आइ सोहि दोसर और न कोउ ॥

पाठान्तर—य में पिछले छंद का बोधा यही माता है।

(१) १ ए की। २ ए जह देखी सह देखी देना।

(२) १ ए उपजि पर देखि हिय ग्याना। २ ए देखी रा देखत। ३ य हरिछहि।

(३) १ य फल। २ य बेह। ३ ए कोई।

(४) १ ए कन्हु सिस्टि जो। २ ए कह देखी। ३ य पाठ स्पष्ट नहीं है।

(५) १ ए ली। २ ए जे। ३ ए क रा म सह सय नहीं है। ४ ए तुह य ठबह। ५ ए का। ६ ए देहा। (दे पूर्ववर्ती परम ना तुक)।

(६) १ ए सब। २ ए कर। ३ ए सत। ४ य हाइ।

(७) १ ए सब। २ ए निनु। ३ य कोइ।

अर्थ—(१) जिसके भी में प्रेम की रेखा (प्रकाश-रेखा) पड़ जाती है, वह जहाँ भी देखता है अनुपम्य (परमात्मा) को देखता है। (२) और फिर यदि (जब) उसके हृदय में ज्ञान उत्पन्न हो जाता है [तब] वह जहाँ भी देखता है वह स्वयं अपने अत्मा को देखता है। (३) फिर यदि (जब) वह ज्ञान-गुण फल देता है, [तब] वह सर्वत्र देखर भी [उस फल के प्रतिरूप] ब्रह्मदे [पदार्थ] को नहीं लेता है। (४) [तब उसके लिए] सृष्टि में कहीं भी इन्द्र नहीं रह जाता है और वह जहाँ भी देखता है [उसके लिए] आदि (मूल) आत्म ही होता है। (५) तुम्हीं उस सृष्टि के तुह में दीपक हो; तुम बेह को कभी जीव न जानो।

(६) संसार के गुण-गुण जितने हीमा जाहें, हों (७) वे सब आदर तुम्हें ही स्पर्श करते हैं, ब्रह्मा और कोई नहीं है [जितने वे स्पर्श करते हों]।

टिप्पणी—(१) अदेग < अदुरम। (२) आप < अप्य < आरम। अपान < अपाय < आरमन्। (५) देह < गृह।

[३१]

॥ जन्निधि^१ गब^२ मिधि^३ का^४ भग^५। फाह^६ भगमि^७ गब^८ वम^९ पग^{१०}।
 तोर^{११} वन^{१२} निम्बुवन^{१३} अजोर^{१४}। गरम^{१५} मिन्नि^{१६} मुग^{१७} दग्गन^{१८} तोर^{१९}।
 तागिय^{२०} जानि^{२१} मक^{२२} परगामा^{२३}। मितु^{२४} माक^{२५} पापाम^{२६} मगामा^{२७}।
 सटल^{२८} मित्ति^{२९} मह^{३०} परग^{३१} तुदा^{३२}। मरबम^{३३} तुद^{३४} दोम^{३५} कोद^{३६} नदी^{३७}।

जो बोह सोव सोह [प]०१ जोवा० । सो का जोह३ जहि नहि बिछु० सोवा ।

कौन सो ठाठ जहाँ स माहीं सोनि भुवन उजिमार ।

निरनि देखु सँ सरखस पूर सब टी सोर बेवहार ॥

पाठ्य—य में पिछले छंद का बोधा यही आता है ।

(१) १ ए बलधर । २ ए जो । ३ रा कै । ४ ए कुम घट मरा । (तुल० पूर्ववर्ती परम का तुल)

(२) १ ए इजोरा । २ ए जो ।

(३) १ ए तोरि । २ ए रा बजासा ।

(४) १ ए मों । २ रा मई । ३ ए ठी । ४ ए जो । ५ ए नाही रा नाई ।

(५) य ए में यह छन्द नहीं है । २ ए सोवा । ३ ए सोव । ४ ए जो न कछु ।

अर्थ—(१) तु जलनिधि है और तू सब निधियों से भरा हुआ है तब तू तब के बच में पड़ कर क्यों मर रहा है ? (२) तेरे बचन (मुक्त) से ही त्रिभुवन—आकाश पाताल और मर्त्यलोक—उत्तरगत (प्रकाशित) है; सबकुछ सृष्टि के लिए तेरा मुक्त वचन है । (३) तेरी ही शक्ति से समस्त [सृष्टि] प्रकाशित है—मृत्युलोक पाताल और आकाश [में जो कुछ भी है] । (४) समस्त सृष्टि में तू ही प्रकट (व्यक्त) है; सबस्य (सब कुछ) तू ही है और तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई [इस सृष्टि में] नहीं है । (५) जो कुछ कोता (गैबता) है वही [वास्तविकता को] देख पाता है जो कुछ नहीं कोता है, वह क्या देख सकता है ?

(६) वह कोन सा स्वान है जहाँ तू नहीं है ? तीनों भुवनों—आकाश पाताल और मृत्यु लोक—में तू ही प्रकाश होकर व्याप्त है । (७) अवलोकन करके देख तू सर्वस्य को पुरित कर रहा है और सभी स्वानों पर तेरा व्यवहार है ।

टिप्पणी—(५) जोंव < जोव [वे] = देखना । (७) निरन्य < निरिक्त < निरीक्ष = देखना अवलोकन करना । बेवहार < व्यवहार ।

[३२]

धब मुनु करम बात बिछु० भाई । निरगुन रूप बसु० ली लाई ।

तन० सों उरय सहि० गहि स्वासा० । अग्नि हीय ब० नोल बसासा० ।

मरक पवन अग्नि० उगरी० । ली बलक बाया कर० जरई ।

लौ रुहि० सरख गात धुनि होई । जो सहि० कस्त गहें० रहु सोई ।

मो तही धुनि मों कर याया । ताही जोसि भीतर बसि याया ।

कोटि माह बिरह जम कोई० भोगई० वह कबिलास ।

मुस मंदिस मह० नास जम० जहाँ निकट बलास ॥

पाठ्य—य. म उपपुन जीबी अर्द्धाली के चरम परस्पर स्थानांतरित हैं ।

य म उपपुन पौनर्बी अर्द्धाली नहीं है ।

(१) १ ए जो । २ रा बैदु ।

(२) १ रा तेहि । २ ए सो । ३ ए कै । ४ ए गीसा । ५ य अग्नि बाज जो ।

- (३) १ ए अग्नि। २ रा उषी करई। ३ ए ती रे कसंक क्या कर।
 (४) १ ए ती अग्नि। २ ए जी अग्नि रा ती अग्नि। ३ ए गहे।
 (५) १ ए म यह धर्म नहीं है। २ ए मोयी (< भोग्य फा सि)
 (७) १ ए मो। २ ए म यह धर्म नहीं है। ३ ए म कष्ट प्रमास।

अर्थ—(१) अब तु आकर कुछ कर्म (योग) की बात सुन; [परमात्मा के] निर्गुन रूप से सब लगाकर बैठ (२) शरीर से तु ऊर्ध्व इबास ग्रहण कर, जिससे हृदय की अग्नि में दस्तात (बस्त) डोल पड़े। (३) पवन के शरकने (डोलने) में अग्नि जब [उत्पन्न] करेगी तब काया का बलक बलेगा (पस्म होया)। (४) तब तक समस्त पात्र में एक [अनाहुत] ध्वनि होनी, जब तक तु कुछ पूर्वक [उस इबास को] पकड़े रहेगा। (५) और उसी [अनाहुत] ध्वनि में तु निवास कर, [क्योंकि] उसी [अग्नि की] श्रुति के भीतर कैलास (स्वर्ग) [पहुंछा] है।

(६) कोटि में बिरसा ही कोई व्यक्तित्व उस कैलास (स्वर्ग) का भोग करता है (७) इन्द्र मंदिर (भवन) में जिस प्रकार का निवास होता है, और उसमें जिस प्रकार का निष्कण्टक विलास होता है [जिस का अनुभव उस प्रकार का होता है]।

टिप्पणी—(१) अग्नि < अग्नि = तस्मीनता। (५) कविलास < कैलास = स्वर्ग।

[३३]

पछिरि सुखि सुखि ओ^१ ग्यानां । क्या बवरजित लावहि^२ ध्यानां ।
 तो^३ समाधि ली लाग जहां^४ । आपु अपान पाव सू^५ तहां^६ ।
 निरगुन^७ जहां निरजन सूनां^८ । तहां आपु सों^९ आपु पिहनां^{१०} ।
 ग्यान पार जहवां^{११} अग्यानां । तहां आपु सव^{१२} आपु अयानां^{१३} ।
 सहज समाधि लाउ त तहां^{१४} । आपु सव आपु पाउ सुधि जहां ।

सहज अलोले लाइ^{१५} ल^{१६} निगम गोफ^{१७} रह सुति ।

जहां न ते ओ कोऊ^{१८} ओ^{१९} एकी बरतुनि ॥

पाठान्तर—ए म उपयुक्त अर्थात्तियों १ ४ ५ वा कम है ५ १ ४ ।

- (१) १ ए ओ। २ ए लावे।
 (२) १ ए ओ। २ ए लाहा रा जहां। ३ ए न पार। ४ ए लाहा रा तहां।
 (३) १ रा करमुन। २ ए मुन। ३ रा आपुहि जाना (गुन परवर्ती अर्थात्तियों)
 (४) १ ए ग्यान अपार जहां। २ रा आपुओं ए आपु से। ३ रा बिहना
 (गुन पूर्ववर्ती अर्थात्तियों)।
 (५) १ ए गहन समाधि लाउ लै लाहा रा गहन समाधि लावे तहां। २ ए आपु
 आनंद पाउग जाहा (गुन द्वितीय अर्थात्तियों)।
 (६) १ रा सदा लै ली लाई^{१५} ए सहज अलोले लाई^{१६}। २ रा जहां तहां।
 (७) १ ए जोह गहि। २ ए अद।

अर्थ—(१) सुधि (आत्मिक चेतना) बड़ि और लाग की छोड़कर और बाया से बिचरित (बिरहिन) होकर [यदि] तु ध्यान लगावे (२) तो जहां (जब) समाधि की ली (लप) लगेगी, जहां (तब) तु अपने जब (अवस्था—आत्मस्थिति) को पावेगा। (३) जहां पर निर्गुन

निर्जन तथा सुगन्ध है, वहाँ तेरा भाव (आत्मा) अपने [पुष्पक अस्तित्व] से विरहित होगा। (४) ज्ञान से परे वहाँ अज्ञान है (ज्ञान की भी गति नहीं है) वहाँ तू भाव अपने [पुष्पक अस्तित्व] से अयाव (अज्ञान) होगा। (२) तू सहज समाधि वहाँ (उत्त स्थिति में) दगढ़ वहाँ (असि स्थिति में) तू भाव (आत्मा) से भाव (आत्मा) की सुधि पा सके।

(६) सहज और जपचल लय समाकर तू उत्त निगम गुहा में सोया रह (७) वहाँ (असि में) तू [तेरा पुष्पक अस्तित्व] रहे, म [अम्य] कोई हो और किसी प्रकार का कर्तृत्व हो।

टिप्पणी—(१) सुधि < शुद्धि = मानसिक चेतना (२) (३) भाव < अम्य < आत्म। (४) अज्ञान < अज्ञान = अज्ञान। (७) कर्तृत्व < कर्तृत्व।

[३४]

गढ़ अनूप बनि नगरि चर्नाड़ी^१ । कम्पिजुग मह^२ मका मों^३ गाढ़ी^४ ।
पुग्ग निमा अगगी^५ फिरि आई^६ । उत्तर पछिम गग गढ़ खाई^७ ।
बग^८ वन जाइ नहि बही^९ । गढ़ भीतर गगा कम्पि बही^{१०} ।
साहि सहम जो कागहि^{११} आई^{१२} । जाहि हारि^{१३} मिर ठेगा^{१४} खाई^{१५} ।
ऊपर^{१६} छात्रा अनवन^{१७} भांती^{१८} । हूठ बही^{१९} मुरमरि सरसानी^{२०} ।
नगरि अनूप सोहाबनि^{२१} ओ गढ़ बिजम^{२२} अगम ।
बरबम हाय न आवै बिनु जस पुग्ग^{२३} करम ॥

पाठान्तर—ए में उर्वरुक्त अर्थात्तियाँ ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए बग नग चर्नाड़ी च बनि नगरि सनाही। २ ए मों। ३ ए ओ। ४ ए गढ़ी।
- (२) १ ए जगरो।
- (३) १ ए बैजग। २ ए बहरी। ३ रा ए अक। ४ ए रई।
- (४) १ ए काग। २ ए मारि। ३ ए टही।
- (५) १ रा अबदब। २ रा ए अनौन (< अनवन)। ३ रा वती। ४ ए बही।
५ रा लाई मुरमती।
- (६) १ ए नगर अनूप माहावन। २ च नम।
- (७) १ ए वै बिना पुरब।

अर्थ—(१) एक अनूप गढ़ में चर्नाड़ी (< चरनाडि = चुनार) नगरी बनी है; वह चर्नाड़ी (चरनाडि = चुनार) [नगरी] कम्पिजुग में लंका से भी गाढ़ी (कुम्प) है। (२) [गढ़ के] पूर्व की दिशा में अगगी [नदी] घूमकर आई हुई है और गढ़ के उत्तर और पश्चिम लाई (परिभा) [के रूप में] गया है। (३) गढ़ के भीतर जाकर जो संगी बही हुई है वह देखने ही बनना है कड़ा नहीं जाता है। (४) यदि एक सहज बादगाह [उत्त गढ़ को] या लय (धरें) तो वे भी हारकर और मिर पर ठेगा (लूठ) जाकर बसे जाएंगे। (५) ऊपर [गढ़ का] छात्रा अनवन (अनुप) भांति (दंग) का है और नीचे मुरमरि (गगा) सरसानी हुई (अन से परिपूर्ण) बरी हुई है।

(१) यह नगरी अनुपम रूप से सुहावनी है, और गढ़ विषम तथा अमर्य (अमर्य) है, (७) जैसे बिना पूर्व कर्मों के यह भरवत हाथ आ ही नहीं सकती है।

टिप्पणी—(१) नगरी < नगराक्षि = पुनार। (२) आई < आई < साति = परिचा। (४) जो < जट < यति। (५) अननन < अम्यनन = मिस प्रकार की। हेठ < हैठ [वे] = गोरे। (७) पुम्ब < पुम्ब < पुम्ब = पूर्वाक्षित।

[३५]

गढ़ सुहाव गढ़पति सुर ग्यानी^१। नगर लोक^२ सम^३ सुखी नियानी^४।
सम सुर हरी भगत ओ ग्यानी^५। आनदी पर दुखी^६ विनानी।
दाता ओ^७ बयाल धरमिस्टा। सम^८ पम रस लीन^९ गरिस्टा।
भागवत भोगी सम^{१०} लोगा^{११}। ओ सम^{१२} कह^{१३} कुरुवत सयोग^{१४}।
मोहि अस्तुति मुह^{१५} बही^{१६} न जाई। जानु सरग^{१७} मुह छाबा आई।
खारि खोरि^{१८} सम^{१९} धर धर नगर अमर^{२०} हुलास।
अलिङ्ग मह^{२१} अम^{२२} प्रिविमी^{२३} उत्तरि बसी^{२४} बबिलास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए गढ़ सुहावन सुरपति सुर ग्यानी। २ ए लोक। ३ ए सब। ४ ए सुखी।

(२) १ ए बसरहि भगती बीनानी (गुरु परधर्ती बरन का तुक)। २ ए भागवत पर दुखी रा आनदी बिख दुखी।

(३) १ ए जो। २ ए सब लीन रस प्रेम रा सब पम रस लीन।

(४) १ ए मब। २ ए लोणू। ३ रा ए सब। ४ ए बर। ५ ए सयोग।

(५) १ ए मुह अस्तुति जो। २ ए बह। ३ ए भागवत सुर।

(६) १ रा गारि पारि। २ ए जो। ३ रा अनुप।

(७) १ ए मो। २ ए जो। ३ ए प्रिविमी। ४ रा मे यह गढ़ नहीं है।

अर्थ—(१) यह गढ़ सुहावना है और इस गढ़ का अधिपति स्वर ज्ञानी है तथा नगर की समस्त प्रजा सुखी और निरामी (जिसी हेतु या उद्देश्य से काम करने वाली) है। (२) सभी लोग वैभवा और हरिभक्त तथा भागी हैं; वे आनंदी (आनंदवादी) पर दुल से दुखी होने वाले तथा विनानी हैं। (३) वे दाता, दायमान तथा भविष्य हैं, और सभी प्रेम रस में लीन रहने वाले और गरिष्ठ हैं। (४) सभी लोग भाग्यवान और भोगी (भोगवादी) हैं, और सभी को बुलवाने होने का संयोग प्राप्त है। (५) मुह से [उत्त गढ़ की] स्तुति (प्रशंसा) बही (की) नहीं जाती है; [बह तो ऐसा है] मानो स्वर्ग ही भूमि पर आकर छा रहा हो।

(६) मली-मली तथा समस्त घर-घर में नगर में आनंद और हुलास (उत्साह) है (७) [और ऐसा लगता है] जैसे बलिभुज में बैलगा (स्वर्ग) भूरी ही भूखी बर उत्तर कर बनी हुई हो।

टिप्पणी—(१) निधान < निधान < निधान = वारण हेतु, उद्देश्य। (२) विनानी < विनानिन्।

(३) हुलास < उत्साह। (४) प्रिविमी < पृथ्वी। बबिलास < बैलगा = स्वर्ग।

[३६]

यह खोंगी^१ कलि^२ नागिन करी । त्रिभुवन मोहिनि विरिष कुंवारी^३ ।
 प्रथम^४ जनमि जहां लहि^५ आए । ते सम^६ मोहि नोर एह^७ आए ।
 एहि कलि बारी बहुत^८ चाही । बरि बरि गहो^९ म बाहु^{१०} व्याही ।
 एह पापिनि सयमार^{११} भोरावा । सोम बिगूष^{१२} काम^{१३} न पावा ।
 अमि बजलि जनि मोह^{१४} कोई । काम मूर मठ जाइ न गोई^{१५} ।
 सुवगा सेंबर बगि लज्जु^{१६} बहुत बिगूष पमि ।
 एहि पापिनि कह मो रब^{१७} जाक हिए^{१८} न अमि ॥

पाठ्यार्थ—इस छंद के पूरे के आ प्रति के पद नहीं हैं ।

- (१) १ आ ए लानी । २ ए जा । ३ ए मोहिनि बिब कुमारी ।
- (२) १ ए जगल । २ ए लज्जु । ३ ए छिन् । ४ ए लख । ५ ए येह ।
- (३) १ आ बहुत-ह, ए बहुते । २ आ यह, ए मये । ३ ए बाहु ।
- (४) १ आ इन ए येह । २ ए ममार । ३ आ ए बिगूष । ४ ए मूर ।
- (५) १ आ चाही । २ आ काम मूर सर्व जाठ न बाई, ए काम मूर सो जा न लोई ।
- (६) १ आ लज्जु ।
- (७) १ ए यह पापिनि को मोरई । २ आ जावई हिया ए जाक हिया ।

वर्ण—(१) यह छोटी कलि काली नागिन है यह त्रिभुवन-मोहिनी है और बड़ा किनु कुमारी है । (२) पहले जहां तक (जितने भी) लोप अल्प ग्रहण कर इस संसार में आ चुके हैं उन सब को मोहित कर और भुलावे में डालकर यह आ चुकी है । (३) इस कलि बालिका को बहुतों ने चाहु, बरस करके इसको बर्नों ने ग्रहण किया किन्तु इसने किसी के साथ विवाह नहीं किया । (४) इस बालिनी ने लमार को भुलावे में डाला जितने लोभ में बध्न पाकर लाम नहीं पाया । (५) ऐसी बचन [मारी] से कोई मोहित न हो क्योंकि वहाँ वह मूल के साथ लाम को [हाथ ले] न सो सेंडे ।

(६) ऐ लज्जु (लोभी मनुष्य) तू लोभक (कलि) को लोभ ल्याय क्योंकि इसने बहनेरे बलिषों (औषों) को बध्न दिया है । (७) इस पापिनी को (से) बही रमय करता है जिसके हृदय में [लाम या बिबक की] अर्पित नहीं होती है ।

नियन्त्री—(३) बारी < बालिका । (६) पमि < पमिन् = बिडिया ।

[३७]

एहि माहिनि जनि^१ माह^२ बाई । काम न लह मूल पमि^३ रोई ।
 बनी जा त्रिभि नाग^४ क^५ छाहीं । यह र बिनागिनि^६ बाहु क^७ माहा ।
 दिन^८ पक्ष पक्ष मय मय^९ रानी । बाहु न पुनि^{१०} मइ^{११} जम अहिबानी ।
 अहि^{१२} पाल्मि निमूष^{१३} तहि मारमि । कोन सा जाहि उठाइ न डारमि ।

ऊप नीच सम के^१ घर जाई । प अस्मिर कतहु^२ न रहाई ।
 मोहन रूप छिनारि करमुखी^३ खोटी^४ बिरिष कुमारि ।
 सम^५ सयसार^६ मोरह इन्ह^७ सावा बचल बपल बिटारि^८ ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा एहि क मोह बी ए माहि मोह जानि । २ रा सोम बिगुने काम न
 (सुख पूर्ववर्ती छंद की चौथी अर्द्धांसी) ए काम मूल सौ प्रापति ।
 (२) १ भा कि ए की । २ भा यह बटपादि, ए ई बिटारी । ३ ए बी ।
 (३) १ ए बिता । २ ए सुते । ३ भा काहु न कई, ए काहु न । ४ ए बी ।
 (४) १ भा ए जेहि । २ भा मित्थै ए मित्थै ।
 (५) १ भा सबके ए सबके । २ ए वै अस्मिर कहुं बिर ।
 (६) १ रा कर यही ए कै । २ रा खारी ।
 (७) १ भा ए सब । २ ए ससार । ३ रा मोरह इन ए भारी दे^{१४} रा.
 मचारि ।

अर्थ—(१) इस मोहिनी से कोई मोहित न हो क्योंकि उसे इससे काम न होय,
 [उत्तरे] मूल को सति होगी । (२) जिस प्रकार साइ के पेड़ की छाया [बिना किसी को शीतलता दिए]
 जाती जाती है, उसी प्रकार यह पामरनी भी किसी की नहीं होती है । (३) यह पाँच-पाँच
 (कुछ ही) दिनों तक सब से अनुरक्ता रही है किन्तु फिर यह जन्म (जीवन) भर अहिबली
 (सीमाव्यवली) रहने वाली किसी को नहीं हुई । (४) जिसने इसको पाला (आभय दिया)
 उसको इसने अवश्य ही मार डाला । ऐसा कौन हुआ है जिसने पठा कर (अर्धे स्थान पर से जाकर
 —उत्पत्ति लेकर) नीचे न गिराया हो ? (५) यह अर्धे और नीचे, सभी [प्रकार के व्यस्तियों]
 के घर जाती रहती है किन्तु यह स्थिरता के साथ कहीं नहीं रहती है ।

(६) इस छिन्नान और कले मुज वाली नारी का रूप मोहक है और यह बुढ़ा कुमारी छोटे
 स्वभाव की है । (७) इस बचल और बपल पामरनी ने समस्त संसार को मुकाबे में डाल कर
 काया है ।

टिप्पणी—(१) पति < पति । (२) तार < ताल = साइ का वृक्ष । बि < पामर, नीच ।

(३) पठ < रत्न = अनुरक्त । अम < जन्म ।

[३८]

सो समंत सयसार^१ न आवा^२ । जेइ^३ फागुन पतझार न गावा ।
 ससि पूनिब^४ महि तवसि^५ अगामा । जो रे अमावस कह न बिनागा^६ ।
 जनि भूगुह नर बुदि^७ गियानी । एहि बलि पोन कसम जम पानी^८ ।
 जानि ब्रूति जनि होटु अयान । अत बटुरि का फिरि पछिमान ।
 बलि ओगरि भा अमर न कोई । अग हाय पछितावा सोई^९ ।
 जहि बलि रहै न पादय^{१०} तहि मर^{११} प्रीति न लउ ।
 गहि जग दरगुन^{१२} सने जनि^{१३} आबुहि इहंवाउ ॥

पाठान्तर—यह छंद ए में नहीं है ।

पाठान्तर—रा म उपयमन अर्द्धाक्षर्या ४ तथा ५ परम्पर स्थानान्तरित हैं।

(१) १ रा मयार। २ रा नावा। ३ भा त्रिनि।

(२) १ रा सा पुनरी (<पुनिर्ब—आ लि)। ७ भा उपर। ३ भा कीर
न पावा (<बहे न बिनासा—आ लि)।

(३) १ भा मयार। ७ भा पानी।

(५) १ रा सार।

(६) १ भा न पाइय। २ रा तामों।

(७) १ भा दह यम। २ रा मनि (?)।

अन्व—(१) ऐसा कोई वस्तु सत्तार में नहीं आया है जिसने फास्युन की पतझड़ न खाई हो
(२) बुद्धि का ऐसा कोई शक्ति आकाश में नहीं उचित होता है जो अमावस्या को बिगड़
न होता हो। (३) ऐ ज्ञानी सोचो अपनी बुद्धि को न भूलो यह कति बीता ही [चोपा]
है बीता पानी के लिए पवन का कल्ला हो। (४) जान-बुझ कर अज्ञान न हो क्योंकि फिर अंत में
पुनः पड़ता है क्या [साज] होगा? (५) कति में अवतरित होकर (अन्व ग्रहण कर) अमर
कोई नहीं हुआ सोचो अंत में हाथ में पड़ना ही रहता है।

(६) त्रिनि कति में [अमर होकर] रह नहीं सकते हो उस [कति से प्रीति न लगामो (७)
[अपने से] इस-गुना [बनुर] इस जगत् से अपने को बहलामो मत (प्रवर्धित न होने दो)।

नियम—(२) पुनिर्ब<पुनिमा। (६) अमान<अज्ञान=अनज्ञान मूल। (५) को<
कोक=काम। (७) दह<दग।

[३९]

मुन नो म बाबन जब भए^१। सती पुरुष कलि परिहरि गए^२।
तब हम त्रिय उपजी^३ अमिताभा। क्या एक बाबन रम^४ भावा।
मुरम पवन जहवां छहि^५ मुन। और जो किछु हिरद मह गुन^६।
मा मम कहौ^७ मुरस रम भापी। मुनहु कान दे पम अमितापी^८।
म छाडउं^९ गुन कर^{१०} परमाहु। तुम्ह छाडहु^{११} जो^{१२} बाद सवाहु^{१३}।
अंत्रि न क्या मुरम रम मुनहु कही^{१४} मम^{१५} गाइ।
हृदय (?)^{१६} परत आखर जो^{१७} यमहु^{१८} कबि मुंह^{१९} सहु^{२०} छपाइ ॥

पाठान्तर—मा म यह छं नहीं है।

(१) १ ए भैऊ। २ ए गैऊ।

() १ म उरमा। ७ रा यम।

(३) १ ए जही कपि। ७ ए कबि जो ममान ते जनमुन।

(६) १ ए कही। २ रा जवारी।

(५) १ ए छाडइ। ७ रा कै। ३ ए गुन छाडहु। ४ रा मोहि। ५. ए बेबाहु।

(६) १ ए मा।

(७) १ ए बाउ। ७ ए जो जवारी। ३ म में यह गद्य नहीं है। ४ ए महुं।

५. ए सब।

अर्थ—(१) सन् ९५२ बच हुए, और सत्यनिष्ठ पुरुष (गुहम्मद मौस ?) कल को छोड़कर चले गए, (२) तब हमारे जी में यह अनिलाया उत्पन्न हुई कि एक कथा भाषा के रूप में बर्नी। (३) [अतः] मैंने जहाँ तक पुरत बचन मुने हैं और जो कुछ पुरत बचन] हृदय में गुन रखने हैं (४) उन सब को पुरत रस (प्रेमरस) में याचित करते हुए कहता हूँ। जो प्रेम के अनिलायी हो, मुनो। (५) मैंने प्रसार [गुण] करके (के निमित्त) [अग्य] गुणों को छोड़ दिया। [प्रेम रस के निमित्त ये पाठको] गुन भी [अग्य रसों के] व्यय के स्वादों को छोड़ दो।

(६) अब तुम यह अमृत (अमर करने वाली) कथा मुनो जो पुरत रस (प्रेम रस) की है; उसे मैं सब-की-सब गाकर कह रहा हूँ। (७) यदि उसमें कोई हस्के पड़ते (ओछे) आसर (बचन) देखो तो कवि का मुँह छिना सो।

टिप्पणी—(१) गुन < गुण्य = मित्रता मन मे बार बार लाना। (७) हृत् < हृदुक < लवुक = हल्का ओछा। आसर < असर = बचन।

[४०]

कथा एक चित दइयं^१ उपानी । सुनहु कान व नहौं बयानी ।
अमी^२ रसिब रसा^३ जो होई । गुन औ दोस^४ विचारहि सोई ।
जओ आसरहि ओरि बनाइहि^५ । गुन के^६ पीछे^७ दोस सुनाइहि ।
उतपति दोस दइय^८ हम लावा । श्री निरदोस^९ साइ जनभावा ।
आदि दोस^{१०} लागे होइ जाही । अस दोस लागे मित्रु^{११} ताही ।

मिहकलन^{१२} निरदोसी^{१३} एक अकेला सोइ ।

दोसिहि दोस जो लागे तेहि का अचरिबु होइ^{१४} ॥

पाठान्तर—य मे यह छंद नहीं है।

(१) १ रा बई।

(२) १ भा अमी। २ भा रसिब रस नह जो बोई। ३ भा दोस।

(३) १ भा ओछ आसर पति बुझि न जानहि। २ भा विन गुन। ३ रा पीछे।

(४) १ रा बई। २ भा निरदोस।

(५) १ भा दोस। २ भा दोस पै लावे।

(६) १ भा निरदोस। २ भा निरदोसी।

(७) १ भा मित्रु दोस नहि ॥

अर्थ—(१) एक कथा [मेरे] चित में ईब मे उत्पन्न की; उसे बतल दे कर मुनो में बतान कर (व्याख्या कर) उसे कह रहा हूँ। (२) जो रसाल (रसीले) अमृत (प्रेम) रस का रसिक हो, वह [इस कथा के] गुणों और दोसों का विचार करे (३) क्योंकि जब [काव्य के] आसर (बोल) छोड़ कर बसाए जाते हैं गुणों के पीछे दोस छिपा लिए जाते हैं। (४) [मित्र] ईब मे हममें आदि हो में दोस (शरीर के रूप में) लगा दिया और निर्दोस (जीव) को [उसके साथ] लगाकर अलग दिया। (५) [अतः] जिने आदि (गुन) से ही दोस लगा हुआ हो उसे अवश्य ही अंत में दोस लगेगा।

(६) कलंक-रहित और शोच रहित एक मास बहो (परमात्मा) है; (७) शोचपुस्त (मास) को यदि शोच लगे तो उसमें आश्रय ही क्या है?

टिप्पणी—(१) उपान < उप्याय < उप + पाय् = उपयय करना बचाना। बचान < बचान् < ब्याख्याय् = बर्णन करना। (३) जबो < यत् = क्योंकि कारण कि।

[४१]

पड़ित सुनु^१ बिनती यह^२ मोरी । बिनती^३ पाय^४ सागि^५ कर जोरी ।
जो मल बचन सराहि न आई । ओछ न दूख^६ दोस लगाई ।
जो पड़ि बचन भला बिछु^७ भेद^८ । दोस लाइ जन^९ ओछ^{१०} उछेद^{११} ।
जहां न अच्छर^{१२} जुर^{१३} सवार^{१४} । मलया^{१५} भए मल^{१६} म^{१७} बिचार^{१८} ।
बा तहि लिखे ओछ^{१९} ओ होई । कहहु काह^{२०} लै कीज सोई ।

मूलन जो रे उछेदहि^{२१} सहि न नाहि मोहि सोच^{२२} ।

बनि जग ताकर^{२३} ओतरन^{२४} जरय^{२५} साइ गह^{२६} पोच^{२७} ॥

पाठान्तर—“त छंय से बा पुन कहित है।

(१) १ ए सुना। २ ए येन। ३ ए बिनती। ४ ए पाय। ५ ए दुखी।

(२) १ ए ओछ न दुखसै।

(३) १ ए भले जो। २ ए दोस लगाइ। ३ ए ओछ।

(४) १ ए जहां न आसर पुरी। २ ए मल आ। ३ ए में यह मल नहीं है।

४ ए प्रतिपारहु।

(५) १ ए ओछ। २ ए कही।

(६) १ ए काइ न उछेदइ। २ ए ताकर नाहीं सोच।

(७) १ ए बनि अगत कर। २ ए सपारी।

अर्थ—(१) हे पड़ित (आश्रित) मेरी यह बिनती सुनो मैं तुम्हारे वीरों में लज कर और हाथ जोड़ कर बिनय कर रहा हूँ। (२) यदि [मेरी रचना पढ़कर तुमसे मेरे] भले बचन (शोस) सराहे न जा सकें तो [मेरी रचना के] ओछे बचनों (शोसों) को भी शोच लगा कर दुखलो मत (बुरी भावना से न देखो)। (३) यदि [इस रचना को] पढ़ कर कुछ भले बचन असंग्रह कर सको तो इस जन को शोच लगा कर [उसके ओछे बचनों का] उच्छेद (नाश उन्मूलन) भी करो। (४) जहाँ पर [उप-पुस्त] अक्षर न जुड़े हों, [मेरे बचनों को] संवार (सुधार) दो और भइ हीकर (भइतापूर्वक) भले-बुरे का बिचार करो। (५) उसके लिखने से ही क्या [लाम] जो ओछा हो कहो, उसको सेकर क्या बिचा जाये?

(६) यदि कोई मूल [मेरी रचना का] उच्छेद करे, तो उसकी भुसे बिना नहीं है; (७) अपन में उस [पड़ित] का अवतार (जन्म) सेना सम्य है जो अर्थ के लिए (अर्थ को गृह्यते) दैते हुए) पोच (शोचपुस्त बचनों) को [भी] पहन करता है।

टिप्पणी—(२) दूख < दुस्ख < दुर्लभ्य = बुरी भावना से देखना। (४) मलया < मल।

[४२]

पड़ित मोहि न दोस लगाइहि^१ । मूरख सेंच पै किञ्छु न पाइहि^२ ।
जो पड़ित जन होइ न बाएँ^३ । ना मूरख के दोस लगाए^४ ।
तब हम भएउ दोस कर^५ बासा । जब र पित छाडउ^६ बबिलासा ।
बूझि पढ़हि^७ आखर मोर लोई^८ । बिन यूसे जनि^९ दुसरे कोई ।
दस मह एव ओछ^{१०} जो होई । रहि के^{११} सोस थढ़ जनि^{१२} कोई ।

बचन अनुप भल सुनि मूरख रह सिर नाइ ।

ओछ बचन जो^१ पावै आखर^२ पकरं धार ॥

पाठांतर—(१) १ ए लगाइहि। २ ए मूरख से जो आपु बनाइहि।

(२) १ ए होय बनाये। २ रा मूरख मो पे किछु न पाइहि।

(३) १ ए तब हम भी दोसर पर। २ ए छोड़ा।

(४) १ ए पदे। २ रा कोई। ३ ए मति।

(५) १ ए बोछ। २ ए ठाके। ३ ए मति।

(६) १ ए बोछ बचन रा ओछ मानर। २ ए बतार।

अर्थ—(१) [युसे विव्हास है कि] पंडित (जानी) युसे (मेरी रचना को) दोष न लगाएगा और मूख से मने अवश्य ही कुछ न प्राप्त होगा। (२) यदि पंडित जब काम (विषय) न हों तो मूख के दोष लगाने से क्या [हानि हो सकती है]? (३) हम सभी दोष के निवार हो गए, अब पित्ता (आदम ?) ने स्वर्ग को छोड़ा। (४) लोग मेरे जलरों (बचनों) को समझ कर पड़ें और कोई भी उन्हें समझे बिना बुझने नहीं (बुरी दृष्टि से न देखे)। (५) वस (बचनों) में से यदि एक ओछा भी हो तो कोई उसके लिए न चढ़े।

(६) मूल अनुपम और भले बचनों को चुनकर तो सिर बचा कर (बुध) रह जाता है [और उसकी प्रशंसा नहीं करता है]। (७) [किन्तु] यदि कोई ओछा बचन पसंद है तो उस अक्षर (बचन) को छोड़ कर पकड़ता है।

टिप्पणी—(४) ओइ = ओक = नाग। (५) बूझ = बुझ = बुद्ध = जानना ज्ञान करना समझना। अनुप = दुष्प्रकृत = दुष्प्रसू = बुरी दृष्टि से देखना। (६) ओछ = तुच्छ। (७) आखर = अक्षर।

[४३]

भंडिन बधा बहौ अब^१ गाई । रमिब नाम द गुनहु^२ गाहाई ।
रग ब^३ नाम रमिब प जाने । बिनु रम रमिब मिरग^४ क माने ।
बिन^५ रम पुम भंडिन पगिहर^६ । बिन^७ रम ऊर ऊमि^८ का करे^९ ।
आ बहू जहि [रग]^{१०} मह^{११} रम हाई । तहि रम मह^{१२} रम पाय याई ।
जो जहि रम ब जान न जाना । सो तहि^{१३} रम अनरम उतपाना^{१४} ।

रम अनग गयगा^१ पर गुन^२ रमिब द बान ।

जो मभ^३ रम महे राउ रम भा कर करी बगान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए ओ। २ रा रम बानन अति मुनत।

(२) १ ए की। २ ए बिना रसिक मीरस।

(३) १ ए बिना। २ ए प्रहरई। ३ ए बिना। ४ ए उट उभ। ५ ए करई।

(४) १ ए आके रम जेहि मो रा आ बहू जहि मर्ह। २ ए मो।

(५) १ ए तहि ठे। २ रा अग्याबा।

(६) १ ए समार।

(७) १ ए मब।

अर्थ—(१) अब मैं वह अमृत (प्रेम की) कषा गलकर कह रहा हूँ हे [प्रेम रस के] रसिको उस मुहाबरी [कषा] को कान देकर सुनो। (२) रस की बात रसिक ही जानता है और बिना रस के [चिन्ती भी रचना को] वह निरस करके ही मानता है। (३) बिना रस की अमृत [की लकड़ी] को [भी] भुन छोड़ देता है और ऊँठ बिना रस की ईँक को क्या कर सकता है (वह उसके किस काम की होगी)? [वस्तुतः] जिसको जिस रस में रस (मुक्त) होता है वह उसी रस में रस (मुक्त) पता है। (५) जो जिस रस की बातें नहीं जानता है वह उस रस में उत्पत्ति (अन्न) से ही रसहीन होता है।

(६) हे रसिको कान देकर सुनो ससार के (में) अनेक रस हैं। (७) किन्तु जो समस्त रसों में राजरस [प्रेम रस] है उसका बखान (वर्णन) मैं [इस रचना में] कर रहा हूँ।

टिप्पणी—(३) अकि < इकु = ईल। (५) बात < बता < बार्ता। (५) उत्पन्न < उत्पत्ति (?)। (७) बखान < बखान < व्याख्यान।

[४४]

आदि क्या हापर भलि^१ आई^२। कलिबुग^३ महु^४ भासा क^५ गाई।

गड़ह^६ कनगिरि नगर सोहावा। जनु कविभास उत्तरि भुई छाबा^७।

सुरजमानु तहुँ राउ बसाना^८। मो लख सात दीप जग जाना^९।

गने न जाहि^{१०} सूर गज जूहा। राज साज अन बन^{११} सबूहा^{१२}।

आइ सूर पियरी^{१३} भूप आई। संतति सूर नहि उद कराई^{१४}।

निधि परसान^{१५} पूर सबहो निधि अन धन हय ममत^{१६}।

सुत^{१७} बिना प रनि दिन राजा के चित नित^{१८} ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त कीवी अर्थात् की के वरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ ए हापर म। २ ए भई। ३ रा जल। ४ ए मो। ५ ए जा।

(२) १ रा उपर भुई, ए उत्तरि कै। २ ए आबा।

(३) १ ए राजा बखानी। २ ए जानी।

(४) १ ए, गनै न आइ। २ ए भव। ३ रा जहा।

(५) १ ए आइ सूर पियर। २ ए सूर उधिन मर आई।

(६) १ ए बिधि प्रगाव भरि पूरा है गी जा धर्मन।

(७) १ रा भूप। २ रा आके चित न मित।

अर्थ—(१) मुक्तः यह कषा हापर [से] बती आई है और [अब] कलिबुग में भासा में बने

जाकर गई [जा रही] है। (२) कपकगिरि पड़ [नाम का] एक सुहावना नगर था जो [देता था] भानो केलाता (स्वर्ग) उतर कर भूमि पर आ गया हो। (३) सूर्यमानु वहाँ का राजा कहा जाता था, जिसको ससार में नौ ब्राह्मण और सात द्वीप मर जानता था। (४) उसके सुरम और मन्मथ गिने नहीं जा सकते थे [और न] उसके राज-साम्र अन्न-धन-समूह [गिने जा सकते थे]। (५) उस [सूर्य जैसे] राजा की आयु पीसी (अस्त-काल की) धूप [बैती] हो आई किन्तु संतति सूर्य उबस नहीं कर रहा था।

(६) विधाता के प्रसाद (अनुग्रह) से अन्न बन हय तथा मदमत्त द्रव्य [आदि] सभी निषिद्ध बुरी हुई (७) किन्तु राजा के मन में रात्र-दिन निरव ही पुत्र [के अभाव] की चिन्ता [रहती] थी।

टिप्पणी—(२) कविष्ठास < कइष्ठास < कैष्ठास < स्वर्ग। बलान < बलनाथ < व्याख्यातम् < कहना। (४) सुरै < सुरग < घोड़ा। ब्रह् < बृह। (५) सवृह < समृह। (६) आइ < आयु। (७) मयमत्त < मदमत्त।

[४५]

कलि संतति सत्त दोसरि आऊ । बिन सुत जीवन जनम नसाऊ ।
सुत सत्त मात पिता जग रहही । सुत सत्त नाउ जब (जियत ?) जुग रहही ।
सुत बिन मुँ नौ नाउ को लेई । सुत बिन को बत पिहहि दई ।
सुत बिन अंग्रिया जीवन ससारा । सुत दीपक बिन जग अंधियारा ।
प सभ कहत सपुत के बाता । जनि कपुत बस दह बिधाता ।

जम छठि अगुरी बरि न उपजे पाहु सरीर ।

जो राग ती अपजम जो बाग ती पीर ॥

पा.प्रस्तर—यह छंद न म गही है।

अर्थ—(१) कलिकाल में संतति (संतान) से ही [अनुपपन्न हो] दूसरी आयु होती है और बिना पुत्र के जीवन और अन्न नष्ट हो जाता है। (२) पुत्र से ही धात्रा-पिता संसार में [मित्र] लाभ करते हैं और पुत्र से ही [उनके] नाम धन-युग तक जीवित (?) रहते हैं। (३) पुत्र के बिना बोन [उनके] बरते बर [उनका] नाम से और पुत्र के बिना बीज और क्यों [उन्हें] पित्र-दान बरे ? (४) पुत्र के बिना [धात्रा-पिता का] जीवन ही लभार में व्यर्थ हो जाता है और पुत्र-दीपक के बिना [उनके लिए] संगार ही अंधकार-पूर्ण हो जाता है। (५) बिनु में यह सब सुपुत्र की बान बरी; बिधाता बन में सुपुत्र न है।

(६) जैसे जिली के शरीर [हाथ] में छठी जंगली के रूप [में कोई जंगली] निरन्ते, (७) तो उतरो [बनाए] रत्न के बर अपयज्ञ होता है और यदि उतरो बारे (बाद बंदे) तो बोझा होतो है।

टिप्पणी—(१) आऊ < आयु।

[४६]

तपा एक आवा तहि^१ ठाऊं । लोगन्ह जाइ क पकर^२ पाऊ ।
तहि पाछे^३ राजा बलि आवा । पाउ बाइ क सिरहि^४ बड़ावा ।
यह बड़ि मया बिषाते कीन्हीं^५ । तुम्ह सेर^६ भेंट जो हम कह दीन्हीं^७ ।
जस मांगा तब देअ तम^८ दीन्हा । मोर बिनति बिघन सुनि लोन्हा ।
साथ एक भारे बिय^९ अहई । तुम्ह सों भलहि साइ^{१०} निग्वहई ।
तप समाधि लगाई^{११} लोग बहुरि घर आउ^{१२} ।
एकसर राजा बन मह सउ तपा कर पाउ^{१३} ॥

पाठांतर—(१) १ ए तहि । २ ए जाइ ओ परया ।

(२) १ ए तेहि पाछ । २ ए पाँच घूरि कै बीच ।

(३) १ ए बेहि बड़ि मया बिषने कीन्हा । २ रा ए सा । ३ ए भट हमहि बहि कीन्हा ।

(४) १ रा तव दाम आ ।

(५) १ ए जिउ । २ ए तामी भले मा ।

(६) १ ए तव ममाधि कया । २ ए आब ।

(७) १ ए मव तपाकर बीच ।

अर्थ—(१) [इसी समय] उस स्वान पर एक तपस्वी आया । लोगों ने जाकर उसके पैर पकड़े ।
(२) उसका बाव [बहु] राजा भी बसा आया और [उस तपस्वी के] पैर धोकर [बरबोरक को] उसने सिर पर बड़ाया । (३) [तबतक, उसने कहा] “बिबाता ने [मुझ पर] यह बड़ी मया (स्नेहपूर्ण हवा) की कि तुम से उसने मुझे भेंट ही (कराई) । (४) [अभी तक जब जब] बसा चुक मैंने जाना, ईश ने बीसा ही दिया और बिबाता ने मेरी बिगती मुन को । (५) [अब] मेरे भी मैं एक ही साथ (सुहा) है और वह तुम से (तुम्हारे द्वारा) भले ही निगह आवे (दूरी हो जावे) ।”

(६) अब उस तपस्वी ने समाधि लगाई लोग लौटकर आते आए, (७) किन्तु राजा अनेका हो बन में उस तपस्वी के पैरों की सेवा करता रहा ।

टिप्पणी—(५) साथ < बड़ा < सुहा अभिप्राय बाधा । निग्वह < निग + वह = निगना पार पड़ना पूरा पड़ना ।

[४७]

रानि दबम मवइ पह^१ सागा । दबम न मून रनि मव^२ जागा ।
मूंग^३ पियाम नीन सुय छाड़ा^४ । तपा आगे^५ निमिशिन रह ठाड़ा ।
पारइ बरिम सब जो कीन्हीं^६ । तपा ममाधि छूटि तव बीन्हीं^७ ।
कोन माहि तू^८ मानुम बय^९ । कोन काज तू^{१०} एहि ठा सरा ।
म राजा एहि^{११} नगर यतारी । बारइ बरिम भए^{१२} सब मुहारा^{१३} ।

अन धन हय गय* अगनित रानी कोस सहन भडार^१ ।

एन न पूत^१ बिधि दीन्हा जासों उत्तरों पार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सेवा जे। २ ए दिवस न सुतै रैनि निसि।

(२) १ ए मूल। २ ए नीब न बाबा। ३ रा ए जागे।

(३) १ ए सेवा सी कीन्हा। २ ए छूटे मुषि कीन्हा।

(४) १ ए रै। २ ए बारा। ३ ए कीन काज तुह रा कीन माहि तुषा
(तुल पूर्ववर्ती चरण)। ४ ए एक पाव।

(५) १ ए यहि। २ ए आ। ३ ए सेवा सो हारी।

(६) १ ए अगनित अन धन रानी है न सहन भडार रा अनधन है अगनित रानी
कोस सहन भडार ।

(७) १ रा विपुल।

अर्थ—(१) रात-दिन बह [उसकी] सेवा करने लगा दिन में बह सोता नहीं था और
रातों रात भी [उसकी सेवा में] बह जागता था। (२) उसने भूख प्यास और नींद का कुछ
झेड़ दिया था और बह [उस] तपस्वी के आगे रात-दिन झड़ा रहता था। (३) बारह बजों तक
[इस प्रकार] जो उसने सेवा की तो अब तपस्वी की समाधि छूटी उसने [राजा को] बहबल।
(४) [उसने पूछा] 'तु मनुष्य की कला कीन है और किस कार्यसे तु इस स्थान पर झड़ा है?'
(५) [राजा ने कहा] "मैं इस नगर में (का) राजा हूँ और [मुझे] तुम्हारी सेवा में बारह वर्ष
हो चुके हैं।

(६) अन्न धन हय, मज, रानियाँ कोस सहन (संरक्षणीय सामग्री) और भंडार
अवस्थित हैं (७) [किंतु] बिधाता ने एक पुत्र नहीं दिया है जिससे मैं [महाराज के] पार
उत्तर सकूँ।"

टिप्पणी—(१) रैनि < रवणी < रजनी। (४) करा < कला। (६) अन < अन्न। नय <
पत्र। (७) पूत < पुत्र।

[४८]

अमि^१ बिलती जो राज^१ कीन्हां । तपा परमन होइ^३ भासिप दीन्हां ।

तप^१ कहा सुनु राज मुबारा । तो कह^३ दीन्ह बिधन एन बारा ।

बै जवनार पिड एन कीन्हां^१ । हरण सहित राजा कह दीन्हां ।

जो रानी अह^१ प्राण पिमारी । तहि बहु जो मन भाव तुम्हारी^३ ।

राजा ल क^१ सीस^३ बडावा । परमि पाउ तब नगर मिधावा^३ ।

पटबंधी^१ जो रानी साहि कहा से गाढ़^३ ।

बै अमनान मुख हो^३ तब त्वाँ तें जाह^३ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अम। २ ए राजै। ३ ए भै।

(२) १ ए गरी। २ ए कुमार। ३ ए ताटे।

(३) १ ए कीन्हा। २ ए राजा ने दीन्हा।

(४) १ रा है ल रै। २ ए ताहि बहु मनभाव लागरी।

(५) १ ए आ। २ रा निर। ३ ए परमि पाव सो नगहि बाबा।

(१) १ ए पाट बनी। २ ए बहेतु गुह लाहु।

(७) १ ए लो बहनी लो बाहु।

अर्थ—(१) राजा ने जब ऐसी बिनती की तो तपस्वी ने प्रसन्न होकर उसको आसीर्वाच दिया।
(२) तपस्वी ने कहा “हे राज-भूपाल तुम [अब] बिनाता ने तुम को एक बालक दिया।” (३) [तपस्वी ने] जेबनार (रसोई) कर एक पित्र [लेपार] किया और हर्ष-समेत [उस पित्र को] राजा को दिया और कहा “(४) लो रानी [गुम्हारी] प्राण-प्रिया है और लो गुम्हारी बहेती है, उसे प्य हो।” (५) राजा ने [उस पित्र को] लेकर सिर बढ़ाया और [तपस्वी के] पैर छू कर सब नगर को गया।

(६) लो पडबनी रानी (पट्टरानी) लो उससे उसने कहा “तुम इसे लेकर जानो और (७) स्नान कर तथा गुम्ह होकर सब यहाँ से जानो।”

टिप्पणी—(२) भुवार < भूपाल। बार < बाल = बालक। (३) जेबनार < जीवनवारि। (४) पियार < प्रियालु।

[४९]

बिरिच^१ वैस जेत^२ आस निरासा। राज मंदिर विधि निर्मई^३ आसा।

संतति आस राज औ^४ पाई। कर लागु सुत आस^५ बघाई^६।

मस लगन असुनी^७ पसारा। दसए मांस^८ ऊच औतारा।

पचए ससि औ^९ सूरज सतए^{१०}। दसए सुरु बिरस्पति मवए^{११}।

विस्टि सनीचर मसत निलारा^{१२}। दसई राति भएउ औतारा।

मवन मूरति औ भागिबत रानी राठ^{१३} भघार।

सुमम महरत औतारा^{१४} राजा कुल उजियार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बिच। २ ए जे। ३ रा राज मंदिर बिधि पुरई, ए राजा बिहु जे निर्मये (< निर्मई का लि)।

(२) १ ए बस। २ ए अनंत। ३ ए बौपाई।

(३) १ ए अस्विनि। २ ए अंस।

(४) १ रा और। २ ए भूरज छटवाई। ३ ए बिहस्पति मवए।

(५) १ ए लिलारा। २ ए दसवें।

(६) १ ए राय।

(७) १ ए महुन औतरे।

अर्थ—(१) बृह बपत् में [राजा] जितना ही आया से निरास था राज-अवन में बिपाता ने [उतनी ही] आया निर्मित कर दी। (२) राजा ने जो सतति की आया पाई वह पुत्र की आया से बपाई (आनंदोत्सव सूचक बात) करने लगा। (३) भेष लज्ज में अश्विनी के प्रवेश पर दसवें मास में उसका पञ्च भवतार (जन्म) हुआ। (४) [उस समय] राशि पौषवें स्वान पर था सूर्य लग्नवें, शुक्र दसवें और बृहस्पति नवें; (५) राशि मकर की लग्न पर वृष्टि लो [ऐसी] रानी की रात को उसका भवतार (जन्म) हुआ।

(६) वह [पुत्र] जवन (कायदेव) की मूर्ति [जैसा बचवान] तथा भाग्यवान था और

रानी-राजा [के जीवन] का आचार था; (७) वह राज-कुस का प्रकाश पुन मुहूर्त में अवतरित हुआ।

टिप्पणी—(२) बर्बाई < बडावन < बर्बापन = हर्षसूचक वाच्य वाक्य। (५) निस्सर < निसाड < ससाट।

[५०]

मार भए पड़ित जन आए^१। रासि परसि औ^२ गरह गनाए।
पड़ितन गनि^३ गुनि कहा बिचारी। होइ नरेस छत्रपति भारी।
गन गद्यप भुनि बार जोहारहि^४। जग नरेस सम^५ सेवा सारहि^६।
रत्नवत्त बुधिवत्त^७ बिनानी। रन छत्री साका परवानी।
दाठा गद्व गरिस्ट गभीरा। औ दयाल पर परसिहि^८ पीरा।

रत्नम चीन्ह छ रखा कंठ मांघ दुहु पाउ^९।

सिय रासि कृ^{१०} दीपक धरेउ मनोहर मारं ॥

पाठांतर—(१) १ ए औ। २ ए रासि बार गन औ।

(२) १ ए गुनि।

(३) १ ए जा हा^१। २ ए सज। ३ ए गार^२।

(४) १ ए भागिवत्त।

(५) १ ए पीरी।

(६) १ ए समन बिन्ह बठ माये कइ रैन दुहु पाउं रा छत्रन चीन्ह रधिर रेता
बठ मांघ दुहु पाउ।

(७) १ रा कुली।

अर्थ—(१) लखेरा होने पर पड़ित जन आए, [बिम्बूनि] रासि की बरीसा करके यहाँ की
दिनाया (गिना)। (२) पड़ितों में लयना तथा बिचार करके कहा यह भारी छत्रपति नरेस
हो (होगा)। (३) पंचवर्ष गन तथा भुनि इसके द्वार पर जोहार (नमस्कार) करें (करेंगे) और
जगत् के समस्त नरेण इसकी सेवा सार (सारथी)। (४) यह लक्षणवान बुद्धिमान और बिनानी
हो (होगा) और रन में प्रभावित साका (राजित-प्रवीण) बाला शत्रिय होया। (५) यह दाता
(बानी) गुण (गौरव वालो) परिष्ठ और गभीर हो (होगा) यह दयामु हो (होगा) और
दुसरे की पीड़ा परने (समझेगा)।

(६) यह रेता के लक्षण-बिम्ब इसके कंठ, मस्तक तथा दोनों पैरों में है (७) सिंह रासि में
[उत्पन्न यह] पुन-दीपक हो (होगा) [ऐसा कहते हुए] उन्होंने इसका नाम मनोहर
रखा।

टिप्पणी—(१) गंघर < गंधरं। बार < द्वार। (४) समन < ममान। बिनानी < बिगानि
< बिजनिन्।

[५१]

चौहूँ बरिस हगारह^१ मासा^२ । नबए दिन पुनिब^३ परगामा ।
जनम सूर सतए ससि सारा^४ । मिलै सजन काहूँ पम पिमारा ।
बुद्धबार बिहक^५ कै राती । उपजहि बिहूँ कुंवर कैं छाती ।
तहि बियोग हाहूँ कुंवर बियोगी^६ । बरिसेक फिरे कुंवर भा^७ जोगी ।
तहि पाछें पुनि जम जम^८ राऊ । अस बिछु^९ लगन बेर ह^{१०} भाऊ ।

सुख लगन जनमौती प किछु गरहूँ विसस ।
बरिस चतुरदस उमर बिछु^१ उदास चित बस ॥

पाठान्तर—(१) १ ए एगारह । २ रा बासा । ३ ए पुनिब ।

(२) १ ए साठ ।

(३) १ ए बीकै । २ ए उपरै वेम कुंवर क ।

(४) १ ए तेहि बियोग हो । २ ए बियोगी । ३ ए बरिस एक भी दिसा को ।

(५) १ ए पाछे ती जम । २ ए जो । ३ ए लगन गरहूँ का ।

(७) १ ए कछु ।

अर्थ—“(१) [इसकी आयु के] चौदह वर्ष और प्यारह मास [के अनंतर] नवें दिन पुनिमा के प्रकाशित होने पर (२) जब कि [इसके] जन्म-स्थान पर सूर्य तथा सप्तर्षि स्थान पर शशि होंगे इसे कोई प्रेम-प्रिय स्वजन मिले (मिलेगा) । (३) बुधवार तथा बृहस्पतिवार [के बीच] की रात कुमार की छाती में बिछूँ उत्पन्न हो (होगा) । (४) उस बियोग में कुमार बियोगी हो (होगा) और एक वय तक कुमार बीपी हुआ फिरे (फिरेगा) । (५) उसके पीछे फिर जन्म-जन्म तक राजा हो (होगा), ऐसा कुछ लगन का भाव है ।

(६) इसकी जन्म-वशी में लग्न धूम है, किन्तु कुछ दूरों का बिशेष (विशेष प्रभाव) [भी] है

(७) चौदह वर्षों के उपरांत [जन्म-वशी में] इसका चित कुछ उदास दिखाई पड़ता है ।”

टिप्पणी—(१) पुनिब < पुनिमा । (२) सजन < स्वजन । पियारा < प्रियामु । (५) जम < जम । (६) जनमौती < जन्म-वशिका । गरहूँ < गरह ।

[५२]

छनी राति छठि बाजन बाजे । घर घर नगर बपावा साने ।
मम घर नगर उछाहूँ नस्यानां । खोरि खोरि आन^१ निमानां^२ ।
राज गिरिहूँ समही^३ सुनि^४ भाए । कर^५ छनोसठ पोनि बपाए ।
श्रिमम^६ तिलक^७ चतुरमम^८ अगा । ओ सोभित^९ उर हार सुरगा^{१०} ।
मुग तबोल^{११} मिर सेंदुर रोरा । गावहि^{१२} लगनी होइ अशोरा ।
सम^{१३} घर नगर बपावा ओ सम^{१४} खोरि अन^{१५} ।
सुरस कठ सम^{१६} गावहि^{१७} धुरवा धुरपद^{१८} छ ॥

पाठान्तर—(२) १ रा निमानां ।

- (३) १ ए में 'ही' नहीं है 'सब' मात्र है। २ रा सुनत। ३ ए करे।
 (४) १ रा मात्र भिन्न। २ ए चित्र ज। ३ ए सो मी। ४ ए तरंगा।
 (५) १ ए तबोर।
 (६) १ ए सब। २ ए जो।
 (७) १ ए जो। २ ए गायै। ३ रा मपर मी।

अर्थ—(१) लठी रात को लठी (पट्टी) के बाजे बजे और नगर में घर-घर बजाये (गुप्त कामना के बाध) सजे गए। (२) नगर में सभी घरों में उत्साह (उत्सव) और कल्याण (मंगल-कार) [होने लगे] और गली-गली में आनंद के निशान (ध्वज) [बजने लगे]। [राजकुमार की पट्टी] सुनकर राजमहल में सभी आए और लठीसो पीनिए (मंगल के अवसरों पर पुरस्कार पाने की अधिकारिणी लठीस बातियों के लोच) बजाये करने लगे। (४) जो मयमय (कस्तूरी) का तिलक किए हुए थी और अंघों में चतुरस्र [का लेप] लगाए हुए थी जिनके हृदय पर नुरंग (सुंदर) हार लीमिष था (५) जिनके मुख में तांबूल का और सिर में सिंदूर की रोली थी ऐसी तर्जनीय गा रही थी और अंदोर (आंदोलन—हस्ता) हो रहा था।

(६) नगर में सभी घरों में बधावा तथा लकी गलियों में आनंद हो रहा था (७) और सभी लोग रतीले कंठ से धुरवा तथा छ पद छंद गा रहे थे।

टिप्पणी—(१) बधावा < बड़ावण < वर्षावन < हर्ष अथवा शुभकामना शुभक वाद्य। (२) उछाह < उत्साह = उत्सव। (४) चतुरस्र < चतुस्र = चतुर्बुज अथवा कस्तूरी और नगर को समभाग में लेकर बनाया हुआ एक सुगन्धित लेप। (५) तंबोल < साम्बूल।

[५३]

राजा घर भट अनन्य बघाई^१। सम परजनि पहिरोनी पाई^२।
 ओ^३ जत घर अमनक ब^४ छाए। सम घर सुर पटोर पटाए^५।
 दम बिमान जहाँ लहि^६ आह। त सम^७ एव बरिस न उमाह।
 ओ जेत^८ नगर दम मह^९ सुगी। से सम कीन्ह दान द^{१०} सुगी।
 ओह^{११} अनेग जो भई बघाई। सा माहि जोभि बही नहि^{१२} जाई।
 हाट पटोरमह छाए भिगमद अगर बपूर।
 मगर गोरि सम^{१३} महनै तरनिन मांग^{१४} सेंदूर ॥

पाठ्यार्थ—(१) १ ए राजा बिह गुनि हर्ष बधावा। २ ए सम पर जनि पहिरोनी पाई। (गुप्त परवर्णी अर्जुनी)।

(२) १ रा और। २ ए अमनक अमनक। ३ ए मह अम पहिराजि पाये। (गुप्त पूरवर्णी अर्जुनी)।

(३) १ ए लु। २ रा ए मह।

(४) १ ए अम। २ ए मा। ३ ए ए मह लिये दान दे।

(५) १ ए ओ। २ ए ओ। ३ ए कहा न।

(६) १ ए मह। २ ए तरनी मिर।

अर्थ—(१) राजा के घर में आनंद की बघाई हुई (अभ्यर्थ-शुभक वाद्य हुआ) और

समस्त प्रजा (देवक-वध) ने पहिले के बरत पाए, (२) और जितने घर अमनैकों (आत्मीयों ?) के [उस नगर में] छाए थे उन सब घरों को [राजा ने] तुरण (घोड़) और पटोर (रेशमी बरत) भेजे। (३) देश में जहाँ तक (जितने भी) किसान (हथक) थे वे सब एक बर्य बर्यन्त उपाड़े न गए (उनसे लगान नहीं ली गई)। (४) और नगर तथा देश में जितने बुद्धी थे उनकी बात देकर [राजा ने] सुन्नी किया। (५) और भी जो अनेक [प्रकार की] बघाई हुई, वह मुझसे जिज्ञा के द्वारा बही नहीं जाती है।

(६) हुल्ले पटोरों (रेशमी बरतों) से अलङ्कारित को मृगमर (कस्तूरी) अगर तथा कपूर (२) नगर की समस्त गलियों में महुक रहे थे, और लक्ष्मियों की मार्गों में सिद्धर [दीपित हो रहा] था।

टिप्पणी—(१) बघाई < बडावग < बर्बापन = बन्धुवध-मृगक बाध। परजा < प्रजा। (२) अमनैक < आत्मीय (?)। तुरै < तुरण = घोड़ा। पटोर < पट्ट-कृन् (?) = रेशमी बन्ध। (३) उपाड़ < उड़ + ग्रह = लगान। (४) जेन < जतिव < यावन् = जितना।

[४४]

बख्ते गिन बख्ती मह^१ भारी । नगर लोग नबत्ता मम^२ भारी ।
 दुन्नी लोग बमाह^३ जँबावा । अमनकन्ह^४ घर घोर पठावा ।
 औ जानक जहवां लहि^५ आए^६ । भणि मोंट पनबारा पाए^७ ।
 नगर छनीसो पीनि सबाई^८ । मव कह^९ राज दीन्ह^{१०} बघाई ।
 भांट घोर व दे बहुराए । भाटिनि सब पटोर पहिनाए ।
 सान रुप औ अम धन^{११} हय गय^{१२} रतन पवार ।
 राम राज कुवर क बघाई राजा किछ न भडार ॥

पाठान्तर—(१) १ छ बख्ते गिन बख्ते (< बख्ती—य कि) भी। २ छ जानेवना रा मवना मव।

(२) १ छ बीटा। २ रा अनेकन के।

(३) १ छ जहवां लगु। २ ए जावा। ३ ए जा जम तेहि तम ई बहुरावा।

(४) १ छ ए मबाई। २ ए बीम्ह।

(५) १ ए साना बघा मम धन। २ रा पुनि (?) ।

अर्थ—(१) [जन्म के] बारहवें दिन [राजकुमार की] भारी (धूमधाम की) बख्ती हुई जितमें नगर के समस्त लोग संपूर्ण रूप से आमंत्रित किए गए। (२) [राजा ने] बुनिया लोगों को बिटा कर जिमाया और अमनैकों (आत्मीयों ?) के घर घोड़े भेजे। (३) और जहाँ तक यावक आए, वे पनबारे (भोजन के पत्तल) बाकर भोटे हो गए। (४) नगर में समस्त छत्तीस दीनिये थे उन सब को राजा ने बघाई थी (अभ्युदय-मृगक उबहार दिया)। (५) भाटों को [राजा ने] घोड़े दे-देकर वापस किया, और सभी भाटियों को पटोर (रेशमी बरत) पहनाया।

(६) सोम, बाँदी अथ धन हय गम रतन तथा प्रवाल (?) (७) राजकुमार की बघाई (जन्म के उत्सव) में [सब कुछ] देकर राजा ने भीहार में कुछ न रक्ता।

टिप्पणी—(२) अमनैक < आत्मीय (?)। पीनि = पानबाली। रुपय के अथवा पर पुरम्भारादि

पानेवाली जातियाँ। (४) बघाई < बर्षापन = अमृदय-सूचक उपहार। (५) पटोर < बटुपन (?) = रेसमी बस्त्र। (६) मोर < मोटक = मोड़ा। (७) पंवार < पंवास < पंवास = मृषा (?)।

[५५]

पाँच घाई^१ ओ^२ सात सेलाई^३। राखे बुद्धि सुजाति लगाई^४।
 बासर पाँच^५ अमित जेवनारा। दिन दिन माङ्ग^६ राजकुमारा।
 अस बसंत सरिवर क^७ बाय। ओटि दूध नित करे^८ अहारा।
 रानी राउ दक्षि रहसाही। अति हुलास सुख^९ अग न^{१०} समाही।
 स्निन स्निन^{११} राजा अकम लावे। नवछावरि अति^{१२} दरब छुटाव।
 निरिय बेस कै^{१३} सतति^{१४} स्निन स्निन^{१५} रहसै^{१६} राउ।
 सम^{१७} दिन कोइ कोलाहल ओ निसि^{१८} हरल बघाव ॥

पाठांतर—ए मे उपर्युक्त बर्णाली २ तथा ३ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए बाह। २ ए ओ। ३ ए सेलाई। ४ ए सुजाति मँलाई।
- (२) १ ए पसर पँच। २ ए पनुही।
- (३) १ ए रिगु सिर के। २ रा करहि।
- (४) १ ए यह घण्ट नहीं है। २ ए न देह।
- (५) १ ए मनसुन। २ ए निठ। ३ रा जुहाई (?)।
- (६) १ ए बैलि। २ ए संवत। ३ ए जन सन। ४ रा रहसहि।
- (७) १ ए सब। २ ए, सब दिन।

अर्थ—(१) राजा ने [राजकुमार के लिए] अच्छी जातियों की पाँच घाई और सात सेलाई की। (२) [अति के लिए] दिन में पाँच बार अमृदोपम जेवनार (रेसमी) होती थी। [फलतः] राजकुमार दिन-दिन बढ़ने लगे, (३) जिस प्रकार बसंत में पुष्प की डाल [बढ़ती है]। वह नित्य ओटाकर (ओटाए हुए) दूध का आहार करता था। (४) रानी और राजा उसे बैठा कर हँसित होते थे और अति उत्साह और सुख से [५] दारों में नहीं समाते थे। (६) अच-अच राजा कुमार को अंग से लगाता था और उसकी म्पीछावर में बहुत-सा हँस लड़ता था।

(७) कुछ बघाव की सतति से राजा अग-अग हँसित होता था; (८) सनी (पूरे) दिन कोइ (कोटुट) और कोलाहल तथा रात में हँस का बघावा होता था।

टिप्पणी—(१) गा^१ < घात्री। (२) जेवनार < जीवनधारि = रसा^२। (३) रहम < रमण = हन। (४) हुलास < उष्णता। (५) मोर < मुड़ (६) = गीगुर। बघाव < बर्षापन = अमृदय सूचक वाप।

[५६]

निमि घाम^१ कर^२ मम भोग^३। राजबबर भा^४ माउ^५ मंजोगा।
 पवार^६ बग्गि धरगि भुद पाऊ^७। पडिग^८ कै^९ बँघारउ^{१०} राऊ।

दरब कोटि दुह आगे^१ राखा । तहि पर यषन राउ अस^२ भाखा ।
जइस मोर सुत सइसन तोरा । बिद्या देत न लागइ^३ भोरा ।
मोहि तुम सों नहि लागहि^४ मोरी । दिन दिन करव सेव म^५ ठोरी ।
आपुहि दोल^६ म लाएहु^७ विनय चरम गहि राउ ।
प्रतिपालहु बालपन^८ आपन मोर हियाउ ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त अर्द्धांश ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए मं यह छन्द नहीं है। २ ए मुक्त कै भोगु। ३ ए मी। ४ रा मोही।
(२) १ ए पाऊ। २ ए के।
(३) १ ए जाये। २ ए ठापर विनयी रायै।
(४) १ ए लाव।
(५) १ ए मोहि ठोगी न लायै। २ ए मी मेवा।
(६) १ ए सोम। २ ए लावौ।
(७) १ ए बालपन।

अर्थ—(१) रात दिन के दोते भोगों से राजकुमार की जम्बू का उपयोग हुआ, (२) तो पाँचवें वर्ष में उसने मृगि वर धर रखे और राजा ने पंडित [विमुक्त] कर उसे [पढ़ने के लिए] बिदा दिया। (३) वो कोटि इच्छा उसने [पंडित के] जाये रक्खा और उस पर भी [पंडित से] राजा ने एका वचन कहा "(४) यह बंस मेरा पुत्र है बंस ही तुम्हारा भी है; इने बिद्या देते भोर (भूल या कोर-कसर) न हो। (५) [यदि इस कार्य में] मुझे तुमसे कोई बुरि नहीं लगेगी (मिलेगी) तो मैं तुम्हारी सेवा दिन-दिन (निरंतर) करूँगा।"

(६) उसका चरम पक्ष कर राजा ने कहा, "अपने से (अपनी ओर से) तुम शेष (बुरि) न लमाना (करना) (७) और अपने और मेरे बालपन के हारिक स्नेह-स्पर्शहार का प्रतिपाल (निर्वाह) करना।"

टिप्पणी—(१) आठ < आपु। (२) दरब < इश्य।

[४७]

पणित भम कुवरहि ओरावा^१ । एक वचन बहु अरय पड़ावा ।
जोग कोष कुवरहि ओराव^२ । चित्र उरहि^३ अरय मधुमास^४ ।
घोरइ तिन भा कबर मयामा^५ । बर भद बहु माउ^६ वगाना^७ ।
जोग^८ यमर^९ ओगव^{१०} मयमावा । पिंगल कोरु कठ ओरावा ।
बिपाकरन जोनिग औ^{११} गीता । गीत कबिता अरय जो जीता^{१२} ।
अउर गरय गियान जाय क^{१३} पड़े^{१४} अनग कुमार ।
नोपुन भी गुन बिद्या बादि^{१५} म कोऊ पाव ॥

पठान्तर—(१) १ ए पुनि पंडित पुंजर मय लावा।

(२) १ ए जो भम शील कुंजर भीरावा। २ रा उगेतिव (?) ए उरेदे।

३ ए युजावा।

- (३) १ रा निमाना। २ ए भाति। ३ ए बलागी।
 (४) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ रा में यह शब्द नहीं है। ३ ए मर ३।
 जमह।
 (५) १ ए व्याकरण जे जोतिल। २ ए गीत गोविंद। ३ ए कीठा।
 (६) १ ए भी जो प्रब ग्यान जोय। २ रा कोरष। ३ ए पड़ा।
 (७) १ रा भाउ।

अर्थ—(१) पंडित ने कुमार को इस प्रकार रटा-रटा कर अभ्यास कराया कि एक-एक बचन के उसने बहुत-से अर्थ पढ़ाए। (२) बहुवीण तथा लोक छान्नों को कुमार को रटता था और बिना उठे-उठे कर उनके अर्थ समझाता था। (३) बीड़े ही बिनों में [पंडित के परिचय से] कुमार सजान हो गया और वेद (विद्याओं) का भेद अनेक भाषों के साथ बखानने लगा। (४) उसने धोव तथा अमरकोश को साथ (?) भाषों से (कुमार को) रटा बिदा और विमल तथा लोक-छान्नों को भी बंड करवा दिया। (५) फलतः व्याकरण ज्योतिष और भगवद्गीता तथा गीतों और काव्यों के अर्थ करने में उसको कौन भीतता?

(६) शास्त्र-और योग के जग्य अनेक ग्रंथों को भी राजकुमार ने पढ़ा। (७) और बिदा में वह ऐसा निपुण हुआ कि कोई उससे बात नहीं कर सकता था।

टिप्पणी—(१) (४) औरष < उरुष = डोर डोर से बहलाना रटाना। (२) उठे < उठेनम् = रखाएँ बीच-बीच में जाहति बनाना। (३) बलाग < बलबाल < व्यापानम् = बहना बिबरन देना। (७) नीपुण < निपुण।

[४८]

सी लहि^१ कुवर गुन^२ विद्या साधी । जी लहि गांठि बागही^३ बांधी ।
 सी पुनि कुवर मरी^४ ओराई । साधन नाउ^५ सिस्टि जत^६ आई ।
 गांड फरी ओ नून^७ बटारा । माल सरौ अति सुधर^८ कुमारा ।
 धनुष^९ बान लावौ कहि जोरा । बार बांधि मोली सिर^{१०} पोरा ।
 ऐंग^{११} कुंवर मारग बर माजा । सरग धनुष^{१२} दगल^{१३} छपि^{१४} लाजा ।

रम मूरा^{१५} बिद्या पुन पूरा दस ओ चारि निमान ।

भागिन^{१६} बुधिन^{१७} मग्न मूरति गुर(?)^{१८} ग्यान ॥

- वाक्यार्थ—(१) १ ए जी लहि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए जी लनि गांठी बारी।
 (४) १ ए लव जा कुवर मरी। २ रा साधन जोर ए साधना मोह। ३ ए जी।
 (५) १ रा ओ बाल ए ओ जोर। ७ ए लाल गरी ओ मापु।
 (६) १ ए धनुष। ७ ए निरि।
 (७) रा ए दनि। ७ ए कुवर के माग। ३ ए धनुष। ४ ए धानी। ५ ए ब घट दण्ड नहीं है।
 (६) १ ए दामपूर।
 (७) १ ए बनिन जा। २ ए नून।

अर्थ—(१) तब तक कुमार ने गुनों और बिद्या की सामना की जब तक कि उसकी बारहूँ बर्षगाँठ बाँधी गई। (२) इसके अनंतर कुमार ने सारी (अन्न-बिद्या) ~~अन्न-बिद्या~~ किया और उन समस्त साधनों (सम्मान) का जितने सुख में आए वे। (३) लौटा फरी कुंत (वर्षा) कटार और मात सरी की कुमार अत्यंत सुखरता के साथ धारण करने (बताने) लगा। (४) वन्य-बाण [के प्रयोग] में किससे उसकी तुलना की जाये? मोती यदि सिर पर बाँधी में बाँधे हुए होते वे तो उनकी [बाणों से] फोड़ बैता था। (५) कुँवर ने छात्र (सीनों का अनुप) इस प्रकार साक्षात् कि स्वर्ण (आकाश) का वन्य भी उसे देखकर काम से छिप जाता था। (६) बहरण में दूर हुआ और बिद्या तथा गुनों से परिपूर्ण हुआ तथा वसुधेश बिद्याओं का नियाम हुआ। (७) वह धाम्यवान् बुद्धिमान [वप में] मदन की भूति और ज्ञान में गुरु हो गया।

नियमी—(२) जेत < जेतिक < वावत् = बितना। (३) आठ < अहम्। (४) सारं < सांक्ष = सीनों कर बना हुआ वन्य। सरप < स्वर्ण = आकाश।

[५९]

बरहैं बरिभ^१ बहौं अब गाई । सहज राज^२ बित उपजउ^३ आई ।
अब मैं बिरिभ^४ बस न समारौं । राज तिलक गहि सुद ही^५ सारौं ।
पुनि राज^६ जन परिजन राए । औ अमनक नगर जेत^७ छारौं ।
सम सौं राम कीन्ह^८ मतराई । आइत मोरि पियरि बूष भा^९ ।
पाँवहि मते^{१०} आठ जो आबू । कुवरहि दउ राज को^{११} माबू ।
पुरुखहि^{१२} बिरिभ बस के सतति नवजोबन बिन^{१३} कत ।
कहा बसाइ^{१४} एन्ह^{१५} दूनी ऊजड^{१६} रितू^{१७} बसत ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बरहैं बरिभ। २ ए जो। ३ ए वाव। ४ ए पैमा।
(२) १ ए बिभ। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए बहौं।
(३) १ ए राजी। २ ए अमनन नय जो।
(४) १ ॥ मने राव कीन्ह रा सम सो राम पिण्ड। २ ए विदर।
(५) १ ए पचहु मते। २ ए के।
(६) १ रा मे यह शब्द नहीं है। २ ए जोवन बीते।
(७) १ ए बहह नाम। २ रा अब। ३ ॥ उजगी। ४ गु. ५०

अर्थ—(१) बारहूँ बर्ष की बात अब मैं गाकर कह रहा हूँ; राजा के ~~के उ~~ (बर्माने-साधन का नाम) उत्पन्न हुआ। (२) [जैसे सोचा] "अब मैं बरहैं ~~ब~~ सेना नही रहा हूँ (मेरी आयु शेष नहीं है) इसलिए पुत्र की पक्ष ~~का~~ राजतिलक कर दूँ। फिर राजा ने प्रजाजन और परिवार के लोगों की ~~का~~ अमनक (आत्मिक?) उस नगर में छाए हुए थे [यहाँ बुलाया]। (४) ~~अ~~ की [और कहा] "मेरी आयु [अस्तित्व नष्ट की] बीती चूष [बीती] हो ~~का~~ यदि वंशों के मन में आए तो यात्रा अब कि अपनी आयु है कुमार का ~~का~~ (६) पुत्र की बुद्धावरण में संतान प्राप्ति हो और बात के ~~का~~

(७) तो इन दोनों का क्या बात है? ये (ऐसे सुयोग) पचाइ प्रवेश की वस्तु प्रहृ
हैं।

टिप्पणी—(२) बैठ < बसत। (३) राव < रावत = बुझाना जाहूँवान करना। बमन
< बामनी (?) (४) जाइत < जाय। (५) नत < कात = प्रिय।

[६०]

अब सपति मोरी^१ केहि काजा । करहु^२ ती^३ करौ कुबर कह^४ राजा ।
मैं परिहरतं^५ पिरियमी^६ बहू । सुत बरसै अब^७ राज अनहू ।
बहुत सो^८ मटुय कुबर सिर घरऊं । मैं हरि नाम^९ जपो जहि^{१०} तरऊ ।
अन परिजन राउत^{११} ओ^{१२} राने । कुबर नाम^{१३} सुनि सम^{१४} रहमान^{१५} ।
राज^{१६} बचन सब जाहू^{१७} भावा । सागेउ होइ उछाह^{१८} बधावा^{१९} ।

सात दीप मो लख पिरियमी^{२०} चहुं विनि होइ^{२१} बधाउ ।
माजा^{२२} गज कुबर कह जाहू^{२३} वेउ^{२४} राज कह^{२५} राउ ॥

पञ्चांश—(१) १ ए मोरे। २ रा कहिय। ३ ए मैं यह वस्तु नहीं है। ४ ए कुंभर्षि
करी मैं।

(२) १ ए मैं प्रहरतं प्रियमी क। २ ए सुत जो करी।

(३) १ ए मैं यह वस्तु नहीं है। २ ए नाम। ३ ए ज।

(४) १ ए राज। २ ए जो। ३ ए नाम सुनि कै। ४ ए रहमान।

(५) १ ए राजा। २ रा सम सुनि मैं ए सब जाहू। ३ ए सब लोग हो
जानय। ४ रा बधाऊ।

(६) १ ए प्रियमी। २ ए होउ।

(७) १ ए राजा। २ ए देउ गज कह ग कर अब सम।

अर्थ—“(१) अब मेरी सपति [मेरे] किस काम की होगी? यदि आप लोग कहें तो कुमार
को राजा कर दूँ (२) मैं पुष्पी के इन्ध त्याग दूँ और पुन अब राज्य का आनंद भोग करे। (३) यदि
आप लोग कहें तो कुमार के तिर पर [राज का] मुकुट रख दूँ और मैं हरि नाम का जप करूँ जिससे
[प्रबन्धनायक से] तप जाऊँ।” (४) उसने [जितने भी] धार्मिक गुरु-जनधारिण रावत और
राने से कुमार का नाम गुन कर सब हर्षित हुए। (५) राजा की बात सब को अच्छी लगी और
उत्साह (उत्सव) तथा बधाया होने लगा।

(६) सात दीप और मो लख मैं पुष्पीतल पर चारों ओर बधाया देने लगा। (७) [बर्षा]
राजा राज्य कुमार को ताजना पहनाया था और कहता था कि वह उसको राज्य देगा।

टिप्पणी—(२) पिरियमी < पुष्पी। बह < इन्द्र। (३) राव < रावत। (४) रहम < रहम
= हो। (५) उछाह < उच्छाह = उत्सव। बधावा < बधाया < बर्षाया = मन्त्रदा-भूषण
वाय।

[६१]

अस्सुनि^१ रगत विरस्पति वारा^२ । ओ ससि कर सीसर^३ उमियारा ।
सुकुल पच्छ मधु मांस सोहावा । राजे^४ राजकुवर हुकरावा ।
आवत कुवर ठाड़ भा राऊ । निहुरि कुंवर तव परसर पाऊ^५ ।
पुनि राज गहि^६ अकम लावा । आपन ठाउ पाट^७ बैसावा^८ ।
प्रथमहि जो राज^९ जोहरावा । तौ पुनि सकल दस^{१०} सिर नावा ।

सिर सों मटुन उतारि औ राजा घरउ^{११} कुंवर के सीस ।

नगर उछाह कल्याण घरहि घर^{१२} सम^{१३} जग दह असोस ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अस्सुनि। २ ए विहस्पति। ३ ए ओ ससि गुर करे।

(२) १ ए राजे।

(३) १ ए बाह कुंवर बुह पकर पाऊं।

(४) १ ए राजे तौ। २ ए राज। ३ रा बैठावा।

(५) १ ए प्रथम आप राव। २ ए तौ ओ सकल सिस्टि।

(६) १ ए गप।

(७) १ ए नर कोय आनंद कर। २ ए सब।

अर्थ—(१) अश्विनी लग्न में बुहस्पतिवार को, जब कि राशि का शीतल प्रकाश था (२) गुरावने मधु (बैर) मांस के शुक्ल पक्ष में राजा ने राजकुमार को बुलवाया। (३) कुमार के माते ही राजा कड़ा हो गया तब कुमार ने झुक कर राजा के पैर छुए। (४) फिर राजा ने उसे पकड़कर अंक से लमा लिया और अपने स्वाग पर उसे पाट (सिंहासन) पर बिठाया। (५) क्योंकि राजा ने उसे सब से पहले कुंवर (नमस्कार) किया इसलिए फिर लज्जित बैद्य ने उसे सिर झुकाया।

(६) [अपने] सिर से मुकुट उतार कर राजा ने उसे कुमार के सिर पर रखवा; (७) नगर में उत्साह (उत्सव) कल्याण (मंगलाचार) घर-घर में हुआ और समस्त सत्तार ने उसको आशीर्वाद दिया।

टिप्पणी—(१) शीतल < शीतल। (५) औ < अबो < मर = क्योंकि कारण कि। (७) उछाह < उत्साह = उत्सव।

[६२]

राजा राउ जहाँ लगु आए^१ । राज अग्या^२ कुंवरहि^३ सिर नाए^४ ।
मात दीप नो सइ जग जानां । उर अस्त भइ^५ कुंवर के आनां ।
मबन ऊच महि मडल धाजा । राज [ओ]^६ पाट कुंवर जग^७ राजा ।
निमुवन मिस्टि^८ जो^९ आएसु मानां । कुंवर सीम^{१०} ठाकुर के जानां ।
मिरजनहार^{११} मिस्ति अत^{१२} मिरौ^{१३} । सम^{१४} पर आन कुंवर क फिरी ।

उर अस्त महि^{१५} मडल सुर मर^{१६} मुनि गन दव^{१७} ।

सम^{१८} अग्या प्रतिपालहि^{१९} करहि^{२०} कुंवर क मव ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सुरज्जर नाम जहं कमि भए। २ रा ए जग्या। ३ रा सुरज्जर
४ रा नए।

(२) १ ए मी। २ ए क।

(३) १ ए जुग।

(४) १ ए विस्टि। २ ए में यह दाम्य नहीं है। ३ ए सबह कुंजर।

(५) १ ए विरजनिहार। २ रा जब सिरी ए जे छिरी (गुन परखी
जरण)। ३ ए सब। ४ ए बी।

(६) १ ए महि। २ रा जर। ३ ए देठ।

(७) १ ए सब। २ ए प्रतिपारै, रा प्रतिपाकहि (< प्रतिपाकहि)। ३ ए बी
रा में यह दाम्य नहीं है।

अर्थ—(१) जहाँ तक (जितने भी) राजा और राज आए, राजा की आजा से सब ने कुमार
को तिर मुकाया। (२) सत्तार में सत्त डीप तथा भी बंड ने [उत्तका राजा होना] जान लिया
और जय (जयवाचक) से लेकर अस्त (अस्ताचल) तक कुमार की आज हो गई। (३) दू
दाम्य (सनाचार) नहीं-मंडक में बज गया (प्रसिद्ध हो गया) कि राज्य और पाट (सिंहासन)
दोनों से—कुमार [अब] जय का राजा है। (४) त्रिभुवन में भी सृष्टि की उसने [कुमार का]
आवेश माना और कुमार को [अपने] तिर पर स्थायी करके समसा। (५) सुजय-कर्त ने
जितनी सृष्टि की थी सभी पर कुमार की आज (आजा) फिर गई।

(६) जय (जयवाचक) से लेकर अस्त (अस्ताचल) तक यहीमंडक के प्राची देवता
मनुष्य, मुनि [तथा गंधर्व ?] गए (७) सब उसकी आज्ञा का निर्वाह करते और कुमार की
सेवा करते।

टिप्पणी—(२) (४) (५) आज < आजा। (६) पाट < पट्ट = निहामन। (४) आपनु <
आवेण।

[६३]

जनमोठी जत^१ सुग दिन रहे। ते सब^२ बुभर्हि मुग निरबहे।
चोवटु बरिग इगाय्द मांसा। आवा निग राति भोग बरामा^३।
पुनि जो गरह दगा नि^४ मारी। दोन्क आनि बुभर्हि भयवारी।
गिप लगम सुख^५ उजियारा^६। मो गन पीट्टे समि पैमारा^७।
दइय जो प्रपि जनि गुनि^८ घरी। बुदयार बिहफ मिर^९ परी।

जनमोठी गनि साम दुग जो बिछ^१ लिगा लिपार।

तनि जो तीन भुवन मिमि^२ मागे लिगा जो यत्^३ पार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ज ए जे। २ ए जे। ३ ए ते गव। ४ रा मुग कुंजर।

(२) १ ए भयन दिन पुनीष प्रगामा।

(३) १ ए जा।

(४) १ रा अमुनी ए गुरब। २ रा पीनारा (तुल परवर्ती चरण)। ३ ए नी सत कलक भी ससितारा।

(५) १ ए इहू जो गुनी साठि गुन। २ ए बीछी।

(६) १ ए रे।

(७) १ ए तेहि विमुचन जी। २ ए मटी।

अर्थ—(१) अम्पनी में जितने सुख के दिन थे उन सब में कुमार को सुख निभाया (दिया)। (२) बीरह बर्ष और प्यारह मास [होने पर] मोघ-बिलास की कति का दिन आ गया। (३) फिर जो उसकी प्रह-व्या के भारी (कष्टकारक) दिन थे उन्होंने आकर कुमार को अकपासी दी। (४) सिंह सन में जब सूर्य उज्ज्वल (प्रकाशपूर्ण) था और राशि में सोलह भुंवार करके [नक्षत्र-मंडल में] प्रवेश किया था (५) ईश ने जो धनि जिस प्रकार समझ कर रखी थी वह बुधवार और गुरुवसति [के बीच की रात] को कुमार के सिर पर आ पड़ी।

(६) अम्पनी के अनुसार कति-काम-बुख—जो कुछ भी लम्हाट (भाष्य) में लिखा होता है (७) उसको यदि तीनों बुख भी जिसकर [मिदाने में] लयें, तो भी उस कैल को कौन मिटा सकता है?

टिप्पणी—(१) (६) जननीनी < जग-जनिका। (१) जेत < जेतिअ < यावन् = जितना। (२) बेचव < बिसाम। कति < कति। (३) अकपासी < अकपासी = आक्रान्त। (६) सिक्कार < सिक्का < लम्हाट।

[६४]

अब उत्पति सुनु^१ रस क^२ बाता। जैं^३ कुबर पम^४ मद माता।

एक दिन नट आए परदेसी^५। नाबहि कोठ^६ दखिनी देसी।

कुबरहि सदा नाच मन भावा^७। निसि बासर नित निरित^८ करावा।

दसत नट कुबरहि^९ मन भाए। सुरित^{१०} बेगि बछवाइ^{११} मगाए।

सुखमान तह बसेठ^{१२} आई। औ^{१३} जो अह सम^{१४} राज अपाई।

दसत नाच अरब^{१५} में^{१६} रजनी भरसठ राज^{१७} भुवार^{१८}।

ऊमी समा नाच ओ बछनी^{१९} पीड़न गएठ^{२०} कुमार^{२१} ॥

वाक्यम्—(१) १ ए गुन। २ ए वेम की (वेम) शब्द परवर्ती चरण में जाता है। ३ ए जैंसे। ४ ए पीरम।

(२) १ ए तेहि दिन आए नरप्रदेसी। २ ए गीरा।

(३) १ ए भाषी। २ ए ली गित।

(४) १ ए बेगल नाच भुंवार। २ ए गुरत। ३ ए कछपाय।

(५) १ ए जो बीस। २ रा जीर। ३ ए गव।

(६) १ रा मार (?) बिरिप। २ ए भी। ३ ए अरमे मुर्ज कुमार।

(७) १ ए उठि नाच नाच सब रा ऊमी समा नट भी बछनी। २ ए पये। ३ ए राजकुमार।

अर्थ—(१) अब रस की बाता की उत्पत्ति सुनो—जिस प्रकार कुमार प्रेम के मग में मग हुआ। (२) एक दिन परदेस के नट आए, जो कि दखिनी देस के बौद्धपूर्व नृत्य करते थे। (३) कुमार

को सर्वत्र मन से नाथ अथवा समता या इसलिए वह रात-दिन निरप ही नृत्य करती रहती था। (४) कुमार को देखते ही ये नट भा गए, इसलिए उसने इन्हें तुरंत और छीप्र बेधारि से मुहरियन करा कर बुलवाया। (५) सुवर्णानु रामा [भी] वहाँ आ बैठा और राज-सभा के भी सराय के से भी [आ बैठे]।

(६) नाथ बैठते-बैठते माथी रात ही गई, और राजभूषण अलसा गए; (७) सभा उठ चले हुई नृत्य और छतकी बेध-जूबा का भी अन्त हुआ, और राजकुमार शासन करने गया।

टिप्पणी—(२) कोइ < कोइ < कूइ [रे] = कीयुक्त। (३) निरिउ < नृत्य। (४) बर्वा < आत्मानिका = घोड़ी घोड़ी-महल। (७) ठमी < अन्धित = चली।

[६३]

पालन सज बरनि को^१ कहा । कहों सोइ जा कहिये अहा^२ ।
सन सजाग कुबर जो पाई । भरसानउ^३ सुख निद्रा भाई ।
आपु माहु^४ बिछर जो अह । बोट पलक निद्रा धरि^५ गहे ।
मिलि^६ पालक रति सगम जोगी । जनु बिछरे बुद्ध मिले बिषोमी ।
नीद परम^७ सुख बिषनै सिरी । पजिन्ह बलि^८ न पम विरकिरी^९ ।

मे वा कहीं विधातहि^१ सहि बुधि^२ धरेउ^३ पिरम सुख नाउं ।
वा फहि ताहि अलानी^४ जा कर मन मोस भा^५ ठाउं ॥

पाठांतर—(१) १ ए मैं बरनी। २ ए कहे आहा ।

(२) १ अ भरमाई।

(३) १ ए आपुन मो। २ ए ये नीदह ।

(४) १ ए भी।

(५) १ ए पीरय। २ ए चनु। ३ रा कै बरी।

(६) १ ग विधाता। २ ए नीदहि। ३ ए धरा ।

(७) १ रा माह निण ।

अर्थ—(१) राजकुमार को उस पर्यंक दीव्या को बर्णन करके क्यों कहे? अब मैं वह कह रहा हूँ जो कहने को है। (२) अब कुमार ने साधन [दीव्या] का लपोप बाधा वह अलसा गया और उसको गुन निद्रा भा गई। (३) आपस में जो अब तक बिछरे हुए थे उन दोनों पलकों को नीद ने धर बटका। (४) [वे दोनों अब ऐसे मिल गए] मार्गे रति-नामक बोली बरक में मिल रहे हो, अबका को [बराबर] बिछरे हुए बिषोमी मिल रहे हैं। (५) नीद को बिघलाने के लिये गुन, किन्तु उन्ही के लिए जिनके चतुर्भों में येन को विरक्ति न कह गई हो।

(६) मैं विधाता और उसकी बुद्धि को क्या कहूँ जिनने प्रेम का नाथ गुन रत्ना। (७) उसको क्या कह कर अपना जिनका स्वाम नेत्रों में हुआ?

टिप्पणी—(१) (६) पालन < बर्णन। (१) मेर < साया। (५) बर < चरनु चनु। (७) बलाय बलाय व्याख्यात = व्याख्या करना कहना।

[६६]

जगत सुखी अपने^१ सुख माता^२ । बुखी आपन दुख सतपाता ।
 जाके मन नीद सों^१ लागहि । दुख सुख दोऊ छाड़ें^२ भागहि ।
 गुन ओगुन निद्रा मह दोऊ । जाग सोइ जो जानै^१ कोऊ ।
 नीदहि जगत न^१ निदहु भाई । बहुतहि^२ सिधि नीदहि मह^३ पाई ।
 प जो कोइ सोइ जग जानै । सोइ परम निद्रा रस^१ मान ।

जेहि सोवत ओ जागत^१ एक भांति व्यवहार ।
 म सो^१ नीद सराह नहि^२ जो^३ जियतें भरि मार^४ ॥

पाठान्तर—(१) १ प अपने । २ ए माता ।

(२) १ ए सुख । २ ए सुखों छाड़ि जो ।

(३) १ ए जो जानत ।

(४) १ ए जन । २ रा हिये । ३ ए निद्रा मह ।

(५) १ ए सा वै नीद परम सुख ।

(६) १ रा जागै ।

(७) १ ए सा वै । २ ए नीद सराही । ३ रा कै । ४ रा मार ।

अर्थ—(१) जगत में सुखी अपने सुखों में मस्त है बुखी अपने दुख के उत्पन्न में [मस्त है] ।
 (२) [किन्तु] जिसके मन नीद से लग जाती है उसको छोड़ कर दुख और सुख दोनों भाग जाती हैं ।
 (३) गुण और अगुण निद्रा में दोनों ही हैं जागता वह है जो इनमें से किसी को जानता है । (४)
 है भाई नीद की जगत् में निदान करो क्यों कि बहुतों ने निद्रा निद्रा में प्राप्त की । (५) किन्तु जो
 कोई जगत् में सोता जानता है वही परम निद्रा के रस (आनंद) को मानता है ।

(६) जिसका सोते और जागते—दोनों बराबरी में एक-सा व्यवहार होता है [वही उस परम
 निद्रा के आनंद को मानता है] । (७) मैं उस नीद की सराहना नहीं करता जो [मनुष्य को] नीते
 को ही मार डालती (अच्छेतर कर देती) है ।

टिप्पणी—(१) माता < मस्त । (२) व्यवहार < व्यवहार ।

[६७]

जो जियतहि धरि मारि अडारा^१ । तहि निद्रा जनि सोवत गंवारा ।
 छोटि मीचु निद्रा जग आई । मीचु जगत बडि मीचि उपाई^२ ।
 जस सपने कर^१ सुग ओ राजू । जागें आगें आव न^२ बाजू ।
 ओ मूत बहु मन उपाई^१ । जागें भवहि झूठ हाइ^२ जाई ।
 जागत घडुरि सोवत जम अबही^१ । ये जग दुखी झूठ गनि रज्हा^२ ।

एक अग्नि^१ निद्रा जग कहिए^२ जो रे मभ भरि (धरि?) ग्राह^३ ।

तहि निद्रा जनि सोवति^१ मूरुग जहि सभ^२ मूर^३ मगाइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए जो जियते वी मार अंहाय।
 (२) १ रा मीठ जयत नित्रा जय पाई।
 (३) १ ए बी। २ ए जाने जाय न नीने।
 (४) १ ए जो सुती जे बाहि सभाई। २ ए साँचि सबै सुती भी।
 (५) १ ए जायत सोवत जस है यही। २ ए येहि जग बुनौ मूठ गन देही।
 (६) १ ए अग्नि। २ ए म यह दम्भ नहीं है। ३ ए पियै न चाह।
 (७) १ ए सोवहु। २ ए जो सनै। ३ ए में यह दम्भ नहीं है।

अब—(१) जो नित्रा [मनुष्य को उसके] जीते जो पकड़कर मार डालती है उस नित्रा में ऐ मेंबर, तु ध्यान न कर। (२) नित्रा जगत् में छोटी मृत्यु हो कर आई मृत्यु जगत् में एक बड़ी नित्रा ही के रूप में उत्पन्न की गई। (३) जीसा स्वप्न का शुक्ल और राग्य होता है जागने पर वह काम नहीं जाता है। (४) और ध्यान करने पर आप बहुतरे वज्र (उपाय) उत्पन्न करते हैं (निकालते हैं) किन्तु जागने पर वे सभी झूठे पड़ जाते हैं। (५) [इमलिए] जो आपने कर पुन (नविय में) होता है और जो सोते समय अंते तत्काल होता रहता है जगत् में वे दोनों झूठ माने जाते हैं।

(६) नित्रा को जगत् में एक प्रकार की अग्नि ही कहना चाहिए, जो कि सब की पकड़ कर खा जाती है। (७) ऐ मूलं उस नित्रा में तु न तो जितने सब मूल [भी] नष्ट हो जाता है।
 टिप्पणी—(२) मीषु < मृत्यु। उपाय < उपाय < उपाय + पादम् = उत्पन्न करना। (४) मंद < मन्। (७) मूल < मूल = पुंजो।

[६८]

हरि हरि कहाँ गएँ^१ कह रहऊँ^२। का निषु^३ कह लिए^४ का कहऊँ^५।
 कुवर यात बहिव^६ म लई^७। बीच नीदि मोहि हरि सै गई^८।
 अब हौं पलटि कहाँ सुनु^९ बाता। जस^{१०} कुमार सुन नित्रा माँता।
 बिधि सजोग मा^{११} अछरिन^{१२} क्या। सोवत कुवर सज पर परा^{१३}।
 दत्ता^{१४} गंधप मुरति अमोला। अछरिन कैर दगि चिन^{१५} डोला।
 बहिन^{१६} नि यह मानुस हम अछरीं औरन हमर^{१७} काज^{१८}।
 वे यह ? स्तिय बरहि वर^{१९} कामिनि^{२०} उद अल जेठ^{२१} राज^{२२}॥

- पाठान्तर—(१) १ ए गव। २ ए जायत। ३ ए बघु। ४ रा लिया। ५ ए बहेऊ।
 (२) १ ए बरत।
 (३) १ ए जो। २ ए जब।
 (४) १ ए मी। २ ए अछरि। ३ ए हेरा।
 (५) १ रा बेगन। २ ए देगि मुरहिनि कर मन।
 (६) १ ए कहा। २ ए अछरि। ३ ए जाय न ह्वारे। ४ रा लाय।
 (७) १ रा है जो (?) लगिय कर ए लहि मरि क्या हेरत। २ ए जब
 ए महि।

अब—(१) हरि हरि! मैं कहाँ का और कहाँ [गएँ] क्या? क्या कुछ कहने को लेकर

में क्या कह गया ? (२) मैंने तो कुमार की बातें कहने को ली (उठाई) किन्तु बीच में मुझे निद्रा हरण कर ले गई। (३) अब मैं फिर कौटकर [उठे] कह रहा हूँ, अब वह बातें सुनो जिस प्रकार कुमार कुछ निद्रा में नत्त हुआ। (४) ईब [बघान] उसे अप्सरामों का संयोग [प्राप्त] हुआ जिन्होंने कुमार को लोते हुए (अब वह सो रहा था) [उसकी] दीव्या वर घेर लिया। (५) अब अप्सरामों ने उस पंचवर्ष [सवृष रावकुमार] की अमूर्त्य मूर्ति को देखा उसे देख कर अप्सरामों का चित्त डोल गया।

(६) उन्होंने कहा, "यह मनुष्य है हम अप्सराएँ हैं और कोई कार्य हमारा [इससे] नहीं है (हो सकता है) (७) किन्तु [यह तो ही हो सकता है कि] हम यह देखें (प्रयत्न करें) कि जबसे वे अस्त तक जितना [बिनाता का] राख्य है [उसमें से] यह सबवेष्ट कामिनी का वरण करे।"

टिप्पणी—(४) अछरी < अप्सरम् = अप्सरा। (७) वेष्ट < वेष्टिब < वावत् = जितना।

[६९]

उद अस्त जह सगि^१ जग रत्ना^२ । कौन सो ठाव^३ ओ हम नहि^४ देला ।
हम हहि सभ^५ समयसार बिनानी । बुँडहि जग एहि^६ जोग परानी ।
कोइ सराह^१ सोरठ गुजराता । कोइ कह मियरु दीप क^२ वाता ।
निमुबन चित^१ आइ वीराई । कुवर जोग जग मारि न पाई ।
पुनि उठि जनी एक अस^१ कहा । एहि र जोग^३ कन्या एक अहा ।

बिजय राय सकवधी मगर महारस पान ।

तहि घर है कन्या मधुमालति^१ रवि समि रूप छपान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जहाँ समु। २ रा रत्ना। ३ ए ठाव। ४ ए न।

(२) १ रा हम ही सभ नहि (< मेहि) ए हम हहि नव। २ ए ठं बडु मेहि वय।

(३) १ ए सराह। २ ए क।

(४) १ रा वत। २ ए जो।

(५) १ ए जो। २ रा में 'र' नहीं है। ३ रा जोगन।

(७) १ ए तेहि वर मधुमालती।

अर्थ—“(१) जबसे वे अस्त तक जहाँ तक जगत् की रत्ना (सीमा) है ऐसा कौन-सा स्वाम है जो हमारा देखा हुआ नहीं है ? (२) हम सब संसार की बिनानी हैं हम जगत् में इसके योग्य प्राणी बुँडे।” (३) [यह सुनकर] कोई तो लौरावट और गुजरात की सरावता [वय के संबंध में] करने लगी और कोई तिहुल द्वीप की बात कहने लगी। (४) वे तीनों भुवनों में अपने चित्त को डीढ़ा भाई किन्तु कुमार के योग्य जगत् में उन्होंने नारी नहीं पाई। (५) तब [उनमें से] एक जनी (नारी) ने उठ कर कहा, “इसके योग्य एक कन्या है।

(६) कौन सकवधी (शक्ति-साधक) बिजय राय महारस मगर नामक स्थान में है (७) उसके घर में एक कन्या मधुमालती [नाम की] है, [जिसके साथमें] सूर्य-वर्णना का रूप छिप गया है।”

टिप्पणी—(१) ठाव < स्थान। (२) बिनानी < बिजानिन्। (३) पान < स्थान।

मुनत बाध बहुतहि भित भाई^१ । कोइ कहै^२ कुवर नय भविकाई^३ ।
 पुनि सभ^४ मिलिब^५ कहहि^६ बिचारी । पटतर बलिय^७ कुवर कुमारी ।
 बाइ कहै^८ कुवरहि ओहि ल जाइय^९ । कोइ कहै^{१०} कुवरि इहां ल आइय^{११} ।
 जनी एष पुनि^{१२} बहा सुसाई । आसहि^{१३} आवत रनि सिराई ।
 पुनि मोहनि निदरा बसि^{१४} साई । सोन्हि कुवर नै^{१५} सैन उपाई ।

अह साव सुग सज^{१६} सोहागिनि हीनि भुवन उबियारि ।

ल पासक तह डामी^{१७} सम ब देखहि^{१८} रूप उहारि^{१९} ॥

पाठ्यन्तर—ए म ब्रह्मजी के चरच परस्पर स्वामांतरित हैं ।

(१) १ ए मुनत मोड बहुते चित भाऊ । २ ए कोइ कहै । ३ ॥ बलिकाऊ ।

(२) १ ए सभ । २ ए म यह राख्य नहीं है । ३ ए बहा । ४ ए बेलि ।

(३) १ ए कोइ कहै कुवर उहां लै जाई । २ ए बह । ३ ए भाई ।

(४) १ ए जा । २ ए जानै ।

(५) १ ए जगु निडा । २ ए सोन्ह कुमारीह ।

(६) १ ए मेज्या ।

(७) १ ए टोमा । २ ए देखा । ३ ए उपाय ।

धर्म—(१) यह बात सुनते ही [सब के] चित्त की बहुत ही साई । [फिर भी] कोई बहने लगी “कुमार में क्या की अधिकता है।” (२) [बिनु] फिर सब मिलकर विचार करके बहने लगी “कुमारी और कुमार में समतुल्यता ही बिकारी बहती है।” (३) कोई बहने लगी “कुमार को बहो ले जाया जाए।” (४) फिर उनमें से एक बनी (बारी) ने समझा कर कहा कि इस प्रकार जाते-जाते ही वज्र की समाप्ति हो जाएगी । (५) [इसलिए] तबसे तब राजकुमार की भावों में मोहिनी निहा लगा कर उन्होंने कुमार की सीमा को उलट दिया ।

(६) जहाँ पर वह विमुक्त का प्रकृति वह मुहानिनी मुन-सीमा पर लो छी सी (७) कुमार की बर्णन ले जाकर बहो पर उत [की सीमा] के बराबर करके बिछा दी कि दोनों के रूप की बहारी (मोहिनी) है हैं ।

टिप्पणी—(४) ईनि < रवणी < रजनी = रानि । (५) नैज < रायज = मय्या ।

दगिनि मो जा^१ म^२ जाइ बगामा । गिन मुहम^३ गिनि चलि उताना ।
 बगनि गूना बिछ^४ कहा म जाई । दगि रूप गम^५ रही सजाई ।
 गटि^६ दगहि तो अमिष सोमाई^७ । ओहि परगहि^८ तो रूप मवाई^९ ।
 अपनी अरानी^{१०} पला सपूनी । दुद महु कोउ म^{११} पाव^{१२} बिटनी ।
 भान रूप कुबर^{१३} निरमला । बर बामिनि मुह^{१४} मोह^{१५} बला ।

जउ* जउ*^१ निरलि निहारे सेउ* तेउ*^२ अधिब सखप ।
तीनि भुवन मह^३ बिघन एइ दोउ सिर^४ बनूप ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए म यह पम्ब नहीं है। २ ए गहि। ३ ए मूर।
(२) १ ए मचक रहा जा। २ रा ए सब।
(३) १ ए येहि। २ रा बकाई (?)। ३ ए निरली। ४ रा सोहाई।
(४) १ ए अपने अपने। २ ए कोउ न देखि। ३ रा बाए।
(५) १ रा म यह पम्ब नहीं है। २ ए मस।
(६) १ रा ए बीबी। २ रा ए तीनी। ३ ए अधिकै रूप।
(७) १ ए मो। २ ए म कुष सिउ।

अर्थ—(१) उन्होंने यह देखा जो कहा नहीं जा सकता है [उन दोनों के सौन्दर्य के आगे] बिन का [स्वामी] सुय और राजा का [स्वामी] चउ दोनों छिप गए। (२) वे ऐसी व्यक्ति हो रही कि कुछ कहते नहीं बनता है; [दोनों के] रूप को देखकर वे सभी लज्जित हो रही। (३) इसको देखती हैं तो लाजप्य [इतने] अधिक है और उतको परवती हैं तो [उसमें] रूप (सौन्दर्य) अधिक है। (४) अपनी-अपनी कला में दोनों संपूर्ण हैं, और दो में से कोई दूसरे से पाव (एक बीबाई) भी हीन नहीं है। (५) अपने रूप में कुमार निर्वल (निर्बल) है तो उस ओष्ठ कानिनी का मुख कोउस कला समुक्त है।

(६) [वे कहने लगीं] 'अबसे-अबसे निरीक्षण करके देखिए, बीसे ही बीसे [दोनों का] स्वस्व (सौन्दर्य) अधिक ज्ञाता है' (७) तीनों भुवनों में बिभाटा ने इन दोनों को अनुपम सुखा है।"

टिप्पणी—(४) मयूनी < संपूर्ण। पाव < पाव = एक बीबाई। (६) निरल < निरलिन < निर + ईल = देखना अवलोकन करना। निहार < निहास < निहास्य = देखना निरीक्षण करना।

[७२]

कहिहि रूप उत्तिम ए^१ दोऊ। एक एक लखे*^२ अधिब न कोऊ।
जो बिधि इह दोउ दह^३ मेरावा। आज तीनिउ^४ लोक बधावा।
जोगिहि^५ जोग मिले^६ सुख होई। ओ मुख इन्हहि*^७ जो दख कोई।
तीनि भुवन जगजीवन साइ। इन्ह दुहु प्रीति^८ मिलाव गोमाइ।
प्रिमवम मिम्टि कूँड़ि हम रही^९। इह दुहु सम तीसर कोउ^{१०} नही।

यह सूरज बह^१ समिहर यह ससिहर बह^२ सूर।

इन्ह दुहु^३ पम प्रीति जो उपज त्रिभुवन बाजे मूर ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए देखा रूप अधिक है। २ ए न।
(२) १ ए दुहु होइ। २ ए तीनी।
(३) १ ए जोगहि। २ ए मिले। ३ ए इह (< इन्हहि 'आरमी सिपि')
रा निह।
(४) १ ए दुहु जोग।
(५) १ ए मैं रही। २ ए कोइ।

(१) १ ए यह १ धूर यह। २ ए यह।

(७) १ ए यह।

अर्थ—(१) वे रहने लगे। “वे दोनों वय में उत्तम हैं और कोई भी एक [वय में] अम्य से अधिक नहीं है। (२) यदि विधाता इन दोनों को मिलाप दे (दोनों का मिलन करा दे) तो दोनों लोको—आराता पाताक और धर्त्य लोको में बचावा बचने लगे। (३) [या तो] योगी को योग के मिलने (मिष्ट होने) पर सुख होता है और [या तो] इन दोनों को [साध-साध] कोई देके तो सुख मिलता है।” [किर के विधाता से रहने लगे] “तू लोको भुवनों में अग्न के जीव [मात्र] का स्वामी है। तू इन दोनों की प्रीति करे, ये दोसरे मिला दे। (५) हम तीनों भुवनों की सृष्टि को हूँ कर हार गई किन्तु [देखा कि] इन दोनों के समान तीसरा (अम्य) कोई नहीं है।

(६) यह सूर्य है तो यह चंद्रमा है और यह चंद्रमा है तो यह सूर्य है। (७) यदि इन दोनों में प्रीति उत्पन्न हो तो तीनों भुवनों में [बचावे का] सूर्य बने (हर्ष हो)।”

टिप्पणी—(२) बचाव < बचाव < बचाव = अम्यवय-भूवय वाय। (६) गतिहर < गत धर = अम्यमा। भूर < सूर्य। (७) धूर < सूर्य = तुष्टी।

[७३]

कहेहि कि^१ ए बुह^२ वम पिपारे^३। विपने अगत सहहि^४ भीतार^५।

हम एहि नगर चरन गति आई^६। चलहि जाहि^७ भीतुक भंवरई^८।

जो सहि^९ एह सावहि^{१०} एहि^{११} ठाऊं। तो सहि हम दसाहि सयरठाऊं^{१२}।

क गवनी सगराउ सवाई^{१३}। जागा राबकुवर अगिराई^{१४}।

दलमि^{१५} दोसर सैन सम डासी^{१६}। राजकुवर^{१७} एव रहा नवासी^{१८}।

सूर न सरसरि^{१९} पाव को^{२०} न सूरै छाह^{२१}।

नौ सन^{२२} बला सपूनी^{२३} सोव^{२४} जोवन उसासे^{२५} बाह^{२६}॥

वाक्यान्तर—ए मे बोहे के चरण परस्पर स्थानीकरित हैं।

(१) १ ए भी। २ ए यह। ३ रा के यह धर गती है। ४ ए गियाग। ५ ए भीतुक। ६ ए भीताप।

(७) १ ए ही यह नगर चरन गति आई रा हम एहि नगर चरन गति आई। २ ए बसतु जाह।

(८) १ ए सवि। २ ए मोने। ३ ए वेहि। ४ ए ली कवि कि देरी लगगठ।

(९) १ ए भी गीनी सगराउ सवाई रा भी गवनी सगराउ सवाई। २ रा आवेउ। ३ ए अगिराई।

(१०) १ ए देगा। २ ए जागा। ३ ए राजकुवर। ४ ए निवासा।

(११) १ ए सरसरि रा सूर गती है।

(१२) १ ए सोव एकाग्रि। २ ए सपूनी (< सपूनी) रा सपूनी। ३ ए न मर गति गती है। ४ ए जगम।

अर्थ—(१) उन्होंने कहा “ये दोनों प्रेम-व्यारे हैं, इनको बिबाहा में अमत् में स्वयं [निमित्त कर] अवतरित किया है। (२) हम इस नगर में अपने घरों की गति से आई हैं [मग] कौतुक के लिए लक्ष्मण आश्रयिका को जायें। (३) जब तक ये दोनों एक स्थान पर सोते रहेंगे तब तक हम लक्ष्मण के देस लेंगी। (४) वे सभी लक्ष्मण के गई और [यहाँ] राजकुमार अंगड़ाई लेकर जाया। (५) उसने देखा कि एक दूसरी सीमा बराबर बिछी हुई है और एक राजकुमारी वहाँ निवसित है।

(६) [अर्थ] सुन उस [राजकुमारी] की बराबरी नहीं पाता है और न चंद्रमा उसकी छाया बूब (कुचल) पाता है, (७) [बहु ऐसी है मांगी] सोलह कलाओं से संपूर्ण नारी जीवन में लक्ष्मण के रूप में सिर के नीचे बाधु रक्त कर सी रही हो।

टिप्पणी—(१) पित्रार < प्रियाल = प्रिय। (२) अवराई < आश्रयणी = आश्रय-आदिना। (३) लक्ष्मण < लक्ष्मणाय < लक्ष्मणाय = एक साथ बसों का साथ। (४) सैन < प्रयन = प्रिया। (५) सरभरि < सरिभरी [रे] = समानता सद्यता। (६) बूब < मुद् = कुचलना मर्दन करना चूर्ण करना।

[७४]

बहुं विधि मधिल पटोर मङ्गावा^१ । हेम सभ सभ^२ नगन^३ जडावा ।
मधिल सरग ससि बदन [सो]^४ मारी । तार रतन^५ बरे अनु तारी^६ ।
कचपचिया^७ भइ^८ बेरिम्ह^९ टोला । पालक जानु^{१०} अकास खटोला ।
पालक पर अनु लाइ सवारी^{११} । सोई^{१२} सेन सहज विकरारी ।
सज सौरि का भरनौ पारी^{१३} । कहत सुनत जो बात रसारी^{१४} ।
मौ सत साजें^{१५} बाला निभरम^{१६} सोब^{१७} सुख सेज ।
बेत परिहरेउ कुबर चित^{१८} दसि हरेउ^{१९} बुधि तज ॥

पाठान्तर—(१) १ ए भोज्यावा। २ ए सभ। ३ ए रतन।
(२) १ ए बरनी। २ ए तारे मैन। ३ ए बरा अनु तारी।
(३) १ ए कचपचिया मौ। २ ए बेरी। ३ ए जानो।
(४) १ ॥ एउ जो जाये नवारी। २ ए मोहन।
(५) १ ए सौरि का भरनौ पारा। २ ए रसारा।
(६) १ ए माजे। २ ए म यह बाध नहीं है। ३ ए मोहत है।
(७) १ बेत न रहा कुंजर तज। २ ए हरा।

अर्थ—(१) [उसने देखा कि] चारों ओर मंदिर (राजमन्त्र) गदीर (देगमो बरतों) से मङ्गाया हुआ है और लक्ष्मण सोने स्वयं के हैं और नगों से जटिल हैं। (२) वह मंदिर (मन्त्र) [मांगी] स्वयं (आकाश) है और उसमें अग्नि उस नारी का मुख है उसमें तारे मांगी के राज हैं जो [उस मंदिर में] लाटिल (जटिल) हैं। (३) उस मंदिर [आकाश] में वृत्तिका की लक्ष्मण माता बैरियों की डोली हुई और वह पलंग मांगी आकाश-खटोला (स्वर्ग-विमान) हुई। (४) और ऐसी पलंग पर वह नारी मांगी लया (लिट्टा) कर सवारी हुई थी उस प्राण्या पर वह इस प्रकार सहज बेकरार (अचेत) सोई हुई थी। (५) सेज (प्राण्या) का स्मरण कर मैं क्या वर्णन कर सकता हूँ? [मत] मैं उस चार्ता को कह-मुन रहा हूँ जो रसोनी है।

(६) सोलह शृंगार किये हुए यह बाला मुल-दाय्या पर निभरम (बेसहके) सो रही थी (७) (यह देखकर) कुमार के चित में चेत त्याग दिया और उसकी बुद्धि का तेज हार उठा।

टिप्पणी—(१) पगोर < पट्ट + फूल (२) = रेणुमी बन। सभ < स्त्रुम = सभा। (३) तारी < तादिक < तादित = पीटा हुआ अना हुआ (२)। (४) वक्षपवित्रा < वृत्ति-वपित् = वृत्तिरा की मदान-माला। (५) (६) पालक < पर्यक = पर्येक। (७) बाट < लट्वा = पारपाई। (४) विकरार < बकरार (का) = अघात उपेत।

[७५]

मूनी^१ सेज महज विकरारा। दगि सजग भा^२ रात्रकुमारा।
 चक्रिन् चित्त वहुं निमि फिन्^३ हरा^४। विधि यह^५ नगर^६ मदिन केहि केरा।
 ओ यह बीन सोय विकरारी^७। यनि जहि रगि विधन ओतारी^८।
 दगल हियें समानी म्यामा^९। कुवर^{१०} जीउ वरिग परनामा^{११}।
 मूनी सुनी सज दगि^{१२} बाण। नग मिय उठी कुवर के ज्वाला^{१३}।

कवल^{१४} भाति परगास^{१५} पुन्य निरति मुग मूर।

दगल पेम पिरीन पुख^{१६} के हिम उर मह अंनूर ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सोवत। २ ए बी।

(२) १ ए मैं बहुत दिन हेरा। २ ए येहि। ३ ए य यह घर नहीं है।

(३) १ ए विकरारा। २ ए यन विधना के कति बीनारा।

(४) १ ए म्यामा। २ रा मैं यह घर नहीं है। ३ ए जीव के बीग प्रनामा।

(५) १ ए मुल सावन ओ देनी। २ ए उग कुंवर वन जाया।

(६) १ ए बीन। २ ए दिन विनमन।

(७) १ ए प्रीति पूर। २ ए हीकर लीग अंनूर।

अर्थ—(१) उसे दाय्या पर सहज बेकरार (अवेन) लीई हुई देखकर रात्रकुमार सजग (सावधान) हुआ। (२) चित्त में बेकरार उसने कनी विद्याओं में घूमकर देखा [और मन में कहा] “हे विद्यावा, यह नगर और मंदिर (अवन) विरारा है (३) और यह बीन है जो बेकरार (अवेन) सो रही है? वह क्यों हीना जिसके लिए विद्यावा के होने जम्ब दिया है। (४) देखने ही सह इयाया उसने हृदय में लया गई और कुमार के जीव उत्तरी प्रभाव कर [बचकर] गए। (५) उस बाला की दाय्या पर मुग में लीई हुई देखकर कुमार के तारीर में मन में तिल तक अना [नी] लग उठी।

(६) नुरव [नारी व] मुग की देखकर उसी प्रकार प्रकाशित (प्रमय) हीना है जिस प्रकार बजल सूर्य की देखकर होरा है। (७) [अन] उगरी देखने ही कुमार के हृदय में पूर्व [अनी] की केन-प्रीति अधुनि हुई।

टिप्पणी—(१) (३) विदग < वैदग [वा] = अनाय अवन। (३) पुन्य < पुन्य < पुन्य = पुन्य।

[७६]

जउ० जेउ०१ देख० रूप सिगारा । खिन० मुरछ खिन० चेत सभारा० ।
 देखि रूप चकित चित रहा । बिधि१ यह कौन कहाँ म अहा० ।
 एक रूप ओ किए सिगारा । मुनिवर परहि१ दसि मुख धारा ।
 रूप देख का१ कहाँ बसानी । सहस भाउ होइ हिये० समानी ।
 दसत रूप जीउ१ भरमाना । बकहक० पाठ जिमि० प्राण उड़ाना ।
 रूप सिगार सोहागिनि१ जउ० जउ० दसि अघाइ० ।
 तउ० तेउ०१ नन न परिहरहि० रूप० जो रह सोमाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ न प जी जी। २ ए हेनु। ३ ए बन। ४ ए यन। ५
 यन वा बिकरारा।

(२) १ ए बिधि। २ रा पुनि रहा (गुल्ल पुरुषवर्ती चरण)

(३) १ ए टरहि।

(४) १ ए जी। २ ए मी जीउ।

(५) १ ए झूबर। २ ए बपुसी। ३ ए सिधि।

(६) १ रा सिगार समामिनि ए चकप सोहागिनि। २ ए जीन देखि अघाइ रा
 जी जी रहे सोमाइ (गुल्ल परवर्ती चरण)।

(७) १ रा ए ली ली। २ ए रूप न परिहरै। ३ ए नैन।

अर्थ—(१) यह जीते जीते उस [बाला] का रूप और शृंगार देखता था, एक क्षण मूर्च्छित
 होता तो एक क्षण चेत सँभलता था। (२) उसका रूप देखकर वह चित में चकरा रहा [और कहने
 लगा] “हे बिपत्ता यह कौन है और मैं कहाँ हूँ? (३) एक तो यह चपबली है और दूसरे शृंगार
 किए हुए है, [इसलिए] इस बाला के मुख को देखकर बड़े बड़े मुनि भी स्वप्नित हो जाएँगे। (४)
 इसकी रूप-रैया किस प्रकार बचान (वर्णन) कर कहूँ? यह तो सहस पाव होकर मेरे हृदय में समा
 गई है। (५) इस वच को देखते ही उसका जी भरमाने (चकराने) लगा और उसके प्राण बेचकल
 (एक प्रकार का रुड़) के बत्तों की भाँति उड़ गए।

(६) जीते ही जीते उस सुहागिनी के रूप और शृंगार को देखकर [हृदय में] वह अघाता
 (परिचुल्य होता था) (७) जीते ही जीते उसके नैन [उस बाला के अंशों को] नहीं छोड़ रहे थे
 क्योंकि वे उसके रूप पर मग्न हो रहे थे।

टिप्पणी—(४) बनान < बचसान < व्याख्यानम् = विवरण देना वर्णन करना।

[७७]

उतपदि मुनहु१ मांग क० भाऊ० । सरग पय अति० बिबट चढाऊ ।
 दपत मांग बिहुर बर० भावा । गिन भुलाइ गिन मारग पावा ।
 अठि मोभिन मिर मांग सोहाई । खरग धार जनु रगत० बमार्०१ ।
 मंग के पय चल्० को पाय । परग परग दस कमिहार ।

जत गोन सेत मारे भारी^१ । परगट रगत रघु रनारी^२ ।
 मांग सख्य सोहागिनि^३ जानु^४ परग क धार ।
 देखि बरनि को पार फिरतहि^५ होइ दुइ फार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बहो। २ ए में यह घट्य नहीं है। ३ ए सुमाऊ। ४ ए जो।
 (२) १ ए चिहुर नम।
 (३) १ ए जे रकन। २ ए नुमाई।
 (४) १ ए मांग पण्य बलन।
 (५) १ ए मारे पाड। २ ए परग गमत सब दोरी आई।
 (६) १ रा ममागिनि (?)। २ ए जानहु।
 (७) १ ए देखत।

अर्थ—(१) उत्पत्ति (आदि) में उसके मांग के माब मुनो बहु भागो स्वर्ण (आकाश) पय का अति बिहट बड़ाव है। (२) मांग और चिहुर (बालों) का भाव देखकर एक क्षण बहु भूल पड़ता और एक क्षण मार्ग पाता (जैत में जाता) था। (३) उसके सिर में सुहर मांग अत्यंत प्रीति की बहु भागो कदम की धार की जो रगत से सुशोभित (चिबत) हो। (४) उस मांग के मार्ग पर कौन चल सकता था, जिसके एक एक पय पर [अलकों के रूप में] काँतो होने वाले बँडे हुए थे। (५) जितने हो [उस मार्ग पर] गए थे उतने ही [उन काँतो देने वालों के द्वारा] संपूर्ण रूप से मारे गए थे इसलिए उस रतगारी (लास) मांग में प्रकट हो रक्त दिखाई पड़ता था।

(६) उस मुहागिनी की मांग का रय (सौन्दर्य) ऐसा था भागो बहु कदम की धार हो। (७) उससे देखकर कौन उसका बर्चन कर सकता, क्योंकि मुक घेरते ही वह [उस लक्षण की धार से] हो काँक हो जाता।

टिप्पणी—(२) चिहुर < चिहुर = केड।

[७८]

गूर विगिन गिर मांग^१ सोहाई^२ । मभ^३ जग जीनि गगन पर आई^४ ।
 मांग न आहि^५ गगन क हाटा^६ । रवि ममि उन्^७ अग्न ब भाग^८ ।
 न जनु अमिअ^९ नदी बहि आई । बन्न पाग नहि अमिअ^{१०} मिराई ।
 मांग मरप दगि जिउ हग^{११} । दीप पनग जोनि जनु पग^{१२} ।
 मिर पर टाउ^{१३} दीगह बिपि नाही । बहि पटनग ल^{१४} पाबो ताही ।
 म्याम रनि जग^{१५} दामिनि^{१६} म्याम जल^{१७} महं दीग ।
 मग्य हुने^{१८} जनु छिरी भाइ परी त्रिय गाम ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मभ विगिन जग मोह। २ ए मागाई। ३ ए मभ। ४ ए आ।
 (५) १ ए आहि २ ए नुपटा। ३ ए उभा। ४ ए बटा ए पाग।
 (६) १ ए अमिय। ७ ए अर्पी। ८ ए गेराई।
 (७) १ ए लई। ८ ए दीप बदन आई गो बर।

(५) १ ए मा। २ रा में यह पाय नहीं है।

(६) १ ए मही। २ ए में यहाँ 'बमर्' और है। ३ रा जसवि ए दब।

(७) १ ए हुते।

अर्थ—(१) “यह सिर की माँग [बागो] गुहायनी सूर्य की किरण है, जो बागत् को भीत कर आकाश पर आई हुई है। (२) यह माँग नहीं है, आकाश की हाट है, और सूर्य और चंद्र के उदय की बाट है। (३) अथवा यह बहकर आई हुई अमृत-नदी है इसीलिए उसके मुल-चंद्र का अमृत समाप्त नहीं होता है। (४) इस माँग के सीधर्म को देखकर [मेरा] भी [इस प्रकार] हुर गया है। बालो पतिगा दीपक की ज्योति (की) पर आ पड़ा है। (५) जिसको विधाता ने सिर पर स्थान दिया हो किसे लाकर उसकी सुकना में लगाई ?

(६) वह माँग ऐसी है मानो काली रात में काले वारनों में बागिनी बिछाई पड़ी हो (७) और वह स्वग (आकाश) से छिटककर [इस] स्त्री के सिर पर आ पड़ी हो।”

टिप्पणी—(२) हाट < हट < आपण बाजार। बाट < बट < बरपन = मार्ग। (३) अमिभ < अमृत। (६) रैनि < रवनी < रजनी।

[७९]

तहि^१ पर कच बिगधर बिग सार । लाटहि^२ सब सहज सुहकारे^३ ।

सगबगहि^४ परतिव^५ अनियार । गरल भरे^६ बिलखर हतियार^७ ।

निधि अजोर जेम^८ बदन दिगाए^९ । तस अघ्यार दिन कच मोहराए^{१०} ।

कच न होहि बिरही^{११} पुन सारा । भएउ^{१२} जाह मधु सीस सिगारा ।

भूली दसो बसा^{१३} निजु ताही । बिहुर^{१४} चिन्हारि भई^{१५} जग^{१६} जाही^{१७} ।

छिटके बिहुर^{१८} सोहागिनि^{१९} जगत भएउ^{२०} अयबाल ।

जनु बिरही जन^{२१} जिय^{२२} बध^{२३} कारन मनमय रोपा बाल ॥

पाठान्तर—इसके पूर का छंद ४१-७८ तक बंग भा में बंझित है।

(१) १ ए सा। २ ए लीन। ३ मा लहकारे (< लहकारे) ए बिरहारे।

(२) १ ए परतव। २ ए बरे। ३ ए हत्यारे।

(३) १ मा जी ए में यह पाय नहीं है। २ रा बदन दिगाए, ए दिन देखाये। ३ ए निधि अघ्यार कृच मोहराये।

(४) १ ए कचन हा बिरहे (< बिरही फारसी लिपि)। २ ए में रा यह पाय नहीं है।

(५) १ ए बली बिना। २ ए बिहुर। ३ ए जी। ४ ए माही।

(६) १ ए छिटका बीर। २ रा मभगिनि (?)। ३ ए मा।

(७) १ ए में यह पाय नहीं है। २ ए में यह पाय नहीं है। ३ ए बिनि।

अर्थ—(१) “उत घर भी इसके कच (सिर के बाल) बिगधरित बिगधर (लव) हैं जो प्रिया पर सहज ही [इसने के लिए] लहकारे (प्रतिव बिग हुए) लौट रहे हैं। (२) ये भविष्य प्रारण हो बधपरा (बीरसे हो) रहे हैं ये हत्यारे बिगधर को गरल से पूरित हैं। (३) रात्रि में बने

[इस बाला के] मुँह बिछाने से उजाला होता है। जैसे ही कर्णों को मुँह करने (सोलने) पर दिन में ही अँधकार [होता है]। (४) ये कब नहीं हैं यह विरहियों का संयुज दुःख है जो कि मधु मालती के सिर पर आकर झुँगर हो गया है। (५) उसे अबश्य ही अपनी बसो बसाएँ भूल जाती है जिसे इस संसार में [इस बाला के] चिह्नों का परिचय प्राप्त होता है।

(६) इस मुहामिनी के चिह्न जो छिटे हुए हैं उससे जगत् में अँधकार हो रहा है, (७) [ये ऐसे जगते हैं] मानो विरहियों के प्राण-अप के लिए मगमग (कामदेव) ने जाल रोपा (लगा रक्का) हो।

दिप्यन्ती—(५) (६) चिह्न < चिह्न = केत।

[८०]

जग मुवास पूरित भै^१ जाही^२ । किछु^३ जानसि दहु^४ बारन बाहीं^५ ।
 पै जनु म्रिग मध नाभि^६ उपासी । क मधु मालति चिह्न^७ विहारी^८ ।
 यह जो जगत मलयानिष्ठ बाऊ^९ । अति सुवास^{१०} जानसि कहि^{११} भाऊ ।
 दिन एक नामिनि चिह्न^{१२} सिद्धाए । ठाढ़ मिरिछु^{१३} निकट बहु^{१४} आए ।
 सहि(सेही)दिन हृत^{१५} बहुत उदासा^{१६} । पै अबहु नहि^{१७} पूजी आसा^{१८} ।

चिह्न पास^१ मधु मालति जब सों^२ बहुत^३ बतास ।

सेहि दिन सों मिसि बासर सतस^४ बहा^५ उदास ॥

गाठान्तर—(१) १ रा पूरित आ बीरे। २ रा बाहेही २ ए भै जाही। ३ ए किछु।
 ४ ए ती। ५ ए काही।

(२) १ ए नाम (<नाभि कावली लिपि)। २ ए चिह्न विहारी।

(३) १ ए बाऊ। २ आ ए मुँग। ३ ए जानसि केहि।

(४) १ ए चिह्न। २ ए ठाढ़ जए सब। ३ ए जो रा हो।

(५) १ ए बीबी। २ आ अँध उदासा ए मधो उदासा। ३ मालहि
 (<नहि नायरी लिपि?) ए न। ४ आ गई मुबासा ५ गी मुबासा।

(६) १ ए बमा। २ आ से। ३ रा बही।

(७) १ ए मनुसि भई।

अर्थ—“(१) जित मुवास से जग पूरित हो रहा है कुछ जानते हो कि क्या बारन से ऐसा [हवा] है? (२) या तो मानो मृगमध (बसन्तरी) की नाभि उपाड़ (सोल) हो गई है या मधु मालती के चिह्न (सिर के बाल) छिटा दिए गए हैं। (३) यह जो जगत् में मलयानिष्ठ की बापु है जानने हो किस भाव (बारन) से वह अनि मुबासित है? (४) एक दिन नामिनी ने अपने चिह्न छिटाए, और बहनेरे [उत्तै बैलकर] बापु के निकट आ गए, (५) उसी दिन से वह (बाप) जग उदास हो गया फिर भी अभी तक उसकी आशा नहीं पूरी हुई।

(६) मधुमाक्षती के चिह्नों के बाल से जित दिन बाल (बापु) बहा (७) उसी दिन से वह बलाग (बापु) रात-दिन उदास रहता रहा है।”

दिप्यन्ती—(२) (६) चिह्न < चिह्न = केत। (३) बाउ = बाप।

[८१]

निह कलन^१ ससि दुहजि लिलारा । नी खड तीनि भुवन उजियारा^२ ।
 वदन पसर^३ मुद चहु पासा । कषपधिय^४ जनु^५ चांद गरासा ।
 म्रिगमद^६ तिलक साहि पर घरा । जानहु चांद राहु बस परा ।
 गएउ मयक^७ सरग जहि^८ लाजा । सो लिखाट कामिनि पह^९ छाजा ।
 सहस कला दक्षिय^{१०} उजियारा । जग ऊपर जगमगत^{११} लिलारा ।
 सर मयंक ऊपर तिसु^{१२} पाटी बनी अहै^{१३} बसि रीति ।
 जानहु ससि ओ निसि सर^{१४} भई सुरति^{१५} बिपरीति ॥

पाठांतर—रा में उपर्युक्त अङ्गोली १ तथा २ परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा निरखन्क ए निरखनी। २ ए उजियारा।

(२) १ रा वदन पसेउ ए वदन पगीत्र। २ रा कषपधिया ए कषपधिए।
 ३ ए जो।

(३) १ रा मृगमय।

(४) १ ए मी मयक। २ ए जो। ३ रा कह।

(५) १ ए राहुन कला बेला। २ ए जगमगहि, रा जगवगत।

(६) १ ए निसि। २ मा बाहि, ए है।

(७) १ ए जा। २ ए से रा सा। ३ रा भई आह। ४ ए मी सुरति।

अर्थ—“(१) [इतका] ललाट द्वितीया का कलंकहीन ससि है जो नी पंख और तीन मुक्तों में उज्ज्वल (प्रकाशित) है। (२) [इसके] मुख पर जो प्रसवेद बिनु चारों ओर [सकल रहे] हैं वे [ऐसे लगते हैं] मानो कृतिका [की मलप्रमाणा] ने चंद्रमा को घल लिया हो। (३) [उत्त ललाट पर] जो मृगमद (कस्तूरी) का तिलक लगा हुआ है [इससे वह ललाट ऐसा लगता है] मानो चंद्रमा राहु के घस में पड़ गया हो। (४) जिसकी लाज से (जितने लज्जित हो) मृगंक (चंद्रमा) स्वयं (आकाश) में घला गया वह (ऐसा) ललाट [इस] कामिनी के पास सीमित है। (५) यह सहस कलाओं के साथ उज्ज्वल (प्रकाशित) दिखाई पड़ता है और यह ललाट आत्मा के ऊपर जगमगा रहा है।

(६) नीचे मृगंक (ललाट) है, और [इसके] ऊपर [चिह्न] पट्टिका है [दोनों की इस प्रकार की नीचे-ऊपर की स्थिति से] किस प्रकार की रीति (मंथित) बनी हुई है कि (७) मानो घसि और निघा से (में) परस्पर बिपरीत रति हुई हो।”

टिप्पणी—(१) लिखार < लिखाट < ललाट। (२) पसेउ < प्रसवेद। कषपधिया < इति प्रथित = इतिहा की मद्य-माग। (४) (५) मयंक < मृगंक = चंद्रमा। (६) पाटी < पट्टिका।

[८२]

काम बमान रहसि कर लोन्हें^१ । बरमउ^२ तोरि टूब दुह कीन्हें^३ ।
 बिनु रस सउ^४ धरि मलि अडारे^५ । सोह^६ यनाह मधु भौह संवार^७ ।
 नौह नेवामि^८ सोह कम वारा^९ । मदन^{१०} यमुन^{११} जनु परा उनारो^{१२} ।

जो खगि भनू^१ मोह बरनारी । इध भनुष दह^२ पनष अडारी ।
 वहि भनु मदन^३ तिरमुवन जोता^४ । बहुरि^५ उतारि नारि बह^६ दीता^७ ।
 जोति त्रिलोक^८ नैवासि^९ भो^{१०} रहा जगत जुहार ।
 दगत जाहि^{११} हिय मर निकर तहि^{१२} को जीतै पार ॥

पाठ्यन्तर—(१) १ ए नै सीन्हा । २ ए ही रा सों । ३ ए बीन्हा ।
 (२) १ ए पुनि बली सों । २ ए सेंडारी । ३ ए ते । ४ ए सेंडारी ।
 (३) १ ए नेवारि । २ ए नारी । ३ रा इध (तुल परवती बडोती) ।
 ४ ए धनुष । ५ भा ई पनष अडारी (तुल तीसरी बडोती) ।
 (४) १ ए धनु बडी । २ ए धनुष दे ।
 (५) १ रा ठेही धनुष ए ते धनुष मदन । २ भा जीते । ३ ए बरनी ।
 ४ ए नै । ५ भा दीते ।
 (६) १ भा जीति निमरु त ओ गुह लोह । २ भा नेवामी । ३ भा नो
 नहीं ।
 (७) १ रा जाहि ए भा । २ रा ए हिये । ३ भा निरु त गाहि ।

अर्थ—“(१) नाम ने हय धुबन्ध धनुष हाथ में लिया और बल से उसे तोड़ कर दो टुकड़े कर दिया (२) [किर] जिना [बोझने वाले] रस के दोनों टुकड़ों को पनष कर मिला दिया और [इस प्रकार] उस धनुष को [धनु] बना कर मधुमालती की सीढ़ी [के रूप में] सेंडारा । (३) बालिका [के शरीर] में निवास करने वाली सीढ़ी जिस प्रकार पीमा देती है । मामो मदन ने अपना धनुष उतार कर रस दिया हो । (४) यदि इस घेष्ठ नारी ने धनुषों पर भीड़ें चढ़ जायें तो इन्हें अपने धनुष की प्रत्यक्षा डाल दे । (५) उसी धनुष ने मदन में प्रियुवन को जीता, और फिर उसे उतार कर इस नारी को दिया ।

(६) वह धनुष त्रिलोक को जीत कर [इस बाला के शरीर का] निजामी हुमा, क्योंकि जयन् हुआ तब बाहर निकल जाय उसको जीत जीत लयता है ?
 टिप्पणी—(१) रम = रम्य = लय । (३) (६) नवासि = निवास करने वाला । (४) धनु = धनुष = धनु । (५) पनष = प्रत्यक्षा । (६) निकर = निकलना < नि + निकृ = बाहर निकलना । गा = वाष्प = मज्जा करने में समर्थ होना ।

[१३]

मने ग्याम गा ओ^१ गय । ग्याम गि^२ निरगि गी^३ जान ।
 गपल गिगा^४ ताम अनि^५ योने । गत्रन पल^६ पग गउ^७ दोने ।
 गार्गि अउ अगनि^८ जिउ ह^९ । पोडे धनुष^{१०} मोम गर गर^{११} ।
 गनमग मीन गति जनु बरन^{१२} । ग जनु दुद गत्रन उजि मरहा^{१३} ।
 हवो नन त्रिय गर^{१४} विपाया^{१५} । गगन उ^{१६} मने क गापा^{१७} ।
 अवि^{१८} तब वा पगनी पगन^{१९} पगन न ना^{२०} ।
 जनु गार्ग गार्ग गर^{२१} निभगम पोडे^{२२} भा ॥

पा १८२—भा १८२ ए में उपर्युक्त अर्थात् ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए सूत सत्र स्थान ओ। २ भा जागत हुते ए जागत होने (< हुने पारसी लिपि)। ३ भा ममरनहि (< निधरि हियं पारसी लिपि) ए हनि कीं।
 (२) १ ए ओ। २ ए ते, रा अनु।
 (३) १ ए एवत (< समनित पारसी लिपि)। २ ए जीव टरई। ३ ए पोड़ा अनु। ४ ए रहुई।
 (५) १ भा दुबी नैन अनु जिय के ए दुनी नैन जीव कर। २ ए ब्यावा। ३ ए मरन।
 (६) १ रा अचरिनु ए अचरन। २ ए ओ बरना। ३ ए बरनति।
 (७) १ भा सारंग सारंग के तर, ए सारंग जो सारंग तर। २ भा मिरनै। ३ ए पोड़ा।

अर्थ—“(१) [उसके नेत्र-बाय] जो व्याप इवेत और एवत वर्ष व [सूत्रों से] सूचित हैं हृदय में सप्तो ही [हृदय ओर] बाहर निकल जाते हैं। (२) [अवसा] के संबंध विज्ञान, लीजे और अति बक ब्रजन हैं जो पलक-पंक्तों से बँके हुए हैं। (३) [अवसा] के मानो अगणित जीव-हृदय करने वाले पारसी (बचिक) हैं, जो अपने सिर के नीचे अनुप (भीह) को रख कर लेटे हुए हैं। (४) [वे ऐसे समते हैं] मानो सामने ही [हो] नीम केति कर रहे हों, अवसा मानो दो (कजन) उड़कर लड़ रहे हों। (५) लोगों ही नेत्र प्राणों के व्याप (बचिक) हैं [और ऐसे व्याप हैं कि] जिनके देखने से मरने की साव (आकांक्षा) उठती है।

(६) एक आश्चर्य [की बात] क्या कहूँ वर्धन करते हुए उसका वर्धन नहीं किया जाता है; (७) [ऐसा समता है कि] मानो साँझ (मृग-नेत्र) साँझ (बनुप-भीह) के नीचे आकर बैठ ले हों।”

टिप्पणी—(१) सूत < सूचित। सेत < इवेत। रात < एवत = साक। निधर < निधिरिड < नि + धिरिड = बाहर निकल जाना। (२) बाक < बक < बक। पारसी < पाउडिज < पापडिक = पिहारी। (५) साव < सडा < धडा = स्तुहा। (६) बचिनु < आश्चर्य। (७) सारंग < साँझ = सीयों का बना हुआ अनुप।

[८४]

बरुनि बनावरि^१ बिमह बुझाई। मटकि^२ परत उर जाहि^३ समाई।
 बरुनि बाम सनमुग म^४ जाही। रोव रोव सन साझर^५ ताही।
 जिस्टि साय ग हिये^६ सयानी। रुहिर करज कीन्ह बरि^७ पानी।
 जबही^८ बरुनि बरुनि सों^९ मरवे^{१०}। जानहु छुरी छरी मों टव^{११}।
 बरुनि बान जो जीत^{१२} पारा। एव मूठि सों^{१३} कांड^{१४} पबारा।
 बरुनि बान व मारत^{१५} में म मवे^{१६} जिउ^{१७} ललि^{१८}।
 कहि म मिरितु जिय भावै^{१९} बरुनि सोहागिनि दति ॥

पाठ्य—(१) १ रा ममरन। २ बान। ३ ए मटक। ४ ए जाहि।

(२) १ रा भा भा होइ ए भै (< भै पारसी लिपि)। २ ॥ रोव रोव सन साझर।

- (३) १ ए दिष्टि पंथ गी हिये। २ ॥ रविर करेज औंठि जी।
 (४) १ भा ए रे। २ रा बरनी। ३ भा ए मेरावै। ४ भा साई ए
 सरावै।
 (५) १ ए जीति को। २ भा सै। ३ ए पांड।
 (६) १ भा ए मारे। २ भा सफी (<सफा नागरी क्रिपि) जय ए सकेज
 जग। ३ ए पेछि।
 (७) १ रा चापे मिरिगु काहु नहि ए नेहि न भिनु भइ जग।

अर्थ—“(१) [इसकी] बरीनी विष में बुझाई हुई बाबाबली है जो मठ के पड़ते ही हृदय में लप्ता (ध्यात हो) जाती है। (२) बरीनी के ये बाज जिसके सम्मुख हुए, उसके शरीर का रोम-रोम अव्यक्त हो गया। (३) यह बरीनी इसकी बुद्धि के साथ बाजर [मेरे] हृदय में लप्ता गई और [मेरे] बड़े-बड़े के दरिद्र को लेकर इसने बानी कर दिया। (४) यह अपनी [एक] बरीनी को जब [इसरी] बरीनी से मिलती है तो यानो छुरी को छुरी से टेली (तेज करती) है। (५) बरीनी के बापों को कील बील तकता है [जब कि] एक-एक कूठ में [यह बरीनी] सौ-सौ कांड (बाज) छेकती है।

(६) बरीनी के बापों के मारे हो में अपने प्राणों की देख नहीं सका (उनकी रक्षा नहीं कर सका)। (७) और, इस मुहांगिनी की बरीनी को देखकर दित्तरी जी में कृत्य अचछी नहीं लगेगी?”

टिप्पणी—(१) बनाकर < बाणाबली। समाज < समु + जग = ध्यात होना। (२) हासर < धर्नर। (३) कहिर < दरिद्र। (४) छुरी < छुरिका।

[८५]

मांभ^१ सख्य न^२ बरन पारो^३। सीमिउ^४ मुबन हरि क^५ हारो^६।
 कीर ठोर औ^७ सरग क^८ पारा। तिलक पूर म बरनि न पारा।
 उन्मागिरि औ^९ करी ठो^{१०} नाही। समि मूख^{११} दुह दा^{१२} कराही।
 नाट न नाउअ^{१३} सजर पारा। निमि दिन जिये सो बात^{१४} अभाग।
 कहि दे^{१५} जार गटनरो^{१६} माया। समि गूदज^{१७} अहि कर्तह बनामा^{१८}।

मांभ^१ सख्य मोहागिनि केहि ले लायो भाउ^२।

जा क^३ समि मूख निमि बागर भागना गार्हि बाउ^४॥

पाठ्यभर—(१) १ रा नाह। २ ए ये यह सख्य नहीं है। ३ भा ए पारेड। ४ ए सीमि। ५ ए मी। ६ भा ए हारेड।

(२) १ ए ओ। २ ए बि रा ये यह सख्य नहीं है।

(३) १ ए ओ। २ भा त। ३ ए गनि रे मूर। ४ भा बाउ बार रा दुह उरी।

(४) १ ए कोउ। २ ए ये यह सख्य नहीं है।

(५) १ ए मी। २ ए ओरी कण्ठर। ३ ए गनि रे मूर। ४ ए, दुह कर बनामा या दुह उरी न बनामा।

(६) १ ए नाह।

(७) १ रा या (<वा हिंसी लिपि?) यह सति और मूरज निमि दिन सारोह
बाउ ए जाके मणि जे मूर निमि बोरि सारै बाउ।

अर्थ—“(१) मैं इसकी नाक के स्वरूप का वर्णन नहीं कर सक रहा हूँ [उसकी तुलना के लिए] तीनों धूबनों—आकाश, पाताल, धार्य लोक—में घोज करके हार रहा हूँ। (२) मुए के छोर, राङ्ग की पार तथा तिल के फूल [से तुलना कर मैं उस] का वर्णन नहीं कर सकता हूँ। (३) यदि इसे उदयगिरि कहूँ तो यह नहीं है क्योंकि शशि और सूर्य दोनों (चंद्र और सूर्य नाम की दो नाइयाँ) इसके लिए बाउ (सगड़ा) करते हैं। (४) इसके निकट कोई सचरण करने (जाने) नहीं पता है और रात-दिन यह बासना (सुषुम्ब) के आचार पर बीठी है। (५) इस नासिका के लिए हिमको छोड़ (तुलना) में लेकर साङ्गुप स्थापित नहीं जिसकी शशि तथा सूर्य (चंद्र और सूर्य नाइयाँ) बताय (बापु) करते हैं?”

(६) इस मूहामिनी के नाक के स्वरूप [वर्णन] के लिए जिसका भाव (सीमार्थ) लाजें
(७) जिसको शशि और सूर्य (चंद्र और सूर्य नाइयाँ) रात-दिन बाटी-बाटी से बापु करते (सन्ते)
हैं?”

टिप्पणी—(१) (५) (७) सति मूरज <सति-सूर्य = चंद्र और सूर्य नाम की दो नाइयाँ
जिन्हें इस और पिपला भी कहा जाता है। नाम नासापुट का वशाव प्रवाह इसा स और दक्षिण
नासापुट का पिपला स माना गया है इसा पीठल स्वभाव की और इसलिये चंद्र नाड़ी मानी गई
है, पिपला उष्ण-स्वभाव की और इसलिये सूर्य नाड़ी मानी गई है। (७) बाउर < बबसर
= बसा बापु।

[८६]

मति सुरग^१ रस मर अमोला । जुग^२ सोमिष्ठ मुख मटि^३ कपोला ।
मतिहानी^४ किछु^५ उकति^६ न आई । यषु^७ कपोल बरनों कहि सारि ।
महि जानौ दहु^८ कइ तप सारा^९ । ओ बरसहि यह निधि^{१०} सयंसारा^{११} ।
अस कपोल बिधि निर^{१२} सोहाए । जे मजाहि^{१३} किछु उपमां छाए ।
मानुस दहु^{१४} अपुरा कहि माहा । बबता बलि कपोल नवाही ।
सुर मर मुनि^{१५} गन मध्य काहुं^{१६} न रहउ गिमान^{१७} ।
दक्षि कपोल नारि के निहू^{१८} टरै महम बिधान^{१९} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सकय। २ ए ओ। ३ ए कठ।

(२) १ रा अमर्षा पुनि ए मैं मतिहीन। २ ए मैं यह पान नहीं है। ३ ए
बरनि। ४ ए मुख।

(३) १ ए बहु वन पमारा। २ रा ओ बेरमहि बहु विधि ए ना बेरमहि निधि।
३ ए ना पारा।

(४) १ ए निरा। २ ए ओय न जा।

(५) १ ए दहु।

(६) १ रा मीन २ ए बाहु। ३ ए ध्यान।

(७) १ भा ए बेसि कपोल सोहागिनि। २ भा टरेउ। ३ ए भा महम ध्यान
रा महम ना ध्यान।

अथ—“(१) आर्यत सु बर रंग के रसीले और अमृत्यु को कपोल [इसके] मुख के मध्य घोषित हैं। (२) मेरी मति हीन है और कुछ (कोई) उचित स्फुरित नहीं हुई (हो रही) है, इसलिये मधुमासती के कपोल का वर्णन जिस [उपमा] की सहायता से करें? (३) यह नहीं जानता कि जिसने [ऐसा] तप किया है जो संसार में [कपोलों की] इस निधि का विभाज (भोग) करेगा। (४) विभाजता के रचे हुए ये कपोल ऐसे घोषित हैं कि जिनकी कुछ (कोई) उपमा नहीं की जा सकती है। (५) मनुष्य बेबारा भला किस [लेखे] में है? इन कपोलों की देखकर देखता भी तमोभिभूत (मूर्छित) हो जाए।

(६) देखता, सुनि और पंचर्ष गण—किसी को भी ज्ञान नहीं रहा (७) इस मारी के कपोल देखकर महेश का भी ध्यान अवश्य ही टल जावेगा।”

टिप्पणी—(५) < बपुरा < बप्पुड (दे) = बचारा। तब < तम। (६) पंचप < पंचर्ष।

[८७]

अथर अमिअ रस भर^१ सोहाए । पम बरें हुत^२ रगत^३ तिसाए ।
अति सुरग कावल^४ रस भरे । जानहु बिब मयकम घर^५ ।
पटठर लाइ न जाहि बजाने^६ । अनुससि^७ अमी गारि बिधि^८ सान^९ ।
अथर अमीरम भरे अपोऊ । बुबर जान मोर डोलाई^{१०} जीऊ ।
वह मो घरी बिधि कब^{११} दरमाइहि^{१२} । जब यह बिउ^{१३} मोरे पट^{१४} आइहि ।

अमम बग्न बुइ^{१५} अथर^{१६} सोहागिनि जगत सुधानिधि^{१७} जान ।

अधिजु जो अग्नि अग्नि सेउं देगल जरीह परान^{१८} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अथरम अमी छीर बास। २ ए वेम प्रीति हनी रा पम पीर दुद।
३ ए रक्त।

(७) १ ए मुनय कोमल। २ भा भरे।

(९) १ ए जा बगानी (< बगाने पारमी निरि)। २ ए जानहु। ३ रा रग। ४ ए मानी (< माने पारमी निरि)।

(४) १ ए मिनरे मय।

(५) १ भा जब मो अथर बिधिमाहि (< बिधिमाहि नामरी निरि) ७ जब मो घरी बिधि। २ ए निर्माइहि। ३ ॥ जब यह जीव। ४ भा मुर (मोरे) अथर ७ अथर पर।

(६) १ ७ मे म दी दाद नहीं है। ३ ७ मुपा निप प्राव ७ गुड चित ध्यान।

(७) १ ७ अधिजु यह देगल से अग्नि अथर बरें परान ७ अथर अग्नि अग्नि मय देगल बरें परान।

अथ—“(१) इनका अथर अमृत रस से भरे हुए और सु बर हैं और प्रेम का वरण करने से वे रक्त के मुनि (ध्याने) हैं। (२) वे ऐसे लगते हैं जामो मृगांक (चंडपा) [को] अति रंगीले कोमल और रस भरे बिहारनों की भाँति बर रहा हो। (३) वे उपमाय देकर बर्णन नहीं हो सकते हैं वे ऐसे लगते हैं जामो प्राणि का अमृत निषोड् बर बिधारा से दूरे बनाया हो। (४) वे अथर अमृत रस से भरे और अमीर (अनपेरे) हैं।” [इन अथरों को देनकर] बुबर (मनोहर)

को जान पड़ा कि उसके प्राण [निकलने के लिए] बचल हो उठे हैं। (५) उसने कहा, "[पता नहीं] बिचाता वह पड़ी कब बिलपुगा कि जब ये प्राण पुनः मेरे घट (शरीर) में आवेंगे।

(६) मुहामिनी के ये दोनों अक्षर अमल (अग्नि) वर्ण के हैं [यद्यपि] जगत् इन्हें सुषान्तिपि जानता है, (७) और आश्चर्य यह है कि [जीवनदायक] अमृत अग्नि के साथ (होकर) ऐसा हो गया है कि उत्तरो बेरने से ही प्राण चलने लगते हैं।"

टिप्पणी—(१) अमित्र < अमृत। रगत < रक्त। निमाए < निमाइय < तृपित। (२) कोंबल < कामल। मयक < मृगाक = चन्द्रमा। (३) असीत < असीत = अनपि। (४) अचिन्तु < आश्चर्य।

[८८]

दमन^१ ज्योति बरनी नहि^२ जाई। चौबै^३ दिस्ति^४ दक्षि कमलाई।
नेक^५ बिपमाइ (?) नींद महु^६ हसी। जानहु^७ सरग सठ^८ दामिनि^९ छसी^{१०}।
बिहगत^{११} अघर दमन कमबान। त्रिभुवन मुनि गन चौबि भुजाने।
मगर मूक^{१२} गुरु सन्धि पारो^{१३}। चौक दसन भय राजकुमारी^{१४}।
नहि जानौ बहु बह^{१५} दुरि जाई। रहे^{१६} जाइ मसि माहि लुकाई^{१७}।
जो काइ कह कि^{१८} बिधिपसारा^{१९} तहि बर^{२०} सुनहु^{२१} मुभाउ।
बिधि^{२२} गुपुत जग माहीं बाहु^{२३} म दसा^{२४} काउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए निम्ब। २ ए बरनि म। ३ ए चौबी (< चौबै फारसी लिपि)। ४ मा श्रिटि।

(२) १ रा एक मा ठक (< नेक फारसी लिपि) ए नाक (< नेक फारसी लिपि)। २ रा मा बिमनाइ नींद महु ए बिमनाइ नींद मो। ३ ए जानहु। ४ रा तें ए सी। ५ रा दामिनी। ६ मा लसी।

(३) १ ए बिहगत।

(४) १ मा ए मूक। २ रा मुहु कै उजियारी ए गुर अम्बनि पारो। ३ ए चौक दसन भई (< भय फारसी लिपि) कुमारी रा चौक दसन न भय कुमारी।

(५) १ ए बहु बेहि। २ ए रहा। ३ मा छलाई।

(६) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ ए बुद्धि बिमरा रा बिधि बना मा बिहल पमारा।

(७) रा ए बिह। ८ ए बाहु। ९ ए में यहाँ 'जो' भीर है।

अर्थ—(१) [इसके] दोनों ही ज्योति का वर्धन करते नहीं बनता है इसकी अमर देवदर वृष्टि बराबरी हो उठती है। (२) नींद में जो [कनी] तकित होती बिदमिनि (?) हो जाती है तो ऐसा लगता है मानो स्वर्ग (आकाश) से दामिनी (विजयी) गिरी हो। (३) इसके अक्षरों के अलग होने [सुनने] जो इसके बात कमल उठे, तो तीनों अक्षरों के मुनि गण बराबरी होकर भूल (मय) में पड़ गए। (४) मयल, मूक, अक्षयति तथा शक्ति—ये चार ग्रह जानो राजकुमारी के दोनों [ही कमल] के अक्षरों (५) नहीं जानता कि यहाँ छिप कर के आकर चंद्रमा में छिप रहे।

(६) यदि कोई कहे कि यह विधि का प्रसार है तो उसका स्वभाव सुनो (७) विधि अच्छी में मुक्त है, उसको किसी में कभी नहीं देया है।”

टिप्पणी—(१) बिहर < बिहट < बि + पट = अलग होना। (२) पछार < प्रसार। (३) बाड < बदायि।

[८९]

तिल जो^१ पना^२ मुख ऊपर^३ आई । बरमि न गा^४ बिछु^५ उपमा^६ लाई ।
 जाइ कुबर^७ चनु रूप लोचन^८ । हिलग बहुरि न आवहि^९ आने^{१०} ।
 तिल न होइ रे^{११} नैन क^{१२} छाया । जासेउ^{१३} सोम रूप मुख पाया ।
 अति निरमल मुख मुकुर^{१४} सरीरा^{१५} । चनु छाया तामह^{१६} तिल दीया^{१७} ।
 स्साम कौबर^{१८} लोचन पुतरी^{१९} । मुख निरमल पर तिल होइ^{२०} परी ।

अति सख्य मुख निरमल मुकुर समान^१ प्रदान^२ ।

तामह चनु क छाया दीये तिल अनुमान ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए दुइ तिल। २ जा परेड। ३ ए पर। ४ ए जा। ५ ए जे।
 (२) १ रा भुनाये। २ भा न आव, ए जाइ न। ३ रा नाये।
 (३) १ ना होइ वह ए होइ। २ ए नैन बी। ३ न आने रा जागो।
 (४) १ ए मुर मुरेगा। २ ए या। ३ ए देगा।
 (५) १ रा काबल ए कुबर। २ या ए पुतरी। ३ रा छाया ठेहि ए पर तिल भै।
 (६) १ ए मुकुटा सम। २ भा पदान।
 (७) १ ए तामा चनु की छाया दीने तिल अनुमान रा तामह छाया दीमाहि मुख पर तिल अवधान।

अर्थ—(१) इसके मुख पर जो तिल आ चड़ा है, [कुबर द्वारा] उपमा लगा (दे) कर उसका वर्णन नहीं किया जा सता। (२) ऐसा लगता है कि कुबर (बनोहर) ने चनु काकर [उसके मुख पर] लग्य हो रहे और उससे ऐसे हिलग (चिपच) गए कि [चापण] लाने पर लीटकर अस्ति नहीं वे। (३) [वह बहने लगा] “यह तिल नहीं है [मेरे] नैनो की छाया है जिससे इसके रूप और मुख में सीमा प्राप्त की है। (४) इसका मुख अति निर्मल मुकुर से समान है इसी कारण उसमें बड़ी हुई [मेरी] आँखों की अतिप्रकाशित होकर दिखाई पड़ रही है। (५) मेरे बोलत लोचनों की जानी पुतली निर्मल [मुकुर समान] मुख पर मिल होकर बड़ (मलक) रही है।

(६) इसका निर्मल मुख अत्यंत कवचान है और वह तामस्य मुकुर समान है (७) उनी में [मेरे] चनुओं की बड़ी हुई छाया तिल के आकार की दिखाई पड़ रही है।

टिप्पणी—(१) चग < चगु < चनु। (२) लोचन < लोचन। (३) प्रदान < प्रदान।

[९०]

सुधा^१ समान जीम मुख बासा^२ । औ ओमति अति बचन रमाता ।
 सुनत बचन वहि अजित^३ बानी । मितक मुख आव भरि पानी ।
 सुने बचन जानु रतन अमाल^४ । ते^५ सम भए^६ जगत मिठ बोले^७ ।
 बीन सा तथा^८ जनमि जग^९ भाइहि । जो रमना पर रमना लाइहि ।
 अति रसारि^{१०} रमना मुख कामिमि अमी सुरस^{११} परमान ।
 वदन^{१२} चंद मह रसना^{१३} अमी सुरा क^{१४} जान ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मुख । २ ए काता ।

(२) १ भा ए अजित रस ।

(३) १ भा मुने जीम अनु बचन अमाल ए मुनहु बीम मुख बचन अमोला ।
 २ भा सो ए नौ । ३ ए सब मौ । ४ ए बोला ।

(४) १ भा तप जो । २ ए जम अमिहि ।

(५) १ ए रमाता । २ भा दुहु । ३ ए भर (—अरि अरामी निवि) ।
 ४ भा ए भाइ ।

(६) १ रा उबत ताता ए अति रमाता । २ ए मूर्ख ।

(७) १ रा बचन । २ रा चंद मुख रमना भा चंद माई अजित ए बाद तर्ह
 अजित । ३ भा अमी मिराई ए अमी सराहि जे ।

अर्थ—“(१) [इत] बासा के मुख में सुधा के समान जिह्वा है और वह अति रसीले बचन
 बोलती है । (२) उसके (इसके) अमृतवर्णी बचन सुन कर मृतक के मुख में जी पानी भर आवेया ।
 (३) जानो जिह्वा ने उसके अमृत्य बचन-रतन सुने के ही सब संसार में मिष्टभावी हुए । (४) ऐसा
 बीन-सा तपस्वी इस जगत् में अन्य लेकर आवेया जो [इत] रसना पर [अपनी] रसना लगाएया ।
 (५) [इत के] मुख में जी अत्यंत रसीली रसना बोलती है, वह ऐसी तपस्वी है जानो वो शत्रुओं
 के बीच में जाकर वह रस (प्रेम) से सब गई है ।

(६) कामिमि के मुख में अत्यंत रसीली रसना है जो प्रवाल रूप से अमृत के सुरस जाती है ।

(७) [उसके] चंद-मुख में रसना ऐसी तपस्वी है जानो अमृत की सुरा हो ।”

टिप्पणी—(२) बानी < बनिम् = वर्षावात । (५) रम < रम् = बीभत्ता आभास करना ।

[९१]

सुम्हर^१ सीप दुइ सवन^२ सोहाए । सरग नगत्त अनु बीरि^३ जराए ।
 तरिबन हीर^४ रतन नग जर । अग्नि^५ मुरु दुइ^६ गुटिना परे^७ ।
 दुहु दिमि दुबो चक्र^८ अनियाग । गसि मध जानु^९ उए दुइ^{१०} तारे ।
 जग बाबरि अति भागि जियाता । सवन^{११} लागि सहि^{१२} कह^{१३} जो बाता ।
 बाना बन्न चंन् गगवारी^{१४} । मानुकि राहु कीन दुइ फारी^{१५} ।

मानन्हि^१ चक्र नरायन^२ लहै दुहुँ^३ बिसि जोति ।
नातर^४ राहु गरासत जो न चक्र भी^५ होत^६ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा मल्लि ए सुबर। २ ए रा सबन। ३ ए जो बारि।

(२) १ ए हीरा। २ रा बारि। ३ ए जो। ४ ए बुटिमा (<बुटिमा फारसी लिपि) परे।

(३) १ ए बुद्ध बिग बुद्ध भमकै। २ भा ए सग माइ। ३ ए जो।

(४) १ भा ए काके भसि (काके भस-ए)। २ रा ए कवन। ३ ए में यह छय नही है। ४ भा कई ए कहन।

(५) १ ए बाद रत्नबाटा। २ भा मानिक राहु कीत बुद्ध भारी ए मांग राहु केतु (<कीत फारसी लिपि) बुद्ध फारा रा मानिक राहु नही बुद्ध भारी।

(६) १ रा बाननि। २ रा रासेन(?)। ३ भा बीगु जो दहु ए बीपे दह।

(७) १ ए नातरि, रा नहि ली। २ भा ए नै। ३ ए होति।

अर्थ—“(१) इसके [बोनों] सुहाबने भवष्य (कान) दो गुड़ (निपल) सीप [भंते] हैं जिनमें बीरियों के रूप में मानी स्वयं (आकाश) के नक्षत्र बड़े हुए हैं। (२) इसके तरिकन हीरा रत्न और नय-जड़ित हैं और आदित्य तथा बुध के रूप में यह दो लुंदिने पारण करती है। (३) [कानों में] दोनों और जो दो भविष्यारे (बकि) चक्र हैं वे मानो [इसके] मुक्त-बासि के साथ दो तारे उचित हुए हैं। (४) है बिधाता इस जगत् में किसका [एसा] अस्वत्त भाग्य हीया जो इतक भवष्यों से सयकर बातें बहेगा? (५) इस बाला के मुलचंद्र की मुरसा के लिए, [ऐसा प्रतीत होता है] मानों [कानों के रूप में] रघु की दो फाँक कर दिया गया है।

(६) [इसके] काना के चक्र दोनों विद्याओं में नारायण [के चक्रों] की उपाधि प्राप्त कर रहे हैं (७) नहीं तो [इसके मुलचंद्र को] रघु चल लेता यदि इन चक्रों का वसे भय न होता।”

टिप्पणी—(१) सुतर<सुगम<गुड=निर्मल। सबन<सबन=बाण। बीरि<बीर्य (६)=तटन चर्नमूलन-विणय। (२) बरिठ<बारित्य=गुप।

[९२]

गिय^१ उपमा^२ बनौ बहि लाई। सइ^३ बिगवरम नार फिगई^४।
बरम रग^५ नहु माहि सिसारा। केइ^६ पयाग^७ दहु^८ बरवन सारा।
बहि लगि^९ बिपि मसि गोब^{१०} मिरमई^{११}। धनि मो कंठ ओहि लगि बरमई^{१२}।
पनि^{१३} जग^{१४} जीवन पनि औगाग^{१५}। जहि लगि बिपि^{१६} अग गोब^{१७} मवाग^{१८}।
मगन लीनि^{१९} कठ क^{२०} रगा। मगन मरीर हो^{२१} बग^{२२} भगा।
लीनि रग अगि^{२३} माभिन गोब^{२४} गोशानिमि दोग।
बोम मो तगा^{२५} जाहि लगि निगयो^{२६} लगि माव^{२७} जगनोग ॥

पाठान्तर—(१) १ रा गिय ए सीप। २ ए अनुर। ३ ए बं। ४ ए भेबाई।

(२) १ ए दिगा। २ ए न। ३ ए प्रयाग। ४ भा गिय ए नै।

- (१) १ ए के। २ रा की। ३ भा ए निर्माई। ४ भा अनि जन जो बेरसहि
मियं सार्ई, ए अन जीवन (तुल परवर्ती अर्थात्) जे बेरसब भीष काई।
(४) १ ए अन। २ ए में यह सख नहीं है। ३ ए जेहि कसि बिचनी।
४ भा गीम। ५ ए साध।
(५) १ ए की। २ ए अस।
(६) १ ए तिय। २ भा भीम ए गीम।
(७) १ भा तप ए में यह सख नहीं है। २ रा काहिकहि निरमल भा जेहि सागि
निरमी ए पतिमी रने। ३ भा अति मिय आनि ए बीस कोम।

अर्थ—(१) [इसकी] प्रीति की उपमा का क्या समान (कोम-सा उपमान देकर) वर्णन
करें? ऐसा सपता है कि मानों [इस चिकनी प्रीति को] स्वयं विश्वकर्मा ने चाक पर छिराया हो।
(२) पता नहीं कि किसके माध्य में कर्म की रक्षा है अबका किसने प्रयाग में करवत लिया। (३)
[पता नहीं] किसके लिए विधाता ने ऐसी प्रीति निर्मित की है। वह कठ पथ्य होगा जो इस प्रीति से
सगहर उसका बिलस (मुक्त प्राप्त) करेगा। (४) उसका अन्त में जोना और अन्त सेना पथ्य है, जिसके
लिए विधाता ने ऐसी प्रीति सजारी है। (५) उसके कंठ की तीनों रेशमों की रेशमों पर धरीर जिस
थेप (प्रकार) से सजग हो जकटा है?

(६) मुहाविनी की प्रीति में तीन रेशमों अर्थात् सोमित बोध रही हैं। (७) वह कोम तपस्वी
है जिसके लिए विधाता ने ऐसी प्रीति निर्मित की है?"

टिप्पणी—(१) मियं < गिब < प्रीति। सार्ई < स्वयं। चाक < चक्र = कुम्हार की चाक।
(२) करवत < करपव = आरा लोग मध्य-युग में वृषति प्राप्त करने के लिए बारे से टीलों ने
अपना धरीर धिरवाते थे। (३) बेरस < बिरसु = बिलस करना।

[९३]

भुजा सहि^१ विसवरम गढ़ी^२। हारठ हेरि न पत्तर रही^३।
सबल सख अतिहि^४ बरियारी^५। दखि बीर अवसी^६ बलिहारी^७।
औ अनुप दुह^८ बनी^९ बलाह। नाम बुदर^{१०} फिर बनाह^{११}।
औ तिम्र पर बुद सुमर^{१२} हूषोरी^{१३}। फटिक सिला^{१४} अनु इगुर पूरी^{१५}।
मिरही^{१६} जन जहवां लहि^{१७} मार। तिन्ह^{१८} रक्त दम^{१९} मय^{२०} रतनारे।
सोमित सबल सख अति^{२१} त्रिभुवन भीतन द्वार।
दहु कहि दह^{२२} आसिगन धमि^{२३} सो जग^{२४} ओमार^{२५}॥

पाठान्तर—रा म ऊर्ध्वग अर्द्धमिय ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए भीम। २ ए गढ़े (< गढ़ी चारसीमिनि)। ३ भा हेरि रहिउ
भा पत्तर बडी ए हेरि रहे तापर मुनि ठाडे।
(२) १ भा अति बरी ए अति। २ ए बरिबारे (< बरिबारी चारसीमिनि)
३ रा ए अवला। ४ ए बलिहारे।
(३) १ ए बोह। २ रा बनी। ३ ए नाम कमान ठे भा नाम नमीन (<
कमान—भागीर मिनि) से। ४ ए बुद बनाई।

- (४) १ ए ओ देहि ऊपर गुदर। २ रा ए हथोरी। ३ ए ओ। ४ मा
मैदुर पूरी ए हथुर चोरी रा हथुर पूरी।
(५) १ मा बिच्छी। २ ए रुगि। ३ रा ताहि। ४ ए दिने। ५ ए में यह
घर नहीं है।
(६) १ मा ए सोहाए।
(७) १ ए देहि। २ ए धन। ३ मा ओ (<सो नामरी लिपि) जगत।

अर्थ—(१) इसकी भुजाएँ स्वयं विषयकर्मा की ही गड़ी हुई हैं; तुलना ईदता यह गया, किन्तु
कोई पकड़ में न आई। (२) ये भुजाएँ बसवासी सु वर और अर्पण बलिष्ठ हैं; इन्हें देखकर बीर और
निर्वस दोनों बलिहार जाते हैं। (३) और इसकी दोनों कलाइयाँ अनुपम बनी हुई हैं जहाँ इन्हें
कामदेव [अंसे] कुंरीपर में छिद्राकर (छराब पर चढ़ाकर) बनाया हो। (४) और इन
[भुजाओं] पर दो निर्वस हथेलियाँ हैं [जो ऐसी लपती हैं] जहाँ एकटिक शिलार्थ ईमुर से धुरित
हैं। (५) इतने जहाँ तक बिच्छी जनों को मारा है उनके रक्त से इसके रक्त मल साल हैं।

(६) इसकी भुजाएँ जो त्रिभुवन को जीतने वाली हैं सबल और सुव्यव बनी हुई सीमित हैं;
(७) पता नहीं यह किसको [इन भुजाओं से] आनिमन देवी जगत् में जसका जगम सेना बग्य
हुआ।

टिप्पणी—(१) सई < स्वयं। (३) कुवेरा < कुद्वार = सरापी। (४) तुमर < मुक्त <
गुद = निर्मल।

[९४]

अति सत्प दुइ सिद्धन अमोमे । जिह्म^१ दायत त्रिभुवन मन डोल^२ ।
बठिन हिरद मह बिधि निरमए^३ । तावें बठिन सिद्धन दुइ भाए ।
जवाहि हिरद^४ हिरद संचरे^५ । कृप आदर बई उठ भै^६ गर ।
दुवो अनूप मिरीफल नाग । भेंट आनि तगनाप^७ दाए ।
जवाहि प्रानगनि हियर^८ छाए । कृप सरोष उठि बाहर भाए ।
दुमठं फडोर^९ बलिगिरे गरय न नाहूँ मवाहि ।
दुवो मोक्ष^{१०} के संसदत आपुन महि^{११} न मियाहि ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए जति। २ रा भी।
(२) १ ए निर्मये। २ ए भाये।
(३) १ मा भीती प्रानगनि (गुन उपरुवा बोधी अडांभी) ए ओ रे हिरद पर।
२ ए गुमरे। ३ ए भी।
(४) १ ए मधनागा।
(५) १ मा ब लिपि या होर उग।
(६) १ मा ए बलि बगरे (बागरे—ए)। २ मा ए बाटु।
(७) १ ए गिव। २ ए मई।

अर्थ—(१) [इसके] दोनों अमूर्त्य रक्त अति सुव्यव (गुणीन) हैं जिन्हें देखते ही त्रिभुवन

का मन डोल आए (बंझल हो उठे)। (२) ये बिपत्ता के द्वारा उसके कठोर हृदय में निर्मित हुए हैं इसीलिए ये दोनों स्तन कठिन (कठोर) हुए। (३) जब हृदय हृदय में (से लगकर) सहरा, तब कुछ आबर (स्वागत) के लिए उठकर खड़े हुए। (४) दोनों ही स्तन अनुपम और नवीन कीचल (बेल) हैं जिन्हें [बाता के] ताकथ्य ने भेंट के रूप में आकर दिया है। (५) जब [मिया के] हृदय में प्रापपति छा गए, ये कुछ सज्जन से उठकर बाहर आ गए।

(६) कठोर और कपटे तिरों के दोनों कुछ गर्ब से किली को नहीं मुकते हैं (७) दोनों ही सीमा (पराकाष्ठा) के बिजयी हैं और आपत में मिलते नहीं हैं।”

टिप्पणी—(१) मित्रुन < स्तन। (४) तदनापा < तदपत्न। (७) मसन्त < मन्त्रियु (?) = बिजयी।

[९५]

अनियारे तीन्^१ अनियाई^२ । निस्ति साय उर जाहि समाई^३ ।
सोमित लिए^४ स्याम सिर बान । महाबीर त्रिभुवन जग जाने ।
दुबी सीव^५ पर चाहहि लरा^६ । हार आइ तब अतर परा ।
दुबी बीर कुच^७ जूह जुझार । सोमहि^८ आनि^९ सुनिहरन मारा^{१०} ।
बने बने अस तिनक^{११} मुमाळ । सतत सीह^{१२} न पाछे^{१३} काळ ।

विपरीत भाठ तिन्हहि कर^{१४} महि अचिन्नु कवि पख ।

जिन्ह उपजहि महि सालहि^{१५} सालहि^{१६} तिन्हहि^{१७} जो दम ॥

पाठान्तर—आ म उर्दुक्क अर्दाकी ३ ४ ५ वा कम है ५ ३ ४ ।

(१) १ ए वा सीव। २ ए अन्याई। ३ आ पैरहि बाई, ए पैरहि बाई।

(२) १ ए देव।

(३) १ ए बाउ सिब। २ रा जानहु।

(४) १ ए जग। २ आ सो नहीं ए सीह। ३ ए ऐम। ४ आ सहन रन मारा ए बी उर हारा।

(५) १ आ मिरत आनि उर्हई ए बीनी बीनी उर्ह क रा अयने बिमने (< बयने) अम तिनक। २ ए बीर। ३ ए पाछे।

(६) १ आ उर्हिकर, ए तिन्ह बी। २ रा नहि अचरिनु कवि आ कवि न अचिनु ए मुनहु अचरिनु। ३ आ बहुर भेर ए बिमैम।

(७) १ ए जहाँ न उपरि माले। २ ए माले। ३ आ तिन्हो ए तिन्हई।

अर्थ—“(१) इससे कुछ [एते] मुझीले तीक्ष्ण और अग्राणी हैं कि ये वृष्टि के साथ (केलने पात्र से) हृदय में समा जाने हैं। (२) सिर पर ये इयाग (काका) बाना दिए हुए सोमित हैं और ये त्रिभुवन तथा जगत् में महावीर प्रसिद्ध हैं। (३) दोनों ही सीमा पर [पट्टे पर] सज्जन चाहते थे तब दोनों के बीच [बचाव करने के लिए] हार आ पड़ा। (४) दोनों बीर कुछ पृष्ठ में बसने वाले हैं और रथ या मारामारी को जान मुकते हैं तो [एकदोश में] आकर दीमित होने हैं। (५) बीनी बीनी (मार्ग-अमार्ग से) [प्रहार करना] एसा उनका (इनका) स्वभाव है ये सदैव सम्पन्न रहने हैं और कभी पीछे नहीं रहने हैं।

(१) उनके इस विपरीत स्वभाव में कवि कोई आश्चर्य नहीं देखता है (७) [क्यों कि स्वभावतः] जिनको ये उत्पन्न होते हैं उनको नहीं सामने (सत्य के समान चुनते) हैं वे सामने उन्हें हैं जो इन्हें [लोभ को दृष्टि से] देखते हैं।

टिप्पणी—(१) सीव < सीमा। (४) जूह < युज। (५) श्रीग वीन < अमन-व्ययन = मार्ग अमार्ग। (६) अविजु < आवश्य। (७) सास < सत्य = कोटा या कोई भी चुनने वाली या पीड़ाकारक वस्तु।

[९६]

रोमावसि नागिनि बिस^१ भरी । जनु बरि हुरें बियर^२ अनुसरी ।
नाभी बूड परी अइ^३ आई । घूमि रही प^४ निबसि^५ न जाई ।
पातर पट मगप मुहावा^६ । जनु बिधि बाधु^७ अंत निरमाया^८ ।
एव क्षीनि^९ दमि जिउ डरई^{१०} । भार नितव टूटि जनि^{११} परई^{१२} ।
छद न जाति^{१३} बत^{१४} हाथ पसारी । मंत छवतहि टूटहि हनिपारी^{१५} ।
टूटि परति बरि^{१६} बाभिनि गरुव^{१७} नितव ब^{१८} भार ।
जो न होत निद्रु^{१९} संघन कीन्है^{२०} निबली तासु अघार ॥

- (१) १ भा बिस। २ ए बेंबरहु ते पिरि भा जनु गिरि हुन बिबर रा जनु बेरार हुनै वह।
(२) ए नाभि बूड मई परी जो रा नाभि बूड हेरी जी। २ रा जाई। ३ रा वी। ४ भा ए निबसि।
(३) १ ए अनूप मोहाई। २ रा ए बाधु। ३ ए निर्माई।
(४) १ ए क्षीन। २ भा देगि जो भरहरे (< निब बर हरई पारणी सिनि) ए देगि बिन हरई। ३ ए जी। ४ भा परी रा हरे।
(५) १ भा ए जाइ। २ ए नि। ३ ए मानहु शुभन टूट हायारी।
(६) १ रा टूटि परति बदि ए टूटी पर बर (< बरि अरनी सिनि) भा टटि परइ बरि। २ भा युज। ३ भा बें।
(७) रा द्रु। २ भा ए यह गार नहीं है रा बीने।

अर्थ—“(१) [इसकी] रोमावसि बिजरी नागिनि है जो कि इसरी बदि से निबल बर मानो [नाभि] बिबर का अनुसरण कर रही है। (२) जब यह नाभिबूड में आकर गिरी यह पक्षी रह गई पर निबल न सारी। (३) इसका पल्ला पेट गुरीन और सुबर है और वह ऐसा लगता है मानो इसे बिपाता ने बिना अंश (अंशुओं) के निबल दिया हो। (४) इसकी क्षीन लंक को देखकर जो [इस का] डरना है कि यह निर्मलों के भार से [बरी] टूट न पड़े। (५) बिना भी हाथ बगारिबे यह [ऐसी गुप्त है कि] घुमे में नहीं आती है और [यह भी डर लगता है कि] बरी यह हायारी लगे ही टूट न जाए।

(६) नाभिनी जो बदि नुच निर्मलों के भार से टूट बहती (७) यह बिबली जो उसका आचार है द्रु अथवा न दिए होगी।

टिप्पणी—(१) बरि < बरि। () यज < यज = यज। (३) बाधु < बाध < बाध = रति बिना। अज < अज = अज अर्थ।

म

र

करि माहै^१ त्रिवली बसि अही^२ । विघन गढ़त^३ मूँटि
युरजन लाज मनहि मन^४ मानेउ^५ । तौ नहि मदन भंडा
बसि निरुख बिहुटि^६ बिस लागी^७ । परत बिस्टि मनमय
जुगु^८ जंय^९ दनि मन बहुराई^{१०} । भरमेउ जीउ^{११} किछु
राते कौवल सेत^{१२} सोहाए । तबबन्ह बल पटतर
विपरित कनक^{१३} केवली^{१४} भी^{१५} मज सुख सुम
उपमा^{१६} बत लजानउ^{१७} सुनहु^{१८} कहौं सति म

बाठान्तर—(१) १ ए कटि माहें। २ ए जाई। ३ ए काहि (< ए
रही ए मूठी ली बहो।

(२) १ भा बिठहि यम ए बित मंह। २ ए मापा। ३

(३) १ ए बिहुठ। २ भा लाली। ३ ए पुनि ए
४ भा जाई।

(४) १ ए जाई। २ ए बरनि न जाई, ए बित बहुराई
ए मन भरमा। ३ भा किछु बरनि ए कछु कछा।

(५) १ ए राते कील जो सेत। २ ए तरपा कील नहि

(६) १ ए बत। २ भा मैं वहाँ जीर है 'कर पटतर'
नही है। ४ ए मज मैमंत बरवार (?) ।

(७) १ ए लजानेउ। २ भा जा कहें।

म

र

अर्थ—“(१) [इसकी] कटि में त्रिवली लगी है, यानी बिबला मे
या उसने इसे [यही] मुरली में पकड़ा था। (२) जैसे बुधजन की
इसलिए इसके जलम-भांडार (मुहूब जंय) का बर्चन नहीं किया। (३)
चित्त बचमें बिपककर जा लया, और उन पर बुद्धि पड़ते ही राती में
पडा। (४) इसके गुणल बर्चों को देखकर मन बहुरा (काँच) उठा और
पहुते नहीं बनता है। (५) इसके पीरों के तलवे रक्त बर्च के कोमल और
जिह्वा के कनकों को उपमान लीला (के बप में) प्राप्त कर लिया है।
(६) [इसके बर्च] उलट कर राते हुए कमक-कवली और पर
(जाकार) के हैं। (७) इनकी उपमा हैते समय में लजित हुआ या
कह रहा है।”

टिप्पणी—(१) बरि < कटि। (५) राग < रस = लाज। रौबल

सोवत दसि^१ सन बिकारा^२ । उठेउ^३ कुंवर^४ सन बिरह^५ बिकारा^६ ।
 सहज चित्तिहि उपजउ^७ यैरागू । बिरह आह भाजिय^८ कर रागू ।
 बदन मदन भनु^९ कुति उचित दसि हरे मन सेत ।
 धनि सो जनम जग ताकर जा सेउं उपजे हेत ॥

- पाठ्यन्तर—(१) १ ए बिना । २ ए सुते । ३ भा बरनि केउं बाप ए को बरने पाप ।
 (२) १ ए जो बिधि सिरा पुवा । २ रा ए अनूपी । ३ रा ट । ४ रा ए
 बागु । ५ रा सकपी ए अनूपी (तुल्य पूर्ववर्ती चरण) ।
 (३) १ भा सियरिउ । २ भा सिष्टि । ३ भा लग्या बहुत मदन री ए
 लग्या बिहित मदन भी रा लग्यावत मदन सब ।
 (४) १ भा सुती देख ए सोबत देना । २ रा भाउ ठी ग उठा । ३ रा में यह
 खर नही है । ४ ए में यह शय्य नही है । ५ भा बकाए ए
 बिकारा (तुल्य पूर्ववर्ती चरण) ।
 (५) १ ए बिउ जना । २ ए आह भी बिउ ।
 (६) १ भा ए बदन मदन (पगुग—ए) कुति उचित देखि हरे (न रहै—ए)
 मन (मुनि—ए) सेत रा सरना बहू सरना जवा जिय सो निरवाहि
 बाहि ।
 (७) १ भा ए धनि सो जनम जग ताकर जासा (जासी—ग) जगहि
 (उपजै—ए) हेत रा परत भाउ मन साने पावे माग कपादि ।

अर्थ—(१) बिना कटास बिना हाव-भाव तथा बिना गूंगार के शय्या में प्रयुक्त
 उस नारी का वर्णन कौन कर सकता है ? (२) बिबल्ल ने पूर्वे काल में जिन अनुपम नारियों को रखा
 था, वे बिना गूंगार के सहज ही मुकपवती थीं । (३) [इस नारी के शरीर में] समस्त सुख का
 सीमाव्य बा, और इसका संपूर्ण गात्र मदन (काव्य) के कारण लग्न-युक्त हो रहा था । (४) शय्या
 पर इस प्रकार इसे बेछरार (बेचेत) सोती देखकर कुमार (मनोहर) के शरीर में बिरह-बिकार
 उठा । (५) उसके सहज चित्त में [संसार के] वैराग्य उत्पन्न हो गया, और बिरह आकर उसके
 बीच (प्राणी) का पाहुर हो गया ।

(६) इसके बदन (गुग) पर मदन (काव्य) की कुति उचित देखकर [कुमार के] मन
 का सेत हर उठा (७) और उसने कहा “उसका जग जगन् में पश्य होगा जिनने [इसके मन
 में] हेतु (मेघ) उत्पन्न होगा।”

टिप्पणी—(२) पुष्प < पुष्प < पुर्व = पहले^१ बागु < राग < बरै = बिना । (३) तापी <
 मरुत । (४) बिकार < बकरार (रा) = प्रगोष भवेत् ।

[९९]

गोवत^१ बरनि बिर्दि^२ गच्छानउ^३ । कम म जगाद^४ मिंगार घगानउ^५ ।
 अउ जग^६ रग याग बहाई^७ । अउ^८ रग^९ यमा मना रग पाई^{१०} ।
 दुवो भभा गिर जग^{११} भानी । धंग मोरि बनिता^{१२} भंभुभानी^{१३} ।

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि। २ मा भविष्य। ३ ए निहारी।

(२) १ ए भिष। २ मा भणं, ए जी। ३ ए चहुं। ४ ए हेप। ५ ए बिगहने सिंह रा जामी सिप। ६ ए जहेरा।

(३) १ ए जुंजर सेनु। २ मा निहुराई, ए भगिराई। ३ ए डंभाई।

(४) १ ए ता। २ मा मरम भई भरमी बारी ए भरमित भी जो भर नारी।

(५) १ रा देखेसि जबाहि ए देखेसि बोहि। २ ए पुसं की। ३ ए भिष।

(६) १ मा मधुभि भिषहि ए मधुभि हिये। २ रा पुनि उठि बैठि ए पुनि उठि बैसु।

(७) १ मा सिरी बिरज वै ए बिवा बीरज पर, रा बिवा बीर बरि।

अर्थ—(१) फिर राजकुमारी जान उठी और वह नारी चारों ओर बकराई हुई देखने लगी। (२) ऐसा लगा मानों सज्ज होकर कोई मुनी बसो दिशामें में देख रही हो जब उसने आगेट में फिर और दारून को पहचाना हो। (३) फिर जो कुमारी ने निश्चय करने देखा [तो देखा कि] दूसरी शय्या [उसके] निकट ही बिछाई हुई है, (४) और उस [शय्या] पर एक नारी राजकुमारी है; यह देखकर उसकी चित्त में बहुत घम हुआ। (५) किन्तु जब उसने पुनः की कला (माहति) देखी तो भ्रम होते हुए भी उसने भी में हाउस किया।

(६) वह झेठ कामिनी बित्त में सज्ज गई और फिर संभल कर उठ बैठी। (७) उस स्त्री ने बित्त में पैसं पारण किया और वह राजकुमारी [फिर] बोली।

टिप्पणी—(२) तीह < निह। मैरूर < दारून = गरम। भहेर < भायेट। (३) निछा < निच्छय < निरु + चि = निश्चय करना निर्णय करना। सैन < सैन्य = शय्या। (४) बारी < बासिका। (५) नप < कला। (७) निरी < स्त्री।

[१०१]

पुनि घर कामिनि अघर अमोले। अंजित बचन बहन बहं गोले^१।
पूछिसि मयुर बचन रमारा^२। बो आहिह तुम्ह दब बुमारा^३।
बहुत^४ आपन तुम्ह^५ मातं^६ गासाई। बोनि सकति आएहु^७ एहि ठाई।
जहां नेवाग बने सो याग^८। पौन नर वहि पाब^९ संपारा^{१०}।
गपत मइहि^{११} ए पूछी ताही। बहुहु बान आपनि^{१२} गन^{१३} मोही।
ब तुम्ह इदामन^{१४} के दबता के पनार^{१५} के माग।
बे तुम्ह^{१६} मिग्गुमोब के मानुस बटहु^{१७} अरम बिन^{१८} माग॥

पाठान्तर—(१) १ ए बोले (< गोरी घागी निरि)।

(२) १ रा ए रमाप्य। २ ए बो आहि है देव बुमारा रा बो दे माई गुन देव दयाला।

(३) १ ए बहु। २ मा ए मोहि। ३ ए माग। ४ ए माये।

(५) १ ए बारी। २ ए पबनी बने न पाब भा पीनी बने न पाब (< नार मावरी निरि)। ३ ए नैवागी।

(६) १ ए निमु। २ ए मानन। ३ मा गब न निर।

(१) १ ए बर सभा । २ भा पाताक ए पताक ।

(७) १ ए गुह । २ ए कही । ३ भा मित्र ए जो ।

अर्थ—(१) फिर उस थोड़ काबिली ने [अपने] अमृत्यु अवर अमृत [सबुध मयूर] बचन कहने के लिए कोले । (२) उसने मयूर बीर रसीले बचनों में कुछ, “हे देव कुमार, तुम कीम हो ? (४) हे स्वामी, तुम अपना नाम कहो, [बीर यह बताओ कि] किस व्यक्ति से तुम यहाँ आए (५) क्योंकि यहाँ यह बाला निवास करती है वचन भी संभार करने नहीं पाता है । (६) मैं अपनी ही सपन देकर तुमसे पूछती हूँ : तुम अपनी बात मुझसे सच-सच कहो ।

(६) क्या तुम ईश्वर के देवता (ईश) हो या पाताक के नाथ (बामुक्ति) हो (७) या तुम मृत्यु लोक के मनुष्य हो ? कहो (उत्तर दो) जिससे बिल का भय भये (दूर हो) ।”

टिप्पणी—(२) रमार < रसाक । (५) सई < स्वयम् । (६) पतार < पाताक ।

[१०२]

कै तुम्ह^१ राकस भूत कै^२ छाया । कै तुम्हारि^३ यह मानुस बाया ।
कै गुर बचन सिद्धि किछु^४ पाई । कै नैनहि लोक भजन देखाई^५ ।
कै तू^६ मन सकति बिछु पाई । कै रस^७ मूरि गुरदब^८ सग्याई ।
कै तू^९ बढ़ि^{१०} मन पीन लटोलें^{११} । आएसि मारें^{१२} मदिल भवोलें^{१३} ।
अगम पौरि धारिहुं दिसि^{१४} सागहि । आस पास बहु पहरु^{१५} जागहि ।
मंथरीं सात मदिल कै^{१६} जागहि धीर अपार ।
सहं कैसैं तुम्ह^{१७} आएहु जहं न समीर^{१८} सचार ॥

वाक्यान्तर—ए मैं उपर्युक्त अज्ञातियों ३ तथा ४ परस्पर स्वार्थांतरित हैं ।

(१) १ ए कै । २ ए की । ३ ए कोहारि ।

(२) १ ए कै । २ रा कै नैनिकायि भजन देखाई, ए कै मूरि मुन भ्याम भखाई । (सुक० परवर्ती अज्ञाती) ।

(३) १ भा सई, ए कै । २ रा कै, ए मैं यह छत्र नहीं है । ३ ए मुन भ्याम ।

(४) १ भा सई, ए कै । २ ए बड़ेति । ३ भा पटाका ए लटोलें । ४ ए हपरे । ५ भा बबोलें ए बबोलें ।

(५) १ ए चारों दिस । २ भा सब पहरे, ए सब पहक ।

(६) १ भा माँवरि सात मथिर कै ।

(७) १ ए गुह । २ ए ए जहाँ न समीर ।

अर्थ—(१) अथवा तुम राकस [अथवा] भूत की छाया हो, अथवा तुम्हारी यह बाया मनुष्य की है (२) अथवा तुम के बचन से कुछ सिद्धि तुमने प्राप्त की है अथवा [तुम्हारे] नेत्रों से लोकांजन लगाने के कारण तुम्हें [अब कुछ] दिखाई बढ़ता है (३) अथवा तुमने कुछ मंत्र-पास पाई है या [तुम्हारे] मुख या [तुम्हारे] देवता ने रस-मूल दिखा दिया है । (४) अथवा तुम मन के परम-लटोलें (बामुपान) पर जाकर मेरे मथिर (मथन) में बबोलें (बुबुधाय) आ गए ?

(५) चारों ओर अगम्य पीरिया लगी हुई (बंद) हैं और [उन के] आस-पास बहुत ते प्रहरी आप रहे हैं

(६) इस मंदिर (मकान) की सल्ल मीरियों (कंदे सगाने के सिद्ध बने मायों) में अतंस्य बीर जागते [हुए पहरा बैठे] रहते हैं (७) सब वहाँ (ऐसे मंदिर में) तुम चले आए वहाँ पर लगी (बाधु) का भी लंघार नहीं है ?

टिप्पणी—(१) राकस < राक्षस। (२) लोकमंजन < लोकाञ्जन—एक प्रकार का मञ्जन जिससे देखने की अद्भुत धमिल प्राप्त होती मानी गई है। (५) पीरि < शोनी = मुख्य द्वार। पहुँ < प्रहरी। (६) मीरी < मरी = कंदे सगाने का मार्ग।

[१०३]

तुम्ह^१ पूछो द सपत बिबाता । बहु माहि सउं सत भई जो^२ बाता ।
कै तोहि बोड^३ बरबस लै आवा । तेहि भरमसि मुन^४ वनत^५ न आवा ।
दखति हौं सम^६ मानुस करा । प्रगट लिखार भाग ममि बय^७ ।
वस र^८ मोन भा^९ रहसि अयोला^{१०} । दयि भरम मोरा मन^{११} डोला ।
दयि मोन जित भरमउ भारी^{१२} । अचिन्नु दयि जीउ हरबारी^{१३} ।

डाडस कै उठि बैसहि भरमि न^{१४} मनहि मयात^{१५} ।

तोहि सपत द पूछो बहु सति आपनि^{१६} यात ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तोहि रा तुम। २ भा बहु मोहि तेउं निनु सत कै ए बहु निज माहि सौं सत रा बहु मोसौं सत भई जो।

(२) १ भा केउ ए बोड। २ भा तेहि भ्रम भरमसि ए तेहि भरमसि जीव।
३ = बड़ति।

(३) १ भा ए सब। २ रा भर।

(४) १ रा कै रे। २ ए भै। ३ ए अयोला। ४ भा मोर मानुस ए मोर मयमा।

(५) १ भा देगि देगि जीउ नग्य वरवरई (गुन वरवरीकरण) ए देगि देगि जिय मय आई। २ भा अचिन्नु देगि डर मन वरवरई ए अचरित देगि मन वरवरई रा अचरिन्नु देगि जीउ हरबारी (< हरबारी प्रारम्भी निज)।

(६) १ भा बीगउ ए बीगउ ए बीगरी (< बीगहि)। २ भा भ्रम जित आदि न मान ए जियहि आ मन मयान रा भरम महि मयान।

(७) १ ए आन।

अर्थ—(१) मैं [तुम्हें] बिबाता की आपस देखर तुमने पूछनी हैं; मुझ से सत्य बनावो जो बात हुई हो। (२) क्या तुम्हें कोई बन्धन के आवा और उसी में तुम चररा रहे हो और तुम्हारे मन में उद्विग्न नहीं आ (निजस) रही है ? (३) [तुम्हारे में] मैं समुद्र की समान बनावें देख रही हैं; तुम्हारे समार में प्रगट (प्रपञ्च) ही भाग्यमयि जन (मनस) रही है। (४) तुम चले (चले) लीन होकर अयोला (वन) हो ? तुम्हें कैसकर भ्रम से कैस मन डोल उठा है। (५)

[कुम्हें] देख कर मेरा भी बहुत भ्रमित हो उठा है और यह आश्चर्य (तुम्हारा माना) देख कर भी मैं हड़बड़ी (घबराहूँ) हूँ।

(१) काहल करके तुम उठ बैठो और मन में शंका करते हुए तुम बकरामो मत (७) मैं तुमसे शपथ लेकर वृक्षती हूँ तुम अपनी सखी बात कहो।
टिप्पणी—(१) (७) शपथ < शपथ। (२) बकन < बकित = उचित। (३) करा < कसा।
निकार < मिलाव = ससाट। (५) मधुमन् < मादधर्ष।

[१०४]

सुनी^१ कृपार अवित रस बाता । आके^२ सुनत अमर भा^३ गाता ।
चित्रि^४ वित्त मन भरमि^५ मुलाना । दक्षि रूप सहि रहत न^६ गुमाना ।
लागे हिए काँठ अनियार । भाव कटाछ सान के^७ सारे ।
जस^८ साँठ मीर मह परई । सहज अपान आपु^९ पछिरई^{१०} ।
सौह सत्प न सके निहारी । कुबो नन के बार बिचारी^{११} ।
दक्षि रूप बलु भरमें^{१२} सौह न सकहि निहारि^{१३} ।
रगत^{१४} आंसु बह^{१५} नैनन्हि पसक न जाइ उयारि ॥

पावनार—(१) १ ए मुना। २ भा बेहि के। ३ भा भी ए हो।
(२) १ भा चकित। २ ए मोह। ३ भा वेहि रहन ए विर रहै न।
(३) १ ए मोह कटाछ सान है।
(४) १ ए नीने। २ न आपु आपुहि। ३ ए पछिरई।
(५) १ भा बार न चारी।
(६) १ रा भरमेई ए भरमें। २ ए मई नैमारि।
(७) १ ए रगत। २ भा भर।

अर्थ—(१) कुमार (मनोहर) ने [कुमारी मधुमाक्षती की] वह अमृततरु वाली बात सुनी जिसके सुनते ही उसका मान अमर हो गया। (२) उसका चित्त बकरा गया और मन भ्रमित होकर मूल गया [उस कुमारी का] रूप देखकर उसको मान न रहा। (३) उसके हृदय में वे मुकीने [वृष्टि के] काँठ (भाव) लग गए जो भाव (प्रेम) पूर्ण कटाक्ष की साध (शाप) पर वीने किए हुए थे। (४) बीते काँठ जल में चढ़ कर अपना सहज आपस (आत्मत्व) आप छोड़ बैठी है [बैठी ही राजकुमार की भी बसा हुई]। (५) सम्पुन [की वृष्टि] से वह [उस कुमारी का] गुण नहीं देख सकता था, [आत] वह दोनों मैनों के द्वार के कर बिचारने लगा।
(६) उसके बलु [उस कुमारी के] रूप को देखकर भ्रमित हो उठे [विशु] के सम्पुन वृष्टि करके उसे नहीं देख सकते थे। (७) रगत के आंसु उसके मैनों से बह रहे थे और पसकें उपाड़ी नहीं आ रही थी।

टिप्पणी—(१) मान < माय = मान का परवर। (२) गाँठ < [गर्हण] लण्ड। (३) अमान < अमान = आत्मन। (४) बार < द्वार। (५) बलु < बलु < बलु। मोह < मधुमा।
रगत < रगत।

[१०५]

सुनु घर नारि कहौ मैं तोही । सहज हनु जो पूंछेहु^१ मोही ।
 नगर कनगिरि उत्तिम यानी । सुरुज मानु^२ पिता जग जानी ।
 ओ मोहि कुबर मनोहर^३ नाऊ । राखी बंस कनगिरि ठाऊ^४ ।
 लिनक नीदि लोयन जो^५ लागी । अबहीं देखु उठा हौ^६ जागी ।
 नहि जानौ मोहि को रु आषा । जहि^७ तोहि मोहि भा^८ दिस्टि मेराषा ।
 तोरे^९ रूप गढ़े दुह^{१०} लोयन^{११} नहि दखौ^{१२} निसरंत ।
 जेउ जउ गज परै पक मह^{१३} सउ तेउ अधिन रहंत^{१४} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुछे ।

(२) १ ए सुर्वमान ।

(३) १ रा मैं 'कुबर मनोहर' सव्य नहीं है । २ ए ठाऊं ।

(४) १ ए नैनहि । २ भा मोहि रा नहि । ३ ए मैं ।

(५) १ ए जो । २ भा ए भी ।

(६) १ भा तारें । २ ए बोह । ३ भा लोये ।

(७) १ भा ए जो जो पत्र (बग-ए) बर (पर-ए) पंक नरि (मह-ए) । २ भा ए ली ली अधिक पड़त ।

अर्थ—(१) [कुमार कहने लगा] "हे खेच नारी मुनी; मैं तुमसे बहु सहज हेतु कह रहा हूँ जो तुमसे मुझसे पूछा है । (२) कनक गिरि नगर एक उत्तम स्थान है [जहाँ के] मेरे पिता सुर्व मानु को जगत् जानता है । (३) और मेरा कुमार मनोहर नाम है मैं राखन (राम) के बंस का हूँ और मैं [जहाँ] कनकगिरि स्थान का हूँ । (४) एक क्षण के लिए मेरे नेत्रों में जो नींद लग गई तो यह देखी मैं अभी जाग कर उठ रहा हूँ । (५) मैं नहीं जानता कि मुझे [यहाँ] कौन से आया कि जिससे मेरा और मेरा दृष्टि-मिलान हुआ ।

(६) मेरे वय (लौचर्य) के [बलवत्त में] मेरे दोनों लोचन पड़ (बँल) गए हैं और उनकी निरुक्तता नहीं देत रहा हूँ । (७) [और यह ठीक भी है क्योंकि] जैसे जैसे पत्र पंक (हलदल) में बँलता जाता है वैसे ही वैसे वह उत्तम और अधिक बँलता जाता है ।

टिप्पणी—(२) वन < वनद < वनक । पान < पानन । (५) मेराव < मेराव < मेरा ।
 (६) मायन < लोचन ।

[१०६]

अबहु मादि गए^१ उडि जागउ^२ । दगि न्य मुख^३ ओबन गांगउ^४ ।
 पुष्य^५ पुत्रि^६ भाउउ निछ मोरा । जद^७ मग आनि दगाणउ^८ तोरा ।
 मैं बरषा माहि जनम दवाणउ^९ । ताहि पुत्रि^{१०} ताहि दग्गन पाणउ^{११} ।
 के^{१२} मन यणि बरहु^{१३} पमाणा । बणाउ मोम पुच्छ^{१४} के^{१५} माणा ।
 गाणउ पुष्य ताहि निरि पण^{१६} तानी । पनि पनि पुष्य^{१७} पुत्रि^{१८} जा पाही ।

पेम काँड़^१ हिय सागउ सोयन रह^२ सोभाइ ।
तन मन^३ जिउ जोवन तुम्ह^४ चाह^५ नैसहु छाडि^६ न जाइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए गा। २ ए जायेऊँ। ३ मा जिये ए अग। ४ ए सायेऊँ।
(२) १ मा पूरव पुनि ए पूर्व पुन्य। २ ए बाहू। ३ रा ए जहि।
४ ए देसाबा।
(३) १ ए बेबावेउ। २ ए तेहि रे पुन्य। ३ मा तुव ए अब। ४ ए पायउ।
(४) १ ए बी। २ रा बँछ। ३ मा तरिहु ए तीर्य। ४ ए कलपा। ५ ए पूर्व। ६ पा टिन्ह।
(५) १ मा पाणउं जाइ टिरि तेहि कळ ए बाबु पायेऊँ तीर्य बी। २ ए वन्य वन्य पूर्व पुन्य। ३ मा बी।
(६) १ ए फीद। २ ए रा खँउ।
(७) १ ए ठनु मनु। २ ए मैं यह शय्य नहीं है। ३ ए नही। ४ मा छोटि ए छाडि।

अर्थ—(१) बहरी मैं जीव टूटने पर काम उठा (बी) तुम्हारा वचन बैसकर अपना जीवन पैदा किया। (२) मेरा कुछ पूर्व पुन्य का जिसने मुझे [यहाँ] का कर तुम्हारा मुक्त रिलाया; (३) अबका मैंने उस वन्य में करवत रिलाया था (आरे है शरीर बिरामा का) और उसी पुन्य ने [मुझे यहाँ] लाकर तुम्हारा दर्शन कराया (४) अबका मैंने प्रयाग में मन-बालिष्ठ वरम (संकल्प) किया था और पूर्व के प्राण्य से जलवा तिर बहू काटकर कहाया था। (५) उसी पूर्व [के पुन्य] से मैंने तुम स्त्री-कल को प्राप्त किया अतः मेरा पूर्व का बी पुन्य था वह वन्य था, वन्य था।

(६) [तुम्हारा] प्रेम-काँड़ (प्रेम-वास) हृदय में लप बपा है जिससे जीवन [तुम पर] मुख्य हो उठे है; (७) तन मन जीव (प्राण), और जीवन—(प्रायेक) तुम्हें चाहता है, और [इतलिय] तुम्हें किसी प्रकार की छोड़ा नहीं जा रहा है।”

टिप्पणी—(१) करवत < करवत = बाप स्वर्ग की प्राप्ति के लिए काफी और प्रयाग में पहले नाम आरे से शरीर बिरामे के। (४) वन्य < कलप् (?) = काटना। पुन्य < पुन्य < पूर्व। माप < भाव्य। (६) जीवन < जीवन।

[१०७]

पुन्य पुनि^१ फल बाबु^२ हमार। सति पुनि^३ मुग दस तुम्हार^४ ।
पम^५ काँड़ हिय सागउ^६ मोरें । बिरहू पाल जिउ बासेउ^७ तोरें ।
पुन्य^८ भाग जहि होइ मिलारा । तोहि दरस सो पाव बाग ।
तुम्ह^९ पूछो रम हनु कुमारी । नीन राज कहि^{१०} राज तुलारी ।
करहु माउ^{११} मोहि मापन बाला । पिता कौन कहि^{१२} वीप^{१३} भुषाम्मा ।
म अपन मैनन्ह^{१४} न^{१५} बलि बलि जहि दगों तार^{१६} रूप ।
ओ सयनह^{१७} को^{१८} ओ मुनी^{१९} अग्रिग^{२०} नचा^{२१} अनुप ॥

पाठान्तर—भा के पत्रा नहीं है।

(१) १ ए पूर्व पुन्य। २ ए आपु। ३ ए पुनिव। ४ ए तोहारा।

(२) १ ए कोर। २ ए लापा। ३ ए जिय बासा।

(३) १ ए कर्म। २ ए मुन करिबन।

(४) १ ए तोहि। २ ए पर।

(५) १ ए नाम। २ ए देन।

(६) १ ए की। २ ए जो देना मुन।

(७) १ ए रा यवनपु (भा म मर्वन मवन) और 'तवनरह' कय आये है। २ ए म यह विमजिन नहीं है। ३ ए मुकेई। ४ ए बचन।

अर्थ—“(१) आन मेरा पूर्व (पूर्वाजित) पुण्यकृत [प्राप्त] हुआ कि पुनिमा के तानि [तदुप] तुम्हारा मुन मने देता; (२) मेरे हृदय में तुम्हारा प्रेम-कर्म (प्रेम-बाध) कम गया और मैं तुम्हारे बिरह-काल में बड़ हो गया। (३) पूर्व (पूर्वाजित) माय जिसके ललाट में होता है वह तनी है बाल, [देता] वर्ण प्राप्त करता है; (४) अब मैं तुम से (तुम्हारे) रस (प्रेम) का हेतु पूछता हूँ : यहाँ का कौन राजा है और जिसकी तुम राज-कन्या हो? (५) हे बाला मुझे तुम अपना नाम बताओ; तुम्हारा पिता कौन है और वह किस द्वीप का भूपाल है?

(६) मैं अपने नेत्रों की बलिहार जाता हूँ कि [उनके द्वारा] तुम्हारा कप देल रहा हूँ (७) और अपने कानों की बलिहार जाता हूँ कि [उनके द्वारा] यह अनुपम अमृत कबा मुन रहा हूँ।

टिप्पणी—(१) (३) पुरव < पुन्य < पुर्व। (१) पुनिव < पुनिमा। (२) बाध < बध् = बंधन। (५) भुवाल < भूपाल। (७) यवन < अयव = वान।

[१०८]

पुनि रग बचन सोहागिनि बोली। अमिज बचन रसमच्छ गोली।

बमके दगल बहुत रम^१ बाला। चौपे सोनि मुकन मा^२ गाला।

मुनतहि^३ बचन मुनन मुरछाना। हरउ^४ चल चिल यणउ गियाला^५।

दमन अघर ग्याम हजि लई। बचन मुनाह सो मरुरि जित^६ दर्द।

नामन भाव मोठि^७ यगनि न आवा^८। मुबइ चाह तो यरन जियाबा^९।

अपर भाव वा वरमो माहि मुन^{१०} मगनि न जाद।

मा^{११} तो जियतहि मा^{१२} मुअहि^{१३} तो मा^{१४} जियाद ॥

पाठान्तर—भा के पत्रा नहीं है।

(१) १ ए बीबा। २ ए रोदन छंद (< रदनच्छंद बाली निदि) गोला रा रमना मुन गानी।

(२) १ ए मुन। २ ए मब।

(३) १ ए मुनन। २ ए हरा। ३ ए चिल बँवाला।

(४) १ ए मुनन मो छिर जिय।

(५) १ ए म बर हार गरी है। २ ए बाई। ३ ए मुबई चाह तो बरति जियाई।

(१) १ ए मृत् ।

(७) १ ए सक। २ ए मुये ।

अप—(१) फिर वह भूहागिनी रतीसे बचन बोलने लगी वह रहनचर (भोळों) को खोलकर अमृत-बचन [कहने लगी]। (२) इन रस-बचनों को कहते समय जो उसके बात बचके, त्रिभुवन में मात्र (पात्र-पारी) चीब उठे। (३) इन बचनों को सुनते ही कुमार (मनोहर) मूर्छित हो गया उसके चित से चेत हर उठा और उसका ज्ञान जाता रहा। (४) किन्तु वहाँ उसके अचरों को देखते ही वह ज्ञान हर लेती थी वहाँ [अमृत] बचन सुनाकर वह [उसे] पुनः बीजन बाग भी कटती थी। (५) दूसरे किसी भाव (प्रभाव) का मैं वर्णन नहीं कर सकता [यही वह सत्यता है कि] यदि कोई मरना भी चाहता तो उसकी अपने बचनों से वह जिता देती।

(६) उसके अचरों के भाव (प्रभाव) का मैं क्या वर्णन करूँ ? मेरे लिए मृत् से उसका बचन करना संभव नहीं है (७) [इन अचरों से] जीवित को वह मार सकती और मृत को जिता सकती थी।

टिप्पणी—(१) अमित्र < अमृत। (२) गात < गान = सरीर। (५) बकति < बक्ति = उक्ति। (७) मृत् < मृत।

[१०९]

पुनि जो समुद्र^१ कूबर अजाना^२ । निम घट निन जाइ गियाना^३ ।
 गिनहि बिनहि बिठ^४ बिसमर जाई । बबहु समुद्रि^५ घट आइ समाई ।
 घरी चारि पर पहिनेउ^६ जीऊ । जीउ समुद्रि घट मएउ सजीऊ^७ ।
 पुनि जो घट जियहि^८ ठहराना । अवित बचन परे जत^९ काना ।
 परत सबन पोतम^{१०} रस बाता । सुनत मएउ सुख^{११} अस्टौ^{१२} गाता ।

बहु साग सो कामिनि अग्नित बचन रसार ।

अस्टौ गात सबन के सुन सा^१ राजकुमार ॥

पाठान्तर—भा में पना नहीं है।

(१) १ रा समुद्रहि। २ ए ग्याना। ३ ए जोष अजाना।

(२) १ रा जिनहि बिनहि बिठ बिठ ए निन निम जीब। २ ए सिन समुद्र।

(३) १ ए घट पलटा। २ ए पैसा जीऊ (पुल = पूजवर्ती चरण) ।

(४) १ ए बिठे। २ ए पराठी।

(५) १ ए अवित। २ ए सींग भी। ३ ए भाठी।

(७) १ ए जो।

अर्थ—(१) फिर वह अज्ञान (चेतनाहीन) कुमार यदि सत्यता (चेत में जाता) भी वा तो एक क्षण चेत में जाता और दूसरे क्षण उसका ज्ञान जाता रहता था। (२) सब-दाय उसका जीब बे-संज्ञा हो जाता था, और कभी [बहु जीब] समस्त (चेत) कर घट (शरीर) में आ समाता था। (३) चार घड़ी के बाद उसने जीब पहना (धारण किया) और जीब की [भाषा हुआ] समस्त कर कतका घट (शरीर) फिर सजीव हो गया। (४) फिर जब उसने जी में चेत [दृष्ट समय तक]

बना रहा [कुमारी के] जितने अमृत-बचन थे वे कान में पड़े। (५) प्रियतम की रसीली बातें जब कानों में पड़ीं उन्हें सुनते ही उसके पाव के आठों अंगों में सुल हुआ।

(६) (अब) वह कामिनी रसीले अमृत बचन कहने लगी (७) तब उन्हें वह राजकुमार पाव के आठों अंगों को कान के कप में [परिणत] कर सुनने लगा।

टिप्पणी—(१) अज्ञान < अजान। (४) जेत < जतित्र < यात्रन् = जितना। (६) रमा < रमात्।

[११०]

बहुरि बूँवरि^१ रम कथा उभासी । जनु कृमुनि ससि पम बिगासी^२ ।
बहसि महारस नगर अनूपा । बिभ्रम राय पिता जगभूपा ।
तहि घर धिय^३ मैं राजकुमारी । मधुमालति दुहुं जग उजिमारी ।
महीं पिता घर संतति बारी । राजगिरिह पुनि^४ राजदुलारी ।
औरि माति जति^५ कामिनि बही । सो न बूँवर चित ठकी रही ।

समुझि समुझि त बात चित सों हरउ गियान^६ ।

जमें स्नेह पानि महुं परिबै^७ महर्जहि^८ सोव^९ अपान ॥

पाठांतर—भा म पना नहीं है। ए म उपर्युक्त अर्द्धांगी १ वा चरण २ और अर्द्धांगी ४ वा चरण २ परस्पर स्वानामरित हैं।

(१) १ ए बहुरि। २ ए सिर सगी प्रपामि।

(३) १ ए बिभा।

(४) १ ए राजा घर में।

(५) १ ए और बात जग।

(६) १ ए चित की हरे ग्यान।

(७) १ ए मैं यह गद्य नहीं है। २ ए मैं की। ३ ए गौर जे।

अर्थ—(१) तत्कालतर [राज] कुमारी के [अपनी] रसपयी कथा उद्भासित (प्रकाशित) की, वानों बुझिनी अंगि के अंग में विकसित हुई हो। (२) उसने कहा, “अनुपम महारस नगर में ओ अपभ्रूष विभ्रम राय हैं वे मेरे पिता हैं। (३) उन्हीं के घर में मैं बच्चा और राजकुमारी हूँ मैं मधुमालती [नाम से] दोनों जगन् में प्रकाशित (प्रख्यात) हूँ। (४) मैं ही कामिनी पिता के घर में [एकमात्र] जगत् हूँ और इतलिय राजगृह में राजा की कुमारी हूँ। (५) और ओ वानें जब कामिनी के वही के एक श्री कुमार के चित में न रही।

(६) इन्हीं वानों को समझ-समझ कर उसके चित से ज्ञान हर उठा (७) [और उसकी हवा ऐसी हो गई] जैसे लवण पानी में बड़बड़ अपना आणवा (आणव) सृज्य ही में लो बँटना है।

टिप्पणी—(१) उमा < उमाय < उमायन् = उमायित करना। (३) धिय < धीमा < दुहि = मरना पुत्री। (४) बारी < बानिका। (५) अज्ञान < अज्ञान < आरयन्।

[१११]

पुनि जो धत धित^१ सबरि गियाना^२ । उठि बसउ^३ ५ साइ अपाना ।
 पम दान^४ दुहु लोयनि भरा^५ । भा^६ अघत चरनन तर पग^७ ।
 तव वर कामिनि अंगित नीरु । छिरकि कुंवर^८ मुख^९ परस ममीर^{१०} ।
 निरगि कुंवर मुख दया मयानी^{११} । गहि आंधर पोछमि^{१२} चनु^{१३} पानी ।
 दया भई^{१४} मन मोह जनावा । गहि चरनन^{१५} सा^{१६} सीस उधावा ।
 बहुरि कुंवर^{१७} उठि बसउ^{१८} धितहि समारसि^{१९} बेट ।
 अंगित वचन सोहागिनि पूछ^{२०} । लागि सु^{२१} हन ॥

पाठान्तर—(१) १ भा जेन भई ए चिन मो । २ ए नीरी प्याना । ३ ए बीटा रा
 बीडेउ ।

(२) १ भा पानि ए प्याना । २ भा दुहु लोयन मरेऊ, ए होइ सायेन मरेऊ ।
 ३ भा मै ए भी । ४ ए चरनन । ५ भा ए परेऊ ।

(३) १ भा में 'कुंवर' सम्भ नहीं है, ए छिरका कुंवर । २ भा चनु, ए के ।
 ३ भा समर ममीर ए मुख ममीर ।

(४) १ भा बहुरि कुंवर देखि धितहि मयानी रा बहुरि निरगि मुख दया मयानी
 ए बहुरि कुंवर धित माया जानी । २ ए पोछा । ३ भा मुख ।

(५) ए भी । २ भा चरननहि ए चरनन । ३ ए सी । ४ ए जनावा ।

(६) १ ए कुंवर । २ रा बीठेउ ए बीठी । ३ ए समारा ।

(७) १ रा पूछहि । २ भा लागि सो ए लायी ।

अर्थ—(१) फिर भी उसने जिस में जान का स्वरूप कर बेट बिवाह, बहु उठ बीटा बिदु आना
 (बेटना) जोकर । (२) उसके दोनों पैरों में प्रेम के बाण भर गए थे इसलिये बहु अचेत होकर
 [राजकुमारी के] चरणों के नीचे (चरणों पर) आ पड़ा । (३) तब उस खेद कामिनी ने कुमार
 के मुख पर अमृत-वच छिड़क कर लसीर का स्पर्श किया । (४) कुमार का मुख देखकर वह दया और
 भक्तता से भर गई और अपना अंकुश पकड़ कर उसने [कुमार के] चतुर्धों का पानी पाछा । (५)
 उसके मन में दया हुई और मोह (ममत्व) अतः हुआ [इसलिये] उसने [कुमार के] सिर को
 [अपने] चरणों से उठाया ।

(६) तत्पश्चात् कुमार उठ कर बैठ गया और उसने जिस में बेट समाप्त (७) [उसने
 बेट में दैव कर] मुहागिनी हेल (प्रेम) पूर्वक अमृत-वचनों से प्रार्थन करने लगे ।

टिप्पणी—(१) अपान < अप्याप < बाप्यम् । (२) मायन < मायम । (४) चनु < चनु <
 चय । (७) हन < हिन = प्रेम ।

[११२]

रम रम पूछ राज कुमारी । भ सखत बहु बचन^१ संभागा ।
 निरभी मण बह्नि जमि^२ यात्रा । वीन माउ^३ बाप तोर^४ गागा ।

- (४) १ ए जा दिन गिरा बास। २ ए बरसा।
 (५) १ भा तुम्ह ए जो। २ ए क। ३ भा भी ए ली।
 (६) १ रा पुष्प दिनम मो भा पूरब दिन मठ ए पूरब दिनगिह छी।
 २ ए जानौ। ३ ए तोहरी प्रीत क।
 (७) १ ए एह मरा (<सिरा फाखी सिपि)।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा, 'ऐ प्रेम-प्रिया, तुम में और मुझ में प्रीति बिधाता ने पूर्व ही [निर्मित] कर दी थी। (२) [जब] इस क्षण में मुझे और तुम्हें जीवन का साम हुआ तब मैंने जीवन देकर तुम्हारा कुछ मोल लिया। (३) मैं आज ही तुम्हारे कुछ से दुखारी नहीं हूँ, तुम्हारे कुछ से मुझे आदि से पहिचान है। (४) जित दिन बिधाता ने मेरा मग्न (शरीर का सूक्ष्म रूप) बनाया, उसी दिन मुझे तुम्हारा कुछ दिखाई पड़ा। (५) हे व्येध काजिनी तुम्हारी प्रीति के लक्ष से मेरी मिट्टी को सान कर मेरा शरीर [निर्मित] हुआ।

(६) पूर्व के दिनों से ही मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रीति के लक्ष में (७) मेरी मिट्टी को सान कर तब बिधाता ने यह शरीर बनाया।"

टिप्पणी—(१) (६) पुष्प < पुष्प < पूष। (३) आम < अम। (५) (७) माटी < मृत्तिका।

[११४]

मैं सम^१ तजि सकरेउ^२ दुख तारा। मोर जिउ तोर तोर जिउ^३ मोरा।
 प्राण आदि पट होत न आवा। बिधि तोर दुख मोहि सब^४ दरसावा।
 जो रे बिकल्पि^५ कहौ मैं^६ सोही। तोर बुल अधिब^७ दब^८ बिधि मोही।
 म एहि दुख करै^९ बलिहारी। सहस सुख एहि दुख पर बारी^{१०}।
 कोनि जीभि^{११} बक्तौ^{१२} दुख^{१३} बाठा। सुग के रूप सुग निधि के^{१४} दाता।
 एक निमिष दुख कह^{१५} नहि^{१६} पूज पाखि^{१७} जुग ब^{१८} सबा^{१९}।
 कोन कोन सुग बेरमब^{२०} तहि^{२१} दुख के^{२२} परमा^{२३} ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा ए मब। २ भा गखेउ ए गखा। ३ भा गुग।
 (२) १ भा तोहि। २ ए (पूरा बरस) बिधि मोहि ताहि भी बरस मगना
 (गुल० १ ५७)
 (३) १ रा बिलसि ए कलसि। २ भा ५ विष्णु। ३ रा रचना। ४ ए देर।
 (५) १ रा दुख केर ए दुख की बलि। २ भा बलिहारी। ३ भा बारी।
 (६) १ ए जीम। २ भा बरनौ। ३ ए तुष। ४ भा सुख निधि।
 (७) १ भा दुख के ए कोई। २ ए म। ३ ए पारी। ४ रा बर।
 (८) १ भा बरपठ ए बसमेठ। ७ ए एहि। १ भा कौ।

अर्थ—(१) मैंने सब कुछ छोड़कर तुम्हारा कुछ लक्षित किया और [तब से] मेरा जीवन तुम्हारा और तुम्हारा जीवन मेरा हो गया। (२) आदि (प्रथम) शरीर में जब प्राण नहीं आया था, तबो बिधाता ने मुझे तुम्हारा कुछ दिखाया। (३) यदि मैं यह बनाकर कह रहा होऊँ, तो बिधाता

तुम्हारा कुछ मुझे और भी अधिक है। (४) और मैं इस कुल पर बलिहार जाता हूँ सहज सुख इस कुल पर स्वीकार है। (५) किस जिह्वा से मैं कुल की बात कहूँ ? कुछ के [विषय] वर मुक्त-निधि के देने वाले होते हैं।

(६) एक पल के कुल की चारों पुरों (के मुक्त) का स्वाद नहीं पा सकता है। (७) [बता नहीं] जीवन-जीन से सुख उस कुल के प्रसार से मैं विलसूँगा।

टिप्पणी—(१) गंकर < सकल < स + कच्च् = मरलन करना जोड़ना। (२) सवाद < स्वाद।

[११५]

दुग्ध मानुस धनि^१ आदि गरमा । सह्य^२ कंवल^३ मह दुग्ध कर दासा ।
जेहि दिन सहि दुग्ध निस्टि^४ समाना । तहि दिन सैं जिउ^५ जिउ जाना ।
मोहि न आबु उपजेउ^६ दुग्ध तोरा । तोर दुग्ध आनि सभाती मोरा ।
अब सैं बहो^७ दुक्क नै बाविरि^८ । दुइ जग^९ दउं सुक्क नउछावरि^{१०} ।
म अपान^{११} द^{१२} तोर दुग्ध लिया^{१३} । मरि न अब सो अवित^{१४} पिया^{१५} ।

तोर दुक्क मधु मानति सुख दाएक^{१६} ससार ।

जहि जिय माहि^{१७} सोन दुग्ध उपजा धनि^{१८} सा जग^{१९} ओसार ॥

पाठान्तर—आ ए में उपर्युक्त टीपरी तथा बीबी अर्थात्सिवा परस्पर स्वार्थावहित हैं।

(१) १ ए कै। २ आ वय।

(२) १ आ दुग्ध निरिस्ट, रा तेहि दुग्ध ए दुग्ध बेह निस्टि। २ ए ता।
३ आ मैं जीउक जिउ ए ते जिउ जिउ कै।

(३) १ ए बरमा।

(४) १ ए बाह। २ आ मोहि दुग्ध बाह ए मोहि दुग्ध नी। ३ ए जुग।
४ आ नेउछाउ।

(५) १ ए मानन रा माना। २ ए तजि। ३ आ निवेऊ, ए मयऊ।
४ आ दुग्ध अजिन ए अजिन एम। ५ आ निरेऊ।

(६) १ ए मैं बहो 'जा' और है।

(७) १ ए मोह। २ रा मैं वह शब्द नहीं है ए उरवे। ३ ए मय्य।
४ आ जगन।

अर्थ—(१) मनुष्य के नामे उनको कुल में आदि (मृष्टि के कारण) मैं हो जान बनाया;
[मृष्टि बर्ता] बहुत मा जिग बयल से उत्पन्न हुए जा बयल में ही कुल का भी निवास था (उन्नी से कुल भी बर मा की अनि उत्पन्न हुआ)। (२) जिग दिन से जय (मानव) का कुल मृष्टि में लपाया (स्वात्ता हुआ) उन्नी दिन से जीव मैं करने को जीव करके (बहुत में निद्र) लपता।
(३) अने मात्र मुष्टारा कुल नहीं उत्पन्न हुआ मुष्टारा कुल नी बैरा आदि से ही लनी रहा है।
(४) अब मैं कुल की बाविर तोर उने हो रहा है और उन कुल पर दोना जगत्—इहोरीक तथा बरलोह—के गुत्ती को स्वीकार [के वर में] देना है। मैंने जगत्पर (अवशयन—अना वृष

अतिसत्त्व) देकर [तुमसे] तुम्हारा कुछ लिया है और मर कर (अपना जीवन देकर) सब वह अमृत (मिलन-मृत ?) पिया है।

(६) तुम्हारा कुछ ये मधुमालती संसार भी कुछ देने बाधा है, (७) और जिस भी में तुम्हारा कुछ उत्पन्न हुआ जगत् में उसका क्षय पश्य है।”

टिप्पणी—(२) सभाय < सम् + भाप् = व्याप्त होना। (४) नावरि < कम्बि = बाँस का टुकड़ा—जैसे पर रत्न कर बाधा होने के लिए बनाया हुआ बाँस का टुकड़ा जिसने दोनों छोरों पर होया जाने बाधा बोधा लटका दिया जाता है।

[११६]

सुनिर्त जाहि दिन^१ सिस्ति^२ उपाई^३। प्रीति^४ परवा विहर्^५ उड़ाई^६।
सीनिर्त^७ लोक दूडि कै^८ आवा। आपु जोग कहु ठाठ^९ न पावा।
तब फिरि मोहि घट^{१०} पसेउ आई^{११}। रह^{१२} सोभाइ न गएउ उड़ाई^{१३}।
सीनि भुवन सब पूछी^{१४} भावा। कहु तुह^{१५} कस मानुस घट^{१६} राता।
कहुसि दुखल मानुस कर आसा^{१७}। जहाँ दुखल सह मोर नेवासा^{१८}।

जहि ठाँ^{१९} बुल होइ^{२०} जग भीतर^{२१} प्रीति होइ बस^{२२} ताहि।

प्रीति बात^{२३} का जान बपुरा जहि सरीर दुग नाहि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मुना जहि कवि। २ भा सिस्ति। ३ रा प्रान। ४ रा बिण्ड ए बीन्ड।

(२) १ ए सीनी। २ ए मै। ३ ए टीब।

(३) १ भा ए हम बिड। २ ए रहा।

(४) १ ए पूछी। २ ए सी। ३ भा मौ।

(५) १ भा मानुस क मरामा ए मानुस कर बामू। २ भा तहाँ मोर बामा ए तहाँ मोर निबामू।

(६) १ भा मैं यह गयर नहीं है। २ ए हो। ३ रा कति तहं। ४ भा ह्राइ पुनि ए तिन्ही पुनि।

(७) १ भा बाग रा गाव।

अर्थ—“(१) जिस दिन मैंने (इस जीव में) मुना कि वृद्धि उत्पन्न हो गई है, मैंने प्रीति का पाराबत उड़ाया। (२) वह पाराबत तीनों लोकों को दूँड कर लौट आया किन्तु अपने लिए उपयुक्त स्थान उसने नहीं पाया। (३) तब वह फिर घट (अंत-करण) में आकर प्रविष्ट हो गया और लक्ष्य होकर [मेरे अंत-करण में ही] रह गया उड़कर (अप्यग्र) नहीं गया। (४) तीनों भुवनों में तब उससे यह बात पूछी ‘कह, क्यों तू अनप्य के घट (अंत-करण) पर अनुरक्त है? [प्रीति के पाराबत में] कह, ‘कुछ ही अनप्य का आधार है और वहाँ कुछ रहता है, वहाँ मेरा भी निवास रहता है।

(५) जिस स्थान पर जगत् में कुछ होता है प्रीति भी उसी स्थान पर होती है (७) वह बेचारा प्रीति की बात क्या जान सकता है, जिसके शरीर में कुछ नहीं होता है।”

टिप्पणी—(१) उपाय < उप् + पाप् = उत्पन्न करना। परवा < पाराबन। (३) पैम < पविस < प्रविष् = प्रवेश करना। (४) राग < रगन = अनुगमन। (७) बपुरा < बप्पुद = बेचारा।

[११७]

त मे^१ दुखी सदा संय^२ बासी । ओ सतत^३ एक देह नेवासी ।
 ओ मे^४ तुह^५ दुह^६ एक सरीरा^७ । दुह^८ माणी सानी ए^९ नीरा^{१०} ।
 एक बारी दुह^{११} बहु^{१२} पनारी । एक बिया^{१३} दुह घर^{१४} रजियारी ।
 एक जोत दुह^{१५} पर संभारा^{१६} । एक अग्नि^{१७} दुह ठाए भारा^{१८} ।
 ए^{१९} हम दुह के ओतारे । एक मदिरा^{२०} दुह किए दुवारे^{२१} ।
 एक जोति रूप पुनि एकै^{२२} एक परान एक^{२३} दह ।
 आपुहि आपु जो देह कोह पाह^{२४} सहि कर^{२५} कौन सवह^{२६} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैं तो। २ मा ए संव। ३ ए संतति।

(२) १ मा ओ हम तुम्ह दुह ए ओ हम तुम्ह ती। २ मा ए सरीर। ३ मा ए बुनी मोहि (माणी—ए) । ४ मा ए नीर।

(३) १ रा मा कर निग। २ मा बहीं ए मई। ३ मा ए दीप। ४ रा बट।

(४) १ मा दुहु। २ मा संभरेऊ, ए सभारेउ। ३ ए जव। ४ मा छंजद जरेऊ, ए ठा सीनारेउ।

(५) १ मा मदिर। २ ए बिया दुवारे।

(६) १ ए एक जोत रूप सब रा एक जोति रूप पुनि लई। २ मा दह।

(७) १ ए आपु आपन काह पाहै। २ मा ए एकर। ३ ए सनेह।

अर्थ—(१) तू और मैं दोनों सर्वत्र संग-संग रहने वाले के और सर्वत्र एक ही देह में निवास करते थे। (२) और मैं तथा तू दोनों एक सरीर [के] के दोनों [के सरीर] की निद्रियाँ एक ही जल से सानी गई थीं। (३) एक ही जल दोनों पनारियों में बहता [रहा] है एक ही दीपक दो घरों में जलाता करता [रहा] है। (४) हम एक ही जीव के जो दो शरीरों में संभरित हुए; एक ही अग्नि की जो दो स्थानों पर जलाई गई (५) हम एक ही के जो दो करके अवतरित किए गए; एक ही मदिर (मद्य) या जित के दो द्वार दिए गए।

(६) एक ही ज्योति की रूप भी एक ही वा एक ही प्राण वा और एक ही देह की (७) [मत्त] यदि [अव] अपने को कोई अपने को ही देना (संभरित करना) चाहे तो उत्पन्न (उत्पन्न करने में) कौन सा संदेह [होना चाहिए]?

टिप्पणी—(२) माटी < मृतिवा । (३) पनारी < प्रणारी । रिया < दीपम < दीपक ।

(४) तुभार < द्वार ।

[११८]

तैं जो मर्मन सहजि म सोरी । त रबि म जग^१ किरनि अमोरी ।
 मोहि आपुहि अनि^२ जान निगग^३ । म गरीर तुह^४ प्राण नियास ।
 माहि मोहि को गार बगगई^५ । एन जोति दुह^६ माउ^७ दगाई ।
 सम^८ गिया गगु गगेउ हरी । हम तुम्ह दुहु^९ परिष बय करी ।

अबहु मोहि न^१ चीन्हैसि बारी । यवरि दगु बित आदि चिन्हारी ।
अरुमा फो^२ पेम कर अहा^३ जाबहु जिय केर^४ ।
होत आपु मह परिष^५ सद मर भर जित^६ फेरि ॥

पाठान्तर—या में अंतिम लोग बर्दाश्तियाँ हैं कमश उपर्युक्त ४ ५, ३।

- (१) १ ए यह सध नहीं है।
- (२) १ ए आपुन बी (<बनि फारसी लिपि)। २ ए निनाप। ३ ए ली।
- (३) १ रा पछावै मारि। २ भा बुझू। ३ ए भाव।
- (४) १ भा ए समुझि। २ ए बैनी।
- (५) १ ए अबहु न मोहि ली।
- (६) १ ए आहा। २ ए जो बुझी बट बेरि।
- (७) १ ए हुनी भा आपु मो परवै। २ भा सद मर बरिए, ए मर नीर बर,
रा मर मर बर भिड़।

अर्थ—(१) तू यदि समुझ है तो मैं तेरी लहर हूँ; तू यदि सुख है तो मैं तसार में [उत्तरी] प्रकाश-किरण हूँ। (२) मुझे और अपने को तू [एक छन्दे से] अलग [किया हुआ] न समझ; मैं धरीर हूँ तो तू उत्तरी मित्र प्राप्त है। (३) मुझे और तुझे कौन अलग कर सकता है? एक ही ज्योति को भावों (धर्मों) में दिखाई पड़ रही है। (४) मैंने जान-बहु से सब कुछ निरल कर देता; मेरा और तेरा—दोनों का पारस्परिक परिचय [न जाने] कब का है। (५) ऐ बालिका तूने आज भी मुझे नहीं पहचाना? स्मरण करके देख तेरी और मेरी पहचान आदि की है।

(६) क्योंकि दोनों बीबों का प्रेम का कला [वहने से ही] उत्पन्न हुआ था, (७) [इसलिए] आपस में परिचय होते ही मनुष्य [अब] स्वयं अपने बीब को चारण कर रहा है।

टिप्पणी—(१) जो<बड<यदि। (२) निराप<विस्वाक्तिम<निर्वासिप=निश्चारित बाहर या अलग किया हुआ। (५) बारी<बालिका। (७) छई<स्वयम्।

[११९]

अब लहि बिनु जिय^१ जीवन सारा^२ । आनु^३ दनि तोहि जीउ सनाप^४ ।
दखन गिन^५ पहिचाना^६ तोही । इह^७ रूप जइ छान्ग^८ मोही ।
इह रूप सब^९ अहउ छपाना^{१०} । इह रूप अब^{११} मिस्टि^{१२} ममाना^{१३} ।
इह रूप सक्ती औ सीऊ । इह रूप त्रिभुवन कर^{१४} जोऊ ।
इह रूप परगट बहु भसा । इह रूप जग राक^{१५} नरमा ।

इह रूप त्रिभुवन जग बरम^{१६} महि पयाल आगाम ।

गोई रूप परगट म दया तुव मायें परगाम^{१७} ॥

पाठान्तर—(१) रा अब बिनु जिय ए अबही बिनु जीव। २ भा ए नारेड। ३ ए आनु न। ४ भा जीउ मंनारेड ए जीवन हारेड।

(२) १ भा देगन ही ए देगन ही मैं। २ भा पहिचानेड। ३ ए एहि।
४ भा त्रिन छन्देड ए छन्देड न।

(३) १ ए ली। २ ए सब। ३ भा मिस्टि।

(४) १ ए बी।

(५) १ ए राक।

(६) १ भा तिरभुवन बेराही ए त्रिभुवन की बेरनी। २ भा पातास अकास ए पनास अकास।

(७) १ भा साइ रूप परगट ताहि माही बेलेउ म्यान हियास ए इहै सोमा प्रगट ताहि माये बेरी खान हवान।

अर्थ—(१) अब तक मैं अपने जीवन को बिना जीव के समझता रहा आज ही तुझे देखकर अपने जीव को समझता हूँ। (२) आज मात्र मैं ही देखकर मैंने तुझे पहचान लिया [कि] यही रूप था जिसने मुझ को छप से छप में कर लिया था। (३) यही रूप सब छिपा (प्रच्छन्न) था और अब [दिखाता हूँ] यही रूप सृष्टि में सजा रहा (स्वाप्त हो रहा) है। (४) यही रूप शक्ति है यही रूप सिद्ध है और यही रूप त्रिभुवन का जीव (उसकी चेतना) है। (५) यही रूप [सृष्टि में उसके] बहुतेरे रूपों में प्रकट हुआ है; यही रूप जगत् में रंक है और गरीब भी है।

(६) यही रूप त्रिभुवन और जगत् में बिलस रहा है और यही रूप पृथ्वी पाताल और आकाश [में बिलस रहा है]। (७) यही रूप में मैंने प्रत्यक्ष देख लिया तुम्हारे मस्तक पर प्रकाशित है।”

टिप्पणी—(५) रंक < रंज = गरीब दीन। (७) पनास < पातास।

[१२०]

इहै रूप परगट बहु^१ रणा। इहै रूप बहु^२ भाउ^३ अनूपा।
 इहै रूप सम^४ ननन्ह जानी। इहै रूप सम^५ मायर मोती।
 इहै रूप सम^६ फूलन्ह^७ बामा। इहै रूप रम भवत बरसा^८।
 इहै रूप समिहर औ मूरा। इहै रूप जग पूरि अपूरा।
 इहै रूप अत आनि निगना। इहै रूप परिधर मो धियाना^९।

इहै रूप जल घर^{१०} औ महिअर भाउ अनग बगाउ।

आपु मवाइ^{११} जो रबोइ^{१२} दग मो गिछ^{१३} दग पाउ ॥

वाग्वार—रा मे अर्जुनिया वा क्रम है उपर्युक्त १ १ ४ ३ ५।

(१) १ ए सब। २ भा जेहि ए जो। ३ ए भाव।

(२) १ भा ए गव। २ भा ए सब।

(३) १ भा ए गव। २ रा कर्मनि। ३ ए सब चीज बेवामा।

(४) १ ए की बिपदा जब बाहु न जाना रा इहै रूप सब दिगट गगना
 (गुप्त पूर्णबी छत अर्जुनी ३)।

(५) १ भा बम।

(६) १ ए अनाम। ७ भा ए म 'रिवाइ' गरी है। ३ ए गव।

अर्थ—(१) यही रूप बहुत मे कर्मों में प्रकट हुआ है यही रूप बहुत मे अनुरक्त भावों में व्यक्त हुआ है। (२) यही रूप समान कर्मों में व्योभि [बनकर समझा हुआ] है यही रूप समान सागरों में लोनी [बनकर उगा हुआ] है। (३) (३) यही रूप कर्मों में बाल बनकर व्याप्त है और

यही रूप जयकों के बिलास का रस है। (४) यही रूप ससि और सूर्य है और यही रूप जयत् में पूरित होकर उसको आपूर्ण कर रहा है। (५) यही रूप मृष्टि के आदि तथा अंत में रहेगा और निदान में भी रहेगा—उसके न होने पर भी रहेगा। और इसी रूप को हृदय में रखकर जो ध्यान किया जाता है, वह ध्यान है।

(१) यही रूप जल स्वयं और महीतल में अनेक भाव (रूप) बिलाता है (७) जो कोई अपने जो रस कर इसको देखता है, वही इसको किसी भाषा में देख सकता है।

टिप्पणी—(२) सागर < नागर। (३) बरग < बिलास। (४) ससिहर < सगपर = जन्मा। (५) सर < स्वक। महिधर < महीतल।

[१२१]

सुनत सुनत रस भाव कै। बाता। कामिनि जीउ^३ सहज म^३ मांता^३।
सुनतहि^३ पम बात जिय^३ भाई। पूरव प्रीति^३ समुझि चित^३ आई।
जस^३ सुवास सेउ^३ मिल समीरु। दुइ मिलि कै^३ भ^३ एक सरीरु।
एत भाइ बुहु नह^३ समाना। भा दूनहु कर^३ एक पराना।
सहजहि^३ दुनो^३ जीव^३ मिलि गए। रहा^३ न अतर एक^३ मए।
पुनिजो पम पिरीत पुझ^३ कै विवि^३ जिय आइ^३ समानि।
उठी^३ ऊमि उर सांस बुहुन कै^३ समुझि आदि पहिचानि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए भाव क। २ ए जीव। ३ ए है रावा।

(२) १ ए सुनत। २ ए जिय। ३ भा बरव। ४ ए जो।

(३) १ रा जैस। २ ए काम म। ३ ए म यह मयद नहीं है। ४ ए मी।

(४) १ भा ए हेतु भाइ बुहु जीव। २ भा मे दुनहु के ए मी दुनहु कर।

(५) १ ए सहजे दुनी। २ भा जीव। ३ भा खेव ए खे। ४ ए एक जो।

(६) १ भा पूरव रा मे यह पाव्य नहीं है ए पूरव। २ रा बुहु। ३ ए पम।

(७) १ भा उठे ए उठि। २ भा ऊमि उर सांस बुहुन ए ऊमी उर सांस जो रा ऊमि उठांस बुहुन के।

सर्व—(१) रस और भाव की बात सुनते-सुनते कामिनी (मधुमासगी) का जीव सहज (स्वतः उत्पन्न) भव में मल हो गया। (२) प्रेम की बात सुनते ही जो जो भा गई और जब उसने समझा, पूर्वं [जन्मों] की प्रीति उसके चित्त में आ गई। (३) जैसे सुवास से समीर मिल [कर जलित हो] जाता है उसी प्रकार दोनों मिलकर एक शरीर हो गए। (४) और दोनों में इतना [मिलिक] रहेह आकर लगा गया कि दोनों के प्राय भी एक ही हो गए। (५) सहज ही में (आपसे आप) दोनों के जीव मिल गए और दोनों में कोई अंतर न रहा दोनों एक हो गए।

(६) फिर जो पूर्वं की प्रेम प्रीति दोनों के जी में आकर ललाई (७) तो आदिम परिचय का स्मरण कर दोनों के हृदय में सांत ऊम कर (ऊपर आकर) उलपित हुई।

टिप्पणी—(४) मवाव < समू + भाव = व्याप्त होना। एव < एवज < इयन् = इयता। (५) पम < पमव < पर्व। (७) ऊम < ऊमय = ऊँचा करता, ऊँचा होता।

[१२२]

बिहसि कहसि पुनि रसहि जो आई । तुम्ह हों रस बातन्ह मोरआई ।
 चञ्चित रही निछ कहि नहि आवा । सुनि रस बचन रसहि रस पावा ।
 निहचै मोहि तोहि अंतर माहीं । एक पिछ प रस तुह परिछाहीं ।
 मो जित तुम्ह घट भीतर ठाढ़ । ओ मोहि सों तोहि परगट माढ़ ।
 रूप मोर घट दरपन छोरा । मैं सुख तुह जगत अजोरा ।
 जसैं जोति रतन नग माहीं । मैं तोहि मोहि तुह सार ।
 रतन जोति एस मोहि तोहि को बग राख पार ॥

पाठांतर—(१) १ ए बिहसि मारि नह रस भेराई । २ ए तुम्ह उम्ह ।

(२) १ आ चञ्चित रही किछ कहै न ए चञ्चित रही कछ कहै न । २ मा-
 बिनु । ३ ए चञ्चित ए रनी ।

(३) १ ए निहचै । २ ए एक पिछ परी रा एन छोरी छो ।

(४) १ रा मो जित आ मोहि जित तुम्ह ए मार जीव तुम । २ ए और
 मोहि ताहि सा ए ओ मो सों तुम ।

(५) १ ए रूप घट मो । २ ए मैं जो मूर ठी । ३ ए इंचोप ।

(६) १ ए जैसी मोनी रतनपिदि माहे । २ ए ते मोहि । ३ मा मोहि तुम
 (?) ए मो ठी ।

(७) १ मा रतन जोति आयुज मह मिमि मण्ड । २ रतन जोति जो संग रहे ।

सर्व—(१) फिर जब वह (मधुमालती) रस [के प्रभाव] में आ गई उसने हँस कर कहा
 'तुमने मुझे रस की बातों से बावला कर दिया ।' (२) मैं चकरा रही और मुझसे कुछ कहते नहीं
 बना; [तुम्हारे] रस-बचनों को सुनकर मैंने रस (प्रेम) का रस (आनंद) पाया । (३)
 निश्चय ही मुझ में और तुम में कोई अंतर नहीं है, हम दोनों एक ही पिछ (शरीर) हैं, केवल [उत्तरी]
 प्रतिष्ठापाई हो हैं । (४) मेरे जीव का स्थान तुम्हारे शरीर में है और मुझ से तुम्हारा नाम
 (अस्तित्व ?) प्रकट है । (५) रूप मेरा है और [उत्तरी तन्मय] सर्वत्र तुम्हारा शरीर है; मैं सर्व हूँ,
 तो तुम जगत् के प्रकाश हो ।

(६) जिस प्रकार रत्न और नग में ज्योति होती है वैसे तुम्हारा, और तुम मेरे सार हो; (७)
 [अन्तः] रत्न और ज्योति ऐसे मूल-सुमनों कीज अलग करने में समर्थ हो सकता है ?

टिप्पणी—(१) निहचै < निश्चय । परिछाही < प्रतिष्ठाया ।

[१२३]

अब गुन बंजर बाग तुम मारी । पम सा जित मीन्ड मजारी ।
 प्रीति तुम्हारे माहि त्रिय छाई । प्रिय मा पम मो जा म छाई ।
 निहचै मोहि रम बाग बीरी । हण्ड जाउ गिर बाहि ठगोरी ।
 एन जाउ पम अउ हमार । मोऊ तुम्ह हरि बीन् निगम ।
 जस छोरे जाउ निगम मा मागा । माग जोउ योगुन ताहि रागा ।

मति जानहु सतिभाउ पर^१ पुरुषहि अधिक मुभाउ ।

भोगुन करि करि जानियहि^१ बाला बर सति^१ भाउ ॥

वाक्यान्तर—७ में उनपुन बर्जाभिय ३ तथा ४ परस्पर स्थापनाकरि हैं।

(१) १ ए हैं। २ ए. शिव। ३ भा किएहु (?)। ४ रा भरोते।

(२) १ ए ताहरे मोरे। २ भा भिगमय निरुक्त न जाइ, ए. पम भिगमय ना रे।

(३) १ भा किएहु।

(४) १ ए जीव घट भाहि। २ भा ए पिमार। ३ ए जो गृह ठी। ४

रा ए लीन्ह (<लीन्ह डारखी लिपि) भा. किएउ। ५ भा ए निनाउ।

(५) १ भा बस रे जीठ ए जस शिव गृह। २ ए प्रीतन। ३ ए गृह।

(६) १ ए मय भाव प्रम।

(७) १ रा कै कै जानहु ए. कै चित बाधा। २ ए बाधा नहिं सत।

अर्थ—“(१) अब हे कुमार, तुम मेरी बात सुनो प्रेम के लिए (के कारण) तुमने मेरा बीच अपनी धंजली में कर लिया (धोने लिया)। (२) तुम्हारी प्रीति भी मेरे मन में व्याप्त हो गई, तो मृगमय (कस्तूरी) की मति का वह ग्रंथ अब छिपाया नहीं जा रहा है। (३) तुमने मुझे उस (प्रेम) की बातों से बाधती कर दिया और मेरे स्तिर पर ठपीटी (बैठक) डालकर मेरा भी हार लिया। (४) मेरे घट (शरीर) में मेरा एक ही बीच का और उसको भी हार कर तुमने [मुझसे] प्रलम्ब कर दिया। (५) बैसा (जितना) तुम्हारा भी [मेरे] प्रेम-अब मैं मत्त है उससे भी बीमुना मेरा बीच तुम पर अनुपगत है।

(६) यह न समझो कि सत्य भाव पर पुरुष ही को अधिक स्वभाव (स्वाभाविक भाव) होता है, (७) बाधा (गारी) के सत्य भाव को [पुरुष की अपेक्षा] बीमुना करके जानना चाहिए।”

टिप्पणी—(४) निराउ< निष्कासिज< निर्वाकित=निष्कामित बाहर दिया हुआ। (५) विरम< प्रम। (६) (७) सति< सत्य।

[१२४]

मुनन कुवर^१ रम भाउ ब^१ बाता । जागठ मदन बियापउ^१ गात्रा ।

मदन कोन्ह^१ सब^१ क्या^१ बिगामा । सहकि आइ^१ जग भोग बलामा ।

काम बियापउ^१ कोपउ^१ गात्रा । रतिपति दरम सुनउ^१ रम बाता ।

रान बरम^१ मिमम भे^१ मना । दुहु निमि^१ रधी काम ब^१ मना ।

संवर निजु^१ जासो^१ जग हारा । तायो^१ को जग जीत^१ पारा ।

नो ओवन नो मनमय भी नो रूप^१ अयम ।

औ मय^१ पम परानी^१ बहहु रह किमि^१ छम ॥

वाक्यान्तर—(१) १ ए. मुनन। २ भा भाउ ब ए भावब। ३ ए जागा मदन बियापा।

(२) १ ए कुपुम। २ ए में यह गद्य नहीं है। ३ रा क्या ए प्यान। ४

भा जेहि कै वै ए बाके येह।

(३) १ भा. ए बैस्य। २ ए म्याउ। ३ ए उर मुने।

(४) १ ए मीन। २ ए भा। ३ ए दुइ दिन। ४ ए की।

(५) १ ए बीन। २ भा जिहू तो ए जाहि से। ३ भा ठेहि सा। ४ भा जीरी।

(६) १ ए रिनु।

(७) १ ए सग। २ भा पियारी। ३ ए बहू केउ रहै।

अर्थ—(१) कुमार ने मधुमासती की रस (प्रेम) की बातें कंते ही सुनीं, मदन जायकर उसके पास में ध्याप गया। (२) मदन ने तब [उसकी] काया में बिकास किया, और बयत् का मीय-बिलास पस्तबित हो आया। (३) काम के व्याप्त होते ही [उसका] गाय काय जठा और [मधुमासती की] रस (प्रेम) की बातें सुनते ही उसे रति-मति (काम) का वर्णन हुआ। (४) उसके मेल रसत बर्ष के और निमज्ज हो गए, और दोनों बिशाओं में काम की सेना की रचना हो गई। (५) जिससे इस काल में सकर ही हार गए, उससे संसार में कौन भीत सकता है?

(६) नवोचन का नव (नवोद्भूत) अमम्य था, अमम्य नव रूप था, (७) और संन में प्रेम-भाव था; तब कही किस प्रकार बर्ष रह सकता?

टिप्पणी—(२) सहक < सबक [रे] = बहुरित होना पस्तबित होना। (४) राठ < रथन < रथन। (६) अमम < अमम्य।

[१२५]

पियर गाल^१ मनमष परगासा^२। बुन धुन उर^३ मुचत घट^४ सांसा।
बाम बान बया न समारेसि^५। बर बामिनि उर हाय पसारसि^६।
तब तजि आपनि मज^७ सिगारी। मसउ^८ जाइ सज^९ बर मारी^{१०}।
बर बामिनि तब^{११} हाय अडाई^{१२}। उठि ब मज ब बर ब^{१३} आई।
बहुमि कुंवर अवरम बा^{१४} बीज। मंता पितहि अपकीरति^{१५} दीज।

एय निम मुग के बाग्न^{१६} सरयम बीन^{१७} मसाउ।

तिरिया^{१८} थोर^{१९} अवरम^{२०} जग अपारीरति पाउ ॥

वादाकर—(१) १ भा बीराजन (< पूरि रथन? वाग्नी निनि) २ बीर राग। २ ए बिगामा। ३ ए बीउ। ४ रा मुक बिनु ५ म 'म' मान है। ६ भा स्वासा।

(३) १ भा नयारी। २ भा नयारी।

(४) १ रा अपने मज २ आपन मज। ३ रा बीमहु ४ बीमी। ५ ए जाइ मज। ६ रा बारी।

(५) १ ए जे। २ ए अडाई। ३ भा बी।

(६) १ ए तब बयन। २ रा ए मान। ३ भा बामिनी न ए बामन न।

(७) १ भा एय निमिन् मुग बाग्न आगु २ नि एय मुग के बाग्न। ३ ए जनि आगु।

(८) १ ए रिडाई। २ भा बारी। ३ ए अवरम।

अब—(१) [हुमार का] पाप पीला पड़ गया और (जब) काम में [उत्तमें] प्रकाश किया उसका हृदय धुल-धुल कर रहा था, और उसका घट (शरीर) निःश्वास छोड़ रहा था। (२) काम-बाध के वेध को वह न सँभाल सका और थोछ कामिनी के उर (उरोमों) की ओर उसने हाथ बढ़ाया। (३) तब अपनी शृंगारमयी शय्या छोड़कर वह थोछ नारी की शय्या पर आ बैठा। (४) थोछ कामिनी ने तब हाथ को आड़े लगाया और वह उठकर हुमार की शय्या पर आ गई। (५) और उसने कहा “हे हुमार, यह अकर्म क्या (क्यों) करते हो [और इससे] अपने माता-पिता को अपकीर्ति क्यों देते हो ?

(६) तब घर गुल के लिए अपना सर्वस्व बौन नष्ट करे ? (७) स्त्री बोड़े-ने ही अपकर्मों के जग में अपकीर्ति प्राप्त करती है।”

टिप्पणी—(१) पियर < पीमळ < पीन = पीसा। मु < मुब् = छोड़ना।

[१२६]

तिरिया कर चाह^१ औ^२ पापु । बिरबहि^३ भरि पुनि नाम^४ आपू ।
पाप कर घर^१ तिरिया जाती । राख औ कुल हाइ मपाती^२ ।
नानर^३ तिरिया^४ राखि को पारा । कुल प^३ अकरम बरबन हारा^४ ।
निमित्त लागि पापी का हाई^१ । कै क पाप मिरतर मोई^२ ।
औ मन^३ जरम^४ जो बिया^३ करावा । अकरम क का आपु^४ नमावा ।
दमहु दिमा करि^३ निरमल घर^४ मुक्क उबियाग ।
पठि पाप क ओबरी^३ बरबन होइ को^४ बार ॥

पाठान्तर—भा ए मे हम छंड की तथा अगले छंड की चौबी बर्दाबिया परस्पर स्वातांगित हैं।

- (१) १ भा ए सेह। २ भा औ। ३ भा म यह गण्य नहीं है ए बह्या रा बिरबहि कै। ४ ए पहुँ रे नमावे।
- (२) १ ए पाप क घर जो। २ भा संभाली।
- (३) १ ए नानरि। २ भा तिरियहि। ३ भा बिम कुल। ४ ए बग्यनिहारा।
- (४) १ भा ए निमित्त कामि को (वे—ए) जाहि मोमा। २ भा जीवन नरक माहू हम बाया ए औ पर नरक जो अव।
- (५) १ ए ऐम। २ भा ए करम। ३ ए जे कीहु। ४ भा कै क मन ए कै को घरम।
- (६) १ ए कुल। २ भा ए घरम।
- (७) १ ए पाप की बाबरी। २ ए मई हाज मुह।

अब—(१) स्त्री यदि पाप करना चाहती है तो वह धर्म का पाप करके अपने को नष्ट करती है। (२) स्त्री जाति पाप का घर होती है; यदि उसके साथ गुन हो तो वही उसे रक्ष (पाप से रोक) सकता है। (३) नहीं तो स्त्री को बौन रक्ष (पाप से रोक) सकता है? गुन ही उसे अपराधों से बचा करके बान्ना होता है। (४) एक वन के लिए काफी वन (क्यों) हुआ जावे और पाप कर-कर क (अपने को) निरंतर क्यों छोया (नष्ट किया) जावे? (५) और [किर]

समस्त जन्म (या जन्मों) का भी किया कराया है; उसको आप ही अकर्म करके बौन न करने ?

- (६) निर्मल (कर्म) करके बली विद्याओं में [स्त्री को] अपना मुख उगमल रखना चाहिए।
(७) पाप की कोठरी में प्रविष्ट होकर बरबस ही बौन कासा होवे (अपने को कासा करे) ?

टिप्पणी—(४) निमिष < निमिष = नेत्र-संकोच अधि-भीतन। (५) धरम < जन्म
(७) बोबरी < उन्मरिष < अपवरिका = कोठरी।

[१२७]

मुनी^१ बर एक बचन^२ हमारा । धरम पब दुहु जग उजियारा^३ ।
जाक हिये^४ धरम गा जागी । सो बन्म पर^५ पाप क^६ आगी ।
कुल ओ धरम दुबो रगवारी । मत्ता पितहि द जाइ^७ न गारी ।
निमिष लागि जो आपुहि मांसा^८ । ता कहू नरक माहि भा बासा^९ ।
पाप पब चडि जइ^{१०} मत रागा । सरग अमिअ फल तइ^{११} प चागा ।
जग जीवन जग^{१२} परिहरहि^{१३} जिन्ह^{१४} सव ऊपर पाउ^{१५} ।
छारवम तजहि रास नहि छाड़हि^{१६} सुनहु कु बर सतिमाठ ॥

पाठान्तर—या मे छइ १२७ तथा १२८ परम्पर स्थानांतरित हैं।

या ए मे इम छइ की तथा पिछमे छइ की बीबी अर्द्धातिथि परम्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ भा मुनहु ए मुनसि। २ ए ठी बात। ३ ए जो हैब मैबारा।

(२) १ भा जीब ए जीब। २ भा बन्म जर ए गब पर। ३ भा बर ए बी।

(३) १ ए माता पिताहि ई आप ए मांग रिता ई जान न।

(४) १ भा ए निमिष लागि पागी वा (के—ए) होई। २ भा ए क (वरि—ए) ई पाप धरम वा गोई।

(५) १ ए जो। २ ए मुरल अवीरल ठै।

(६) १ भा जिड। २ ए परिहर। ३ ए जेहि। ४ ए पाउ।

(७) १ ए नरबम तजि वन रागी।

अर्थ—(१) [उत्तरे कहा] 'हे दुष्टार, मेरी एक बाल मुनो; बर्मे का नामे दोनो जगन्—
इहलोक तथा बरलोक—में उगमल [होना] है। (२) जिसके हृदय में धर्म [का भाव] आप गया,
वह आप की अग्नि में बँसे बड़ लपटा है। (३) कुल और धर्म दोनो [मनुष्य के शीम को] रसा
में तारर रहने हैं; [अन] जाता-रिगा को पानी नहीं देने बलनी है। (४) एक पल के [गुन
के] लिए भी बचने को मर्य करला है उसकी गर्भ में दिवान निम पुका [ऐसा लयलता चाहिए]।
(५) बाल के नामे बर आरु हो बर भी को लम्ब की रसा करला है रबर्मे का मनुष्य बन्म बही बलता
है।

(६) जिसने लप बर लीम होना है के जगन् के जीवन और जगन् को छोड़ देने हैं; (७) के लर्वा
छोड़ देने है जगन् लप को नहीं छोड़ने है हे दुष्टार, यह लप भाव से मुनो।

टिप्पणी—(४) निमिष < निमिष = नेत्र-संकोच अधि-भीतन। (५) धरम < जन्म।

[१२८]

जो^१ बिधि तोहि इहाँ^२ छ आवा । ओ मोहि तोहि भा विस्ति मेरावा^३ ।
सोई^४ बिधि मोहि तोहि जम^५ खेइहि^६ । परिहरि पाप धरम निधि देखिहि^७ ।
अकरम क का धरम नसाई^८ । गए धरम पुनि जित^९ पछताई^{१०} ।
धरम जाई^{११} मुल^{१२} लाग जारी^{१३} । कटुब सख कल^{१४} आव गारी^{१५} ।
हम तुम्ह^{१६} साथ^{१७} बचा वह कीज । रह^{१८} बह हरि^{१९} अतर दीज ।

प्रीति सपत दिव बाचा मोहि रे^{२०} बहु तुम्ह लेहु ।

जम जम^{२१} निरबाहिहि^{२२} बिधि^{२३} मोहि तोहि^{२४} सनेहु ॥

पाठान्तर—भा मे छव १२७ तथा १२८ परस्पर स्वानांतरित हैं ।

भा में उपर्युक्त अर्द्धांश १ ४ ५ का अर्थ ४ ५, ३ ।

(१) १ ए ओ । २ भा इहाँ । ३ भा दुई आनि मेरावा ए भी विस्ति मेरावा ।

(२) १ ए ओ । २ ए ओ । ३ भा कई, रा ए सोइहि । ४ भा स्हेई ।

(३) १ ए ओ धरम नसाई । २ भा कै अकरम । ३ ए ओ जीव । ४ ए पछताई ।

(४) १ ए जाय । २ भा मुह । ३ ए लाई जारी । ४ ए सोम कटुब कहें ।

(५) १ ए तोह हम । २ भा ए जानु । ३ ए ओ बाचा । ४ ए इन्द्र । ५ भा ब्रह्म सिव ।

(६) १ भा मे यह छन्द नहीं है ।

(७) १ भा ए जम जम । २ रा निरबाही ए निरबाही । ३ रा मपु ए ती । ४ ए देख जम ।

अर्थ—“(१) यदि [यहाँ तक हुआ कि] बिबाता तुम्हें यहाँ से आया और मेरा और तुम्हारा वृष्टि-मिलन हुआ, (२) तो वही बिबाता मेरे और तुम्हारे जन्म (जीवन) को भी खेवेगा (पार लगावेगा) और पाप छोड़ (छुड़ा) कर धर्म की निधि प्रदान करेगा । (३) अथर्व करके क्या (क्यों) धर्म अष्ट किया जाये ? धर्म के जाने पर फिर जीव पछताता ही रहेगा । (४) यदि धर्म जाता है तो बुल पर कालिष लगता है, कटु ब को लगता और कुल को गाली होती (मिलती) है । (५) हम और तुम लम्बे हों (रहें) वह (ऐसी) बाचा हम दोनों को करने चाहिए, और वह बहूमा और बिन्धु को [इस बचन-बान में] अर्घ्यस्व (साग्री) करना चाहिए ।

(६) प्रीति [के निर्वाह] के लिए दाप्य और बुद्ध बाचा (बचन) तुम मुझे दो और मुझे लो; (७) तब बिबाता मेरा और तुम्हारा स्नेह जन्म-जन्मांतर तक निभाएगा ।”

टिप्पणी—(१) मेराव < मेराव < मेरा । (२) (७) जम < जम = जीवन । (४) जारी < जारीम < जारीम = स्थायता वृत्ताना दागीपन । (५) गारी < गारी = पानी अपचय । (६) (६) बचा बाचा < बच < बचम् = बचन । (७) रायन < रायन ।

राज बुरि^१ मुनु यवन हमार^२ । सपत बचा म^३ तुम्ह^४ सों मार^५ ।
 तोहि बिनु मोहि^६ जग जीवन नाही^७ । तुम्ह^८ सरीर मै^९ तुम्ह परिछाही^{१०} ।
 तुम्ह^{११} सो प्राण^{१२} मै^{१३} क्या तुम्हारी^{१४} । तुम्ह^{१५} ससि मै^{१६} सा तारि^{१७} उजियारी^{१८} ।
 प्राण क्या बह^{१९} जैठ^{२०} प्रतिपारै^{२१} । ससि^{२२} सतत^{२३} उजियारी^{२४} सार^{२५} ।
 मै^{२६} आपुन तहि^{२७} नि^{२८} पहिरा^{२९} । जहि^{३०} दिन तार वेम जिय^{३१} धरा^{३२} ।

तुह जो^{३३} मम^{३४} म लहरि तुम्हारी^{३५} म जो^{३६} बिरिय^{३७} तुह^{३८} मूल^{३९} ।
 तोहि माहि मपत बचा^{४०} बहु^{४१} बरी म सुवास तुह^{४२} फल^{४३} ॥

- पाठांतर—(१) १ ए राजकुमार (<कुंवरि फारसी लिपि)। २ ए बात हमारी
 बाधा माहि। ३ भा ए तोहि। ४ भा गनि हारी ॥ किम्हारी।
 (२) १ ए ताहि बिना। २ ए तुह रा तुम। ३ ए हम। ४ भा तोरि प
 छाही ए ताहरी छाही।
 (३) १ ए तुम सो प्राण ए तुह प्राण भा तुह वचन। २ ए हम का
 ताहारी। ३ भा तुह रा तुम ए तुह। ४ भा तोरी ए बिरिन।
 (४) १ ए नाम क्या के। २ रा जो (<जैठ फारसी लिपि) भा जिय
 जमु। ३ ए मनी। ४ ए नवनि। ५ ए उजियार।
 (५) १ ए मै अपुन तेहि ए मै जानन। २ ए सबै। ३ भा जहि
 भा। ४ भा निन ए निन। ५ ए परा।
 (६) १ रा तुम्ह ए तै। २ ए तोहारी। ३ भा तुं जो ए तै रा मै मो
 ४ भा ए मै।
 (७) १ ए बाधा। २ ए म महु पहर नहीं है। ३ भा तुं जो बाध मै क
 ए तै सुवास तै मम (तुम पूर्ववर्ती करण)।

अर्थ—(१) [प्रसार ने कहा] “हे राजकुमारी मेरे बचन सुनी; मैंने शपथ और बचन तुमसे
 कर दिये (हार दिए)। (२) तुम्हारे बिना जगत् में मेरा जीवन नहीं है तुम सारी हो तो मैं
 तुम्हारी प्रतिष्ठाया हूँ। (३) तुम प्राण हो तो मैं तुम्हारी काया हूँ; तुम गति हो तो मैं
 तुम्हारी लीलाया हूँ। (४) प्राण जिस प्रकार काया का पालन-पोषण करता है और शक्ति [जिस
 प्रकार] सदैव उद्विग्नता (प्रकाश) करता है [उसी प्रकार तुम भी मेरे जीवन की सार-संभाल
 करो]। (५) मैंने तो आत्मत्व (अपना पुनर्क अस्तित्व) उसी दिन छोड़ दिया जिस दिन तुम्हारे
 प्रेम की मैं धारण किया।

(६) तुम यदि लज्ज हो तो मैं तुम्हारी लज्ज हूँ मैं यदि बूझ हूँ तो तुम [मेरी] मूल हो।
 (७) मूल मैं और तुम मैं शपथ का बचन बना अब मैं सुवास हूँ और तुम [उत्तम
 साधार] बन हो।”

शब्दांश—(१) बिरिय<बिरीय। (२) क्या<काया। (३) बिरिय<बिरि
 (४) नात्र<पात्र।

[१३०]

कवच कली^१ पुनि धन विगाथा । मुरम बचन रस रम परगमा ।
पाप जो मोठा पिता^२ दुखाए । पाप जो वन खड दावा^३ साए ।
ओ जग^४ पाप करम^५ हहि^६ जेत । नाउ एए^७ मोहि जाहि^८ न तत ।
त मर पाप पन्तर पाबी^९ । ओ तुम्ह^{१०} प्रीति न मरि पदुबाबी^{११} ।
बचा^{१२} कोम्ह बिधि अतर राखी^{१३} । रुद्र^{१४} ब्रह्म^{१५} हरि कह ॥ साखी^{१६} ।
प्रीति तो एमी कोजिए^{१७} आनि अत जहि नह ।
हुहु जग जो यह निरवहे^{१८} तो कहु कौन मन्हे^{१९} ॥

पादान्तर—(१) १ रा ए कली ।

(२) १ भा मना पिनिहि । २ रा वन खड दावा ए वन खड के दो ।

(३) १ रा मर जग । ३ भा जगम । ३ ए हैं । ४ ए नाम छह । ५ ए जाई ।

(४) १ ए पन्तर पाबी । २ ए तुज । ३ ए मर पदुबाबी ।

(५) १ ए बाचा । २ ए जानी । ३ ए मर । ४ भा वम । ५ ए अतर जानी ।

(६) १ भा मे वही 'ओ' और है ।

(७) १ रा जुग जुग ए जग जगम । २ रा यह परम ए निरबाही भा गहि निरवहै । ३ भा विनुवन जगम मरेह ए ती यह जग मरेह ।

अर्थ—(१) फिर (तबान्तर) कमल कली तबुस मधुमालती के मुख मे विकसित किया और यह अच्छे रस हैं पूर्ण बचन उसने बीरे-बीरे प्रकाशित किया; (२) "ओ पाप मान-रिता को कुली करने से होता है ओ पाप वनखड में दावागि लपाने से होता है, (३) और भी जगन् में जितने पाप कर्म हैं उनके नाम मुझसे नहीं लिए जा रहे हैं (४) उन सब पापों की समानता पाऊँ यदि तुम्हारी प्रीति सीमा तक न पहुँचाऊँ (निबटूँ) । (५) विपत्ति को अन्तर (बीच) में रतकर बचन दिया और रुद्र ब्रह्मा और विष्णु की छाती दी ।

(६) प्रीति तो ऐसी करनी चाहिए जिसके आदि और अंत में स्नेह हो (७) फिर यदि यह (इस प्रकार की प्रीति) बोनी जगन्—इहलोक तथा परलोक—में निम जावे तो कहो इसमें संदेह हो क्या है ?"

टिप्पणी—मरि < मरिअ < मृतम् = अम जग पर्याप्त । (५) बचा < बच < बचम् = बचन । (६) मेह < म्नेह ।

[१३१]

मपन बचा^१ आपुम मों^२ मएऊ^३ । पान प्राण मने^४ मिमि गएऊ^५ ।
पुनि आपुम मह^६ रग क^७ बाता । कहै लाग जहि^८ रग जग^९ रागा ।
पम रग^{१०} पूरण क^{११} राग । महज निरम मन्^{१२} दूनों मान ।
रतन हिरौनी^{१३} जरी निमानी^{१४} । कुंवर दीन्ह कुंवरहि^{१५} मणिमानी ।
ओ ओ कुंवरि^{१६} कर मुंन्नी आही । मो आने क^{१७} पासी^{१८} बाही ।

झोड़ा^१ कोठ^२ विनोद लोमाने दुहु^३ जिय^४ पम समान ।
बबहु^५ रहसि जित^६ हुलसहि बबहु^७ हरहि गियान^८ ॥

पाठांतर—भा में अर्द्धांश के दोनो चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए बाबा। २ छ मोहि (<मा) भा मई। ३ मा किएऊ, ए बँऊ।
४ ए भान ओ प्राण सेति। ५ ए यँऊ।
(२) १ ए मो। २ ए की। ३ रा कहै लाग जेहि भा कहै लाग जेहि ए
कहँ ओ लागे। ४ ए केहि रग।
(३) १ ए में यहाँ 'ओ' और है। २ ए पीरय रव।
(४) १ भा हिरौसी ए हिरौसी। २ भा भिबानी (?) ए विनानी। ३ ए कुंमरि।
(५) १ ए और कुमर। २ छ ए पत्नी।
(६) १ भा कोछ। २ ए कन्द। ३ ए बिबि। ४ ए ओ।
(७) १ ए कबहि। २ ए जे। ३ ए कबहि। ४ ए प्यान।

अर्थ—(१) [जब] छपप और बचन आपस में [उन दोनों में] हुए, तो प्राण प्राणों से मिल
गए। (२) फिर वे आपस में रंग (प्रेम) की बातें बहने लगे—उस रंग (प्रेम) की हुँसते जय
रक्त है। (३) प्रेम के रंग में वे पूर्ण [बल्लों] के ही रक्त (रंगे हुए) थे [इतलिय] सख प्रेम
भव में दोनों मत हो उठे। (४) एक और हीरो से उठित युवा कुमार ने कुमारी को साभिमान के
रूप में ही (५) और ओ कुमारी के हाथ में मुद्रिका की उते उसने अपने कर-वस्त्र में कर लिया।

(६) दोनों के जी में प्रेम लबाया था, [इतलिय] थे झोड़ा कोठक और विनोद में लप
हो गए। (७) कभी तो रमस् (हर्ष) में (ते) उनके भी हुलस में आने थे और कभी उनके आन
हर उठते थे।

टिप्पणी—(१) छपप < छपप। बबा < बचन < बचस् = बचन। (३) छठ < रत < रतन =
अनुरक्त। विरम < प्रेम। (४) (५) माहिबानी < साभिमान = बिहृ स्मारक। पानी < पत्नय।
(६) कोठ < कोट [के] = कोठुर गृहलक्ष। (७) हुलस < उत्सव।

[१३२]

पम माउ दूनहु अनुमरऊ^१। पर आपन भय जिय नहि परऊ^२।
बबहु^३ भासिगत रग^४ दई। बबहु^५ पनाछ ओउ हरि^६ लई।
बबहु^७ नन^८ बान जित^९ मार्गहि^{१०}। बबहु^{११} अमिअ बचन अनुमार्गहि^{१२}।
बबहु^{१३} भोग परन^{१४} ए लार्गहि^{१५}। बबहु^{१६} भागु अपान गयावहि^{१७}।
बबहु^{१८} नन ओउ हरि लही^{१९}। बबहु^{२०} अघर गुपानिधि^{२१} दनी^{२२}।
नम मोहागिनि जिय बम अघर^{२३} अशित वागु^{२४}।
नम बगछे ओ मर^{२५} बिगि^{२६} जियावहि^{२७} नामु^{२८} ॥

पाठांतर—भा म उपरुव चौबी तथा चौबी अर्द्धांश परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ भा दूनु बम अनुमरेऊ ए दुही ओ बरेऊ। २ छ दुव पट प्राण एक हो
पगऊ, ए परम अनर बिउ म परेऊ।

- (२) १ ए कबहि अतिगन जे हंसि। २ ए कबहि कटाछ जीव ओ।
 (३) १ भा ए मीह। २ भा बिम ए हनि। ३ भा ए मारै। ४ भा ए अनुमारै।
 (४) १ ए कबहीं। २ भा चरमहि। ३ ए सारै। ४ ए कबहीं। ५ ए गैबाई।
 (५) १ ए कबहीं। २ ए कबहीं। ३ ए स्वाव रस। ४ भा केही ए सेही (तुल्य पूर्ववर्ती चरण)।
 (६) १ रा अवरनि ए अवर।
 (७) रा नैन कटाछ जे मरहि ए नैन कटाछ जो मारै। २ ए बिहसि। ३ भा ए जियारै।

अर्थ—(१) दोनो जे प्रेम-भाव का अनुसरण किया और पराए और अपने का भय चित्त में न रक्खा। (२) कभी [बहु कुमारी] आतिगन का रस देती थी तो कभी कटास से [कुमार का] जीव हर लेती थी; (३) कभी [उस कुमारी के] नेत्र-भाव उसके जीव को मारते थे तो कभी [उसके] अमृत [सुख] बचन जनका अनुसरण करते थे; (४) कभी वे तिर चरणों से लगाते थे तो कभी अपना आत्म (चेतना) गैबा बैठते थे (५) कभी [उस कुमारी के] नेत्र कुमार का जीव हर लेते थे तो कभी उसके अवर उसे सुषा-निधि का बान करते थे।

(६) सुहागिनी के नेत्रों में बिम निवास करता था [तो] उसके अपरों में अमृत का निवास था; (७) नेत्र के कटासों से यदि वह (कुमार) मरता था तो [कुमारी के] अवर हंस कर उसको जीवित कर देते थे।

टिप्पणी—(२) (७) कटाछ < कटास। (४) अपान < अपाण < आत्मन् = चेतना।

[१३३]

कबहु^१ बिहुर सहुरि बिस सारहि^२। कबहुं^३ नन मंत्र पढ़ि मारहि^४।
 कबहुं^१ लीन^२ पेम रस माहीं। कबहु आप माह गल्वाहां^३।
 कबहुं^१ भायनि^२ प्रीति बड़ाव। कबहुं^३ सहज भाउ रस आव^४।
 कबहुं^१ नन मिमि रस उपजावहि^२। कबहुं^३ पम अन^४ बड़ाबहि^३।
 कबहुं^१ पम समु ए हिमोरा। कबहु आपु मह^२ प्रीति निहोग।
 कबहुं^१ पेम रस मांती^२ गरवन^३ दिस्टि न ताउ^४।
 कबहुं^१ पम भाउ रम मोही^२ प्रीतम दासि^३ बहाउ^४ ॥

- पाठांतर—(१) १ ए कबहीं। २ ए सारै। ३ ए कबहीं। ४ ए मारै।
 (२) १ ए कबहीं। २ भा. ए लीन। ३ भा कबहुं उपमा रस रस माहीं ए कबहीं आपुन मौ गले बाहीं।
 (३) १ ए कबहीं। २ भा मानसेउ ए मन मिमि। ३ ए कबहीं। ४ भा नैन मिमि रस उपजाई (तुल्य अर्थात् ४) ए सहज रम भाव देगावै।
 (४) १ भा कबहुं अपर रस सहज बनावहि ए कबहीं नैन मिमि रस उपजाई। २ ए कबहीं। ३ भा बड़ाबहि।
 (५) १ ए कबहीं। २ ए कबहीं आपु मे।

- (६) १ ए बबहि। २ भा ए मय मोठी। ३ भा गबहि, ए मरव। ४ भा बाहू म ठार देइ।
 (७) १ ए बबहि। २ भा माई ए माने। ३ ए पीतम राग (<रामि फाग्यी लिपि)। ४ भा कहेइ।

अथ—(१) कभी [उस कुमारी के] बिहुर लहरें लेकर (सहराते हुए) [स्वर्ण की मालि] बिय सारते (नपाते) ये कभी उसके मेघ [मानो बैठक का] भंग बड़कर [कुमार पर] टोड़ने थे (२) कभी सोनो प्रेय-रस में लीन होते थे तो कभी वे आपस में मलबाहीं डालते थे; (३) कभी [बह कुमारी] भावपूर्वक प्रीति बझानी थी और कभी सहज भाव के रस में [लीठ] अलौ थी (४) कभी उस कुमारी के मेघ [कुमार के मेघों से] मिलकर रस की उत्पत्ति करते थे और कभी [वे मेघ] प्रेम का आनंद बझते थे (५) कभी प्रेय-समुद्र की हिस्कोल [अलौ] थी तो कभी वे आपस में प्रीति-निवेदन करते थे।

(६) कभी [बह कुमारी] प्रेय-रस में भक्त हुईं वर्ष के मारे [कुमार से] दृष्टि नहीं मिलानी थी (७) तो कभी प्रेय-रस से मुग्ध होकर बह अपने को प्रियतम की दासी कहती थी।

टिप्पणी—(१) बिहुर < बिहुर = फंग। (३) माय < माघ। (४) हिस्कोल < हिस्कोल = समुद्र की सहर।

[१३४]

बबहू^१ पम घुमाइ^२ अडाव । बबहू^३ सुधारम सीनि जियाव ।
 बबहू^४ पम^५ अनद हुसागा । बबहू^६ कुहुहु पिरोग^७ तरागा ।
 बबहू^८ नन रूप फुलवारी । बबहू^९ जित जोवन बमिहारी ।
 कबहू^{१०} पम महागम सही^{११} । बबहू^{१२} जीउ^{१३} नवछावरि नही ।
 बबहू^{१४} लाज समुनि मल^{१५} भाया । बबहू^{१६} रहम हुसाग होइ भाया ।
 जो जित बारि^{१७} प्रीनि मउ^{१८} राग^{१९} बनेहु रज^{२०} न जाइ ।
 जो मोइ^{२१} भाउ^{२२} गहज मा मिलई^{२३} प्रीनि माय जित जाइ ॥

भाटागज—(१) १ ए बबहो। २ भा गान (<पाग?) मारि, ए पा (५) मारि। ३ ए बबही।

- (२) १ ए बबही। २ ए वेम रस। ३ ए बबही कुनो बिचान।
 (३) १ ए बबही। २ ए बबही।
 (४) १ ए बबही। २ ए सई। ३ ए बबही जित।
 (५) १ ए बबही। २ ए ज। ३ ए बबही। ४ भा गो भाया ए बपाया।
 (६) १ भा जीवन ए जी जीव। २ ए प्रीनि गा ए प्रीनम मे। ३ ए, ४ ए एर नही है। ४ भा रागि ए रागि।
 (७) १ भा जी गज भाउ ए जी मुबार। २ ए म यह गज नही है। ३ भा मिनी ए मिनी।

अर्थ—(१) कभी [बह कुमारी कुमार को] प्रेम में लहर लियकर गिरा देती थी तो कभी उसे [बबहो के] सुधारम में निविन कर जिया देती थी; (२) कभी सोनो प्रेय-रस में प्रदग्गि

उत्कलित होते तो कभी दोनों की [भाभी] विधवा का प्रातः [होता] (३) कभी उनके मंत्रों में रूप (सौम्य) की कल्पना होती तो कभी वे जीव (प्राणों) और जीवन हैं [एक-दूसरे पर] बलिहार करते थे (४) कभी वे प्रेम का महारस पान करते थे तो कभी अपने जीव [प्राणों] को व्योमहार करते थे (५) कभी लज्जा का ध्यान करके कुल [धर्म] का विचार करते थे, तो कभी उन्हें हर्ष का उत्साह हो जाता था।

(६) जब वह बालिका [कुमार के] जीव (प्राणों) को (अपनी) प्रीति के साथ रखती (रखने को प्रयत्न होती) थी तब [अपने जीव—प्राणों—को उसको दिए बिना] कुमार से किसी प्रकार रहा नहीं जाता था (७) और जब वह सहज भाव से उससे निकली थी तब [कुमार का] जीव [अपनी] प्रीति के साथ [उसके पास] जाने को [उत्सुक] होता था।

टिप्पणी—(२) (५) हुषाम < उत्काम। (२) तराम < वाम। (५) ररप < रमम् = हर्ष। (६) बारि < बालिका।

[१३५]

बहुत मुनत रम वचन^१ सोहाए । सोचन उमगि^२ नीद^३ भरि आए ।
सुबुधे पम सब निशि^४ जागे । होत भोर चारिउ^५ चनु लाग ।
पुनि^६ सुरहिनि सम^७ आई तहां । गइ सोबाइ कुवर^८ कह जहां ।
अचिनु^९ आई ते दर्नाहि कहा^{१०} । द्विपत^{११} पेम दुहु माथें अहा^{१२} ।
मुरत भाठ वसत^{१३} उन्हु जाना । दरिमरि सेज^{१४} कुमुम^{१५} बुनिलाना ।

कुवर सज^{१६} पर वामिनि वामिनि सज^{१७} कुमार ।

सज^{१८} वामि क^{१९} सामे जनु मुरत अंत विकरान^{२०} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बहहि मुरम रस बात। २ मा अबस ए तबहि। ३ ए नीर।

(२) १ मा सुबुधे नैन पेम रम। २ रा चारिहुं ए चारी।

(३) १ रा ए पुनि। २ मा छिदि, ए जा। ३ ए आई। ४ ए गई रागि कुमार।

(४) १ रा ए अचरज। २ ए जो देनी कहा। ३ रा कर। ४ ए जा माने आहा।

(५) १ मा माठ देनेहि ए भाष देने। २ मा दरमरि नैन। ३ रा हुमुम्ह।

(६) १ मा मैन। २ ए वामी मैन।

(७) १ मा मैन। २ ए जे। ३ ए दुनी मुरगि विकरारि।

अर्थ—(१) मुहावरे रस (प्रेम) के वचन कहते-मुनते दोनों के मंत्र उमंग में आकर नींद से भर गए। (२) प्रेम-लक्ष्य [वे दोनों] समस्त निद्रा जागी वे इसलिये लबेरा होने-होने [दोनों के] चारों चक्षु [नींद से] लगे गए। (३) तदन्तर वहाँ वे सब देवबालाएँ मा गई जहाँ वे [पहले] कुमार को मुग्रा गई थीं। (४) वहाँ आकर वे क्या आश्चर्य देखनी हैं कि दोनों के मस्तकों पर प्रेम शीत था। (५) उनको देख कर यहाँसे मुरत का भाव जाना [क्योंकि उन्होंने देखा] धाम्या बली-मली (बलिष्ठ-मृदित) थी और कूल कुम्हलाए हुए थे

(१) कुमार की सेवा पर कामिनी की और कामिनी की शाय्या पर कुमार का (७) और वे शाय्या बदल कर इस प्रकार सोए ये दोनों वे मुलात में बेबेत [सोए] हों

टिप्पणी—(२) चनु < चनु < चनु। (३) मुरहिनि < मुरधना (?) = देन बासा। (४) अचिनु < आचर्य। (५) दलि-मरि < दलित-मुदित। (६) सज < शय्या। (७) बिरुपर < बेकरार [का] = असात बेबेत।

[१३६]

ओ दूनहु मुन्ती^१ कर करी^२ । आपु माहि^३ पुनि पहिरें^४ फेरी ।
बलया सन परी किछु^५ पूनी । कषुधि बसनि उरहि ग दूटी^६ ।
ओ पुनि^७ अग थीर गा भागी । नय रया कुच ऊपर^८ लागी ।
उरही हार हारबलि^९ दूटी । उचसी मांगि बनि ग^{१०} छूनी ।
बेसहि सज^{११} मलगजी आई । ओ लिहार^{१२} गा तिलक मिनाई^{१३} ।

बुंवर अघर पर परगट परी ओ बाजर^१ लीन ।

ओ सोभित बारी महं दोसी^२ नन^३ सोहागिनि पीन^४ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा ए मुबरी। २ भा ए केरी। ३ भा मगुन माहि ए आपुन मह।
४ ए जा पहिरा ७ पुनि पहिरें।

(२) १ भा परी बच ७ पहिरा जा। २ भा पर छूनी १० जा दूटी।

(३) १ रा पुनि ए को। ७ ए वे उर कुच।

(४) १ भा ए उरहि हार हारबलि (हारबलि—ए)। २ भा ओ पनि मांग बेनि पर, ए उचनी मांग बेनि पिर।

(५) १ भा रैगहि नैन ए रेगा नैन। २ भा रा तिमारा। ३ ए मनाई।

(६) १ रा बाजल।

(७) १ ए और नैनहि पर मोभिन रा ओ माभिन बारी महं। २ ए पाव।

अर्थ—(१) और दोनों के हाथों की मुद्रिकाओं की आरम्भ में बदलकर पहन लिया था (२) कुछ कृपिका शयन (शय्या) पर कूटी [परी] की और [दुबारी की] थोली की कमनी उतके उर (हृदय) पर हो दूट गई थी (३) और फिर [उतके] शरीर से थीर भाग (हट) गया था तथा मत-रेता [उतके] बुझो वर लगी हुई थी (४) उर (हृदय) पर हार तथा हारबाली भी दूटी हुई थी मांग उदघात हो गई थी और बेसी लल गई थी (५) उन्होंने देखा कि शय्या में मलिनता आ गई थी और [दुबारी के] लगाव का निमक (रीखा) मिट गया था

(६) कुमार के अचलों पर बड़ी हुई [दुबारी के] बाजल की रेखा प्रकट थी (७) और मुलातिनी के बेवो की शानिमा में [कुमार की] बीच सोभित लीन रही थी।

टिप्पणी—(१) मु बरी < मरिवा। (२) बनया < बनप = बनन बर्षा। (३) उचनी < उर + चरन = चिन। (४) दिवार < दिवा < दिवा। (५) नीर < रेगा = रेगा।

[१३७]

जो बछरिन्ह देसा^१ मन भानी । इन्ह दुहु आपु भाहि^२ रति मानी ।
 कहिन्हि^३ बिछोह इन्हहि का^४ दीज । विरह बियोग^५ पाप का सीज ।
 मरन कस्ट^६ होइ^७ लिन^८ एक केरा । विरह मरन तिल तिल सो^९ फेरा^{१०} ।
 फुनि^{११} सब मिलि क^{१२} कीह बिचारा । नहि बुझिय^{१३} अस घरम हमार ।
 इहां सो^{१४} घरी एक कै^{१५} पीतो । इन्ह दुहु आपु भाहि होइ^{१६} बीतो ।
 मांठ^{१७} पिता जन परिजन लोग कटुब सम^{१८} कोइ ।
 एहि बिनु हिया^{१९} फाटि कै^{२०} मरिहैं सो हत्या हम होइ ॥

- पान्था—(१) १ ए बछरिन्ह देसि कहा। २ ए इन्ह दुनहु आपुम मो।
 (२) १ ए कहा। २ भा न इन्ह दुहु ए इन्है कन। ३ ए बिभोग।
 (३) भा कष्ट। २ ए हो। ३ भा घरी ए छिन। ४ भा नै ए जे। ५ ए
 घेरा।
 (४) १ रा पुनि ए में यह पाय नहीं है। २ ए य। ३ ए कुतो।
 (५) १ ए में यह पाय नहीं है। २ भा केरि, ए की। ३ ए आपुम मो नै।
 (६) १ भा ए में यहाँ 'उहाँ' और है। २ भा ए सब।
 (७) १ ए येहि बिना हिय। २ भा यव।

मर्थ—(१) जब अप्सराओं ने [इस प्रकार उन्हें] देखा तो वे मन में जान गई कि इन दोनों
 में आपस में रति भानी थी। (२) उन्होंने कहा "इन्हें बियोग क्या (क्यों) बीजिए और विरह
 बियोग का पाप क्यों बीजिए? (३) मरन का कष्ट तो एक लज्जा का होता है वर विरह में तिल-
 तिल कर के सी बार मरन होता है।" (४) [किन्तु] फिर सबों ने मिल कर बिचार किया 'हमार
 मर्थ ऐसा नहीं समझ पड़ता है; (५) यहाँ तो एक छड़ी की प्रीति थी जो इन दोनों में आपस में होकर
 बीत चुकी है।

(६) [किन्तु] कुमार के] माता-पिता, जन (सेवक) परिजन (हत्यादि) लोग (प्रजा)
 और दुष्ट सबी कोई (७) इसके बिना (इसके विरह में) हृदय के कटने से मर जाएंगे और
 वह हत्या हम [सब] की होगी।"

टिप्पणी—(१) अछरी—अप्यरम्=अप्यरा। (२) बिछोह<बिच्छोह [दि०]=विरह,
 बियोग। (३) लिन<लज्जा। (४) पीति<प्रीति। (५) लोय<लोक।

[१३८]

फुनि^१ सब मिलि क^२ एकमत भइ । सज सहित कृपरहि सँ गइ ।
 जहि ठाँ हुत^३ स गइ उपार्ई^४ । सज आनि^५ फुनि^६ तहाँ इमाई ।
 मोइ आपुनु^७ कोकु क^८ जाहीं । इहां भण्ट^९ दुम दुहु^{१०} जिय माहीं ।
 कुंवरि उनीनि^{११} साइ भरमानो । जामहु रमिक गएउ^{१२} रति मानी ।
 दया समिह रचन गा^{१३} राई । परमट सुरत थोन्ह सब^{१४} पाई ।

दगि समै^१ हिय^२ डरपौं भा अजुगुत यह माह ।
जो राजा अस^३ निछु^४ सुनि पाव घरि भाठी हम^५ बाह ॥

पाठांतर—(१) १ रा ए भा. पुनि। २ ए मे यह घण्य नहीं है।

(२) १ ए सो। २ ए उषाई। ३ ए सैज। ४ ए जां।

(३) १ ए आपुस मो। २ ए मो। ३ रा दुइ।

(४) १ ए उनीर। २ ए भी।

(५) १ रा गए, ए कै। २ ए सई निह जो।

(६) १ भा सनी ए सई। २ ए जिउ।

(७) १ २ ए म के दो घण्य नहीं है। ३ ए भाटी मो रा भाही हम।

अर्थ—(१) फिर सब भितर एकमत हुई और दाय्या-सहिज कुमार को वहाँ से [उठा] ले गई। (२) [यह] वे जिस स्थान से [कुमार की दाय्या] उठाकर ले गई थी वहाँ पर पुनः दाय्या को लाकर उन्होंने बिछा दिया। (३) वे स्वयं तो कौतुक करते जाती रहीं और यही [इन] दोनों के भी में कुल हुआ। (४) कुमारी उमिडा में लोकर [इत प्रकार अस्साई नामों [कोई] रतिक उससे रति मान गया हो। (५) सजियों ने देखा कि रमण (प्रिय) [उसके साथ] रमण कर गया था और प्रकट में गुरुत के सब निम्न पाए जा रहे थे।

(६) यह देखकर वे सभी हृष्य में डर गई कि यह क्या अयुक्त कार्य हो गया; [उन्होंने कहा] “यदि राजा ऐसा कुछ चुन पावे तो हमें बड़ी में शोक है।”

टिप्पणी—(२) सैन < सैन = दाय्या। (४) उनीर < उमिडा = उषटी नीर। (५) रमन < रमन। (६) अजुगुत < अयुक्त = अवोप्य कार्य। (७) भाटी < भग्निभा < भ्रादिभर = भट्टी।

[१३९]

राज कुवरि तय^१ सगिन्ह^२ जगाई । बहगिहि कि^३ बह^४ तुम्ह नागहु^५ आई ।
दगहु अरण्या आगनि आगी । उमिहु^६ माहि गिर लानहु^७ आगी ।
बाहु जानि युमि बिग लानहु^८ । नैन लाम बह^९ मूर^{१०} गवानहु^{११} ।
बाहु अनि मद^{१२} रिद्ध बनारा^{१३} । बाहु बाप गांठि भगारा ।
बाहु आपुहि अजग लानहु^{१४} । आपु गदनि^{१५} भो^{१६} बन्नि मजारा^{१७} ।
गिन एन ब सुग^{१८} बारन^{१९} कुवरि मगानहु^{२०} आपु ।
ओ बन्गारि निवानहु^{२१} गिरि^{२२} पगल^{२३} पापु ॥

पाठांतर—ए के अउनिचो १ तथा ४ परम्पर गगाननि २।

(१) १ भा. जनि ए है। २ ए नगी। ३ भा बहहि बं ए बहैगि। ४ ए के। ५ ए तुह नाग।

(२) १ ए उमिगि। २ ए लाने।

(३) १ भा दिगलाई ए बिग लाने। ४ ए के। ५ भा मूर। ६ ए दी। ७ ए।

(४) १ रा अब बर ए अनि बह। २ ए रिने बिगारा।

- (५) १ भा. ए. साए। २ ए. मयेनि भा गई। ३ ए. जे। ४ भा. कुल
कत्रबाए, ए. कुनहि कजाये।
(६) १ ए. तिक यक गुल क। २ भा. में यहाँ 'बाह' और है। ३ ए. नमाये।
(७) १ ए. दियायमि। २ ए. रही कजाये।

अर्थ—(१) राजकुमारी को सब सन्धियों ने जयाया और बहुत, कि "तुम्हें कितने आकर
मिट दिया? (२) जाय कर अपनी अवस्था देखो तुम उठी नहीं और फिर मैं तुमने आग लगा
ली (लगने ली) ! (३) क्यों जाल-बुझकर तुमने बिय जाया, और किम काम क लिए मूल को
पैसा दिया? (४) क्यों अति मर-मर बिचार दिया, और क्यों गाँठ में अंगार बांध लिया?
(५) क्यों तुमने भरने को अवसर समाया? क्यों तुम स्वयं भी गई और तुमने [अपने] कुल को
भी सज्जन दिया?

(६) एक लस के फूल के लिए, हे कुमारी तुमने अपने को मिट दिया (७) और [अपने]
सिर पर पाव कजाये हुए कुल को गाली दिलाई।

टिप्पणी—(१) मूर < मूल = मूलों। (२) बजार < बिचार। (३) निम < लप। (४)
मारि < मारि = अपमान।

[१४०]

बहुनि सज्ज* हाइ बहु कुमारी* । काह मया बहु* मोहि गानी ।
अइम करम मो* कर अयानी* । जहि न होइ कम धरम क कानी* ।
मोहि वरवम अनि* अपजम लावहु* । क बिचार* मोहि निज* छुवावहु* ।
पाप करम कर निरनी* सहू । जमि पूर तमि* किरिया दहु* ।
तुम्ह मनी लावहु* सरमरि* मोरी । तुम्ह मने मोहि काब म* धोरी ।
माहि तुम्ह बिछू न अतर वमहु* कहीं बिचार* ।
सोनुम सपन* न जानौ दहु* को गा मोहि* मारि ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए. संजाम भी राजकुमारी। २ भा. देखहि।
(२) १ ए. जो। २ ए. अयाया। ३ ए. जाना।
(३) १ ए. में यह शब्द नहीं है। २ ए. बिचार। ३ ए. तिय करवावहु।
(४) १ भा. ए. मैं निरनी। २ ए. मैं फुई लम। ३ ए. लहु (मूल पूषवर्ति-
चरण)।
(५) १ भा. ए. तुम्ह (हैं—ए) सधि अरु मरीरी या तुम्ह मनी काब
सरवरि। २ ए. माहि मेनि मारि न फरै।
(६) १ ए. अपारि।
(७) १ ए. मरना। २ भा. मएउ निधि।

अर्थ—(१) फिर सज्ज होकर कुमारी बहुत लगी "हे लकी तुम मने मानी क्यों दे रही
हो? (२) ऐसा बर्ग बहु मूर्ख करनी है जिसे कुल और धम की चानि (मर्यादा) [की चिन्ता]
नहीं होती है। (३) मुझे तुम अरुण अपयय न लपाओ बिचार कर लो और [मरि संनय न हो

तो] मुझे दिव्य सुभाषो। (४) पाप कर्म (अविहित संयोग) के बारे में निर्णय [त्रिष प्रकार बाह्य] कर लो और बँधी क्रिया स्फुरित होती हो बँधी क्रिया तुम [मुझे] दो। (५) हे सती, तुम मेरी सरस्वर तथा रही (मुझसे तकरार कर रही) हो तुमसे मुझे चोरी नहीं शोना दे सकती है।

(६) तुममें और मुझमें कुछ भी अंतर नहीं है बैठकर विचार करो और देखो (७) मैं नहीं जानती कि लौतुक्त (अतिशय प्रत्यक्ष) या कि स्वप्न; और यह भी मुझे बता नहीं कि कौन [इस भाँति] मुझे मार गया (मेरा जीवन नष्ट कर गया)।”

टिप्पणी—(१) पारो < पारि = अपसव्य। (२) दिव्य < दिव्य = किसी आरोप को असत्य प्रमाणित करने के लिए पुनः या उठाया जाने वाला तथ्य लौह-पिंड। (३) निरतो < निर्णय। पुर < स्फुर = प्रकाशित होना प्रकट होना। फिरिया < क्रिया = सरयासव्य निरुद्ध के लिए अपनाया गया कोई साधन उपचार। (४) लौतुक्त < ल + प्रत्यय (?) = अतिशय प्रत्यय।

[१४१]

बुद्ध एव सपने म^१ दत्ता । सपन रूप सौतुक्त कर लसा ।
विधन^२ मदन मूरति निरमण्ड^३ । जम न होइ^४ प विठ^५ स गण्ड^६ ।
जम न^७ मोक्ष^८ गिनक बुग दई । विरह मरन तिल तिल जिठ^९ सई ।
एहि^{१०} बुग समी बैस^{११} निस्तरिहू^{१२} । बिन जिठ निमि अग^{१३} जीवन सरिहू ।
अब न सकौ रहि^{१४} ओहि बिनु परो । अबब गाज यह मोहि सिर^{१५} परो ।

बिनु^{१६} जिय समी सरीर यह^{१७} एक^{१८} तिल रहत^{१९} सदेह ।
विठ^{२०} अति निदुर निछोही^{२१} सक तो^{२२} रह बिनु दह ॥

पाठान्तर—(१) १ ए ह्य।

(२) १ ए विधि। २ ग निरमय। ३ ए होय। ४ ए जीव। ५ ए गये।

(३) १ ए कि। २ भा मिलिगु ए भिनु। ३ ए विष।

(४) १ ए जह। २ भा बैस ए बैस। ३ ए निस्तरिहू। ४ ए मे यह गाज नहीं है।

(५) १ ए मे 'मनो रहि' के स्थान पर 'जिहो' है। २ ए बहूबा ते।

(६) १ ए बिना। २ रा जेहि। ३ ए तिल। ४ भा रहन ए रह।

(७) १ ए जीव। २ भा अछाही ए बिछोही। ३ भा तः।

अर्थ—“(१) स्वप्न में मैंने एक कुमार को देखा स्वप्न-रूप होने हुए भी वह लौतुक्त (अतिशय प्रत्यक्ष) था था। (२) उसकी विद्याना मे कर्म की कृत-या निविन किया था; वह घम नहीं था वह बड़ मेरे प्राण ले गया। (३) घम की (घम द्वारा की हुई) मनु एक रात भर बुग देनी है; बिनु विरह का कर्म निर-रूप करके प्राप्त होता है। (४) इस बुग ले हे लगी, मैं बैस निस्तर बाईनी और बिना जीव (आत्मा) के जिन प्रकार इस जगत् में जीवन बिनाईनी? (५) अब जम (कुमार) के बिना एक घड़ी नहीं रह सकती है; यह बय अवाक्य हो मेरे गिर बा है।

(६) बिना बीब (प्राणी) के, हे सभी इस शरीर के तिल भर भी रहने में सरेह है; (७) बीब [अवश्य] बति निपटुर और ममतहीन है वह शरीर के बिना रह सके तो रहे।”

टिप्पणी—(१) मीतुल < सं-प्रत्यय (?) = अतिथय प्रत्यय। (५) गाज < मज्ज < गर्ज = बिजली बज। (७) निटुर < निपटुर। छोह < सोम = ममता।

[१४२]

जग जीवन भावे सब काहू । मोहि भरि^१ बिरह भुए सखि लाहू ।
सम कह^२ मरन^३ होइ एक बारो । मोहि सखी मरन^३ भएउ बबहारी ।
प्रीति लाइ मोहि गा परखली । जिउ रु गा^४ सिर मोहनि^५ मेली ।
जनम न सुना^६ नाहू^७ दुख केरा । अबक भएउ^८ हम्ह^९ दुख भटमरा ।
विरह दगध ओ^{१०} कुरु कै लाजा^{११} । बना जाइ हम्ह जिय सों^{१२} काजा ।
कठिन पीर सखि^{१३} बिरह क मो मुंह कही^{१४} न जाइ ।
किछु उपगार करहि जौ^{१५} पारहू^{१६} तो^{१७} मरिहू^{१८} बिसु लाह ॥

पाठान्तर—(१) १ भा णहि, ए ली।

(२) १ ए के। २ भा मिरिगु। ३ ए दुख जग्ग। ४ ए ली।

(३) १ ए ली। २ ए मोहन।

(४) १ भा मुनेर। २ ए गाब। ३ ए ली। ४ भा. मोहि ए ली।

(५) १ ए में वह खम्ब नहीं है। २ ए कर राजा। ३ भा परेउ भाइ मोहि दुख सों ए परा भाइ मोरे सिर।

(६) १ भा बति। २ भा मोहि सखि सही ए तिल तिल रहा।

(७) १ भा किछु उपगार करे ली ए जिउ उपगार कछु किछु। २ ए में यह खम्ब नहीं है। ३ भा नष्ट ए न ली। ४ ए मरी।

अर्थ—(१) इस जगत् में जीवन सभी को जाता है, किन्तु बिरह जलते (झेलते) हुए मरने में ही मुझे लाभ (कल्याण) है। (२) सब को [जीवन में] एक बार ही मरण होता है किन्तु मुझे तो है सखी [प्रति] बिन का मरण हुआ। (३) वह (कुमार) [नसते] प्रीति लयाकर मुझे छोड़ गया और मेरे सिर पर मोहिनी डालकर मेरा बीब कै गया। (४) जन्म (जीवन) भर दुःख का नाम नहीं सुना था अबतक ही हमारा और दुःख का क्या दो भर्तों का भिड़त हो गया। (५) बिरह का राह और दुःख की लाज—इन दोनों का ही अब हमारे प्राणी से कार्य आ बना है।

(६) बिरह को पीड़ा इसकी कठिन है कि है सभी वह मेरे मुख से कही नहीं जानी है। (७) यदि तुम कुछ उपगार कर सको तो [बिच दो क्योंकि] मैं बिन लाकर चलेंगी।”

टिप्पणी—(१) लाह < लाज। (२) देवहारी < दिवह + बी < बिबम। (७) उपगार < उपगार।

प्रथमहि नाकु^१ कांट न घारी । ती घर फूस^२ बराम पारी^३ ।
 इहाँ कुँवर कहूँ^४ निसि दिम बिरह दगध उतपात ।
 उहाँ कुँवर के जागें मसन बहु दहु कैसी बात^५ ॥

पठान्तर—भा में उपर्युक्त द्वितीय अर्द्धांश दोप अर्द्धांशों के अंत में आती है।

रा में उपर्युक्त अर्द्धांश ४ तथा ५ परस्पर स्वान्तरित हैं।

(१) १ ए लै। २ ए बिरहै। ३ ए जो रा भा पुनि। ४ भा नेठ। ५ ए तोहारी।

(२) १ रा घाव ए घाव। २ ए जा। ३ ए है।

(३) १ ए जो। २ भा दिही ए हीन्हू। ३ ए बीचब करै। ४ ए राहु।

(४) १ भा काम है ए बला है। २ ए घटा। ३ ए पाइ।

(५) १ भा मावहि ए लीपै। २ ए ली बनप। ३ ए बेसन फूसवारी। रा बरामहि बारी भा बरामै बारी (तुल पूर्ववर्ती बराम)।

(६) १ ए के।

(७) १ रा उहाँ कुँवर के जागें बहु मसन बनि बात ए उहाँ कुँवर के जाने मसन बहु कैसी है बात।

अर्थ—^(१) कैसी तुम उसके बिरह में बेकरार (अर्थात् बेचेत) हो [उसो प्रकार] फिर उसे भी तुम्हारी चिन्ता होगी। (२) बिरह के आघात से एक ही नहीं पारा जाता है [बरम् दो मरते हैं], क्योंकि बिरह-आघात की चार दो ओर होती है। (३) जिस बिधाना ने तुम्हें यह पीड़ा दी [यही इसकी औषधि भी करेगा] मन में कैसी रखी; (४) [छिन्नु] जिस [कार्य] की बिधाता ने कल पर छोड़ रखी है वह बलान् मात्र नहीं पा सकती हो। (५) पहले कटि की बाड़ लीपो तो फल-फल का बिलास कर सकती हो।

(६) यहाँ कुमारी को राग-विग बिरह बाह का उपात या (७) यहाँ कुमर के जागने पर, हे मसन बहु कि कैसी बात हुई (जस पर कैसी बीबी)।

टिप्पणी—(१) बिरहार < बेकरार [का] = अर्थात् अवत। (२) घाम < घाम = आघात। (३) नाक = लीचना। कांट < कण्ठ = काँटा। बारी < बाटिया।

[१४५]

उहाँ कुँवर जो देगइ^१ जागी । जगन बिरह आगि तनु^२ लागी ।
 ना वह^३ मखिल न वह^४ मुगगती । ना वह^५ राजकुवरि रगरात्री ।
 मुरछि पर^६ ओ दहु दिसि^७ जोब । गिन गिन^८ ऊमि सोम ल^९ रोव ।
 ओ बिम पत म सकै समारी । मन गुनि गुनि मुधि^{१०} पम पियारी ।
 सबरि^{११} सबरि^{१२} मधुमालति बाता । बिरह अनल ब्यापउ^{१३} सभ गाना ।

बबहु पन बित पत^{१४} बबहु जाइ^{१५} बिमभार ।

सोम पुहमि हनि रावो समुमि रूप गुन^{१६} नारि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा देख। २ भा अग्नि जनु।

(२) १ ए बाह। २ ए म यह बाध नहीं है। ३ ए बोह। ४ भा ई जनी
ए मरमाजी।

(३) १ ए परी। २ ए जो रह विन। ३ ए छन छन। ४ भा ई।

(४) १ भा गुन ए जो।

(५) १ भा कुंवर, ए गौरि। २ ए गौरि। ३ ए ग्याये। ४ भा ए सन।

(६) १ ए एन अवेत एन वेरी। २ ए एन ही जा।

(७) १ ए बर।

अर्थ—(१) वहाँ अब कुमार जागकर देखता (औरें सोलता) है तो जागते ही बिहू की अग्नि उसके दायरे में लप जाती है; (२) [यह देखता है कि] न वह मंदिर (रात्रमवन) है, न वह मुल की रात है और न वह प्रेम में अनुरक्ता राजकुमारी है। (३) [यह देखकर] वह मुग्ध हो पड़ता है और वक्तो बिगामी में बैठता है और शब्द प्रति शब्द उठ-उठकर बात (उच्छ्वास) से लेकर रोता है (४) और चित के चेत को पतना ही सौभाग्य मढ़ें सकता है जितना ही वह प्रेम-प्रिया की स्मृति को मन में गुमता है। (५) मधुमावती [के भित्त] की बर्तों का स्मरण करते रहने से उसके समस्त गात्र में बिहू की अग्नि व्याप्त हो गई।

(६) कभी तो वह चित में चेत करता था किन्तु कभी वह बेसौभाग्य (बेचेत) हो जाता था;
(७) यह उस नारी (मधुमावती) के रूप और वृत्तों का स्मरण कर तिर पृथ्वी पर मार (चटक) कर रोता था।

टिप्पणी—(१) जोब < जो [रे] = देना। ऊब < ऊर्ध्व = ऊँचा होना उठना राडा होना। (५) संवर < एवर < एम् = स्मरण करना। (७) पुहमि < शृष्णी।

[१४६]

महजा नाउं कुवर न पाई। सुनतहि पूत पूत बरि पाई^१।
महमि बार^२ जानीं। बहू बाबा। मे सो तोरि^३ जमि^४ बंघला मांवा।
पूत कीन उपजी ताहि नीरा। जहि बारन नगु दारमि नीरा।
बान्न पूम् जग गा^५ कुमिपाई। कीन दुग^६ तोहि उपजउ^७ आई।
आपनि पीर पून बहू मोही। म नद^८ दउ मा भोगदि^९ तोरी।
मन उपादि दमि^{१०} मृग^{११} बहमि ऊमि स गांम।
माहि त्रिय पाद पीर सो उपजी^{१२} जाहिम भोगि^{१३} माम॥

पाठान्तर—० मे उपजुन सीमरी तथा बीवी अर्द्धि-वर्द्धि परस्पर स्थायीनिधि ?।

(१) १ भा ई आई ए बरि आई।

(२) १ भा बनेम बि राण जानी न बनेम बार (< बार नापरीनिधि)
जानी ए बनेम राण जाउ। २ भा ई मो नर (< तारि) ए ई तोहरी।
३ ए जग।

(४) १ ए बी। २ ए बाप। ३ ए उरबा।

- (५) १ ए मैं रे। २ भा. ओपधि ए भीषण।
 (६) १ ए. देवु। २ भा मैं यहाँ 'वाई' और है।
 (७) १ ए. मोहि जिउ बाइ पुन सी उपमा। २ भा ओपधि।

अर्थ—(१) सहजा नाम की कुमारी की एक धाय थी; वह [कुमार की यह दत्ता] मुनते ही "पुत्र" "पुत्र" करती (कहती) हुई बीड़ी [वाई]। (२) उसने कहा "हे बालक [अपनी] बाल कहो मैं [मैं तो उसे] जानूँ; मैं तुम्हारी बीती ही माता हूँ बीती कमला है। (३) हे पुत्र तुम्हें बीन-सी पीड़ा उत्पन्न हुई जिसके कारण अपने बन्धुओं से तुम अलग गिरा रहे हो? तुम्हारा फूल-सा मुक्त मुग्धा गया है तुम्हें [ऐसा] बीन सा कुछ आकर उत्पन्न हुआ है? (४) हे पुत्र तुम अपनी पीड़ा मुझसे कहो तो मैं वह [उसके उपप्लव] ओपधि तुम्हें निम्ना [काकर] दूँ।"
 (५) [यह मुनकर कुमार ने] नेत्र ओल कर उसके मुँह की ओर बैल कर, उठ कर और सीस से कर कहा (७) "हे बाय मेरे बी मैं वह पीड़ा उत्पन्न हुई है जिसकी ओपधि [निम्ने] की आया नहीं है।"

टिप्पणी—(१) बाई < बाबी = धाय। (२) बार < बास = बाकड़। (३) बसु < बस्तु < बसु। (४) ऊम < ऊर्ध्व = उठना।

[१४७]

सो विमाधि उपजी जिय^१ माहीं। जाहि बाइ बिछु ओलदि^२ नाही।
 तहाँ जाइ जिउ धस भा मोरा। जहवाँ^३ ग्यान कर पा सोरा^४।
 मन अरु भान सहो गे^५ धाई। मन के बिस्ति^६ जह जात सकाई।
 सो दरद^७ जो जाइ न कहा। तहाँ गएउ जहाँ^८ बस न रहा।
 जिउ भजोरि^९ मोर सीन्हा^{१०} धाई। छूँछी^{११} कया दसु संघ^{१२} आई।
 प्राण जो पीतम संघ रहा^{१३} कया मई^{१४} बिनु जीय^{१५}।
 कै सौँतुस कै सपना^{१६} न जानी केह^{१७} जीउ हरिणीय^{१८}॥

- वाक्यान्तर—(१) १ रा उपजी उट, ए उपजा जिब। २ भा जेहि। ३ भा. ओपधि ए भीषण।
 (२) १ ए जहाँ न। २ ए ग्यान के गवा रा ग्यान केर पानि। ३ रा स्मृत।
 (३) १ ए मन अरुणा गा तेहि ठो। २ भा मन की बिस्ति जह, ए मन की बिस्ति जहाँ।
 (४) १ ए देता। २ भा निन।
 (५) १ ए भजोरि। २ भा. सेतेउ। ३ ए छूँछी। ४ भा ए. संघ।
 (६) १ रा प्राण पीतम संघ रहा भा प्राण रहा पीतम यह ए प्राण जो पीतम संघ नी। २ ए मी। ३ ए जीउ।
 (७) १ भा. सपनें। २ ए. के। ३ ए सीउ।

अर्थ—(१) मेरे बी मैं वह व्याधि उत्पन्न हुई है जिसकी हे बाय कोई ओपधि नहीं है;
 (२) मेरा बी यहाँ बाकर [अर्थ के] बस हुआ जहाँ पर आन के पैर संघड़े हो जाते हैं; (३)

[मिरा] मन बहरी बीड़ता हुआ जाकर उलझ गया जहाँ जाते हुए मन की दृष्टि भी संकित होती है। (४) [मिने] वह देना जो अचर्यगोच्य है, और वहाँ गया, जहाँ खेतना न रही; (५) मेरे जीव (प्राणों) को [किसी में], हे पाप अंजनी में कर (छीन) लिया और देखो छाती कापा मेरे साथ आई है।

(६) क्योंकि मेरे प्राण प्रियतम के साथ रहे गए, मेरी काया बिना जीव की हो गई (७) वह या तो सौगुन (अनिशय प्रपन्न) या या स्वप्न; न जाने किसने मेरे जीव (प्राणों) को हर लिया।”

नियोजी—(१) बिपाधि < व्याधि। (५) छू छी < छुछ < छुछ। (६) जो < जो < बहः = क्योंकि कारण कि। (७) सौगुन = उ + प्रपन्न (?) = अनिशय प्रपन्न।

[१४८]

जै सौगुन क सपनां बहरी। कह लउं प जाइ न कहा।
यहि कमें क सपन बहरी। सौगुन भाउ सम बहि पाई।
सौगुन दगउं मज मिगारी। ओ सौगुन मुंदरी कर बाटी।
ओ अघरन्ह पर अंजन सीका। ओ परगट बुझ तनन्ह पीका।
ओ उर हार चीन्ह में दगउं। सौगुन प सम भाउ बिसतार।

बिरह अग्नि गुनू पाई मोहि तन लागी आइ।

जै मधुमालति मिलि बुझ कै मोहि मुल बुताइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बही। २ भा लेइ। ३ ए बही।

(२) १ ए लेहि। २ ए सपना। ३ भा सब।

(३) १ ए सौगुन। २ भा देरी ए देगा। ३ ए संवारी।

(४) १ ए अघर जो बाहर। २ ए ओ सौगुन आगिन्ह में।

(५) १ भा बुझि न जो। २ ए देरी। ३ भा वै बुझ ए सब जो। ४ ए बिठेरी।

(६) १ भा बिरह अग्नि गुनू पाई ए बिरह अपि गुनि पा रा बिरह अग्नि निरं (?) पाई। २ ए या।

(७) १ ए जी। २ ए मिले। ३ ए कि। ४ भा ए मुल।

अर्थ—“(१) या तो वह सौगुन (अनिशय प्रपन्न) या या स्वप्न उगाने बहने को लेता (करता) है। (२) वह बहता नहीं जाता है। (३) वह स्वप्न की बहनाएँ जिसमें सभी भाव सौगुन (अनिशय प्रपन्न) का बाइए? (४) मैं सौगुन (अनिशय प्रपन्न) [उत आगिनि की] मिगारी हुई साज्य देन रहा हूँ और सौगुन (अनिशय प्रपन्न) ही मैं बालिका के हाथ की मज्जा देन रहा हूँ। (५) प्रगट ही [अग्नि] अघरीं कर मैं [बालिका के] अंजन की देना और [उमड़े] शोरीं मेरी कर [अग्नि] बाज की पीक देन रहा हूँ। (६) और [अग्नि] उर (बातचन) कर उमड़े हार का बिह देन रहा हूँ; वह सब भाव सौगुन (अनिशय प्रपन्न) के ही तो रिमेल (निरमल) रहा है।

(१) हे पाप मुनो मेरे शरीर में बिटह की अग्नि जा कर लप गई है; (७) वह अग्नि या तो मधुमालती से मिलकर बसेगी या मेरे मरने से बुझेगी।

टिप्पणी—(१) (२) (३) (५) सौत्तुप < न + प्रत्यय (?) = अतिमय प्रत्यय। (१) मु बरी < मुद्रिका। बारी < बालिका। (४) बिसेग < बिसेग < बि + सेग = बिसेपता-मुक्त करना किसी वस्तु को उसके गन्ध आदि द्वारा दूसरी से भिन्न करना।

[१४९]

सुनु^१ धाई^२ दुख^३ बात^४ हमारी^५। अब^६ तोहि^७ सउ^८ मम^९ कहाँ^{१०} उधारी^{११}।
प्रात^{१२} मएउ^{१३} परिहरि^{१४} हम^{१५} दहा^{१६}। कया^{१७} बामु^{१८} जिउ^{१९} मरन^{२०} मन्हा^{२१}।
दुख^{२२} कै^{२३} बात^{२४} कह^{२५} नहि^{२६} पारों^{२७}। जिउ^{२८} घर^{२९} होइ^{३०} त^{३१} कहत^{३२} ममारों^{३३}।
बिनु^{३४} परान^{३५} भइ^{३६} कया^{३७} हमारी^{३८}। जिउ^{३९} ल^{४०} गई^{४१} मो^{४२} प्रात^{४३} पियारी^{४४}।
मयमालति^{४५} जिउ^{४६} लोन्ह^{४७} अजोरी^{४८}। धाई^{४९} सो^{५०} कया^{५१} बामु^{५२} जिय^{५३} मोरी^{५४}।
भावता^{५५} सेउ^{५६} धाई^{५७} मुनु^{५८} मति^{५९} बिछर^{६०} जग^{६१} काइ^{६२}।
साजन^{६३} जनि^{६४} खति^{६५} जानसि^{६६} वह^{६७} जिउ^{६८} मनि^{६९} मम^{७०} हो^{७१}॥

वाङ्मय—भा. ए. म. उपर्युक्त अर्थों की ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए सुन। २ भा. तुम्ह मरं अब मर रा ताहि में मर ए ता मैं मैं मर।
- (२) १ ए मी। २ ए मम। ३ रा ए बाबू। ४ ए जो। ५ रा ए मनेहा।
- (३) १ ए की। २ ए न। ३ भा. त घट न ममार रा कहन न हारों ए करन संमारी।
- (४) १ भा यह। २ भा कै यह प्रात।
- (५) १ भा मिएउ। २ ए अजोरी। ३ भा में यह मर नही है। ४ रा ए बाबू। ५ ए जीव।
- (६) १ रा गों ए म। २ भा धाई।
- (७) १ भा ए मुनन। २ ए जन। ३ ए जाननी (~ जाननी फारसी लिपि)। ४ ए में यह मर नही है।

अर्थ—“(१) हे पाप मेरी कुछ-बानी मुनो अब मैं तुमसे सब मिलकर रह रहा हूँ। (२) [मेरे] प्रात मेरे देह को परित्याग कर चले गए, और बिना जीव (प्राणों) के [मेरी] काया को मरण का संवेह हो रहा है। (३) [अपनी] कुछ-बानी मैं कह नहीं सकती हूँ घट (शरीर) में जोब होता तो उसे कहते समय मैं सँजाल (स्मरण कर) सकती। (४) मेरी काया बिना प्राणों की हो गई [वर्षों] वह प्रात-प्रिया मेरे जीव को ले गई। (५) मधुमालती ने मेरे जीव को मंत्रनी में कर (धीन) लिया इसीलिए मेरी काया, हे बाय बिना जीव की हो गई।

(६) अपने चरेते से हे पाप मुनो, संसार में कोई न बिजबर हो; (७) स्वजन [कोई] खति न जाने भले ही [अपने] जीव (प्राणों) को सभी [प्रकार की] खति हो।”

टिप्पणी—(२) (५) बामु < बग्न < बर्न = बिना। (४) पियार < पिआर < प्रियाण। (६) बिछर < बिछिण् = अलग होना। (७) साजन = मजप < स्वजन।

[१५०]

बज में बेनी नैन सो धारा^१ । जेहि बस परउं^२ बिरह के झारा^३ ।
 हरष अनद रहस बस^४ धाई । जहि जिय पम समानउ^५ आई ।
 जिउ पतग घट अहा जो मोरा^६ । जाइ जरेउ सई^७ पम अजोरा^८ ।
 पेम यनिज जग मोहनि^९ मुठानी । लाम न सीप^{१०} मूल भई^{११} हानी ।
 जग उपगान जो कहियत अहा^{१२} । पन सोए । बीराइ जोलहा^{१३} ।
 धाई हरष अनद गा^{१४} औ गवा रहस^{१५} अभिमान । ॥
 मधुमारति कर^{१६} बिरह दुग मोहि जिउ^{१७} रहउ^{१८} निदान ॥

पाठांतर—(१) १ ए जो बाबा । २ रा लिएउं ए पर । ३ ए बिरह का झारा । ४ बिरह का बाप ।

(२) १ रा बहा संघ ए रहस वा । २ भा समानेउं ए समाना ।

(३) १ भा अहेउ जो मोरें ए आई माप । २ ए परा जाइ हो । ३ भा अजोरें ।

(४) १ भा जग मोह ए जो जप ल । २ भा लहेउ ए रहा । ३ ए भा ।

(५) १ ए आहा । २ भा बन गंवाइ बीराप । ३ ए जोलाहा ।

(६) १ ए नौ । २ रा नौ इ रहस ए उर हुन ।

(७) १ ए कै । २ भा ए लै । ३ ए रहा ।

अर्थ—(१) जैसे मैत्रों से क्यों उस बाला को बैठा ही कि जिससे मैं बिरह की वजाला के बर में बड़ गया? (२) हे बाव उसके लिए हर्ष आनंद (और गुन बंता) जिसके जी में आकर प्रेम समा (ध्यात हो) गया? (३) [मेरे] घट (सरोर) में जो बैरा बीर-वर्नन (पतिगा) ब, बहु प्रेम [की अभि] के प्रयास में स्वयं का कर जल गया। (४) प्रेम के अनिज ने संसार में अगरी मोहनी डाल रखी है कि लाम नहीं बीरता [जब कि] मूलबन की जो हानि हो जाती है। (५) यह तो जगत् में कहा जाने वाला (अस्थान) बही उपस्थान हुआ कि बन तोकर जुलाहा पामन हो जाता है।

(६) हे बाव [मेरा] हर्ष और आनंद गया और गुन तथा अभिमान गया; (७) अब तो मेरे बीच (प्राप्त) में अंग में मधुमावती का बिरह-गुन [मात्र] शेष रहा है।”

श्लोकी—(१) बाप < बाग । मगर < मगना । (२) लमाव < लम् + माव = ध्यात हाना । (३) (६) रहस < रसम् = हर्ष गुन । (४) लह < लव । (५) उगाना < उगाभाना = क्या ।

[१५१]

पम अगिनि जहि जिय^१ उगारई^२ । प्रीतम रागि^३ और मम जगई^४ ।
 पम दुग मम^५ दुग मउं^६ भारी । निज निज मम मम^७ दबारी ।
 प्राग जाइ बर गाई^८ मरीग । बिपि बज निरा^९ पम क पीग ।
 मम मम^{१०} पम जोबन मम^{११} । जम मउं^{१२} जिउ बिरहावग^{१३} मम^{१४} ।

चढ़े^१ पय पय दुग्गम^२ भारी । क^३ जित जाह क मिल सो वारी^४ ।
घाई पेम समुद मह वेनु^१ दोरि वसि^२ सठ^३ ।
क मानिक स^१ निकरौ^२ क ओहि^३ पय जित दठ^४ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पेम प्रीति जो जित । २ भा जणपरेऊ । २ रा दुग्ग । ३ भा सब
जरेऊ ए सब जरेई रा सब जरेई ।

(२) १ ए सब । २ रा सौं ए सौं । ३ ए सहज मरन भा मरन सहज ।

(३) १ ए, छोड़ (<छोड़ि छारसी लिपि) । २ भा सिरेउ ए सिरे
(<सिरी छारसी लिपि) ।

(४) १ भा करै । २ रा सौं ए सौं । ३ भा बिरह बस ए बिसंभर ।

(५) १ रा बिरहा ए बड़ा । २ ए दुग्गम । ३ रा बहि । ४ भा नारी ।

(६) १ ए बेहि । २ ए बंस (<बसि छारसी लिपि) । ३ ए सठ ।

(७) १ ए कै छै । २ भा निकरी ए उबरी । ३ ए ओह । ४ ए दठ ।

अर्थ—“(१) प्रेमान्जितके जी में दर्पण करती है उसका सब कुछ, एकबार उसके प्रियतम
को छोड़कर, भस्म हो जाता है । (२) प्रेम-पुष्प समस्त दुःखों से भारी होता है क्योंकि उसमें दिन
भर में सहज बार तित-तित करके मरना होता है । (३) प्राय भले ही धीरे छोड़ कर बले जाते
किन्तु बिधाता ने यह प्रेम की बीड़ा क्यों बनाई ? (४) रास्य कम और जीवन का [मिरा] पय
बला गया जब से बीब बिरह के बन में हुआ । (५) [जब तो] मैं प्रेम के दुर्गम पय पर मारतू हो
बुका हूँ; या तो उस मार्ग में [मिरा] जीवन जागना और या तो वह बालिका मिलेगी ।

(६) हे प्राय ऐसी मैं तो प्रेम-समुद्र में डूब कर डूबको लपटा रहा हूँ (७) जब या तो
मानस्य लेकर निरर्तुना और या तो उस मार्ग में जीवन बुंया ।”

टिप्पणी—(२) देवहारी < बिरह < बिरस । (३) मिर < मृन् = बनाता निर्माण करना ।
(५) दुग्गम < दुर्गम । (५) नारी < बालिका ।

[१२२]

बिरह कलिन कोइ^१ जान न पीरा । कै बिधि^२ जान क जान^३ सरीरा ।
रात्र मुक्य विप बसि (बोलि)^१ परिहरऊ^२ । बिरह दुख अजिन जित^३ घरेऊ ।
मब माहि महि मारन जित लाए^१ । प्रम प्रीति क मरि पटुघाए^२ ।
क यहि^३ पय मोर जित जाइहि । कै बिधि प्रीतम जानि मिलाइहि ।
घाह कत^१ दुख सुनिहमि^२ मोरा । बात बडी जग जीवन पोरा ।
घाई^३ बात पिरम कै^४ मोहि मुह^५ कही^६ न जाइ ।
जो में सहज जीम होइ^७ वनतों बहु जुग करि मिराइ^८ ॥

पाठान्तर—भा. म उरसुक्त तीसरी तथा चौथी अठ्ठावियों परस्पर स्थानांतरित हैं ।

(१) १ भा. बोल । २ रा मो । ३ भा. छि जाहि ।

(२) १ भा बिप जेठ ए किर । २ रा ए परिहरऊ । ३ ए जे अजिन ।
४ रा. बरेऊ, ए घरेऊ ।

- (१) १ ए अब बोही मारन जिउ साबौ। २ ए पहुँचाबौ।
 (४) १ ए बोहि।
 (५) १ ए बेनिऊ। २ भा सपने ए सहबे।
 (६) १ ए भाइ सौ। २ ए पोरम बी। ३ भा ए मुग। ४ ए बड़े
 (< बही फारसी लिपि)
 (७) १ ए सौ। २ रा जीम नही न जाइ (मुल पूर्ववर्ती परम)।

अर्थ—(१) बिरह ऐसा कठिन होता है कि कोई उत्तरी पीड़ा को जानता नहीं; या तो उसे बिचाता जानता है और या तो उसे [बिरही का] शरीर जानता है। (२) राज-मुल को मैं बिप करार देकर छोड़ बिवा है और जीवन में बिरह के दुःख-अमृत को पारण कर लिया है। (३) अब तो इसी मार्ग पर बीब (प्राची) को लगाने से (मैं) और प्रेम-सीति को से (अवना) कर उसे सीमा तक निबाहने से (मैं) ही मने [कृतकृत्यता प्राप्त होगी]। (४) या तो इस पक्ष पर मेरा बीब आवेया और या तो बिचाता प्रियतम को साकर मुगें बिकाएगा। (५) ऐ भाव तू मेरा कितना दुःख मुनेवी ? वासी बड़ी है और जीवन [उसे मुनाने के लिए] छोटा है।

(६) हे भाव प्रेम की चाली मुससे [मुस से] कही नहीं जाती है; (७) यदि मैं तहस बिद्धा होकर बहूँ तो भी चारो मुगों में न समाप्त होगी।

टिप्पणी—(१) छरि < अरिम् < मृतम् = अलं वग पर्याप्त। (५) बाग < बल < बर्ला।
 (६) पिरम < प्रम।

[१५३]

उठउ^१ मूर जग भाण्ड अजारा^२। कुंवर उठा^३ बिरह^४ रावशोरा।
 पत हउ^५ जिउ गा बोराई। क्या नगर भइ^६ बिरह लोहाई^७।
 बिरह निमान बहू लमि^८ बाजा। जिउ परजा बिरहा तन राजा।
 पड़ा^९ पम पय^{१०} अंग न मोरउ। छांग^{११} फारि बम सिर तोरउ।
 बिरह दुग^{१२} दुग्गम न नभारमि। उरत अपान आगुहि^{१३} द मारमि।
 राग बटुब मम^{१४} पाण राज गिरिह^{१५} मुनि^{१६} रोर।
 पार्^{१७} मुनि बंवल्लव^{१८} व्यामल फारि^{१९} पटार ॥

- पाठांतर—(१) १ ए उगा। २ रा अजोग। ३ भा उ^४। ४ ए बिरहे।
 (२) १ ए रहा। २ ए जी। ३ भा बपई।
 (३) १ ए जग।
 (४) १ भा बउउ। २ भा जिउ। ३ रा बगग ह हागा।
 (५) १ ए बा पम (मुल पूर्ववर्ती अर्जनी)। २ भा उरत अदान भा
 ए उ^३ भागु भाग।
 (६) १ भा ए मब। २ भा गरि ए विह। ३ ए भा।
 (७) १ भा बाई मुनि बरलाबी ए भाव गुना बीला^८। ९ ए पाद।

अर्थ—(१) मुल [आजान में] उठा (निवृत्त) और नगर में अकाम हुआ, तो कुमार भी बिरह के रावशोरा हुआ उठा। (२) उत्तरी बैजनाहर उगी भी और उगा। और बाचना (पाण)

हो गया था, [बर्बोक्त] उसकी काया-भरती पर बिरह का अभिचार हो गया था। (३) बिरह का पीसा चारों ओर बर रहा था और उस तन (नगरी) में बीच अन्न प्रजा बना हुआ था और बिरह राजा। (४) कुमार ने प्रेम-यम पर चढ़कर अपने शरीर को नहीं मोड़ा उसने अपना लबादा फाड़ डाला और निर के रैन मोच डाले। (५) दुर्मम बिरह-बुध को वह सेवास न सका और उठने हुए [पुनः] अपने आप को उसने भूमि पर पटक दिया।

(६) राज-गृह में कोलाहल सुनकर सोम (प्रजा-पति) तथा बुदुबी बीड़ पड़े (७) और कमलावती (कुमार की माता) [भी] अपने रेशमी वस्त्र फाड़कर व्याकुल बीड़ पड़े।

टिप्पणी—(१) मूर<भूर। (२) बया<बाया। (३) दुग्म<दुग्म। (४) रार<राठ<रब=कोलाहल। (५) पटार<पटोप<पट्टकूम (?) =रेशमी वस्त्र।

[१५४]

नगर दम मह परि गा^१ रोग^२ । राजमंलि^३ किछु उठहि^४ अनाग^५ ।
वद मयान गुनी जन^६ माए । मता^७ पिना जन परिजन धाए^८ ।
बह राउ^९ न जिउ मन^{१०} त्यागा । जीउ^{११} मोरतहि क जिउ लाग^{१२} ।
अग्य अज^{१३} लागु मो^{१४} लावहु । कुबर जीउ^{१५} कमहु बहुरावहु^{१६} ।
क उपगार^{१७} सुतहि पम्टावहु^{१८} । मोर जिउ लाग^{१९} ली लाह जिआवहु ।

बन्हु आह नाटिका^{२०} पकरी शनि विचारन्हि^{२१} पीर ।

चांद मुनज दुब^{२२} निरमन औगुन नाहि^{२३} मरीर^{२४} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा गण्ड। २ ए रोक। ३ भा. महिर। ४ रा. किछु भण्ड ए कछु उठा। ५ ए अनाग।

(२) १ रा बह। २ रा मान न माना। ३ ए राय।

(३) १ भा राज। २ ए जन गुन। ३ भा जीवन। ४ भा अहिं त्रिप ए एहिं जिउ।

(४) १ ए जग। २ ए लाग। ३ ए कुंबर क जिउ। ४ ए पम्टावहु।

(५) १ ए प्रकार। २ रा पनि पावहु। ३ भा. ए लाग।

(६) १ भा नाटिका। २ ए मुनि विचार।

(७) १ ए मूत्रं पुन। २ भा औगुन विषु न ए दोष न कुबर।

अर्थ—(१) नगर और देश में यह कोलाहल मच गया कि 'राज-मन्त्र में कुछ अंदोल (हस्ता) उठ रहा है'। (२) बीच लयाने और गुनी जन माए, मता-पिना और जन तथा परिजन (इत्यादि) बीड़ पड़े। (३) राजा बहने लगा "मैंने प्राण तथा धन त्याग दिए और मेरे प्राण उत (कुमार) के प्राणों [को रक्षा] के लिए डे उठे। (४) अर्थ और इय जिना भी लगे लयाओ और कुमार के बीच को किसी प्रकार से लौटाओ। (५) उपहार कर के मेरे पुत्र को लौटाओ और [इसके निज] मेरे प्राण भी लगे हो उन्हें लगाकर उने जीवन करो।"

(६) बेटों ने आकर [कुमार की] नापी चढ़ी और [उने] रेशमर [कुमार की]

११०]

पीड़ा का विचार किया। (७) [तत्पश्चात् उन्होंने कहा] "दोनों—बंद और मृत्यु (विनाश) का इका नाशिवी)—निर्णय है इसलिये शरीर में कोई अलग (विकार) नहीं है।"

टिप्पणी—(१) रोछ < रोच < रच = कोनाहण। अंदोरा < आन्तोसम। (२) सयान < सयान। (४) बरख < ब्रख। अत < अतिम < यावत् = जितना। (५) नाटिका < नाटिका। = नाटिका।

[१५५]

फिर फिर बंद नाटिका गह। वेदन बिरह बंद का बह।
बहु कीन्हे गुन केर उपाई। बुर सरीर न बदन पाई।
पुन उठि यद एव मत बह। बिरह माउ बिछु जानत अह।
बहनि बुर लोयन मर मार। वेदन सो जो न पाज हमाग
बुर सरीर दोष नहि पाई। बरह जाई के राज जनाई
उठि निराम होइ बहुर पडित गुनी सयान।
बुरहि पीर पिरम के ओगधि कोउ न जान ॥

वाक्यान्तर—(१) १ आ बहरी ए बहरी। २ आ बहरी ए करई।
(२) १ आ गुन कर उपाई ए बरि के जो उपाई। २ ए बदन
(३) १ ए उठि के। २ आ ए बह। ३ ए, भाव ही जनि।
बहा।
(४) १ आ बहहि। २ ए बेरना सो नहि।
(५) १ रा बुर सरीर दुख नहि ए जो बिछ बेरना हो ती। २
जाई के राज ए बहनि जनी ती छउ।
(६) १ ए भे छ हू। २ आ बह।
(७) १ ए बी। २ आ ओगधि ए ओगध।

अर्थ—(१) बंद गुन गुन नाही बचकते तिनु बेरना तो बिरह की बी इत
बहते? (२) गुन (गुण) के उपाय करनेसे ब्रह्म-मै लिए, तिनु गुमार के प
[वा निजय] के नही [बुर] का रहे के। (३) फिर एक बंद उठकर ऐसा ब
का भाव गुन जान बड़ना है। (४) उनमें कहा "गुमार दुष्ट-बालों के बारा गुन
बेचना बह (इत प्रचार की) है कि जिनके हवाला कोई बर (बाला) नहीं
के शरीर का दोष हम सब नहीं का (जान) तब हम और हम सब बचकर बह
बना है।"

(५) बहिन गुनी और लयावे बर के उठकर निराता होकर ली? (७)
की बीड़ा की [जिगरी] ओगधि कोई नहीं जानना था।

टिप्पणी—(१) नाटिका < नाटिका = नाटिका। (४) लोयन < लायन।
(५) निराम < निराम। नाटिका < नाटिका।

[१५६]

राज मह्य^१ एक अहा^२ सयाना^३ । गुन बिद्या^४ बहु खड बखाना^५ ।
ओहि मरमरि^६ करि दोसर^७ न पावा^८ । गुन मिधान जग नाठ^९ कहावा^{१०} ।
गुन सो^१ नाठ^२ बहु खड बाजा । कलि सहज कहिअ^३ तो छाजा ।
महा मुमुदि अनुदम माही^४ । जान जिय क समस्या जाही^५ ।
ओ मनि मंज बहुत पुनि^६ जान । एक मूरिगुन^७ सहस बखान ।
मुनेसि कुवर कर औनुस^८ आइ^९ बिचारसि पीर ।
बहुनि नाटिका कर गहि^{१०} दोन न कुवर सरीर ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा राज मह्य वा राज मह्य ए राजक मह्य । २ ए है । ३ ए गुन निधान (गुन परवर्ती बर्ताली)
(२) १ मा. आहि सखरि, ए बाइ सरवरि । २ ए कोइ पार । ३ मा पावै ।
४ ए अनु नाम । ५ मा कहावै ।
(३) १ मा रा मे यह शब्द नहीं है । २ रा. कहा ए वही ।
(४) १ ए माहि । २ मा जानै जिय क समस्या काही रा जानै जियहि मजह
जाही ए जानौ जीव कमस्या यहै ।
(५) १ मा छै ए तो । २ मा बिड ।
(६) १ मा मुमुत कुवर कर आरम रा मुमुत कुवर को औनेस ए मुनेसि कुंवर क
औनुस । २ ए बाप ।
(७) १ ए नाटिका यहि कै ।

अर्थ—(१) राज्य में एक महत्ता (महानजय) सयाना वा चारों ओर उसके घुम और उसकी
बिद्या का बखान (प्रशंसा) करता वा । (२) कोई दूसरा उसकी सभ्यता नहीं कर पता वा अगल
में उसका नाम गुननिधान कहा जाता वा । (३) उसके घुम का नाम (घम) चारों ओरों में धजता
(प्रख्यात) वा; उसे कलियुग का सहज कहा जाए तो उसको यह नाम दोमा दे सकता वा । (४)
यह बीरह बिद्याओं में महा अनुर वा और और (बीरम) बी बी बी लयस्वारों हो लगती थीं सब
को जानता वा । (५) और वह मनिमों तथा मंशों [कि प्रवीणों] को बहुत जानना वा तथा एक
एक बड़ी के सहज-सहज घुम बनाता वा ।

- (६) उसने कुमार का जीवन (अनुप-वेष) सुना और आकर उसकी पीड़ा का विचार किया
(७) उसने कुमार की नाड़ी को हाथों से पकड़कर कहा “कुमार के शरीर में कोई शोक नहीं है ।”
टिप्पणी—(१) सहज—पाठकों में से एक जो अनेक बिद्याओं के ज्ञान के लिए अपने घुम में
प्रसिद्ध थे । (२) औनुस < अडम + अनुज < अनुप्य + अनुज [दि] = अनुप्य-वेष । (३)
नाटिका < नाडी = नाड़ी ।

[१५७]

क दगमि बहु भांनि बिचारा । कफ पिन बात न आहि सचारा^१ ।

बहसि बधा^१ जो बेन^२ होई । नारी माहि रह नहि गाई^३ ।
 बाढी^४ अग^५ दोग^६ बिछु नाही । गिन गिन^७ नन सापि गमि^८ जाही ।
 चांद मुरुज निगदोग अगासा । उठहि^९ उरभ कहि बारन स्वासा^{१०} ।
 ओ सोयन नहि पलव^{११} पराही । बिरह बाधु^{१२} एहि ओगुन माही^{१३} ।
 उर नीर दुहु^{१४} लायन पत न चित^{१५} समार ।
 बिरह गरग कर^{१६} धायल बिछु नाही उपनार ॥

पाठान्तर—(१) १ भा आहि बिकार ए अई बिबाप ।

(२) १ ए ध्यान । २ ए बरना । ३ भा गो^१ ।

(३) १ भा आठ्ठु । २ ए बाय । ३ रा दुस्त । ४ ए सन सन । ५. भा कम ए कै ।

(४) १ भा उठहि ए उठे । २ ए सीसा ।

(५) १ ए मलक । २ ए भाव रा बाधु । ३ भा पै सब नत माही ए यह सब जग माही ।

(६) १ ए बार । २ ए चित नहि बेत ।

(७) १ ए कैर ।

अर्थ—(१) उसने बहुत प्रकार से बिचार कर देता कि कल, बात या विल का संसार नहीं है ।
 (२) उसने कहा “कामा में जो बेचना होती है, वह माफी में गोदित (छिपी) नहीं रहती है ।
 (३) इसके आठों अंगों में कोई दोष (बिकार) नहीं है [फिर भी] इसने मेरा लज-लज बंध हो जाले हैं और [पलक] बिर जाले हैं । (४) बंधना और धुप (विगलता तथा दया माफ़िमी) आकाश (गरीर) में निरीष हैं तब बिल बारण से इसरी प्रभावत ऊर्ध्व होकर उठती (बड़ जाती) है और इसके लोचनों में पलकें नहीं बढ़ती हैं? [हो न हो] बिरह छोड़ कर इसे कोई [पारोिक] व्यवस्था नहीं है ।

(५) इसके दोनों नेत्रों से जल (आँसु) गिरता रहता है और इसका विल बेत नहीं संभाव रहा है (७) [अतः] यह बिरह-राज्य से आगत है और [इसका] कोई उपचार [संभव] नहीं है ।

टिप्पणी—(१) गिन गिन < क्षण-क्षण । (४) उरभ < ऊर्ध्व । (५) सोयन < लोचन । बाधु < बन्ध < बन्ध = छोड़ कर ।

[१५८]

गुनि मनमुग ह्माद पुछति^१ याना । कुयर तार खिउ वा मउं गता ।
 बहू न^२ तार नम^३ हरि गिया^४ । गम अमिम नू^५ नन्दा पिया^६ ।
 जो मोहि मउं यानगि मब^७ याना । मरगो मा^८ आदि गमि गता ।
 मरग^९ दव नन्दा^{१०} जो ह्माद । मत्र मरगि तें^{११} मरगो मारि ।
 कुयर मीउ^{१२} अनि ह्मा^{१३} निगमा । त्रिभुवन धमि ग पुखी भागा ।
 बनि मा^{१४} बान निरु मागउं^{१५} नहि^{१६} खिउ म्मागेउ^{१७} तोर ।
 मे गुम विद्या न मरति^{१८} मरगो पति परार ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा इह पूछी ए मै पूछे। २ ए मी रा सों।
 (२) १ ए के। २ ए जिउ। ३ भा सिएऊ, ए बीयेउ। ४ भा मुई, ए
 ते। ५ भा पिएऊ, ए बीयेउ।
 (३) १ रा ए मायी। २ भा ए मय। ३ ए ताहि। ४ ए हहि।
 (४) १ रा प्रम। २ रा ए नया। ३ भा ताहि ए कै।
 (५) १ भा त्रियहि। २ ए कै। ३ भा होहि रा मएउ। ४ रा ता।
 (६) १ ए नहि। २ ए मी। ३ भा नहि। ४ ए माया।
 (७) १ ए मै बिठा क गुन मकनि नौ। २ भा नद।

अर्थ—(१) फिर उसने [कुमार के] सम्मुख होकर यह बात पूछी “हे कुमार, तेरा भी किसी (किस घर) अनुरक्त है? (२) वह किसी तेरी कितना दूर की और प्रेम का अमृत तुने कहाँ पिया है? (३) यदि तू मुझसे सब बातें बता दे तो मैं उसे मिला दूँ जिस पर तू अनुरक्त है। (४) यदि वह स्वर्ण की देव-कन्या हो तो उसे भी मैं मंत्र-शक्ति से मिलाऊँगा। (५) हे कुमार, तू भी मैं निराश्रय हो मैं त्रिभुवन—आकाश पाताल और मृत्युलोक—में जाकर [तेरी] आशा पूर्ण करूँगा।

(६) तू इसलिये ठीक-ठीक यह बात मुझसे बना कि किसी तेरा भी लय गया है।
 (७) मैं अपने गुणों और अपनी विद्याओं की शक्ति से चणोर (प्रेमी) और चांद (प्रेमनाथ) को मिला दूँगा।”

टिप्पणी—(१) राग < रजन = अनुरक्त। (२) अभिन्न < अनुन।

[१५९]

जो यह सीनि साव मह हाई। म तोहि अनि मरावौ^१ साई।
 भडि अगास समि^२ अश्रित गारौ। सकति मंत्र अपछरा^३ उतारौ।
 सुर मर नाग सोक कर भऊ^४। बहौ सबहि^५ जो पूछ बेऊ^६।
 मंत्र मक्ति मरु^७ गा बहुरावठ। कहहि^८ तो मुवा त्रियाइ दयावठ^९।
 सस इन् गुन^{१०} मक्ति बुलावठ। बहौ त^{११} मेरु मुमेर डोलावठ^{१२}।
 कहहि मोहि अनि गोबहि^{१३} कौन पीर^{१४} तुम्ह^{१५} जोय।
 कै र महज किछु^{१६} उपजा^{१७} कै र काहु^{१८} बिछ दीय ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा. मिलावौ।
 (२) १ रा भापमै ए मराम बे। २ मा. ए मरग मरछय मंत्र।
 (३) १ रा भाऊ। २ भा माद। ३ रा भाऊ।
 (४) १ रा नौ ए मी। २ भा ए नहु।
 (५) १ भा कै ए नर। २ भा ए तो रा द।
 (६) १ ए नहु सोपी अनि योगि। २ रा मर (?)। ३ ए तारे।
 (७) १ ए नहु। २ भा उदवठ। ३ मा. कै बाहु ए कै बाहु। ४ मा.
 ए बीय।

अर्थ—“(१) यदि यह (तेरा प्रेम-वास) तीन लोगों में होगा तो मैं उसे काकर तुमसे भिन्न दूंगा। (२) मैं आकाश में चढ़ कर इन्द्र का अमृत निषोद्ध (निकास) करता हूँ और मंत्र-शक्ति से अप्सराओं को उतार लाता हूँ। (३) देव नर, और मागलौक का यदि कोई मुझसे पूछे, ब्रह्मी का भेद कह सकता हूँ। (४) यंत्र-शक्ति से मैं पृथु हृथ को वापस ला सकता हूँ और यदि तुम्हें तो मृत को जीवित कर दिखाऊँ। (५) शेष और ईश्वर को भी गुण-शक्ति से बना सकता हूँ और यदि चाहूँ तो देव जैसे विप्रास पर्यंत को उसके स्वाम से हिला (हटा) सकता हूँ।

(६) तू मुझसे कह दे गोपन न कर, कि कौन-सी बीड़ा तेरे जी में है। (७) क्या तेरे मन में सहस्र (परमार्थ का साध) उत्पन्न हुआ है अथवा किसी ने कुछ दिया (कियाया) है?”

टिप्पणी—(२) अगम < आकाश। (३) भेद < भेद। (४) मोह < मोह्य = छिन्ना।

[१६०]

महन्^१ आत बह्नी रम भरी । सुनन्^२ जोड आण्ड गहमरी^३ ।
अपनें दुक्क^४ दुग्गे जो^५ पाएमि । सुहिन^६ बचा मम बचति^७ मुनाएसि ।
बहेमि कुंठर जा जिवन^८ पन्नाय । तिरियहि लागि अनि ग्योव^९ अवारम ।
तिरिया जगत न आपनि^{१०} बाहू । तिरियहि^{११} पम कोइ लह^{१२} मलाहू ।
तिरिया पम जीय^{१३} जह^{१४} एण्ड^{१५} । सँवर मुवा जैम^{१६} फम पाएउ ।

तिरियहि आपनि^१ क क जगत न जानउ^२ कोइ ।
जनम जो अंकित माचहि^३ नीब वि मयु रस^४ होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए महर्षि। २ ए सुंभर। ३ ए आये बहूबरी।

(२) १ ए मैं यह पाछ नहीं हूँ। २ ए दुगिया जै। ३ रा तान ए लता।
४ ए जो बहि।

(३) १ रा जगन। २ आ जीउ ए जीव। ३ आ निरी लागि कम बरमि ए
विषा लागि का ग्योवि।

(४) १ ए भई बहि। २ आ निरी ए विवा। ३ ए बहू भई।

(५) १ आ जीउ ए जो। २ मा ए जीवम। ३ ए आये। ४ ए संभ।

(६) १ ए विवा जो आरम। २ ए जग बनि जन्म।

(७) १ आ जो जगज मयु नीबन ए जो जो जिवन नीबिरी। २ ए निवरी
मयुरी।

अर्थ—(१) महर्षि (ब्रह्मर्षि) ने जब [इन प्रकार की] रत्नीनी बात कही उसे मुझने ही [बुझा का] भी जर आया। (२) अपने पुत्र में उसे जब बुझी पाए, पुत्रार ने स्वयं ही कहा वह हर तन मुवा ही। (३) [उसकी बहानी सुनकर आता है] कहा “हे पुत्रार, अमृ में वह जीवम एक [अमृत] बरार्थ है। उसे तू रत्नी के लिए खर्च ही न ली बीटी। (४) रत्नी अमृ में रत्नी की जरूरी नहीं हुई। रत्नी के प्रेम में कोई भी तन नहीं बाधा है। (५) जिसने भी रत्नी का प्रेम ही में मयाया उगने लैवम के एक के लयाम कम बाधा [जो उगने कम के लयार होने पर रत्नी रत्ना अमृत बरार्थ बाकर विराज होता है]।

(१) स्त्री को अपना करके जगन् में किसी ने मुक्त नहीं किया है। (७) जम्भ (जोवन) भर यदि जीव को जगन् से लीजिए तो भी क्या वह मधु-रस (मधुर) हो सकती है?"

टिप्पणी—(२) मुहिन < म्बज। (४) माह < काम। (५) मेकम < गहननी। (७) भीव < निम्ब।

[१६१]

जो मल होन^१ निगिया बबहा^२। तुरकी भाव^३ नहि^४ कहन माव^५।
कोइ न मका तिरिया^६ जग मापी। निगिया सा^७ आपनि^८ रूप विपापी।
तिगिया जगन^९ माहि राकसिनो^{१०}। जनि पतिपाहि^{११} ऊपर दनि^{१२} वनी।
जो राख ती बिरह^{१३} जार। जो बिरच^{१४} ती जिन^{१५} मह मार।
ऊपर निरम^{१६} पुनिब दही^{१७}। मानर म्याम अभावम जही^{१८}।

तिरिया बांट कनुकी और ओह^{१९} हुन बार^{२०}।

प्रमट मरुप^{२१} दनि जनि^{२२} भूनि^{२३} हाहि^{२४} अन बकार^{२५}॥

पाठान्तर—(१) १ ए हाइ। २ रा तुरक के भाव मा। तुरकी मया ए तुरकी भावा।
३ ए में यह गद्य नहीं है। ४ ए बही। ५ ए तपाक।

(२) १ मा बाहु न लके निरी ए बाहु न मरी (< मरे प्रारम्भी निरि)
विआ। २ ए में यह गद्य नहीं है। ३ मा भारवि ए जीवन।

(३) १ ए जनि। २ ए माह राकसिनी रा माहि रसिनी मा महा कपिनी।
३ मा पतिपाहि ए पतिमाहि। ४ रा म यह गद्य नहीं है।

(४) १ ए जो नहि रचै। २ ए तोवन।

(५) १ मा म^१ ए बेहा। २ मा छई ए बेहा।

(६) १ मा निरी बांट केनुकि नर मरुप ओह^{१९} ओह^{२०} बार ए निवा बांग कनुकी
और ओह^{१९} हुनी बार।

(७) १ ए वान कर। २ ए दनु कै। ३ मा भूनि। ४ ए होइते। ५ ए
बिकार।

अर्थ—(१) यदि स्त्री का व्यवहार अच्छा होता तो मुझे भावा में उसे बाक अपना
करने वाली (< माहेक = चन्द्रकुली) न कहते। (२) संसार में स्त्री को कोई नहीं साथ करा
—उन स्त्री को जो कप-व्याधि की ओजवि है। (३) स्त्री जगन् में राजनिनी है ऊपर ने इसे कनी-
टनी बेनकर [स्त्री को] इसकी प्रीति न करनी चाहिए। (४) यदि यह अनरुप होती है तो
बिरह में जगानी है और यदि अत्रमग्न होती है तो समय में मार जानगी है। (५) यह ऐसी होती है
कि त्रिमरा है ऊपर से पुनिमा [की राशि] के समान निर्मल किन्तु नीचे से अनावरता [की राशि]
के समान ध्याम होता है।

(६) स्त्री बेनकी का बाँटा है है काम प्रमट, तु जतमे पीछे हट (डूर हो)। (७) जगना
प्रमट (अपनी) स्वयं बेनकर न मूल, अंत में तुम विचार ही होया (हाथ लपेया)।"

टिप्पणी—(१) माह < माहक = बंझमुनी। (२) ओषधि < ओषधि। (३) पतिमा < पतिम < प्रति + इ = विश्वास करना। (४) राध < रण्य < रण्य = आसक्त होना अनुसक्त करना। (५) काँट < कण्टक = काँटा। ओहट < ओहट्ट [दे०] = अपसृत पीछे हटा हुआ। (७) बेवार < बिवार।

[१६२]

निस्ति^१ परत खिन^२ चित गुन हरे^३। ग्यान^४ हानि असपरमहि^५ कर^६।
जवहीं सुरत होइ निजु जाना^७। क्या मूर तब भय^८ पराना^९।
जनि पतियाहु^१ त्रिया^२ जग भसी। पुरुष^३ भौर बहु^४ बनुकि बसी।
आपन सुग जहवां सहि^५ पाव। अधिक तिरो^६ पुरुषहि^७ जित^८ साव।
बरवस पम कर बरियाइ। प अपनी सब काइ न ताइ^९।
बहुं जुग त्रिया^१ न आपनि बूमहि^२ मनहि गियान^३।
तिरियहि^४ प्रीति लागि जनि गोवसि^५ अवरिया कुंवर अपान^६ ॥

पाठांतर—(१) १ मा दिष्टि। २ ए मन। ३ मा मह हई ए परहरई। ४ मा ए क्या। ५ रा अति पुरुष की बटे, ए तेहि पुर्ण कि करई।

(२) १ ए जानी। २ ए भाव। ३ ए परानी।

(३) १ ए पतिमाहि। २ भा निरी। ३ भा पुरुष। ४ ए बोह रा अनु।

(४) १ ए गुन जी बोह लागि मा गुन जहा सहि रा गुन बहवो लनि। २ ए त्रिया। ३ भा पुरुषहि। ४ ए मन।

(५) १ ए कि लाई, रा गुमाई।

(६) १ मा निरी। २ ए मपुति। ३ भा ए देपु मन ग्यान।

(७) १ मा तिरी ए त्रिया। रा भा प्रीतम (< प्रेम कारकी लिंग) लवि जनि माननि ए प्रेम लागि जनि। ३ मा ए बिरया (त्रिया—ए) दुरत अगान रा अवरिया कुंवर परान।

अर्थ—(१) वह दुष्टि करने ही लय [जाय] में चित के गुण हर लेती है और स्वयं से ज्ञान हानि करती है। (२) जब [जगमे] मुरत होती है तब वह बाग भतीजांनि जानी हुई है वह बाग के मूल में भी प्राय होता है उसको जानी है। (३) वह प्रतीति न करो कि इसी अणु में भनी होती है नुरा अवर के लिए वह बेगरी को बनी होती है [जिनके बाँटों में बिपवर अवर अपने प्राय गँवाना है]। (४) जग (अब) तब वह अपना गुण प्राप्त करती रहती है वहाँ (तब) तब वह पुरुष से अधिक भी लगानी है। (५) वह नुरा से बरवस और बलपूर्वक प्रेम करती है रितु यह तब प्रेम वह अपनी काँट (गरम) तक ही करती है।

(६) इसी कारणों वगैरे में अपनी नहीं रही है पर बाग नू मन के मान में समझ ले। (७) हे कुंवार इसी की प्रीति के लिए नू जाना न लो।

टिप्पणी—(१) अवरण < गरी। (२) नुरा = दीपन स्त्री-मधीन। पतिम < पतिम प्र + इ = विश्वास करना। (३) काँट < कण्टक (?) = काँटा। (४) अवरिया < वरा। आन < आन < आन।

[१६३]

त्रिषु द जनि दुष्कर्मणि कुमारः । तिरिया पम अविद्या उपमाय १ ।
 एक निमित्त तिरिया जी बर । नारि व पुष्प सहस्र बज मर २ ।
 परिहरि कुव तिरिया अवमरी ३ । तिरिया नई जगत कहि करो ।
 बाए अग तिरिया अवनार ४ । सतन बाए जानु कुमार ५ ।
 ओ गरम पुनि बाए कहाई ६ । मूख सो जा दाहिन छाई ।
 तिरियाहि मनै अलच्छन एक मुलच्छन मार ७ ।
 महापुष्प जेत जगत मह तिरियाहि तें अवतार ८ ।

पाठान्तर—(१) १ ए विमर्ष जनि दुष्कर्मणि कुमारः । २ मा. कुंभार ए जगार । ३ य. तिरिया पम अविद्या उपमाय मा त्रिषु पम विद्या उपमाय ए जनि दुष्कर्मणि कुमारः ।

(२) १ य निवृ । २ ए. व बर्झाको वा पत्र है— विद्या वेम विद्या उपमाय । विद्या ठाई म बर्झाय ।

(३) १ मा. निनी ।

(४) १ मा. अवतार । २ मा. कुंभार ।

(५) १ ए जीव प्रम । २ य ए पुनि । ३ मा बाए कहै ए बासी कहै । ४ ए पुनै होय मा । ५ मा. कहै ए कहाई ।

(६) १ म मर्ष । २ य. मुलच्छन ।

(७) १ मा जो ए मे यह गद्य नहीं है । २ ए अग माहै । ३ मा. तिरिया तें ए विमर्षी त ।

अर्थ—(१) हे कुमार, जीव (प्राण) देकर दुष्कर्म [कर्म] के संसार में स्त्री का प्रेम व्यव [को बल्य] है । (२) एक पल के लिए भी यदि स्त्री [को संगति] की जाती है तो नारी और पुरुष दोनों सहस्र बज [भाग] से मरते हैं । (३) हे कुमार, मु स्त्री की अवमरी (अवमर) को छोड़ दे स्त्री संसार में विमर्षी हुई है ? (४) स्त्री का अन्ध ही [विद्या के] बाए अग से हुआ है अन्ध, हे कुमार, उसे लईव बाए (प्रतिबन्ध) जान । (५) और प्रेम की उपमा 'बासी' कहने हैं वह मूर्ख है जो उसको दाहिने (अनुकूल) लगाया (समझता) है ।

(६) स्त्री में सभी कुछ अलच्छन (बुरे लक्षणों का) होता है केवल एक ही गुणत्व—मार होता है (७) और यह बात है कि संसार में विमर्षी भी महापुष्प [हृत्] हैं उनका अन्ध स्त्री से [हृत्] है ।

श्रुति—(१) अविद्या < विद्या । उपमाय < उपमाय । (२) बज < बज्र < बज । (३) अवमरि < अवमर (?) = उपमर । (४) गरम < प्रेम । (५) जेत < जेतित < दाहय = जितना ।

[१६४]

अनल बचन भुनि रहा म^१ गएऊ । कुंवर जीउ बिस्मै बिछु^२ भएऊ ।
 कहसि महत^३ स बलि सहदऊ । कहतेहु^४ और कहत जी कोऊ ।
 पम पीर जहि जिय म पिरानी^५ । कहसो भलहि^६ असि^७ बात अमानी^८ ।
 तोहि मुह^९ अस कसै बहि जावा^{१०} । जानसि^{११} तीनि भुवन को^{१२} भावा^{१३} ।
 में अपान अब बसत^{१४} छोई । सिरवन सुनौ जी घट जित^{१५} होई ।
 पम पय सुनु महत^{१६} में बसत^{१७} जित^{१८} छोई ।
 सुनौ सिक्क लौ लोरी जी घट म^{१९} जित होई ॥

पाठान्तर—(१) १ भा अन कि बचन बिनु रहि महि ए अनयन बचन भुनि रहि न ।
 २ भा कवर (< कुंवर) बियहि बियसौ एक रा कुंवर किरौन भुनि
 जिय महि ।

(२) १ ए ए महवा । २ ए बहि लो ।

(३) १ ए जीउ समाना । २ ए कहत मले रा कहि छोई । ३ लो । ४ ए
 अपाना ।

(४) १ ए एहि नहै । २ ए आऊ । ३ रा जानत ए जानौ । ४ भा लोक
 नर ए भुवन वा । ५ ए आऊ ।

(५) १ ए में आपन सब बीछा । २ रा सुनौ सिक्क जी जिय घट ए
 निग बूबि मुनी जी र जित ।

(६) १ भा महवा । ए महवा २ ए बीछा । ३ रा अब ।

(७) १ ए निघा । २ ए मो ।

धर्म—(१) महता (महामाय) के इन दोय [दिलाने] वाले बचनों को सुनकर [कुमार
 से] रहा नहीं गया; कुमार के भी में कुछ बिस्मय (चिन्ता) हुआ । (२) जतने कह्य “हे महता,
 तू बलियुग का सहदेव है [तुझे में कुछ नहीं कह सकता हूँ] यदि और कोई [इत प्रकार की बात]
 कहता तो मैं [कुछ] कहता । (३) प्रेम की बीड़ा जितके भी मैं नहीं हुई वह अमानी मते ही
 ऐसी बात बहैया; (४) बिनु तेरे भुज ते ऐसी बीजे कहा गया—जो तू तीनों भुवनों के भाव अलना
 है? (५) मैं तो अप्रपन्न लो बीछा हूँ; मैं तेरी निष्ठा मुनता यदि [मेरे] शरीर में बीछ होता ।
 (६) हे महता (महामाय) मुझ में प्रेम-वच में अपना जीव लो बीछा हूँ; (७) तेरी निष्ठा
 तो तब मुझ यदि मेरे घट (शरीर) में जीव हो।”

टिप्पणी—(१) अनर < अनयन = रोग बीष । (२) (६) महता < महामाय । (३)
 अमानी < अमानि । (४) निगवन < निगवान < निगम (७) निक्क < निघा ।

[१६५]

ताहि जिय पम म उज्जा^१ आई । वा जानवि^२ दुग वाय पगई ।
 मुनं गुमान जाि पगु^३ न मोरा^४ । जानि बूझि नम नमि निहोरा^५

बिरह अग्नि मह^१ बनक सोहागा । तोहि तन आब^२ धूब^३ नहि मगा ।
 क्या भमम मह^१ भोष उहानी । कौन मुन तुम्ह निक्क^३ कहानी ।
 गए साप^१ का धुमनि(?)^२ ठठाबनि^३ । जानि बूमि बन^४ माहि बीराबनि^५ ।
 उठहि मह^१ पां रागी म दुहु जग तोहि आम^३ ।
 जानि बूमि बग्नस तुह^१ बांधनि^२ जाय क मोन बनाम^३ ॥

पाठांतर—(१) १ भा उपजेत। २ भा. ए जाननि।

(२) १ ए. मुजाना। २ रा कम देनि निहोर ए का हूहु बयाना।

(३) १ भा निरम अग्नि में ए बिरह भावि मैं। २ भा ताहि पेहि भागि
 रा जीहि बांध ए ताहि तन बांध। ३ ए बुझा।

(४) ए मैं रा होइ। २ ए तारि सीक।

(५) १ रा बने बाप ए गए नाय। २ भा बंजन ह बनी। ३ भा. ए
 ठठाबनि रा ठठाबहि। ४ भा ए का। ५ रा माहि बीराबहि।

(६) १ रा जेहि। २ रा भावि मुन। ३ ए मैं ती बेर ताहार।

(७) १ ए ते। २ ए मैं यह मर नहीं है। ३ भा जाय कि माट बजाय
 रा जाय के मोट बजाय ए गांठे बांधि बजार।

अर्थ—“(१) तेरे जो मैं प्रेम आकर उत्पन्न नहीं हुआ इसलिये तू पराए [के प्रेम] की बात
 क्या जाने? (२) तू तो जानी और अनि कनुर है भोला नहीं है। तब तू जान-बूझकर भगवती क्यों
 निहोर दे (निवेष्ट कर) रहा है। (३) बिरह की अग्नि में मैं बनक (शरी) के साथ मुद्राया बनकर
 बड़बुझा हूँ (अब कि) तेरे शरीर में [बिरह-अग्नि की] आँच और [उपरा] धुमनी भी नहीं लपटा
 है। (४) मेरी काया मर रही है और उसकी राख भी उड़ गई है। तब तेरी गिला की
 कहानी कौन मुने? (५) साँप के आग जाने पर उसकी बाँधी (विष) क्यों पीछता है? जान-बूझ
 कर तू इसे क्यों पावल बना रहा है?”

(६) हे बहना (बहामात्य) उठ, मैं तेरे पैरों लगता हूँ दोनों सोंरों में मैं तेरी आत्मा
 करता हूँ (७) [एमी बघा में] क्यों तू जान-बूझकर जाय की मरती में बाधु बाँध रहा (मरहोमी
 बल कर रहा) है?”

ग्लिगली—(२) मुजान < मुजान। निहाग < निहाड [३] < निरम निवारण। (३)
 धूब < धूम। (६) महना < मगमात्य।

[१६६]

मठिन बिरह दुग जान न काई । बिग्न पिपा न्ह कसी^१ जाई ।
 जो आब मा कह मोहाती । अधिनी उठ जाय मुनि^१ गानी ।
 जहि^१ त्रिप भाजि^२ ममानउ^३ कोई । प्राण माय प निमरउ माई ।
 बुधि कि बिरह मोउ^१ मग्गरि^२ पाव । बिग्न पीन बुधि^३ निया मुजान ।
 मूग्य लोग न जानहि^४ एमी । जहाँ बिरह मह मिय बुधि बनी ।
 बुद्धर मरीर मो भोगुन^१ जहि जय मय^२ न मूरि ।
 मूरग ममहि बिरह मैं^१ मूग्य एताबहि^२ धूरि ॥

पाठाभर—भा ए म जग्युवत अर्द्धाभी ४ तथा ५ परस्पर स्थानीतरित है।

(१) १ ए बहु ईसमि।

(२) १ ए बिच्छु तन। २ रा में अर्द्धाभी का पाठ है —

पम मेरु जो पित होइ आई। जमकदे का मोहि बपारी।

(३) रा ए बेहि। २ मा त्रिय भाइ, ए जिबाइ। ३ ए समाना है। ४ भा. ए निमरे।

(४) १ रा. बुधि कि बिच्छु मों ए बुधि बिच्छु की। २ रा ए भा सरवरि। ३ ए मिसु।

(५) १ ए मूरग। २ भा जाने ए जानै।

(६) १ ए मोनुस। २ ए बेहि त्रिय जगत।

(७) १ मा सब बिच्छु में ए सब बरिआई। २ मा कि हांनहि ए कि हनि।

अर्थ—“(१) बिच्छु का कुल कठिन होता है यह कोई नहीं जानता है कि बिच्छु की दया कौन होती है। (२) [बिच्छु के पाठ] को अस्ता है वह उसे मुहाने वाली बातें करता है किन्तु उन्हें मुनकर [बिच्छु की] छाती में [बिच्छु की] ब्याला और भी अधिक [प्रयत्नित हो] उठती है। (३) जिसके भी में कोई [अपपात्र] यदि एक बार आ समाया तो वह उसके प्राणों के साथ ही [उसके मन से] निकला है। (४) बुद्धि बिच्छु से कहीं बराबरी कर सकती है? बिच्छु का परम बुद्धि के बीचक को बुसा बैठा है। (५) मूर्ख लोग ऐसी [विषय स्थिति को] नहीं जानते हैं [इसीलिए वे उपदेश देने रहते हैं] किन्तु जहाँ बिच्छु होना है वहाँ तात्ता और बुद्धि का क्या प्रयत्न? (६) कुमार के शरीर में वह बिच्छु है कि जगत् में न जिसका मय है और न जिसको मूल (ओषध) है। (७) वे सभी मूर्ख हैं जो [इस प्रकार के] बिच्छु [की अवस्था] मेरे मूर्ख को मूल से छिपाना चाहते हैं (बिच्छु की पीड़ा को सामान्य उपचारों से शांत करना चाहते हैं)।”

(६) कुमार के शरीर में वह बिच्छु है कि जगत् में न जिसका मय है और न जिसको मूल (ओषध) है। (७) वे सभी मूर्ख हैं जो [इस प्रकार के] बिच्छु [की अवस्था] मेरे मूर्ख को मूल से छिपाना चाहते हैं (बिच्छु की पीड़ा को सामान्य उपचारों से शांत करना चाहते हैं)।”

टिप्पणी—(२) शार < पाला। (४) दिया < बीजाय < बीचक। (५) मिर < मिरा < मिला।

[१६७]

जो मरन भग कीह बिषाग^१। यन्न मो जा न बाज हमाग^१।

बहुन बचन भी बहुन उपाई। न दगनि पुनि भागनि मुनार्द^१।

जा निरम त्रिय^१ भाउ निरागा। नउ मरन^१ मिनु परिहरि भागा।

जाद राय^१ मउ^१ बहउ^१ पुबारी। बगि गिरिह मे पून गोपरी।

गुनय राय^१ ब्याहण होइ पाया। अमर भाउ निउ^१ बरग न भाया।

गय रारि^१ दुग या मरि^१ भाउ^१ अरोर।

गगन गगर विगमाग^१ राज गिरिह मुनि^१ रोर ॥

पाठाभर—भा म दग छंद के स्थान पर जाने का १ १ है या वही भी है।

भा वे उर्ध्वन कोपी तथा नीचरी अर्द्धाभी परस्पर स्थानीतरित है।

(१) १ भा निर निरउ। २ गुन पूर्वार्ध १५५४।

- (२) १ रा एक न पाह बनाई (?) ।
 (३) १ रा निरखी मिठ। २ मा भुंवर।
 (४) १ रा राज। २ रा मों। ३ भा बहमि।
 (५) १ रा राज। ७ भा खेठ मुह।
 (६) १ रा राज राज। २ रा जी।
 (७) १ रा सम रोवा। २ रा वस।

अर्थ—(१) महता (महामात्य) ने जब इस प्रकार बिचार किया कि यह बैदना बहु है जिससे उसका कोई संबंध नहीं है (२) बहुत सी बातें बहुत से उपाय और अपना गुपीयन करके उसने देव लिया। (३) जब वह निश्चित रूप से भी में निरास हो गया तो महता (महामात्य) [एही लही] आत्मा को भी छोड़कर बला। (४) उसने जाकर राजा से पुकार कर कहा “सीधे घर में जाकर पुत्र की गुहार मगिए (रक्षा कीजिए)।” (५) यह सुनने ही राजा व्याकुल होकर बौड़ पड़ा; वह बलबला गया और [उसके मुख से] कोई वाक्य न निकला।

(६) राजा ने रो-बिस्ताकर बुद्ध का बहुत किया और [राज] मंदिर भर में अम्बोरा हो गया (७) और जब राजगृह का कोलाहल (शोर-गुल) [नगर-निवासियों ने] सुना तो सारा नगर बिबाह में पड़ गया।

टिप्पणी—(६) पारि < पडि < पडि = बिस्ताह। (७) सगर < सगर। रोर < रोस < रव = कोलाहल।

[१६८]

राय^१ पाग मिर मुह^२ ब^३ भारी । गज मदिल^४ राबहि^५ बर भारी ।
 बबला बाह परी ल पाऊ^६ । बहमि^७ पून का भण्ड^८ बिपाऊ^९ ।
 मोहि^{१०} पून अनि^{११} बरहु निरामा । दुहु जग मह^{१२} मोहि तारी^{१३} आसा ।
 पीर कहहु मांता बलिहारी । बहि औगुन तुम्ह भाण्ड^{१४} भिम्बारी^{१५} ।
 बीनि अगिनि जहि^{१६} त्रिभुवन जरई^{१७} । बीन सक्ति^{१८} मोर अम जिउ हरई^{१९} ।

मांत पिता मुग^{२०} देवत उपजी दया^{२१} बुरब^{२२} जीय ।

मन उबारि बहसि^{२३} दुन बरबम^{२४} जो मधुमासति दीय ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा राय। २ भा मरि। ३ भा मरिर। ४ ए रोई।
 (२) १ रा पावा ए पाऊं। २ भा कहे। ३ ए भी। ४ रा बिबावा।
 (३) १ रा मुहि। २ ए भा। ३ ए कुनो जुग। ४ भा मोर ताहि लयि
 रा मेरी लीरी।
 (४) १ भा तुम्ह होहु बुरारी ए (तुम) भैहु भिगारी।
 (५) १ ए बीनी भावी ए बीन औगुन जेहि। २ भा जरेऊ। ३ ए बीनेरति।
 ४ ए मोरि आम जे। ५ भा हरेऊ।
 (६) १ ए के। २ ए राया उरज।
 (७) १ ए कहा। २ रा ए म यह शब्द नहीं है। ३ रा मोहि मधुमासति
 दीय ए मधुमासति भिन्न लीज।

अर्थ—(१) राजा ने अपनी सिर की पगड़ी भूमि पर पटक दी और राज-मंदिर में घेछ मारियां रोने लगीं। (२) कमला (कुमार की माता) ने आकर [कुमार के] पैर पकड़ लिए और कहा “ऐ पुत्र तुम यह क्या बेचेर (बिराघार) हो गए? (३) हे पुत्र मुझे तुम निराश्रय न करो दोनों जगत् (मृतलोक और परलोक) में मुझे तुम्हारी ही आशा है। (४) माता बलिहार जाती है, तुम अपनी पीड़ा बताओ [हमारे] किस अवयुध से तुम भिखारी बन बैठे? (५) बई कौन सी अग्नि है जिससे [मेरे लिए] त्रिभुवन (मेरा धुक-सौख्य) जल रहा है वह कौन सो शक्ति है जो इस प्रकार मेरे प्राण (तुम्हें) हर रही है?”

(६) माता-पिता का मुख बेसते ही कुमार के जी में क्या उत्पन्न हुई (७) और उसने मेघ उपाड़कर वह कुश बताया जो बरबस ही मधुमासवी ने दिया था।

टिप्पणी—(१) यह < ममि। (४) पीर < पीडा।

[१६९]

फुति^१ बहु बयन पिता सठ^२ राई । म अपुनै^३ जिउ यसठ^४ राई ।
 निन दस राय रजायसु^५ पावौ । आपन जीउ बूडि ल आबौ ।
 दहु जग नगर महारस कहा । मोर जीउ हरि लीन्है^६ तहां ।
 आणसु होइ जाइ जिउ^७ हरी । जिउ^८ मिलि क्या बात^९ सब^{१०} फरौ ।
 मर सो बरम जागि मोहि^{११} जाई । सपनै^{१२} पेम प्रीति जइ^{१३} लाई ।

मायसु होइ जाइ जिउ हरी मोर^{१४} जग जिवन^{१५} सिराम^{१६} ।

बरम होइ^{१७} बबही^{१८} मकु दाहिन मोहि मिलि जाइ सो प्राण^{१९} ॥

पाठांतर—भा में डार्युस अर्वाली २ १ ४ का बम है ४ २ १ ।

(१) १ भा रा ए पुनि। २ रा सो। ३ भा ए आपन। ४ ए बैठा।

(२) १ भा दिन दन जो १ रजायेन रा राज के दिन दन आणु।

(३) १ भा लीएउ ए लीगठा।

(४) १ रा जिय। २ रा जिय भा जइ। ३ भा क्या पात ए क ग्यान।
 ४ ए बै।

(५) १ भा माग ए महु। २ मयन के (?)। ३ भा जिन ए जो।

(६) १ भा बाहि। २ ए म यह घर नहीं है। ३ ए जिनन रा जीउ।
 ४ रा हैयन।

(७) १ भा हाहि। २ भा ए म यह घर नहीं है। ३ भा बाहि बरान ए
 जाइ वरान।

अर्थ—(१) फिर कुमार पिता ने रोकर बहने लगा “मैं अपने-आप [अपना] जी लो (बैठा) बैठा। (२) [यदि] वन दिनों के लिए राजा का राजावैरा धाई, तो मैं अपने जी को हूँ लाई। (३) क्या नहीं जगत् में महानगर नहीं है; वहाँ [एक में] मेरा जीव हर निवा है। (४) यदि आवेगा हो तो [वहाँ] आकर अपना जीव हूँ और जीव के मिलकर जाया की सारी बानें बरान

केर लाजें। (५) संभव है कि मेरा वह कर्म जग जाये जिसने (जिसके प्रसाद से मैंने) स्वप्न में प्रेम प्रीति लगाई।

(६) यदि [आपका] आवेष्ट हो तो आकर मैं अपना जीव कुँडू जगत् में मेरा जीवन [अब] समाप्त हो गया है; (७) कभी संभव है कर्म (भाग्य) मेरे बाह्ये (अनुकूल) हो जाये और [उसके परिणाम-स्वरूप] मेरा वह प्राण मुझे मिल जाये।”

टिप्पणी—(२) रजापसु < राजावेष्ट। (४) (६) आपसु < आवेष्ट।

[१७०]

मांठा पिता सुनत गह भर^१। कुवो^२ कुवर के पायनि^३ पर।
कहन्हि^४ पूत जानहु^५ परवाना^६। हम बुहु पट कर सुमही^७ प्राना।
वर हम पूत^८ अडारहु मारी। निरिय वस जनि जाहु अडारी।
राजपाट सन मिलिहू मानी^९। हम तुम्ह बामु^{१०} मरख हिय फाटी।
आइठ धूप पियरि अम धरें^{११}। सरबन मोर^{१२} तुहीं दुख करें^{१३}।

हम^{१४} कह^{१५} निरिय वस अति दारुन पूत^{१६} न छाड़हु भीर।

अस^{१७} समुद कर^{१८} मोहित तुम्ह बिन लाव का^{१९} तीर ॥

पंजाब्द—(१) १ भा ए गहबरे। २ ए बोरन। ३ भा पाल ए पाकह।

(२) १ ए कहेसि। २ ए जानेसि।

(३) १ रा बिठ मोर। २ ए हम बूतहु कर पट तुह।

(४) १ भा पाटी। २ रा सोहि बाबु ए तुह बाबु।

(५) १ ए मूर पिजग। २ भा हम बेदे ए अव बेप। २ रा में यह पख नही है। ३ रा तुहि पुष केरे ए तुहरे बी केरा।

(६) १ वका २ भा ए में ये हो पख नही है। ३ रा तोर।

(७) १ भा जग। २ ए बी। ३ ए तुह बिनु को खाई।

अर्थ—(१) [कुमार की ये बातें] सुनते ही [उसके] माता-पिता का भी भर आया और दोनों कुमार के पैरों पर निर पड़े। (२) उन्होंने कहा “हे पुत्र यह प्रयाण [तब] मात्र तो कि हम दोनों के घटों (शरीरों) के तुम्हीं प्राप्त हो। (३) अने ही हमें हे पुत्र तुम मार डालो किन्तु इस [हमारी] बुद्ध वयस् में हमें डाल (छोड़) कर न जाओ। (४) राज-पाट सभी मिट्टी में मिल जाएगा, और हम भी तुम्हारे बिना हृदय के कट जाने ॥ नर जाएंगे। (५) हमारी आयु (अवस्था) [संघ्या की] पीली धूप है यम (बाल) ने हमें घेर रक्खा है हमारे कुन्नों के [लिए] तुम्हीं यक्षकुमार हो [जिसने अपने अंधे माता-पिता की उनकी बुद्धावस्था में सेवा की थी]।

(६) हमको, अत्यंत दारुण बुद्धावस्था है ऐसे संकट के समय में तुम हमें न छोड़ो (७) जैसे समुद्र [के संतरण] के लिए मोहित (अहाउ) होता है [उसी प्रकार हमारे लिए तुम हो], तुम्हारे बिना हमें कौन [कुल-सागर के] किनारे लगावेगा?”

टिप्पणी—(२) परवान < प्रमाणा (३) बीग < वयम्। (४) बाबु < बग्ग < बग्ग = बिना। (७) बाजिन < मोहित [६] = प्रवहण अहाउ।

[१७१]

त्रियं^१ मग्नेस जनि^२ बरहु हमार। आइउ मोर दीप^३ भिनुसार^४ ।
 मंता पिनहि जनि^१ बरहु मिरामा । बिछरिबहुरिकहि मिरनक^२ मामा ।
 जो म यह बलि^३ परिहरि जाऊ । ताहि सेउं^४ जियन रह जग^५ नाऊ ।
 सुन बियोग जगरथ^६ न नाइ^७ । हम^८ पनि^९ मरब पूत सुम्ह ताइ^{१०} ।
 हम वूनो पहिजहि^१ जिउ मारहु । तो सुम्ह^२ पूत बिदम सिपारहु^३ ।

मोरें^४ जियन म^५ बिछरहु^६ मोरें^७ और न बोइ ।

हिया फाहि^१ ररि मरिहो^२ संवरि गवरि^३ गुन^४ रोइ^५ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए जिब। २ ए डी। ३ दीपन। ४ रा उजियाए।

(२) १ रा मान पिनहि जनि ए माता पिना न। २ ए बिछरे बहुरि प
 मिनना रा बिचुरे बहुरि मिमिय केहि।

(३) १ ए बारी। २ ए सुह मी। ३ रा जगन रहे जग।

(४) १ भा ए जगरथ। २ ए नाऊ। ३ भा ए मी। ४ भा रा ए पुनि।
 ५ ए तोरि ताऊ।

(५) १ रा पहिजे ए पहिजे। २ रा जिय। ३ ए सुह। ४ ए निपावहु।

(६) १ ए मोहि। २ भा जनि। ३ ए मारहु। ४ ए मोरे।

(७) १ ए गो हया। २ भा तोहि ए सुह। ३ ए हा।

अर्थ—(१) "[अपने] जो मैं [अब] हमारो अरोला न करो; हमारो आयु (अवस्था)
 तो लबरे का दीपक है। (२) माता-पिता को तुम निराला न करो क्योंकि एक बार बिचुरे पर
 रितको पुन मिलने को आया हो सकती है? (३) यदि मैं यह बलि (जगन्) छोड़कर बला ब्राह्म
 तो [मृत] भनी तक आया यह रही है कि] तुमसे (तुम्हारे द्वारा) जगत् में मेरा नाम जीवित
 रहेगा। (४) पुन (अवस्था) पुन-बियोग में है पुन जगरथ की जाति हो हम भी तुम्हारे स्थि
 मर जायेंगे। (५) हम दोनों को जीव से तुम रहित हो नार बाले, तब तुम हे पुन बिदेग आओ।
 (६) मेरे जीने-जी तुम मुझसे अलग न हो क्योंकि मेरे और कोई नहीं है। (७) [अवस्था]
 हृदय के बट जाने पर तुम्हारे तित्प रदता-रदता और तुम्हारे बुनो की स्मरण करता रो-रोकर मैं
 मर जाऊँगा।"

श्लोकी—(१) आइउ आयु=अवस्था। (२) बिचुर=विच्छिन्=अवन होना। (३)
 जगरथ=जगरथ। (४) रा=रह=रह=रामा विष्णुना।

[१७२]

माता^१ जिन रा^२ जग^३ बहा । बृहत् बान गो तप^४ म^५ रग ।
 पम पम^६ ज^७ गति यति गाई । नृज जग रिउ^८ ममुसहि मरि^९ गाई ।
 जठिन विष्ट दुग गा न संभारी^१ । माणउ^२ गण्य^३ रह अपारा ।
 पन माय^४ मृत भगम जगारा^५ । मरन^६ पन्ति मृदा पहिगारा^७ ।

उदपानी बसि क कर^१ सांटी^२ । गुन किंगरी बरागी^३ ठाटी^४ ।

कंपा मल्लि^५ बिरकुटा जटा परो सिर^६ कस ।

बग कछोटा^७ बांधि क किय गोरस का बम^८ ॥

पाठांतर—(१) १ रा मांठ ए मांठ। २ ए बत। ३ ए कुंवर के कान न एकौ।

(२) १ रा पंठ। २ ए जे। ३ ए दोनों जुग कधु। ४ ए समुन न।

(३) १ मा गा बिसमारी ए जा न मँभारी। २ ए मांगा।

(४) १ मा हाथ। २ मा बड़ाई। ३ ए ए सबन। ४ मा पहिपई।

(५) १ ए उडिबा निकर कीडी (गुल परबर्ती बरष)। २ रा साठी।

३ मा बैरागिन। ४ ए सांटी (गुल० पूर्बर्ती बरष)।

(६) १ ए मा मेबली। २ मा पराई, ए पय जा।

(७) १ मा कछोटी। २ मा बैमेठ मारन बेन ए बैसा गोरन बेन।

अर्थ—(१) माता-पिता ने रो-रो कर जितना-कुछ कहा, उसमें मैं एक (कुछ) भी कुमार के कान में न रहा (बचा)। (२) प्रेम-वच में जिसने भी सुनि-बुधि जो बाली वह दोनों बगल (इहलोक और परलोक) की कुछ (कोई बात) नहीं समझता। (३) बिछह का कठिन कुछ [कुमार से] संभाला न जा सका और उसने [योगियों के] कण्ठ, ईड तथा अमारी मंगे। (४) माथे (सिर) पर उसने बक रज्जा और मुक पर भस्म चढ़ाया भवनों को उसने स्वर्दिक की मुद्रा पहना दी। (५) उदपानी (बल-पात्र-विशेष) को उसने कसकर हाथ में लगाया, और उस बैरागी ने मुक (दांत की वह बनुही जिससे कियरी बनाई जाती है) और कियरी को उसने ठाट लिया (कस कर ठीक कर लिया)।

(६) [उसने] कंषा (मुबड़ा) मेखली और बिरकुटा (बीबड़ा) [संभाला] और सिर के केनों को जटा पड़ गई; (७) बग-कीपीन बांध कर उसने गोरसनाच [या गोरसपंखी योगी] का बेल कर लिया।

टिप्पणी—(१) खपर < कर्पर = भिसापात्र। (४) सबन < भवष। (५) गुन < गुन = प्रत्यंभा धनुष। किंगरी < किंगरी = एक प्रकार की तनी। (६) कंषा = बपड़ी मुबड़ी पुण्डने बस्त्रां से बना आभूषण।

[१७३]

दुग उदाम बराग मेराबा^१ । इन्ह तीमिड^२ तिरमूर गड़ापा^३ ।

ओ^४ रनाछ करि जप मारी । ओ सिगी गिय^५ मल्य मयारी^६ ।

मसाखी गोरन यथोरी^७ । ध्यान धरन मन पीन सुकोरी^८ ।

पम पावरी^९ रासड^{१०} पाऊ । ग्रिग छासा बराग सम्हाऊ^{११} ।

दरसम सागि भस^{१२} सब पर । जीव^{१३} दुख मधुमाञ्जलि केरा ।

ग्यान ध्यान ओ^{१४} आमन^{१५} सवन^{१६} मनन्ह^{१७} सो^{१८} सागि^{१९} ।

दरमन सागि भेस^{२०} मम^{२१} कोहा^{२२} मकु गोरन जा जागि^{२३} ॥

- पाठांतर—(१) १ रा भिसाऊ, ए मेचऊ। २ भा इहू तियहु मिथि ए इहू हीनहु :
३ ए यड़ाऊ।
(२) १ रा में यह छय नही है। २ ए जो। ३ रा मराही।
(३) १ ए बघारी। २ भा ध्यान धरेउ मन पुनि सकोरी ए ध्यान धरे मन पीन
संघारी।
(४) १ रा येम पंथ ए येम पौरि वे। २ ए राखि। ३ भा ए मुभाऊ।
(५) १ रा हिये ए बरस। २ ए ठे। ३ भा जाने ए जे।
(६) १ ए जो। २ रा में यह छय नही है। ३ रा सबननि । ४ भा लै।
५ ए लाइ।
(७) १ भा एठ। २ भा सब ए ठे। ३ भा कीन्दैनि ए फेर। ४ ए
मिति जाइ।

अर्थ—(१) कुत्र उदात्त-माध और बीराम्य को उसने भित्तावर एक दिया इन तीनों का
उत्तने विगल यड़ाया; (२) और उदात्त की उत्तने अपमाना से ली, और घने मे [बाँध कर]
तिनो डाल ली और छोटी अघारी से ली। (३) उसने बीताली तथा घोरत-संधा से लिया और
ध्यान धारण करने के लिए मन और वचन (बंधमाध) को उसने सिखोइ (अप्य विनामों से हटा)
लिया। (४) उसने प्रेम की सड़ाई पर पर रक्खा और युग वर्ष तथा बीराम्य के ताम-सामान दिए।
(५) [प्रियतम के] बयनों के लिए उसने यह सब वेष्ट करता और [सर्वगण] मधुमाखरी के
कुत्र की वाचना करने लगा।

(६) ज्ञान ध्यान तथा आसन करने लगा; अक्षयों और मैत्रों में उसे [मधुमाखरी की] लय
लय गई (७) [उत्तरे] बयनों के लिए यह सब प्रेम उत्तने कर लिया और ऐसा लयने लगा मानो
घोरत ही जाए गया हो।

टिप्पणी—(२) मारी < मानिषा। गिय < बीया। (६) ली < लय = तस्तीनया।

[१७४]

मिड रूप हीमें बरागी। मधुमानति व दग्गन सागी।
मारग जोग मिडि भा^१ होई^२। बहुरि मिने मधुमानति गोई^३।
गुद लगन गउं ली^४ उरगरी^५। गद्व अनाहग^६ गिगरी गात्री।
मधु रूप गउं रम^७ दिन^८ भजा। आवा गोन^९ पीन य^{१०} गया^{११}।
बिष्ट आगि गउं^{१२} लन मन जारेउ^{१३}। पीन^{१४} पानि गउं^{१५} पिष्ट पगारउ^{१६}।

ग^१ गुग रूप मन गहिमान गवन गमानहु यन^२।

मय लगन गउं^३ लाइ ली^४ यमउ गाथ मोन^५ ॥

पाठांतर—(२) १ भा मिडि गुग ए निच निच (< निचि निचि पाणी निचि)। २
ए जोई।

(३) १ भा दग्गन गउं नी ए दग्गन में ली। २ ए उरगरी। ३ रा.
मार के ए अवर। ४ भा गात्री ए गात्री।

- (४) १ रा सों ए मुनि (<सों फारसी सिपि)। २ भा. ए मस। ३ ए म यह राज्य नहीं है। ४ भा गवान। ५ ए तजा।
 (५) १ रा आगि सा ए आगि से। २ ए जारा। ३ ए सैन (बाद म यह राज्य पुन आता है)।
 (६) १ ए कैं रा म यह राज्य नहीं है। २ भा सवन समानेड सीन रा सवन समानेड सैन ए सुनहु मान ज सैन।
 (७) १ ए गुठ मधु बरसन रा मधु रूप सो। २ भा लैं। ३ ए बैस सागि से मोन रा बैटहु साग हान।

अर्थ—(१) मधुमालती के बर्तनों के लिए [निकलता हुआ] बिरक्त [कुमार] सिद्ध होता जाता था। (२) [बहु सोचता था] योग-मार्ग से उसे ही सिद्धि प्राप्त हो जाए और वह मधुमालती पुनः प्राप्त हो जाए। (३) [अतः] गुठ (प्रेम पात्र-मधुमालती) के बर्तनों (ध्यान) से उसने स्वयं उत्पन्न की और तद्वत् अनन्त नार से किनारी सजाई। (४) मधुमालती के रूप (सौन्दर्य) से जिस में उसने रक्त का भजन (आधोजन) किया और [अपने] आवागमन के पवन (प्राणों) को घट में संवित किया। (५) बिरह की अग्नि से उसने तन-अंग को जलाया और पवन (प्राणायाम) के पानी से उसने विट (मरीर) को प्रकलित (गुह्य) किया।

(६) गुठ (प्रेमपात्र—मधुमालती) के रूप उसके नेत्रों में जा कर घोंस गए, और उसके धवनों में उसके बदन समा रहे (७) मधुमालती के बर्तनों से स्वयं बगाकर वह भीन सागररु बँड गया।

टिप्पणी—(१) (७) ली < रूप। (३) किनारी < किनारी = एक प्रकार का तन्नी।
 (५) पकार < प्रभाण्ड = मोना। (६) सवन < अवयव = बान।

[१७५]

मता पिता फुनि^१ आए पासो। दलि कुंवर डर बाढ़नि^२ सांसा।
 ओ मुख दगि^३ छार सपटानी। घोबहि कबल^४ कबल व पानी।
 फहन्हि^५ पूत तुह^६ आस हमारी। राज छाड़ि^७ बत^८ होसि^९ भित्तारी।
 ओ यह हू जत^{१०} अरथ भटारा। अब लहि^{११} म तोहि सागि^{१२} ममारा।
 ओ तुम्ह^{१३} बाज न आव^{१४} आजू। सो हमरें^{१५} फनि^{१६} बीन बाजू।
 अरथ दरब जन परिजन साथ सह^{१७} यहूताइ।
 ओ मधुमालति भेंटहि^{१८} मागि बियाह^{१९} जाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा माता पिता पुनि ए मात पिता मुनि। २ ए काड़ा।

(२) १ ए देग। २ ए पीरा बदन।

(३) १ रा बहिन ए बहहि। २ ए लैं। ३ ए छोड़ि। ४ मा. ए बत।
 ५ ए होड़।

(४) १ मा बीच बहहि तब ए और यह जो। २ ए जगि। ३ ए मैं यह राज्य नहीं है।

(५) १ ए ओ तुह बाज। २ भा आइहि। ३ ए मोरे रा हमरे। ४ रा ए पुनि।

(१) ए संघ सेहू।

(७) १ ए मिलै। २ भा. बियाहहु ए बिबाहेहु।

अर्थ—(१) माता-पिता फिर (तब-तब) उसके पास आए। कुमार को देखकर उन्होंने हृदय से सोस छोड़ी (२) और कुमार के मुख पर राज लियटी देखकर कलाश (कुमार की माता) उसे कल-नेत्रों के जल (अश्रुओं) से धोने लगी। (३) [पिता ने] कहा “हे पुत्र तुम हमारी आज्ञा से सो राज्य छोड़कर भिखारी क्यों हो रहे हो? (४) और यह ज्ञाना कुछ अब-भांडार है अब तक मैंने तुम्हारे लिए सजाता है (५) यदि यह आज तुम्हारे कार्य नहीं आ रहा है तो फिर हमारे किस कार्य का होगा?

(१) मैं अर्थ-व्यय तथा जन-परिजन (भृत्यादि) को बड़ी संख्या में साथ ले कर चल रहा हूँ।

(७) यदि मधुमासती मिलती है तो वहीं जाकर उसे माँगकर तुमसे ज्ञाना बिबाह कर लूँगा।”

टिप्पणी—(१) पाग < पासै। (६) जैन < जैतित्र < जाना = जिनाना।

[१७६]

भोर^१ भए^२ दर परिगह माजा । कोस बीस संघ^३ आए राजा ।
 हाथी घोर बहु^४ सहन भंडारा । कटय मनग गन को पारा ।
 ओ जत जन परिजन सघ^५ आए^६ । कुंवर माथ सभ^७ राय^८ चलाग ।
 पूछन चान महारन दमा । जहवां विक्रम राय नरमा ।
 चलत^९ आग सायर क^{१०} सीरा । अगम अमाप भयाह^{११} गंभीरा ।
 हाथि घार^{१२} दर परिगह ओ सभ^{१३} सहन भंगार ।
 पडा^{१४} कुंवर ग^{१५} ओहित लिंगा को म^{१६} लिन्वार ॥

पाठांतर—(१) १ रा बार। २ ए जी। ३ भा ए संघ।

(२) १ ए बीरा।

(३) १ भा सघ। २ दूरे चलन का गा ए में है ओ जन अत्रिज परिजन गये। ३ ए जी। ४ रा ए राय।

(४) १ रा वहाँ गो।

(५) १ ए जने। २ भा जें। ३ भा अमाप (< अमाप पारंगी निरि) अमाप ए अमाप अरि।

(६) १ ए बीरा। २ ए जा।

(७) १ भा बाउ। २ ग ए नी। ३ ए गाग।

अर्थ—(१) प्रमाण होने पर हम और परिवार (जनवर-भृत्यादि) को राजा के सजाया; बीस बीस तक राजा [कुमार के] संग आए। (२) उनके साथ हाथी-घोड़े और सज्ज भंडार बन्देरा था, और अनेक जीवन के विजय कोन गिन सक्ता था? (३) और जिनने जन-परिजन संग आने के लक्ष्य को राजा ने कुमार के साथ बना दिया। (४) वे सब महारन देग को गुठो हु

बल पड़े, वही बिजमराज नरेन्द्र थे। (५) वे चलते-बसते सागर के तट पर आ गए, जो अमर्य्य ममोष (१) अथवा भीरु गंभीर था।

(६) हाथी घोड़ा बल परिग्रह (अनुचर मृत्पादि) भीरु समस्त सहन (संरक्षणार्थ सामग्री) सदा भाँडार थे (७) और इनके साथ कुमार का कर बोहित (जहाज) पर पड़ा [कर्म का] निग्रहीत मित्रा सहता है?

टिप्पणी—(१) परिग्रह < परिग्रह = अनुचर मृत्पादि। (७) बाहित < बोहित [वे] = प्रवहण जहाज।

[१७७]

बोहित बोधि, समुद्र^१ चलावा। बिधि का^२ लिखा जानि नहि^३ पावा।
मांस चारि गए^४ पानिहि पानी^५। फुनि^६ सो^७ अग्नि बरो निमगनी^८।
समुद्र लहरि दरमहि^९ अंधियारी^{१०}। दिसा^{११} भुक्तान बोहिन कइहारी।
मग अमग महि गएउ^{१२} बिचारी। बोहित परउ भबर मह भारी^{१३}।
परतहि मएउ^{१४} टूक सो साता। सह दिसि बोहित उठ^{१५} अपाठा।

बूझै इष्ट^{१६} मित्र^{१७} जन परिजन^{१८} बूझ^{१९} सहन भजार।
बूझै राज पाट जेत आहा^{२०} बूझै^{२१} सुर तोषार ॥

पाठांतर—(१) १ या समुद्र। २ भा क। ३ भा किछु जानि न ए जानि ना।

(२) १ ए पी। २ रा ए पानी पानी। ३ रा ए पुनि। ४ भा जा ए म यह घण्ट नहीं है। ५ रा म तुमानी माभ है।

(६) १ भा दरमन ए निमि। २ ए अध्यायी। ३ भा विमि।

(४) १ भा मग अमग न जान ए अनु अमग न आह। २ रा परे भबर मह भारी भा परेउ लहर के भारी ए परा लहरि उठ भारी। (तुल पूर्ववर्ती अर्द्धांश का प्रथम अक्षर)।

(५) १ भा प्रथमहि मएउ ए परतहि भी। २ ए उठा।

(६) १ ए बड़ा सरी। २ ए भीन रा में यह घण्ट नहीं है। ३ रा में यह मछ नहीं है। ४ ए बी जो रा बूझत।

(७) १ या बूझै राज नाम जेत आहउ ए बूझा राज पाट जन आहा रा बूझत राजपाट जेत आहा। २ रा बूझत ए बूझा।

अर्थ—(१) बोहित को [इस प्रकार] लाव कर समुद्र में चलाया (आगे बढ़ाया) गया किन्तु बिपाता (नाम्य) के लेख को [कोई] जान नहीं पाया। (२) चार मान तक वे सब पानी पानी (सतमान से) गए तो इसके अनंतर बुधिन का समय निकट आया। (३) समुद्र की लहरें अंधारारूपी दिखाई पड़ने लगीं और बोहित का कर्मचार दिशा भूल गया। मार्ग-अमार्ग विचार नहीं आ सका और बोहित भारी भँवर में पड़ गया। (४) वह भँवर में पड़ने ही सात सो टक्के हो गया, और उसके चारों ओर [लहरों के] आघात उठने लगे।

(५) इष्ट-मित्र जन-परिजन सहन (संरक्षणार्थ सामग्री) भाँडार इवने लगे; (७) जो

कुछ राज-माट (राजकीय बैसब के बिग) या बूबने लगा और सुरप-गुमार (घोड़े) [मारि] बूबने लगे।

टिप्पणी—(१) बोलिठ < बोलित्त [३०] = प्रवहण जहाज। (२) बंहराही < बंहरा। (४) मग-अमग < मार्ग-अमार्ग। (७) गुरे < गुरम = घोड़ा। लोमार = लुगारितान ॥ ७०

[१७८]

सुंदर आग जिय ब परिकुरी^१ । बहुरि ध्यान ब^२ सुमिरसि^३ हरी ।
त त्रिभुवन^४ जग रच्छक साह । बेहि सुमिरौ ताहि छाडि^५ गोसाईं ।
जग जोषन रायब^६ पुनि^७ ताही । बर^८ बूझत धरि बाढ़ मोही ।
जेइ गाइं सुमिरत^९ बरतारा । भए^{१०} तारह^{११} फक्यारि अगारा ।
यहि अनर बिधि मया^{१२} जनाई । बूबर टव^{१३} बूझत मह पाई ।

बिधि परमा^{१४} बूबर के आग बाढ एव उतिरान^{१५} ।

बूझत राजबूबर गहि पपरा^{१६} जान रहा^{१७} घन प्रान ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए त्रिब की पछरी। २ भा पुनि की ध्यान धरि। ३ भा सुमिर।
(२) १ ए त्रिनि भुवन। २ ए त्रि रक्षक। ३ ए बहि जाकी ताहि छाडि।
(३) १ भा वेगहि। २ ए बिनु। ३ ए को। ४ ए वे।
(४) १ ए त्रिगु मने सुमिरा। २ भा भएत ए भी। ३ ए ताके।
(५) १ भा ए बया। २ भा टव।
(६) १ ए उतिरान।
(७) १ भा के पररेत ए एव। २ भा जात छेउ ए जा रागन।

अर्थ—(१) कुमार ने जीने की आशा छोड़ दी, किन्तु फिर उसने ध्यान कर हरि का स्मरण किया। (२) उसने कहा “हे राजाजी [हरि] तु लीनों भुवनों और जग का रक्षक है [इति] हे गोसाईं तुने छोड़कर जिसका स्मरण करो? (३) जग को जीव-जान करने वाला भी तू ही है [इति] हे गोसाईं मैं बूबने हुए को हाथ बझ कर विशाल। (४) जिसने भी गाड़े (तारह के) तारब में से बरतार लेता स्मरण किया उसके लिए अंगारे भी गुप्तराजि का बन गए। (५) इन बीच विशाल ने कृपा दिखाई और कुमार ने बूबने हुए में सहारा पाया।

(६) विशाल की कृपा से कुमार के आगे एक लकड़ी का बूझा उतराया; (७) उसे बूझो हुए कुमार ने तेकर बझ किया और [उमरे] जाने (निराशे) हुए प्राण उमरे पर (घरीर) में रह गए।

टिप्पणी—(१) बार < बार = पहरी। उतिग उतर < उत + ग = उतर आता।

[१७९]

मगउ बर बर^१ बार अयाग । मग-गर्गि जनि उग अयाग ।

जनि^२ ओ बर गगि महु^३ गग । जिय मउ^४ जियन आग पगिग ।

बहुरि न ज्ञान कुंवर का भएऊ । कहाँ हुतें^१ लहरि कहाँ ल गएऊ ।
 लहरि बबर ल^२ तहाँ अझार । जहाँ न चांद मुख उजियारा ।
 लहरि मझार समुंद फिरि^३ आई । कुंवरहि तीर अचत अडाई^४ ।
 फुनि^५ जो चत चित चत^६ परा अह^७ यिसमाए^८ ।
 आगुं^९ पाछु न कोई^{१०} बिनु दुख^{११} कुंवर दयाल^{१२} ॥

पाठांतर—भा में उपर्युक्त अर्थात्की ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ भा भा कुंवरहि बह, ए मो कुंवरहि अ। २ रा पुनि। ए में यह घर
 नहीं है।
 (२) १ रा ए पुनि। २ ए मो। ३ रा जियमों ए जितते। ४ न बीड।
 (३) १ भा हुन ए तें।
 (४) १ ए के। २ ए मूर।
 (५) १ ए जा। २ ए लंदाई।
 (६) १ रा ए पुनि। २ रा जीवै। भा देखै। ३ रा अहा ए अहाँ।
 ४ ए यिसमार।
 (७) १ भा आगे। २ भा पाछु न कोई, ए पाछु ना नाई। ३ भा दुख जो
 रा में दुख मात्र है। ४ ए दयार।

अर्थ—(१) कुमार को वह लकड़ी का बूझा आचार हो गया किन्तु समुद्र को लहर पुन अपार
 रूप से उठी। (२) फिर (बोझारा) जो कुमार लहरों में पड़ गया तो उसने जी से जीने की आशा
 छोड़ दी। (३) फिर कुमार को इस बात का ज्ञान हुआ कि क्या हुआ और लहरें उसे वहाँ से वहाँ
 ले गई। (४) किन्तु लहरों ने उसे ले जाकर वहाँ बाल दिया जहाँ चत्रमा और सूर्य का प्रकाश था।
 (५) वे लहरें कुमार को अवेत समुद्र तट पर छोड़कर अपने भीरार समुद्र में लौट आईं।

(६) फिर जो कुमार ने चित में चेत का स्वरूप किया (चेत संमात्ता) तो देखा कि वह वे
 संमात्त पड़ा हुआ है (७) और उसके आगे-पीछे दुख तथा दयाल (ईश्वर) के अतिरिक्त कोई नहीं
 है।

प्रिन्सी—(१) अपार < आजार।

[१८०]

राज मात्र मत्र गा जत^१ अहा । मधुमालति बर दुख मय^२ रहा ।
 दहं गिग फिर गये कोई नाही^३ । रही एव अह मय^४ पगिछाही ।
 जहि बन बबहु म मानुम आवा । तहि बन^५ बिधि^६ से कुंवर अझारा ।
 पुनि उठि कुंवर पसा बन माही । जहाँ पति पर माग^७ माहीं ।
 भगम पय दुख^८ साथ न कोई । गिन^९ धाव गिन^{१०} यम^{११} रोई ।
 मोम रहि पाइ^{१२} आव पाव रहि^{१३} मिर जा^{१४} ।
 बर सह्य जो^{१५} यम^{१६} तो एक पाप मियाद ॥

- पाठांतर—(१) १ ए बुझा जत। २ भा ए बुझ वी (वै बुझ-ए) संभ।
 (२) १ भा ए बुझ (बहु—ए) विनि (विस्—ए) फिरि देखी को (कोर—ए)
 माही। २ बमहु बिस्स फिरि देखी माही। २ भा ए वी भग।
 (३) १ रा पुनि। २ ए जो।
 (४) १ ए परमारथ।
 (५) १ भा दुखस सब। २ ए गन। ३ ए रन। ४ रा बीट।
 (६) १ भा रहिर पा ए रहिर पाब। २ ए पाब रहिर, भा पान रक्त।
 (७) १ भा फिर। २ रा बीट।

अर्थ—(१) [कुमार का] राजकीय जीवन [जाति] को कुछ या बहु सब चला गया केवल मधुमालती [के निरह] का बुझ उसके साथ रह गया। (२) बसो विद्याओं में प्रेम कर उसने देखा क्यों कोई नहीं था भले ही एक उसकी प्रतिष्ठाया उसके साथ रह गई थी। (३) जिस वन में मनुष्य जाती नहीं माया था उस वन में विद्याता ने कुमार को लेकर डाल दिया। (४) फिर कुमार उठकर उस वन में बस पड़ा वहाँ पर पत्नी भी पंच नहीं धारते (हिलते) थे। (५) उस अगम्य वन में कोई साव नहीं था; एक लज बहु बीड़ता था तो एक लज बीठ कर रोता था।

(६) सिर का बहिर पैरों तक जाता था और पैरों का बहिर सिर तक जाता था, (७) [बल्ले चलते] सहस्र बार [शुस्ताने के लिए] बहु बीठता था तो एक पाव (भाया करो) समाप्त होता था।

- टिप्पणी—(२) परिछाही < प्रतिष्ठाया। (३) मानुस < मानुष। (४) पति < पतिन।
 (६) रहिर < बहिर।

[१८१]

यत्ना जाइ वन माह^१ अकला। अगम पय अनि कस्मि^२ दुहेला।
 मोह^३ मरूर विमरहि^४ हाथी। एममर कोउ^५ न दामर^६ साथी।
 चलन^७ न गिन मान विमराऊं। अपत जीभि जा प्रीतम माऊं।
 पुनि पञ्चनीवन कर पमारा^८। परी मान ओ भा^९ अपियाग।
 अनि अमून जह^{१०} रंगि न जाई^{११}। बसि^{१२} बहुर लह^{१३} रनि बिहाई^{१४}।

आमन मारि ला^{१५} ली गुह गउ बगड पहरि पियान^{१६}।

जुग मम^{१७} रनि^{१८} बियोग^{१९} क जागत भाय गुजान^{२०}॥

- पाठांतर—(१) १ ए ओ। २ ए ओ कस्मि।
 (३) १ ए मिय। २ भा बिचारि ए बिहारे। ३ ए हुंजर। ४ ए दूर।
 (५) १ भा अगम। २ रा अगम जीब मधुमारनि ए बिनि बिना जी शीतम।
 (६) १ = वे बीमार। २ ए ओ भी।
 (७) १ ए ओ अगुन करि। २ रा देखि न जाई ए भा अत्यन्त (गुन करनी अर्थात्) ३ रा बी। ४ भा मर बीनि निमई ए ओ मीरु बीमार।
 (८) १ ए अगम माह बी बीगा बहिर एक मंग व्यान।

(७) १ ए अगमन। २ रा वरीनि (?)। ३ ए. विवोग। ४ भा जामि माव गुजान ए जाके भा सो जान।

अर्थ—(१) वह वन में अकेला बसा जा रहा था, मार्ग अगम्य, अत्यंत कठिन और दुःखपूर्ण था। (२) सिंह, शार्ङ्ग (शरभ) और हाथी बिघाड़ रहे थे कुमार अकेला था, दूसरा कोई साथी नहीं था। (३) चलते समय वह लज्जित हो भी बिमान नहीं मानता (करता) था और जिह्वा से प्रियतम का नाम जपता जा रहा था। (४) फिर [वहाँ] कदली-वन का प्रसार का संघर्ष जा पड़ो भी और अंधेरा हो गया था। (५) वहाँ अत्यंत अतृप्त हो गया था और [सपनता के कारण] रोग तक नहीं जा रहा था वहाँ कुमार ने बैठ कर रात बिताई।

(६) सातन मार कर (आसन में बैठकर) गुह (प्रेम-यात्र—मधुमालती) से लज्जा लगाकर वह ध्यान किए हुए बैठ गया, (७) विषय की रात धुप के समान हो गई थी जिसमें वह सुजान (ज्ञानी) भाव (प्रेम) पूर्णक जाग रहा था।

टिप्पणी—(२) नीह < सिंह। सेतुर < शार्ङ्ग = शरभ। (३) विमरक < विमान। (४) कदली वन < कदली वन। प्रसार < प्रसार। (५) ली < लस्योन्ना = लज्जा। (७) सुजान < सुजान = ज्ञानी।

[१८२]

भा भिनुसार बला उठि राऊ। पिरम पय^१ सिर द^२ क पाऊ।
बिरह सरीर माइ अविजाना। कहा कहीं नहि जाइ^३ मखाना।
मधुमालति मधुमालति ररई। सबरि सबरि^४ मिर मुंह न धरई।
पिरम मुलान न आपुहि^५ चीन्हा^६। अत^७ श्री^८ गयान सबहि^९ हरि लीन्हा।
पिरम पय^१ जित बेत न हारो^{१०}। जो सो जीउ^{११} होहिं सो बारो^{१२}।
चलत चलत वन भीतर^{१३} चौखडि देखा^{१४} राइ।
जबहि अत भा^{१५} दसठ^{१६} समुझहि^{१७} मनहि^{१८} गुनाइ ॥

पाठान्तर—अतुर्ब अर्द्धाली क करण ए में परस्पर स्वार्थांतरित है।

(१) १ ए पीरम पय। २ भा क ए करि।

(२) १ ए भा जाय।

(३) १ ए लीरि लीरि।

(४) १ ए भी अचेतन बाहू। २ भा भीन्हा। ३ ए बिम रा बा पाठ स्पष्ट नहीं है। ४ भा में मह घण्ट गही है। ५ भा ए गरी।

(५) १ रा वेम पय ए पीरम पय। २ भा हारै। ३ भा जो मे जीव पर। ४ भा होहि निगरी, ए. होइ ली बारो।

(६) १ भा में देखा और है। २ भा एन चीन्ही ए देनि चीन्ही।

(७) १ भा बिमहू केन भएउ तेहि, ए बिम मो केन भा तेहि। २ ए देग। ३ भा समुझे। ४ ए मनी।

अर्थ—(१) प्रयास हुआ और राखा (राजकुमार) उठ कर चल पड़ा; उसने प्रेम-वच में मिर

देकर पीव दिया था। (२) बिरह [उनके] शरीर में आकर इतना अधिक (प्रचंड) हुआ कि क्या बहने? कहते नहीं जगता है। (३) [कुमार] “मधुमालती” “मधुमाञ्जो” रटने लगा और दाद-बार उसका स्मरण कर सिर तथा मुँह [भूमि पर] पटकने लगा। (४) प्रेम में भूला हुआ वह अपने को नहीं पहिचान रहा था उसका धैर्य और शान सभी हर उड़ा था। (५) [वह कह रहा था] “प्रेम-यथ में [अपने] जीव को देते हुए मैं हार नहीं सकता हूँ; तो जीव हों तो मैं उन्हें भी उस पर स्वीकार कर लूँ।”

(६) राजा (राजकुमार) ने वन के भीतर चलते-चलते एक बीसड़ी (बार लंछों की मड़ी) देखी (७) जब [उस बीसड़ी को] देखकर उसे धैर्य हुआ वह वन में समा जाने और गुमने लगा।

टिप्पणी—(१) रर < रर < रर = रटना चिस्कावा।

[१८३]

निल एव मनहि माह गुनि^१ राज^२ । पुनि भीतर ओयारसि पाऊ^३ ।
 दयसि^४ गज नवल रगराही । सहि परकुबिरसूत^५ मद^६ मांती ।
 छिरकी^७ मेज भुगध मुवासा^८ । लुबुड भंवर न छाड़हि पासा^९ ।
 पुनि बलि राउ सेज तन गऊ । उपजी^{१०} सक भरम मन भऊ ।
 ससि बानी जीवन बिरारी । निहकलक बिधन^{११} अबतारी ।
 गुनबंती ओ नागरि^{१२} मन^{१३} मोहनि रायगारि^{१४} ।
 पनि मिटिस्टि जेह मिरजी^{१५} पनि पनि^{१६} सुतनिहारि^{१७} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मनमहं पुनि ए माह मनै। २ ए अबपारा पाऊँ।

(२) १ न देगा। २ ए तगर छत्रबुजर (< कुबिर कारणी निरि)। ३ मा रन।

(३) १ ए छिरका। २ मा ए मुवासा। ३ ए छोड़े। ४ मा ए पासा।

(४) १ ए उज्जा।

(५) १ मा निगमन बिधि जय।

(६) १ ए जो नागरी। २ मा जय। ३ रा ए ममार।

(७) १ ए छय मिटि जे निरजा। २ ए वन पन। ३ मा निरजनगर ए निरजनिगर (गुन चरम के पुराई के जेह मिरजी)।

अर्थ—(१) सन्धि-शा वन में पुन (लोच) कर राजा (राजकुमार) ने फिर (तटनरर) [उस बीसड़ी के] भीतर लौट रखने। (२) उगने देना कि एक वज्र और रंगीन शाय्या भी और उन पर (पर) कुमारी अवधत (अवेग) भी रही थी। (३) नाग पर मुगंध और मुगंध छिड़ी हुई थी जिनके कारण भँवर भय होकर [उस शाय्या का] सामीप्य नहीं छोड़ रहे थे। (४) फिर बनकर राजा (राजकुमार) शाय्या भी और गजा (बड़ा) तो उनके वन में रंका उग्यर हुई और धम हुआ। (५) [जब उगने देना कि वह कुमारी] अग्रवर्ती अग्रवर्त-बीचवा और देवेन है और उसे विद्या के निरजनक प्रतीक दिया है।

(६) वह गुप्तनी है नागरी है (नगर-विद्याभिनी जिष्ट) और लंगर में मनमोहिनी है।

(७) [बहु कहने लगा] "बहु घम्य है जिसने सृष्टि में इसका सृजन किया और यह सोने वाली घम्य है घम्य है।"

टिप्पणी—(२) सेज < घम्या। (५) बिकरार < बेकरार [फा] = मघात भवेत्। (५) निहृवसंक < निहृवसंक।

[१८४]

सोवति सनि^१ बरनि^२ को^३ कहा^४ । कवल भवर जनु^५ सपुट गहा^६ ।
अद्रित बिल^७ दुइ जानि न गए । बिबि सोमन दहु^८ काकै^९ भए ।
वदन लिखाट सराहि न जानौ । भिन पुनिव सिन बुझि^{१०} बखानौ ।
सारंग सारंग हिय^{११} प्रतिपास्य । ससि कै^{१२} प्रीति मिरिग^{१३} रय बाला ।
तिल कपोल पर बनेउ^{१४} अपारा । एक बूद भा सहस सिंगार ।
मो सत साजै^{१५} बाला निभरम सज^{१६} सुख साव ।
दुइ चतु^{१७} कवर बकोर जउ^{१८} चह्रवरनि मुख जोव ॥

पाठान्तर—(१) १ भा नैन ए सेज। २ ए में बरनी। ३ भा. बाहा। ४ ए. बे।
५ भा. बाहा।
(२) १ ए बिस। २ भा में यह घम्य नहीं है। ३ रा बहु बाव ए बहु बाके।
(३) १ ए छन पुनीव छन।
(४) १ भा में यह घम्य नहीं है, ए ओ। २ भा बहु ए की। ३ भा.
ए भिगा।
(५) १ ए बने। २ भा भए, ए भी।
(६) १ ए साने। २ भा सुभर नीद, ए निर्भय नीद।
(७) १ रा बय। २ रा बिभि।

अर्थ—(१) घम्या में सोती हुई [उस कुमारी] का वर्चन करके कौन [उसके विषय में] पूछे? [घम्या में वह ऐसी लय रही थी] जैसे कमल के अमर को संगु में पड़ड़ लिया हो। (१) समुत् और बिब—दोनों नहीं जाने जा सके कि उसके दोनों नैत्र [उनमें से] जिसके [बनाए] हुए थे। (४) उसके मुख और ललाट की सराहना (करने की पुष्पि) नहीं जान पा रहा हूँ; एक लक्ष पुष्पिमा (मुख) और दूसरे लक्ष द्वितीया के चंद्रमा (ललाट) का वर्णन करता हूँ। (५) [उस मुख में नैत्र ऐसे लय रहे थे जैसे] घाघ्रूँ (जमल-मुख) घाघ्रूँ (हरिष-नेत्रों) का प्रतिपालन कर रहा हो [अपवा] घाघ्रि (मुख) प्रीतिपूर्वक मुगौं (नेत्रों) को रय में बला (हृद) रहा हो। (५) उसके कपोल पर तिल ऐसा लय रहा था कि मानो एक बिंदु से उस कुमारी का सत्य गुण गूँघार हो रहा हो।

(६) सीतल गूँघार किए हुए वह बाला निभित नुर-नाय्या पर लयन कर रही थी (७) और कुमार के दोनों चतु चहोर के लबान उस चंद्रवरनी की रय रही थे।

टिप्पणी—(१) पुनिव < पुष्पिमा। (४) घारय < घाघ्रूँ = जमल हरिष। (६) निभरम < निर्भय। (७) चतु < चतु < चतु।

बिहुर नाग बिस लहर देई^१ । दसत जिउ जोवन हरि लई^१ ।
 अपिय^१ भमियरस भर फडोरा । उलटि घरे^१ कुच^१ कनक फडोरा ।
 सखवा रंग महावर^१ राती । रोंव रोंव जोवन गामांती ।
 यनी माय बरनि नहि^१ आई । सस सुमर चढ़ा^१ अनु^१ आई ।
 यघर मुरग दगि जिउ हर^१ । त्रिभुवन मुनिगन^१ घोर न घर^१ ।
 सित्र^१ सहज रंग भीन^१ नल सिम बने सुरेख ।
 जनम गुरुक^१ हिय ताके^१ एक निमिख जो देख ॥

पाठाखर—(१) १ भा लहर देई ए लहर देई । २ भा लहर ।

(२) १ ए भा रा अरुन । २ भा उलटि घरे । ३ भा हिय ।

(३) १ भा तरवा रंग महावर ए रंग मेंहरी कर पत्नी ।

(४) १ ए भा । २ भा चढ़े । ३ ए ओ ।

(५) १ ए मन हरई । २ ए जन । ३ भा घोर न घरे ।

(६) १ ए बहुर । २ भा रंग भीने ए रसमाती ।

(७) १ ए रा रई । २ भा लहर, ए ताके ।

अर्थ—(१) उत्तक बिहुर (बेग) का नाग बिस की लहरें दे रहा था, और बेगते ही (हितने वाले के) बीच (प्राय) और जीवन का हारव कर रहा था । (२) उत्तके कुछ अपिय (अनुचित) अमृत-रस से भरे हुए, फडोर और उलटकर रखे हुए स्वर्ण फडोरे थे । (३) उत्तके [घरों के] तलवे महावर के रंग से रसत थे और वह रोम-रोम में जीवन के वर से वसत थी । (४) उत्तकी बेनी का माब (सीढ़ी) अचर्यनीय था [बहु ऐसी लपती थी] मानो शेष सुखे वर्षत पर आकर चढ़ा हुआ हो । (५) उत्तके मुरंग अघर बेगने पर बीच (प्राय) हर कैसे थे और त्रिभुवन के मुनि गन [उन्हें बेग कर] धैर्य नहीं धारण कर पाते थे ।

(६) उत्तके नल से सित्र तक के समस्त अंग सहज रंग से सिम और लुबर रंगा से अर्चित चित्रोपम थे । (७) त्रितने एव वन उन्हें बेल लिये, जीवन-वर्षत उत्तके हारव में लटक (लमरव) बना रहा ।

टिप्पणी—(१) बिहुर < बिहुर = बेग । (२) बघोर < बघाव = फडोरा ।

दाग पां भल इहाँ^१ रूखाई । रनि सग गण^१ उ^१ करई ।
 क मरु मग आछग मारा । इ^१ मराग परनि मरु^१ दारी ।
 क म^१ मग बिगमानि^१ माऊ । इहाँ माद निन कर^१ बिगराऊ ।
 क मरु इ दानि वन परी । माया रूप परनि ह वने^१ ।
 सो^१ ज्ञान को^१ आग ग पागा । इहाँ बहू^१ मनुग पागा^१ ।
 क मरु मग पर^१ बनगानि^१ क मोर जिउ योगन^१ ।
 क बाटू मां योगन^१ क हट्ट भू^१ मगान ॥

- पाठाक्षर—(१) १ भा झूँहि। २ ए मुरंग। ३ ए में यह खब्ब नही है। ४ ए सेबा
 (२) १ ए केहि। २ भा ए बरनी वी।
 (३) १ भा जेहि। २ ए बनसपति (गुल पति १)। ३ ए बर।
 (४) १ भा माया रूप बरे है फेरी रा काया रूप बरसि है फाटे ए माया रूप
 बरे हसि फेरी।
 (५) १ भा सी ए, सी। २ भा कोउ। ३ ए बहु। ४ ए पासा।
 (६) १ ए बरे, भा बरेउ। २ रा बन केरा। ३ ए मरनि।
 (७) १ भा काहुं। २ रा भोरबा ए भोरबी। ३ भा एनी मयो ए उटबा मया

अर्थ—(१) [उसे देखकर कुमार को ऐसा लगा कि] संभवतः बंजरा हो जिसमें घरी रह
 या और रात्रि में आकाश में जा कर उड़व करता था। (२) अबका यह किसी स्त्री की अप्सरा क
 कालिका वी जो ईश के प्राप से पत्नी पर गिरा वी गई थी। (३) अबका यह आकाश का बहुस्व
 नामक [नक्षत्र] वी जो यहाँ आकर दिन में बिधाम करती थी। (४) अबका यह ब्रह्म की दाया
 वी जिसने अपना रूप बदलकर माया का रूप धारण किया था। (५) [उसने मन में कहा] “
 योजनों तक आस-पास में यहाँ कोई नहीं है [अतः] यहाँ वसा नहीं कहाँ (कैसे) मनुष्य का निवास
 हुआ।

(६) अबका यह शेष धारण किए हुए [ब्रह्म की] बनस्पति हो है अबका मेरा भीष बाज
 हो गया है, (७) अबका किसी ने मुझे भुलावे में डाल दिया है अबका स्वर्गात्क क भूत ने मुझे छ
 है।”

टिप्पणी—(१) देवम < दिवम। रनि < रयनी < रजनी = रात्रि। मरग < मर्ग = आका
 (३) बिरस्पति < बृहस्पति। बिसराउं < बिधाम। (४) काहनि < कारिनी। (७) मयान
 ममान।

[१८७]

मुमरु नौद सोव बर नारी। भग जोबन भी पम पियारी।
 दनि कुवर बित रहूँ लानाई। मज नियर मज कमउ जाई।
 कबहुँ सक भरम मन घरई। कबहुँ पिरम रस तिमरम करई।
 पुनि करबट सीहसि अगिराई। सहज भाव आई जमुहाई।
 अगिरातई भुम इड पमार। ममि मूरज दुद भाग उजियारे।
 मयग भए बिबि लोयन भीह बड़ी नमान।
 मरग इद्र नर पुरुषो फनपति तठ मयान ॥

- पाठाक्षर—(१) ए निर्भम। २ भा सो। ३ ए जो।
 (२) १ रा देवम। २ ए रहा। ३ ए भी बीसा ए बीठड।
 (३) १ ए बबही। २ भा मरु मरमन मन ए भरम जीव मी। ३ ए बबही
 ४ ए निर्भम।
 (४) १ ए बरपन (< बरपट फारसी बरि)। २ ए भीगता। ३ भा अगिरात
 ४ भा आई जमुहाई ए बिबि देया आई।

[११०]

क तोहि आहि^१ परम पद चीन्हा^२ । क काहुं तोर मन हरि सीन्हा^३ ।
 क मूरख मन रहसि^४ भुलानी । कै र रग्यन यह चिस^५ समाना ।
 क तोर अरय दरख हरि सीन्हा^६ । क बिस्ववास सनु^७ तोहि चीन्हा^८ ।
 क रग भद्र मोता न समारसि । कै र गरब सेंच यह न पारसि^९ ।
 कै भग्यमि दग्यत यह ठाढ़ । बबसि सत्त पर सिद्धि^{१०} गोसाढ़ ।

निभरम होहु भरम सजु^१ जनि मानहु जिय सक ।

सहज भाठ सेउ^२ पूछे^३ समिबानी निबलक ॥

पाठांतर—(१) १ रा. तुई आहि मा तैं अहे, ए सोहि आह । २ ए प्रीतम मरमाता ।

३ ए कै कतु तोर जीउ हरि राता ।

(२) १ भा अरुषि ए रदा । २ भा कै गिपान यह पेठ ए कै बिा भों न रग्यन ।

(३) १ भा किएऊ । २ रा बाहुं । ३ भा दिएऊ ।

(४) १ भा कै रंग बात कहे नाहि पारसि ए कै रंग मरमाता न संभारसि (तुल० पुराणार्थी बरन) ।

(५) १ भा देने ए देनि । २ ए मिद पर मिद ।

(६) १ ए निर्भय होहु भयत जी ।

(७) १ भा भाउये पूछै ए भाष वेपूछी रा भाउ को (< मउं पारसी निर्गि) पूछहि । २ रा नहि मई कयक ।

अर्थ—“(१) अथवा तुमो परम पद का परिचय प्राप्त हो चुका है अथवा किसी ने तेरा मन हर लिया है? (२) अथवा तू मूर्ख है और तेरा मन भुला रहता है अथवा काम में तेरा चित्त लब्ध हो रहा है? (३) अथवा [किसी ने] तेरा अर्थ और इच्छा हर लिया है अथवा तू ने तुमो चिन्तन में रिया है (तुमो निष्प्राप्ति कर दिया है)? (४) अथवा तू रंग (प्रेम) के घर में मत होने के कारण मारने को लालच नहीं पा रहा है अथवा गर्व के कारण कुछ बह नहीं सक रहा है? (५) अथवा तू यह स्थान देखकर चकरा रहा है? तब बलि (उक्ति) पर ही है गोसाईं (बोली) सिद्धि होती है ।

(६) तुम निर्भय (निर्भय) हो, भय (भय) छोड़ो और जी (यम) में लगे न मानो ।

(७) [१म प्रकार] सत्य बात से यह निश्चय बंधन के ते मुग्धवानी [दुस्वार मे] ब्रूयते लयी ।

निर्गमि—(५) बरिा ~ बरिा ~ उक्ति । (७) निष्पद < निष्पद ।

[१०१]

१ निरा भा- सत्य बिा पड़ा^१ । क न पम माग्य पड़ो^२ ।

२ रें मा- मोहि दाइ^३ मरमाता । कै बाहुं निर टोमा भाता ।

कै रे गूद तोरें^१ मिर फिर^२ । कै र सिस्ति^३ बिधि बाउर सिरा^४ ।
क र^५ ब्रह्म मद^६ बिछु जाना^७ । कै र बाहु^८ के रूप भुजाना^९ ।
क सोर जीउ सहज रंग^{१०} राता । क त पम सुरा मन्^{११} माता ।
क तुह मूर^{१२} गधावा क तोहि कुटुब क^{१३} सोग^{१४} ।
क भर कामिनि बिछुटी^{१५} तहि जिय भएउ बियोग^{१६} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कै तै जाय सहज बिल चड्डा । २ ए पड्डा ।

(२) १ रा माह ए माय । २ मा दिहेउ ए बीन्ही ।

(३) १ रा ए तारे । २ भा ग छिरेऊ । ३ भा सिद्धि । ४ भा ए सिरेऊ ।

(४) १ भा तै । २ ए बप । ३ भा ए क बाहु । ४ ए जा ।

(५) १ ए है । २ भा ए कर ।

(६) १ भा ए गुल । २ ए मेवाए । ३ भा कुटुब बियोग रा कुटुब का सोम ए बडिन बिबाव ।

(७) १ भा ए बिसुरी । २ रा तेहि जिय भएउ बियोग या तहि उपजउ जिय मक ए ते उपजा बिउ मोल ।

अर्थ—“(१) अथवा क्या कुछ सहज (आप-मुक्त आत्मस्वरूप) का भाव आकर बिल में चड़ा है या तुने प्रेम-सात्व पड़ा है? (२) अथवा तुने जाता ने शाप दिया है अथवा किसी ने तेरे सिर पर टोना (बाहु) मड़ दिया है? (३) अथवा तेरे सिर का पूरा फिर पया है (तेरा मस्तिष्क विहृत हो गया है) अथवा कृष्टि में तुने बियाता ने बाबला सिरवा ही है? (४) अथवा तुने ब्रह्म का भेद कुछ जान लिया है, अथवा तू किसी के सौम्य पर भूला हुआ है? (५) अथवा तेरा जीव सहज (आत्मस्वरूप) के रंग (प्रेम) में अनुरक्त है अथवा तू प्रेम-सुरा के मद में मत है?

(६) अथवा तुने अपना मूलबन (पुत्री का घन) गँवा दिया है, अथवा तुने कुटुब का शोक है? (७) अथवा तेरी ओष्ठ कामिनी बिछुर गई है और उसका तेरे जी में बियोग हुआ है?”

टिप्पणी—(५) राता < रक्त = अनुरक्त । माता < मत । (६) मूर < मूल = पुत्री ।

[१९२]

फनि^१ उठि बुंकर बात अनुसारी । भर कामिनि तम^२ पम पियारी ।
मे परदसी अहो^३ बटाऊ । मन बराग पथ मिर पाऊ ।
सत पूछन आहो म तोहा^४ । निम्न^५ सति बाग बहु^६ मोही^७ ।
बहु^८ पड भवत भवन म आवा^९ । म जोजन मानुम सहि^{१०} पावा^{११} ।
दहा^{१२} कही मानुम भर भाऊ^{१३} । मव डाइनि आहिमि^{१४} गहि ठाऊ^{१५} ।
रूप धर जम डाइनि नोब^{१६} दयो^{१७} लछम^{१८} निरार^{१९} ।
मातर^{२०} एम बम मह मानुम रह म^{२१} पार ॥

पाठान्तर—ए में उपयुक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धानियां परस्पर स्थानांतरित हैं ।

(१) १ रा ए पुनि । २.. भा मुन ग मुन ।

[१९०]

क तोहि जाहि^१ परम पव बीन्हा^२ । क काहु तोर मन हरि लोन्हा^३ ।
 क मूढस मन रहसि^४ भुलाना^५ । क र ग्यान भह चित्त^६ समाना ।
 क तोर अरव दरव हरि लोन्हा^७ । क चित्हुवांस सत्रु^८ तोहि बीन्हा^९ ।
 कै रंग मय माता न संभारसि । कै रे गरव सेंट कहै न पारसि^{१०} ।
 कै मग्गसि देखत^{११} यह ठाई । बकति सत्त पर सिद्धि^{१२} गोसाईं ।

निम्रम होहु भरम तनु^{१३} जनि मानहु जिय सक ।

सहज भाउ सेउ^{१४} पूछै^{१५} ससिवदनी निकलक ॥

पाठान्तर—(१) १ रा तुई जाहि ना रै अहै, ए तोहि जाह। २ ए प्रीतम मदमाठा।
 ३ ए कै कहू तोर भीठ हरि राठा।

(२) १ भा अहसि ए रहा। २ भा कै विमान मई बैठ ए कै चित मों न ग्यान।

(३) १ भा किएऊ। २ रा काहुं। ३ भा किएऊ।

(४) १ भा कै रंग बात कहै गहि पारसि ए कै रंग मदमाठा न संभारसि (गुह्य पूर्ववर्ती चरण)।

(५) १ भा देखे ए देखि। २ ए सिद्ध पर निह।

(६) १ ए निर्मम होहु नर्मत बी।

(७) १ भा भाउमें पूछै ए भाब तेपूछी रा भाउकों (< सेउं अरखी निधि) पूछहि। २ रा सति मई कलक।

अर्थ—“(१) अथवा तुझे परम पव का परिचय प्राप्त हो चुका है अथवा किसी ने तेरा मन हर लिया है? (२) अथवा तू भूल है और तेरा मन भूला रहता है अथवा ज्ञान में तेरा चित्त समाया रहता है? (३) अथवा [किसी ने] तेरा धर्म और इष्ट्य हर लिया है अथवा प्रभु ने तुझे चित्हुवांस दे दिया है (तुझे निष्कासित कर दिया है)? (४) अथवा तू रंग (प्रेम) के भर में मग्न होने के कारण अपने को संभाव नहीं पा रहा है अथवा गर्व के कारण कुछ कह नहीं सक रहा है? (५) अथवा तू यह स्थान देखकर अकण्ट रहता है? सत्य ब्रह्म (उक्ति) पर ही है गोसाईं (बोनी) सिद्धि होती है।

(६) तुम निर्धन (निर्मय) हो ज्ञान (अथ) छोड़ो और भी (अथ) में संका न मानो।”

(७) [इस प्रकार] सहज भाव से या निष्कलंक ब्रह्मा के से गुणवाली [द्वारा से] पूछने लगी।

टिप्पणी—(५) बकति < बकि = उक्ति। (७) निष्कलंक < निष्कलंक।

[१९१]

क निधु आह सहज चित पड़ो^१ । कै तें पम साम्तर पड़ो^२ ।
 क रें माइ^३ तोहि बीन्हा^४ मरापा । न बाहू सिर टोना पापा ।

क रे गूद तोरें^१ मिर फिरा^२ । कै रें सिस्त्रि^३ बिधि बाउर सिरा^४ ।
 कै रे^५ ब्रह्म भद^६ बिछ जाना^७ । कै र काहू^८ क रूप भुमाना^९ ।
 क तोर बीउ सहज रग^{१०} राता । कै त पम सुरा भद^{११} मांठा ।
 क तुह मूर^{१२} गवावा क तोहि कुदुबन^{१३} साग^{१४} ।
 क बर कामिनि बिछली^{१५} सहि जिय भएउ वियाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कै त आय सहज बिच पडऊ । २ ए पडऊ ।

(२) १ रा माह ए भाय । २ भा दिहुत ए बीन्ही ।

(३) १ रा ए तोरे । २ भा ण फिरेऊ । ३ भा सि^३ । ४ भा ए तिरैऊ ।

(४) १ भा तै । २ ए भद । ३ भा ए क बान । ४ ए ओ ।

(५) १ ण है । २ भा ए क ।

(६) १ भा ए गुल । २ ए गैबाए । ३ भा कुदुब बिवाय रा कुदुब का
 माय ए कठिन बिवाय ।

(७) १ भा ए बिछुरी । २ रा तेहि जिय भएउ वियाग भा ताह उपबउ
 त्रिय मक ७ ते उपजा जित माय ।

अर्थ—“(१) अथवा क्या कुछ सहज (आया-मुक्त आत्मस्वरूप) का भाव आकर चित्त में बड़ा है या तुझे प्रेम-सागर पड़ा है? (२) अथवा तुझे माता ने श्राप दिया है अथवा किसी ने तेरे सिर पर टोना (झाड़ू) मड़ दिया है? (३) अथवा तेरे सिर का घूरा फिर गया है (तेरा मस्तिष्क बिहृत हो गया है) अथवा सृष्टि में तुझे विद्याता में बाधला तिरका ही है? (४) अथवा तू पड़्या का भव कुछ जान लिया है, अथवा तू किसी के लोभ्य पर भूला हुआ है? (५) अथवा तेरा बीब सहज (आत्मस्वरूप) के रंग (प्रेम) में अनुरक्त है अथवा तू प्रेम-मुरा के मद में मत्त है?

(६) अथवा तुझे अपना मूलधन (पूँजी का बन्) गँवा दिया है अथवा तुझे कुदुब का शोक है? (७) अथवा तेरी भेट कामिनी बिछुर गई है और उसका तेरे भी में बिद्योप हुआ है?”

टिप्पणी—(५) रागा < रग्न = अनुरक्त । माता < मत्त । (६) मूर < मूल = पूँजी ।

[१९२]

फमि^१ उठि कुबर बात अनुसारी । बर कामिनि तम^२ पम पिपारी ।
 म परदगी^३ अहो^४ बटाऊ । मन बराग पम मिर पाऊ ।
 सत पुँछन आहो^५ म ताहा^६ । निम्न^७ मति बान बहू^८ माहा ।
 बहू^९ पड भवत भवत म आवा^{१०} । म जाजन मानुम माहू^{११} पावा ।
 “हो^{१२} बहो मानुम बर नाऊ^{१३} । मर डाइनि माहिमि^{१४} लहि ठाऊ^{१५} ।
 रूप घर जम डाइनि मीन^{१६} दगो^{१७} छन^{१८} निरार^{१९} ।
 मानर^{२०} छमे बन सह मानुम रह न^{२१} पार ॥

पाठान्तर—ए न उपपुन बनीं तथा पाँचवीं अर्द्धाध्याय परम्पर स्थानांतरित है ।

(१) १ रा ए पुनि । २ भा नुन ७ नुन ।

- (२) १ ए बाहूँ परदेमि।
 (३) १ ए सोही। २ भा निस्वै ए निस्वै। ३ ए ख नहसि तै।
 ४ ए मोही।
 (४) १ भा जी। २ भा जाएउ। ३ ए मी पागा तीर मी। ४ भा. पाएउ।
 (५) १ ए सी जोरन मानुस भा पाऊ। २ भा छाछसि ए याहे।
 (६) १ भा एप घरे डाहनिऊ ए एप घरे हसि डाहनि। २ ए लखन।
 ३ भा निवार।
 (७) १ ए नातरि। २ ए कि।

सर्व—(१) तब उठ कर कुमार न बात बजाई 'हे बर (घोठ) कामिनी और उस प्रकार (मत्ते) प्रेम प्रिया (२) मैं परदेसी और पथिक हूँ; मेरा मन विराग के वध में है और उस वध में सिर ही मेरा पति है। (३) मैं तुमसे सब पूछता हूँ तु मुझसे निश्चित रूप से सबकी बात कह। (४) बाएँ हीट में अमता-अमता में [यहाँ] आया और ती चौकन तक मैंने मनुष्य को नहीं पाया। (५) यहाँ मनुष्य का नाम न निजान कहीं (किस प्रकार) आया? ऐसा तो नहीं है कि इस स्वाम पर तु डाकिनी है?

(६) तु रूप डाकिनी के जैसे रखे हुए है, ऐसा निराला (स्पष्ट) लक्षण मैं देख रहा हूँ, (७) नहीं तो ऐसे वध में मनुष्य रह नहीं सकता है।

टिप्पणी—(३) निस्वै < निस्वय। (४) डाहनि < डाकिनी। (५) भवं < प्रमू = बनकर लगाना।

[१९३]

अहि वन मह^१ पथी न उबाई। तह मानुस वहु^२ कहा^३ कपारि।
 मरमत वन दाए^४ अनु घाव। मानुस इहाँ कहा^५ वहु^६ जाव।
 ओ^७ मानुस एहि रूप न होई। घरे रूप मयावन^८ हसि^९ कोई।
 को आहसि^{१०} बहु आपन^{११} नाऊ। बस कीट^{१२} बन भीतर ठाऊ।
 मो^{१३} न कोई मग मगो^{१४} सठमी। वन निकुंज^{१५} किमि रहमि^{१६} अकनी।

निमरम निस्त अकनी वन मह^१ रहसि निसक^२।

हरि नेनी हरि वनी हरि बरनी^३ हरि लव^४ ॥

पाठांतर—(१) १ ए मग। २ ए तहवा मानुस। ३ भा काह।

(२) १ ए ए गाए। २ ए ए बग। ३ ए बहु।

(३) १ भा मग। २ ए घरे रूप मयावन। ३ ए है ग मं यह पय नहीं है।

(४) १ ए आहहि। २ ए आपनि। ३ ग ए कीहे।

(५) १ ए मग। २ ए माप। ३ ग मंग बुझ। ४ ए रही रा बिच्छ।

(६) १ भा ये यहाँ 'मई' और है ए मा। २ भा रहमि निरसि ए रही भिगक।

(७) १ ए सति बहनी रा हरि[बा] का छन्द स्पष्ट नहीं है] २ ए निरसक।

अर्थ— (१) जिस वन में पत्ती तक नहीं उड़ता है वहाँ पता नहीं मनुष्य क्या करता है? (२) भरमिए (भ्रमज बीजिए) तो यह वन मानो खाने खोजता है; पता नहीं मनुष्य वहाँ (इस वन में) कैसे आ गया। (३) और मनुष्य इस रूप का होता भी नहीं है तु मयानक रूप धारण किए हुए [और] कोई है। (४) तू कौन है अपना नाम कह तुने कैसे (यहाँ) वन के भीतर स्वाम किया है? (५) और तेरे छाव कोई सजी-सहेली भी नहीं है तब तू इस वन-मिथुन में अकेली कैसे रहती है?

(६) तू निर्धन (निर्मय) बिल से अकेली निरसक वन में रहती है, (७) तू जो लि हरि (हरिण या पीछ) —नेत्र वाली है हरि (कोयल या मयूर) के बोल वाली है हरि (चंद्रमा) के मुख वाली है और हरि (तिहु) की कटि वाली है।

टिप्पणी—(१) पंजी < पछिन्। (६) निमरम < निर्धन। (७) रैन < वयन < वचन।

[१९४]

कहि सों^१ दुख सुख आपन कह^२ । कहि जिउ^३ लाइ^४ रैन दिन रह^५ ।
दोसर कोइ न^६ बखौ^७ पासा । बरगो चित^८ अधिक उगासा ।
प्रीति^९ बास तोहि सउ^{१०} मोहि आब । नहि जानौ^{११} का भद जनाब ।
नैन चिन्हारी तोरि न^{१२} पावहि । बचन तोर मोहि^{१३} भद जनावहि ।
कहु कहि गधप क घर^{१४} नारी । कौम राज कौ^{१५} राज कुसारी ।
प्रीति भेन^{१६} में पावौ^{१७} तोहि सो^{१८} बहु कहि मोहि बिचारि^{१९} ।
काकरि पम^{२०} पियारी^{२१} सुवरि काकरि राजदुलारि ॥

पाठांतर—भा में ऊर्ध्वक नीची तथा पांचवी अर्द्धाक्षिया परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

(१) १ ए ठे। २ ए आपन कहई, ३ अर्धमाणि। ४ ए, निरहई।

(२) १ आ. न काहू। २ ए जो।

(३) १ रा. पीति। २ रा. ए सों।

(४) १ रा चिन्हाणि तोरि जी। २ ए जो।

(५) १ ए इति। २ रा बर।

(६) १ रा काम (कुल गुनीय चरण) । २ ए तो गी। ३ ए बहु मासे बर नारि।

(७) १ ए पम। २ रा तथा ए में यह छन्द नहीं है।

अर्थ— (१) तू अपने दुख-सुख बिसते कहती है और बिसते अपना भी लया कर [यहाँ] दिन-रात रहती है? (२) तुमने किसी को मैं तेरे बात नहीं देलता हूँ तू बिरबता है और बिल में बहुत उगासा है। (३) तुमने मुझे प्रीति की भुल्य या रही है पता नहीं तू कौन-सा भेद बनाएगी। (४) मेरे पैर तेरा कोई चिह्न (परिचय) नहीं पा रहे हैं और तेरे बचन भी मुझे भेद (रहस्य)

प्यक्त कर रहे हैं। (५) तु कह कि किस वंशर्ष की पुहिनी (स्त्री) है और किस राजा की राज कन्या है।

(६) समझ है मैं तुम से अपनी प्रीति का भेद पाऊँ, इसलिए तु विचार कर यह कह कि (७) तु किसकी प्रेम-मिया है ऐ सुबरी और तु किस की राजकुमारी है।

टिप्पणी—(१) रैन < रयनी < रयनी = रानि। (२) पास < पारस। (४) नमप < नमप।

[१९५]

अब सुनु बात कहैं बर नारी। म राजा कै राजकुमारी^१।
चित विमराउं नगर मोर ठाऊ। चित्रसुनि धिय पमा माऊ।
भाग फिर औ^२ कदिन जनाए। मोग कटुंब सँउ^३ दिधि^४ वगराए।
अरुप अमोरि पिरम नहि^५ जानिहु^६। पिता राज वालपन^७ मानिहु^८।
दासरा खाइ सखि बहराई^९। बिनु^{१०} चिता निसि सोइ गवाई^{११}।

बिरह बियोग^{१२} सताप बुझ नहि जानिहु^{१३} कस होइ।

जीड़ा कोइ विनोद कराहर^{१४} निसि दिन बेरसिहु^{१५} सोइ ॥

पाठान्तर—रा ने अर्द्धाभियाँ इस कम मे जाती हैं उपर्युक्त ५, १ १ २, ४।

(१) १ ए नही। २ ए बर।

(३) १ रा भाए औ ए फिर जो। २ रा ए सी। ३ ए बिप।

(४) १ ए पीर न। २ भा ए जानी। ३ ए बाकापन। ४ भा ए मानी।

(५) १ रा बहुलायी। २ ए चित। ३ ए विहायी।

(६) १ ए विनोय। २ भा ए जानी।

(७) १ भा जीड़ा कोइ कराहर रा जीड़ा कोइ विनोद बुझाहस ए लेख
हैमत जायु मो। २ ए बेरसी।

अर्थ—(१) भेट नारी कहै लगी 'जब मेरी बारां सुनो : मैं एक राजा की राजकुमारी (राजकन्या) हूँ। (२) मेरा स्थान चित-विपान नगर में है मैं चित्रसेन की बेकती (कन्या) हूँ और प्रेमा [मेरा] नाम है। (३) [मेरे] नाम के और बुद्धिमान हुए तब बिचिता मे मुझे लोह-कुटुब से विमुक्त कर दिया। (४) मैं अल्प [वयस्क] और मोती की प्रेम नहीं जानती थी कि क्या होता है चिता के राज्य (पिता की अविभावकता) में मेने बाल्यावस्था हो जाती (समझी)। (५) दिन का-लेखकर बहुलायी की और रात्रि निर्दिष्टन सोकर नैवली थी।

(६) बिरह-वियोग का सताप-बुझ नहीं जाना था कि कैसे होता है (७) रात्र-दिन जीड़ा कोइ (जीतुह) विनोद और कोलाहल का ही विलास (धीन) किया था।

टिप्पणी—() रीय < बीजा < रानि। (४) अमोन < मोन < मरु < मरु। (७) मोह < मुह [दे] = आरपर्व जीतुह बुझाहस।

[१९६]

नगर मोहावन^१ पित बिसराऊ । गोंद^२ नगर पिना लगराऊ ।
सीतरि^३ छाह मयन^४ अबराई^५ । जिजु^६ कबिलास जानु^७ मुद् आई^८ ।
बांध पड मफर सब झारी^९ । औ सभ^{१०} सग्नर^{११} पानि पनारी ।
मल^{१२} अनग पक्षी^{१३} पहु^{१४} छाए । करहि^{१५} कलि रम वषन मोहाए ।
सग्न वमन रह अबराई^{१६} । महत बाम नहु दिमि^{१७} जाई ।

अमियसमान^{१८} फर लाग सरिबर^{१९} सदा फर लगराउ^{२०} ।

गन गघप^{२१} रिनि मुनिजन आइ करहि^{२२} विमराउ^{२३} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा मुहावा ।

(२) १ रा सीतरि । २ ए पनी । ३ भा अबराई । ४ ए जति । ५ रा उतरि । ६ भा भा^७ ए, छाई ।

(३) १ रा फमहि फम भारी ए रहै सब झारा । २ ए म सब । ३ ए म यह मल नहीं है ।

(४) १ भा फर, ए मल । २ रा पछी । ३ भा सब ए बा । ४ ए बाए । ५ ए करी ।

(५) १ रा अबराई । २ भा दिमि दिमि ।

(६) १ ए सदा (मुल करम का उत्तराह) । २ रा ए म यह मल नहीं है । ३ भा ए मंगराउ ।

(७) १ भा गघप बी । २ ए करी । ३ ए विमराउ ।

अर्थ—(१) बिज-विषम नगर मुहावा या और नगर के गोईड में पिना वा लतराउ (लभाराम—एक लाग बूतों का नाम) वा । (२) उसरी अबराई (आम-बाटिका) में [एती] छीतम छाया रहती थी जि मानो बीलास (मिचलोक) ही उतरकर भूमि पर आ गया हो । (३) सभी वेड बांधे (पुसेवित) और कम्युल के और सभी बूतों के बोधे जल-वचालियां थीं । (४) वहाँ पर अनेक बने (अण्टे) बनी छाए रहते थे और रत्तीने और मुहावने बोम बोतने हुए वेनि करते थे । (५) उस अबराई (आम-बाटिका) में तथा बर्तत जलु रहती थी और बाव उसरी मुर्प बमो विप्राओं में से आता था ।

(६) उसके थोछ बूतों में अजुत के समान कल लगे हुए थे और वह लगराउ सदा फना रहना था; (७) वहाँ पर गंधर्व वष तथा ज्वि-मनियन आकर विषम करते थे ।”

टिप्पणी—(१) (७) विमराउ < विषम । (२) गोंद < गोन्द < गारिद = घाम से लगा हुआ भूगड जो गास आदि के बाहर से उपजाऊ होता है । लगराउ < लगराव = लाग पडा का बाव । (३) कबिलास < बीलास = मिचला । (४) पनारी < प्रपाणी । (५) मजग^७ < माभगरी = बाव की बुधावनी । < रह < दग ।

[१९७]

चित्रसारि एक सही सवारी । तह खले^१ हम जाहि धमारी ।
 दिन एक सब सखी^२ मिलि^३ आई^४ । कहन्हि^५ फलहु खल अबरारि^६ ।
 कहै^७ जो अग्या मात क^८ पावौ । तो तुम संघ अबरारि^९ आवौ ।
 में फुनि^{१०} उठि माता यह आई । मात भूवि कोरा^{११} बसाई^{१२} ।
 कहिउ^{१३} जो^{१४} तिल एक आएसु पावौ । ससिन्ह^{१५} साध बारी होइ आवौ^{१६} ।
 माते^{१७} कहा आजु इहवां^{१८} घर खेसहु कलि कराहु ।
 भरम होइ किछु मो जिय^{१९} बाहर कठहु^{२०} न जाहु ॥

पाठान्तर—(१) १ ए खेले ।

(२) १ रा ए सखी । २ ए जो । ३ ए आई । ४ ए बसौ खेले अबरारि ।

(३) १ ए कहा । २ मा पिठा क ए माता की । ३ मा ससिन्ह साध बारी के जानौ ए तो तुम संघ अबरारि आवौ ।

(४) १ रा ए पुनि । २ ए माय भुवि के कोर । ३ मा बैठाई ।

(५) १ ए कहैन्हि । २ ए में यह खल नहीं है । ३ रा सजिन ए सखी । ४ मा बारी तिलि आवौ ए बारी में आवौ ।

(६) १ मा माते । २ मा तुम्ह पछी ।

(७) १ मा किछु मोहि जिय ए ती बीच मो । २ ए बाहर ।

अर्थ—“(१) वहाँ घर एक चित्रसारी लवाई हुई थी; वहाँ हम जाकर घमार (अधमपुर्न खेल) खेलते थे । (२) एक दिन [मेरी] सभी सखियाँ मिलकर आई और खुले सभी ‘बसो जनराई (माझ-बाटिका) में खेलें । मैंने कहा ‘यदि माता की आज्ञा पाऊँ, तो तुम्हारे साथ अबरारि बाज (बसु) । (३) मैं तबन्तर उठकर माता के पास आई और माता ने बूमकर मुझे मोद में बिठा लिया । (४) मैंने कहा, ‘यदि तमिल आज्ञा पाऊँ, तो सजिनों के साथ बाटिका हो आऊँ । (५) माता ने कहा ‘जाम यहाँ घर पर खेलो और बैल करो (६) मेरी जी में कुछ भ्रम (धम) हो रहा है, इसलिए कहीं बाहर न जानो । ”

(७) माता ने कहा ‘जाम यहाँ घर पर खेलो और बैल करो (८) मेरी जी में कुछ भ्रम (धम) हो रहा है, इसलिए कहीं बाहर न जानो । ”

टिप्पणी—(७) चित्रसारी < चित्रशाला । (२) अबरारि < आभराजी = जाम की बुझावली । (४) कोर < कोड = बीच । (५) बारी < बाटिका ।

[१९८]

जो मात भम^१ बचन गुमावा । खरिबाइ^२ जिउ^३ गहमरि^४ आवा ।
 मांम पोंछि^५ ब कहिन्हि^६ बुसाई^७ । होइ सयानि छाड़ि^८ खरिबाई^९ ।
 भोर कहिन्हि^{१०} तुइ बारि कुमारी^{११} । मान पिता के^{१२} प्रान अपारी ।
 मन ओट तोहि^{१३} तिल न बराऊं । मिग जाइव छाड़ि^{१४} लतराऊं ।
 पुनि अरा कहिनि^{१५} बार जनि^{१६} सावहु । तिल एव रोकि यगि^{१७} पर आवहु ।

भा अनंद सुनि मन^१ मह दुख गा^२ सुन भा धीय^३ ।
रहमी सभ^४ महलीं मुनि क^५ पाई जो^६ अग्या धीय^७ ॥

पाठान्तर—अनंद सुनि अनंदी ३ के बरण ए में परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए माँटे वेह। २ रा सरिवाई। ३ भा हिय ए भिय। ४ भा ए गहवरि।
(२) १ रा बी बहिन ए बी कहा। २ भा छाडहु ए छाडु।
(३) १ रा बहिन ए कहा। २ भा ठ आहि कुमारी ए ठ बारि कुमारी।
३ ए कर।
(४) १ ए जे। २ ए जावे छाडहु।
(५) १ भा बहि नि ए कहा। २ ए जे। ३ ए बहुरि।
(६) १ भा मुनि बत मई ए बिब मुनि कै। २ ए भाया।
(७) १ भा ए रहमी सबै। २ ए सहेली मिहि हँसि। ३ भा मता बी,
ए माँटे। ४ ए आयमु दीज।

अर्थ—(१) जब माता ने इस प्रकार का बचन सुनाया (बात कही) तो लड़कपन के कारण मेरा भी भर आया। (२) तब उन्होंने मेरे आसु पोंछ कर और समझा कर कहा 'सवाली होवो (अपने में सवालान लामो) और लड़कपन छोड़ो। (३) और उन्होंने कहा 'हे कुमारी तुम बालिका हो और मत्ता-पत्ता की प्राणधार हो। (४) तुम्हें मैं तनिक भी नेत्रों से ओसल न करूँगी; तुम अक्षराबै का मित्र का जाला छोड़ दो। (५) [किन्तु] फिर उन्होंने ऐसा कहा 'बैर मत लपामो तनिक लेस कर छोड़ धर मा जाओ।

(६) यह सुनकर मुझे मन में आनंद हुआ दुःख जला गया और भी मैं सुख हुआ (७) और यह सुनकर सभी सहेलियाँ हँसित हुई कि कुहिता (प्रेमा) ने भासा प्राप्त कर ली।

टिप्पणी—(४) लगारं < लटारन = लाग पड़ा का बाय। (५) बार < बेसा = समय।
(७) रहस < रहस्य = हर्ष।

[१९९]

पुनि माँटे^१ सब सगी बोलाई^२ । पूननि सठ^३ गधि सब^४ बनाइ ।
बनरु यान पुनि^५ चान मारी । सिगजी अनु गति अँझिन^६ गारी^७ ।
बहुरि सभ^८ भो^९ सहर दुलारी^{१०} । पनन ओटि अनु माँच मारी^{११} ।
बबहुं भाठ ओसन कर दगा^{१२} । बबहुं महज सरिवाई पना^{१३} ।
जोयन मो^{१४} रिछ^{१५} जानि न जाई । दहु दुद मई^{१६} बाररि^{१७} अधिपान^{१८} ।

दूनों बा^{१९} बरहि मापुम मई^{२०} जोयन भो सरिवाई ।

पनि^{२१} जोयन घमि^{२२} ते निन अरु पनि ते^{२३} बरमाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा माँगा। २ ए सगी बोलाई। ३ ए पून्ह मे रा पूननि
गो भा नूनन मेर। ४ रा मो मई (?)।

- (२) १ भा कंकन बंदन ए गमन बदन सा। २ भा सिरी जमी ससि पुनिन
ए सिरी जमा पुनिन ससि। ३ ए सिमारी।
(३) १ भा ए सबै। २ ए ओ। ३ ए दुसारी। ४ ए जो सचि बारी।
(४) १ ए कै बेसी। २ ए पेसी।
(५) १ रा जोवन सा ए अर सौतुन। २ भा ए मे नही है। ३ भा दिन
दिन महं ए बुद्ध सो बहु। ४ ए काकी।
(६) १ ए करै मापुस मो।
(७) १ ए बन। २ ए वन। ३ भा औ बनि जो अस ए अर बन से रा अर
बर ते। ४ ए बेकसाह रा बसाह।

अर्थ—“(१) छिद्र माता ने सब सच्चियों को बुलाया और कूर्मों से सब का भुंजार किया। (२) सब का स्वर्ण बंसा [वीरिपुर्ब] मुक्त [या छरीर] या और सब बंदन (बंदनौदा) को साक्षिणी पहने हुए थी [वे ऐसी नय रही थी] मानो बंधन का अमृत मिचोड़ कर निर्मित हुई हों। (३) सभी बतुर थी और सहज ही प्यारी [सपत्नी] थी; मानो वे स्वर्ण को ओढ़ (मला) कर लक्षि में डालकर बनाई गई हों। (४) कभी उनमें जीवन का भाव (आविर्भाव होता) दिखाई पड़ता था और कभी सहज लक्ष्मण दिखाई पड़ता था। [छिद्र-छीक] जीवन-सबुद्ध कोई वस्तु जनी नहीं जान पड़ती थी पता नहीं लोगों (जीवन और लक्ष्मण) में किसकी अधिकता थी।

(६) जीवन और लक्ष्मण दोनों आपस में बाह (अपड़ा) कर रहे थे (७) वह जीवन धन्य था वे दिन धन्य थे और वे धन्य थे जो [इनका] बिलास (लीन) कर रहे थे।

टिप्पणी—(२) बदन < बवन (प्र) = छरीर (४) पेस < पेक्स < प्र + ईप्स = देखना अवलोकन करना।

[२००]

जीर नही तोहि माउ^१ बिचारी । पनि बिधि जइ^२ यहि^३ कलि जीतारी ।
अजहू पम माउ नहि^४ जानां । अजहू न रतिपति^५ गात समानां ।
अजहू रग रोस तिन्ह^६ बोरा । अजहू न उट्ठे^७ कनक बचोरा ।
अजहू जोवन बली न मोरी^८ । अजहू सहज दुसारे^९ मोरी^{१०} ।
अजहू नहि^{११} कत भरि^{१२} गिय^{१३} लाई । अजहू न हठी^{१४} नाह^{१५} मनाई ।
अजहू मरीग न छाड़^{१६} लरिकाई^{१७} कर भाउ ।
अजहू भूकि म^{१८} जानहि^{१९} पम मुग कर चाउ^{२०} ॥

पाठान्तर—ए म उपर्युक्त पाँचवीं अर्द्धांसी उपर्युक्त प्रथम दो अर्द्धांतियों के बाह ही जाती है।

- (१) १ ए और नही जो भाव। २ ए वन विधया। ३ भा से [या 'तिव']
ए जे।
(२) १ ए गा। २ ए नरपति।
(३) १ भा तेहि। २ भा प्रनटे।

- (४) १ ए घामी। २ भा कुमार न। ३ ए बोली।
 (५) १ भा ए न। २ भा केरि, ए भिरे। ३ ए यीब। ४ ए रटे। ५
 भा ए मान।
 (६) १ रा छाड़हि भा छोड़उ। २ ए सरिबाई।
 (७) १ भा अनामि ए अमोमि। २ ए जानौ। ३ भा पम प्रीति क म भाउ।

अर्थ—(१) उनका भाव (नौगर्भ) विचारकर और भी कह रही हूँ विधाता धर्म या जिसने इन्हें इस कसि में अवतरित किया। (२) वे आज (अभी) तक प्रेम-भाव नहीं जानती थीं आज (अभी) तक उनके गात्र में काम नहीं समाया था। (३) आज (अभी) भी उनमें रंग (प्रेम) का रोग (उमाङ्ग) बोझा का आज (अभी) भी उनके कज्ज-कटोरे (उरोज) उठे (उमड़े) नहीं थे। (४) आज (अभी) भी उनकी पीचम-कलिका मुकुटित नहीं हुई थी आज (अभी) भी वे सहज कुमार में दुबाई (डूबी) हुई थीं। (५) आज (अभी) भी उन्हें उनके बाँत से घने से भर (कस) कर लगाया नहीं था और आज (अब) भी उन्हें कठने पर उनके पति से मनाया नहीं था।

(६) उनका तयोर आज (अभी) भी लङ्कण का चाब नहीं छोड़ रहा था (७) वे आज (अब) भी भूसर [भी] प्रेम-मुरा का चाब (स्वाह) नहीं जानती थीं।

टिप्पणी—(१) बचोर < कचवाल = कटोरा। (४) मीर < मउल < मुकुलम् = मुकुटित होना। (५) मिय < घीबा।

[२०१]

अजहू पहिरि न जानहि चोला^१। अजहू पम रम भाउ अमोला^२।
 अजहू अपर अमीरम दाब^३। अजहू^४ भए न^५ सोमन दाबे।
 अजहू नाह मूति गान न लाग^६। अजहू मुरति काम नहि जाग^७।
 अजहू मुरति मोहाग क^८ चाला। पम रहम सउ^९ कंठ^{१०} न लोला^{११}।
 अजहू मुरति मज जिय माहा^{१२}। अजहू उमोस^{१३} धरो न^{१४} बाही।
 त सम^{१५} मिनि प^{१६} हम मय^{१७} रहमि पसी^{१८} अंबगउ^{१९}।
 मनु तव बुधि न मभागिउ^{२०} जहि अम^{२१} भइउ विपाउ^{२२} ॥^{२३}

वाक्यान्तर—उपवन अर्धांगी ४ भा म दपा ५ है।

- (१) १ न जानी बोरी। २ रा अमोरा ए अमोली।
 (२) १ ए दाब। २ न अजहू न। ३ भा ने।
 (३) १ भा नहि गुन गान न लाग। २ ए काम न जाण भा जान (?) मरी भाग।
 (४) १ भा मोहाग वा। २ रा ना। ३ भा कन। ४ ए में पूरी अर्धांगी रा पाउ है—
 अजहू प्रीतम मारि न जाय। अजहू काम भाव न जयाय।

(५) १ भा बिय माहीं ए मन माहीं। २ रा उचीरी ए उससि। ३ ए बरा ना।

(६) १ भा ए सब। २ भा हम सों ए संग ही। ३ रा बली। ४ ए बंकराउ।

(७) १ भा तब बुधि बिसंभारेउ ए बिधि तब न संभार। २ भा में 'बस' नहीं है ए जो अस। ३ भइतं बबराउं ए भी बिपाउ। ४ ए. म उपर्युक्त बोहे के स्थान पर है —

अबहुं यही बमोकी गई जानी रस बास।

अबहुं पै न सीख न बाकें का जानी बिहसंत ॥

स्वीकृत पाठ का बोहा ए में २ २ के बाब आए हुए एक छंद में है जो रा भा में नहीं है। ऊपर बोहे का ए का पाठांतर उची से बिबा मया है।

अर्थ—(१) वे आज (अभी) भी जोली पहिनावा नहीं जालसी भी आज (अभी) भी [उनका] प्रेम-रस का भाव जोला (बासना-हीन) बा। (२) आज (अभी) भी उनके बचरी के अमृत रस डँके (अपूरे) वे और आज (अभी) भी उनके नेत्र बरक नहीं हुए थे। (३) आज (अभी) भी पति [उनके साथ] सोकर उनके खीर से लगे नहीं थे और आज (अभी) भी रसि तथा काम [उनके हृदयों में] जागृत नहीं हुए थे। (४) आज (अभी) भी सुप्त और सौभाग्य की जोली पहनकर उन्हें प्रेम और हर्ष से कंठ नहीं जोला बा। (५) आज (अभी) भी उनके जी में सुप्त की झंका नहीं थी और आज (अभी) भी तर्किए के कप में किसी ने [उनके सिर के नीचे] बाहुं नहीं रखी थी।

(६) वे सब मिलकर हमारे साथ हर्षपूर्वक अमराई को बचीं। (७) कबाबित तब मैंने बुझि नहीं सँभाली (बिचार नहीं किया) जिसके कारण मैं ऐसी बिना पैरों की (असहाय) हो गई।

टिप्पणी—(२) सोमन < लोचन। बांक < बंक < बक। (३) नाहुं < नाब = पति। (४) उचीस < उचड़ीयं = ठकिया। (५) रहस < रमसु = हर्ष। बंकराउं < बामाराम = बाम की बपीपी।

[२०२]

तहि दिन भागि गई मोहि बाए^१। रहसि बली बालेपन बाए^२।

हम गीनों म्रिगननी बाला^३। अघर^४ अमीरस भरे रसाला^५।

सम सुकुमारि^६ स्रष्टा बिभि डोरहि^७। बधन सुरम बोबिस^८ जिमि बोलहि^९।

देवत लख भरम जिउ डरई^{१०}। बिभि यह छवत टूटि जनि^{११} परई^{१२}।

अमिअ कूड नाभी बस पारी^{१३}। बनी सीम माग रणबारी^{१४}।

अतुर कला^{१५} सम मागरि^{१६} सुबुधि सुमत^{१७} मुजान।

भोह धनुक^{१८} सर बरनी मारहि ताबि परान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए. संग भी सब बाला। २ ए अयनैनी हूँमि गीनी बाला भा रहसि बलित बाबैरन बाए।

- (२) १ भा हंस गवनि भिगनैन से बासा ए रहसि जली बासापन बास ।
२ ए बापे । ३ ए रामाये ।
(३) १ ए सब मुहुमारि, भा सब मुहुबारि । २ ए जो डांके । ३ ए
कोकिला । ४ ए ए म यह पण्ड नहीं है ।
(४) १ ए भिन्न करई । २ ए रूटना ।
(५) १ ए नामिहि कम बारी भा मारी सब बारी ए नामि कम बारी ।
२ भा साहि रगबारी ए साहि रगबारी ।
(६) १ भा ए गुनी । २ ए सब नागरी । ३ भा मुहुनि मुमप ए म दरि
मुमपि ।
(७) १ ए अनुज ।

अर्थ—“(१) उस दिन प्राय मेरे बाप (प्रतिष्ठा) हुई और मैं हर्षपूर्वक लङ्कपन की उमर में बात पड़ी । (२) [समस्त] बासाएँ हमगवनी तथा मुपगवनी थीं उनका अथवा समुद्र उस से मेरे हुए और रसीले थे । (३) सभी कुमारियाँ लताओं के समुद्र हिल (बल) रही थीं और कोकिल के समुद्र रसीले बदन बोल रही थीं । (४) उनकी कटि देखकर [बड़ा का] जो जम से संतुष्ट होता था और [वे कहते थे] ‘हे विद्यावा, यह [कटि] पूरे ही दृढ़ न पड़े । (५) उन बालिकाओं की नाभि में अमूल कुंड का निवास था और उनकी बेचियाँ उसकी रत्नवासी करने वाले नागों के समुद्र थीं ।

(६) सभी नागरियाँ बसा-बसुर, बटिपनी और मुबान (बालमपन्न) थीं; (७) वे भीष्टों के समुद्र और बरीनियों के बापों से [बड़ाकों के] प्राणों को लक्ष्य करके मारती थीं ।”

टिप्पणी—(१) भासि < भास्य । (५) अमिह < अमून । बारी < बालिरा ।

[२०३]

केलि करन म मधुवन आई । जहाँ अहा मभ^१ मन्न सहाई^२ ।
मुरम पनि भागा मन हू^३ । बागिग^४ यहून^५ पीउ पिउ रर ।
चतहूँ और पटप सपनान । बनह पचम बन मुठान ।
चतहूँ अविकम^६ बसो निगाम । बनह मार बारिना बाम ।
चहूँ निमि^७ पूरु मुरग^८ मुधामा । जट^९ गिय^{१०} तह पम हुलामा ।
जहि मरीर महि^{११} मनमय सबग^{१२} तहि मन छाणि पिराइ^{१३} ।
मन्न सहाइ दगि अयगड^{१४} माण्ड^{१५} अनग^{१६} जियाइ ॥

- वाङ्मय—(१) १ म म मधुवन आई । २ भा म म भागे सब ए जहाँ आदि सब
३ ए मगा (<गनी नामरी निमि) मगाई ।
(२) १ म गुणी पनि भागा मन हूई, ए मुरग मरी भागा बररई । २ ए
बागिग । ३ भा पिउ पिउ । ४ भा बर, ५ बर ।
(४) १ ए अमिह ए दिगमी ।
(५) १ ए यहू । २ ए मुमप । ३ ए जहाँ देगि ।
(६) १ ए म ए भा । २ भा मगरड । ३ ए ए मे यह पण्ड नहीं
है । ४ ए जीव पराड ।

(७) १ रा ए खंवरई। २ ए मुमा रा मुवद। ३ ए अंत मा अनेप
(<अनप) रा मे यह छम्प नहीं है।

अर्थ— (१) मैं केलि करती (कोलती-कबती) मधुवन आई जहाँ यह समस्त मदन-सहाय
(काम-सेना) थी। (२) पक्षी [बहूँ] रसीली भावा में [बोलते हुए] मन हरण कर रहे थे
बहुतेरे चातक पी-पी रट रहे थे। (३) कहीं पर अमर पुष्पों से लिपटे हुए थे और कहीं पर [कोकिल
का] पंचम स्वर ठना हुआ (मिमांसित हो रहा) था। (४) कहीं पर अधिकसित कल्लो बिकास
कर रही थी और कहीं घोर तथा कोकिल बोस रहे थे। (५) चारों ओर अकळे रंग और मुग्ध के
कूल थे और जहाँ बेलाए जहाँ मेन तथा उल्कास था।

(६) निमके शरीर में (कभी) मन्मथ में संहरण नहीं किया था उनके भी मन घोरता
छोड़ रहे थे (७) अमराई में इस मदन-सहाय (काम-सेना) को बैलकर मुँह का (के भीतर)
भी काम आमत हो जाता था।

टिप्पणी—(२) चातिग < चातक = पपीहा। रर < रर < रट = रटना चिन्तना। (४)
वास < वाश = पशु-पक्षिया वा बोलना आह्वान करना। (५) हुकास < उल्कास। (६)
भिराई < बीरता।

[२०४]

दनि सपी सय रहसि^१ हुलासी । केलि करहि खेसहि मीला सी^२ ।
कोइ गनि गनि कोकिला^३ उडावहि^४ । कोइ मंजूर नाच^५ देखि धावहि^६ ।
जित आनद हुसत सम^१ खरहि^२ । बहुते कुसुम^३ तोरि उर मसहि^४ ।
बहुतन्हि^५ फूल चडावा^६ माथे । बहुतन्हि^७ हार बँडुवा^८ गाये ।
कुसुम^९ मुवाम^{१०} सुरग जो पावहि^{११} । सो मोहि पास न दीरत^{१२} आवहि^{१३} ।
खसत भवहि^{१४} से मधुवन तोरहि^{१५} कुसुम^{१६} सुवास ।
बवल बदन मिगिननी भवर न छाड़हि^{१७} पास ॥

पाठान्तर—(१) १ रा सब रस (?) ए जा रही। २ ए हुलासी। ३ ए बेलि कर
गई मीलासी।

(२) १ मा गनि गनि कोकिल ए कोकिला काइस। २ मा उडियाई ए
उड़ाई। ३ मा नाचन। ४ मा ए बाई।

(३) रज्जग सब ए रहमी जो। २ ए गेले। ३ भा. बहुते कुसुम ए बहुत
कुसुम। ४ गीरा मेले।

(४) १ रा बहुतनि ए बहुतन्ह। २ भा चड़ाए माथे ए चड़ाया माथे।
३ रा बहुतनि ए बहुतन्ह। ४ भा बँडूरा ए गीव पीव।

(५) १ भा. कुसुम। २ ए नाम। ३ ए पावै। ४ भा ए धार लै। ५. ए
आने रा मे यह पाछ नहीं है।

(६) १ ए रबी। २ ए तारै। ३ भा कुसुम।

(७) १ ए छोड़े।

धर्म—“(१) [उस अनराई को] बैलकर समस्त ललियाँ हवित और जलकतित होकर नबलामों (नब बयलकामों) की भाँति बेलि (लल-कूद) करने लगीं। (२) कोई गिन-गिन कर बोलिलामों को उड़ाने लगी। कोई मयूर का मृग्य बैलकर [उसको घोर] बीड़ने लगी। (३) घिस में मानव युक्त होकर हलनी हुई वे सब ललने लगीं। बहुतेरी कुलों को तोड़कर अपने उर (हृदय) से लपान लगीं। (४) बहुतों ने कुलों को सिर चिड़ाया और बहुतों ने [कुलों के] हार और बँदुर मृग लिए। (५) उनमें से ओ अछे रंगों के और सुवासपुष्प कूट पानी भी। वे उन्हें लेकर घेरे पास बीड़नी आनी थीं।

(६) [इस प्रकार] हवित होनी हुई वे मधुवन में प्रमथ करने लगीं और सुवासित कुमुम तोड़ने लगीं; (७) उन मृग-मयनियों के मुल कमल-सङ्गा वे इस लिए अमर [उनका] नष्टय नहीं छोड़ रहे थे।”

टिप्पणी—(१) रजम् < रजम् = रजम्। हुमान < उम्मान। (२) मयूर < मयूर। (३) कुन भ < कुमुम। (४) बँदुरा < बँदुरा = बँदुर। (५) मय - भयम् = प्रमथना टिप्पणी।

[७०५]

एहि विधि कमि बरन ही^१ वारी^२ । कवल वन पुमि मभ^३ मुबुवारा ।
ओ मम गान^४ मुबामिक लाए^५ । पुहुप वाम तजि^६ मधुवर धाए ।
बाहू क मोम जा चङि [चङि^७] वम^८ । बाहू क उर बाहूहि पम^९ ।
अपर मुरग अपिम^{१०} जा अह^{११} । कवल वाम त मधुवर गह^{१२} ।
अब लहि^{१३} बहुत अनम रम^{१४} राग । त बरवस मधुवर बह^{१५} बाग ।

बाटे^{१६} अपर ममहि^{१७} क अकुतानी बरमारि ।

आगे मधुवर धरे^{१८} पाछे^{१९} गहे^{२०} पुष्टारि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा करन वह ए वरै ते। २ रा वारी ए मारा। ३ ए त जनि रा भा गव।

(२) १ रा ए भा प्रव। २ रा भी तन अधिच मुबामि लाए, भा भी सब गान मुबामि लाये। ३ रा निमि ए ने। ४ भा पाण्ड।

(३) १ भा बाहू के मोम मदि, रा बाहू के मार (<मोर नागरी विरि) चङि : (रा तथा भा दोनों में एव-एव गारद भी बसी है। ऐसा लगता है कि दामा व निमी पूर्वज म अधिम गारद के बीच दामों म गारद का दुहाने के लिए २ रा मय बनाया हुआ था जिसको प्रति-निधित्वाभा ने न मयम पादे के कारण छान लिया। मये दोनों का कोई न कोई पूर्वज नागरी विरिवा प्रमाणित हुआ है) ए बाहू मोम जा चङि चङि। २ रा बैन। ३ रा रै ।

(४) १ रा, ए अधी। २ भा आरे। ३ भा, तजि मधुवर बाएउ।

(५) १ ए ए लणि। २ ए ने। ३ भा रै ।

(६) १ ए डीके। २ ए मयम रा मयनि।

(७) १ ए रोने। २ ए पाए। ३ ए रने।

अर्थ—“(१) इस प्रकार बालिकाएँ केलि (बेल-वृक्ष) कर रही थीं; वे सभी कमल-बनो फिर (भीर) मुकुमारियाँ भी (२) भीर सभी धरीर में सुवासयुक्त पदार्थ लगाए हुए थीं इसलिये पुष्पों की सुगंध छोड़कर मधुकर [उनकी भीर] चौड़े पड़े। (३) वे किसी के लो तिर पर बड़-बड़ कर बैठ गए और किसी के हृदय में उड़होने प्रसिद्ध होना चाहता (४) बालिकाओं के जो सुरंग और अनुच्छिन्न अंगर थे उनके मूल-कमल की सुगंध के कारण मधुकर उन अंगरों से छिपट गए। (५) अब तक जिस रस का [बालिकाओं में] बहुत यत्न से सुरक्षित रक्खा जा उसको वस्तुपूर्वक वे मधुकर चकना चाहते थे।

(६) सभी के अंगरों को उन अंगरों में काट छाया, इसलिये वे श्लेष्म नारियाँ अकुता (तंग भा) गईं; (७) आगे से मधुकर उन्हें घेर रहे थे और पीछे से [उनकी बेलियों को नाथ समझ कर] उन्हें पुछार (मचूर) घेरे हुए थे।

टिप्पणी—(१) मुकुमारी < मुकुमारी। (२) पुष्प < पुष्प। (४) अपिप < अपीत = अनपिप।

[२०६]

बिगसत कवल उपम सम वारा^१ । बस^२ मधुकर किए गुंवारा^३ ।
विकल सो^४ बात कह नहिं पावहि^५ । सोस लस मुख ऐसे आवहि^६ ।
अकुताने भा^७ भग सिंगार^८ । कंचुकि फाटि टूट गिय^९ हारा ।
परी अवस्था सब^{१०} अकुलानी । नासउ तिलक भांग उषसानी^{११} ।
नो सत जो घर सउ^{१२} के आई^{१३} । नासि जली^{१४} से सब अबरार्ई^{१५} ।

हुझ^{१६} कर वदन छपाए^{१७} घाई^{१८} त^{१९} बर मारि ।
विन मारि भीतरों पसी^{२०} बार पोरि^{२१} दीन्ह टारि^{२२} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा बिगसत बबल अरण सब बाला २ बिगसी कौल भाति से बाटी ।
३ रा बैठे । ४ भा किए बेकरारा ५ के विकरारी ।

(२) १ भा बिबली ए व्याकुल । २ ए पाई । ३ भा मुह ऐसे धावहि,
४ मुह ऐसे धावै ।

(३) १ भा अकुताने भी ए अकुलानी भी । २ ए सिंगार । ३ भा टूट
गिय ए टूटिया ।

(४) १ भा अवल सवै । २ भा अपयावनी = बिबरानी ।

(५) १ ए से रा सों । २ ए घर मे के आई । ३ ए जली । ४ ए
अबरार्ई ।

(६) १ ए हुड । २ ए छाए । ३ रा अकुलानी (३ पूर्ववर्ती बोहा)
४ रा बरण (?) ।

(७) १ ए नै पीठी रा गई । २ रा बार पोरि विन नाग (?) ए पोरि
दीन्ह सब टारि भा बार पोरि रिय टारि ।

अर्थ—(१) सजी बालापे कमल के समुद्र बिकास कर रही थीं इसलिये मधुकर [उनके अक्षरों पर] बँठे हुए नु बार करते रहे। (२) बिकल होकर वे बात नहीं कह पाती थीं क्योंकि साँत सेते ही वे मुँह में प्रविष्ट हुए आते थे। (३) तंग आने के कारण उनका शृंगार भंग (अस्त-व्यस्त) हो गया उनकी कंचुकी (बोली) छट गई और उनकी घीसा का हार टूट गया। (४) [बुरी] पति या बनी और वे सब तय आ गईं; उनका तिलक नष्ट हो गया और उनकी नाय उन्मत्त हो गई। (५) वे जो दोस्त शृंगार घर से कर आई थीं उन सब को वे अमराई में नष्ट कर बत्ती।

(६) दोनों हावों से अपना मुँह छिपाए वे नारियाँ बीड़ी; (७) वे बिजलाला के भीतर का धूलों और पीरी (झोड़ी) का द्वार उन्होंने हटा दिया (बंद कर दिया)।

टिप्पणी—(२) (७) विस = प्रविष्ट = पुसना। (३) गिय < घीसा। (७) पीरि < प्रतोली = मूल्य द्वार, झोड़ी।

[२०७]

एहि अवस्था तँ^१ घर नारी । आइ बाइ माँस^२ बिजसारी^३ ।

बहुतन्हि^४ क कंचन कर^५ फूटे । बहुतन्हि^६ हार उरहि के टूटे ।

बहुते अपर पयोधर टोबाहि । बहुत चीन्ह उरहि^७ दनि रोबाहि ।

बहुत हमहि^८ बहुत^९ विलसाही । बहुते माँता पितहि^{१०} संकाही ।

बहुतन्हि^{११} सीस बस मो कराए^{१२} । बहुतन्हि^{१३} बाजर नैन नसाए^{१४} ।

सने सिगार^{१५} भग भा कोइ हँस^{१६} कोइ बिलसाइ ।

भौर भये^{१७} जिय भरमी^{१८} घर दिनि धाइ^{१९} न जाइ ॥

पाठान्तर—आ में अर्द्धावस्था ३ और ४ परस्पर स्थानस्तरित हैं।

(१) १ आ अवस्थाने मज ए अवस्था ते कर। २ ए आइ बाइ मंदिल।
३ आ बिजसारी।

(२) १ रा बहुतनि ए बहुतह। २ ए उर कंचन। ३ रा बहुतनि।
४ ए चीब गहि।

(३) १ ए बहुतो। २ ए बहुतो बिह अपर।

(४) १ रा बहुते हमी ए बहुती हँसहि, भा बजने हँगी। २ ए बहुती। ३ ए बहुती माता पिता।

(५) १ रा बहुतनि ए बहुती। २ भा मोकरानेउ ॥ मोचमाए। ३ रा बहुतनि ए बहुती। ४ भा नगामेउ।

(६) १ ए मने निगार जो। २ ए हँसी।

(७) १ ए भये रा भरम। २ ए भै भरमी रा जिय घर पुनि। ३ भा मजहि ए बनी।

अर्थ—(१) इस [बुरी] अवस्था से (के कारण) वे थोड़े नारियाँ बिजलाला में बीड़कर आ गईं। (२) बहनों के हावों के कंचन फूटे बहनों के हृदय (बलावस्थ) पर के हार टूट गए। (३) बहुतेरी अपने अक्षर और पयोधर [पर के अक्षर-आ] टटोल रही थीं और बहुतेरी अपने उरीकों पर [आ के] बिह देकर री रही थीं। (४) बहुतेरी हँस रही थीं तो बहुतेरी बिग्न रही

यी बहुतेरी माता-पिता से शक्ति हो रही थी। (५) बहुतों के सिर के बास लुप्त गए थे बहुतों के नेत्रों के काजल गन्ध हो गए थे।

(६) उनका समस्त भूगार लुप्त हो गया था; कोई हँस रही थी तो कोई बिसप रही थी; (७) भ्रमरों के भय से बी में थे जो अमित हुई (बकराई) तो घर की बिद्या में [उनसे] माया नहीं आ रहा था।

टिप्पणी—(१) बिच्छु < विलम्ब < विलम्ब = उदास बुद्धि। (५) मोहर < मुष = सोकना मुक्त करना।

[२०८]

पुनि^१ आपुस महीं^२ कहिन्हि^३ विचारी । घर कह चलहु^४ तजहु चित्रसारी^५ ।
बहुरि कहिन्हि^६ घर कसैं जाइय^७ । जननि पूछिहि^८ तौ कहा^९ कहाइय ।
किछ घर सब जननि जिय^{१०} घरहीं । बहुत भरम^{११} मधुकर कर करहीं^{१२} ।
जनीं चारि एक अही^{१३} सयानी । तिन्ह^{१४} किछु अरुप सक जिय^{१५} मानी ।
कहिन्हि^{१६} चलहु होहि^{१७} हम आगैं । तुम सब आवहु पाछैं लागैं^{१८} ।

फुनि^१ उठि पौरि^२ उपारिन्हि^३ मिसरी सब सकात ।

भरम न बदन उपारहि^१ सनहि^२ कहाँ त^३ बात ॥

पाठान्तर—(१) १ मा फुनि। २ मा मे यह मय्य नहीं है ए सो। ३ ए कहिनि ए कहूँ। ४ ए घर घर चलूँ। ५ ए सभी चित्रसारी।

(२) १ ए कहिनि ए कहा। २ ए जैसे जाई। ३ ए जननी पूछ। ४ मा कहा।

(३) १ ए किछ घर सका जननी क। २ ए संक। ३ मा उछी।

(४) १ ए जाइ। २ ए तिन ए ते। २ ए बछ। ४ ए मन।

(५) १ मा कहिनि। २ ए हाइ। ३ ए तुम आवहु हम पाछे काप।

(६) १ ए ए पुनि। २ ए ए पौरि। ३ ए उपारा।

(७) १ ए मयन न भरम उचारि। २ मा गानह ए मानन। ३ मा बड़हि ते ए बानी ए कहति ता (?)।

अर्थ—(१) फिर उन्होंने आपस में विचार कर कहा 'चित्राला छोड़कर घर की चलो।

(२) फिर मैं कहने लगी 'घर कैसे जाया जाएगा? भत्ता पुछेंगी तो क्या कहा जाएगा? (३) [कलत-उनमें से] कुछ घर जाने में माता की संका बी में धारण कर रही थी और बहुतेरी मधुकरों का भय (भय) कर रही थी। (४) बिनु [उनमें से] चार [एक] सिखाया सहाय थी उन्होंने बी में कुछ कम संका वाली। (५) उन्होंने कहा 'जलो, हम आग हीमी हैं और तुम [हमारे] पीछे लगी हुई आओ।

(६) फिर उठ कर उन्होंने दूधोड़ी उपाड़ी (लोली) और [उनमें साथ] धरित सभी निरत

बूँतों; (७) [भ्रमरों के] भ्रम (भय) के बारे में मुक्त नहीं बोल रही थीं संकेतों से ही वे बातें कर रही थीं।

टिप्पणी—(४) सयान < सजान। (५) पोरि < प्रतापी = मुख्य द्वार इमोरो। (७) सैन < संकेत।

[२०९]

बाहर बिज मारि सभ^१ आई । भ्रम न गए छटि फुनि^२ भरमाई ।
 डरहि न^३ आपु माहि बगराही^४ । एक^५ ठाव भई सब जाही ।
 फुनि^६ राकम एक आई तुलानी । दक्षि सयिन्ह^७ सब तज^८ परानी ।
 तेहि देखन मंका जिय^९ आई । हम क्यन^{१०} तर रही लकाई^{११} ।
 मैं जहि ठाँव छपानी अही । राकम आई तहाँ हो^{१२} गही ।
 माठि सयिन्ह महि^{१३} एकमरि माहि पकरमि बगराई^{१४} ।
 नन मन्क के मन्क मह^{१५} एहि वनमह ल आई ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा बाहर बिजमारी सब ए बाहर बिजमारी ओ। २ भा भरम न गएव जो छट्टी भरमाई, ए भरम न बी जो बिज भरमाई।
 (२) १ रा डर आनि ए डर मा। २ भा आपु माहि बिजमाही ए आपुन में बेग्राही। ३ भा ए एरहि।
 (३) १ रा ए पुनि। २ रा मतिन। ३ जो तजा।
 (४) १ ए देख मन संका। २ भा ए क्यगह। ३ भा रही छपाई ए रही छिपाई।
 (५) १ ए हय।
 (६) १ रा मतिन महि, ए मनी मा। २ ए बरेमि। ३ भा बिजमाइ।
 (७) १ भा नैन मन्क के मन्के ए नैन मन्क के मारन।

अर्थ—(१) सभी बिजगात्ता के बाहर आईं किंतु भ्रम (भय) छूटा नहीं और वे फिर भी भ्रमित होती रहीं। (२) डर के बारे में आपत्त में जलन-जलन नहीं हो रही थीं और सभी इकट्ठा होकर जा रही थीं। (३) फिर एक राक्षस आ पहुँचा और उसे बैल कर [मेरी] सब लक्षियों ने [कैसे] प्राय छोड़ दिए। (४) उसको देखते ही जी में संका आ गई और हम बुत्तों के भींचे छिप गईं। (५) मैं जिस स्थान पर छिपी थी, राक्षस ने वहाँ आकर मझे बचक लिया।

(६) साठ लक्षियों में से अनेकी मुझको भीरी से जलन कर उसने पकड़ा (७) और नैन अपने हाथों (पल मात्र में) मुझे बहुत दूर वनमह में ले जाया।

टिप्पणी—(१) राकम < राक्षस। (४) क्य < रक्ष्य < कृत्।

[२१०]

एक बरिम मोहि^१ भा एहि ठाऊ । गपनटु मुमिउं म मामुग माऊ ।
 मानु मिमिग एक^२ जोवन लगउ । मामुग रूप जो र^३ तोहि दगउ ।

बिन जिउ^१ क्या रही^२ एहि ठाह । जिउ^३ बिनु क्या जिय^४ कब ताह ।
 कुटुंब बियोग^५ रनि दिन दाह^६ । पापी जिउ निसर^७ नहि^८ चाह ।
 सुख हरि लीन्ह^९ दुख जिय^{१०} बाढ़ा । बरबस^{११} जीउ जाइ नहि^{१२} काढ़ा ।

येहि^१ सताप दुख कब रुगि^२ मै^३ जग जीयत रहावि^४ ।

जिमि सरबस^१ बिनु कदव^२ उरम फाटि मरि जावि^३ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए सपने भा सपनेहु ।

(२) १ भा अक । २ भा सूर ।

(३) १ रा जिय । २ भा मई रही ए मई रही । ३ ए जियब ।

(४) १ ए बियोग । २ ए बहई । ३ भा न निसर ए निकरि ना ।
 ४ ए बहई ।

(५) १ भा किएउ ए लीन्हा । २ ए जिब । ३ ए खर मा । ४ ए ना ।

(६) १ भा येहि ए येह । २ ए की सहि रा मे ये बो दाह नहीं है । ३ ए म
 मह दाह नहीं है । ४ ए रहाब ।

(७) १ ए जस सरसक । २ ए कावों । ३ ए मर जाब ।

अर्थ— (१) मुझे इस स्थान पर [रहते] एक वर्ष हो गया और स्वप्न में भी मैंने मनुष्य का नाम नहीं सुना । (२) आज एक पल के लिए मैंने जीवन देखा (जीवन का अनुभव किया) जब मनुष्य के रूप में मुझे मैंने देखा । (३) बिना जीव (प्राणी) के काया इसी स्थान पर बनी रही किन्तु बिना जीव के काया कब तक जी सकती है ? (४) कुटुंब का बियोग मुझे रात-दिन हाथ करता रहा है, किन्तु बापी प्राण [धरीर के] निकलना नहीं चाहते हैं । (५) जी में दुःखों ने बढ़कर मेरा सुख हर लिया, [किर भी] जीव बरबस निकाला नहीं जाता है ।

(६) इस सताप और दुःख में मैं जगत् में कब तक जीवित रहूँगी ? (७) जिस प्रकार सरोवर में जल के बिना कर्म (बीज) [फट जाता है], उसी प्रकार मैं भी [धरीर के] अर्थ भाग के छत्रों से भर जाऊँगी ।

टिप्पणी—(१) ठाह < स्थान । गाढ़ < नाम । (४) रीबि < रपबी < रजनी । निसर < बिस्तर < निद्र + नृ = बाहर निकलना ।

[२११]

मैं आपन जिउ^१ परिहरि आई^२ । बिनु जिउ अब मोहि^३ रहा न आई^४ ।
 एहि^५ दुख मै^६ दिन एक मरि जाइय^७ । कब रुगि एमैं जियत रहाइय^८ ।
 मुम सरोर अपर^९ यह म्बासा^{१०} । छाड़ी क्या जियन^{११} क मामा ।
 कुबर^{१२} दगु त^{१३} मोहि बिचारी । बिनु जिउ^{१४} बाग बहति है भारी ।
 रह्य जाब मुग मम^{१५} परिहरा । जहि दिन सउ मोहि दानव^{१६} छरा ।

बिनु आयें^१ पर जीउ ह तहि पर बिग्न दहाइ^२ ।

जे^३ दिन जाहि बियोग मह त को^४ आउ नहा^५ ॥

पाठांतर—उपपुस्तक अर्द्धांश ५ भा में उपपुस्तक प्रथम अर्द्धांश के बाद ही वाली है।

- (१) १ भा त्रिय ए मब। २ ए जाई। ३ ए बिना जीउ मोहि। रा बिनु त्रिय अब मोहि। ४ भा त्रिह न जाई ए त्रिह न आई।
- (२) १ ए यहि रे। २ रा हम ए म यह शब्द गही है। ३ ए जैही। ४ ए म ऐसे त्रिउ रहीहों।
- (३) १ रा न बर। २ ए पर सोमा। ३ भा त्रियै।
- (४) १ रा में यह शब्द गही है। २ रा देखु नू ए देखि तै। ३ त्रिय। ४ ए कहै बर, रा कहै सो।
- (५) १ रा सुख सब ए जे सब। २ रा ए मों। ३ भा शानब।
- (६) १ भा आयु। २ ए रा। ३ भा बहेइ।
- (७) १ भा ए जो। २ ए त्रिउ जाइ बिगोय मा। ३ भा मो को ए मा केतै। ४ भा जाइ करेइ, ए जाइ अनाइ।

अर्थ—५(१) मैं अपना जीव छोड़कर आई, और अब बिना जीव के मलसे रहा नहीं जाता है।
(२) इसी दुःख में मैं एक दिन मर जाऊँगी जब तक इस प्रकार जीती रहूँगी? (३) शरीर दुःख (चेतनहीन निर्जीव) हो गया है अब तो अपरों पर श्वास है काया ने जीवन को आत्मा छोड़ दी है। (४) ऐ कुमार, तु विचार करके मुझे देख। यह नारी बिना जीव के बात कह रही है। (५) मैंने हृदय उल्टाह चुक—सब कुछ [उसी दिन से] छोड़ दिया जिस दिन शानब ने मुझे हार लिया।

(६) [अब तो] बिना आयु के ही मेरे बड़ में जीव है और उस पर भी बिहू दण्ड करता रहता है। (७) जो दिन बिगोय में जाते हैं, उन्हें कौन आयु क्युता है?"

टिप्पणी—(१) सुप्त < भूम्य। (३) बर < बह[ि] = शरीर में गले से नीचे का भाग।

[२१२]

बाहू मांस^१ रगत^२ में रोवा । मरन भला न तु^३ एम विछोवा ।
समुमि समुमि मुख^४ फा^५ छाती । मांनु न कया बिरह भा^६ जाती^७ ।
हिय फा^८ बन दगि अकेली । दुख मरी भाए^९ बिरह महली ।
बिधि किछु पुख मर निगि परा^{१०} । जगम बिरिछतहि कुन फर फरा ।^{११}
क^{१२} काहू दुग दीन्हिउ मोरें^{१३} । मो अब^{१४} उमटि पग माहि^{१५} कोरें^{१६} ।

मुपुत रगत^१ निमि बागर पियै^२ सबाई^३ जाउ ।

निमि एक रगत मुन न^४ बाहर बाकि बहाउ^५ ॥

पाठांतर—(१) १ ए मास। २ ए रगत। ३ रा मरन भला न त्रि ए मरना भला न।

(२) १ ए अ। २ रा बिरह अर ए हाथ मी। ३ ए जाती।

(३) १ ए हिया क^२। २ रा मोहि दुग मरु जउ ए दुग मुन मी।

(४) १ भा पुख जगम मर जीन्हें ए पुरब मर निगि गगा। २ भा मो पर मोहि बिपाया दीह ए जगम त्रिउ बिग फर गगा।

(५) १ ए है। २ ए बीम्हा भोरे। ३ भा महु ए रे। ४ भा मोर, ए मोरे। ५ ए कारे।

(६) १ ए रकत। २ भा बीती रा पिय तस। ३ ए सबाई, रा माई।

(७) १ भा बिनासि कै ए बिनासिहि। २ ए काई बाउ।

अर्थ—(१) मैंने बारह महीने रक्त के आसु रोए हैं भरना भला था न कि ऐसा बिछोड़। (२) [अपने पहले के] सुखों को समझ-समझ कर छाती कटती है; शरीर में मांस नहीं रह गया है क्योंकि बिछू [उसको काटने के लिए] कतरनी हो गया है। (३) [मुझे] मन में अकेली देखकर [मेरा] हृदय कटता है बुझ ही यहाँ मेरी सखी हुआ और बिछू सहेली हुआ। (४) बिघटना ने पूर्व जन्मों में कुछ बुरा किया रक्ता था इसी से जीवन-मृत बुझ-कल ठका है। (५) अबवा मैंने किसी को भुक्त से कुछ दिया था और वही अब उल्टकर मेरे फोड़ में आ पड़ा है। (६) मेरी सपुत्र अम्बु मुक्त रूप से दिन-रात [मेरे] रक्त का पान कर रही है। (७) [परिणामतः] एक दिन [ऐसा आएगा कि] वह [शरीर को] रक्तहीन करके कहेगी “इसे बहुत निकालो।

टिप्पणी—(१) रक्त < रक्त। बिछोव < बिच्छोव [बे] = बिच्छू वियोग। (४) बुझ < पुझ < पूर्व। (५) कोर < कोउ = मोह।

[२१३]

कहाँ^१ बात आपनि सब^२ तोही^३। बिनु दुख और न साथी मोही^४।
मांस कोर न पसि न^५ बुलाइउ^६। कौन अघरम दइय सों^७ पाइउ^८।
एहि^९ निकुंज मन दोसर न^{१०} कोई। जो मोहि दुक्ख^{११} सघाठी होई।
दुख सताप बिनु और न पावौ। जहि सों^{१२} तिरु एक जिउ बहरावौ^{१३}।
प्रात तत्र चाह^{१४} बह नारी। जीवन भएउ^{१५} जगत बहु^{१६} भारी।
पीर करवै हिए^{१७} दुग देह दगय^{१८} उतपात^{१९}।
बया केउ करि^{२०} जिहहीं एहि रे^{२१} बिच्छू सताप ॥

पाठान्तर—(१) १ भा कहिउं। ३ ए मैं। ३ ए तोही। ४ ए मोही।

(२) १ भा मठा कोर पसिउ। २ भा दुलाई ए बुलाएउ। ३ ए पाप बिजग मी। ४ भा मैं पाई ए पाएउ।

(३) १ ए बेहू। २ रा म न नहीं है। ३ ए जो भोरे दुगक।

(४) १ ए, जाती। २ हू दिस। ३ रा ए, बहलावौ।

(५) १ ए चाहन है। २ २ भा। ३ भा मोहि।

(६) १ ए करेवै हिये। २ ए बिच्छू दगिय। ३ भा त्रिष ताप।

(७) १ रा नवें। २ भा बीयों, ए निभों। ३ भा गो मैं न यह दुग।

अर्थ—(१) मैं गुमते अपनी सब बातें बहुती हूँ; बुद्ध के अतिरिक्त दूसरा कोई ज्ञेय (मेरा) साथी नहीं है। (२) माता की पीठ में रहते हुए मैंने पत्नी [तक] को बुझ नहीं बहलाया फिर भी पता नहीं कौन-सा पाप (पाप वा परिणाम) मुझे बीच से मिला है। (३) इस निकुंज मन में

दूसरा कोई नहीं है जो मेरा बुझ का संगी बने। (४) बुझ और संताप के अतिरिक्त मैं यहाँ किसी को भी नहीं पाती हूँ जिससे मैं तनिक भी अपना भी बहला सँती। (५) भले हो [यह] भारी प्राय छोड़ना चाहती है जीवन [इसके लिए] जम्मा में बहुत भारी [एक बड़े भार के समान] हो गया है।

(६) कसेजे में पीड़ा है, हृदय में बुझ है और वेह में बाह का उत्पात है (७) हे देव किस प्रकार मैं इस बिट्ट के संताप में भीखित पहुँची ?”

टिप्पणी—(२) कोर < मोह = मोह।

[२१४]

मार दुग दुग जहंवां रहि^१ अहा । तुम्ह सेंठ^२ म सब आपन^३ कहा ।
तुम्ह^४ बह्ठ^५ आपन^६ दुग माही । जा र इहां स आवा^७ तोही ।
आनि दुली म^८ तोहि माहि बखौ^९ । राजकुवर अस^{१०} बदन बिसखौ ।
भाग उदित मायें^{११} मनि बरा । जानहु चाँद सपूरन करा^{१२} ।
इस्ट भाइ मवग^{१३} कोई नाही । तोर सय^{१४} बामु^{१५} परिछाही ।
समुद नाभि^{१६} मुइ^{१७} आएसि एकसर^{१८} यह अचरिजु^{१९} ह माहि^{२०} ।
राकम मूठ मयाबन वहु^{२१} कसैं छाडनि^{२२} तोहि^{२३} ॥

पाठांतर—(१) १ ए जहाँ छगु। २ रा समता ए तो सी। ३ ए सान छोड़ि मैं।

(२) १ ए तै पुनि कहू। २ रा अपना। ३ भा आएव।

(३) १ ए मैं यह गाय नहीं है। २ ए न देखीं या न देखेंगे। ३ भा जम। ४ भा बिमबेठ ए निरैनी।

(४) १ ए भावे। २ ए कैसे सिस्टि भी मानुष करा।

(५) १ ए सेवक। २ ए भा लम। ३ रा ए बाजु।

(६) १ भा ए साधि। २ ए कै। ३ ए म यह गाय नहीं है। ४ ए अचरज। ५ ए मोहि।

(७) १ रा ए म यह गाय नहीं है। २ ए कैम। ३ रा छानेनि ए छोड़नि। ४ ए तोहि।

धर्म—(१) मेरा बुझ-मुग जो कुछ वा अपना वह सब मैंने चुनते कहा। (२) तुम भी अपना दुग चुनते रहो जो [बुझ] तुम्हें यहाँ से आया है। (३) आवि (जन्म) से ही मैं तुमसे दुली नहीं देन रही हूँ [मैं तो तेरा] मुग राजकुमार के ऐसा बिलेख रही हूँ। (४) तेरा प्राय उदित है [जिससे बारन तेरे] बसतक में [जैसे] नाभि जल रहा (देवीयमान) है और वह ऐसा लगता है जहाँ संतुर्ष कलाओं का चढ़ना हो। (५) किन्तु तेरा कोई भी इष्ट भाई और सेवक तेरे साथ [तेरी] प्रतिष्ठाया के अतिरिक्त नहीं है।

(६) समूह लाप कर तु अनेता आ गया यह आश्चर्य तुमसे है (७) राजनों और भयानक भूतों ने क्या नहीं तुमसे कैसे छोड़ दिया ?”

टिप्पणी—(१) बिमव < बिमम < बि + लेपम् = बिसेवम युक्त करना बुझ आदि द्वारा चुनने में मित्र करना। (४) बर < जल = जलना।

[२१५]

बाँद सुख^१ ओ उर^२ अगासा । तिन्ह कर^३ इहाँ नाहि^४ परगासा ।
 त^१ मानुस इहवा^२ कत आवा । पूछति हौं कहु आपन^३ भावा ।
 नगर कहहु ओ पिता क^४ नाऊ । पुढमि कहहु आछहि^५ अह^६ ठाऊं ।
 फुरी नोचि क^७ ऊचि तुम्हारी^८ । राइ रान के रांक^९ भिसारी ।
 क्या छीनि जनु^{१०} मरन सदहा^{११} । मांसु रक्त नहि दसो^{१२} दहा ।
 आदि अत सहि आपनि^{१३} बात^{१४} कही म तोहि ।
 तुहं पुनि^{१५} बसि^{१६} निमिस एक आपन दुख कहु मोहि ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए सुख । २ मा उरहि ए आहि । ३ रा का । ४ मा तिन्ह ई
 न किएउ दहा ए राकर दहा नाहि ।
 (२) १ ए ठौ । २ मा ए बेउ । ३ ए आपनि (<आपन कारसी बिनि)
 रा अपना ।
 (३) १ रा कहू व पिता कर, ए कहहु बे पिता कर । २ ए भूमि कहहु आपनि ।
 ३ रा जेहि, ए जे ।
 (४) १ ए बी । २ ए तोहारी । ३ ए राये रांक की अहो च छोरी रांक कि
 राम ।
 (५) १ ए छीन जे । २ रा ए सवेहा । ३ मा बेखेउ ।
 (६) १ च अंत सा आपनि ए अंत कवि बसो । २ ए सवे ।
 (७) १ मा तुम्ह कुनि ए ते कुनि । २ ए वीनु ।

अर्थ—“(१) जग और सूर्य का प्रकाश भी, जो आकाश में पड़ित होते हैं, वहाँ नहीं होता
 (जाता) है; (२) तब तू मनुष्य यहाँ कैसे आ गया? मैं तुमसे यह प्रश्न करती हूँ, तू अपना भाव
 कह । (३) तू अपना नगर और अपने पिता का नाम बताओ, और वह पृथ्वी [जंग] बताओ
 जहाँ [तुम्हारा] स्वाम है । (४) तुम्हारा कुल ऊँचा है या नीचा, और तुम राजा-राजा हो या
 रंक (निर्धन) और भिसारी हो? (५) तुम्हारी काया लीन हो गई है मानो [तुम्हारे] मरने
 का संदेह हो रहा है तुम्हारे रक्त में मैं मांस और रक्त नहीं देख रही हूँ ।

(६) जाति से अंत तक मैंने तुमसे अपनी राय बतल कह दी । (७) फिर तू भी एक
 पल बैठ कर मुझे अपना दुःख बतला ।”

टिप्पणी—(३) पुढमि < पृथ्वी । (४) फुरी < फुल । (५) छीनि < छीन ।

[२१६]

पम धाम मम^१ ओ मही । बुवर मुनी^२ अहवां सहि^३ अही ।
 पित मग्गउ^४ मुनि रावग माऊं । मन महुं बहसि इहाँ सो^५ जाऊं ।
 जो अबहो यह^६ रानस आब । निमिग माहि मोहि मारि मडावे^७ ।

ओहि आगे कहुं जाठ पराई । मुए मोहि^१ पछताव रहाई ।
ओ मोहि आगे^२ ह बड कानू । जहि लुगि नितरउ^३ परिहरि राजू ।
एह गियान गुनि मन महु^४ ठाड^५ भएउ उठि राउ ।
नन नीर भरि पमा^६ बाइ परी^७ ल पाउ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा ए सबै । २ ए ओ । ३ ए गुना रा सही । ४ ए कही लुगि ।
(२) १ ए मरमा । २ भा मनहि नहेसि इहवां हुत ए मन मा नहेसि इहां मो ।
(३) १ ए ओह । २ ए सड़ाई ।
(४) १ भा हुत ए बाइ ।
(५) १ ए बाये । २ ए निमरे ।
(६) १ ए येह मन ग्यान गुनि कै । २ ए ठाक (?) ।
(७) १ रा पेमै ।

अर्थ—(१) प्रेमा मे जब [अपनी] सभी जगहें कहीं कुमार मे भी उनको कहीं तक ले की
गया । (२) [विदु] रासत का नाम सुनकर [कुमार का] मन बकरा गया और उसने मन में
कहा, “यहाँ से मैं जाता जाऊँ । (३) यदि कहीं यह रासत अभी आ जाए, तो उसको एक पल में
मार कर छोड़ दूँ । (४) उसके आगे पलायित होकर मैं कहीं जाऊँगा ? मरने पर मुझे पछतावा रहेगा
(५) और [मुझे] ज्ञान [अपनी] एक बड़ा कार्य [करना] है, जिसके लिए मैं राज त्याग कर
घर से निकलता हूँ ।”

(६) मन में यह तान (बुराया) पुन कर राजा (राजकुमार) उठ कर खड़ा हो गया
(७) [तो] प्रमा मेरों में आसु भर कर बीड़कर उसके पैरों पर गिर पड़ो ।

टिप्पणी—(४) पगाई < पलाइइ < पलायित = भाया हुआ । पछताव < परचाताव । (५)
निमर < नित्तर < निरु + मु = बाहर निकलना ।

[२१७]

बहुरि^१ कुबर बर मारि उचाई । दनि वनन हिय उठउ^२ छोहाई ।
मोह भएउ^३ बिन^४ मया मरोरा । पम^५ ममूद मो उठा^६ हिलास ।
पमा दुख्य कुबर हिय जरा । जानहुं जरति अगिनि पिउ^७ पग ।
दनि कुबर हिय गहमरि^८ भावा । बित मया निनु^९ जाइ न जावा^{१०} ।
बदन दनि हिय उठउ^{११} मरोरु । कुबर बरज अबनि भा ओरु ।
पुनिया कर^{१२} दुग जान जहि दुग होइ मरोर ।
बिनु दुग करि^{१३} पीरा^{१४} का^{१५} जान युग दाये क^{१६} पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ भा निहुरि । २ ए बिन उग ।

(२) १ भा भए, ए भी । २ ए मन । ३ ए पीरम । ४ ए मे यह शब्द
नही है । ५ भा उठ ए बीरु ।

(१) १ ए भावि भित।

(४) १ भा हिय गहवर, ए मन गहवरि। २ ए भित माया से। ३ भा सजावा ए म सावा।

(५) १ ए भित उठ।

(६) १ ए सो।

(७) १ भा ए कर। २ भा. ए में 'पीरा' गही है। ३ ए में 'का' भी गही है। ४ ए का।

सर्व—(१) तबन्तर कुमार ने उस खेष्ट नारी को उठाया, और उसका मुख देख कर वह हृदय में [बया से] दुःख हुआ। (२) उसके चित्त में मोह और मनोभा (स्नेहभगित दुःख) हुआ तथा उसके प्रेम समुद्र में हिलोर उठी। (३) प्रेमा के दुःख से कुमार का भी चल गया मानो बल्लरी हुई आग में धी पड़ गया हो। (४) उसको देख कर कुमार का हृदय भर आया और चित्त की ममा (ममता) के कारण उससे जाया नहीं जा रहा था। (५) उसका मुख देखकर [कुमार के] हृदय में मरोड़ (दुःख) उठा और कुमार का कलेजा [उस दुःख की स्वात्मा में] बीट कर रक्त बन गया।

(६) दुःखी का दुःख गही जानता है जिसके शरीर में दुःख होता है। (७) दुःख-जनित पीड़ा के बिना [कोई] दुःख-वर्ण की पीड़ा को क्या जान सकता है?

टिप्पणी—(२) हिलोर < हिलोख = समग्र की लहर। (३) भित < भूत। (४) कलेजा < कलेय। कोठ < कोहिय < कोहित = दहिर।

[२१८]

रगत आंसु^१ तस^२ पम^३ रोवा । जेइ र सुना^४ तइ हिया करोवा^५ ।

मन गहभर हिय^१ उठै अरोरा^२ । नन समु^३ द^४ रगत हिलोरा^५ ।

दुख व्यापा^१ मुख^२ वकति न आवा^३ । निससत बात कह^४ नहि पाव ।

सोयन कुवो^१ पूरि जल भरे । सीपि^२ फूटि जनु मोती डर^३ ।

दुस तरंग^१ भरि हिये ज्यारी^२ । रौव रौव सों आंसू डारी^३ ।

सूरज आव तराइन^१ बासुनि छत्र कुवर ।

पमां दुल सम^१ रोए भरती गगन^२ सुमर ॥

पद्यान्तर—(१) १ भा ए धार। २ ए मन। ३ भा वेमा। ४ ए जेइ मुन। ५ ए मो हीण करोवा।

(२) १ भा. गहवर हिय ए गहवरि २ भा अरोर। ३ भा रह ए जो। ४ ए कोइ टंकोर।

(३) १ भा व्याप। २ ए मुख। ३ भा वचन न आवा। ४ ए करन।

(४) १ ए कुवो। २ ए सीप। ३ भा ए डरे।

(५) १ ए यहाँ 'जा' और है। २ भा ए हिये (हिये—ए) ऊबरे। ३ ए राव राव। ४ भा आसू भरे ए आसू डरे।

(१) १ ए मुर्ने जीव तारा गन।

(७) १ ए वेमा सब दुल। २ ए गवन।

अर्थ—(१) प्रेमा ऐसे रक्त के माँस रोई कि जिसने नी मुना उसका हृदय करीब उठा। (२) प्रेमा का मन भर माया का और उसके हृदय में एक मंदोरा (बिलोम) उठा उसके नेत्र-समग्र रक्त के हिलोर दे रहे थे। (३) [मन में] कुछ व्याप्त होने के कारण मुल से बाध नहीं निकलता था; निःस्वासी के कारण वह बात नहीं कह पा रही थी। (४) उसके बीनों में माँसुओं से पुरित होकर भर गए [और वे इस प्रकार तदन्तर गिरने लगे] मानो सीपी फूटी हो और उससे मोती डल रहे हों। (५) कुछ की तरफ हृदय में धरकर जो उसने उधाड़ (कोल) दो तो वह रोम-रोम से माँस बिराने लगी।

(६) सूर्य चान हारायण बासुकी इंड कुबैर (७) (परतो) आकाश और तुमेद—सभी प्रेमा के कुछ से हो पड़े।

टिप्पणी—(१) रक्त < रक्त। (२) हिलार < हिल्कार = समुद्र की लहर। (४) लोयन < लोचन। (६) हारायण < हारिका यम।

[२१९]

पमे दुक्क^१ रगत जी^२ रोवा। सुबट^३ तासु^४ रगत^५ मुह घोवा।

पिक् करार जरि भए^६ वों^७ कारे। दुक्क दगध^८ तरिबर^९ पतभार।

कंबल गुलाल भए^{१०} रतनार। फूल समें तन^{११} बापर फार^{१२}।

दक्षि मनार हिमा बिहराना^{१३}। नबू तुलज^{१४} डारि पियराना^{१५}।

नारंग रगत^{१६} बूट भई^{१७} राती। पाय^{१८} भजूर फाटि गइ^{१९} छाती।

आव भए^{२०} दुल बाउर^{२१} महुवा भा^{२२} बिनु पान।

अलि भई^{२३} दुल^{२४} टूक टुक मुनि पमा^{२५} जनपात ॥

पाठान्तर—(१) १ भा ए पमा नैन। २ ए रगत भर। ३ ए सुबटे। ४ भा ताहि। ५ ए रगत।

(२) १ ए करील जरि। २ रा हुनी ए में यह पाद नहीं है। ३ भा दुस्त बाहि ए दुल बावे ४ ए तद्वर।

(३) १ ए भी। २ भा सबहि तन ए सबहु तन। ३ ए बापन तारे।

(४) १ ए बिहराने। २ भा बिनु दुक्क। ३ ए डार पिबराने।

(५) १ ए रगत। २ ए भी। ३ भा बाय ए पायेन। ४ ए भी।

(६) १ ए भी। २ भा बीन। ३ भा भाउ ए भी।

(७) १ ए भी रा में यह पाद नहीं है। २ रा में यह पाद नहीं है। ३ ए में यहाँ 'पुन' और है।

अर्थ—(१) प्रेमा ने कुछ के रक्त [के माँस] रोये तो मूए ने उसके रक्त से मुह को लिपटा [और इसी कारण उसका मुह लाल हो गया]। (२) चिक और बाय उत (वेमा) की [कुन] बाबाभि से जन कर काते हो गए, और [उसके] कुन-बाह से ही मुँसों ने पल समझ दिए। (३)

कमल और गुलाल लाल हो गए और सभी फूलों (कलियों) ने [अपने] शरीर के बरतों (पंखड़ियों) को फाड़ डाला। (४) अनाद का हृदय [उसकी बसा] देख कर फट गया और तुरन्त नीच डाल ही में पीला हो गया। (५) नारंगी उस रक्त की घूंट पीकर लाल हो गई और लज्जुर की छत्ती [उस बुल से] आहत होने के कारण फट गई।

(६) आम उसके बुल से बावसे (बीरे) हो गए, महुआ बिना पत्तों का हो गया (७) और ईश प्रेमा का बुल-उत्पात सुन कर दूक-दूक ही गई।

टिप्पणी—(१) रगत < रक्त। सुबटा < सुभ < शुभ। (२) करार < कगल = काग। हो < दब = श्वाभग्नि। (३) बापर < कप्यह < कपट = कपड़ा। (४) बिहुर < बिबह < बिभ < बट < टूट जाना। डारि < डाल [दि] = गाता। (७) ऊल < इधु = ईश।

{ २२० }

भौर भुजग दुबो दो^१ जर। दुक्क^२ करील पात परिहर।
मेहदी रगत घूट रत^३ भीनी। जूही भई बुक्क^४ तन छीनी^५।
टेसू आगि लाइ^६ सिर रहा। बलिन^७ बद^८ दुल सपुट गहा।
फरी डारि तरिवर^९ दुल नाई। कुमुद कबल जल झड़ जाई^{१०}।
जामुनि^{११} भई डारि दुल कारी। कटहर पहिण काट क^{१२} सारी।
रगत^{१३} रोई बन युवुची रखी जो रखी होइ।
मुह^{१४} काला क बन^{१५} गई जगत जान सम^{१६} कोइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कुनी दो। २ ए और।

(२) १ रा में 'र' सख नहीं है ए रती बट। २ ए बुलहि भी। ३ ए छीनी।

(३) १ भा कागि। २ रा कलीबद भा बलिन बबन ए कलि बरनी।

(४) १ ए फरा डार तस्वर। २ ए नए। ३ रा बूबट जाए, ए बूबन बने।

(५) १ रा जमुनी। २ ए डार। ३ ए कै।

(६) १ ए रगत।

(७) १ रा मुन। २ ए बन। ३ भा ए जग जान सख।

अर्थ—(१) अनाद तथा तपे दोनों [प्रेमा के बुल की] श्वाभग्नि में जल गए। जली के बुल के कारण करीर ने पत्तों का त्याग कर दिया। (२) मेहदी [उसके] अमृ-रक्त की घूंट ॥ तिलक होकर रक्त बर्ष की हो गई और जूही तमू की लीप हो गई। (३) टेसू [उस बुल के कारण] सिर पर आव लगा रहा। (अंगारों के जैसे फल उसने पारण किए) और कलियों ने बंद होकर अपने तंतुओं में [उस] बुल को ग्रहण किया। (४) तबलों की कली हुई बालियाँ [उस] बुल से नभित हो गई और हुई तथा कमल जा कर जल में डूब गए। (५) जामुन डाल में ही [उस] बुल से काली हो गई और कठहल ने काटे की लाड़ी पहिन ली।

(६) बन में युवुची रत्न [जि आमु] रोई क्योंकि बहुरानी (अमुरपता) हो रही थी; (७) [तदन्तर] वह अपना मुन बाला करके बन में बली गई यह जगत् में लकी जानता है।

टिप्पणी—(१) हो < दब = श्वाभग्नि। (२) पीनि < पीन। (३) टेसू < निमुन। (४) जामुनि < जम्न। (५) काट < कप्यह। (६) जी < जट < यण = कयाणि नारण कि।

[२२१]

दुस्स दगध बड़हर पियराना^१ । अखिनी टडि मई जग जाना^२ ।
रुत्तन दुस्स^३ दाँत मुइ धरी^४ । गा कश्मठह^५ पुहुमि परिहरी^६ ।
हारिल दुस्स^७ हारि मुइ आवा । गादुर मइ रुव^८ आपु^९ टगावा ।
दुल कर म^{१०} बबरि डरानी^{११} । मइ निम्तज^{१२} रुल सपटानी^{१३} ।
बील्हि^{१४} जो दुल करे मी डरी^{१५} । रुवहु^{१६} पुरुष बरहु इम्पिरी ।

बिबि^१ भापा क मोट सुकानेठ^२ जीम^३ फरि भिगराज^४ ।

तबही^५ भएउ दहि कोइला पर्मा दुल क^६ बाज ॥

पाठान्तर—य म उपर्युक्त बर्ताली ४ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं ।

(१) १ ए दुल बाये बड़हर पियराने । २ ए टेनी मी । ३ ए जाने ।

(२) १ रा दुलन । २ ए करे (<धरी छायी किपि) । ३ रा गा कलि वेइ
ए कल्प छिछ । ४ ए परिहरे (<परिहुरि छायी किपि) ।

(३) १ ए दुलहि । २ छ दुलते । ३ रा दुल ।

(४) १ रा केरे अय ए के डार जो । ७ ए बीरि डरानी । ३ भा निमज ए
निर तेज । ४ भा कलह ।

(५) १ भा बील्हि ए बिम्ह । २ दुल करे अय ए दुल की मीने । ३ ए
बरहि । ४ ए बरही ।

(६) १ भा बहू ए दुइ । २ ए की बाट । ३ ए रुवानी भा सवाना ।
४ भा मई ए केव । ५ ए अंगराज ।

(७) १ भा तबहि । २ ए मी । ३ ए एहि दुल ।

अर्थ—(१) [उत्त] दुस्स के बड़ से बड़हर दीला पड़ गया और हमसी टडो हो गई जो कि
जग जानना है । (२) बर्ताली में [उत्त] दुल के कारण दोनों से पुष्पो को पकड़ लिया और कश्मठ
पुष्पी को छोड़ कर चला गया । (३) हारिल [पत्नी] दुल से हार कर (बलि हो कर) भूमि पर
आ गया और बरपीडह ने स्वयं दुल में अपने को लटका लिया । (४) [उत्त] दुल के अय से स्तन
बर गई और निस्तेज होकर दुल से निवृत्त गई । (५) बील जो [उत्त] दुल के अय से डर गई
कभी पुष्य और कभी स्त्री [होती रही है] ।

(६) दो भाषाओं की आड़ में अपनी जिह्वा बरत कर भुगराज भी टिप गया (७) और
इसी समय वेना के दुल के कारण बध होकर वह बीयला [बीला वाला] हो गया ।

टिप्पणी—(१) मई < मय । (५) मी < मय । (६) बिबि < डय = दो ।

[२२२]

पुनि^१ पम रम बचन उषाग^२ । निमगन कह मुनु राज बमाग^३ ।
राजम भरम मरहि जनि^४ बरहु^५ । निमरम भाग रहहु जनि^६ डरहु ।
यह^७ राकम अबही बहू^८ गाऊ । एकउ^९ निमिग गा नहि भाऊ ।

सगर^१ दस बह^२ रह^३ बराई । रनि^४ आइ पहरा क^५
 बहु आपन^६ पुन मोहि नरसा । जहि दुस तें निबसहु क^७
 जो रुहि समे^८ बात मुम्ह^९ आपनि^{१०} कवर न बहह^{११} मोहि ।
 तो रुहि^{१२} निस्प जानहु आइ न^{१३} देह^{१४} सोहि^{१५} ॥

पाठांतर—(१) रा अपुनी मा मा कुनि । २ ए उबारे । ३ ए पुन राबु
 पुन राबुकार ।
 (२) १ ए जीवजी । २ मा बरह । ३ ए निर्य होहु म मन मो ।
 (३) १ ए बोह । २ ए क । ३ ए एक । ४ ए गये का ।
 (४) १ ए सरग । २ ए बोह । ३ रा साम ।
 (५) १ रा अपने । २ मा लै ए ते । ३ मा निवरेहु एहि प नितरे
 कहियहु । ५ ए म बरन का पाठ है जो कनि आपन बात सब
 कहिय मा माहि ।
 (७) १ ए तो सयि । २ ए निस्वी । ३ ए निचर देव न । ४ ए सोहि

अर्थ—(१) फिर (तबानंतर) वेमां ने [अपने] रसीले बचन उच्चारित किए और निज्वा
 के साथ उसने कहा “हे राजकुमार, मुनो । (२) रासस का भजन (भय) मुन मन में मत करो
 मुन निर्जन (निर्य) होकर रहो डरी मत । (३) वह रासस अपनी कहौ गया हुआ है और अन
 तो उसकी गए एक पल भी नहीं हुआ है । (४) सकल दिन वह करता (बिचरन करता) रहता
 है [केवल] रास को आकर यहाँ पहरा (राजवासी) कर जाता है । (५) है नरेस (राजकुमार)
 मुन अपना वह कुन मुसने कहो, जिसके कारण मुन [योवी का] शैव करके निकले ।
 (६) जब तक मुन अपनी समस्त बर्ता है कुमार, मुसने नहीं कहते हो (७) तब तक मुन
 यह निश्चय जानो कि मैं तुम्हें जाने नहीं देती हूँ ।

टिप्पणी—(८) सगर < सकल । रनि < रयनी < रजनी । पहरा < प्रहर । (५) नेव <
 देव । (६) बात < वार्ता < वार्ता ।

[२२३]

बह बवर^१ मुनु राजकुमारी^२ । म मधुमासनि^३ बिगह भियारी ।
 सो का बहौ^४ जा बहि नहि आई^५ । कियत बहन जुग जुग न^६ मियाई ।
 बहौ तोहि मुन^७ नहि मो आइहि । बिगह बया नहि^८ बहन निराइहि ।
 उनपति बिगह मो^९ नबे बहाही । अग बिगह बाछि^{१०} जुग नाही ।
 मादि बिगह मौगउ^{११} मुनु^{१२} भावा । बिगह अग जग बाहु^{१३} न पावा ।
 सातउ ममुद जो हाहि^{१४} ममि बाग^{१५} गाग अराम ।
 जुग जुग कियत^{१६} म निप^{१७} पमा बिगह उयागि ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा मे यह गध नही है। २ ए बहा जुअर मुन पम पिआरी। ३ रा मे यह गध नही है।
 (२) १ ए बहूँ रा हों। २ भा बही न जाँ ए जाइ न बही। ३ ए म यह गध नही है। ४ ए मिराही।
 (३) १ भा बहूँ पे मोहि ए बाह बहो जा। २ भा बही न जाइहि ए बहै न बाबहि। ३ भा बा ए ना। ४ ए बह मिराबहि।
 (४) १ ए बिरह ते रा पम मा। २ रा सबह। ३ ए चारी।
 (५) १ भा माहि माँ ए मा मा। २ ए मुन। ३ ए बाह।
 (६) १ ए हाह।
 (७) १ ए बहूँ पुग बहन। २ रा बहै नाहि।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा “ऐ राजकुमारी जुनो। मैं मधुमासती के बिरह में मिसारी [बना]। (२) वह मैं क्या बताऊँ जो बताई नहीं जा सकती? जिससे या कहने से वह युग-युग तक नहीं समाप्त होगी। (३) मैं तुमसे यदि बहूँ (बहुना बाहूँ) तो वह मेरे मुख में नहीं आवेगी (समावेगी) और वह बिरह-कथा बहने से समाप्त नहीं होगी। (४) बिरह की उत्पत्ति तो सभी बहते (बताते) हैं किन्तु बिरह का अंत चारों युगों में भी नहीं है। (५) बिरह के आदि (उत्पन्न होने) का भाव मुझसे मुन तो बिरह का अंत जगन् में किसी ने नहीं पाया है।

(६) सात समुद्र [का जल] यदि मिल बने और सात आकाश यदि काण्ड बने (७) तो भी हे प्रेमा, बिरह की उदासी युग-युग तक लगते नहीं निपट (समाप्त हो) सकती है।”

टिप्पणी—(६) समुद्र < समुद्र।

[२२४]

सुनु पमाँ जौँ पूछाँ मोही^१ । आपन दुख्य बहौँ म तोही^२ ।
 नगर कनगिरि ठाउँ^३ सोहावा । जनु मृगपुंग धरि^४ आनि बसावा ।
 पिठा नाठ^५ जान मयमारा^६ । मूज मान दब^७ उजियारा ।
 कोम सहम दम राज पमारा । हाथि घोरा बम^८ बन्ध अपारा ।
 सतनि^९ तक भहा^{१०} अंतरा^{११} । सो प^{१२} दुग बिरह बम परा ।
 दुग मधुभासति जित^{१३} बम बा हौँ^{१४} पीर^{१५} बहाउ ।
 मर छुटि मोहि जित^{१६} जगन मह दुग बह^{१७} और न^{१८} ठाठ ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा दुमै ए पूछ। २ ए मोही। ३ ए माही।
 (२) १ ॥ ठाँव। २ भा मरीर। ३ ए पै।
 (३) १ ए नाम। २ रा ए ममारा। ३ रा देम।
 (४) १ ए हाथी घोरा बह।
 (५) १ ए मयम। २ ए मरी भीनदे भा मरा भीनदे। ३ भा गोड ए मो। ४ भा दुख्य बम पेऊ, ए बिरह बम पेऊ।
 (६) १ ए बिन। २ भा बेति मा ए बा गी। ३ ए बिरह।

- (७) १ भा मकु सुटि मोहि जिय जगत यह ए मकु छोटी (< छूँ घरनी छिपि) जो बिर जगत, ए मकु मोहि छाहि जगत न बहूँ। २ ए ते। ३ भा ए नाही।

अर्थ—“(१) ऐ पेमा शुभ यदि तू मुझ से पूछती है तो मैं अपना कुछ तुझ से कहना हूँ। (२) कनैगिरि (कनक गिरि) नगर नाम का [मेरा] सुंदर स्थान है जो मानो स्वर्ग ही [बुद्धी पर] के आकर बसाया गया हो। (३) मेरे पिता का नाम संसार जानता है, मुरजमान बेब उजियार (प्रकाशित) है। (४) वस सहज कीत तक उनके राज्य का प्रसार है; हाथी घोड़े वन और कटक मसीम हैं। (५) संतान एक मैं हो उनके यहाँ अवतारित हुआ और वह भी तुम वेश ही रही हो बिरह के वस में पड़ गया हूँ।

(६) मेरे जी मैं मधुमासती [के बिरह] का कुछ निवास कर रहा है उस पीड़ा का मैं क्या कपन करूँ? (७) संभवतः मेरे बीच को आकर संसार में कुछ को और कोई स्थान नहीं है।”

टिप्पणी—(२) कनै < कनक। ठार < स्वाम। (४) पसार < प्रसार।

[२२३]

उतपति आदि^१ सुमह दुख बाता^२ । जसैं दुख जिय मिलत^३ सधाता ।
अकम कषा किछु कहौ^४ न जाई । थोरि कहौ किछु भात^५ बुझाई ।
एक^६ दिन मन नीद सँस लाग^७ । सेत उठैत दुख जवही^८ जाग^९ ।
सौतुल^{१०} सपन एक म देखा । सो बसेउ जो जाइ न विसेखा^{११} ।
सपन कहौ सो सपन न होई । सौतुल^{१२} कहा^{१३} जाइ माँह^{१४} सोई ।

सौतुल^{१५} सपन न जानौ दहू का बसत^{१६} सोई ।

सपन^{१७} कहौ सो सौतुल^{१८} सौतुल^{१९} कहौ न होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा जठ ए जवरे। २ ए सुमह न बाता। ३ ए जेने दुखहि भिका रा जेने दुख जिय मिलेउ।

(२) १ ए जो कहा। २ ए बोरा वही जो राउ।

(३) १ भा इक। २ ए नीद मन सी लागी। ३ भा कैरहि उठे दुख जव भा सेत उठा बिरहा दुख। ४ ए जायी।

(४) १ ए सौतुल। २ ए सपन सप नीतुल वा लेखा।

(५) १ ए नीतुल। २ भा वही। ३ ए ना।

(६) १ भा नीतुल ए सौतुल। २ भा कहैऊ, ए देखा।

(७) १ ग नपना। २ भा नीतुल ए नीतुह। ३ ए सौतुल।

४ ए कोइ।

अर्थ—“(१) मेरी दुख बानी की आदि उत्पत्ति मुनी मिल प्रचार दुख मेरे बीच के साथ बिता (हुआ)। (२) वह अव्यवनीय क्या कुछ भी (तनिक भी) नहीं गहरी है [किस] उतका बोझ-ता अंत उसके कुछ भावों को बनाना हुआ वह रहा हूँ। (३) एक दिन [मेरे] मन नीद में

समय, तो वे जब जय मैं बुद्ध [साथ] लेता हुआ उठा। (४) संप्रत्यक्ष या स्वप्न [के रूप में] मैंने वह देखा जिसको विद्ययित (बिबुध) नहीं किया जा सकता है। (५) यदि उसका स्वप्न रहता है तो स्वप्न वह है नहीं, और वह संप्रत्यक्ष है, यह भी नहीं कहते बनना है।

(६) मैं नहीं जानता कि वह क्या देखा—संप्रत्यक्ष देखा या स्वप्न (७) यदि स्वप्न नहीं तो वह संप्रत्यक्ष लगता है और यदि उसको संप्रत्यक्ष कहना है तो वह वा नहीं।”

नियमो—(१) बाउ < बत्ता < बार्ता। (४) (५) (६) (७) मीनुष < मम् + प्रत्यक्ष = विद्येय रूप स प्रत्यक्ष। (४) विमेष < विमम < वि + वेयम् = विमेषण युक्त करना गुण भावि द्वारा दूसरे से विमम करना।

[२२६]

दिनहर बिहुर जो दक्षिण बाय^१ । अजहू^२ सहर्गह^३ चडें^४ कपाय^५ ।

तिन पर निस्ति^६ जो मोनी^७ परी । निम् निम् मो निल जिउल^८ हरी ।

आदि अमिय एक^९ बुं क ताई^{१०} । माहि महमन रगत तिसाई^{११} ।

का बरनों ओइ^{१२} गजन ओरा । हरमि^{१३} जोउ^{१४} दलन निन कोरा ।

सोयन बिस्ति^{१५} जाइ जह परी । माहि ठां हूँ न आगे^{१६} टरी ।

दुहु सोयन मह^{१७} बासा गड जो बच^{१८} अनियार ।

बाडि रहउ माहि निमरहि^{१९} गुरबहि^{२०} बागहि^{२१} बाग^{२२} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा जो दख बाय ए ज देखा बाय। २ भा बाउहि। ३ ए सहर्गह ही बिहुरा ए नहरि है चडि अयाय।

(२) १ भा ए दिस्ति। २ भा भाग पै ए जामे। ३ ए ते निल तिन लीगा जो (< जिउ क्राप्ती भिपि)।

(३) १ ए अजर अमी एक। २ ए की ताई। ३ ए माहि महम मन रगत तिसाई भा मोहि महम तें रगत तिसाई वा मोहि माहम तें रगत तिसाई।

(४) १ भा दुहु ए जो। २ भा हर्गह ए हरा। ३ बिल। ४ भा निन माय ए तन मोरा।

(५) १ भा बिस्ति। २ ए मा नहि जाने।

(६) १ ए मम। २ ए माहे बुच वा परे बनिम।

(७) १ ए बासि रहे वा निमरे। २ ए बारबाग।

अर्थ—(१) [उत्त] जाता क बिहुर-बिहुरों को जो मैंने देखा, तो वे [बिहुर-बिहुर] मेरे कपाय पर चड आया भी सहर्गह ले रहे हैं। (२) [उत्त] जाता के कपोल के] निल पर जो मेरी दृष्टि पड़ी तो वह तिल-तिल-तिल (मोड़ा-मोड़ा) करके मेरे जोर का अचरम कर रहा है।

(३) उत्त आदि-अमृत को एक बुं (तिल) के लिए मेरे रक्त को सहर्गह बूँदों को लूना [रही] है।

(४) [और] उत्त मंत्रण पुन (मेघ) को क्या करें जिसने अपनी कोर में एक लक्ष सेतुवर मेरे बीच (प्राची) को हर लिया? (५) [मेरे] लोखनों की दृष्टि [उत्तरे चारों ओर] जिस स्थान पर पड़ी उत्त स्थान से वह जाने न दल (जा) सपी।

(१) [मेरे] दोनों सोचनों में [उस] बाबा के जो नुक़ीले (बकि) कुछ गड़ गए, (७) तो [कितना भी] मैं उन्हें निकालता रह गया है निकले नहीं और बार-बार [कांटों की बंदि] सटकते हो रहते हैं।”

टिप्पणी—(१) बिसहर < बिषहर = सर्प। बिहुर < बिहुर = केप। (१) पिमा < गुग।
(५) टा < स्वाग। (१) सोयन < कोचन।

[२२७]

विहर^१ कूबर सभ पाछिलि^१ बाता । जसैं^२ मधुमारुति रंग राता ।
प्रपमहि^३ जिमि मइ रनि^४ चिन्हार्ई । अर^५ जस^६ पालक बदलाई ।
औ जिमि बचा आपु महु^७ कीन्हो^८ । औ सहिवामि मुदरि^९ कर सोन्हो^{१०} ।
औ जिमि^{११} सजउ पिता घर राजू । औ निसरउ कनि^{१२} जोगी^{१३} साजू ।
औ बूझउ जिमि अरब भटार^{१४} । औ सो^{१५} गहें^{१६} म लहरि अटार^{१७} ।
सभ^{१८} पाछिलि^{१९} दुख प्रेमहि कूबर सुनावा^{२०} रोड ।
बिच्छु न आई^{२१} जाना भागै^{२२} बिधि का^{२३} सिखा का^{२४} होइ ॥

पाठांतर—रा मे उपयुक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्धश्लोकां परस्पर स्वार्थांतरित हैं।

- (१) १ भा बहुरि, ए जारि। २ भा सब पाछिलि ए पाछिलि दुख।
३ ए जैसे।
- (२) १ भा जिमि नएउ सपन ए जी जो नीन। २ भा जी। ३ ए
जैसे।
- (३) १ भा ए जी हुनी बाबा जिमि (जे—ए)। २ ए कीन्हा। ३ भा ए जी
पुरवति पुवरी। ४ ए कीन्हा।
- (४) १ ए जी। २ भा निसरेउ के ए निमरा के। ३ ए जोगी क।
- (५) १ ए बूझा जो सहन भटार। २ ए, म यह सभ्य नहीं है। ३ ए बड़ा।
४ ए भटार।
- (६) १ ए सब। २ ए पाछिला। ३ भा मुनाएउ।
- (७) १ भा ए म यह सभ्य नहीं है। २ ए जानी जा भाजू। ३ भा बह बिधि
ए का बिधि। ४ ए म यह सभ्य नहीं है।

अर्थ—(१) कुमार वह लजस पिछली बातों विवृत करने तथा जित प्रकार वह मधुमाधती के प्रेम में अनुरक्त हुआ (२) [दोनों का] जित प्रकार पहले-बहुत रात का [चरत्परिच] परिचय हुआ और जित प्रकार [दोनों की] सपना का परिवर्तन हुआ (३) और जित प्रकार [दोनों ने] आपस बचन-बद्धता की और साभिमान के रूप में कर भी मुद्रिका की (४) जित प्रकार [कुमार ने] विगुप्त का राज्य छोड़ा और योगी का ताब करके निराला (५) और जित प्रकार [उत्तरे ताब आया हुआ] अर्ध-आँखार [लघुद में] बूझ गया और उसको स्मिह हुए [लघुद की] लहर ने [तट पर] डाल दिया।

- (६) वेना को [अपना] समस्त पिछला कुछ कुमार ने रोकर सुना दिया। [और कहा]
(७) "यह कुछ नहीं जाना जाता है कि आगे बिपाता का क्या [कीन-सा] लेख होगा।

टिप्पणी—(१) बिउर < बिनु = बिबरण वेना (२) रैनि < रयनी < रजनी। पालक < पर्वक। (३) सहिवानि < सामिमान = बिहू। मुबरी < मुत्रिका।

[२२८]

पयां जिउ न रहा मोहि^१ गाता। बिनु जिय भा^२ वकतन हो वाता।
बिरह पिरम बिहू^३ जानि न पाएउ^४। जगत^५ जानु ठग काड सागउ।
साम मूर^६ गति प्रापति बारा^७। एव रहउ^८ घन ओउ हमाग।
अचक बिरह चिनगी उर^९ परी। साम मूर^{१०} अति प्रापति जरी।
नन अमिअ^{११} जइ^{१२} पिया रसाय^{१३}। नाउ^{१४} सतोष जियहि^{१५} बिमि दारा^{१६}।

अमिअ रूप प्रीतम निसि वासर नमनि पिया जो होइ^१।
सवरि सवरि धनुं कसे^२ कहु मन बिरहम सोइ^३ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मुनि। २ ए बिना ओउ।

(२) १ ए मैं वह भय्य नहीं है। २ ए पाया। ३ ए अचक। ४ ए चावा।

(३) १ आ ए मूल। २ ए जाय। ३ आ बहेउ रहा।

(४) १ आ जी। २ आ मूल।

(५) १ आ ए अमी। २ आ अनु, ए जी। ३ रा जे पिया रेमारा भा पिएउ
रसाय ए बिबर बहाय। ४ ए नाम। ५ आ सतोष जिये ए सतोष
जिये। ६ ए बारा।

(६) १ आ पिया निन हाइ ए पिये जो होय रा पिया जी जबाइ।

(७) १ ए मुमिरि मुमिरि बहु कैने। २ ए बिमि मन बरी साहाय रा के मन
पीरव रहाइ।

अर्थ—“(१) ऐ वेना मेरे पास में [अब] जीव [होय] नहीं रहा; मैं बिना जीव का
हुआ वालें कह रहा हूँ। (२) बिरह और प्रेम में कुछ नहीं जान पाया इस समय में मैंने इन का
महू हो [जानो] लाया। (३) ऐ बाला, मूलधन के साथ अति लया प्राप्ति [के गते] घट
में मेरा जीव नाम था (४) [जिन्हे] बिरह की बिगदारी अचानक रूप से पड़ी और वह मूलधन
का साथ अति लया प्राप्ति भी बन गए। (५) यदि (अब कि) मेरी मैं रसीला अमृत पिया है
तो है बाला मे नाम के सतोष से कैसे जीवित रह सकते हैं ?

(६) यदि मेरी मैं प्रियतम का अमृत-रूप रात-दिन पिया हो, (७) तो उसका स्मरण कर
कर, मुम्हो बहो, मन को कैसे कैय दिया जाए ?”

टिप्पणी—(२) पिरम < प्रेम। (३) मूर < मूल = पूँजी। मनि < शनि = हानि। प्रापति <
प्राप्ति = लाभ। (४) गवर < ममर < मृ = ममरय करना।

जबहि नम मधु^१ रूप समानी । मैं निहचै^२ अपने जिय जानी ।
मोहि यह^३ रूप पम जो^४ पियाइहि^५ । ओइस^६ दस विवेस फिराइहि^७ ।
वाला बिरह रगत जेत पिएऊ^८ । सम^९ सोयन मग^{१०} बाहर किएऊ^{११} ।
हुहु सोयन बरिसा^{१२} दुल^{१३} बारी । जइ भीतर यह आस री^{१४} भारी ।
प्रथम^{१५} जो भागि बीज^{१६} बमकानी । पुनि बमकै^{१७} मकु दसइ^{१८} पानी^{१९} ।

सोयन पावस^{२०} दसि क जिय सत^{२१} आसन आइ ।

ननहि करम^{२२} बीजु जो बमकी^{२३} मकु पुनि^{२४} बमकै^{२५} आइ ॥

पाठांतर—(१) १ ए मुठ। २ या भित्तै ए भित्तै।

(२) १ ए मे यह सख्य नही है। २ या ए रस। ३ ए पिकाही। ४ या बी
१ ए अर जो। ५ ए छिछही।

(३) १ ए रक्त अत पावा। २ ए सब। ३ या भग ए संग (<मग?)
४ संग (<संग<मग?)।

(४) १ या बारिस। २ ए देखु। ३ ए बीज भीतर जे बीसट, ४ जिय
भीतरहि अचरी।

(५) १ या प्रथमहि। २ ए लोहाग बीज। ३ ए बमकै (<बमकी प्ररली
मिथि)। ४ या मुल बेलि बहु ए मकु देखि जो। ५ ए बानी।

(६) १ या पारिस (<बारिस प्ररली मिथि) ए बरिसा। २ ए ते भा छौं।

(७) १ ए 'नैन' मात्र। २ ए के बमकै। ३ ए पुनि ४ बानि।
४ ए बमकै।

अर्थ—“(१) बनी [बेरे] नेत्रों में [उलका] मधुर रूप समाना मैंने अपने जो मैं यह
निश्चित रूप से जान लिया (२) कि यह कब यदि (जिस प्रकार) मुझे प्रेम का पान कराएगा उही
प्रकार यह मुझे देश-विवेग भी प्रसाधना। (५) मैंने उस बाला के बिरह में जितना [अपना] रक्त
पिया था वह सब सोचनों के मार्ग से बाहर कर दिया है। (४) मेरे दोनों नेत्रों से कुछ का बल
बरता है, जिसके भीतर मुझे यह भारी आचरण रहा है (५) कि पहले जो [बेरे] भाग्य की बिजली
बमकी थी, वह [इस दुल के] बानी (अनु-बारा) को देखकर वहीं पुनः बमक उठे।

(६) सोचनों में धर्म-काल देखकर भी तो वह आज्ञा नहीं जाती (७) कि नेत्रों में [एक
बार] जो रस [माय] की बिजली बमक चुकी है वह सत्य है फिर बाहर बमक आए।

टिप्पणी—(१) जेत < जेतिस < वाक्य = जितना। (१) (२) सोयन < मायन। (५)
(७) बीज < बिधुन।

बहु दिन जियन^१ भए तेहि^२ आमा । बिधि न आउ आनु तुम्ह^३ पामा ।

अमिम बचन तोहि^४ हिया मिगइउ^५ । प्राति बान मधुमासति पाइउ^६ ।

जस कोइ पर ममुद अवगाहा । मचन पाव बूझत मह^१ पाहा ।
अम मोहि तोर बलन दलि बाग^१ । दुम जम् बूझत भएउ अघाग^१ ।
मेँ सी मोहि^१ मारग^१ जिउ लावा^१ । जिय घट खोजि न बनहु पावा ।
राज पाट सुख परिहर^१ धन^१ जोयन जिउ मोइ ।
चकउ^१ पम पम पर्मा दहु आगे का होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा. ए चमत् । २ ए भी यहि । ३ भा भाइ भाबु ताहि ॥ भाव
भाबु गुज ।

(२) १ ए ते । २ ए जमी सराबी । ३ ए पावौ ।

(३) १ ए मा ।

(४) १ ए तुम सब बेला बलन उघारी । २ ए भी मघारी ।

(५) १ भा मैं ता एहि ए मोहि तो इहे । २ ए मे यह घर नहीं है ।
३ भा जिउ बाहा ए जीवन लाहा । ४ भा जिय घट मैं मधुमालति
लाहा ए जीउ बाग मधुमालति लाहा ।

(६) १ ए जो परिहरी (< परिहरे फारसी लिपि) रा दुम पड़े । २ ए म
मह घर नहीं है ।

(७) १ ए चहा । २ ए दहु आये ।

अर्थ—“(१) उसी (इसी) आजा में जीवित रहते बहुत दिन हो गए, और बिपाता आज
मुझे दुगहारे पास ले आया । (२) तेरे अमृत-बचनों से मैंने [अपने] दुःख को पीतल दिया और
[तेरे माध्यम से] मधुमालती की प्रीति-बालना प्राप्त की । (३) जैसे कोई अघाब समुद्र में पड़ जाये
और डूबते-डूबते अचानक बाहू पा जाये (४) इसी प्रकार, ऐ बाबा तेरा मुच बेघर कर दुःख-जल
में डूबते हुए धुम को आसार हो (मिल) गया । (५) जैसे तो अपने बीच की उसी [मधुमालती
के] मार्ग में लगा दिया है, इतना [अपने] घट (घर) को खोज कर [उत] बीच की
मैंने वहीं नहीं गम्या ।

(६) मैंने राज-पाट के मुलों को छोड़ा और बल-वीर्य तथा जीव की सेवा कर, (७) ऐ प्रमा
मैं प्रेम-वच पर चढ़ गया हूँ; पता नहीं आये क्या होगा ।”

टिप्पणी—(२) निर < भीमल < शिवल । (६) पाट < पट्ट = सिंहासन ।

[२३१]

पर्मा जिय^१ दुग बात मबाई^१ । एक एक ब^३ तोहि मुनाई ।
म एकमर महि^१ बिगम उगारी । ताहि पर बिगह दुगम जियमारी ।
कोइ न बह महारम माऊं । पर्मा अथ कौनि निमि जाऊं ।
कोइ^१ न रहा साय एहि^१ मरा । एक मह^१ मंय^१ दुग मोहि^१ बरा ।
तोहि मउ^१ प्रीति बाग मोहि आब । जानी^३ बिधि किछ^१ मुमम मुनाब^१ ।
पर्मा प्रीति बाग मधुमालति^१ ताहि मउ^१ आब मोहि^१ ।
तोम एकन बाग मम आपनि^१ रोइ मुनाइउ तोहि^१ ॥

पाठान्तर—ए मे तपयुक्त बीबी अर्द्धाली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ भा मैं ए सुनु। २ रा ए सवाई (< सवाई : नागरी लिपि)। ३ ए मैं।
 (२) १ ए जे। २ ए ठापर परा अधिक दुग।
 (४) १ रा कोठ। २ ए बेहि। ३ ए रहु। ४ भा संग ए बट। ५ ए मोहि।
 (५) १ रा ए सी। २ ए मोहि। ३ ए आनुहु। ४ ए जे। ५ भा बसर
 मुनाब ए सोमा पारि।
 (६) १ ए वेम प्रीति मधुमासती। २ रा ए तो सी। ३ ए मोहि।
 (७) १ भा एब अपनी ए जो आपनी। २ ए मुनाबा तोहि।

अर्थ—“(१)—हे बेमा मैंने [अपने] बी का समस्त दुःख-बर्त्ता एक-एक करके तुम्हें सुना
 बी। (२) मैं इस विषय उजाड़ [स्वान] में अकेला हूँ और उस पर बी में भारी बिरह-दुःख
 है। (३) मुझसे कोई महारत [नागर] का नाम नहीं कहता है, इसलिये हे बेमा मैं अब (अब)
 किस विधा में जाऊँ? (४) इस बेला मैं कोई मेरे साथ न रहा एक मात्र उस [कि बिरह]
 का दुःख साथ है। (५) मुझसे मुझे प्रीति की बातनामा रही है, और मुझे लगता है कि [मेरे द्वारा]
 बिभाता मुझे कुछ धुम [संकेत] सुनाएगा।

(६) हे बेमा मुझे मुझसे मधुमासती की प्रीति-बातनामिका मिल रही है (७) इसलिये मैंने
 अपनी समस्त दुःख-बर्त्ता तुम्हें रोकर सुना दी।

टिप्पणी—(४) बेरा < बेसा = समय।

[२३२]

कही कुंवर कुल बात सवाई^१। परमां जिय^२ सुनि मोह अनारि^३।
 कहमि कंवर कुल सतं अकुलानां^४। बिरह दीरघकुल^५ लघु क जानां^६।
 धनि जोवन^७ तहि कच भारी^८। जो जग भएउ^९ बिरह बरिहारी^{१०}।
 सरग वुष सम^{११} होहि न मोंतो। सम घट बिरह दह नहि^{१२} जोटी।
 मोटि माहि^{१३} बिदल जग^{१४} कोई। जाहि सरीर बिरह^{१५} दुग होई।
 रतन बि सायेर सायेरहि^{१६} गज मुबत्ता^{१७} गज कोइ।
 चदन कि^{१८} बन बन उपन^{१९} बिरह बि सन सन होइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा ए सवाई (< सवाई : नागरी लिपि)। २ रा जिय ए रिब।
 (२) १ रा मैं अपना भा मेठ अपुतानेहु ए ते महुसानेहु। २ रा बिह
 दीरघ मुज भा बिरह दुल्लु दुग ए बिरह दीरघ दुग। ३ भा मुज ल
 मानेहु ए लघु क जानेहु।
 (३) १ ए जोवन। २ रा तेहि कर जम भारी ए तेहि केग भारी।
 ३ ए मी। ४ ए बिलारी।
 (४) १ भा ए मब। २ ए ये न रा रई न।
 (५) १ ए मोटिह नहि। २ भा ए जम। ३ ए जेहि सरीर बिरह।
 (६) १ ए सायेर सायेर। २ भा गज मानी ए गज मानिक।

(७) १ ए ई। २ ए उ।

अर्थ—(१) कुमार ने समस्त बुद्ध-बार्ता नहीं जिसे सुनकर वेमा के भी में मोह ज्ञान पड़ने लगा। (२) उसने कहा "हे कुमार, बिरह-बुद्ध से उक्तता (तग भा) कर तुम बिरह के दीर्घ बुद्ध को छोटा करके लमझ रहे हो। (३) उसका भीषण अरपंत धम्य है जो अणु में बिरह पर बलिहार हो गया। (४) स्वर्ग (आकाश) [के बादलों] की समस्त बूँदें मोती नहीं बनने हैं और सभी के घट (अंतःकरण) में बिरह-ज्योति नहीं देता है। (५) कोटि (करोड़) में बिरला ही अमृत में होता है जिससे शरीर में बिरह-बुद्ध होता है।

(१) रत्न क्या प्रत्येक सागर में होते हैं ? क्या गजमुखा हर जिली गज में होते हैं ? (७) चंदन क्या प्रत्येक वन में उत्पन्न होता है ? [इसी प्रकार] बिछू भी क्या प्रत्येक के दारीर में होता है ?”

टिप्पणी—(४) ब ब < बिम्ब । (५) मावर < सायर ।

[२३३]

जहि जिय दय^१ बिछु उपराजा । निह^२ तानि भुवन मो पजा ।
 पम^३ पय जो^४ च^५ जित खोई । क जित होई^६ क प्रानम होई ।
 बिछु दवां पागिहु निमि^७ रागो । जा न जर मो गरब अमागो^८ ।
 बिछु दुख दुख कहो^९ न काई । जग माँ बिछु दुख सुख^{१०} होई ।
 जहि जग दय^{११} बिछु दरमाव । सब दुख सुख तहि हाठि दगाव^{१२} ।
 मसन अमर मूरि जग^{१३} बिछा जनम^{१४} जो^{१५} पाव तासु^{१६} ।
 निह^{१७} अमर^{१८} होइ मो जग जग काल न आव पाम^{१९} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ईय। २ मा ए लिम्बै।

(२) १ भा विरह ए प्रथम। २ भा ए भे बह दण्ड नहीं है। ३ भा बड़े ए बड़ा। ४ ए माई।

(३) १ ए हिमा जारौ हिम । २ भा रा साया । ३ भा रा यरुव भनाया ।

(४) १ रा ए नहै। २ भा जम जन मिमन बिगड़ दिन रा जग मों बिराह दलन
ए पाछ हरा ताहि मगन।

(५) १ भाषणि मित्राणि सा जति मय दम्प ॥ जति मित्र देव ।
२ सा यदि विवि नेदि मय दिशि दगावे ॥ दम्प मय तेति नैगै मय जति ।

(६) १ ए गा। २ न जम। ३ न म यक पाठ मी है। ४ न कन।

(७) १ मा निम्नै न निम्नै । २ न मकर रा मकर मी । ३ न
रास ।

धर्म—“(१) जिसके जी में बड़ा विरह उत्पन्न करता है निराश ही वह हो जाता है। (२) जो प्रेम-यन्त्र पर चढ़ता है (आसक्त होता है) वह जीव (जन्म) ही नहीं होता है। [विष्णु को जी] जो मेरे पास ही निभता है या तो जीव और या नहीं निभता है। (३) विरह को बड़ा क्षिप्रकारी और लगी हुई है।”

तो वह बड़ा भारी अभावा है। (४) बिरह-बुल को कोई दुःख न रहो; इस अणु में बिरह का दुःख मुख होता है। (५) जिसको संसार में ईश्वर बिरह दिखाता है, उसको दृष्टि में समस्त दुःख मुख दिखाई देता है।

(६) भोग कहते हैं बिरह अणु में अणुत-भुल है, और जो इसे जीवन में पाले ला है, (७) वह निश्चय ही दुःख-भुग के लिए जन्म हो जाता है, और काल उसके पास नहीं आता है (उसका साथ नहीं होता है)।

टिप्पणी—(३) दबा < दब = दाबागि। (३) गवब < गुह। (५) डीठि < दृष्टि।

[२३४]

पम अमिअ फर^१ साध जो^२ करई । सहज अपान आपु^३ परहरई^४ ।
जिउ बरि मौचु घर नहि पाऊ^५ । पेम अमिअ फर बाह न काऊ ।
प्रयमहि सीस हाथ क लेई । पाछें ओहि^६ मारग पगु दर्ई ।
बिरह रोपि जिय^७ मन उषारे^८ । त्रिभुवन छहि लखें^९ उजियारे^{१०} ।
जनमि जो जिउ न पिरम^{११} मद मोता । सोहि जीवन नहि दइ^{१२} बिधाता ।

बिरह समुद अथाह अति जग जान सम कोइ ।

मानिक सो ल उमरे^{१३} जो मरजीया^{१४} होइ ॥

पाठांतर—भा में उपर्युक्त वृत्तरी अर्द्धांकी यथा पाँचवी आती है।

रा में उपर्युक्त चौथी अर्द्धांकी यथा पाँचवी आती है।

(१) १ ए अमीकर। २ भा सो ए जे। ३ भा ए आपु अपान जो रे।
४ ए परहरई।

(२) १ ए जिउ पर तेज बरा जे पाऊँ।

(३) १ भा एहि, ए ओहि।

(४) १ भा रूप जिनि ए रूप जे। २ ए नैन उषारे, रा रूप उषारे।
३ भा आगे ए आवे। ४ ए उग्यारे।

(५) १ ए सहज जीउ प्रीतम मय माता। २ भा ए तेहि जिय (जिउ—ए)
जनम न देहि (तेह—ए)।

(६) १ भा ए छह।

(७) १ ए सो भी उबरै। २ भा मरजीया ए मरजिया।

अर्थ—(१) प्रेम क अमृत-फल की जो आशीसा करता है वह सहज अलग (बेतन) को स्वत छोड़ देता है। (२) जो भी न मृत्यु का वरण करने वीर नहीं रखता है, वह प्रेम का अमृत-फल कभी नहीं खाता है। (३) [प्रेम-वच का पवित्र] पहले ही से [कारक] अपना तिर हाथ में कर (रख) लेता है उसके पीछे वह उस मार्ग पर वीर रखता है। (४) जितने बिरह-बुल को भी वे रोष (लग्ना) कर नेत्र सोते उसके लेते तीनों भुवन प्रकाश-पूर्ण हैं। (५) जो जन्म-कारण कर [अपने] जो वे प्रेम-वच के बल नहीं हुआ उताही बिपाना [मते ही] जीवन न दे।

(१) बिरह-समुद्र अति अबाह है यह जयत् में लगी कोई जानता है। (७) [इत अबाह समुद्र से] माणिक्य लेकर बड़ी ऊपर आ पाता है जो भरबीबा (बीरगुल) होता (बनता) है।

टिप्पणी—(१) अमिम < अमृत। साय < सदा < सदा = सुहा आकाशा। अपान < अन्पान < आरमत्। (२) मीषु < मृषु। (७) ऊम < उम्भ < ऊर्म।

[२३५]

बिरह अग्नि^१ जिय^२ लागि^३ न जाही । एहि^४ जग जनम अबरिषा^५ ताही^६ ।
जइ जिउ पम तत नहि लावा^१ । जीवन फर तइ^२ जनमि न^३ पावा ।
एहि जग^१ जनमि लहा^२ तइ लाहा । बिरह अग्नि मह जइ^३ जिउ दाहा^४ ।
तहि दुल कह कसैं दुल कहिए^१ । जहि दुल सें^२ प्रीतम निधि लहिए^३ ।
बिरह आगि^१ जहि हिय उर जरेक^२ । सहज अपान आपु परिहरक^३ ।

पम समुद्र दुख जल^१ जवहीं उठइ^२ हुलास ।

परहि^१ सनही बापु र छाड़ि जियन^२ क^३ भास ॥

पाठान्तर—(१) १ अग्नि। २ रा ए जिव। ३ ए लागु। ४ रा ए येहि। ५ मा ए जीवन अबरिषा (अबरिषा—ए)। ६ ए बाही।

(२) १ रा जेह जिय पेन न बाह समावा मा जिन पीन पेन तंत नहि लावा ए जेहि जिउ प्राण तंत मन लावा। २ रा फल तेह, बा फर पिन ए फल ते। ३ रा मे मह शब्द नहीं है।

(३) १ मा एहि नमि ए एहि नमि। २ रा मिया ए कीह। ३ ए अग्नि मा जे। ४ मा बाहा।

(४) १ ए यह दुल सली नहि लीं कहिये। २ रा ला ए ते। ३ ए कहिये।

(५) १ मा अग्नि ए अग्नि। २ ए मो जे जिउ जाय। ३ ए नैन पानि में पिउ पनारा।

(६) १ मा समुद्र अमोघ (<अमोघ पारमी लिपि?) जल रा समुद्र दुख बुह ए लमोघ अमोघ जल। २ मा कर जन (जनु?) उड़हि ए बीरी उरै।

(७) १ ए फिर्ह। २ मा ए छोड़ि जियन। ३ ए के।

अर्थ—(१) जिसके भी मैं बिरह की अग्नि नहीं लगी, इस जगत् में उसका जन्म (जीवन) व्यर्थ है। (२) जिसने अपने भी को प्रेम-तंत्र में नहीं लगाया उसने जन्म लेकर भी जीवन का फल नहीं पाया। (३) इस जगत् में जन्म लेकर उसी में लाभ प्राप्त किया जिसने बिरह की अग्नियों में अपने शरीर को वृष्य किया। (४) उस दुल को कैसे दुल कहा जाए जिस दुल ने प्रियतम [प्रीती] निधि प्राप्त की काली है? (५) बिरह की अग्नि में जिसका हृदय जल गया (जाना है) वह अपने महज आत्म (चेतना) को खर्च ही छोड़ देता है।

(१) प्रेम-समुद्र के बुझ-बस में बसी हुआस (हिलोर) छठता है (७) उसमें प्रेमी बेचारे जीवन की आशा छोड़ कर [कुब] बड़ते हैं।”

टिप्पणी—(१) अबिरवा < बुवा = ध्येय। (२) तठ < तथ। (३) साह < काम। (४) अपान < अप्याप < आराम। (५) हुआस < उल्लास। (७) बापुरा ~ बप्पुड [बे] = बेचारा दीन अनुकंपनीय।

[२३६]

बिरह माउ किछु^१ जान सोई । जो बसे^२ जिउ जोवन^३ सोई ।
 बिरह जुवा फर तह^४ किछु^५ पावा । जोउ पत^६ कीडी पर^७ लावा ।
 बिरह उदधि^८ अबगाह अपारा । कोटि माह मक^९ परनि हारा ।
 बिरह बि^{१०} जगत^{११} अबिरवा^{१२} जाई । बिरह रूप यह सिस्ति सवाई^{१३} ।
 नन बिरह खजन जइ^{१४} सारा । बिरह रूप दरसन 'सयसारा'^{१५} ।
 मसन एहि^{१६} जग जनमि कै बिरह न कीता^{१७} पाउ ।
 मून घर का पाहुना जेर^{१८} आया^{१९} तउ जाउ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए माव ती जानै। २ रा बैठे ए बैवा। ३ रा जीवन।
 (२) १ मा तिति ए जे। २ ए कछ। ३ ए जुवा पैत। ४ मा तिति ए जिम्ह।
 (३) १ ए बग्ग (?)। २ रा काह।
 (४) १ ए मे यह सय नहीं है। २ ए अग्नि। ३ ए अबिरवा या अबिरवा। ४ रा यह सिस्ति सवाई, ए जो सिस्ति सवाई।
 (५) १ मा तिति। २ रा उत्रिवारा। ३ ए म पूरी बडाँसी का पाठ है—बिरह राज नक बिरहै राता। बिरह राजा नक बिरह संवाला। (युक्त —बानों चरनों में बिरह राजनक)
 (६) १ मा जइ, ए जो। २ रा ए कीम्हा।
 (७) १ ए आबै।

अर्थ—(१) बिरह का नाम कुछ बही जानता है जो [उसके पीछे] जीव और जीवन की जो बँडता है। (२) बिरह के बुए का कल (लाभ) बही कुछ प्राप्त करता है जो अपने जीव की कीर्ती के दाँव पर लगा देता है। (३) बिरह का समुद्र अवाप और अपारा है। कोटि में एक उसको तैर [कर पार कर] सजता है। (४) बिरह क्या जगत् में ध्येय जाता है? पर सारी सृष्टि ही बिरह रूप (बिरह का परिणाम) है। (५) जिसने नेत्रों में बिरह का अंजन लगाया उसको बिरह के रूप का ही वर्णन संसार में [मिलता है]।

(६) मसन बरते हैं—इत जगत् में जन्म लेकर जिसने बिरह से बच नहीं की (७) वह उत मूने घर के पगुने के समुद्र है, जो बँडता आया है बैता ही गया है (जिसका आना भी बैता ही है बैता आना)।”

टिप्पणी—(२) पैत < पत्त < पजत < प्रपुन = जो प्रपुन दिया गया या चला गया है—दाँव। (६) अबिरवा < बुवा। (७) पाहुना < प्रापुनक = अतिथि मिहमान।

[२३७]

जो सहि कर न सिर कह^१ पाठ । निनु ओहि^२ सौरि न मूद बाठ ।
नन सासि दस सभ स्या^३ । मर सो पाव जीठ अनुपा ।
एक जीठ एहि पथ लगाव^४ । एक^५ जीठ ब^६ सो जित^७ पाव ।
होइ मोन बबल सभ^८ बानी । मुन मवन सभ^९ अकब^{१०} कहानी ।
आपु दिस्टि^{११} हलइ^{१२} सभ^{१३} भाठ । रूप सो जाहि पतन^{१४} महि^{१५} काठ ।
माउ अनग बिरह सेर^{१६} उपजहि^{१७} जाहि^{१८} सरीर ।
त्रिभुवन कर^{१९} जो दूल्हा सहि बिधि दइ^{२०} यह पीर ॥

पाठांतर—रा में उरबुल पाँचवी मडाँकी के बन्ध परम्पर स्वामांतरित है।

- (१) १ रा जिय कह भा मिर कै ए सिर सी। २ भा एहि ए यह।
- (२) १ ए मूचि जा देकु सङ्गा। २ ए इन्ह नैनहु दजि जान मङ्गा।
- (३) १ भा जीठ जी एहि पथ लाई ए जीव माहि पथ लगाई। २ ए एह।
३ ए जित मा। ४ भा जिय नै ए कम कै।
- (४) १ भा बचत मव ए नै बचन। २ रा मुन मवन सभ भा मुन सवन
सजि ए मुन आव जा । ३ ए बचा।
- (५) १ भा अउ (?) बिष्टि ए मुनि बलि बिष्टि। २ ए देनु। ३ भा ए
सग। ४ रा जीठ बत। ५ ए न (< नहि डारमी लिपि)।
- (६) १ रा सा ए सी। २ ए उपमा। ३ भा ए कुपर।
- (७) १ ए कर। २ ए त बिधि दई।

मर्थ—(१) जब तक कोई सिर को पीर नहीं करता (सिर के बल नहीं चलाता) वह ठीक-ठीक उस मार्ग में कभी मूर्ख (पीरों के द्वारा भ्रम-मर्दन कर) नहीं चलाता। (२) जो मेघ कोल कर [जगन् कै] लगी लकी को देलाता है वह मर जाता है तो अनुभव जीव (जीवन) पलाता है। (३) एक जीव (जीवन) को इस पथ में लगाना है वह एक जीव (जीवन) न सी जीव (जीवन) पलाता है। (४) [बह] मोन होकर समस्त बानी बोलाता है और वह अपने धर्मों में समस्त अक्षयताय कथा सुनता है। (५) जो समस्त भावों को आत्म-बुद्धि से देखता है [उत्तरा] कप इस प्रकार का हो जाता है जिसका पतन कभी नहीं होता है।

(६) जिसके शरीर में बिरह से अनेक भाव उत्पन्न होते हैं (७) ऐसा जो त्रिभुवन का दुष्टा (स्वामी) होता है उसी को विधाता यह पीड़ा देता है।”

टिप्पणी—(१) पाठ<पाद=पीर। गारि<गोड [रे]=गली मार्ग। (५) जान<जान। (७) दूल्हा<दुर्लभ=दुष्टा घर, स्वामी।

[२३८]

मो जग अनमि जियन कर^१ पाव । जित आगन^२ सहि पथ गगन^३ ।
जाक पथ गाड बाद जाइहि^४ । मा अगुवा हाइ^५ पथ गगारहि^६ ।

सहज हिय उपराजहि ग्याना^१ । मारग यह कह जासि भुजाना^२ ।
पाँचो तत (=सत) एक होइ^३ जेहहि । सहज भाउ एक एक देखैहि^४ ।
ओ फुनि^५ क्या जीउ भ जाइहि ।^६ क्या रूप अित प्रगट दिसाइहि ।^७

बिरह दुखस निधि सुख न जिनि कोई एहि^८ अफुताउ ।

निरबाह^९ जे^{१०} बिधि सिर^{११} प^{१२} दूनहु जग^{१३} राउ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बिपन फल ए जीवन फल । २ रा अित अपनी भा जो बपान
ए जो आपन बिऊ । ३ ए बोहि के सम काई ।

(२) १ ए बोइ जाही । २ ए जाने नै । ३ ए देखती ।

(३) १ भा द्विती उपराज भियाना ए हाय उपराज ग्याना । २ ए एक कउ
जाहु भुजाभा ।

(४) १ ए नै । २ भा सहज भाउ इक इक दिसैहहि रा जी पुनि क्या जीउ
देखैहहि ।

(५) १ रा सहज भाउ एकै देखाइहि, भा जी पुनि क्या जीउ नै जाइहि ए अ
ओ क्या जीव नै जाही । २ रा भिकि की सफल देम बिधि पाइहि, ए क्या
रूप नै प्रगट देखाही ।

(६) १ या जिनि काइ नहि (< तैहि झारसी निधि) ।

(७) १ ए निरबाही जो भा बिरह बाहु जे । २ ए जो । ३ ए बिप
न भा भए ते ए सा । ४ ए चारो भुव ।

अर्थ—(१) बही जगत् में जीने का फल पता है जो अपने जीव को उत (प्रेम के) पथ में
लपकता है । (२) जिसके पथ में कोई भी (बाधेवा) बह बगुना होकर उसे पथ-निर्देश करेगा ही ।
(३) [ये अनुपम] तु सहज हृदय से ज्ञान उत्पन्न कर मार्ग पाही है तु कहीं भटका हुआ था क्या
है? (४) बाँची तत्व [इस मार्ग में] एक ही जायेंगे और प्रत्येक [उत्त] सहज भाव को विस्तार
एगा (५) और सब काया जीव हो जाएंगी और जीव काया के रूप में प्रकट दिसाई पड़ेगा ।

(६) बिरह-मुक्त मुक्त की निधि है इससे कोई अतः पछताओ (तंग भावों) । (७) इसका
निर्देश करने के लिए जो बिधि द्वारा निर्मित है वे अबाध ही दोनों जगत् (इहलोक और परलोक)
के राजा हैं ।

टिप्पणी—(४) तत < तत्त्व ।

[२३९]

दुग सा^१ जग अफुताउ^२ न कोई । दुग के अंत मुकर^३ प होई ।
दुइ दुग बीच मुकर सयंमारा^४ । नारी घन^५ सत जल धारा ।
पागुन जी तरिवर^६ पन झार । नौ पत्नी^७ मित्र सेंट^८ अनुमारे^९ ।
दुइ^{१०} पापर बिष भागु पियारी^{११} । तो मँहनी राता रंग पारी^{१२} ।
मोना बटु बिधि^{१३} आपु छानव । पदुमिनि उरहि^{१४} ठाउ तो^{१५} पाव ।

दुह दुल बीच सुख ह^१ निनु आनह^२ सयसार^३ ।
नह अति^४ रनि अघेरी ती^५ अजोर^६ मिनसार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए से । २ रा अनुसार । ३ ए आगे मुख ।

(२) १ ए दुह दुल बीच सुख संभारा भा पुह मुख बीच दुख संभारा । २ रा
कारी घटा भा वाली घटा ए काली के घट ।

(३) १ ए कागुन से जो तक पससारे । २ भा नी पसली ती ए ती नी पसली ।
३ भा सिर सौं छारे, रा सिर सौं अनुसारे ए सिर से अनुसारे ।

(४) १ भा पुह रा बोही । २ ए पिसाबा । ३ ए पाबा ।

(५) १ भा दुल । २ रा अघरनिह । ३ ए ठीक जी ।

(६) १ भा पुह मुख बीच दुख । २ रा आनी । ३ ए संसार ।

(७) १ रा दुल के ए जी अति । २ भा कनि । ३ ए इजोर ।

अर्थ—“(१) [रे कुमार] संसार में दुख से कोई न बचतामी (संभ आगे) ; दुख के अंत में सुख अवश्य ही होता है । (२) संसार में जो दुःखों के बीच में दुख इस प्रकार होता है जिस प्रकार वाली घटा के बीच में घेत जल-धारा होती है । (३) कागुन में यदि कुछ पसे झाड़ता है तो वह सिर से नबपस्तन [भी] निजास्ता है (धारण करता है) । (४) मेहरी जो पत्थरों के बीच में अपने को पिसाली है तो मेहरी काल रंग [भी] पाली है । (५) जोती जब अपने को बहुत प्रकार से छिद्रता है तभी वह पथिनी के हृदय पर स्थल [भी] पाला है ।

(६) संसार में जो दुःखों के बीच में दुख है वह निश्चित रूप से जान ली ; (७) यदि अति अघेरी रजनी है, तो उज्ज्वल प्रभाव भी है।”

टिप्पणी—(४) रात < रात = काल । (५) ठाठ < स्वान । (७) रनि < रजनी < रजनी ।

[२४०]

तुम^१ जो^२ कुंवर बहुत दुग पावा । अब बिधि^३ आनि सजोग मरावा ।
करम होइ^४ जो^५ सिगा सिलारा । तुम्ह^६ दुल रनि मियर मिनमारा ।
दया कर जो^७ देब दयाला । अलग ननिह महुं^८ मित्र सो बाला ।
पर अहेर^९ दुग समु^{१०} अपारा । मुबपन दज होइ^{११} बहारा ।
मुनह चाह मोहि मर^{१२} तहि केरी । जाहि दुक्य तुम्ह कीन्ह ह वरी^{१३} ।

पाड़ि समुद^{१४} धमि लीन्हमि^{१५} कीन्हसि बिह^{१६} मुभग^{१७} ।

मुदिन आद मिअराना^{१८} मुनह वहीं उपरेम ॥

पाठान्तर—ए मे उरुबुन प्रथम तथा द्वितीय अर्जासिमा परस्पर स्वार्थान्वित है ।

(१) १ भा ए ती । २ ए जो । ३ ए जा ।

- (२) १ भा होहि। २ ए जो। ३ रा ए ती।
 (३) १ ए जो। २ रा विनि महे, ए विना मों।
 (४) १ भा परे जहि ए परा भहो। २ ए बचन बैज जी हो।
 (५) १ ए सुनु बाहु मोघों रा सुनु मैं न्हों बाहु। २ ए बहि। ३ ए जाके
 बुल लीला तोहि घरी भा बहि के दुख किए हहु घेरी।
 (६) १ भा सुमेव। २ ए कीन्हा। ३ भा कीन्हे बिरह बहू भेस ए कीन्हा
 बिरह विनेस।
 (७) १ रा मियराजें।

अर्थ—“(१) ऐ कुमार, तुमने जो बहुत [बिरह का] दुःख पाया तो विवशता ने अब संयोग
 साकर मिला नी दिया। (२) यदि कलाह में कम (भाग्य) का लेख हो तो तुम्हारी दुःख-रजनी का
 प्रमात निकट है। (३) यदि ब्यालू ईव बया करे, तो वह बाला तुम्हें छोड़े ही विनों में मिल
 आवेगी। (४) तुम जो अपार दुःख-समुद्र में पड़े हुए हो तो मैं तुम्हें कर्मपार बनकर तुम्हें
 (धूम सवेस) दे रही हूँ। (५) तुम मुझसे उसका समाचार सुनो जिसके [बिरह के] दुःख को
 तुमने [अपने पैरों की] बेड़ी बना रक्खा है।

(६) समुद्र पर बड़ाई करके तुमने उसमें डुबकी लगाई है और बिरह का सुवेस किया है, (७)
 तो तुम्हारा धूम मिल नी निकट आ गया है; [यह] उपवेस (सवेस) मैं कह रही हूँ सुनो।

टिप्पणी—(२) लिखार < लिखाव < लकाट। ईनि < रजनी < रजनी। मियर < मिशर।
 (४) कंठहार < कर्मपार।

[२४१]

सुनु कहौ अब तहि क^१ बाता । जोहि क^२ रंग तोर जीउ^३ राता ।
 मगर महारस राजकुमारी । पम गहें बहि भएहु^४ मियापी ।
 मैं औ^५ वह^६ बार सप^७ लग्नी । मधुमासति मोरि बार सहसी ।
 म औ मधुमासति^८ एक सगा । माननि^९ सबहि बालपन^{१०} रगा ।
 अब क^१ कुंवर न जानौ बाता । जब मउ^२ बन मोहि^३ दीन्ह बिभासा ।
 मतत^४ एक सप^५ हम^६ दुनहु^७ खलिन्ह^८ बार^९ पमारि ।
 भा एक अरिम दबम माहि बिछरें^{१०} बन जब सउ बिधि दार^{११} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मैं तापरि। २ ए जाये। ३ रा जीवन।

(२) १ रा महे जेहि भए ए गहा जो भीउ।

(३) १ भा अब रा और। २ ए ऊरु। ३ भा बाधन ए बाध नैन।

(४) १ रा मैं और बहू बाते ए मैं मधुमासति रही। २ भा माने ए
 माना। ३ ए सब बाधन।

(५) १ भा ए^१ ए अब नी। २ रा अब ना ए अब नें। ३ ए मैं बह
 धर्य नहीं है। ४ भा लिएउ।

- (१) १ ए संतति। २ मा ए संग रा में यह मन्द नहीं है। ३ ए म यह मन्द नहीं है। ४ ए हुनी। ५ मा लके बार, रा लकटि बाज ए कीन्हा बाज।
- (७) १ भा अब मा एक बरिस मोहि बिछर ए अब बिभुने भा बरिस दिन रा मा एक देवस मोहि बिछुरे। २ भा जब बिबि सै बन बार, ए बन शीगहा बिबि बारि।

अर्थ—“(१) सुनो अब मैं जती ली बार्ता कर रही हूँ, जिसके प्रेम में तुम्हारा भी मगुरवत है (२) उस महारस मगर की राजकुमारी की जिसके प्रेम को ग्रहण कर तुम जितरी हो गए हो। (३) मैं और यह बास्याबस्या में संग की खेती हुई है, [इसलिए] मधुमालती तो मेरी बाल-सहेली है। (४) मैंने और मधुमालती ने एक संग बास्याबस्या का समी रंग (सुख) बना। (५) अब की बान [अवश्य] हे कुमार नहीं जानती हूँ जब से मुझे बिधाता ने बन [बास] दिया है। (६) सबसे एकसाथ हम दोनों ने बास्याबस्या के ऊबमपुष जोस कहे। (७) मुझे उसने बिपुस्त हुए एक ही बर्ष हुआ जब से बिधाता ने मुझे बन में बाल दिया है।”

टिप्पणी—(५) बाठ < बठा < बाठा। (६) संतत < सतत = निरंतर मंदैब।

[२४२]

सुनत कुबर रस बात^१ सोहाई । हिय गहमर मुखछा गति^२ आई ।
 पलटि पम मिग सउ^३ कुनि^४ सागा^५ । बनक अगिनि जनु^६ लसउ^७ सोहागा^८ ।
 पम परान^९ पलटि भी भएऊ । जरति अगिनि^{१०} जनु^{११} पिउ^{१२} परि गएऊ ।
 जोड गणउ^{१३} मधुमालति पासा^{१४} । परा भुम्मि^{१५} पमि घर बिनु सांमा ।
 गए^{१६} घरी दुइ चत अपाना^{१७} । समुझति नन उपायि गियाना^{१८} ।
 बिरह भाउ^{१९} तन काप^{२०} पर पाउ^{२१} सहगाइ ।
 नन नीग दुहु^{२२} भरि भरि^{२३} कहन^{२४} जो^{२५} सागु बहाइ ॥

- पाठांतर—(१) १ रा बजन। २ ए पहचरि। ३ ए मुछायन (< पनि प्रारमी लिंग)।
- (२) १ रा मा ए त। २ रा बहि(?) ए जा। ३ ए लाव। ४ प बासि जो। ५ भा परेउ ए परा। ६ ए सोहागे।
- (३) १ ए कटार। २ रा एक। ३ ए बासि। ४ ए म यह मन्द नहीं है। ५ ए दिन।
- (४) १ ए सागा। २ भा बाजा। ३ भा परेउ भुम्मि ए परा मुरछि। ४ ए जा परनि अनामा।
- (५) १ भा गए। २ ए सुनत। ३ ए उपरे रवि ग्याना रा उपायि गियाना।
- (६) १ ए पाव। २ भा ए बासन। २ भा परेउ पा ए परा पाव।
- (७) १ रा लक ए दुइ। २ ए बहि बला। ३ रा बही जो भा बहि कटि, ए. बजन।

अर्थ—(१) यह सुहावनी रस-मार्त्ता सुनते ही कुमार का हृदय मार्मिक से भर आया और उसे मूर्छा आ गई। (२) प्रेम पुनः पलट कर उसके सिर से लप गया और उसकी दशा ऐसी हो गई मानो माघ में पड़े सोने में सुहाया पड़ गया हो। (३) उस प्रेम से (के कारण) प्राण पलट कर फिर इस प्रकार लबोले हो गया मानो जलसी हुई आग में घी पड़ गया हो [और वह घी पड़ने से लबीन हो गई हो]। (४) उसका बीच मधुमासती के पास चलता गया और उसका पड़ बिना सँस का हो कर धूमि पर गिर पड़ा। (५) वो मड़ियाँ बीतने पर आत्मा ने जेत की और उसने नेत्र खोज कर ज्ञान समझा।

(६) बिट्ठ माघ से उसका अरीर काँप रहा था और उसके पाँव सँझा कर (बहलते हुए) पड़ रहे थे (७) जब वह नेत्रों में आसू भर कर अपनी कहानी कहने लगा।

टिप्पणी—(३) गौ < मव = मबीन। (५) जपान < जप्पाव < आरमन्।

[२४३]

कह^१ कृवर^२ सुनु^३ पेमा^४ बाता । जब^५ सेउ^६ जिर^७ मधुमालति^८ राता ।
सुना^९ न दसा^{१०} एहि^{११} कलि^{१२} कोई । जहि^{१३} परिच^{१४} मोहि^{१५} दस^{१६} क^{१७} होई ।
सपने^{१८} जब^{१९} सउ^{२०} गई^{२१} दसाई^{२२} । तब^{२३} सेउ^{२४} कबहू^{२५} बाहू^{२६} न^{२७} पाई ।
ओ^{२८} फुनि^{२९} नीदि^{३०} मन^{३१} सेउ^{३२} हरी । सपनेउ^{३३} सोइ^{३४} न^{३५} दसो^{३६} घरी ।
पमा^{३७} सपन^{३८} सोइ^{३९} प^{४०} पाव । जाके^{४१} नन^{४२} नीदि^{४३} सुख^{४४} आव ।

दुइ^{४५} कबु^{४६} नीद^{४७} न^{४८} लागहि^{४९} जब^{५०} सउ^{५१} सपने^{५२} गई^{५३} दसाइ^{५४} ॥

अब^{५५} सो^{५६} कइ^{५७} उपगाइ^{५८} देख^{५९} लागि^{६०} जेहि^{६१} घट^{६२} प्रान^{६३} रहाइ^{६४} ।

पाठान्तर—(१) १ ए कहा। २ ए सुन पेमा की रा रस पेमा। ३ रा ए सी।

(२) १ भा एहि। २ ए मोहि। ३ ए की रा कै।

(३) १ रा सपना। २ ए रा सी। ३ ए रा सी। ४ भा बिउ हई ए बतई।
५ ए ना।

(४) १ रा ओ पुनि ए अब सी। २ रा ए नीद नैन रा। ३ ए जिर घट
रहल। ४ ए देखी।

(५) १ ए पम सपन सोई रा पमा सपना सीई। २ भा रा सी। ३ रा
ए जाके।

(६) १ ए आव सपने सी जब रा 'लागहि' मान।

(७) १ भा अब कइ बिधु उपचार ए अब ना कइ उपचार सी। २ भा बट मा
रा जेहि पटा ? ३ ए जीवन मान।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा “हे पेमा, [मिरी] बात सुनो; जब से की मधुमालती पर अनुरक्त हुआ, (२) इस कलि में किसी की सुना-बैसा नहीं जितने उस [के] देश का परिचय हो। (३) स्वप्न में जब से बहुत नींद गई तब से जहाँ उसका समाचार न मिला। (४) और फिर नेत्रों से निद्रा भी हट गई है जिससे उसे स्वप्न में भी मैं एक घड़ी उसकी नहीं देख पाया। (५) हे पेमा स्वप्न भी उन्नी की मिलता है जिसके नेत्रों ने सुन की निद्रा आती है।

(६) तब से मेरे दोनों बन्धु मित्रा से नहीं लग रहे हैं जब से वह मुझे पील गई है। (७) अब ईश के लिए वह उपकार [मेरे साथ] कर कि मेरे शरीर में प्राण रह जायें।”

टिप्पणी—(१) बाढ < बसा < बासा। (२) बन्धु < बन्धु < बन्धु = भेष। (३) उपकार < उपकार।

[२४४]

कहु रस बचन जो^१ पूछों तोही । एहि रस मरत जियाएहि^२ मोही ।
अब कहु कहाँ^३ सो प्रान^४ पियारी । ओतोहि ओहि सउं कसि^५ चिन्हारी ।
पेमां आमु सुदिन मोर आहा^६ । जहि^७ पाएउ^८ मधुमालति चाहा^९ ।
दहि सो^{१०} सील^{११} जहि^{१२} मिल सो^{१३} बाना । जहि गुन हम सतन अप^{१४} माला ।
विधि मो दस बह होइहि^{१५} मोरा । जहि दसों^{१६} ममि बदन अजोरा ।

सकनन बहू सकती परी^१ मोहि बिरह रहा^२ घट पूरि ।
पेमां तुह हनिवत म^३ मरउ^४ सजीवन मूरि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा सो ए जे। २ भा जियाइय ए जिबाये।

(२) १ भा बहू ए कहा। २ ए पेमा। ३ ए अब आ तो मा ईम रा ओ
ताहि ओहि गा कौनि भा ओ तुम्ह उन्ह सउं बनि।

(३) १ ए आ बाबा। २ रा जेहि ए जे। ३ ए पाबा। ४ ए बाबा।

(४) १ ए म यह गद नही है। २ भा मत। ३ ए जो। ४ ए मैं यह
गद नही है। ५ ए संवति जग गुन।

(५) १ भा होई ए होइ। २ रा जहि ए जो। ३ ए देनब। ४ ए
इजोरा।

(६) १ ए लगन के मक्की परी रा कठिमान गही सवति नहि पारे। २ रा ए
मे यह गद नही है। ३ ए भरि।

(७) ए तैं हनिवत भै। २ ए मेरो।

अर्थ—“(१) अब तु वह रस-बचन वह जो मैं तुम से पूछता हूँ और इस रस से तू मुझ भरते हुए जो जीवित कर। (२) अब तू बता कि वह प्राण-प्यारी कहाँ है और तुमसे-वत्तने मिल प्रचार का परिचय है। (३) हे पेमा आज मेरा शुभ दिन है कि मैंने मधुमालती का समाचार पाया। (४) अब तू मुझे यह गिरा है कि वह बाला मिल जाये जिससे तुम्हों की बाला मैं सदैव बचता रहता हूँ। (५) हे बिधाता मेरा वह दिन जब होगा जब मैं इस मुख-गणि के प्रकाश को देखूँगा ?

(६) मैंने लगन को कठिन लकी भी, वैसे ही मेरे शरीर में बिरह पुरित हो रहा है। (७) ए पेमा तू हनुमान होकर, सजीवनी मूल मुझे ला है।”

टिप्पणी—(४) मीग < मीग < मीता। (५) लगन < लगन।

[२४५]

घात कहूँ ओ१ चेत गवान । बरबस समुक्षि२ आप बर३ आव ।
 खिन समुक्ष१ खिन जा१ बिकरारा३ । पम गहा को आपु समारा४ ।
 पेमा पाव१ सोस धरि रोवा । नन सलिल विषु बदनी३३ बोबा४ ।
 त्रिभुवन जग जीवन के१ दाता । काहूँ न१ मेरवसि३ ओ अहि राता ।
 कलि ओतारि कुंवर क१ नाई । पम बिछोड१ न बहि३ गुसाइ ।
 ओर१ दुखस समयसार१ बर३ जस भाव सत१ होउ ।
 दुइ रात१ आपुस मह बिधि जनि वसि३ बिछोउ ॥

पाठान्तर—मा मे यह छंय अपने के बाब बाता है।

- (१) १ ए जो। २ रा ए समुनि। ३ ए ओउ बट।
 (२) १ रा समझ ए कैने। २ रा पाइ। ३ ए बिर्ममारा। ४ ए न
 (<नहि फारसी किपि) आपु समारा मा नहि आपु सर्वसारा।
 (३) १ मा पाइ। २ मा रोई, ए रोवै। ३ मा रा बिब बानी ए जो मंजु।
 ४ ए बोब।
 (४) १ ए तीनि भुवन जग जीवन। २ मा ए काहे। ३ ए मेरवहु।
 (५) १ रा ए पुनि ओतरी कुंवर की। २ रा ए बिछोइ। ३ ए न देहु।
 (६) १ ए ओर। २ ए ससार। ३ रा के। ४ ए जस भाई सत।
 (७) १ मा दुहु रातह ए कुनी राते। २ ए मा। ३ रा ए देइ।

अर्थ—(१) वह बात कह रहा था और जेतना छो रहा था; बरबस (बलपूर्वक) जब वह समझता तब उसकी आत्मा में बस आता। (२) एक क्षण वह समझता तो दूसरे क्षण वह बेचेत हो जाता। मेन से आबिष्ट कौन अपने की संभाल पत्ता है? (३) पेमा के वीरों पर तिर रत कर वह रोने लगा और मैमा के अस से उस अंजमुली [के वीरों] को बोले लया। (४) [पेमा ने कहा] “हे त्रिभुवन तथा जगन् की जीवन दान करने वाले तु क्यों मूढ़ उसकी उससे जितना हैता जो जिससे अनुरक्त रहता है? (५) कुमार की भाँति कितनी को भी कलि में अवतरित (जग्न दे) कर, है स्वामी तु वियोग न है।

(६) संसार के ओर हुआ अने ही जितने चाहें उतने हों (७) किन्तु, हे बिबत्ता जो दो परस्पर अनुरक्त हों उनकी तु वियोग न है।”

टिप्पणी—(१) बरबस < बस + बस। (२) बिकरार < बेकरार [१] = बेचत आता।

(४) (७) रात < रक्त = अनुरक्त। (७) बिछोउ < बिच्छीय [३] = बिरह, वियोग।

[२४६]

कुनि१ बर नारि न्य गुन भरी२ । अंजित नया बहू३ अनुसरी४ ।
 बहसि कुंवर अय जतु गियाना१ । अंजित नया बहू३ कन३ काना१ ।
 बिक्रम राइ१ महारम बानी । बोस सहम दस तहि क३ आनी ।

तहि धर धिय तिरमुवन अजोरी^१ । रजि ममि रूप न^२ पावहि^३ जोरी^४ ।
 मोरे जोर^१ बुद्धि सो^२ नाहीं । लूदहि^३ कुवर रूप परिछाही ।
 रूप सोहागिनि उदधि जिमि^१ अत न मूमहि^२ जाहि ।
 जोमि बाधु कर^१ बापुरी^२ किमि^३ करि सतर^४ ताहि ॥

- पाठाभार—(१) १ रा ए पुनि। २ ए भारी। ३ रा बहन। ४ ए अनुसारी।
 (२) १ ए तै येनु ग्याना। २ ए मुन।
 (३) १ ए राय। २ भा तिन्ह कै ए तापी।
 (४) १ ए बी त्रिभुवन मनिजारी। २ ए म यह मय नही है। ३ रा ए
 पावै। ४ ए उग्यारी।
 (५) १ भा मारे त्रियहि। २ ए ठी। ३ ए नुई।
 (६) १ ए जो। २ ए मूमै।
 (७) १ ए बाधु कर रा नाहि कै। २ रा में यह मय नही है। ३ ए कैडें।
 ४ भा सन रै।

अर्थ—(१) इसके अनंतर बहु थोड़ भारी (देवा) जो रूप-गुण से भरी हुई थी अमृत-रूपा
 (बहु रूपा जो मृत प्राय कुमार को जीवित कर सकती थी) बहने को हुई। (२) उसने कहा “ऐ
 कुमार, तु अथ ग्यान केत मैं [बहु] अमृत-रूपा कह रही हूँ और उसे तू कान लगा कर सुन।
 (३) त्रिभुवन महाराज स्वान के हैं और इस सहस्र कोस तक उनकी आज्ञा [बल्लमी] है। (४)
 जहाँ के घर में त्रिभुवन का प्रकाश बहु बुद्धि है, जिसके रूप (सीमर्य) की समनुस्मृता सुनं तथा
 धंधमा भी नहीं जाते हैं। (५) मेरे बी में बहु बुद्धि नहीं है जो ऐ कुमार उसके रूप की प्रतिबिम्बता
 को लूँ (कुचल) लके।

(६) उस मुहायिनी का रूप (सीमर्य) समुद्र के समान है जिसका अंत नहीं सूझता है।
 (७) मेरी जिह्वा बेचारी बिना हाथों की कैसे उसका संतरण कर सकती है?”

टिप्पणी—(३) बान < स्थान। (४) धिय < धीमा < बुद्धि। (७) बाज < बज्र <
 बज्र = बिना। बापुरी < बप्पुरी [रि] = बेचारी अनुकंपनीय।

[२४७]

अउरि बात मो सुनइ^१ सोहाई । माहि मयुमालति बहिनि सगाई ।
 पहिया मता^१ कोर^२ न बारी । मोहिओहि^३ मा^४ तहिया^५ न बिन्दारो ।
 एक दवग तहि क^१ महतारी । ठाढ़ी मिहें कोर मह^२ बारी ।
 भीरउ मय मगो दस^१ गरी । मता दिस्टि ग ओन्ह पर^२ परी ।
 जनों बीम एक एसिमि^१ ठाढ़ी । दमि जननि जिय^२ मवा बाढ़ी ।
 तिहमह^१ एक रूप गुम भागरि परगट भागि^२ गियार ।
 तहि बनिया एक बग्या^१ भाछरि^२ बें^३ भीनार ॥

पाठान्तर—(१) १ भा ए और सुनहु (सुनी—ए) रस बात।

(२) १ रा जहिमा माँव ए तहिमा माता। २ ए कोय। ३ भा मोहि, ए मोहि। ४ भा सों ए मे यह छण नहीं है। ५ ए तहिरे।

(३) १ भा वायन ए ताकी। २ भा ठाडी तिये कार मैं ए बाकि सीगु कोय कै।

(४) १ भा ए औरत (औ—ए) धंग सखी दस। २ रा माँवा बिस्टि मैं मोन्ह पर, भा मत्ता बिस्टि मैं मारें (?) ए माँवा डीठि जो उन्हु पर।

(५) १ भा बेबेम्हि ए बेबा। २ रा माँवा उर।

(६) १ ए तामो। २ ए माय।

(७) १ रा तेहि कम्पा एक कोरै, ए ठकरे पर एक कम्पा। २ ए अच्छरी। ३ रा ए के।

अर्थ—“(१) और भी यह सुहावनी बातें सुनो; मधुमाखरी और गुन में बहुताया है। (२) जब कि मैं माता की गोद में बालिका थी मेरी और उसकी यह पहचान सब की है। (३) एक दिन उसकी माता मोह में [उस] बालिका को लिप्ट हुए लड़ी थी। (४) उसके साथ मैं और भी दस सहेलियाँ लड़ी थीं। मेरी माता की बुद्धि जाकर उन पर पड़ी। (५) बीस-एक तियों को उन्होंने लड़ी देखा और मेरी अगली के मन में (उनके अपरिचित होने के कारण) संका बड़ी। (६) उन में से एक रूप और गुन में लड़ी-लड़ी थी और उसके लगान में भाव्य [का तिल] प्रकट था; (७) उसकी गोदी में एक कम्पा थी, जो मयरा की अवतार थी।”

(१) उन में से एक रूप और गुन में लड़ी-लड़ी थी और उसके लगान में भाव्य [का तिल] प्रकट था; (७) उसकी गोदी में एक कम्पा थी, जो मयरा की अवतार थी।”

टिप्पणी—(१) माय < बत्ता < बार्ता। तमाई < स्वक + त्व = आत्मीयता। (३) कोर < मोह = मोह। (७) माछरी < अच्छरी < मयरात्।

[२४८]

झाड़स कै माँव। जोहरया। उन कुनि^१ निहुरि^२ सोस भूईं सवा^३।
 बहुरि जननि विमसी ओषारी। आगहु उत्तरि हठ बर मारी।
 अति सकोष बिछु^४ कह न पारौ। उत्तरहु हठ सब किछु^५ सारौ।
 जो दसेम्हि^६ मम जननि सुमाऊ। उत्तर कह^७ ओषारम्हि^८ पाऊ।
 उत्तरि^९ हठ भटिन्हि^{१०} अंकवारी। बहिनि बचा^{११} आपुम मह^{१२} सारौ।

दह चतुरमम सोरो^१ चीर बहुरि^२ पहिराह^३।

मंगल बार मयरा भा भरधर बाज^४ सबर^५ बयाह^६ ॥

पाठान्तर—(१) १ ह माँ। २ रा भा पुनि निहुरि, ए, जो बहुरि। ३ भा ए बरताया।

(४) १ ए ओ। २ ए जो सेवा।

(५) १ रा जो सेन, ए ओ सेवा। २ ए उत्तरन के। ३ भा ओषारेदि, ए ओषाए।

- (५) १ रा उतरीं या उतरी। २ ए कीन्हा रा भेटिनि। ३ मा बहिनि बाब ए बहिनी बाबा। ४ ए मापु में।
 (६) १ मा कीरें ए कीरिई। २ मा पहिरि, ए धरि।
 (७) १ रा में यह गद्य नहीं है। २ ए यद्य। ३ मा मुझा ए छाहा।

अर्थ—“(१) बाइस कर [मेरी] माता ने उन्हें बुझार (नमस्कार) किया तो उन्होंने भी झुककर अपना तिर धूम से लगाया। (२) तब [मेरी] जननी ने उनसे बिनयी की है धष्ट नारी, नीचे उतर जाओ। अति संकीर्ण के कारण मैं कुछ बह नहीं सक रही हूँ नीचे उतरो तो कुछ सेवा करें।” (४) जो उन्होंने मेरी जननी का स्वभाव देखा तो उतरने के लिए उन्होंने पांव रखता। (५) नीचे उतरकर उन्होंने अँधकार भटी और [दोनों ने] आपस में बहिनाने का वचन किया।

(६) [मेरी जननी ने] उनके शरीर में जलुरतम की और लपाई और तदनंतर उन्हें और पहिनाया। (७) नगर में घर-घर में भंगलाचार हुआ और कबाई का गद्य बने।

टिप्पणी—(२) डेट < डेट [रे] = नीचे। (५) बबकारी < बबगामी = आदिगन।
 (६) गोर < गउर < गपुर। (७) बजा < बजबाज < बर्बापन = बग्यदम-मूषक बाप।

[२४९]

पनि^१ उन्ह जननि पूछि अमि बाता । बहिनि मत^२ बज मपन^३ बिभाता ।
 राज लछन मम^४ लो^५ ताग । अचिन्नु^६ दनि जिउ भरमठ मोरा ।
 नाउ बहनु^७ ओ ठाउ^८ ब्यानी । ओ बहनु कौन राज घर गनी ।
 गन गद्य क दउ^९ अपछरा । कर मिष्टि^{१०} तुम्ह^{११} मानुम करा ।
 ओ गुन यह^{१२} पुनि^{१३} बहनु^{१४} बुझाई । अहि गुन आवहु जाहु उडाई ।
 अब ओ आइ तुम्ह^{१५} हम^{१६} मउ^{१७} पम बिन्हारी कीत ।
 जनम ओर निरबाहो^{१८} कापिनि पम पिरोन ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा. पनि उन्ह उठि पूछी अमि ॥ पनि उन्ह उगने पूछी। २ मा बहिनि नरन ए बहिनी वन। ३ मा सत।
 (२) १ रा मा लछन मम ए लछन जे। २ मा देवउ ए देगी। ३ रा अचिन्नु ॥ अनिच्छ। ४ ए अर्थ मम।
 (३) १ ए नाब बज म डीब।
 (४) १ मा देवी मन मपन ए देहि मन मपन जे। २ ए बीमे। ३ मा मिष्टि। ४ ए मा।
 (५) १ ए ओ यह पुनि। २ ए में यह गद्य नहीं है। ३ ए बहो।
 (६) १ ए तोहि। २ ए में यह गद्य नहीं है। ३ ए नो।
 (७) १ ए अम अम निरबाहो रा अम अब ओर बिधा परन (?) ।

अर्थ—“(१) फिर उससे [मेरी] जगनी ने इस प्रकार की बातें सुनी हैं वहिन सत्य कहो, तुम्हें विवाहा की प्रपथ है। (२) मैं तुम्हारे सभी लक्षण राजा के देखती हूँ और यह आश्चर्य देख कर मेरा जी चकरा गया है। (३) तुम नाम कहो और स्थान बर्णन करके कहो और कहो कि किस राजा के घर की तुम रानी हो (४) तुम गणधर्म-गण या देवता धनवा अप्सरा हो अपवा तुम सृष्टि में समुप्य की कथा हो (५) और फिर यह (बह) पुन बताओ जिस गुण से उड़कर तुम आती-जाती हो।

(६) धन जो आकर तुमने मुझसे प्रेम-परिचय किया, (७) तो हे कामिनी मैं इस प्रेम-श्रीति का निर्वाह जन्म (जीवन) के अंत तक करूँगी।”

टिप्पणी—(१) बात < वक्ता < वार्ता। मपठ < सपथ। (२) कछन < लक्षण। अचिनु < आश्चर्य। (३) ठाठ < स्थान। (४) गंधप < गणधर्म। कप < कथा।

[२५०]

फुनि^१ घर कामिनि बात उचारी^२ । सुरस बचन रस रस अनुसारी ।
कहेसि^३ महारस नगर हमारा^४ । राजा विक्रम राह^५ मुभारा^६ ।
गंधप राजन्ह मह^७ बड़ राऊ । करम तब अति बल बोवाऊ ।
मैं तहि धरनि^८ रूपमजरी । भाग^९ सोहाग रूप गुन भरी ।
सतति हह जो^{१०} दगसि कोरे^{११} । आइत फल^{१२} यह^{१३} बन्वा मोरे^{१४} ।

जब^{१५} जो तुम्ह सच उपजी^{१६} प्रीति^{१७} बिम्हारी मोहि^{१८} ।
आए दूहजि^{१९} सतत^{२०} मैं मिलि जाइसि^{२१} तोहि^{२२} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ भा ए रसारी (बेसिए अबसे चरण का 'मुरल बचन')।

(२) १ रा कहेनि। २ ए आह (<आहि कारखी किति)

(३) १ रा गंधप राजन मह भा वन गंधप रमम्ह।

(४) १ भा चरहि ए चरनी। २ ए मानु।

(५) १ ए मैं मह पय्य गही है। २ ए कोरे। ३ भा ए फर। ४ ए एक।
५ ए मोरे।

(६) १ भा मापु। ७ ए उत्पति। ३ ए वम। ४ ए मोहि।

(७) १ ए दुहजि के। २ ए गतिनि। ३ भा ए जाई। ४ ए मोहि।

अर्थ—“(१) तबन्तर उस खेष्ट कामिनी ने बात उच्चारित की और रतीले बचन बोरे-बोरे कहने लगी। (२) उसने कहा 'हमारा नगर महारास है [जिसके] राजा विक्रमाव भूपाल हैं। (३) ये गंधर्व राजाओं में बड़े राजा हैं और उनके कर्म (भाग्य) तेज बल और शीघ्र भावपिण्ड हैं। (४) मैं उन्हीं की सुहिनी कर्मजरी हूँ और भाग्य सोहाग, रूप तथा गुण से भरी हूँ। (५) संतान प्रभाव यही है जिसकी तुम पीढ़ में देख रही हो; यही वन्या मेरी मापु (जब तक की अवस्था) का रूप है।

(१) अब जो तुम से मुझे प्रीति-परिचय उत्पन्न हुआ है (७) तो अब मैं द्वितीया के आने पर सर्वत्र भ्रम जाया करूँगी। "

टिप्पणी—(१) उचार < उच्चाड < उड् + चाट् = कोमल। (२) मुबार < भूपाल। (३) तीखा < ध्वजमाय। (४) बरनि < गृहिणी। (५) दुर्हि < द्वितीया। सतत < सतत = निरंतर, सर्वत्र।

[२५१]

अब रुहि बचा^१ और अनुपुराव^२। सदा दुर्हिजि कह^३ हम घर आव।
एक बरिस मह बारह^४ बारी^५। हमरें घर आव बर नारी^६।
ओ^१ मधुमासति राजकुबारी^२। सतत आठ सय^३ महतारी।
कुंवर जाहू जो बित बिसराऊ। हम घर जाहू^४ एहु हम नाऊ।
भाई बहिनि पिता महतारी। करिहहि भगति^५ अनग तुम्हारी।
मोर कूसर^६ जो पहहि^७ ओ सुनिहहि^८ कुन तोर।
मेरइ निहहि^९ मधुमासति बचन जानु^{१०} निजु मोर॥

पाठान्तर—(१) १ ए अब लवि बाचा मोर। २ रा निबचरी ए पचरी (< पुचय फारसी लिपि)। ३ ए के।

(२) १ ए हम बारह। २ भा बारी ए पारी। ३ रा आव अननि साव बह बारी।

(३) १ ए मैं। २ रा ए कुमारी। ३ भा संग।

(४) १ ए जाहि। २ ए गुह।

(५) १ ए करिहं भगि।

(६) १ रा ए और कुसर भा हम कसर। २ ए वीह। ३ ए मुनिहं।

(७) १ ग मेरइ निहहि ए बिहै मेरे। २ ए मुनु।

अर्थ—“(१) वह अब तक उत बचन की अनुकूलि करती है और सर्वत्र द्वितीया को हमारे घर आती है। (२) एक वर्ष में बारह बार वह भ्रष्ट नारी हमारे घर आती है (३) और राजकुमारी मधुमासती सब माता के संग आती है। (४) है कुमार, यदि तुम बिल-विषाख [मगर] को जानो तो हमारे घर बर जाबर मेरा नाम लो। (५) [मेरे] भाई बहिनि पिता और माता तुम्हारी बड़ी भक्ति करते।

(६) मैं [तुम्हें] मेरा कुशल-समाचार पावने और तुम्हारा कुन तुमने (७) तो मैं मधुमासती को तुम्हें जिला देंगे मेरा यह बचन निश्चित मानो।”

टिप्पणी—(२) बारी < बेसा = अचर। (३) गज < गज = निरंतर। (४) विमरा < विषाख। (५) कुगर < कुगज।

ओ जति^१ सखीं सहलीं भोरीं^२ । सम चित^३ सुनि लागिहि^४ तोरीं^५ ।
 ओ जेत^१ कटुख लोग परिवार । करिह सम तोर^२ उपगार^३ ।
 ओ तुम्ह उन्ह सठ^४ पहिलि पिरोती । प्रथम जो बचा सपत भ^५ बीती ।
 जस तोहि बिछ दुखस जिय भोरा^१ । ओहि फुनि^२ होइहि दुखस सरीरा ।
 कान कान कोइ जानि न^३ पाइहि । पम गहन^४ सहजहि^५ मिलि जाइहि ।

तुम्ह उन्ह प्रीति बिपनी^१ इह मोर^२ उपदेस ।

मिलिहि सो^३ पम परानी^४ जाहु हमारे दस ॥

पाठान्तर—भा ए में बीबी तथा पाँचबी अर्द्धाभियां परस्पर स्वानांतरित हैं।

(१) १ ए बति। २ ए मोरी। ३ भा जेत ए चित। ४ भा कणिहिहि ए लागिहि। ५ ए मोरी।

(२) १ ए बत। २ भा कछहि सम मिलि तुम्ह ए बखी सब तोर। ३ ए उपकार।

(३) १ रा ओ उन्ह सा तुम्ह पहिलि प्रीती ए बी तो सी जो पहिली प्रीती। २ ए प्रथमहि बाचा। ३ रा सपत हाइ, ए होइ जे।

(४) १ ए पीरा। २ रा ए पुनि।

(५) १ ए जान। २ भा बखी ए गहा। ३ ए सहजे।

(६) १ रा तुम्ह ओहि प्रीति बिपारी भा तुम्ह उन्ह प्रीति बिपनी ए तोहि ओहि वेस बिपारी। २ भा यह मोर ती।

(७) १ ए मिलिहै। २ रा पियारी।

अर्थ—(१) और मेरी जितनी सखियाँ-सहेलियाँ हैं सभी मेरा कुशल और तुम्हारा सुख सुनकर तुम्हारी (तुम्हारे सुख-जिवारण को) चिता में लग जाएगी (२) और जितने मेरे कटु बी लोग (स्वजन) तथा परिवार के हैं वे सभी तुम्हारा उपकार करेंगे (३) और जो तुम से और उन (मधुमालती) से पूर्व की प्रीति है और तुम दोनों में जो पहले प्रथम और बचन-बद्धता हो चुकी है (४) [उसके परिचय-स्वयय] है आई, बीसा तुम्हारे को में बिछ-पुन है उसके प्रतीक में भी तो होगा हो (५) [अन] एक काम से दूसरे काम कोई जान भी न बाएया और तुम्हारा गुह प्रेम (प्रेमी) सहज ही तुमको मिल जाएगा।

(६) तुम्हारी और उसकी प्रीति प्राचीन है [अतः] मेरा यही उपदेश है (७) कि तुम मेरे देता जाओ वह प्रेम-प्राणी मिल जावेगा।”

टिप्पणी—(१) जति < जेतित < यावत् = जितनी। (३) सपत < सप्त। (५) बिरानी < बिराज्य < बिराज = पुरातन प्राचीन।

पम नया अंजित रम भरा । जबही^१ कृपण ने जानन्ह^२ परी ।
 जोड^३ रहड^४ सुनि प्रीतम^५ जाता । पीत^६ बरम गुनन^७ भा गाता^८ ।

मुसल मलिन जो अहूत^१ निरासा । मुनतहि^२ कबल भाति परगासा ।
समुझि समुझि जिय^३ मह^४ रहसाई । रहम गहा^५ जित^६ घट न समाई ।
बिरह^७ दुख दुखी^८ जो अहा । प्रीतम नाउ^९ मुनत गहगहा ।
कवल बमुद जिमि^{१०} बिगमहि^{११} रबि मसि क परगाम ।
तिमिसुनि अजित कया^{१२} कुबरजिम^{१३} पूरा^{१४} पम हुलाम ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जबरे। २ रा बालन।

(२) १ मा जीय ए जोब। २ ए बहा। ३ रा वेम की। ४ रा सेत।
५ ए मुनत। ६ रागा।

(३) १ ए दुख मबुमालनी है। २ ए मुनते।

(४) १ ए जीब। २ ए में यह गद्य नहीं है। ३ रा रहा जिब।

(५) १ रा बिरह के दुख दुखी ए बिरहे दुख दुखिआ। ३ ए नाब।

(६) १ ए जे। २ रा बिगरी ए बिगमै।

(७) १ ए में यह गद्य नहीं है। २ ए जित रा बह। ३ रा पूरेउ।

अर्थ—(१) अमृत-रस से भरी हुई [यह] प्रेम-क्या अब कुमार के कानों में बड़ी (२) [निबलता हुआ] जीब प्रियतम की कानों सुनकर यह क्या और उसका घरीर उसे मुनते ही पीत कर्ष का हो गया। (३) उसका निरास मुख जो मलिन था मुनते ही कमल की भाँति प्रकाशित हो गया। (४) वह लमलम-समलम कर मन में हविष्य होने लगा और हृष से आविष्ट उसका जीब घट में नहीं समा रहा था। (५) जो [जीब] बिरह-दुःख से दुखी था वह प्रियतम का नाम मुनते ही यह गद्य (हर्ष से द्रवित) हो गया।

(६) जिस प्रकार कमल और पुष्प लय और चंद्र के प्रकाश से विरसित होते हैं (७) वसी प्रकार उस अमृत कया की सुनकर कुमार के कानों में प्रेम का प्रस्फात पूरित हो गया।

टिप्पणी—(४) रहम < रमम् = हर्ष। (५) गहगहा [रे] = हर्ष से भर जाना।

[२५४]

जिय हुलाम मन हरण^१ अनहू । कबल बमु^२ जिमि^३ निनियर बहू ।
कहा^४ कुबर मुनु राजनमारी । मोहि सों^५ बहिनि यथा^६ मे मारी ।
सुबचन दिह मोहि प्रतिपारा^७ । अब मोहि बिग तोर उपगारा^८ ।
मे निराम भा जिनु जिय^९ भाबा^{१०} । अमिअ छिरवि तुइ मोहि जिजावा^{११} ।
तो बमों परिहरि म^{१२} जाऊ । जित^{१३} का^{१४} तोहि छा^{१५} पराऊं ।

मोग कटुब तोर यह^{१६} मान्य बरिह^{१७} मार^{१८} ।

होइहि हम^{१९} कुल मजजा बहन मन्मा तार^{२०} ॥

पाठान्तर—भा मे उपर्युक्त दुसरी तथा तीसरी अर्थात् उपर्युक्त चौथी के बाद आती है।

(१) १ ए जिय हरण मन बहू। २ ए मे यह गद्य नहीं है।

- (२) १ भा ए कहे। २ भा तोहि सेठे ए. तो सो। ३ भा बाब (<बाब) ए. बाबा।
 (३) १ भा सो बचन ई तौ मोहि पठिपाय ए. सुबचन कहि तौ मोहि प्रतिपाय।
 २ ए किये तोर उपकार।
 (४) १ भा मैं बरनस बिग बिग भा। २ भा ए. बाबा। ३ ए जमी सीब मैं तोहि जिमाबा।
 (५) १ भा तोहि कैसे परिहरि बन (<पुनि आरसी कियि) ए तोहि कैसे मैं परिहरि। २ ए. जीब सेह। ३ ए जीड़।
 (६) १ भा देखिहुहि, ए तोहार पुनि। २ भा कहिहुहि। ३ ए तोर।
 (७) १ ए मम। २ ए मोर।

अर्थ—(१) [उत्ते] जो मैं उत्साह और मन में हृषीकेश जैसी प्रकार हो गया जिस प्रकार कमल और कुन्द को बिगड़कर तथा चंदमा से होता है। (२) कुमार ने कहा “ये राजकुमारी तुम; तुमसे मैंने [अब] जहिन [के संबंध] की बचनबद्धता की। (३) तुने मुझे झुम बचन देकर [उपकार] प्रतिपादन किया, इसलिए अब मुझे तेरा उपकार करना ही [चिंतित] होगा। (४) मैं निरास हो चुका था, और मेरा भाव (अस्तित्व) बिना जीब का था किन्तु तुने अमृत छिड़क कर मुझे जीवित किया। (५) तो कैसे मैं तुसे छोड़कर जाऊँ? तुने छोड़ कर और अपने जीब (आत्मा) को लेकर मैं क्या जाऊँ?

(६) [अब तेरे घर पर मेरे बहूचने पर] तेरे परिजन और कुटुंबी बीड़ पड़ने और मेरा आहार करने (७) तब तेरा सविन कहते समय मेरे कुल की लज्जा होगी।”

टिप्पणी—(१) हुकास < उरकास। बिनपर < बिनकर = पूर्व। (४) अमिअ < अमृत। (५) पराए < पराए = भाग जाना।

[२५५]

कुंवर बचन सुनत गहमरी^१। मन कबल आए जल भरि^२।
 रोव सोव पुनमि^३ स साव। जित दुख लीन्ह^४ मरन प भाव^५।
 नितसत कहिसि ऊमि ल सांसा। छाइहु कुंवर मारि तुम^६ आसा।
 मोहि लागि जमि^७ नास्तु अपाना। जो सिंग देहुं सोइ वर^८ वाना।
 जा मुग दिण्ड मो आगें लेहु।^९ जमि मोहि लागि अविष^{१०} जित वहु।
 मोहि^{११} जियन जिय^{१२} अपने^{१३} मुकुति न मूमहि^{१४} वाउ।
 तें जमि अविषया^{१५} मोहि^{१६} सगि कुंवर अपान नमाउ^{१७} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा कुंवर बचन सुनत गहमरी भा सुनतहि बचन सुपर गहमरी ए कुंवर बचन सुनत गहमरी। २ ए गहमरी (सुम = पूर्ववर्ती वरज वा तुक)।

(३) १ ए पुनमि। २ भा मिण्ड, ए लाय। ३ ए. म सादा पावै।

(४) १ ए निमग्न बहो ऊमि कै। २ भा तुम, ए जो।

(५) १ ए वै। २ भा अवासां। ३ ए जो मिल होइ लो वर वै।

(६) १ भा वैनि तुम अग्या कै मेहु ए जो मोरे तुम जो आगे मेहु। २ ए जै। ३ ए अविष या विषया ए मे गह साध गरी है।

(९) १ मा म यहाँ 'एक' और है। २ ए जीबत जी। ३ मा आपन ए अपने। ४ ए समुझी।

(७) १ मा बिरयाँ ए मिथ्या। २ ए माहि। ३ रा न भापु।

अर्थ—(१) कुमार के बचनों की सुनती ही येमाँ हर्ष से भर गई और उसके मेत्र-बन्धनों में बस [बिहु] भर आए। (२) वह रोने और हिर को पृथ्वी से लगाने लगी उसके भी ने ऐसा कुछ लिखा (लिखा) कि उसे मरना ही भागे लगा। (३) उसने निश्वास छोड़ते हुए उठकर और साँस लेकर कहा "हे कुमार, तुम मेरी आत्मा छोड़ो। (४) मेरे लिए तुम अपने को नष्ट न करो और जो शिखा दे रही हूँ उसी को सुनो। (५) जो कुछ तुमने दिया वह भागे लो; मेरे लिए व्यर्थ ही तुम जीव (प्राणों को) न दो।

(६) मुझे अपने जीते-जी कभी भी मुक्ति नहीं चुन (जान पड़) रही है। (७) हे कुमार तुम मेरे लिए व्यर्थ ही अपने को नष्ट न करो।"

टिप्पणी—(२) पुहमि < पृथ्वी। भाव < भाव (?) = पसब हाका उचित जान पड़ना। (३) ऊमि < ऊर्मित। (४) (७) अपना < अपनाय < आरमन्। (५) मिछ < मिस्त्र < पिछा। (६) (७) अत्रिब < अत्रिबा < बुपा। (६) बाज < बजापि।

[२५६]

मोरी^१ जिन कृवर जनि^२ लागहु। आपन पहर^३ जाइ तुम्ह^४ जागहु।
मैं तौं महि^५ मुई मोर ताए^६। तुह^७ जमि मरमि^८ कृवर मोहि लाए^९।
तहि^{१०} राखस बस परी सो^{११} मारा^{१२}। बिनु हरि मुकुनि^{१३} दह को पारा^{१४}।
जो मैं सहस कोम चलि जावौ^{१५}। ओ परतो^{१६} मह पठि छिपावौ^{१७}।
पलव^{१८} परन मोहि^{१९} ऊपर आव। मोर तोर^{२०} जग सठ^{२१} पाठ ममाव^{२२}।

एन अपने^{२३} दुग^{२४} दुखिया अहा^{२५} सग जित^{२६} मोर।

दूजें आइ व^{२७} दुग पर दुग मा^{२८} मुनन^{२९} कवर दुग तोर^{३०} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मारी ए मोरे। २ ए जी। ३ ए पहर। ४ मा ए मुग।
(२) १ ए माहि। २ ए ठाह। ३ ए ठी। ४ ए मरहि। ५ रा एहि ठाए,
ए मोरि लाई।
(३) १ ए तोहि। २ ए राखन नौ बारी। ३ रा मारा। ४ न मुकुनी।
(४) १ ए जाऊं। २ मा परनी। ३ ए पैमि ममाऊं।
(५) १ ए पसब। २ ए माहि। ३ ए मारि तोरि। ४ रा मा ए मै।
५ मा आइ उठाई ए न उठाई।
(६) १ मा भापुहि। २ ए पर। ३ मा अहेउ ए अहे। ४ ए मित्र।
(७) १ मा ए मे 'आहूँ' पाठ नहीं है। २ ए पर। ३ रा न दह पद नहीं है। ४ मा कृवर दुग तोर, ए सरेमा तार।

अर्थ—(१) 'हि कुमार' यहाँ मैं कहा "मेरी जिता में तुम न लगी तुम जाकर अपना पहरा
 बायो (अपना नाम पूरा करो)। (२) मैं तो अपने तक (मेरे डील से) मरी हूँ अब तुम भी
 ऐ कुमार, मेरे कारण न मरी। (३) इसी (मरने के) लिए तो वह (वह) बाला रासत के बज
 पड़ी अतः हरि के बिना उसको कौन मुक्ति दे सकता है? (४) यदि मैं सहज कोस तक बसी जाऊँ
 और बरती में प्रविष्ट होकर छिप [भी] जाऊँ; (५) [तो भी] पलक गिरते [पात्र] में वह
 मेरे ऊपर आ जाएगा और मेरा और तुम्हारा नाम जलत् से मिटा दिया।

(६) एक तो अपने ही कुल से मेरा जो संबंध दुखी का (७) दूसरे उस कुल पर आकर और
 भी कुल हो गया जब से हे कुमार, मैंने तुम्हारा कुल सुना है।

टिप्पणी—(१) पहर < प्रहर। (२) बारा < बाला।

[२५७]

रहसि^१ कृबर तब^२ बचन अमोला^३। सुगह जो^४ बरकामिनि सेव^५ बोला^६।
 जो^७ अ पत्र दह^८ निधि मोही^९। राक्स मारि जाठ ल तोही^{१०}।
 जीय^{११} भरम जनि मानहु बारी^{१२}। म रघुबसि^{१३} राक्स सपारी^{१४}।
 गाइ त्रिया जी करी म^{१५} गोहारी। पमा^{१६} कल साबै^{१७} महतारी।
 तोहि परिहरि जो^{१८} जाठ पराई। कल लग्या^{१९} जम^{२०} धोइ न जाई।
 तोहि छाड़ि जो^{२१} भाबौ^{२२} पमा^{२३} राक्स करी^{२४} सब।
 जग^{२५} जीवन अपकीरति कल प^{२६} चढ़ कलक ॥

पाठान्तर—ए में उपर्युक्त तीसरी अर्द्धांकी का दूसरा तथा चौथी का पहला चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ आ नहीं। २ आ ए रह। ३ आ ए अमाले। ४ ए जे।
 ५ रा भा ला ए मीठ। ६ आ ए बोले।

(२) १ ए दैत। २ ए मोही। ३ ए ताही।

(३) १ रा ए जीठ। २ ए जी। ३ भा रा बारा। ४ ए रघुबनी
 ५ आ रा सपारा ए लैबारी।

(४) १ रा बा कर न ए मैं कलवि। २ ए लाजी।

(५) १ भा बर। २ भा कारिर। ३ रा हम ए यम।

(६) १ रा भागी। २ ए यहि राक्स की भा 'राग' गाव।

(७) १ भा पुन पुनि ए कुन्दि जी।

अर्थ—(१) कुमार मैं हबित होकर तब जो अनृत्य बचन दत्त धेय कामिनी से कहा उसी मुने।
 (२) [उसने कहा] "यदि विद्याया मुझे जय-यज्ञ है तो राक्स को मार कर मैं मुने के जाऊँ।
 (३) ऐ बातिया तु अपने जी में भ्रम (भय) न माने मैं रघुबंजी और रासलों का संहार करने
 वाला हूँ। (४) माय और रंगी की मोहार (रक्षा) यदि मैं न बर्बा तो हे पमा मेरी माता का
 कुल लज्जन होगा। (५) यदि तुझे छोड़कर मैं भाग जाऊँ, तो कुल की लज्जा नाम भर में भी न
 कोई आएगी।

(६) यदि राक्षस की छाँक से मैं तुझे छोड़कर भाग जाऊँ, (७) तो जगत् में अपकीर्ति का जीवन [होगा], और [मेरे] कुल पर अवश्य ही कलंक चढ़ेगा।”

टिप्पणी—(६) डारी < बालिका। (७) पराय < पराय = भाग जाना।

[२५८]

राक्षस डर का मोहि डरावसि^१। अग्नि भरमना छार उड़ावसि^२।
राक्षस डर पार का मोरा। सहज कीट मर^३ दलि भजोरा।
राक्षस प्रात दखु कस हरळ। एक निमित्त मह कम सपरळ^४।
खरग पामि सुत^५ आगि^६ उठावो। राक्षस धूरि वताम^७ उड़ावो।
आइ बने लखी^८ जो भाज^९। कुल कलक चढ़^{१०} जननी लाज^{११}।
सत छाड़ें सुनु^{१२} पर्मा यहि कलि अमर^{१३} न कोइ।
तोहि छाड़ि जो भाजो^{१४} कुल^{१५} सज्या हम^{१६} होइ ॥

पाठान्तर—ए. में उपर्युक्त छीखरी तथा चौथी अर्द्धश्लोका परस्पर स्वार्थान्तरित हैं।

- (१) १ भा मुनावसि ए डेरावहु। २ भा बनि। ३ भा डरावसि ए उड़ावहु।
- (२) १ भा मर ए मर।
- (३) १ भा का निछु करळ।
- (४) १ रा. पार मो ए पामि सी। २ रा अग्नि। ३ रा स्पष्ट नहीं है।
- (५) १ रा ए छत्री। २ ए भाजो। ३ ए हा। ४ ए लाजो।
- (६) १ ए छाड़ सुनु। २ ए अमर।
- (७) १ रा. भा जूसो ववन। २ भा ए म य राख नहीं है। ३ भा लाज मोर, ए सज्या मम।

अर्थ—“(१) राक्षस के डर से मुझे क्या डरानी है? तु अग्नि के भ्रम से [यह] क्षार (राख) क्या उड़ा रही है? (२) राक्षस मेरा क्या डर सजता है? वह तो सहज कोड़ा है, जो उजाला देल कर कर मिटता है। (३) तु देख कि राक्षस का प्राय मैं जिस प्रकार हर लेता हूँ और एक पल में जिस प्रकार उसका संहार करता हूँ। (४) मैं लक्षण के पानी (बार) से आग उड़ता हूँ राक्षस को तो धूम और बाप से ही उड़ता (उड़ा सजता) हूँ। (५) [अमर] या बनने पर यदि सत्रिय भाषता है तो [उसके] कुल को कलंक चढ़ता है और वह [अपनी] जननी को लजित करता है।

(६) लय को छोड़ कर हे प्रेमा इत कति मैं अमर कोई (कुछ) नहीं है (७) तुझे छोड़कर यदि मैं भाषता हूँ तो मेरे कुल को लज्जा होगी है।”

टिप्पणी—(१) छार < छार = राख। (५) लखी < लखिय।

[२५९]

सुद^१ जो लेहि^२ मधुमालति नाऊ । तोहि^३ परिहरि^४ बसें फनि^५ प्राऊं ।
 मधुमालति बर^१ पेस सभागी । ना^२ निछु^३ करोँ दखु बर नारी ।
 घर कामिनि पीतम^१ बीसाऊ । सो निछु^३ करोँ जो कीन्ह^२ न काऊ ।
 एक घाय^१ धरि^२ मेरवों^३ मटी । टूक टूक ब^४ डारौ काटी ।
 दहिर दखु कसि नदी बहावो ।^१ मांसु गिद्ध अबुक^२ अघवावो^३ ।

जो मोहि^१ राकस सेलें^२ बिधि^३ अ दह बधाउ ।

नत^१ मधुमालति नाउं स्ते^२ यह बिउ रहे कि^३ जाउ ॥

पाठान्त—(१) १ ए लै। २ भा सेउ ए मिय। ३ ए तोहि। ४ ए कैसे बन रा भा कैसे पुनि।

(२) १ रा का। २ रा बस। ३ ए कछ।

(३) १ भा पिरिति ए प्रीतम। २ भा बसे जो काहु निरु ए करोँ सो जो किया।

(४) १ रा घाय ए दाँव। २ ए पै। ३ ए मेरवों।

(५) १ ए म बरन का पाठ है मटी दहिर दखु पै मेरवों। २ ए अबुक (हि) पिबावों।

(६) १ भा ए बिधि। २ ए सती। ३ भा ए मोहि।

(७) १ रा जो ए नाही। २ भा नाउं लगि ए नाव लवि। ३ भा गए उठ।

सर्व—“(१) तु जो मधुमालती का नाम लेती है तो फिर मैं कैसे तुसे छोड़ कर जाऊँ? (२) मधुमालती के प्रेम को स्मरण कर मैं क्या-कुछ करता हूँ उसे ऐ बंधन नारी पूरेन। (३) ऐ बंधन कामिनी [अपने] प्रियतम के बल पर वह-कुछ कहेगा जो कभी नहीं किया है। (४) [देख कि] एक आघात में मैं उसे मिट्टी में बिना देता हूँ और उसे काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देता हूँ। (५) देख कि कैसे बहिर की नदी बहाता हूँ और [जलक] घास से नीचों और त्पारों को मृत्प करता हूँ।

(६) यदि मुझे राक्षस से (बर) बिधाता जय देता है तो अपावा [होगा]; (७) नहीं तो मधुमालती का नाम लेकर यह जीव जाहे रहे जाहे जावे।”

टिप्पणी—(१) पीतम < प्रियतम। बीसाउ < ध्यवसाय। (२) नाउ < बधाति। (४) घाय < घात। (५) दहिर < दहिर।

[२६०]

जो र कुंवर बड़ बोल^१ मुनावा । पमा जिय^२ सुनि धीरज पावा ।
 रम बाननि^३ गण^४ दुखी मुलाई । गनग बर नियनि भन^५ आई ।

पेमा कह सुनू^१ राज कुमार^२ । सजग होहु भइ^३ रामस बारा ।
मुनसहि^४ बनिन भा^५ चित^६ माहा^७ । अत्र^८ नाहि रिपु मारव^९ बाहीं ।
पम कहा न भग्महु राज । अत्र दब म बर भीमाऊ ।
सुनत माउ अत्र^१ बर^२ कुबरि सउ^३ कुवर भएउ हरतत^४ ।
पूछेसि^५ अत्र^६ कहा तुम्ह^७ पाए^८ सा मोसउ^९ कहू^{१०} अत^{११} ॥

पाठ्यतर—उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्द्धांशिकाएँ रा में परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए बर बोकि । २ रा ए बिउ भा भिय ।
- (२) १ भा बानहि, ए बानहु । २ ए पो । ३ भा भएउ ए भा ।
- (३) १ ए पर्य कहा सुन । २ भा कुबाय । ३ ए भा ।
- (४) १ ए मुनते । २ भा बरित भएउ । ३ ए निज । ४ ए अंज ।
५ भा ए जीतव ।
- (५) १ ए अंज नाम । २ रा ए मे यह पाठ नहीं है । ३ भा में ये दो पाठ
नहीं हैं ए में ये दो पाठ 'क बर' के बाद आते हैं । ४ भा ह्यवत रा
का पाठ स्पष्ट नहीं है ।
- (६) १ रा पूछे । २ ए अंज । ३ ए तै । ४ भा पाठव । ५ रा मो मो
मो कहू भा मामाहि कहू निज ए माहि कहू निज । ६ रा अंज ।

अर्थ—(१) जब कुमार ने [इस प्रकार] बड़ा (साहित्यपूर्ण) बचन सुनाया, प्रेमा ने जो
ने उसे सुनकर धीरे प्राप्त किया । (३) दोनों रत्न की बातों में भूल गए और रासत [से आने] की बेला
निवट आ गई । (३) प्रेमा ने कहा "हे राजकुमार तुम (अब) सजग हो जाओ [यदि
कि] रासत (से आने) की बेला हो गई है । (४) [यह] सुनते ही [कुमार] चित में बहरा
गया, [और उत्तरे कहा] "अरब है नहीं शत्रु की चित्तों बाँधेपा ?" (५) प्रेमा ने कहा "हे
राजा (राजकुमार) तुम बकराओ मत; अरब मैं दूँगी तुम पुत्रपार्थ करो ।"

(६) कुमारी से अत्र का नाम (पद) सुनकर कुमार हर्षित हो गया (७) और उत्तरे
बुछा, 'तुमने अत्र कहा पाए? वह अंत (वृत्तान्त) तुम मुझसे कहो ।"

टिप्पणी—(२) बर < बेला । (३) बार < बेला । (४) अत्र < अन्त्र ।

[२६१]

अत्र क^१ बान कहाँ प तोही^२ । जो तुम्ह^३ निज पूछा^४ ह मोही^५ ।
अन मानुम इन^६ राकम गाण । तिम्ह^७ क^८ अत्र पर म^९ पाण ।
अब कुबर^{१०} आगे सब मान^{११} । सीह^{१२} जो रिख बवरहि^{१३} मन मान ।
गोठ भन ओ बंत कनारी^{१४} । कुबर^{१५} सीम्ह^{१६} सब अत्र^{१७} मभारा^{१८} ।
मिभरम जोउ बिरह^{१९} बर^{२०} मूता । तहि पर^{२१} गाग्य भम अबपूना ।
बाल रूप अम रोमहि^{२२} बिरह^{२३} भमूनि कमार^{२४} ।
राकम बपुग कहि^{२५} म^{२६} म^{२७} नी^{२८} त्रिमवन मारि^{२९} ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए मंत्र की। २ ए तोही। ३ रा तुम ए ठी। ४ ए पूछेति।
 ५ ए मे यह सम्म नहीं है।
 (२) १ ए जते मानुस येइ। २ ए ठाके। ३ ए यह।
 (३) १ ए मन कुंजरि। २ रा के जाने जाने। ३ भा लिए ए सेह।
 ४ ए कुंजर जो कसु। ५ रा भाए।
 (४) १ भा ए एहि मंतर काँ मी (जो मी मुइ—ए) भारी। २ रा में यह
 सम्म नहीं है। ३ भा केत। ४ ए जो मन।
 (५) १ भा निमरम होइ पिरम ए निर्मम जीव मर्म। २ ए का। ३ ए
 सापर।
 (६) १ ए भै देखि। २ भा बहुत कुंवार, ए बिभूत कुमार।
 (७) १ भा यह बैराम। २ ए मो। ३ भा त। ४ ए मार।

अर्थ—(१) अरु की बात में तुमसे बहती हूँ जो तुमने मुझसे आश्चर्यक रूप से पूछी है।
 (२) जितने मनुष्य इस राजस ने जाए, उनके अरु पड़े हुए मैंने पाए।” (३) [यह कहकर]
 उसने वे समस्त अरु कुमार के सामने प्रस्तुत किए, और कुमार ने उनमें से जो-कुछ को अच्छे से लिए।
 (४) कुमार ने कह्य थाके वहाँ और कदार [माहि] समस्त अरुओं को लैवाल लिया। (५)
 उस बिहू के मूल का जीव निर्मम (निर्मम) बाही तिस पर भी अच्युत गोरस का देव [उसने
 कर रक्खा था]।

(६) बिहू की विभूति में (लयाए हुए) कुमार काल-बैसा बिचाई पड़ता था; (७) राजस
 बैचारा [मत्तः] छिछ [गिनतो] में बा? तब (इस समय) यह विभूवन की मार सफ़ा था।

टिप्पणी—(१) अरु < अरु। (२) सेठ < देखि < यावत् = वितना। (४) काँडा <
 लड़न। मन < मरस = मार। (६) ममूति < विभूति = राज। (७) बपुरा < बप्पुड [रे] =
 बैचारा अनुपपत्तीय।

[२६२]

सहुरि कुंजर बहु दिसि जो^१ बसा । दल^२ दलिन दिसि राजस^३ रेखा^४ ।
 सरग धरति बिच आठ^५ उड़ाना । आइ मदिल ऊपर^६ ठहराना^७ ।
 रूप मयानव^८ बिपरित भाऊ । सरग मांभ^९ धरती दुइ पाऊ ।
 सावन घटा ओम जम^{१०} आवा । तस राजस मूरति दसरथा^{११} ।
 पाँच मांय दम भुख^{१२} बर भार^{१३} । दसो मन चमकहि^{१४} जनु सारे ।

दमन पांति जनु कोहड़ा^{१५} जारि धरा^{१६} बगाइ ।

बिरसुम^{१७} बरन^{१८} मयावन दमत जीठ^{१९} डेराइ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा फिर बहुत दिसि ए जहाँ दिस जो। २ ए देखा दलिन दिस।
 ३ भा गया।

(२) १ ए जाव। २ भा. रा मदिर। ३ ए बहुरा (< ठहराना आगमि
 लिपि) ।

- (३) १ मा भवान्न रूपं बहु ए भवान्न विप्रितः । २ रा मीम ।
 (४) १ ए वमै जनु । २ ए दनावा ।
 (५) १ ए भुव । २ रा ए वरियारे । ३ ए चमके ।
 (६) १ मा जल कम्हड़ । २ मा पर ।
 (७) १ ए वरिमा । २ मा मे यहाँ 'जनि' और है । ३ ए जीव ।

अर्थ—(१) फिर जो कुमार मे इसी विद्याओं में [धूम कर] देखा, तो उसमे बसित विद्या में राक्षस की देखा देको । (२) वह स्वर्ण (आकाश) और भरती कि बीच मे उड़ता आ रहा था और वह आकर उस मविर (भवन) के ऊपर ठहर गया । (३) उसका रूप भवान्न वा और उसका नाव (आकार-मकार) [जगुप्य से] विपरीत था आकाश में उसके मस्तक के और धरती पर उसके दोनों पैर थे । (४) आकाश की धडा जिस प्रकार उन्नमित हो आई हो उसी प्रकार राक्षस ने अपनी मूर्ति दिखाई । (५) उसके बीच मस्तक के वस बलशाली भुजाएँ थी और उसके हस्तों में एते थे जते तारे चमकते हों ।

- (६) उसकी दंत-यमित एती थी मानो [सफर] कुम्हड़े के कस जोड़-बिठा कर रख पए हों ।
 (७) वह वृष्ण-वच का और भवान्न वा और उसको देखते ही की डर जाता था ।

टिप्पणी—(२) सख < स्वर्ण = आकाश । (५) भुव < भुव । (७) किरमुन < वृष्ण । वरन < वच ।

[२६३]

दग्नि कुम्हड़ कहं मागें^१ खरा । कोह मगिनि^२ मिर पालहि^३ जरा ।
 कहमि नीन हमि^४ का तोर नाऊ । बाल गहा आएसि एहि^५ ठाऊ ।
 मीचु^६ आइ जानहु सिर चढ़ी । तहि^७ अमाग आएमि एहि^८ मढ़ी ।
 न तें जिय^९ अपन पर म्हा । क र काल आइ^{१०} तो^{११} पर मूसा ।
 क र अत अनुपुरी^{१२} तारि आऊ । जम क मुह आएसु तें पाऊ^{१३} ।

त मानुस भल मोरा ल आण्ड^{१४} बरतार ।

तोनि मीचु^{१५} नियरानी पूजत^{१६} मोर अहार ॥

पाठान्तर—मा मे पत्र छं अमक क बार आना है और उन म उपपुत्र अठारिमा ४ तथा ५ पत्रपर स्थानान्तरित है ।

- (१) १ ए कुम्हड़ के माग । २ ए अग्नि । ३ ए पाल मे ।
 (२) १ ए है । २ ए मायहु हम ।
 (३) १ ए मीच । २ ए तेहि । ३ ए मायेहु हम ।
 (४) १ ए जीव । २ रा मा (<माइ) । ३ ए मे यह पद नहीं है ।
 (५) १ ए आइ । २ रा मुह आएसु तें पाऊ ए मुह की आवेन पाऊ मा ।
 मुह आएसु नर आऊ ।
 (६) १ ए आवा ।
 (७) १ रा मीच ए आइ मा आइ । २ मा ए पूजा ।

अर्थ—(१) [बहु रासत] कुमार को [अपने] आगे बढ़ा देखकर गोमांमि से सिर से पाँव तक जल पड़ा। (२) उसने कहा “तू जीव है और तेरा नाम क्या है तू काल के द्वारा पकड़ा जाकर इस स्थान पर आया है। (३) मृत्यु जानो जाकर तेरे सिर पर चढ़ गयी है यह तेरा अनाप्य है कि तू इस मड़ी में आया है। (४) अथवा तू अपने जीव (प्राणों) पर कटा हुआ है, अथवा काल ने जाकर तेरे घर को मूस लिया है (तेरे घर की चोरी को है) ? (५) अथवा अंतिम रूप से तेरी आयु अनुपूर्व हो गई है और तू यम (काल) के मुख से आवेद्य बंधा रहा है ?

(६) तू, ए मनुष्य मेरा भय है और तुझे कर्तार [यही] लाया है; (७) तेरी मृत्यु निश्चय आ गई है और [तेरे जाने से] मेरे आहार की पूर्ति हो गई है।”

टिप्पणी—(१) मीचु < मृत्यु। (४) कसा < कष्ट। मूस < मुष्ट = चोरी करता। (६) मस < भयम। (७) अहार < आहार।

[२६४]

पमां मदिर^१ बडबत परो । दुइ^२ कर जोरि मनाव हरी ।
 सीस पुहुमि धरि^३ निनब बासा । कुवरहि तुइ^४ अ दहि^५ दयासा ।
 त^६ तिरमुवन कर सुस^७ दाता । कहि जाचो तोहि छाहि^८ बिभाता ।
 आम मोरि जनि लसि^९ अजोरी । कुवरहि सरन बिभाता तोरी ।
 साहम किरित^{१०} अह^{११} भोरि ताई^{१२} । सिधि अब सोरें दिए गोसाई^{१३} ।
 मोल मुकुति तुहि^{१४} दाता तुही निरासन्ह जास^{१५} ।
 समहि सिस्टि^{१६} तोहि जाव^{१७} महि पताल आगास^{१८} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा मदिर। २ भा ए दुई।

(२) १ भा ए पै। २ ए तै। ३ ए देहि।

(३) १ ए मे यह छम्ब नहीं है। २ भा कर मुख मुख ए केर दुख मुख। ३ ए छाहि।

(४) १ ए जासत मारी सीसह।

(५) १ ए करति। २ ए है। ३ ए ताई। ४ ए बिधि तो नहीं मैं देख। ५ रा बरि माइ।

(६) १ ए पै। २ भा तुही निरासन आम ए तू निरासन्ह को आम रा तुही आम निरास।

(७) १ भा मब निगिष्ट ए मबे निगिट। २ ए साहि जाये। ३ ए महि पामाम अराम।

अर्थ—(१) पमां उस मदिर (मड़ी) में बडबत बढ़कर और दोनों हाथ जोड़कर हरि को मनाये लयी। (२) वह वाला सिर पुष्पी पर रखकर बिनती करने लगी “हे दयाल तू कुमार को अप दे। (३) तू निम्बन को मुख देने वाला है [मत] हे बिभाता तुझे छोड़कर बिनसे जाचना बन्दे। (४) तू मेरी आगा अब अंजली में कर के छीन न ले; कुमार को, हे बिभाता तेरा ही सरन

है। (५) साहूत और बूत (करतब) ही मेरे तक (मुझसे लंबव) हैं तिडि अब हे स्वामी तेरे बेने से [होगी]।

(६) तुही मोक्ष और मुक्ति का दाता है और तुही निराशों की आत्मा है। (७) समस्त सृष्टि—मही पताल और आकाश—तुझसे पाबना करती है।”

टिप्पणी—(२) पुहुमि < पूछी। (६) मौल < माय।

[२६५]

मुनत बबर राकम क^१ दाता । रिम न्ह भणउ मि^२ पा महि नाता^३ ।
बहुमि छाड़ि^४ राकम बबनाई । मक^५ भएउ^६ का^७ तोर आई ।
ताहि मारि पेमहि^८ न जाऊ । तो रुपबनि कहाऊ नाऊ^९ ।
औ^{१०} सजग मइ अब मनुमाई । क्या गरब अनि जामि^{११} भुलाई ।
मो मुजा पयचारि उपारी^{१२} । पाँची^{१३} माप काटि भुइ डारी^{१४} ।
अगिनि^{१५} चिनगि म रुपबनी तू^{१६} जम ऊइ^{१७} पहार ।
निमिय^{१८} माह परजारी^{१९} दहिन चाहिय^{२०} कगार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बी। २ ए जरा। ३ ए पाँच से नाता।

(२) १ ए छाड़। २ ए मंगन (< मङ्ग पारसी लिपि) भा।

(३) १ ए ताहि मारि पेमहि। २ भा रुपबनि बुझाऊ नाऊ, ए रुपबनी नाउ कहाऊ।

(४) १ भा अनिब ए जमी। ७ ए नापा गरब न जाह।

(५) १ ए पाँची। ९ ए पारी।

(६) १ ए में यत्र मङ्ग नहीं है। २ भा ए तैं। ३ ए ऊई।

(७) १ ए म यही 'अगिनि' जीव है। २ भा दहिन होइ ए कालि चली।

अर्थ—(१) राजस की आज्ञा मुनते ही कुमार दीप के कारण तिर से बाँध तक तप्त हो गया। (२) उतने कहा “ऐ राजस बकुला करना छोड़ तुझे तेरा काल जाकर लंबव हुआ है। (३) मैं तुझे मार कर बेनी की ले जाऊँ, तो मैं रुपबनी नाम से कहलाऊँ। (४) और अब [मेरी] मनुष्यता सत्रय हुई है (बुराई सत्रय हुआ है) अपने [बड़े] पीर से वर्ष से तुम भूल। (५) मैं तेरी बसो भुजाएँ प्रचार (लजवार) कर उलाह चोखेना और तेरे पाँची कातक काटकर भूमिपर डाल दूँगा। (६) मैं रुपबनी अग्नि की चिनगारी हूँ और तु जले कई का कहाऊ है (७) मैं तुझे एक पल में जला डारूँगा, जबल वतार अनुभूत चाहिए।”

टिप्पणी—(१) नाता < तप्त। (५) उतर < उतरा < उत + पाप् = उपाटना।

[२६६]

मुनत बबर बर बिम^१ बना । रिम न्ह^२ भए^३ रुप^४ दख^५ नना ।
पयम गवन परन^६ रिमियाली^७ । गरजा जिमि अंबर^८ महराना ।

अपटि कहेसि जियतहि^१ धरि फारों^२ । टूक टूक क दहु दिसि^३ डारों^४ ।
 अपटस कुंवर सरग गी^५ छूटी । एक मांघ बिबि भुज^६ गए^७ दूटी ।
 निहुरि मांघ भुज^८ लिहसि^९ उचाई^{१०} । कूक^{११} मारि ओ गएउ^{१२} पराई^{१३} ।
 निमिख माह फिरि^{१४} आवा^{१५} भुज ओ^{१६} मांघ लगाइ^{१७} ।
 बहुरि कुवर सउ^{१८} भूष कह^{१९} ठाढ़ भएउ^{२०} समुहाइ^{२१} ॥

- पाठांतर—(१) १ रा एकस सुनत कुंवर के ए सुना कुवर छपी बिस। २ रा रिसत।
 ३ रा भएउ ए ओ। ४ रा स्पष्ट नहीं है। ५ ए बीउ।
 (२) १ रा सुनत सरगन ए सवन सुनत। २ ए रिमागा। ३ ए बंमर।
 (३) १ मा ए अपटा कहेमि जियत। २ ए बी मारों। ३ ए वह बिस।
 (४) १ रा बरष बी ए भूठि गी। २ रा बिबि कर, ए बीम भुज।
 ३ ए गी।
 (५) १ मा पुनि रा मग (<पुनि?)। २ ए लीन्हा। ३ मा उंचाई।
 ४ ए कुहु। ५ ए जो गी।
 (६) १ ए निमिख मांघ मो। २ मा आएउ। ३ रा ए भुज ओ मा
 भुजवर। ४ ए बसाइ।
 (७) १ रा सौ ए से। २ ए पुनि कर। ३ ए गी उठी। ४ मा बहुउठ।
 ए फहराइ।

अर्थ—(१) कुमार के विप-बचनों की सुनते ही [रासस के] बसो मेर रोच ले लाक हो गए।
 (२) बचनों में [उन] बचनों के पढ़ते ही वह अट्ट हुआ और इस प्रकार गरज उठा जैसे आकाश
 घूराया हो। (३) अपट कर उतने कहा, मैं तुमसे बीता ही एकदुकर लाड़ डालूंगा और तुम्हें
 दुकनें कर बतों दिशायों में डाल दूंगा। (४) उसके अपठते ही कुमार का सङ्ग भी छूट बह
 [बिचके परिणाम-स्वरूप उसके] एक मस्तक तथा बी बाहु टूट गए। (५) [रासस ने] भुज पर
 मस्तक और भुजाओं को उठा लिया और किमकारी मारकर छड़ गया।
 (६) बल भर में वह मस्तक तथा भुजाओं को लपकाकर फिर (लौट) आया (७) और
 कुमार से युद्ध करने के लिए पुनः उसके सम्मुख आकर लड़ा हुआ।
 टिप्पणी—(१) वीन < वयन < वचन। राउ < रस = लाड़। (२) सवन < वचन = वान।
 (३) बह < बग। (४) भुज < भुज। (५) निहुर < निहुर [दि] = मारना।

[२६७]

राकस बर सुनतहि^१ ससारा^२ । कुवर सजग होइ धनुक सभाय^३ ।
 बहुरि कुवर जो^४ निरमि निहारा^५ । पांघी मांघ दसो भुज^६ माग^७ ।
 धनुष बान दनि नियर न आव^८ । दुरि भए^९ माया दरसाव^{१०} ।
 माया^{११} रूप परि^{१२} राकस बाढ़ा^{१३} । बहुमि जियस परि^{१४} निगनी^{१५} ठाढ़ा^{१६} ।
 मुह पसारि मयावन होइ धामा^{१७} । कुंवर कौन मर परि^{१८} छटपावा^{१९} ।

औ लहि भाइ सो पदुम नाम हिए^१ गौ लगि ।
लगतहि गुप्त^१ रूप ध^१ कूक मारि कै भाग^१ ॥

पाठांतर—उपर्युक्त अर्द्धांतियां १ २ ३ ४ ५ रा में क्रमशः यथा अर्द्धांतियां ५, १ २ ३ ४ हैं।

भा में उपर्युक्त तृतीय अर्द्धांती के दोनों चरण परस्पर स्थागोचरित हैं।

(१) १ ए राक्रम कैर मुना। २ ए ममाना। ३ ए भै मनुष ममाना।

(२) १ ए, म यह गद्य नहीं है। २ ए भुज।

(३) १ ए दुइ भये। २ भा डरबावै।

(४) १ भा मया। २ ए ठे। ३ भा तोहि ए जो। ४ ए निगलै।

(५) १ ए भै पाऊ। २ भा वै ए वै। ३ ए निछुटाऊ।

(६) १ भा ए औ लहि (औ लगि—ए) भाइ पदुम^१। २ भा हिएं।

(७) १ ए लागत मुग्ध। २ भा बरि, ए परि। ३ ए कुकुमारी मा मागि।

अर्थ—(१) राजस का संसार (मम-जीवन) मुनते ही कुमार ने सजग होकर मनुष संभाला। (२) मुन-जो कुमार ने ध्यान से देखा तो [राजस] पक्षी वस्तुतः और इसी समार्प लपाए हुए था। (३) वह दूर दूर ही माया दिखा रहा था मनुष-बाब देखकर [कुमार के] निश्चय नहीं आ रहा था। (४) माया-रूप धारण कर राजस [आकार में] बढ़ा और उसने कहा “मैं तुमसे जीता पकड़ कर लड़ा नियत जाऊंगा।” (५) मुंह खँसाकर और भयावना होकर वह बीड़ा तो कुमार ने कोक (बिना कम का) बाब [मनुष पर] रखकर छोड़ (बला) दिया।

(६) जब तक [राजस] आकर [कुमार के निश्चय] पहुँचता बाब उसका हृदय में लय गया (७) [विशु बाब के] समते ही गुप्त रूप धारण कर वह किलकारों मारकर भाग गया।

टिप्पणी—(२) भुज < भुज। (३) निवर < निवन्। (५) चौक < चुकरा [दे] = निष्का।

[२६८]

एहि बिधि नि^१ गा रनि^१ तुलानी । कुंवरहि^१ ज नहि^१ राक्रम हानी ।
भूग मिसापर तस^१ अकृतानी । बहसि मोहि तोहि जूस^१ बिहानी ।
रनि मिसापर गएउ अराई^१ । पमां बहुरि कुंवर पद^१ आई ।
बहमि कुंवर म बहत^१ बिमारा । अब सुनु जहि राक्रम जाइ मारा^१ ।
मैं तुम्ह सेउं^१ सब कहैं^१ म पाए^१ । जानी राक्रम काल उपाए^१ ।

सीमि सोच औ लग^१ मारि सर्क^१ महि कोद ।

महम दूष जो का^१ पुनि सजोब^१ सो^१ होद ॥^१

पाठांतर—(१) १ ए मैं यह गद्य नहीं है। २ भा मर। ३ रा मैं यह गद्य नहीं है। ४ ए भा।

- (२) १ ए जे। २ ए मोहि तोहि पूब।
 (३) १ रा पराई। २ ए पहि।
 (४) १ रा कह्या। २ ए नही राकस मारा।
 (५) १ रा नमसे ए मुहसे। २ रा कह्य ए कहै। ३ ए पारा।
 ४ ए जा जेहि मारा (तुल० पूर्ववर्ती मञ्जरी का दूसरा चरण)।
 (६) १ भा मायहि ए कानी। २ ए ना।
 (७) १ भा सजीवन। २ पूरे चरण का पाठ ए में है—
 सहस दृक कै काटि पुनि रे सजीव ना होइ।

अर्थ—(१) इस प्रकार बिज गया और रात तुल गई (आ पर्वणी) न कुमार को अब हुई (मिली) और न राकस को हानि हुई। (२) भूल से राकस ऐसा तब हुआ कि उसने कहा "मेरा और तुम्हारा कुछ कस होया।" (३) रात को राकस चरने के लिए चला गया, तबन्तर वेबो कुमार के पास आई। (४) उसने कहा "हे कुमार, [पिछली बार] बहुत समय मैं बतला बूल गई; अब तुमो जिस प्रकार राकस मारा जा सकता है। (५) मैं तुमसे तब [यह बचाव] कह नहीं पाई थी [इसलिए अब] राकस के काल (मरण) का उपाय जान लो।

(६) यदि तौनो लोक भी लग जाये तो उसे कोई मार नहीं सकता है; (७) सहस दृक करके [कोई] उसे काट डाले तो भी वह पुनः सजीव हो जायगा।"

टिप्पणी—(१) रैन < रमयी < रजनी। (२) भूल < बुद्ध।

[२६९]

पमां कह^१ कुवरहि समुझाई। सुगहु कुवर^२ जरि काल उपाई।
 देसहि^३ बगिन दिसां जो वागी। सहि महु^४ एक अक्षित फर भारी^५।
 सचन सो फर^६ ओ सीतगि^७ छाही^८। राकस जीउ बस ठेहि माही^९।
 जो सहि बिगिन पलन गहि^{१०} होई। कैमहु^{११} मारि जाइ गहि^{१२} सोई।
 राकस काल अक्षित उपा^{१३}। मातर कैसहु मर न मार^{१४}।
 अक्षित फल^{१५} विरिक्क बलि^{१६} हुम तुम मिलि क मारहि^{१७} काटि^{१८}।
 सहजहि मरे^{१९} सां राकस भाव बहै^{२०} हिय फाटि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा कहा ए कहै। २ भा नही।

(२) १ भा बेगमि ए बेगिन। २ ए लानी। ३ ग कुमबारी।

(३) १ भा मोहम ए मूव जो। २ रा ए मीनम। ३ ए जहा।

४ ए मोहा।

(४) १ ग ओ लमि शिष पलन ना। २ ए कैमेहु। ३ ए ना।

(५) १ भा के बारी ए के उजारे। २ ए मातरि केह मरत न मारे।

(६) १ भा मे मर गल नही है। ७ भा कमहु। ३ भा पाछि कै।

४ ग में चरण का पाठ है अक्षित द्रिष हम तुह चहु उपादि काटि।

(७) १ भा ग मरति। २ ग नई।

अर्थ—(१) यहाँ कुमार को समझाते हुए कहने लगी “हे कुमार क्षत्र के काल (मरण) का उपाय सुनो। (२) दक्षिण दिशा में जो बाटिका हैल रहे हो उसमें एक बड़ा अमृत कल [का बूझ] है। (३) वह कल [का बूझ] सघन है और उसकी छाया शीतल है। राक्षस का शीघ्र उसी [बूझ] से बचता है। (४) जब तक उस बूझ का पतन नहीं होता है वह राक्षस किसी प्रकार मारा नहीं जा सकता है। (५) राक्षस का काल (मरण) उस अमृत [बूझ] को उपाड़ने से होया नहीं तो, किसी प्रकार भी मारने से वह नहीं मरेगा।

(६) जबो हय और गुण मिलकर उस अमृत-कल के बूझ को काट कर जला दें (७) इस प्रकार आपात के बढ़ने (तपने) से वह राक्षस द्रुप के कटने से सहज ही में मर जायेगा।”

निष्पत्ती—(२) बारी < बाटिका। (५) उपाड़ < उपाड < उपा + पाटम् = उपाड़ना। (६) क्षिरिक्य < बूझ। बार < ज्वाल्म्य = जलाना।

[२७०]

मुनत माउ^१ अश्विन फर करग। उठि क^२ कुंवर दमिद निमि^३ हरा।
निहृष^४ भएउ कुवर मन^५ माहा। राक्षम मरि मरि त्रिप सो बाही^६।
बहा कुवर पेमा^७ मय^८ आवहि^९। अश्वित फर^{१०} ल माहि^{११} दगावहि^{१२}।
बसा कुवर पमा^{१३} मय^{१४} लागी। राक्षम आठ सीम बरि^{१५} आगी।
पमा^{१६} ल कुवरहि गह^{१७} तहां। अश्वित बिगिछ फर अश्वित^{१८} जहां।
दमि कुंवर हिय^{१९} हृग्गउ^{२०} रहम समानउ^{२१} जीय^{२२}।
निस्थ भएउ बि^{२३} अब^{२४} बिधि जन पत्र मोहि^{२५} दीम^{२६} ॥

पाठांतर—उपयुक्त अर्थानिर्णय ४ तथा ५ रा म परस्पर स्थानान्तरित हैं।

- (१) १ ए माव। २ रा कव। ३ ए जे। ४ ए रिम।
- (२) १ मा निम्ब ए निम्बै। २ ए बी। ३ मा मुनन त्रिप ए मुनन त्रिब।
३ मा मरि मरि जीवन बाही ए मरै बरिध जो बाही।
- (३) १ ए अब मोहि मय आ ए पेमा मय। २ ए आवहु। ३ रा ए कव। ४ ए जे मोहि। ५ ए देगावहु।
- (४) १ मा ए मय। २ मा पर ए बर।
- (५) १ ए बी। २ मा मुकउ फरा है ए फल लाया है।
- (६) १ रा वेमहि कुवर दमि की। २ ए हृग्गा। ३ ए समाना। ४ जीउ।
- (७) १ रा निहृपो मी की ए निम्ब भोजी। २ मा माय। ३ ए बिधि (विष्णु चरम के पूर्वाञ्ज में यह आ गया है)। ४ ए बीउ।

अर्थ—(१) अमृत-कल का नाम सुनने ही उड़कर कुमार ने दक्षिण दिशा में देखा। (२) कुमार को मन में निश्चय हो गया कि राक्षस क्यों मर-मर कर जीना है (पीड़ित होता है)। (३) कुमार ने कहा “यहाँ मु संध आ और [बूझ] से जलकर तु [उस] अमृत-कल को पिता।” (४) कुमार यहाँ से लौट लगा हुआ जाता। राक्षस आ रहा था और उसका तिर कर आम्र जल पड़ो भी। (५) यहाँ कुमार को कैद करवा गई वहाँ वह अमृत-बूझ अमृत [बूझ] कल रहा था।

(६) [अमृत-फल के भुज को] देखकर कुमार हृदय में हर्षित हुआ और उसके जो में हर्ष लगाया (व्याप्त हुआ); (७) उसे निश्चय हो गया कि अब विवाता ने उसे विजय-पत्र दे दिया है। टिप्पणी—(१) हेर [दे०] = देखना निरीक्षण करना। निहृषं < निरुषय। (४) बर < बरह। (५) विरिह < वृत्। (६) रह्य < रमय = हर्ष। समा < सम् + आप् = व्याप्त होना।

[२७१]

कुंवर निरसि जो विरिह^१ निहारा। देखत^२ सुफल सघन कनियारा^३।
देसि कुंवर जिय^४ दया जानाई। फरा विरिह^५ जो^६ काटि न जानाई।
फुनि^७ पूछै^८ कुंवरहि बर नारी। अरि आएउ^९ पर^{१०} विलव कहा रो^{११}।
जो रिपु बस अपने के पाइय^{१२}। कहत^{१३} कुंवर काहु^{१४} विलवाइय^{१५}।
मोर^{१६} बोल निहृषं^{१७} जिय मानहु^{१८}। अगिनिससु^{१९} अनि^{२०} घोर^{२१} क जानहु^{२२}।
बगि होहु जनि विलबहु^{२३} जो अरि^{२४} रहिर पियास।
सो जो बस^{२५} के पाइय सह न दीजिय सांस^{२६} ॥

पाठांतर—उपर्युक्त पाँचवीं अंदाजी भा में इस छंद के प्रारंभ ये हैं।
(१) १ ए अविह फल निरिह। २ भा देखसि ए देखि। ३ य सघन कनियारा भा भुजन (< भुज) कनियारा ए फल भा मनियारा।
(२) १ ए जिउ। २ ए बिछ। ३ भा बरि।
(३) १ रा फिर। २ ए पूछै। ३ ए मारी। ४ भा ए में यह पद्य नहीं है।
५ भा विलन कुंवरारी (?) ए विलव का करी।
(४) १ ए पाई। २ ए नही। ३ ए कैसे। ४ भा विलवाइय ए विलंबाई।
(५) १ ए घोरि। २ भा निरुष ए निरुष। ३ भा जिय जानहु ए कै जानहु।
४ ए वीसु। ५ ए में यह पद्य नहीं है।
(६) १ भा जनि विलबहु ए कै विलबहु य विलंबहु। २ ए अवि।
(७) १ भा मे यहाँ अपने और है। २ ए पाई। ३ ए तेन कि दीजिय।

अर्थ—(१) कुमार ने जो भुज को निरीक्षण करके देखा, तो [देखा कि] वह देखने में एक पुष्प (भलोभाति फला हुआ) और सघन कनियारा था। (२) उसे देखकर कुमार के भी में दया बात हुई कारण कि (क्योंकि) फला हुआ भुज काटा नहीं जाता है। (३) तब कुमार से वह भेठ नारी (यमा) पूछने लगी “अरे, शत्रु के जाने पर भी क्या विलंब है? (४) यदि शत्रु को अपने बस में बर पाया जाए, तब है कुमार, तुम कहो क्यों विलंब लगाया जाए? (५) मेरी बात तुम को में निश्चित जानो; जल्ज का लैप भी लौट्टा करके न जानो। (६) शीघ्रता करो और विलंब न करो यदि मुझें शत्रु के बरि की पिपासा है। (७) जिते बर में बर पाइए, उसे तौत न लेने दीजिए।
टिप्पणी—(१) निरुष < निरुषय - निरीक्षण करना देना। कनियार < कनियार। (२) जो < जउ < यम = कारण कि। (५) निहृषं < निरुषय। (६) रहिर < रहिर = रमय।

[२७२]

पमें^१ जो कुंवरहि समुसावा^२ । सुनतहि अत कुंवर चित्त^३ धावा^४ ।
फुनि^५ उठि विरिख निरुट गा^६ गऊ । भुअ मरोरि सभरमि^७ योमाऊ ।
हुहु^८ कर यहि हरिनाउ^९ समारा । अमिय विरिख^{१०} सेंउ^{११} मूर^{१२} उपारा ।
फुनि^{१३} अत डारि^{१४} पात पर आहें^{१५} । ए सभ^{१६} कवर आगि मह दाह^{१७} ।
पीड़^{१८} क काठ रहा^{१९} जो भारी । सो फनि^{२०} रिऐउ^{२१} अगिनि मह जारी^{२२} ।

अत्रित विरिख^{२३} उपारि^{२४} क डारि फोन्ह तहि^{२५} छार ।

रहमत आए^{२६} योगडी कामिनि और कुवार^{२७} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा पमा ए पेवी। २ भा समुसाई। ३ ए सुनत कुंवर के चित्त।
४ भा आई।

(२) १ रा पुनि उठि ए पुनि आ। २ भा निवर पी ए निवर मा। ३ रा
कौन्हेमि ए मौरा।

(३) १ ए दइ। २ ए नाम। ३ ए छिउ। ४ भा नीं भुल रा मै मूर, ए
वर मूर।

(४) १ रा ए पुनि। २ ए जा डार। ३ भा अहें ए रहा। ४ ए ते सब।
५ भा अगिनि महें बहें ए अग्नि मो डहा।

(५) १ ए पेड (<पीड़ डायी लिपि)। २ भा अहुड। ३ रा पुनि
ए रे। ४ ए दीन्ह। ५ भा अगिनि सुग जारी (<जारी नापटी लिपि)
ए अग्नि मो टारी।

(६) १ ए रिछ। २ रा उपारि। ३ भा सब त पे।

(७) १ ए जाव। २ रा ए कुवार।

अर्थ—(१) पमां ने जब कुमार को समझाया सुनते ही कुमार के चित्त में जेत (ध्यान)
आया। (२) तब राजा (राजकुमार) उठकर भुक्त के निरुट गया और उसने कुमाओं को मरोड़
कर व्यवसाय (पुरुषार्थ) का स्मरण किया। (३) [भुक्त को] दोनो हाथों में पकड़ कर उसने
हरिनाम का स्मरण किया और अमृत-भुक्त को बड़ से उखाड़ डाला। (४) तत्पश्चात् जिनने डाल,
पतो तथा कल से सब को लेकर कुमार ने अग्नि में जला दिया। (५) पीड़ का जो भारी काष्ठ का तब
उतरो (कुमार ने) अग्नि में डाल दिया।

(६) अमृत-भुक्त को उपाकुंवर और उसे अलाकर [उन्होंने] राख कर डाला (७) और
तत्पश्चात् हयवर्च कामिनी (पमां) और कुमार योगिनी को आ गए।

टिप्पणी—(२) भुज<भुज। मरर<ममार<मं+माग्यु=गैमानना पाद करता।
(४) जेत<जैतिज<यारु=जिनना। (५) पीड<रिछ=भुक्त का पड के नाम का भाग।
(६) छार<छार=राख।

[२७३]

रजनी घटि^१ रवि किरनि पसार^२ । राकस हाँक बार भ^३ मार ।
 करिया रूप मयावन कीन्ह^४ । दुखी हाथ बूझ चाका^५ लीन्ह^६ ।
 सुनतहि^१ कुंवर बनुक^२ हयवासा^३ । ओढ़ सरग उर^४ हरि पियासा ।
 फरसा कूठ सिपूत^५ कर लाई^६ । ओ भभूति^१ मुख अग चढ़ाई^२ ।
 डह चक्क^३ तिरसूल जो लीमूज^४ । सरन बिधाता ओनवन^५ कीन्ह^६ ।

काल रूप बस निसरेउ^१ हरि हिरखो^२ सभारि ।

राकस दसि रिसाई^१ मारसि चाक^२ पवारि ॥

पाठांतर—(१) १ भा वष ए गति (<गठः ऊरखी छिपि) । २ ए पसाव । ३ ए
 आवि हाँक कुनि ।

(२) १ भा बुनहु ए हुगी । २ ए चाक जे ।

(३) १ ए सुनते । २ ए बनुक । ३ भा हयवासा रा स्पष्ट नहीं है ।
 ४ ए जे ।

(४) १ ए कोठ लीन्ह । २ ए बिभूति ।

(५) १ भा ए चक्क । २ भा लीमूज ए लीड । ३ ए ओढ़न रा ओढ़र ।
 ४ भा कीमूज ए कीड ।

(६) १ ए नै भिमरा । २ भा हरिपरि सरन ए हरि हरि नाम ।

(७) १ भा रिसाई करि ए रिसाना । २ ए चक्क ।

अर्थ—(१) [बष] रात बीसी और सूर्य किरने प्रसारित करने लगा [तब] रासत द्वार
 पर आकर हाँक लगाने लगा । (२) वह काला और मयावना सब किए हुए था और बीसो हाथों
 में दो चक्क लिए हुए था । (३) [उत्तकी हाँक] सुनते ही कुंवार ने पलुच की हाथ में लिबा, और
 लङ्ग को [हाथ में] लिया जो रंगिर का प्यासा था । (४) फरसा और चर्छा भी उसने हाथ में
 लगा लिया और सब तबा छतौर पर उसने बिभूति बढ़ा ली । (५) फिर जो उसने डह चक्क और
 तिरसूल लिया बिधाता की दारण में उसने अवनवन (मनस्कार) दिया ।

(६) हरि की हृदय में स्मरण करके वह काल-रूप बता निकल पड़ा (७) [उते] देवदर
 रासत घट हुआ और उसने चक्क गिरा (बला) कर उते मारा (बस पर प्रहार किया) ।

टिप्पणी—(१) वमार < प्रसारण = फैलाना । बार < द्वार । (२) चाक < चक्क < चक्क । (४)
 कुम्मा < परणु । (५) डह < बण्ड । चक्क < चक्क । ओनवन < अवनवन = मनस्कार । (७) पवार
 < पवाड < प्र + पानयु = गिराना ।

[२७४]

रासत चाक गियाइ पसारा । कुंवर आँड़ि ब^१ आपु उमारा^२ ।
 दोमर चाक कुनि^३ लिहसि^४ ममारी । कुंवर दोह^५ ओढ़न^६ मिर टारी ।
 पाव आ^१ ओढ़न^२ लग लाग । अग्नि भभूक^३ सरग न मगा^४ (मनोगा?) ।

बहुवि बृवर बर पल्लव दाऊ^१ । अष्टि विष्मि^२ राकम सिर^३ पाऊ ।
 पाच मां^४ जाकी^५ बड कर । मरग घाउ सोई ममि^६ परा ।
 मरम घाउ^७ जब^८ लागउ^९ सोम्हसि^{१०} मांय उपाइ^{११} ।
 दक्षिण दिशि^{१२} अह बारी^{१३} सहि दिशि गाउ उडाइ^{१४} ॥

पाठान्तर—(१) १ भा बृवि कै ए बाट मै । २ रा मंभारा ।

(२) १ रा पुनि ए म यह भाष्य नहीं है । २ ए मीन्ह । ३ भा दिण्ड ।
 ४ ए मोहन ।

(३) १ ए मोहन । २ ए मयूना । ३ भा तेउ लागा ए मै लागा
 (किन्तु इन दोनों पाठों का कुछ नहीं है आ पूर्ववर्तीकरण का है) ग स्पष्ट नहीं है ।

(४) १ ए कुंवर का पल्लव दाऊ । २ रा तेहि कीन्हेमि ए अष्टि कीन्ह ।
 ३ ए लाडे कर ।

(५) १ ए माय मो । २ रा जावर । ३ ए मीमि ।

(६) १ ए पाव । २ भा जी । ३ ए लागा । ४ ए लीगा । ५ रा उगाइ ।

(७) १ भा दक्षिण दिशा ए दक्षिण दिम । २ ए बारी रूही । ३ ए तहवा ।
 ४ रा गण्ड उडाइ, भा जमेउ उडाइ ए-गी (उ) उडाइ ।

अर्थ—(१) राजस ने दण्ड होकर चक्र घिराया (बलाया) किन्तु कुमार ने उसे हास पर रोक
 कर अपने को बचा लिया । (२) राजस ने फिर दूसरा चक्र समाल कर लिया तो कुमार ने तिर
 हटाकर मोड़न (हास) को सामने कर लिया । (३) चक्र आकर मोड़न (हास) में ऐसा लगा कि
 उससे अग्नि की स्पष्ट निरालकर आकाश को आ लयो । (४) फिर कुमार का दाँव पल्लव और
 उसने सपटकर राजस के तिर पर आघात किया । (५) दाँववाँ पल्लव जिसकी बड़ी बला की
 लड़ा के उसी आघात से गिर पड़ा ।

(६) जब [इत प्रवर का] मर्माघात लगा (राजस ने) पल्लव को उठा लिया (७)
 और वह दक्षिण दिशा में जहाँ बाहिषा भी उसी ओर उड़ कर जाता गया ।

टिप्पणी—(१) पवार < पगड < प्र + पाण्य = गिराना । (२) पाक < चक्र < चक्र ।
 (४) पाउ < माया । (७) बारी < बाटिका ।

[२७५]

बहुवि बृवर^१ बारी निमि^२ पावा । पगना अश्रित बर भाया^३ ।
 मरम पाउ^४ माग भिननानी^५ । दग्गमि राकम भव^६ नुल्लानी ।
 अह मा^७ अश्रित विगि^८ उपाग^९ । राकम मांय भागि सह दारा^{१०} ।
 जो राकम अश्रित^{११} महि^{१२} पावा । भा गिराम मन बाण जनावा ।
 आएउ गिरि लामि मो आमी^{१३} । बया^{१४} पगम पगि^{१५} लागी^{१६} ।

जिमि सरिवर^{१७} जरि वाट^{१८} सन^{१९} धरगमि पर^{२०} निगन ।

निमि राकम पुहुया परउ^{२१} बया पछिर^{२२} पगन ॥

पाठांतर—भा में उपर्वृत चौपी तथा पाँचवीं अर्द्धाध्यायी परस्पर स्थानोत्तरित हैं।

- (१) १ ए राजस। २ ए विस। ३ ए फल जावा।
- (२) १ ए पाव। २ भा कागतहि निमाना रा कागेठ विनाना ए कावे
बितताना। ३ ए देखत राकस भरम।
- (३) १ ए जहा से। २ ए बिछ। ३ रा जमारा। ४ ए मारा।
- (४) १ ए म यहाँ 'फल' और है। २ ए न।
- (५) १ ए आठ बिहि जागि गी छागी। २ भा पिड। ३ ए परिहरि गी भापी।
- (६) १ ए सवहरि। २ भा काटें ए काटिये। ३ भा ए में यह शब्द नहीं
है। ४ हरि सस परै रा हर सति परेउ।
- (७) १ ए मुइ सति परा। २ भा परिहरेउ ए परिहरा।

अर्थ—(१) सब कुमार [जो] बाटिका की ओर बीड़ा कि अमृत के माष [अमाव]
[के परिधाम] का बह पड़ता (अनुमान) लगाने। (२) उसने देखा कि सर्पाघात लगाने से राक्षस
बिभावा और भूला हुआ चक्कर काट रहा है। (३) कहीं वह उछाड़ा हुआ अमृत-बूझ या राक्षस
ने आकर वहाँ [उस छिपे] राक्षस को डाल दिया। (४) राक्षस ने जब अमृत नहीं पाया वह
निरास हो गया और उसके मन में काल [आया हुआ] ज्ञान पड़ने लगा। (५) वह घर पर आ
गया [क्योंकि] उसको [मालो] अन्य सब गई थी; उसकी काया अब प्राची को छोड़ने लगी।

(६) जिस प्रकार [किसी] बड़े बूझ की जड़ काटिए तो उसका तना अंत में घरा घर फिर
पड़ता है (७) उसी प्रकार, राक्षस पृथ्वी पर फिर पड़ा और [उसकी] काया ने प्राची का
परिधाम कर दिया।

टिप्पणी—(१) बारी < बाटिका। (२) अंव < अमृ = भ्रमण करना घूमना। (३)
उपाप < उत्पाटित = उछाड़ा हुआ।

[२७६]

जो राकम निम्न सज^१ पराना^२। पमा बलि थीउ^३ रहसाना ।
दोरि^४ कुंवर पर आँवर वारा । अति मरोह^५ स हिय उर^६ सारा ।
बहुमि कहा^७ मजछावरि^८ सारौ । सहन थीउ घट होहि^९ ती वारो ।
धनि^{१०} सो पिता जइ रे तोहि^{११} जाए । धनि सो भाइ जेइ^{१२} बूझ पियाए ।
अब परिहरिय^{१३} बगि यह ठाई^{१४} । योग मुक्ति जो दउ^{१५} गोमाइ ।
मोर हिया डर^{१६} डरपे भरमि भरमि^{१७} जा थीउ ।
मूए हूँ^{१८} यह^{१९} राकम पुनि^{२०} जनि^{२१} होइ सजोउ ॥

पाठांतर—(१) १ भा सजेउ ए तथा। २ ए जीउ।
(२) १ ए और। २ ए मनोन। ३ ए कै ही बज।
(३) १ भा कुंवर। २ ए मजछावरि। ३ ए हो।
(४) १ ए घन। २ रा जेइ रे मुम ए जो ताही। ३ भा धनि सो भाइ
धनि ए बन बाये जो।

- (५) १ ए परिहृ। २ ए यहि ठाई। ३ ए सोहि दीन्ह।
 (६) १ भा हियत डर, ए हीबर हिय। २ ए भरम भरम (< भरमि प्ररसी
 निवि)
 (७) १ भा मुए हूँ ए मुये से। २ ए ए। ३ भा फिरि। ४ ए मति।

अर्थ—(१) जब राजस ने निविक्त रूप से प्राण छोड़ दिए, पेयी का भी यह देखकर हतित हुआ। (२) चलने बीड़कर पुनार पर अंचल बारा और अत्यंत नरोह (सबेना) के साथ उस [संभल] को लेकर हृदय से लपटाया। (३) चलने कहा "मैं [तुम पर] क्या ग्योछावर करूँ ? इस घरीर में यदि सी बीब हों तो मैं उन्हें भी ग्योछावर करूँ। (४) वह पिता भय है जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया और वह माता भय हैं जिन्होंने तुम्हें बूझ पिलाया। (५) अब सीध हो इस स्वान को हम छोड़ दें कि हीबर हमको [अब भी] सील-मुक्ति दे।

(६) मेरा हृदय डर से डर रहा है और मेरा बीब जम जम (डर-डर) जाता है (७) कि भरकर भी यह राजस [कहीं] फिर न बीबित हो सके।"

टिप्पणी—(५) ठाई < स्वान। भोज < भोग। (६) हिया < हृदय।

[२७७]

बहुरि बुरर कामिनि सउ^१ कहा । गा सो भरम जो तुम्ह चित अहा ।
 चित सेउ^२ सम^३ परिहृकुन जाता । तुम्ह दुख हरि^४ सुन दिएउ^५ बिधाता ।
 कौनहु दुख जनि^६ होहु दुखारी । आर्षह^७ सग दुख चित हमारी ।^८
 फुनि^९ उठि दुबो^{१०} पष सिर भए^{११} । मांस^{१२} चारि बनहा बन गए^{१३} ।
 बहुरि देस बसती मह आए^{१४} । दयात कलि क^{१५} भाउ मुहाए^{१६} ।
 बहुरि निकट जो आए चित्रसनि क गाउ ।
 नगर अनूप सोहावन चहुं विसि धन अबराउ ॥

- पाठाभार—(१) १ रा. खों ए से। २ ए चित में अहा।
 (२) १ भा सा ए सेनी। २ भा सब ए म यह गद्य गती है। ३ =
 तोहि दुख भरि, ए राजस हन।
 (३) १ ए कौनहु दुख न। २ भा उगहि। ३ ए मे इस चरम = =
 राजस हन मुन दीन्ह मुराटी। (मुन पूर्ववर्ती अर्थात् का दुख = =
 (४) १ ए पुनि। २ ए पुनी। ३ ए मैऊ। ४ ए मोम। ५ = =
 (५) १ ए बगरी भा भाई (< भाए जगमी निवि)। = = =
 ए भाउ सोगाई (< मोहाए : जगमी निवि)।
 (७) १ रा मोहाएउ। २ ए मगगाउ।

अर्थ—(१) तदनंतर पुनार ने कामिनी (पेयी) से कहा, "जो मुझारे चित में था। (२) [अब] तुम चित से लपसत पुनार को बाध दार =
 बिधाता ने [तुम्हें] मुन दिया। (३) [अब] तुम बिनी दुख के =
 करने के लिए जाने वाले] साथ दुख मेरी चिता के लिए आये। (४, ५) =

बड़ हुए, और चार मास तक वन ही वन चलते रहे। (५) तब वे कलिक के सुहाबने भाव देखते हुए एक देश की बस्ती में आए।

(६) इसके अनंतर वे बिजसोम के ग्राम (नगर) के निकट आए (७) वह भयर अनुपम भाँति से सुहाबना का और [उसके] चारो ओर सघन अमराई थी।

टिप्पणी—(५) बस्ती < बसति। (७) अमरावत < अमरावत < आमरावत = आम्र-वाटिका।

[२७८]

पमां दोठि नगर पर^१ परी। मन अनवि^२ हरखी हिय सरी^३।
दलि उत्तग अवास सुहाए। पमां हिये^४ हुलास बघाए।
पुनि बलि निकल^५ कूँबर के^६ आई। कहसि करहु जिय^७ हरख बघाई।
म ओ कहव^८ तुम्ह^९ सों^{१०} नित नाऊ^{११}। पिता नगर^{१२} यह^{१३} चित बिसराऊ।
दरसन जोग उत्तारहु राजा। कहु सिद्धि सम^{१४} साहस नाजा।
बित सठ दुख परहलहु^{१५} करहु अनद बघाव।
तुम्ह^{१६} ओ^{१७} मधुमालति^{१८} सठ^{१९} य ही^{२०} नगर मेराउ^{२१} ॥

पाठांतर—(१) १ ए ओ। २ ए अनव। ३ ए हरख जो बरी।

(२) १ मा मनहि ए हिरई।

(३) १ ए ओ नीक। २ रा ए के। ३ मा करहु मन ए नि कह मन।

(४) १ मा कही ए कहा। २ ए तोनी। ३ मा तब नाऊ, ए बिसराऊ।
४ मा राज। ५ ए ओ।

(५) १ ए ओ।

(६) १ मा बित सरी दुख परिहरहु ए बित मो सब दुख परिहर।

(७) १ मा तोहि ए तुह। २ ए म यह सख नहीं है। ३ रा सों, ए सनी। ४ मा निजु अबही ए येहि। ५ राउ।

अर्थ—(१) पमां की बुद्धि नगर पर पड़ी तो वह मन में आनंदित होकर हृदय में बहुत हविष हुई। (२) [उस नगर के] उत्तम (अर्थात्) और सुहाबने आवासों को देखकर पमां के हृदय में उत्साह के अभाव [होने लगे]। (३) फिर वह चलकर कुमार के निकट आई और उसने बहुत-हुदय में हर्ष की बघाई करी। (४) मैं जो नाम तुमसे मिल रहा करती थी यह पिता का [बही] नगर बित-बिघान है। (५) ये राजा (राजकुमार) योग (योगी) का वन (वेव) उतारी और तनस साहस-पूर्व कार्य की सिद्धि ली।

(६) अपने बित से तुम दुख का तिरस्कार करो और आनंद-बघावा करो; (७) तुमसे और मधुमालती से इसी नगर में मिलान होगा।”

टिप्पणी—(१) सीडि < दृष्टि। (२) अनव < अनुपम = असाधारण। हुलास < उल्लास। अवास < वासवन < वासीन = वर्णमय मृगन बाघ। (३) परहल < प्रहिन् = बचने का या निस्कार करना।

[२७९]

कुँवर माठ^१ कामिनि मुमि काँपा । मुनल विरह मम^२ गात बियापा ।
मधुमालति कर सुमत्त^३ मरावा । जानहु मुए पिह जिठ^४ आवा ।
क^५ जनु पाठ पियास^६ पानी । क^७ जनु बबइहि^८ रनि बिहानी ।
क^९ जनु मधुमालति रम कामा^{१०} । क^{११} जनु अबुज मूर^{१२} परगामा^{१३} ।
क^{१४} जनु पपिहा भार मवाती । क^{१५} जनु कमुदिनि समिरन^{१६} राती ।
पूरब पमि बिछूने^{१७} जहि^{१८} दिन दुबो^{१९} मराहि^{२०} ।
मनही मनहि^{२१} बधावरा^{२२} मदिल बाइ^{२३} बराहि ॥

पाठ्यन्तर—(१) १ ॥ नाम । २ मा मव ॥ जो ।

(२) १ ॥ कै मुना । २ ॥ मुमा पलटि जी ।

(३) १ ॥ पाव पिआये । २ ॥ बई ।

(४) १ मा ए कामा । २ रा कैवल मूर । ३ ए बिगामा रा परगामा ।

(५) १ रा में यह मर नहीं है ।

(६) १ ए बिछर वेम बिछोही । २ ॥ जा । ३ ॥ दुनी । ४ रा ए
मिनाहि ।

(७) १ ए मनि माह । २ ए बधावा । ३ रा मदिल बाइ ॥ मदिल बरा ।

अर्थ—(१) कामिनी (मधुमालती) का नाम सुनकर कुंवर काँप उठा उसे सुनते ही
तमस्त पात्र में विरह व्याप्त हो गया । (२) [विनु विर] मधुमालती के मिलाप की बात सुनकर
उसे ऐसा हो गया मानो बूत बिट (शरीर) में कीच आ गया हो (३) अबका मानो प्यास की पानी
मिल गया हो अबका मानो कचबी के लिए रात्रि समाप्त हो गई हो (४) अबका मानो मधुकर को
मालती की रसीली मुखास [मिल गई हो], अबका मानो बमल को मूर्ख का प्रकटा [मिल गया हो],
(५) अबका मानो पपीहे की स्वामी की चारा [मिल गई हो], अबका मानो कुमदिनी बंदा के
ब्रम में अनुरक्त हुई हो ।

(६) भलम लिए हुए पूव के दोनों प्रती जित दिन मिल जाते हैं (७) [उत्त दिन] उनसे
बन हो मन में क्या बधावा होता है क्या बादल क्यों (बधा) करते ?

टिप्पणी—(१) बब^२ < बबडावो । रनि < रानी < रानी । (२) बिछूने < बिछाना (?)
= बन्ग बिग टा । (३) बधाव < बडावन < बपावन = हर्षोष्मास-मृचन बाध । मारन < मरन
< मरन = बाध-विगत मृचन मृदय ।

[२८०]

फनि^१ बर तारि बबर पट आई । मियरे होइ ग बहमि^२ बुसाई ।
मुनटु बवर एब^३ बाग हमारी । म गहि नगर रात्र पर बारी^४ ।
बभे^५ तनि मम पर जाय^६ । बाते दुखन^७ माग हंसाय^८ ।

(०) १ रा मम कहूँ लिखी या मम कहूँ लिखेउ ए सब की लिखा। २ ए जोहार।

अर्थ—(१) [इधर] वेसाँ ने बैठकर कुछ भी पत्रिका लिखी जिसे सुन कर बग बँतो छली भी फट बाये। (२) कुछ की जितनी कुछ बतों [मन में] जाग्रत हुई वह सब मसि बन कर कागज पर लग गई (उतर आई)। (३) मन का कुछ जितना कुछ था वह लिखते हुए किसी प्रकार भी समाप्त होना नहीं चाहता था। (४) कुछ [का विवरण] लिख कर उसने माता-पिता कुछ बतवा परिवार को झुहार (नमस्कार) लिखा। (५) और जितनी बालिकाएँ उसकी सतिमा-सहेलियाँ थीं उन सबको उसने प्रेम की अंकुश लिखी।

(६) बहिनों माइयों जन (घर के लोगों) परिजन (भुरवों) लोक (प्रजाजन) कुछ ब और परिवार (७)—सबको समस्त-समस्त कर [यथायोग्य] उसने झुहार (नमस्कार) लिखा।

टिप्पणी—(१) बिहुर < बिहुर < बि + पद = टूटना फटना। (२) कामर < कामर [का]। (५) बारी < बालिका। बंकरारी < बंकपासी = जालिगन।

[२८३]

दुख पाती जो लिखत^१ सिरानी। बारि ए^२ हहराएउ^३ मानी^४।
पमा^५ बारी के पा^६ परी। बेगि बलहि^७ अनि बिलबहि^८ परी।
स पाती बारी उठि धावा। रहस गहा भुईं पारं^९ न लावा।
बारी बाव पौन सेउ^{१०} बरई। दिस्टि चाहि पग अगुमन^{११} घरई^{१२}।
निमित्त माहि बारी बलि^{१३} गएऊ। राज^{१४} दुआर ठाड़ ग भणऊ^{१५}।
परतिहार सतें कहि पठएसि^{१६} जाइ अनाउ नरस।
बार ठाड़^{१७} एक बारी कह^{१८} पमा^{१९} ब^{२०} सदस ॥

पाठान्तर—आ म उपर्युक्त बर्णनिया २ ३ ४ का क्रम है ३ ४ २।

(१) १ या लिखी ए लिखि। २ ए बारी एन हकारेउ जामी।

(२) १ रा मम ए पाँव ली। २ ए बलहु। ३ आ अनि बिलबहि ए न बिब बह।

(३) १ ए पाँव।

(४) १ ए मी। २ आ पव आवें ए बामू मन। ३ ए मरई।

(५) १ ए एउ मा बारी बीऊ। २ ए रावे। ३ ए भैऊ।

(६) १ ए प्रतिहार ले पहि पठवा।

(७) १ ए गढ़ि (< ठाड़ फारसी लिपि)। २ ए बहै। ३ रा वा।

अर्थ—(१) जब वह कुछ-विषय लिखते-लिखते लज्जापा हुई उसने एक बारी को दुसरा बेंगाया। (२) वेसाँ उस बारी के पैरों बड़ी और [उलते उलते कहा] “तू छीद्र या और एक छोटी वा भी बिमबन कर।” (३) बहिन बहर बारी उठ सीढ़ा; हर्षादिप्य होने से कारण उसने भूमि पर पाँव नहीं रखा। (४) वह बारी [बलने में] हवा से बाव (बालें) करता था; पैर बट

मुटि से भी आगे (अभिषेक से) रहता था। (५) एक पल में बारी बला गया और बाहर राज द्वार पर लड़ा हो गया।

(६) प्रतिहार को उसने यह कहकर भेजा "राजा को बाहर बताओ कि (७) द्वार पर बारी लड़ा है जो पैरों का छेदन कह रहा है।

टिप्पणी—(१) रहम < रमछ = हूँ। (७) बार < द्वार।

[२८४]

परतिहार सुनतहि^१ उठि धावा । राज गिरिह^२ न बाज जनावा ।
राजवार धारी एक आवा । अभिषेक वन निछ कह मोहावा ।^३
पमा राजकुमारी धारी^४ । सहिब^५ मयम कह निछ धारी ।
पमा नाउ^६ सुनत उठि धावा^७ । मन रहमा^८ निछ मुन न पावा^९ ।
धाए सुनि राजा ओ^{१०} रानी । बिछुरि मीन पावा जनु^{११} पानी ।
मता^{१२} पिता जन परिजन^{१३} मयी महुसा भागि^{१४} ।
धाइ धार^{१५} बलि आए सुनत नाउ^{१६} बर नारि ॥

वाक्यान्तर—(१) १ ए सुनते। २ ए राजा गिरिह।

(२) १ ए रानी बचन से कहि मेरावा।

(३) १ ए भागि से राजकुमारी। २ ए तावे।

(४) १ ए नाव। २ भा बाएउ। ३ भा रहमेउ। ४ भा पाएउ।

(५) १ ए जी। २ भा बिछरी मीन पाव जनु। ए बिछरा मीन जम पाई।

(६) १ रा माना ए मान। २ ए परजन। ३ भा महेली छिनारि, ए महेली मारि।

(७) १ ए बारी। २ ए नाव।

अर्थ—(१) प्रतिहार यह सुनते ही उठ बीड़ा, और राज-बचन में जाकर उतने यह बाल बिलस की, (२) 'राज द्वार पर एक बारी जाया हुआ है, जो कुछ मुहावले अर्थात् [मुम्प] बचन कह रहा है। (३) बालिका पैमा को राज-बच्चा है उसी का कुछ संकेत वह बारी कर रहा है। (४) पैमा का नाम सुनते ही मैं उठ बीड़ा। जन ऐसा हसित हुआ कि मैं कुछ मुन न पाया। (५) यह सुनकर राजा और रानी दोनों बीड़ा पड़े बसे [बल से] बिछड़ कर मीनों में [मुन] पानी बापा हो।

(६) माता, पिता स्वजन साथ सखियाँ सहेलियाँ, संजुन बच से (सभी एक साथ) (७) बीड़ा द्वार पर बने आए जैसे ही उन्होंने उल थोड़ बारी (पैमा) का नाम सुना।

टिप्पणी—(२) बार < बार < द्वार। (४) रहम < रमछ = हूँ।

[२८५]

पमा नाउ^१ सुनत मभ^२ धाए^३ । उठि बलि राज कुमारी आए^४ ।
राजा उठि पाण्ड^५ बिमभारा । ओ गनी मिग पा म^६ ममाग ।

आगे मैं बारी जोहरावा । ओ पमा के कुसल जनावा ।
बहुरि दिहसि पमा के पातो । चित्रसगि ल लाई छातो ।
व्याकुल भ पूछसि महतारी । नतिक दूरि सो राजबुलारी ।

बारी कहा इहां सेठ की कोस डेढ़ एक गाछ ।
तहां आपु हहि बसी मोहि पठएन्हि तुम्ह ठाठ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए नाव । २ ए छठि बाई (<बाए फारसी लिपि) रा सब बाए ।
३ मा दुवारहि । ४ ए बाई (<बाए फारसी लिपि) ।
(२) १ ए बाए । २ ए सिर पाँच [य नहीं है] ।
(३) १ ए आगे मैं बारी जोहरावा रा आगे होइ बारी बलि बाबा । २ ए ना
बचन । ३ मा गुनावा ।
(४) १ रा पुनि बीन्ही ए पुनि बीन्हेसि । २ ए की ।
(५) १ मा मध पूछहि ए मैं पूछी । २ ए है राजबुलारी ।
(६) १ रा ए सी । २ मा सहि ए एक लगि ।
(७) १ ए तहें आपुन हहि बीते । २ ए तुम ।

अर्थ—(१) पेमा का नाम सुनते ही सब बीड़ पड़ें और उठ कर तथा बल्लभ राज-द्वार पर
आ गए । (२) राजा उठकर बेतुलाम बीड़ पड़ा और रानी ने भी सिर-द्वार नहीं संभाला । (३)
आगे हो (आ) कर बारी ने [यहाँ] बुहार (बल्लभ) किया और पेमा का कुसल बताया ।
(४) फिर उसने पेमा की बलिवा बी जिसे चित्रसेन ने लेकर छत्ती से लगा किया । (५) व्याकुल
होकर मत्ता घूँसी है 'तो कितनी दूर [अभी] राज-बुलारी (पमा) है?' "

(६) बारी ने कहा 'यहाँ से डेढ़ कोस दूर एक गाँव है, (७) [पेमा] वहाँ स्वयं बीठी हुई
है और मुझे जहाँसे गुम्हारे स्थान पर भेजा है ।"

टिप्पणी—(१) दुवार < द्वार । (४) पाठी < बलिवा । (७) ठाठ < स्थान ।

[२८६]

राजा सुनत भणत असबारा । ओ जत कुटुब लोग परिवारा ।
ओ रानी बहूँ पालव मान । हरण अनद मयावा बाज ।
तहि पाछे सब शरी सहसी । बालपन मध हुता ज सखी ।
नगर छत्रीयो पनि गवाई । पमा माउ मुनन मन पाई ।
हय पहर ओ पड़ी बबारी । बल्लभ राउ आगे मा बारी ।
बलि सो दवग बलि सो परी बलि सो मिमिग जय ।
तन बलि मन बलि जोउ बलि पन बलि जग बलि गंध ॥

पाठान्तर—(१) १ ए भी । २ ए जो ।

(२) १ मा रानिगह । २ ए के पामा माजी (<पामे फारसी लिपि) ।
३ मा बपाए । ४ ए बाजी (<बाजे फारसी लिपि) ।

- (३) १ ए पाउं मर। २ ए मरेरी। ३ ए मरगरी। ४ भा मरी मंग ए मंग माय जो।
 (४) १ ए छरीया पीत। २ ए मरार् म जा आइ। ३ ए मर। ४ भा मर ए उठि। ५ ए पाइ।
 (५) १ भा भै रा म यह मर नरी है। २ ए मरगरी बारी भा मरी मरगरी ए परी जगरी। ३ भा मरग ए मरग। ४ ए मी।
 (६) १ भा मरि मरि जीउ जब मर ए मरि मरि मर ए मर।
 (७) १ ए म मर मर नरी है। २ ए मर। ३ ए म मर मर मर है।
 ४ ए ए म मर नरी है। ५ ए मर।

अर्थ—(१) राजा [यह] सुनते ही सवार हुआ और जितने कुन्नी लोठ (प्रजा जन) तथा परिवारी थे [वे भी सवार हुए] रानी के लिए उन्होंने पासबी सटाई और हथ तथा धानर के बपाये बने। (२) [राजा ने] पीछे [पसी की] सब सटेलियाँ चली लीं धान्याबाया से उसके साथ सभी हुई थीं। (३) मर में समस्त छत्तीस पावनी—रियाँ थीं; वे सब बनी का नाम सुनते ही डोड़ पड़ीं। (४) छोड़े पावरों (मर-मरगरी) से सजाए गए लीर उन घर मरगरीयाँ पड़ीं और बारी रागा से भागे होकर बसा।

(५) [वे सब सोचते बसि जा रहे थे] 'बहु दिन बसि है यह घड़ी बसि है यह (सम) बसि है जब [पसी से] मिस्र हो (७) [उस मिस्र के लिए] लन बसि है मन बसि है बीर बसि है मन बसि है संतार बसि है और सब [मुछ] बसि है।"

टिप्पणी—(१) मर < मरि < मरग = मरग। (२) पावर < पवर। मरग < मरगरी < मरगरी। (३) पीनि = मरगरी के बचन पर उपहार-मुग्धता पाने वाली जानियाँ। (४) पावर < पवर [६] = मर मरगरी।

[२८७]

पमहि आइ मिला^१ परिवार^२। होइ^३ लागि मरछावरि^४ मार^५।
 मर^६ पिता पा^७ लागि बारी। मरग^८ मित्री मो द^९ अवबारी।
 मरग^{१०} आइ मर^{११} मित्री^{१२} गहला। मरग^{१३} मर माय जो^{१४} मर^{१५}।
 फुनि^{१६} गावनि मर^{१७} बर^{१८} आइ^{१९}। पाउ^{२०} लागि कै^{२१} मित्री मयाइ^{२२}।
 मर^{२३} पीनि^{२४} छामो^{२५} जाती। मन मर^{२६} मर मर^{२७} गरी।
 मरग^{२८} मयावा^{२९} मर^{३०} दिमि मरग^{३१} मर^{३२} मरग^{३३}।
 होहि उछाह मरग^{३४} कोराहर^{३५} घर घर मरग^{३६} ॥

वाक्यार्थ—मा प्रति इनके पूर्व गठित है।

- (१) १ मा भा मिनेउ। २ मा ए भा मरगरी। ३ ए मिने। ४ ए मरगरी। ५ भा मरग ए माय भा मरग।
 (६) १ म भा ए म मर। २ भा म भा मर मर मर।
 (३) १ मा म मर मर मर है। २ ए मिनी। ३ भा मरी मर भा ए मर मर मर।

- (४) १ रा ए पुनि। २ मा ए सब। ३ ए बेरी। ४ मा आई। ५ ए पीब मा पायें मा पाइ। ६ ए मे यह सख नहीं है। ७ ए मिली बब बाई, मा सबाई रा मबाई (<सबाई नागरी लिपि)।
 (५) १ मा मा पबनि ए पीनि। २ ए छटीयो।
 (६) १ मा ए हवित मा हुरित। २ मा सब।
 (७) १ मा होइ उछाह कस्यान कोसाहल ए होइ कस्यान कोसाहल मा होइ लाय कस्यान कोपहर रा भएऊ सुसब कोसाहल।

अर्थ—(१) येमा से [उसका] परिवार जाकर मिला और स्त्रीछावर का बरना (उबारा) होने लगा। (२) बालिका (येमा) माता-पिता के बरनों से लयी अर्गों को बहु संकवार बैकर मिली। (३) तबन्तर [उसकी] के समस्त लहेलियां जाकर [उससे] मिली जो लड़कन में उसके संय-साब छोली हुई थी। (४) तबन्तर पाली हुई समस्त बेरियां आई और के सब [उसके] बेरी से लगकर [उससे] मिली। (५) [तबन्तर] छसीसों बालियों की पीनियां (मंगल अबतरों पर पुरस्कारादि पाने वाली जातियों की स्त्रियां) आई जो सरीर पर बबन तथा सिर पर सेंदुर से रंजित थी।

(६) नगर में बापी और बबाबा हो रहा था और समस्त परिवार हवित हो रहा था तथा (७) उरसाह (उत्सव) कस्यान (स्वस्ति-याह ?) कोसाहल और मंगलाचार पर-पर में हो रहे थे।

टिप्पणी—(१) नेछाहल < बिबण्ड [रे] + बबनी = उबारी या बारी जाने वाली बन्तुनी की राधि। (२) बंकवारी < बकपासी = बालियन। (३) बेरी < बेडी < बडी = शाली गीतपनी। (४) राह < रस < रबन = रंजित। (५) बबाबा < बडाबल < बर्मान = ह्योत्साह मूषण बाध। (७) उछाह < उछाह < उत्साह। कोपहर < कोसाहल।

[२८८]

बिब्रसेनि^१ फुनि पुछ^२ वारा। बेह^३ सोहि^४ दिण्डमौल^५ निस्तारा।
 कइ^६ दानों बस हुतें छड़ाई^७। मोए मुकुति^८ बसैं तुम्ह^९ पाई।
 कछहु मोहि ममुसाइ सो बाता। जसैं सोहि मा राहिन^{१०} बिधाता।
 दोसर^{११} गम जोनरत^{१२} आई। रावन हनि क^{१३} मिय^{१४} छड़ाई^{१५}।
 अय कहु बीन सो माग्गी तोरा^{१६}। जइ अधिअर^{१७} जग कोन्ह अजोरा^{१८}।
 सुय दरमन विनु मनमिह जगत रहा जो अधिआर^{१९}।
 कहु कहि ब पुरपारथ भणउ एम^{२०} उजिआर ॥

नागना—का है उर्दूत इनीय या मृतीय अर्द्धाधिया परम्पर ग्यानामर्ति है।

- (१) १ मा बिबनइनी। २ मा पूछे गुनि मा मा फनि पूछी ए पनि वृष्टी।
 ३ ए के। ४ रा तुम्ह ए मोहि। ५ मा दिण्ड मोश ए रागम बनि।
 (२) १ ए के। २ ए पनु (< बम प्रारमी लिपि)। ३ मा ए छोड़ाई।
 ४ मा मोए मुनि। ५ = तुम्हें।
 (३) मा मा कहता हैवे नाहिमा मा जाने मोहि भी रहिन रा जस मोहि
 गतिन भएउ ए बीगे भी मो रहिन।

- (४) १ मा दुमरे न मा रोगर न । ३ ए रावन हरी ओ मा रावन इति त्रि
मा रावन इति नै । ४ मा मा मीम ए निमा । ५ मा ए छोडाई मा छोडाई ।
(५) १ मा सारवी तीरा मा मो मारवि तीरा ए निम्मा ठाठाग । २
मा जइ बंधार, ए जो भँवार । ३ ए इबार मा भजोग ।
(६) १ मा मा जग जो भहेउ भँवर (अधियार—मा) ए जमन हन जवार ।
(७) १ मा हँ । २ मा भएउ जो जम ए मी जेम ।

अर्थ—(१) चित्रसेन तबनंतर बाला (पेसा) से छुटने लगा 'तुम्हें मौल और निस्तार किसने दिया ? (२) किसने तुम्हें बावब के बस में से छुड़ाया और तुमने मौल-मुस्लिम कैसे पाई ? (३) मुसल संप्रसाकर वह चली बहो कि बिपत्ता तुम्हें किस प्रकार बलिष (अनुबल) हुआ । (४) [समझा है कि] दूसरे राम आकर अवतरित हुए, [जिन्होंने] रावब (बावब) को मारकर सीता (तुम) को छुड़ाया । (५) अब बताओ कि तुम्हारा वह सारवी कीन है जिसने [हमारे] अंधकार-पुर्ण जगत् (जीवन) को प्रकाश-पुर्ण कर दिया ।

(६) तुम्हारे बसनों के बिना हमारे पैरों के लिए जो जगत् (जीवन) अंधकारपुम या (७) बताओ वह किसके पुस्कार से इस प्रकार प्रकाशपुर्ण हो गया ?"

टिप्पणी—(१) बारा < बाभा । भोग < भीम । (२) दाहिन < दगिप = अनुबल । (३) बाटा < बता < बाती ।

[२८९]

पसा लागि पिता सा' बह' । कुंवर एक मार' खय' अह' ।
महावीर कुरुवन ओ ग्याता' । सा मधुमासति ब' रग' राता ।
जग' दुग कुंवर ना पाछिर अहा' । मता' पिता सउ' पेम' बहा ।
ओ त्रिमि दानी हनउ' पवारा' । सो मम बहउ' पिता सँउ' बारी ।
ओ जत माहम' बात मबाई' । पम' बहो पितहि' समुझाई ।

अहि धन माह अही म' बिधि कुंवरहि' स आउ ।

बहिउ दुग सभ' आपन ओ आहिउ सुनिउ' मनि भाउ ॥

पाठ्यस्वर—(१) १ ए माग पिता मी । २ भा ए बह' । ३ मा मारें । ४ मा मा त
गय । ५ भा ए अई ।

(२) १ मा मा गिनाता ए मा गाता । २ ए मंग ।

(३) १ ए मा जग । २ मा कुंवर पछिला आहा ए कुंवर पाछिन जग । ३
रा ए मीन । ४ रा ए मी । ५ भा मे पेमै मी है ।

(४) १ रा बानी हरेउ (< हरेउ नामरी त्रिमि) ए रावन हना । २
ए प्रवारी । ३ ए मम बहा । ४ मा मी रा ए मी ।

(५) १ मा जग मग्गा ए मउ माग्गा । २ ए मबाई । ३ भा पेसा । ४ मा
रग पिता ए बग रिमि ।

(६) १ मा बनगई में बनीउ मा बनगई में बारी भा बनगई में मी बननी ।
२ मा कुंवरहि ए कुंवरहि रा कुंवर ।

(७) १ ए कहेउं बुल सब भा कहेउं समै बुल रा कहेउं सब । २ मा मा
भी मोहिना सुनेउं ए भी मोहि कर ।

अर्थ—(१) पेसा पिता से कहने लगे “एक कुमार मेरे साथ है (२) वह महावीर कुलीन
और जाता है वह मधुमालती के प्रेम में अनुरक्त है। (३) कुमार का जितना भी पिछला कुछ
था पेसा ने [उसे] माता-पिता से बताया (४) और जिस प्रकार [उसने] रामच को लसकार
कर मारा था, वह सब पिता से बालिका ने कहा। (५) उसकी और भी जितनी साहस की बातें थीं
उन्हें भी पेसा ने पिता को समझाकर बताया।

(६) [उसने कहा] “जिस वन में मैं भी [उस वन में] बिघाता [उस] कुमार को ले
आया (७) [उसने] मैंने सब कुछ बताया और उसका [कुछ] सत्य भाव से सुना।

टिप्पणी—(२) रात < रात < रात = अनुरक्त। (३) (५) जेत < जेतिस < दावन् =
जितना। (४) बारी < बालिका। (७) सति < सत्य।

[२९०]

कहिउं बात आपनि^१ सति भाऊ^२ । जिमि दानी मोहि^३ बन ल आऊ^४ ।
औ पुनि^५ सुनिउं^६ कुबर क^७ दाता । जसै मधुमालति रग राता ।
जो म निजु अपन जिय^८ जाना । यह मधुमालति^९ रूप भुलाना ।
सो म सम बर बामिनि^{१०} करी । बात कुबर के जागै^{११} नरी^{१२} ।
औ आपनि^{१३} ओहि^{१४} करि हियारी । बसै नान्हें^{१५} कीन्हि चिन्हारी ।

औ जो गई क बाचा^{१६} मधुमालति कै^{१७} भाइ ।

सो अब लहि निरबाहति^{१८} सतत^{१९} दुइ जिहि आई^{२०} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहेउं । २ ए आपन रा लपट नहीं है । ३ मा मा माया ।
४ ए दानी मोहि । ५ मा मा आया ।

(२) १ रा ए पुनि । २ रा सुनिहुं ए सुना । ३ मा की ।

(३) १ ए सो मैं आपन जित की । २ ए मधुमालति के ।

(४) १ ए बाग सब मोहि (‘बाग’ परबनीचरण्य में जाता है) मा सब
मधुमालति । २ ए सब आने मा कैं आएँ । ३ मा बानी ।

(५) १ ग अनी । २ मा बीग मा इन्ह (वा ‘एहि’) ए मोहि ।
३ मा नत्रउं बीगिह जिमि जमनि ए कहेउं बीग जिमि जमि ।

(६) १ मा औ यह कै बाया ॥ जो ग^१ जो बाचा रा जो मोहि दुइ बाचा ।
२ मा ए की ।

(७) १ मा मा ॥ निरबाह । २ ए भति । ३ मा दुइ जिमी सोभाई ए जम
बुदमा^१ मा बुदमि बह^२ मिमि जाइ ।

अर्थ—“(१) [उसने] मैंने सत्य भाव से अपनी बातें कहो जिस प्रकार रामच धने वन में
जाया था (२) और फिर कुमार की बातें सुनी, जिस प्रकार वह मधुमालती के प्रेम में अनुरक्त
हुआ था। (३) जब मैंने अपनी-जति अपनी वन में जान लिया कि वह (कुमार) मधुमालती के रूप

(सीखपें) पर बूला हुआ है (४) तब मैंने [उत्त] थपट कामिनी को समस्त वार्ता कुमार के मागे मुकमा कर रही (५) और मैंने (बताई) अपनी और उसकी सीहाबिन्दता जिस प्रकार बचपन में उससे मैंने परिचय किया था।

(६) और [बताई] उत्त बचन-बद्धता की [बात] जो मधुमासती की मां [मिरी मां से] कर गई थी (७) और यह [बताया] कि वह अब तक [प्रत्येक] द्वितीया को सर्वत्र ग्राहर उसका निर्वाह करती है।”

टिप्पणी—(१) (१) बात < बता < वार्ता। (२) सति < सत्य। (३) रात < रात < रात = अनुराग। (४) जी < जड < यदा। ती < तड < तदा। (५) मनन < मनन = मर्क निगन।

[२९१]

सुनत कुंवर मधुमासति^१ बाता । हरलित भएउ पीत मठ^२ राना ।
सुमनहि परा^३ पाठ^४ र मोर^५ । कहसि जीउ निउछावरि^६ मार^७ ।
कुवरि चाह^८ म बनहु न पाएउ^९ । आज कुवरि^{१०} तुह माहि जिमाणउ^{११} ।
अथ जो तोहि^{१२} बन छाहो^{१३} बारी । लाज^{१४} जननि पद^{१५} बन्ध गारी ।
ओ त^{१६} मधुमासति क^{१७} सहस्री । तोहि^{१८} बने^{१९} बन तजो अवली ।
राकम मारि मोहिल आणउ^{२०} अपन घर बीमाइ^{२१} ।
आदर मान बखु ओहि^{२२} बेराओह^{२३} मोरबचा ब भाइ^{२४} ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा कामिनि की ए कामिनि की। २ मा पिता मुनि रा मा पीन मा ए पिता मा।
(२) १ मा मुने परेउ ए मुने परा। २ मा मा पात, ए पात। ३ मा मोर। ४ मा नही सी जोउ मोर आरती मा बनेमि जीउ मोर बारी ए नही जीव मोर आरति। ५ मा ताग।
(३) १ मा ए गौर। २ ए पावा मा पाएउ। ३ मा ए भग्न ती। ४ ए मोहि जिमाणा।
(४) १ ए ताहि। २ मा छाही। ३ ए लाजी। ४ मा नही (< नही)।
(५) १ ए ओ रा जी नू। २ मा की ए बेरि। ३ ए तोहि रंग।
(६) १ मा आउ मा ए आवा। २ ए अपने बड बीगाउ मा जाने व (अथवा भी) बीमाइ।
(७) १ मा ररु एति ए करहु बेकि। २ ए और मार बाबा क मा मा मा मोर बचा वा भाइ रा ओ मोहि बचा वा भाइ मा और मोर बाबा गुवाइ।

अर्थ—“(१) मधुमासती की वार्ता सुनते ही कुमार हर्षित हुआ और वह पीले (रक्तहीन) से लाल (रक्त वर्ण का) हो गया। (२) [उत्ते] सुनते ही वह मेरे बरों पर गिर बड़ा और [उत्ते] बड़ा “यह जीव मैंने [हेतु] ग्योछावर है। (३) मैंने कुमारी का लकाचार नहीं नहीं पाया था; आज ही, ये कुमारी मुझसे [उत्ते गुमाकर] मुझे जीवित किया। (४) अब यदि ए कालिका मुझसे मैं बन में छोड़ दूँ [और बला बाढ़ें] तो [मेरी] अपनी सज्जन होगी और

मेरे दुल को वाली लगेयी । (५) भीर (फिर) तुम मधुमालती की सहेली हो, (इसलिए) तुम्हें बन में अकेली कैसे छोड़ूँ ?

(६) [कस्तुरी] रातस को बारबार बुझे वह अपने बल-व्यवसाय (पुरुषार्थ) से [यहाँ] लाया; (७) उसका आबर-मान करो [क्योंकि] वह मेरा बचन का भाई है (उसे मैंने बचन देकर भाई बताया है) ।

टिप्पणी—(१) बाठ < बठा < बाठा। रात < रत < रत्न = तास। (२) निद्राउठि < निद्रा [दि०] + अबली = उठारे (बारे) जाने वाले पदार्थों का समूह। (३) बीमाइ < व्यवसाय = पुरुषार्थ।

[२९२]

चित्रसनि सुनि मति पठावा^१ । आबर क कुंवरहि लै आवा ।
उठि राज गहि^२ अकम लावा । अपने निकट^३ पाट बसावा ।
बहसि^४ तोरि का^५ अस्तुसि सारौ । जित अति निश्चित^६ लाज निवारौ^७ ।
राजबुनर^८ पुरुषारथ तोरै^९ । गएउ जीउ घट अएउ मोरै^{१०} ।
निछु विकल्प जनि जिय मह^{११} मानहु । राज पाट आपन क^{१२} जानहु ।
जसैं पिता राज^{१३} घर रहतहु तसैं^{१४} इहाँ^{१५} रहाहु ।
दुल उवास बराग छाड़ि^{१६} चित खलहु^{१७} कलि कराहु^{१८} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा फनि महवा बुलावा ए ती महव बोलावा भा कुनि मंय (अबवा मतिहि) पठावा।

(२) १ मा राजै यै ए कै गहि। २ ए मा अपने। ३ मा ठाव।

(३) १ मा बहेउ मा बहेहि। २ ए का वेहि। ३ मा जीउ सती की चित जीउ कथिन है। ३ मा ए लाज नवारौ (< निवारौ फारसी निधि)।

(४) १ मा हुआ ए हुआ। २ ए सीरी (< तारे फारसी निधि)। ३ मा क्या जीव घट आएउ मोरै, ए क्या जीव घट आहै मोरी रा का सो जीउ घट आइय मोरै।

(५) १ मा कुछ बिस्व चित माह न ए तिछु बिस्व व मन मी भा निछु बिस्व चित माह न ए तिछु बिहार जनि जिय महं। २ मा सम अपना कै भा जानन सब रा अगली कै।

(६) १ ए जैन। २ मा मुनेतेहं मा गुण रहतेह। ३ मा तैमोहि। ४ मा अबहु।

(७) १ ए मे यह गद्य नहीं है। २ ए छाड़हु। ३ मा कराहु।

अर्थ—(१) [यह] गुनवर चित्रसेन ने मंत्री को भेजा जो आबर करके दुनार को लिया आया। (२) राजा ने उठकर भीर वरजुनर उले अंक से लबा लिया तथा सिंहासन पर [उसे] अपने निकट बिठा लिया। (३) [राजा ने] कहा 'तुम्हारी क्या खुति बचे? केवल धर्मचिन्त (को कुछ) अपने भी में लज्जा की उत्पत्ति निवारण कर रहा हूँ। (४) है राजबुनार, तुम्हारे

पुनःपार्श्व से जो जीव चला गया था वह मेरे घट (शरीर) में आ गया। (५) अबने मम में कुंठ भी निरस्त न करो (अप्यया न समस्यो) [मेरे] राज्य और सिंहासन को अपना करके रखो।

(६) जैसे तुम [अपने] पिता हैं राज्य में रहते वैसे ही तुम यह कहो (७) और बिल से कुछ उदासीनता और बेरुचि छोड़कर जैसी और बेलि (आनंद) करो।

टिप्पणी—(१) यति < मजिन्। (२) पाट < पट्ट = विद्यामन। (३) अनिनिचिन्त < यतिनिचिन्त = जो कुछ। (५) विकल्प < विकल्प।

[२९३]

ओ जो किछ^१ जिय मह^२ हूँ^३ बाता । सो प^४ मरइहि आनि बिद्याना ।

ओ पमा^५ मम राजकुसारी । सतत करिह^६ मम तुम्हारी ।

और जत^७ परिजन ह मोरा^८ । अस जानहु^९ सभ ममक लाग^{१०} ।

राज निकट^{११} एक मदिल^{१२} सबारा । आनि कुंवर कह उगहि^{१३} उगारा ।

सम^{१४} मिलि कर^{१५} लागु^{१६} सबकाई । मनु बिलब ओ कह^{१७} न जाई ।

कुंवर सदा बरागो मधुमालति के नह^{१८} ।

कया^{१९} इहां जित सहवा^{२०} जा सठ^{२१} लागु सनह^{२२} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा और जो कुछ। २ ए है मम की। ३ मा कनी ए पति।

(२) १ रा सो निज करइहि।

(३) १ मा ओ जत मम मा ओ जन मम ए ओ जन परिजन। २ मा मोरे। ३ मा जानेहु। ४ मा ए मम। ५ रा मोरे।

(४) १ ए ममर। २ मा मा मदिल। ३ मा मा तेलि टाह ७ तहि टाव।

(५) १ मा मम। २ ए करे। ३ मा लागि। ४ मा मनु बिलबे मर बनहु मा मनु बिलबे इमह मतहु।

(६) १ मा मनेह।

(७) १ रा कुंवर जीउ तत्वा निज मा बाया इहा जीव तहुवा ७ बाया इहां जित उहवा। २ ए जानी लागु मनेह मा जानी मायी नह।

अर्थ—“(१) और जो कुछ [तुम्हारे] भी मैं बाता हूँ उने ता बिद्याता लाकर दिलाएगा ही (२) और मेरी राजकुसारी ऐसा सर्वत्र तुम्हारी सेवा करेगी (३) और जिनने मेरे मर्यादित हैं [उन्हें] ऐसा समझो कि [कि] सब तुम्हारे सेवक हैं।” (४) राजा है [यह कह कर अपने मम के] निकट ही एक मदिल (मम) को लजाया, और लाकर कुंवार को वहीं (उन्को में) उगारा (बढ़ाया)। (५) सब [राज-परिवार आदि] मिलकर [कुंवार की] सेवा करने लगा कि संभव है [कुंवार इत सेवा के कारण] सब जाने और वहीं [अप्यय] न जाने।

(६) [किर भी] कुंवार मधुमालती के स्नेह में सर्वत्र बिरक्त रह्या; (७) उसकी बाया [अप्यय] यहाँ भी बिनु जीव वहाँ (उसके पास) था जिनने उसका स्नेह लगा हुआ था।

टिप्पणी—(१) बाप < बापा < बाप्रा। (२) ममन < ममन = निम्न ममन। (३) उत < उत = वहाँ। (७) कया < बाया = शरीर।

एहि^१ बिबि गए^२ कुंवरहि दिन चारी । बिरह^३ क^४ आगि हिमें^५ परबारी ।
 परमहि राय बहसि सुनु^६ वाला । मो तन उठी^७ बिरह^८ क^९ ज्वाला^{१०} ।
 अग्या दह^{११} मोहि जो वारी^{१२} । दूँडो^{१३} जाइ सो पम पिमारी^{१४} ।
 सुठ^{१५} भाग जागि मकु जाही^{१६} । परगट मिल^{१७} जो गुपुत त्रिय माहीं^{१८} ।
 बिरह^{१९} आगि हिय तिल^{२०} न बुझाई^{२१} । अमर अगिनि बिरह^{२२} तन लाई^{२३} ।

बदिठन जागि बिरह^{२४} क^{२५} तिल तिर^{२६} दह^{२७} सरीर ।

मुनि न जाइ तसि^{२८} पमा^{२९} दुमह^{३०} पम क^{३१} पीर ॥

पाठांतर—(१) १ ए मा एहि। २ ए में यह शब्द नहीं है। ३ ए आगि पुनि हीबर
 भा अगिनि फुनि हिये मा अगिनी फुनि हीजा।

(२) १ ए राउ उठा सुन। २ मा भा मम त्रिय उठी ए मम तन उठी।
 ३ मा ए की। ४ ए जाला।

(३) १ ए जे मुह बज गरी। २ मा बूझी ए बूझी। ३ मा ए पिमारी।

(४) १ भा मूठी। २ मा भाप्य आगि मोर बाही ए भाग बाहि मकु जानी।
 ३ ए जो राख समानी।

(५) १ ए बिबि बगि न तिल भा बिरह दगप दिव तिल भा बिरह दग
 बीमल ल। २ ए न बोलाई। ३ ए अब प्रगट। ४ भा बिरह त्रिय
 लाई, ए बिरहे त्रिउ लाई, भा बिरहहि जपाई।

(६) १ मा अगिनि बिरह की भा आगि बिरही (या 'बिरहे') के ए आगि
 बिरह की। २ भा बहति।

(७) १ मा भा सही न वारी ए बहू न वारी। २ ए बिरह हुए (पूर्व
 धर्मी चरण मे 'बिरहा' के आगे ऐ पुनर्बलि है)। ३ ए उठा रा दोसर।
 ४ मा प्रेम की ए प्रेम की।

अर्थ—(१) इस प्रकार कुमार को बार दिन ही गए, [तब] बिरह की अग्नि उसके हृदय को
 जलाने लगी। (२) राजा (राजकुमार) ने वेसां से कहा "हे वाला मुनो; मेरे शरीर मे बिरह
 की ज्वाला उठी हुई है; (३) [मत्त] यदि है बालिष्ठा मुझ आता को तो उता प्रेमप्रिया को बाहर
 नई। (४) संभव है कि मेरे लीए हुए भाप्य जग [ही] जावें और वह मझे प्रपन्न मिल जावे की
 [मेरे] मन में गुप्त है। (५) [मेरे] हृदय में बिरह की अग्नि तिल (तनिक) भी नहीं बचा रही
 है; बिरह ने [मेरे] शरीर में अमर अग्नि लगा दी है।

(६) बिरह की जलित अग्नि में [मेरा] शरीर तिल-तिल (थोड़ा-थोड़ा करके) दग हो
 रहा है; (७) हे वेसां जैती बुरतह प्रेम की बीड़ा [होनी] है जैती [अप्य मुनाई नहीं बढ़ती
 है।"

टिप्पणी—(१) जी < जउ < यदि। वारी—बालिष्ठा। १(४) गुना < गुन = मोसा हुआ।
 (७) पीर < पीडा।

[२९५]

मुनि१ यह२ बाग कुबर्णि३ दुग मारी । बहमि कि० अब० कन होहु दुमारी ।
बहिउं भन्० तुम्ह आगे माग० । सो मन्० गम्ह बिन हुने० विमाग० ।
बालहि० दुन्नि आहु० ओहि० पारी० । आइहि जननि माय मो बारी० ।
वारी मह० चित्रमारी० जहा । तुम्ह० परमान ग० मन्त्र तहा ।
हम० और वह मिलनहि० मिनि जह० । मेल मिमून चित्रमारी० जह० ।

जो उपाजहि परिष तिसु तुम्ह मउ० । पाछिलि प्राति० सभारि ।

महर्जि० तूबो जना० मिनि जहहु० । तुम्ह० ओ० राजकुवारि० ॥

- वाक्यम्बर—(१) १ ए पवि। २ मा मा ए वन्। ३ ए कुबर्णि। ४ मा कनारी
मा ए कनारी ('कुबर्णि' के साथ 'कनारी' और 'कनारी' में पुनर्गणित है)।
५ मा मा बहमि (बहमि रि—मा) ए नहै। ६ मा बाग।
(२) १ मा बहिउं भग मा बहिउं भग ए बनेउं दुग। २ ए नोहि जागे।
३ मा मा मारी। ४ ए गो महु तुग मा मोमन तुग न मो मुग। ५
ए हुने। ६ मा मा विमारी।
(३) १ मा ए बालि। २ ए दुन्नि अहै। ३ मा मा ओहि बारी ए उग पारी।
४ मा अहै। ५ मा जननि मलि बर नारी ए जननी मलि दुदारी मा
जननि माय बर नारी।
(४) १ मा बारी माह ए बोह हम। २ ए चित्रमार्ति है मा चित्रमारी।
३ ए तुह। ४ मा मै ए मै।
(५) १ मा मा ए मै। २ ए जो बोह मिलन। ३ मा रीहरी ए रीह।
४ मा मा मेलन मिसु ए मेलन मिसु। ५ मा चित्रमारी। ६ मा
ओहरी ए लगी।
(६) १ मा मा जो उपाजहि परबे तुम्ह मेरी (मरी—मा) ए जो उपाजहि
उन्हे तुम्ह परबे मरी। २ मा बाग।
(७) १ मा महर्जि। २ मा दुमी जन ए दुमी न जन। ३ ए मा
जैहि। ४ ए तुह। ५ मा और। ६ ए ए कुमार्ति।

अर्थ—(१) यह बाग तुमकर दुमारी की मारी कुल [हृमा], और उमने बह, "अब कहां
(बनो) दुमो हो री हो? (२) मैंने [तो] तुम्हारे आगे माग माग भेद बह दिया बा [चिनु] उसे
संजगल तुमने बिल में बिस्मृत कर दिया। (३) बल द्वितीया को उम [के आगे] की मारी है
[मा: बल] बह बालिका मा के साथ [एह] आणी। (४) बालिका में अह चित्रमारी है
प्रमाण में तुम बह प्रारंभ बंद आया। (५) मैं और वह मिलने ही मिल-मिल आएंगी और लेन के
मिल (बहाने) मैं चित्रमारी में जा आयेगी।

(६) यदि पिछनी प्रीति का स्मरण कर उमम और तुमने परिचय उमम हृमा (७) तो तुम
और वह राजकुमारी दोनों अब लज्ज हो में मिल आओगे।"

पिप्पली—(३) बारी < बालिका। (४) बारी < बालिका। (५) मिसु < मिस = बालिका
उम बालिका।

अनु तुह हौं धरि^१ नाह उपाई^२ । बहेइ^३ बि बलु उठि बलहि^४ जाई ।
 जागि उठिउ^५ कोइ माय न बारी । रोइउ पालि^६ टफारि^७ गुहारी^८ ।
 एहि^९ अतर बा दसौ बिधि परसन^{१०} भा भाइ ।
 दुख क^{११} रनि अघरी^{१२} सिनु^{१३} मह^{१४} गई बिलाइ^{१५} ॥

पाठांतर—(१) १ मा सति। २ मा पूछी ए पूछे भा पूछा।

(२) १ मा भा सुमिरि ए गोरि। २ मा रहिओ (<रहा: कारमी निमि?) ए रही।

(३) १ मा भा ए अति दुख अहेउ (रहा—ए) दुनी जित (जिब—ए) ।
 २ मा देखिओ (<देख्यो पागनी निमि?) ए देखा। ३ मा मोइ मपन ए मो राना।

(४) १ मा भा तैं मोहि धरि। २ रा उठाई। ३ मा बहे ए करा।
 ४ मा लेलैं बा ए गेलैं।

(५) १ ए उठी। २ मा भा ए पाग। ३ मा भा रोइ पानी ए रोइउ पालि। ४ ए टफोरि। ५ मा भा गुहारी।

(६) १ मा एहि। २ ए प्रसन्न।

(७) १ मा ए की। २ ए बबारी। ३ रा छिन। ४ ए मा। ५ मा ए बिहाइ।

अर्थ—(१) जब बालिका ने शपथ देकर पूछा पर्या [बह] बार्ता कहने लगी। (२) [उत्तरे कहा] “एक दिन कुछ ब का स्मरण कर मैं रोई और कुछ ले छो रही; कोई भी पास में नहीं था। (३) क्योंकि मेरा जी आत्यधिक दुःख में था, इसलिए मैं स्वप्न में तुम्हारा मुँह देखा। (४) [देखा कि] मानो तुमने माझों से पकड़ कर मुझे पक़ाया है और तुम बह रही हो ‘बसो उठो हम बसकर चले।’ (५) मैं जाग उठी किन्तु हे बालिका कोई धीरे साथ (पास) नहीं था [इतन्मय] मैं डकार डाल कर (बीरकार कर) और गुहार (रजा के लिये पुकार) [किया] कर रोने लगी।

(६) इसी बीच क्या देखती हूँ कि बिजाता प्रयाप्त होकर आ गया और (७) तुम की अँधेरी रात क्षण में मिली हो गई।”

टिप्पणी—(१) जी < जउ < यग = बब। जात < जात। (१) (५) बागी < बालिका। (१) बात < बधा < बार्ता। (३) जी < जग < यग = बाग्य टि। (६) परमन < प्रसन्न। (७) निम < राग। बिना < बि + नी = मिलीन होना।

[२९९]

निमिग माह गुल^१ बरी तुमानी । दुग क^२ आगि^३ परा मग^४ पानो ।
 नुबर एव राता रग सारो^५ । लो^६ आपउ^७ बिपना^८ निर मार^९ ।
 आहि पुछिउं^{१०} मपन^{११} बिपाता । रोइ यहमि जेम नोहि राता^{१२} ।
 अम दुग नुबर बगानउ^{१३} सोग । मृदि ग गहेउ^{१४} जिउ टाग^{१५} पाग ।

मुनि पुन मोहि जिय^१ परेउ फफोला^२ । मैन नीर मा^३ चिय मिय^४ बोला^५ ।
 पम बाग पाछिलि^६ जति^७ तुम्ह बुद्ध कर^८ यबहार^९ ।
 सो सम^{१०} कहसि रोइ मोहि^{११} आगे पम धाय^{१२} बिसभार^{१३} ॥

पाठान्तर—भा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं भर्त्तातियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए गो। २ मा की ए के। ३ मा बनिनि। ४ मा मा परेउ।
 ५ मा सिर।
 (२) १ ए तोरे। २ मा केइ। ३ ए बाबा। ४ ए मोरे।
 (३) १ ए ताहि पुछीं। २ मा बेइ भयति। ३ ए जैमी होल।
 (४) १ मा बगानीउ ए बगाना। २ ए रहा।
 (५) १ ए म यह दण्ड नहीं है। २ मा भसोभा ए भर्म मोला। ३ ए बी।
 ४ मा बलबल मा बकबक (<बिषयिग कागमी गिनि ?) ए तपरा।
 (६) १ उ पाछिनी। २ उ जेति मा मा अव जाती ए गर। ३ ए तुह रग
 को। ४ मा यबहार।
 (७) १ मा यब। २ मा मा ए मोहि आग (मागे—भा) रा मोहि।
 ३ ए रा पाव। ४ ए बिसभारि।

अर्थ—“(१) बल भर में वह पुन को पड़ी तुल गई (जा पट्टी) और तुल की अग्नि पर तुल का पाणी पड़ गया : (२) तुम्हारे प्रेम में अनुरक्त एक दुम्हार की बिधाता मेरे तिर (पाठ) से आया। (३) उसको मैंने बिधाता की अवस्था देखकर पूछा। तो उसने रो रोकर बताया जिस प्रकार वह तुम पर दारुणता हुआ था। (४) दुम्हार ने तुम्हारा (तुम्हारे बिरह का) दुःख इस प्रकार बताया कि [उसे] मुनकर मेरा जो स्वप्न पर नहीं रहा (बिबलित हो उठा)। (५) उस दुःख को मुनकर मेरे बी में जड़ोता पड़ गया और [मेरे] मैत्री के नीर (अधुओं) से मेरी बोली बिली बिप्पी हो गई (बीगकर शरीर से बिपक गई ?)।

(६) पिछली जितनी प्रेम-वार्ता की और तुम बोली का [जितना भी] व्यवहार [हुआ] था (७) वह सभी उस प्रेम-याव से अछेत [दुम्हार] ने मेरे जागे रो-रोकर बहा।”

टिप्पणी—(२) (१) राग < गगन = अनुकूल। (३) मगन < गगन। (४) बगान बरगान < व्यावधान = बगाना। (६) बाव < बला < बार्ता। वन < वनिभ < पारत = विभा बवगन < प्यरागर।

[३००]

म वणि बलि तुव परमहू करो । जिनि कान्ही मोरी दुग को^१ करो ।
 मउछाउरि^२ का मारो^३ तोरी । जठि परमान् मूनि भद्र^४ मारो ।
 दुग समु^५ बूझति म^६ बारो । त^७ मोनि भद्रि^८ आ^९ परहारी^{१०} ।
 तुव परमहू^{११} पर जो^{१२} जिठ बारो । तपहू^{१३} न मोग^{१४} न ता^{१५} पारो ।
 जो न ब पर चिग रावन^{१६} तोहो^{१७} । जेगे माग होन बनि^{१८} मोहो ।

सहस्र जीउ मिच्छावरि आनि^१ करौं में तोरि ।
जहि परसाद विधात मोस मुकृति दिए^१ मोरि ॥

पाठांतर—ए में इस बोहे ने स्थान पर भी बाद के छंद बाका रोहा है।

- (१) १ रा जेहि परसाद कटौ मोहि (गुल परवर्ती अर्द्धांती के दूसरे चरण की दृष्ट्यावली) ।
(२) १ ए नेवछावरि । २ ए मुहुतो भी ।
(३) १ मा समुद बुद्ध मोह ए समुद यो बुद्धि भा समुद बुद्धि माहि ।
२ मा दू । ३ ए गई । ४ मा मङ्गहारी ।
(४) १ रा तुम चरनन ए कुंजरि चरन । २ ए मैं जीब । ३ मा लौ ही ।
४ मा निष्ठा रा निमिष । ५ ए देन में मा तोर दी ।
(५) १ ए चठा तोही । २ ए कैसे । ३ मा होती मोस बही ए होत मोस पर ।
(६) १ मा आली भा एक ।
(७) १ मा विष्य मा किही ।

अर्थ—“(१) मैं तुम्हारे चरणों की बलिहार हूँ किन्तुने तुम की मेरी बेड़ी काट दी । (२) मैं तुम पर क्या ग्योछावर कर जिसकी कृपा से मेरी मुक्ति हुई ? (३) हे बालिका मैं तुम-समुद्र में डूब रही थी और तुम आकर मेरी कर्नधार हुई । (४) यदि तुम्हारे चरणों पर अपने जीब (प्राणों) को बार दूँ तब (तो) भी मैं तुम्हारा [तुम्हारे श्लेष का] एक निष्प (सिक्का) न है सहीँ। (५) यदि कुमार का जिस तुम पर अनुरक्त न हुआ होता तो बंदी [गृह] से कैसे मेरा मोस होता ?

(६) मैं तो तुम्हें सहस्र जीब आकर ग्योछावर करूँ (७) जिसकी कृपा से विधवा ने पुनः मेरी मोस-मुक्ति की ।”

टिप्पणी—(१) बारी < बालिका । कङ्गहार < कर्नधार । (४) जी < जड़ < यदि । मील < पिरन < निष्प = एक पुराना मोमे का सिक्का । (५) (७) मोस < मोस ।

[३०१]

बहुरि मोहि पूछसि समु बारा^१ । तोहि मोहि तस कहु जस बबहारा ।
तो म^१ तुम आपन जस^१ अहा । परिहरि राज^१ कुंवर सउ^१ कहा ।
फनि^१ म आपनि तोरि^१ हियारी । जसि अही तसि बही उपारी^१ ।
सुनि तोर माउ^१ परा^१ मुरुछाई । जिसहर^१ जसा^१ सहुरि जमु^१ आई ।
पुनि^१ ओ जन पिनहि^१ भा ताही । पूछ^१ बाण बहनि^१ जगि माही ।
छारें बिरह मभूता^१ फछें^१ मत अबधूत^१ ।
राजम मारि मोहि ल^१ आवा^१ यनि जमनी^१ जेहि पूत^१ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए माहि पूछमि ना बारो। ० भा तोरैहि बन बहु बा बबहार ए
तोहि मोहि बन बब क बेवहारी भा तोरे एहि बन बहु बा बबहार।
(२) १ ए पमै। २ भा ए जन। ३ ए राज। ४ भा से ए ते छ सों।
(३) १ रा ए पुनि। २ ए आपन छार। ३ भा जैमी माहि तैमी बही बिचारी
ए जमि आहा तमि बहा बिचारा भा जमि जमो तमि बहउ बिचारी।
(४) १ ए नाब। २ भा भा परेउ। ३ भा बिचपरि, ए बहुरि। ४ ए ईमा।
५ ए जा।
(५) १ मा पुनि। २ ए चिन्हि। ३ ए पूछई मा. पूछिमी भा पूछिमि।
४ भा बबह भा बहेउं।
(६) १ भा बिपुना। २ ए बाहि। ३ ए बपुन।
(७) १ मा मोहि रुद ए माहि मै। ० भा मा आणउ। ३ भा मा मो जननि।
४ ए तेहि।

अर्थ—“(१) लदनतर हे बाला तुमने जलसे पूछा ‘तुमसे और उस (बधुमास्तवी) से क्या व्यवहार है? क्या (बहु) बताओ। (२) तब मैंने अपना जितना (ओ कुछ) कुछ का लज्जा छोड़कर तुम्हारे से बताया। (३) लदनतर मैंने अपना और तुम्हारा लीहार बँटा था बँटा छील कर (स्फट) बताया। (४) तुम्हारा नाम सुनकर वह कुपित हो कर गिर पड़ा बाजी उसे बिचबरे (सप) ने काटा ही और उसे लहर आ रही है। (५) फिर, जो उसे बिल में बिल हुआ धुलने पर जलने बँसी बाली भी बताई।

(६) वह तैरे बिट्ठ की राग लपेटे और अबजुत (वोपी) का बैप बाछे (बनाए) हुए था; (७) रासल को मार कर [बही] मुझे [यहाँ] के आया वह जननी बग्य है जितना वह पुत्र है।”

टिप्पणी—(१) बारा < बाला। (२) बबहार < व्यवहार। (३) जल < जलित < बाबु = जितना। (४) हियारी < हृन्पायना = मोहार्थ। (५) उपार < उपचार < उद् + पाट् = रागना। (६) बिमहर < बिचबरे = सप। (७) बाज < बता < बाली। (८) बभुवि < बिभुनि = राग।

[३०२]

मुन पकिन भड^१ गजबमारी । बहेमि मोहि आहि कमि बिचारी^२ ।
बोन^३ बबर बा जानो याना । मोरें रूप बहाँ^४ बह^५ राना ।
दग मोहि बग^६ ओद^७ पावा । ओ बह ओहि^८ मोर नाउ^९ बनावा^{१०} ।
पिना गिरि^{११} म राजबमारी^{१२} । पर पुग्गहि मोहि कमि^{१३} बिचारी ।
ओ मम मना^{१४} पिना मनि^{१५} पाबहि । मोहि जियन^{१६} पमि ठाड^{१७} गड़ाबहि^{१८} ।

अग अत्रम तु^१ पमां बाज गायमि माहि^२ ।
मोहि लगे गोमि^३ ग्राहा मनि^४ मोरें मनि^५ तोहि^६ ॥^७

पाठान्तर—(१) १ ए मा। २ रा काहे रागी बेसि माहि गारी।

(२) १ मा कयल। २ ए कहूँ। ३ मा ए बोह।

(३) १ ए देखी बो- नहूँ मोहि। २ मा मा केर बाही ए के बोह। ३ ए माव। ४ मा मा ए सुभावा।

(४) १ मा गीहै ए छिह। २ भा बारि कुबारी। ३ केस।

(५) १ ए मा माठ रा माठ। मा पाठ बुटिह है २ रा पावै। ३ मा भा जिमते। ४ ए धै गडा। ५ मा गडबाबही ए मरवाहि, रा गढ़ावी।

(६) १ भा ए तै। २ ए वमा नहा ल्याबसि मोहि भा बरबस काह छयाबसि मोहि। ३ मा से पुरे चरण का पाठ बुटिह है।

(७) १ ए काह लोहि। २ ए पठ। ३ ए पठ। ४ ए लोहि। ५ मा में चरण के प्रथम पति एक पाठ बुटिह है।

अर्थ—(१) यह मुझे ही राजकुमारी (मधुमावती) बकरा गई और उसने कहा, “मुझसे जससे बसी पहिचान ? (२) वह कुमार कौन है और उसकी बातों में क्या जानू ? मेरे कम पर वह बड़ा अनुरक्त हुआ ? (३) वह मुझे बेचने कहाँ पाया और जिसने उसे मेरा नाम बताया ? (४) मैं राजकुमारी हूँ और पिता के घर से [रहती रही] हूँ। [अतः] पर-पुरुष से मेरी पहिचान कैसे ? (५) यदि [मेरे] अस्ता-पिता ऐसा पुत्र पावें तो मैं मुझे अस्ता-जी बड़ा पढ़वा दें।

(६) तु ऐ वमा इस प्रकार का अपयज्ञ मुझे क्यों लगा रही है ? (७) मेरे नाम से तेरा [भी] नाम और मेरी लति से तेरी [भी] लति है।”

टिप्पणी—(२) बाग < बसा < बार्ता। रकन < रात = अनुरक्त। (७) लाह < लाप। लति < लति = हानि।

[३०३]

मुह^१ मुजानि औ चतुरि^२ मयानी । कहत बात अगि तू^३ म^४ सजानी ।
बहिउं मपति^५ म तोहि उपदमा । बात कहिय जहि^६ किछु^७ सब^८ मया ।
म बलवति राज घर धिया^९ । कहत राज ताहि^{१०} आह न छिया ।^{११}
तोहि मते^{१२} माहि बार^{१३} हियारी । तो म मही अइसि तारि^{१४} गारी ।
मरा च^{१५} जग ब^{१६} पताग^{१७} । इम्ह^{१८} पुहु^{१९} नम पम बबहारा^{२०} ।

म^{२१} न ननह^{२२} रेगिउ औ मगन^{२३} गुनिउ न माउ ।

ता मउं^{२४} अपजग लावगि जावर^{२५} माउं^{२६} न जानी ठाउ ॥

पाठान्तर—भा म उयवा तीवरी तथा बीपी अर्द्धाभ्यां परस्पर स्थानान्तरित है।

(१) १ मा. मा ए तै। २ ए मुजान ज अनुर। ३ भा मा बसि है ए तै मोहि। ४ ए मे यह मार नहीं है।

() १ भा बहिउं मगो या बहो मगि ए मुनिम गयो। मा बहिउ ए गरी। ३ ए मा। ४ ए मे यह मार नहीं है।

(३) १ भा मा आई। २ ए मारे। ३ भा मा गत छिवा मुन (तोहि—

- मा) भाव न भाई, ए कहत भाव तोरे भाई न हिया ।
 (४) १ मा छाहि सेठी ए छोहि सेठी । २ मा मोरी बर, ए माहि बार ।
 ३ मा मा तोरि अस ए ऐसी छारि ।
 (५) १ मा बरै मीन पचारा ए मा बर मनि (मीन—भा) पचारा । २ मा.
 ग्गह । ३ मा बँसा । ४ मा व्यवहारा ।
 (६) १ रा मैनन ए नैन नहि । २ ए बला । ३ रा खवन मुनिठ नहि (?) नाउं
 ए सुवन मुना ना नाउ भा बी खवन मुनेठ नहि नाउ भा बी खवनम्ह मुनेठ न
 काउ ।
 (७) रा छेहि सों ए छामों भा सेठै ठै । २ रा में यह चख नही है । ३ ए नाम ।
 ४ भा ए में यह चख नही है ।

अर्थ—“(१) तू जानकार बसुर और सत्ताम है [तब भी] ऐसी बात कहते तू लज्जित
 नहीं हुई? (२) मैं [पुरी] सक्ति के साथ (बरसक) तुझे यह उपदेश कह रही हूँ कि बात वह
 कहिए (कहनी चाहिए) जिसका लबलेस [तो] हो। (३) मैं कुलीना और राजगृह की बच्चा
 हूँ [किर भी ऐसी] लज्जा की बात कहते हुए तुझे छिया (अस्पृश्यता की अनुमति) नहीं आई?
 तुलसे-न दाते बालपन का छीहार्द है तब मीने तेरी ऐसी गाली सहन कर ली है। (५) स्वयं (माकास)
 में बरसा होता है और पाताल में कुमुदिनी होती है इन दोनों में प्रेम-व्यवहार कैसा?

(६) मीने [उसका] रूप नेत्रों से नहीं देखा और न अक्षरों से उसका नाम सुना (७)
 तू तो मुझे उससे (उसके निहारे) अपघात लगा रही है जिसका न मैं नाम जानती हूँ और न स्वाम ।”

टिप्पणी—(१) मुजान < मुजान । मयान < मजान । (३) छिया < छित्तु = कन्या ।
 छिया < अस्वस्व (?) (४) हियारी < हृदयालता = छीहार्द । (५) छुई < कुमुदिनी । (६)
 बेवहार < व्यवहार । (६) खवन < अक्षर = बान ।

[३०४]

बान युक्ति ली वह^१ मयानी । महमि यात उत्तर^२ त्रिय^३ पानी ।
 अवन छोर मोहि^४ श्रिय अनु^५ लागा । अम कोइ^६ बर धूरि बर छागा^७ ।
 प्रजहु अननि कोर^८ में खारी । बा जानी कमि^९ पुरप हियारी^{१०} ।
 पुरप न जानी बार नि^{११} सगू । प्रीति बमि बस^{१२} पुरप ब^{१३} हतू ।
 अस अपजम कोइ साउ न कहू^{१४} । भीति दमि क^{१५} चित्र उरेहू^{१६} ।

जसि तुइ बाग यह ममि अनमो^{१७} अमि जग कोइ न बहाद^{१८} ।

निया जाति आजम ब^{१९} याग^{२०} धामह जाइ मयाद^{२१} ॥

वाक्यान्तर—(१) १ मा बुझि कै बहिब ए बुझिनी मही । २ मा एनी बागह उठे ए उगह
 बागह सो भा अमि बागह उगरे । ३ मा निज ए उगरे, भा वै ।

(२) १ ए मोहि । २ भा मुनि । ३ मा ए रा रा कोइ । ४ मा धूरी पर
 छागा ।

(३) १ मा बैर, ॥ कोरा मा कोर । २ ए बर मा बेरी । ३ द्विजारी ।

- (४) १ ए पुनं न जानी बाहरि भा पुनं न जानी म्याम कै। २ मा कैसि।
३ रा का। ४ ए पर पुरन्हि मोहि कैसन हेतु।
(५) १ ए माव नही। २ मा भा लो करिय ए कै करी। ३ ए उड़ी।
(६) भा जसि तै बाव नही ससि मनमी ए जस तै बाव नह्य हंसि भा जैसी
तै बाव नही सगी अनुभव रा जसि तुई बाव कहै सयि।
(७) १ ए पर। २ ए मे यह पण्य नही है, मा फुर। ३ भा बावहि पाइ
न मही ए कुछ वै जानै सोड।

अर्थ—(१) हे लवानी बात समझ लो वह ऐसी बात से स्त्री का पानी उतर जाता है।
(२) तेरा बचन मुझे मानो जित लया। ऐसा भी कुछ का बाया (निराधार कथन) कोई बटता
(करता) है? (३) मैं तो जान (अब) भी जानती के कोड़ में [रहती हुई] बातिका हूँ मैं
क्या जानूँ कि बुध ने सीहारे कैसा होता है? (४) मैं नहीं जानती कि पुष्य काला होता है या श्वेत
और उसकी प्रीति कैसी होती है और कैसा होता है उसका हेतु (प्रेम)। (५) ऐसा अपमान कोई
जिसी प्रकार नहीं लगाता है जिसि देव कर बिज का उल्लेखन करो (आपार-पुनत कथन करो)।
(६) हे लकी जैसी लगहोनी बात तू कर रही है ऐसी जगत् में कोई नहीं कहता है। (७)
स्त्री-जाति अपमान का कोड़ होती है (अपमान उसमें पलता है) और [इस प्रकार की] बातों से वह
मट हो जाती है।

टिप्पणी—(१) (७) कोर < कोड़ = गोत्र। (३) दियारी < हृदयामना = सीहारे। (५)
बेहू < बेहू < कोदुगु = विनी प्रकार। उड़ेहू < उत्तिहू < उरु + तिगु = श्वाशित करना।

[३०५]

सुनत उठर मधुमावति केरा। कामिनि मुन पम हंसि हेरा।
बहुनि मोह न बचतहु। बाला। दगो^१ बोण्हि हनु बहि^२ गाला।
भीगनि हट^३ अब^४ मन पुनाई। मो सेत^५ कप^६ कै^७ बाव नपाई।
ननुगई मोमठ बनि^८ आदहि। पाइ क आये^९ पट छपाइहि^{१०}।
मानहि^{११} बाव छपरि प^{१२} जाय^{१३}। सथा मउ^{१४} थोरी नहि पावे^{१५}।

आनि अंत मउ^१ जानी म गम^२ बाव तुम्हारि^३।
पम कि एउ छपाण^४ बोरो बटुम^५ बाव उपावि^६॥

- वाग्लार—(१) १ ए गीत भै (सुन अगले वरण के मोह न मे) भा गया हनि।
(२) १ ग गीह हार बचतहु ए गीह भै बचनै। २ ए दगो। ३ मा हट
बचने ए है वैहि। ४ ए हाका।
(३) १ ग ए हो भा. आहु। २ ए जो। ३ मा बाहि लो है ए मो लो जो।
४ ए न। ५ भा. मोहू नता न बाव नपाई।
(४) १ मा मयेउ बनिन ए नमाने बनि। २ मा बाई मेउ ए बाइ के आये भा
बाई नता दि। ३ मा बटु पट छपाइहि।
(५) १ मा बाविहि बाट छिरी है ए बाविहि पाट छिरी जो

भा बाग बाठ छंदर पी रा मूठी बाठ छंदरि पी। २ भा बाबई, भा भाई।
३ भा सगिअन का बोरी फाईई, ए मंगी सग की बोरी फाई भा सगी सग
कि बोरी फाई।

(१) १ भा से ए कगि भा सों। २ भा ए मब। ३ भा ए तोहारि।

(७) १ भा छिपहि छिपाये ए छई छपाये भा छपहि छपायें। २ भा भा
बहु पुन ए बहनु न।

अर्थ—(१) मधुमासगी का उत्तर मुससे हो उस कामिनी के मुख को (की ओर) पेमां ने हूँ
कर देता (२) और कह, "तम्मुप होकर कहो तो देखूँ कि तुम किस गाल से बोसती हो। (३)
तुम जब मेरी की पूरता सीप रही हो [जिससे] तुमने मुससे कपट की बात बसाई है। (४)
[मुम्हारी] यह चतुरता मुससे बन आयी जो तुम बाय के आगे पेट छिपा रही हो। (५) अन्य से
असे ही बानों में छप दिया जाए, किन्तु साथी से बोरी नहीं कबनी है।

(६) आदि से अंत तक मैं मुम्हारी सभी बानें बामती हूँ (७) ऐ बावली प्रेम क्या छिपाए
से छिपता है? सब बातों को कह कहो।

टिप्पणी—(१) पुनाई < बूना। (५) आग < अन्य। छ < छद्म। (७) बोरी <
बारि < बानुमी। बाग < बग < बार्ता।

[३०६]

कहहि बात मो सउ^१ मतिमाबा । परिह^२ बहु^३ मोति बर धावा ।

बदन पियर औ लीन मरीरा । परगट तोहि^४ पम क^५ पीरा ।

कहहि^६ कहाँ लहि^७ बाग बनाए^८ । बोरी पम न^९ छप छपाए^{१०} ।

तुद मोरि मली जीय तें^{११} प्यारी । कम न कहहि मोहि^{१२} बात ड्यारी ।

औ नहि^{१३} मोहि पतीजनि बारी । मांगि बउ महिनि तुम्हारी^{१४} ।

मुदरी मांगि कुबर सउ^{१५} कर^{१६} बामिनि के^{१७} दीन्ह ।

बहनि कहाँ^{१८} एहि छाडिहु^{१९} लहु मो^{२०} आपनि^{२१} चीन्ह ॥

वादान्तर—(१) १ भा ए बहु बात माहि (मो—ए) सों। २ भा परिह^२। ३ भा
बहु^३।

(२) १ ए तोहि^४ भा कनिय। २ भा ए की।

(३) १ ए बहनु। २ रा ए कगि। ३ भा मगाए, ए बनाये। ४ ए
भा कि भा की। ५ भा छिपहि छिपाये ए छई छपाये भा छपहि
छपाए।

(४) १ भा भा तू मोहि (मागि—भा) मंगीजीयसों ए तैं जो मरी मारि पम।
२ ए बहो मोति भा बहहि मोहि रा बहनि माहि।

(५) १ ए न (<नहि प्रारम्भी निपि)। २ ए महिनि मोहारी।

(६) १ भा मे ए मों। २ भा मब। ३ भा भा कर ए कक।

(७) १ ए बहो। २ भा ए बहनु (एह—ए) छोडु। ३ ए नेहु जो।
४ ए बागह।

अर्थ—“(१) मुझसे तुम साथ भाव से बात कहो और बहुत बीबास [पर] का बीड़ना छोड़ दो [क्योंकि तुम्हें उससे कभी न कभी नीचे उतरना ही पड़ेगा]। (२) तुम्हारा मुख पीला है और घरीर सीध [अतः] प्रकट हो तुम्हें प्रेम की पीड़ा है। (३) तुम वहाँ तक बना कर बातें करोगी? ऐ बाबली प्रेम छिपाने से नहीं छिपता है। (४) तुम मेरी सखी हो और मुझे प्राणों से भी प्रिय हो फिर क्यों तुम मुझसे [सारी] बातों को छुकर नहीं करती हो? (५) यदि तुम ऐ बातिका मेरी प्रीति नहीं करती हो तो मैं तुम्हारी सहवानी माँग करूँ।”

(१) [यह कह कर] उसने कुमार से मुद्रिका माँग कर [उसे] कामिनी के हाथों में दिया (७) [और] कहा “इसे तुमने वहाँ छोड़ा या? तुम अपनी यह पहचान लो।”

टिप्पणी—(१) मदि < गद्य। (२) गीन < दीन। (३) बीरी < बाउसी < बातुनी। (४) पनीन < पत्तिन < प्रति + द = विरचाम करना। बारी < बालिका। गार्हिनानि < सार्धिनाम = बिट्। (५) मुदरी < मुद्रिका।

[३०७]

जबहा लिम्ति परी सहियानी । दुखी^१ डोर भरि आण्ड^२ पानी ।
 चाहमि बहुत^३ जनन^४ छपाव^५ । बरबम जल वगु भरि भरि भाव^६ ।
 गिन म पम रह नहि^७ गोवा । वह^८ सुवास यह^९ सबरि निछावा ।
 गये पम न रह^{१०} छपाना । उमह मन जगन मम^{११} जाना ।
 पम विरोधन बर^{१२} बिछावा । परगट भा निनु रह^{१३} न मोवा ।
 पाछिमि प्रीति^{१४} मबरि जिय^{१५} मजन^{१६} उपजा^{१७} विरह बिचार^{१८} ।
 मांभि न मकी सामि गिय^{१९} पमा राणिमि^{२०} पालि डकार^{२१} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुख। २ मा मीन आये भरि भा डोर बाण भरि रा डाल भरि आए।

(२) १ ग बहुत। २ मा ज्ञान न। ३ ए छपाव। ४ ए आये।

(३) १ ए गाना भा रहेड नहि। २ मा उरह ए पैह। ३ मा इन्ह ए महु। ४ मा मुमिरि, ए नीरि।

(४) १ ए गन पेम न गन भा राग पम न रहेड। २ ए भा सब।

(५) १ भा प्रम प्रीति नर ए पम प्रीति वा रन रा पम पित्रारे केर।
 २ मा भा मण्ड ए भी। ३ ए जो रन भा निनु रहेड।

(६) १ ए भा पाछिमि बाण ग पछिमी प्रीति। २ मा नीयरी जिय ए मयुति मिड। ३ मा मजन। ४ मा भा उपजड। ५ मा पुरार।

(७) १ भा वर ए भीन। २ ए गरी। ३ भा ए करारि।

अर्थ—(१) जब वह लड़कानी दृष्टि पड़ी [मधुमालती के] बीबी केनों में पानी भर आया। (२) इतना प्यार करके उसके उसे छिपाना चाहता किन्तु उसके मेव बरबस ही भर भर आने लगे। (३) मुखर और प्रेम गार्जित नहीं करते हैं क्योंकि उनमें मुखाण होने है और इनमें स्वरय करते (स्वरय अर्थात् विरोध होता है)। (४) [छिपा कर] रखने से प्रेम छिपा नहीं रहता है क्योंकि केनों के

[माँसुओं से भरकर] उसमें पड़ने पर उसे समस्त जगत् जान जाना है (५) और प्रेम-प्रियतम का बिछोह [एक बार] प्रकट हो गया तो फिर वह भस्मीभूति गोपिन नहीं रहना है।

(६) पिछली प्रीति का जो मैं स्मरण कर (करने पर) भग्न कहते हैं [मधुमालती के मन में] बिछह का विकार उत्पन्न हुआ। (७) [तब] वह [अपने को] रोक म सही और पेम के गले लगा कर डकार (बोकार) छोड़कर रोने लगी।

टिप्पणी—(१) सज्जिबानि < माभिजान = बिह्व। डोम < दोन्म [दि] = पावन नेत्र। (२) बागु < बरन < वन = नेत्र। (३) (५) गाम्बा < गोपिन = छिपाया। (५) बिछोह < बिछोह [दि] = बिछह विषाग। (७) बाँम < वम < लम्भ = निराश करना रोकना।

[३०८]

वर क पम कट छावा^१। हरकी ओ^२ परमाधि बुझावा^३।
 बिछह बिषागलि^४ उननठ बानी। यान कह बिज भग्म भुलानी।
 पूछसि^५ कुवर कहा मा बारा^६। मपने बिछह जा गा माहि मारा^७।
 मपन जागि^८ जो दगड हुरा। मजि मारि नहि ह ओहि बरी^९।
 जो मुग्गी यह करहि जा लोही^{१०}। ल गा मारि आपनि द मोही^{११}।
 अय महि बिछह जागि^{१२} जिय रागिउ^{१३} लाग^{१४} कटुष क बानि।
 माज म कहिउ न बाहु मउ^{१५}। गुपुतमहिउ जिय^{१६} हानि॥

पाठान्तर—उपयुक्त पाँचवा अर्द्धांश रा में नहीं है।

- (१) १ मा छावा^१ वा छावा^१ ए छावा^१। २ ग हग्य और मा हरी कि ओ। ३ बा. परमाधि बुझा^३ मा परमाधि बझाई ए परमाधि बझावा रा परमाध जगावा।
- (२) १ ए व्याकुली। २ ए बिज वर रा बाजिल।
- (३) १ ए पूछ। मा भा बरा (बह—मा) मा कुवर बरनारी ए कुवरहि बरा मा मारी। ३ मा बजने गयेठ मोह मौनुप मारी भा मपन जो यो माहि मौनुप मारी ए मपन बिछह माहि गो मारी।
- (४) १ मा मपन जागि भा जग्ये मपन। २ मा देगी ए बगी। ३ ए ले गो माहि भावन गो फग।
- (५) १ ए है वर लागे। ए मज मोरि न बाहि की दारी भा ले है बारि जानि द मारा।
- (६) १ मा भा मगिनि ए बनि। २ ए रिउ रागा मा रीउ रागड भा जिय रागड। ३ मा. भा जनि।
- (७) १ मा भा लाजग बरउ म बाज मे (बाज—मा) ग ए लाजग बरउ बाज मो। २ मा मरी ए मरा। ३ ए रिउ।

अर्थ—(१) बेनी मे बरबस पला छड़ाया; उसने उसे [रोने से] हटाका (मना किया) और प्रबोधन देकर समझाया। (२) [किरजी] बिहू से व्याकुल [मधुमासती] उत्कण्ठित बापी से और बिल में धम से जूती हुई जाने कहती रही। (३) उसने पूछा “ऐ बातिबा बहु कुमार कहाँ है जो मुझे स्वप्न में [अवने] बिहू से मार गया था? (४) स्वप्न से जागकर जो मैंने अवलोकन करके देखा तो [बापा कि] छाया वैसी नहीं उसकी है। (५) और यह मुद्रिका जो तब [मिरे] हाथ में थी इस बेरी [मुद्रिका] को बह ले गया और अपनी मुठो दे गया।

(६) अब तक मैंने बिहू की अग्नि को लोक (देश) और पुत्र व की कानि (बर्बाद के ध्यान) से अपने जी में [छिपाए] रक्खा (७) लज्जावश किसी से नहीं कहा है और अपने जी में ही गुण रूप से उस हानि को सहन किया है।”

टिप्पणी—(१) परपाय < प्रबायव = जागत करना जान देना। (३) बारी < बातिगा। (४) छेज < छाया। (५) मु बरी < मुद्रिका। ठीउ < ठ < ठका।

[३०९]

कठिन बियाग^१ अधिक जिय^२ पाग। निक्क जीउ जा रह^३ सरीरा।
 बीनि घरी मो अही^४ मभागी। मोहि भाहि^५ पम प्रीति जहि^६ लागी।
 म न जरिउ एकसर^७ सहि^८ आगी। कोन सा जग^९ अहि जीय न^{१०} लागी।
 अब सहि^{११} मुपुन जरिउ सहि^{१२} आगी। अब परगट^{१३} म दहु दिनि^{१४} लागी।
 मुपुन जरी^{१५} बहवा^{१६} कोरी^{१७}। पगगट जरी^{१८} दमो विसि^{१९} हारी^{२०}।
 मोन^{२१} मरुप न जानी बिपन मोहि देगा^{२२} आनि।
 एक निमिग^{२३} जहि बने^{२४} सहिउ जनम मरि^{२५} हानि॥

पाठान्तर—(१) १ मा ए विबाग। २ ए बी। ३ मा ए तरे न मा ठज न।
 (२) १ ए मो भाहि रा जो अही मा बहु अही। २ ए मोहि ताहि।
 ३ ए जी।
 (३) १ मा न जरी अवनरि ए न जरी एकसर। २ मा बेहि मा एही ए जा।
 ३ ए बी। ४ मा भा बीन न ए बेना।
 (४) १ ए लपि। २ मा जरिउ एरी ए जरी जे। ३ रा हा ए जा।
 ४ मा ए बहु दिनि (दिन—न)।
 (५) १ रा बहवा लपि मा बहा सही ए बही लपि। २ मा जरी। ३ मा जगो न जगि। ४ ए दमो दिन। ५ मा मोरी ए बारी मा मोरी।
 (६) १ ए बीन। २ मा देगगलउ ए देगाग।
 (७) १ रा न जान। २ ए बीडि मरा। ३ मा जीन ए बिब मा निप।

अर्थ—“(१) [मिरे] बी मे कठिन बियाग की पीडा अधिक है [मिरा] जीव निर्गम है जो [किरजी] शरीर में पट पटा (बना हुआ) है। (२) वह भाग्यमानिनी धनी कोन-जी बी जिनमे बेरी और उमकी प्रीति लागी। (३) मैं उस अग्नि मे अगनी नहीं अपनी संसार में बीन है जिनमे बी मे बह न लगी हो? (४) अब तक मुण [कब मे] उन आग में जलती रही है [किन्तु]

अब वह माय प्रकट होकर बसो बिद्याओं में लभ (फल) रही है। (५) चोरी चोरी गुप्त [रूपसे] कहीं तक जानूँ जब कि बसो बिद्याओं में प्रकट (प्रत्यक्ष) वह होमी जल रही है ?

(६) न जाने कौन-सा स्वल्प बिबाता ने लाकर मुझे दिखाया (७) जिसको एक निमित्त (फल) देखने पर मैंने जग्य (जीवन) भर हानि सही है।

टिप्पणी—(५) होरी < होसिका। (७) निमित्त < निमित्त = नेत्र-मकोच अक्षि-मीमन।

[३१०]

गएउ बिरह दो^१ मो हिय^२ पाई^३ । दिन दिन सखी दगध^४ अधिनाई^५ ।
 कत जननी मोहि दूध^६ पियावा^७ । दूध ठाठ^८ कस बिब न गियावा^९ ।
 नामि नार जो बाटी^{१०} बारी । कसन विहिसि मोर गिय डारी^{११} ।
 अब ओहि बिनु गिनु जीउ न मोही^{१२} । ओ^{१३} न सकीं म^{१४} परिहरि ओही^{१५} ।
 ओ न^{१६} कास बस मोरें^{१७} धारा । कसें^{१८} होइ मोंप^{१९} निम्नारा ।
 पम बिछाह^{२०} न सहि सकीं मरीं तो^{२१} मरि नहि^{२२} जाइ ।
 दुइ^{२३} दूभर मह म परी दगध न हिए^{२४} बुताइ^{२५} ॥

पाठांतर—(१) १ रा गएउ बिरह दो^१ ए गा बिरह दो। २ मा मोहि विभ भा मोरे, ए माहि हिय। ३ ए बिरह।

(२) १ भा मा जनमत मोहि जननि। २ मा पिआउ भा पियाएउ ए पिआए। ३ ए ठाठ। ४ भा पिआउ ए पिआय (तुल्य पूर्वकर्त्ता चरण का तुल्य) भा सियाएउ रा पयावा।

(३) १ मा भा नाम नार बाटहि ओहि ए नामि पारि न बाती। २ मा कसन मोरि पिय बीन्ही डारी भा कस न मो मोर गिय बीन्हेडु मारी ए कस न बीन मारे विह डारी रा कस न विहिसि मार मिर डारी।

(४) १ ए अब यह लभ मा जीव न मोही भा अब ओहि बिनु गिनु निमन न मोही। २ ए अब। ३ भा सकीं। ४ ए भा जीउ। ५ ए बाही।

(५) १ मा कौन। २ ए मोर। ३ ए कैसे। ४ मा भा ए मोर।

(६) १ मा बिछोवा ए वियोग। २ भा त। ३ मा मरइ न ए मरे न भा मरी न।

(७) १ मा भा दुइ। २ भा बिब मैं ए मा ही। ३ ए हिये। ४ मा भा बुताई ए योगाड।

अर्थ—“(१) बिरह मेरे हृदय में बाबाग्न लगा गया, और हे सखी, दिन दिन उमड़े बाह की अधिना होनी आ रही है। (२) माँ मे मुझे दूध क्यों पिलाया ? दूध न स्वाद पर उसने [मुझे] पिय क्यों न गिला दिया ? (३) डारी मे ओ मेरी नामि की माल [मेरे जग्य के समय] बाटी जो उसने क्यों नहीं मेरे मले मे [कौनों के रूप में] डाल दिया ? (४) अब उमड़े बिना लभ भर भी मेरा जीना नहीं [संभव] है और मैं उसको [अब] छोड़ नहीं सकनी हूँ। (५) और हे बाबा काल [भी] मेरे वय में नहीं है तो मेरा मोल और निस्तार कैसे हो ?

(१) प्रेम का निरोध मैं नहीं सक रही हूँ और सबेरे भी तो बरा बहो जाता है। (७) दो कठिनाइयों में मैं पड़ गई हूँ [इसलिए] दुख में का बाहु बसता नहीं है।”

टिप्पणी—(१) दो < दण = वाषाणि। (५) बारा < बासा।

[३११]

मो पाछिनि मम^१ बात जो अही । मधुमालनि पमां सठ^२ नही ।
मन जो बामिनि बचन सोहाए^३ । पमां नन मल्लि^४ भरि माए^५ ।
प्रीतम लागि जो र दुख सहि^६ । दमगुन मुगफल^७ आग रहिए^८ ।
तब मुग^९ लागि सहन दुख सहिए^{१०} । महस सुख एव दुग^{११} निरबहिए^{१२} ।
तब फल वारन मुन^{१३} बारी । सचिए^{१४} महस बाटि दवहारी^{१५} ।

पम ममूद पा बारि ब^१ पाछ न टरिअह^२ बाट ।

क प्रीतम मग हाथ चड^३ कै सलखि बिठ^४ जात ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पाछिनि मम ए पाछिनि दुग। २ ए मा रा नो।

(२) १ ए मुनन बामिनी बाग सोहाई मा मुनन वा बामिनि बचन साहाए।
२ मा ननन। ३ ए बाई (<आग वारनी निरि)

(३) १ मा मा बहेसि प्रीतम (प्रीतम—मा) सवी (मवि—मा) दुग बाही
ए बहे प्रीतम लागि दुख सहिए। २ रा मुकन ए बाहर। ३ मा मा
बाई (बाई—मा) बाही ए बाग सहिए।

(४) १ मा मा म 'मुग' बाहर नहीं है। २ मा मा मगर। ३ मा मजिरी
ए सहिए। ४ मा सहन दुग ए दुग। ५ मा निरबहारी ए निरबहिए।

(५) १ ए मुन। २ मा मनी बाही ए मा सहिए। ३ मा दुखबारी।

(६) १ रा पम ममूद नह वै मा वमा ममूद पा बारी वै ए पम ममूद पैरि
कै। २ मा पाछ न टरिअह ए पाछ न टरिअह।

(७) १ मा चडे (<चरुह) ए चडे। २ मा कै बिठ जा त ए कै निर
जात तो मा कै निर जात न।

अर्थ—(१) तब निछोड़ी लकी बासाँ को कुछ बह पी मधुमालती के दोहों से बसाई। (२) दोहों में अब उस बामिनी के मुताबके बचन मुने उमड़े में भी मैं जन (आम) भर बाए (३) [और उमड़े का] “मरि प्रियतम के निद्र दुग सहन कीजिए तो बल गुना गुन-फल आये प्राण कीजिए। (४) एव गुन (निभन) के लिए सख दुग सहन करना हीना है और [बिरह के एक दुग में सहन गुन का निरोध होता है। (५) एव दुग के [प्राण करने के] निद्र, है बालिबरा गुनो, अनि दिन सहन बाई को संभव करना हुआ है।

(६) प्रेम-जल में बीच डूबी बर (उमड़ बर) कभी पीछे न रहिए (७) [आगे बढ़ने पर] मा तो निद्रान-मग हाथ चड़े का और मा तो [उमड़ने वाले की] लालक में बीच जाग्या।”

टिप्पणी—(१) मो < मउ < मरा = मर। बाग < बगा = बासाँ। (३) एह < एह

=प्राप्त करता। (५) देवहारी < दिवह < दिवस = दिन। (६) बार < शोडश = दशाना।
बाउ < बदापि।

[३१२]

कहसि तुम्हार^१ मुदिन मनि आजू । मन बामनां मिट^२ मय बाजू ।
ओ सनि^३ ह^४ मयी छत्र^५ सुम्हारा । चरहि^६ हाथ पाछिनि निधि बारा ।
नवाए गुग ह मयी^७ जो तोही । निजु जानहु चिन मित्र बिछाही ।
ओ मगल ह^८ तिमरे^९ तत्रा । चढ़ आई पीनम^{१०} निजु^{११} मजा ।
ओर मुग्ज दमल^{१२} उजियाग । मुग निधि ह^{१३} दुक्क हरि बारा^{१४} ।

इग्यारह बिबि^{१५} जनम तुब मुक बुद्ध ग्रिग अक ।

मानउ^{१६} ग्रह तुम्ह लहिने^{१७} गनि गुनि^{१८} दमिउ अक^{१९} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहै तोहार। २ ए मित्र।

(२) १ भा मनि (<मनि) रा रवि (दे अर्धायी ५) मा मन (<सनि—
फरमा निधि) ए म यह गार नही है। २ मा भा छउ ए छम। ३ मा
चरही (<चरही)। ४ ए निधि (<निधि फरमा निधि)।

(३) १ ए नवाए गुग मयी है। २ भा मा ए म 'जा' नही है। २ मा
जानहु ए जानहु। ३ मा चिना ए म यह गार नही है।

(४) १ मा मा मंगलर, ए मगल जो। २ ए तिमरे। ३ मा चरै (<चरै)।
४ भा मा ए पीनम। ५ ए निजु भा वी।

(५) १ ए और म दर दमा। २ ए मुग निधि देगु मुग निधि जारा ('मुग निधि'
की पुनर्लिपि है)।

(६) १ रा इग्यारह वन (<बिबि फरमा निधि) मा एगारह बेबी भा
इग्यारह बिबि ॥ एगारह बिबि। २ भा मंगल।

(७) १ रा दमल ए माली। २ भा दहिने तुम्ह बट रा तुब बाहिने
ए मुग तुब। ३ ए गुनि गुनि। ४ मा देवउ अक रा देगु ममक रा दगिम
मक (?)।

अर्थ—(१) उसने कहा "आज हे मनी तुम्हारा मुदिन है [तुम्हारे] लख बार्द मनोराजना
[के अनुसार] मिट गए। (२) और हे मनी यदि तुम्हारे [अप्य क] छडे स्थान पर है
इतनाए है बाबा तुम्हारी पिछनी निधि [जिसे मुग एक बार भी चुकी हो] फिर तुम्हारे हाथ
चढ़ेगी। (३) हे मनी तुम्हारे नयम स्थान पर जो बुद्धनि है उसने चिन में यह मनोमार्ति जान
ली कि बिपुला हुआ मिलेगा (४) और तीसरे स्थान पर मंगल तेज-यवन है इतनाए [तुम्हारा]
प्रियमम अबाय ही [तुम्हारी] छाया पर आकर चढ़ेगा (५) और जो नूनं वयम स्थान पर
प्रकाशित है वह [तुम्हारे] बुनो को हे बाबा हर बार, मुग मुग-निधि देगा।

(६) [और] तुम्हारे अप्य के ग्यारह स्थान पर दो (?) मुक, बय तथा बुगाक है

(७) मैंने निजवर और विचार करके देखा है भाभी वह तुम्हारे दलिय (अनुकूल) है।"

टिप्पणी—(४) सेज < दाम्या । (५) बाय < बासा । (६) बिभि < द्वय । (७) गुन < गुन्य = निजना बिचार करना ।

[३१३]

राहु अहू आठौं तुब^१ बाय । निजु बिछरा मित^२ पेम पियारा ।
हौं जानति^३ कूंबरहि^४ दुल मारी । पै सुहु^५ जैसैं^६ कूंवर^७ दुमारी ।
एत^८ दुय महिहु सागि जैहि^९ बारा । मिसिहि^{१०} आजु सो^{११} पम पियारा ।
छोर प्यान बिन महं घरि^{१२} बारी । बसउ सभ^{१३} मयसाद^{१४} मितारौ ।
जव दगमि^{१५} तुब मुग^{१६} उबियारा^{१७} । सभ^{१८} जग बिहसि नन अधियारा^{१९} ।
दगु आइ गति तावरि^{२०} जहि^{२१} ताहि बिनु नहि^{२२} बाइ ।
तन मन जित^{२३} जोबन सभ^{२४} तोहि सगि^{२५} बसउ^{२६} मोइ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा राहु समान आइ दुष्ट ए राहु समान आहि जो । २ मा जहि बिछरे मिलै ए व मिति बिछरे मा जिन बिछरे मिल ।

(२) १ मा. मा ए मै जाना । २ ए म यह पाव नही है । ३ मा पेमे अति दुग ए पै तोहि जैसैं मा ए पै अति पै (पै अति—मा) दुग । ४ मा मा बिछ रा मे यह पाव नही है ।

(३) १ मा जनि ए जग । २ मा सहे जही लवि ए सहे सागि ज मा सहे जाहि लवि । ३ ए मित । ४ ए पामि ।

(४) १ मा मा छोर पियान बिमहि घरि ए छोर प्यान घरनि है । २ ए मैमा सभ मा मैसउ सभ । ३ मा मयसाद ए मयार ।

(५) १ मा हेमि ए देगा । २ मा गुनगुन ए तार गुन । ३ ए उबियारा । ४ मा मा ए सभ । ५ ए कौटो मैमहि अय्यारा ।

(६) १ मा मा तावी ए ताहि कै । २ ए मे मट पाव नही है । ३ मा मा और न ।

(७) १ ए जीव । २ ए लदे मा मम सरबम आ सभ सरबम ए सभ । ३ ए बोइ जो । ४ मा मैसी रा मैसउ ए मैगार ।

अर्थ—“(१) हे बाता राहु मुंहारे जानवें है [इतलिष्ट मुष्टे] बिगूहा हुआ प्रम-प्रिय मन्त्राय हो मिलेगा । (२) मै जानती की कि दुबार को ही भारी दुग [तिरे बिचोग वा] है बिनु गुन भी दुबार की मोति कुली हो । (३) ये बाता इतना दुग जितने गिष्ट सहन रिया है वह प्रम प्रिय [मुष्टे] आज मिलेगा । (४) ये जानिये, बिल में मुष्टारा प्यान पारम कर बट समस्त संसार को विनृत कर देता है । (५) जमी उनमे मुष्टारा प्रमाण-गुणें गुन देगा तयस जग को उनमे अपने मैत्री में अंधकार-गुणें कर (मान) लिखा ।

(६) उनकी दया आकर हैनी जिने [इत मरार मे] मुष्टारे बिना (मतिरित्त) कोई नहीं है । (७) तब जग जीव और जीवम लमी-मुष्ट वह मुष्टारे निज सोरर देता हुआ है ।”

टिप्पणी—(१) (१) पिपार < विपान = प्यास । (२) एन < एण्ड < दय्य = नना ।

[३१४]

अति भ भमम बिरह^१ जरि काया । दनि कुबर बित्त^२ उपज दामा ।
रहा^३ न क्या मामु^४ तम^५ रस्ता^६ । तहि पर^७ बिरह हाइ दिय बनी^८ ।
जाय^९ जित बरबम हरि^{१०} सीज^{११} । तोहि कह पलटि स्या फनि दीज^{१२} ।
नब^{१३} मरुप दगाड कुमारी^{१४} । पाछे जम दीज दुग भारी ।
विधि चरित्र मते मन्त्रि^{१५} हरिअ । भुजिय^{१६} सोइ करम जो करिअ ।
पेम रि निरकल^{१७} जाइ जग^{१८} मुनहु कहीं समुद्राइ ।
कबहु क गह^{१९} कुबर दुग तुम्ह^{२०} मिर मनी बिना^{२१} ॥

- पाठान्तर—(१) १ रा भव भा भवम बिरह ए अति भी बिरह मम्म । २ ए बी ।
(२) १ मा रहू । २ भा. माहि । ३ मा ए मयि भा मृग । ४ मा राती ।
५ ए ठापर । ६ मा भा दिय बानी ए दड बानी ग रे बनी ।
(३) १ ए जाया । २ ए मयह मण्ड नहा है । ३ मा सीजा । ४ मा ए ता ।
५ मा मया फनि ए स्या ली रा दया पुनि । ६ ए बोई भा बीजा ।
(४) १ मा मनु । २ मा देगपड मा दयाइ । ३ ए ली बारी भा कुबारी ।
४ ए ली पुनि दगाइ क्या उगारी ।
(५) १ भा. मंग मुग ए मेनी वी । २ ए मूखी रा भूजग ।
(६) १ मा निरुप ए निरकल । ७ ए जाय जी ।
(७) १ मा कबहु क दगह ए कबहु क दई । २ मा तुम ए मुह । ३ मा
बसाई ए बिगाइ ।

अर्थ—“(१) बिरह मे [उत्तरी] काया अत्यंत तप्त हो जाती है; [अतः] कुमार को देखकर बित्त संख्या उत्पन्न होती है । (२) उत्तरी काया मे मांस रसी भर भी नहीं रह पाया है उस वर भी निरह हृदो में कतरनी दिए (लगाने) हुए है । (३) जिसका जीव (जिसके प्राण) बलपूर्वक कोई हर ल उस वर फिर उसे लौट कर दिया [भी] करनी चाहिए । (४) ऐ कुमारी तुम तनिक अना स्वरूप [उमे] बिना हो, पीछे [पुनः] हमी प्रवर का पुन्य उमे [मते ही] हो । (५) हे मया बिषया की लीला से डरना चाहिए, क्योंकि जो कर्म कोई करता है वही उसकी भोगना भी पड़ना है ।

(६) संसार मे प्रम क्या निरकल जाना है? मुनी में तुम्हें समझाकर कहती हूँ (७) ऐसा न हो कि कभी कुमार का यह पुन्य ऐ मनी तुम्हारे निर बिगाए ।”

टिप्पणी—(१) गती < गतिवा = पु पुखी । बत्ती < बर्त्तनी = बनरनी । (३) वर < वन ।
(५) भू उ < भू उ = भोग करना । (७) बिम < बिम < बि + भू = बिना करना नष्ट करना ।

[३१५]

फनि पम गहि^१ बाह उपाई । माप जिहें^२ बाग निमि^३ आई ।
बट्नि पन^४ ग दगद सोई^५ । जहि दुग जग ली^६ छाड़ न बाई ।^७

वज्रहृ लाज ओ जिय^१ मिठुराई । दया बरहु^२ मेकु देसहु आई ।
 जो जहि क^३ मारय जित नर । सो तहि सठ बँस^४ मुख^५ फेर ।
 जाऊ दुख्य दुखा कोइ हाई । ताहि सुख्य सुगिया जग सोई ।
 पुनि^६ पम सगि आपनि^७ पठई^८ जाइ जनाउ कुमार^९ ।
 मधुमालति ओ पमा दुबो ठाड़ि हहि बार^{१०} ॥

पाठान्तर—

- रा म उपर्युक्त प्रथम अर्द्धांकी यथा पौचवी है ।
 रा म उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धांकी परस्पर स्वाभावतः ।
 (१) १ मा मा पुनि पम परि रा ए पुनि पेठे (पैमै—ए) यहि । २ ए तिये ।
 ३ ए दिन ।
 (२) १ ए बलहु । २ मा देसहु साई ए बेगि सोहाई । ३ मा पुहु जग सोहि,
 ए दूनी जुग । ४ मा दया बरहु मेकु देसहु आई (पुष्प० उपर्युक्त अर्द्धांकी १) ।
 (३) १ मा मा मोचिन ए चिन की । २ ए दया बरि । ३ मा होहु दमान
 ब्या करहु आई ।
 (४) १ ए जाये । २ रा मा तेहि सो ए कैम लागी । ३ मा मुह ।
 (५) १ मा मा जो मुख बेगिब (हुनी—मा) जाहि दुग कोउ (कोई—मा)
 ए कृतिम दुपी ताहि बुप सोउ (सोई—मा) ए मोहि सपी जाही दुग होई
 पाठे दुग साही मुख होई ।
 (६) १ रा ए पुनि । २ मा रा अपनी । ३ मा पठई रा मेमह ताप्य मही है ।
 ४ ए जाउ जनाउ कुमार (< कुमार अरली निधि) मा जाइ जनाउ
 कुमार ।
 (७) १ ए बारि ।

मार्ग—(१) फिर बेना मे [उसकी] बाहु बद्ध कर [उसे] उठाया, और [अपने] हाथ [उसे] लिए हुए वह बाटिका की ओर आई । (२) उसने कहा “बत्ती और जाकर उसको देती बिनको दोनों जगन् (इलोह और बरलोह) मे कोई नहीं छोड़ता है । (३) लग्ना और बी बी विद्यरता छोड़ो ब्या करो और तनिक आकर [उसे] देतो । (४) जो (परि कोई) जित (जित्नी) के मार्ग मे (जित्नी के निमित्त) [अपने] जीवन को निदानता है [तो] वह उससे बँसे मूह कोता है ? (५) जितन दुग में कोई हुनी होना है उसने मुन से ही वह जगन् मे मुनी गंगा है ।”

(६) तरनर बेना मे अपनी [एक] लकी को यह कहकर भेजा “मा और कुमार को बुचिन कर (७) कि कपुकापनी और बेना—दोनों द्वार पर मही हैं ।”

गिती—(१) बाउ < बाटिका । (२) पाउ < छट्ट [दे] = छाटना । (३) पग्व < पद्वय < प्र + पान् = प्रदान करना भजना ।

[३१६]

ब्रजह गगि^१ मधुमाउ^२ गुमाया^३ । गगउ मु^४हि मागिब^५ भाया ।
 क^६ माउ मुग^७ आउ ग यना^८ । यिनहि^९ नन पा शग^{१०} मनी ।

ठरे^१ अग्नि मह^२ असै^३ रांगा । तिमि नितज मा^४ अस्टी^५ आंगा ।
पमां ८^६ छिरका मुख^७ पानी । कहसि^८ जागु सिधि घरी तुलानी ।
कहु जो किछ कहि^९ हो^{१०} बाता । पुनि^{११} असन्निभव कर^{१२} बिधाना ।

आजु भाग तुम्ह^१ दाहिन नसहु चित्त^२ सभारि ।
ठाठि अह^३ सिर ऊपर साहस सिद्धि तुम्हारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जब मर्पी मै भा जब रे सजी । २ ए मधुमाम भा बिधि माउ ।
३ मा जनावा । ४ ए बरमा । ५ मा भा मुनठेह (मुनठहि—भा)
मात्तिव ए मुनठ सस्ति बै रा मुनठ स्वाधि कर ।

(२) १ मा भा भई ए मी । २ मा भाव ए भाव । ३ ए चित्त मी ।
४ मा ए सापठ भा छाने ।

(३) १ मा बरई । २ ए भावि मा जीव । ३ ए रे तेज मी । ४ मा भा
भाठहु ए भागी ।

(४) १ मा पमै । २ मा मै । ३ ए चत । ४ ए कहै ।

(५) १ मा कहहु जो कुछ कहव ए भा कहु जो कुछ कहव (कहवें—भा)
२ मा हु ए मे यह गण नहीं है । ३ रा ए पुनि । ४ ए म यह गण
नहीं है । ५ रा करहि ।

(६) १ रा ता ए ठार । २ मा भा चत ।

(७) १ ए भाहि । २ मा ए महम (माहम—ए) मिधि तोहारि ।

अर्थ—(१) जनी [वेसां की उत्त] लकी मे 'मधु [मास्ती] नाम मुनाया उसे मुनते
हो [कुमार के अरीर में] सात्त्विक भाव बिगाई पड़ । (२) वंश हुआ और मुख से बचन
नही निकला (स्वरभंग हुआ) चित्त का बेत गया और नेत्र बंद गए । (३) जैसे अग्नि में रांगा
झुलक [कर निस्तेज हो] जाता है उसी प्रकार वह अपने आठों अंगों में निरनेज हो गया । (४)
वेसां मे पानी लेकर उत्तक मुख पर छिड़का और कहा "आगे अब सिद्धि की छोड़ी बट्टेब गई है ।
(५) जो कुछ बानी तुम्हें कहनी थी वही पता नहीं पुन-ऐसा दिन बिधाता बच करे ।

(६) आज तुम्हारा भाग्य बलिग (अनकल) है चित्त की लज्जात कर बीडो (७) तुम्हारे
साहस की सिद्धि [अब] तुम्हारे निर पर गड़ी है ।"

टिप्पणी—(१) मात्तिव < मात्तिव ।

[३१७]

मुमन माउ^१ माहम सिधि जागा । कह अजिन मम बचन मा^२ सागा ।
कहमि बीम नि आजु सोहावा । जु हो^३ बाम प्रीतम कर^४ पावा ।
पूनी मठ त^५ पम फयवारी । जहि मुदाम पूग्नि^६ महि मारी^७ ।
पोन^८ याग कारनि ८ आणउ^९ । जहिर माहि बिनु म^{१०} मनाणउ^{११} ।
भा दग टिय^{१२} चिरहु फरोजे^{१३} । पम^{१४} पिरोनम आउ अमान^{१५} ।

म तुव^१ धारन सम^२ सजा जत निछ^३ एहि^४ सवसार^५ ।
एब न तुव^१ दुख^२ परिहरेउ^३ जो जग जीवन सार ॥

- वाङ्मय— रा म उपर्युक्त अर्थों की २ तथा ३ परस्पर स्वानातरित हैं।
उपर्युक्त पंचम अर्थों की के कारण ए म परस्पर स्वानातरित हैं।
- (१) १ ए भाव। २ मा मा ए कहै (कहै—ए) बचन अधिक से (सम—
ए) रा बहुत अधिक सम बचन मो।
- (२) १ मा मा जेहि मैं ए जाहि। २ मा प्रीतिव की ए प्रीतिव मैं मा
प्रीतिव।
- (३) १ मा पूर्वी मुख त न कभी मरु रे। २ मा पुरी का पुरी। ३ ए
मा बारी।
- (४) १ मा पवन। २ मा काहरि छेड़ ए काहर लै। ३ मा आवा। ४ ए
ताहि। ५ मा बिनु मर मनवायेउ भा बिनु मर मनावा ए मैं मन
पायेउ।
- (५) १ ए बीर। २ मा मा मनोनी ए कलेश। ३ रा पमा। ४ ए
प्रीति जे आब। ५ ए कमाता।
- (६) १ मा तुम्ह ए ताहि। २ मा ए सब। ३ मा जत दुख ए जत कष्ट।
४ मा एहि। ५ रा ए संसार मा संवेष्टा।
- (७) १ मा तुम्ह ए भा तोर। २ मा मैं 'दुख' नहीं है। ३ ए, परिहरा।

अर्थ—(१) 'साहस-तिष्ठि' का नाम (छन्द) सुनते ही [दुपार] जाग बड़ा और वह
अमृत-पुष्प बचन कहने लगा। (२) उतने कहा "आज कील-मा भूदावता दिन है कि मैंने प्रियतम
की मुर्गब बाई। (३) संभवतः प्रेम की कुलवाड़ी [आज] कुल उठी जिसकी मुवात से समस्त पृथ्वी
धुरित [हो गई] है। (४) पवन जिसकी मुवात सेकर आया है कि जिससे उतने मुने बिना धरि
के अत बना दिया है। (५) तू आकर मेरे विरह के कड़वों को दैल ऐ अमृत-पुष्प प्रेम-प्रियतम तु
जा।

(६) मैंने तेरे कारण जिसका कुछ संसार मैं [बिरा] या वह तब स्वान दिया; (७)
एकनाम तेरा (मेरे विरह का) दुख मैंने नहीं स्वागा जो अकल्प मैं [मेरे] जीवन का सार है।"

श्लोकी—(२) (१) (४) बान < बावना = मुखप। (६) जन < जतिव < बावपु =
बिना।

[३१८]

गुह^१ जो पम लीव हिय^२ बाढ़ी । गामगिनी य^३ नि नि बाढ़ी ।
गुग बर मुर अग्न मा याग^४ । तुम्ह दुग रनि न मा बिनुसार^५ ।
मर त^६ भावु बीनी दुग^७ गनी । न पानिग^८ गिर बरिग मवानी ।
गारि दुग^९ जूभा पर याग । रीन मा बिन जो म म लगी^{१०} ।
दिग^{११} भावु हम द^{१२} गये याह । बाहि^{१३} भावु अगि हो^{१४} नि नाहो ।

आजु जो बिछु^१ हू करनी^२ बस न अबहि^३ बरि सोइ^४ ।
काल्हि^५ बहुरि का जानी^६ दहु^७ कसी^८ बलि^९ होइ ॥

पाठाभार—(१) १ भा ए वीह। २ रा बिय। ३ ए जा भा रा पर।

(२) १ रा तुल कर सूर अस्त भा बारा भा मुल कर सार अस्त भी बारा प
मुल कैते लिपित भा भीरा। २ रा तुम्ह मुल नि तहा उबियारा ए तुल
तुल नीम भई जो पीरा।

(३) १ भा बबत ए मबहु। २ ए बिती लू। ३ म ए जातिक।

(४) १ भा भा ए बिरह। २ ए जुआ। ३ भा भा न म हारी ए म
भा हारी ४ म न अहारी।

(५) १ भा ए मिलहु। २ ए हूँ। ३ भा बेइ ए म यह पाइ नहीं है।
४ भा गलि भा गल ए गले। ५ भा भा कालि। ६ ए मम।

(६) १ भा बुछु ए बछु। २ भा भा नम न लहु बनि ना ए नैमो बनि
बिबि हो—(तुल पूर्ववर्ती चरण)।

(७) १ भा बालि। २ भा जानि भै ए जानी। ३ ए नैमो बिधि। ४ भा
बलि ए लिला।

अर्थ—^१(१) तुम प्रेम की जो रेखा मेरे हृदय में कोच कर चली गई वह मिटी नहीं बरन् दिन
दिन बढ़ती रही; (२) [परिणाम-स्वरूप मेरे] तुल का मूर्ध है वाला अस्त हो गया और
तुम्हारे [बिरह की] तुल की रजनी का प्रमत्त नहीं हुआ। (३) तबबत आज वह तुल रात्रि बीत
गई अबबा बातक के तिर पर स्वादी की बर्षा हुई। (४) तुम्हारे [बिरह] तुल रूपी बूए ने कड़
बर वह कीन बिषय (पराध) है जिते में नहीं हार चुका हूँ? (५) आज तुम [मेरे] गले में
बाहुँ देकर मिलो [बर्षा] कल [का दिन] आज के ऐसा हो या न हो।

(६) आज जो कुछ करना है वह तुम अभी क्यों नहीं करती? (७) वल फिर पता नहीं
कि कौनो कलि (तुल-साति) हो।”

टिप्पणी—(१) लीह < रेगा। (३) जातिय < जातक। मबादी < स्वादी। (४) जुआ
< घूठ। कर < कलज < कलक = कड़ वह कलक जिस पर लकने के लिए जए की व्यवस्था की
जाती है।

[३१९]

जब^१ पगा^२ भा रूप^३ तुम्हार^४ । तब^५ न हम^६ जगु^७ दमनिहार^८ ।
अहि^९ नि आदि रूप^{१०} तोर^{११} मोहा^{१२} । नहि^{१३} नि हुत^{१४} तोहि^{१५} हो^{१६} मोहा^{१७} ।
जउ^{१८} जउ^{१९} । रूप^{२०} उन्नि^{२१} जम^{२२} तोरा^{२३} । तउ^{२४} तउ^{२५} । जिउ^{२६} बिरह^{२७} बम^{२८} मोरा^{२९} ।
रूप^{३०} तुम्हार^{३१} मार^{३२} दुग^{३३} बारा^{३४} । दम^{३५} दम^{३६} ग^{३७} भणउ^{३८} पवारा^{३९} ।
दिम^{४०} नि रूप^{४१} अधिक^{४२} जह^{४३} तोही^{४४} । अब^{४५} वह^{४६} मुकति^{४७} बिरह^{४८} सउ^{४९} मोही^{५०} ।

जइ^{५१} तुय^{५२} बन्न^{५३} उपाणि^{५४} न^{५५} ग्या^{५६} रूप^{५७} निमाद^{५८} ।

तइ^{५९} धमि^{६०} धमि^{६१} बहि^{६२} पाइ^{६३} न^{६४} हम^{६५} जगु^{६६} जूब^{६७} माइ^{६८} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तोहार।

(२) १ मा मा तोहि ए तुह। २ ए ता दिन ते तोहि मइ।

(३) १ रा जेहु जेहु मा ए जीजी मा जीज जीज (<जेज जेज फारसी लिपि)।

२ रा तेहु तेहु मा ए तांती मा तीज तीज (<तेज तेज फारसी लिपि)

३ मा जीज बरह (<बिरह फारसी लिपि) ए मा जीज बिरह।

(४) १ ए तोहार। २ मा माह (<गह) ए गै। ३ ए मैरें पवार।

(५) १ मा मा जय ए बी। २ मा मोही। ३ मा अब कहा मुबत बरह (<मुकवि बिरह फारसी लिपि) तो मोही ए अब मा सकी मैं परिहरि मोही।

(६) १ रा बह तुब क्य उचारि कै मा बिनि तुब बदन अबाह कै ए जी तुह बदन निहारि कै। २ रा देख नैन बिसाइ, ए देखा बदन अबाह ('बदन' की पुनरुक्ति है)।

(७) १ मा विनि बन बन कै ए तिन्ह बनावन रा तई धनि धनि मइ। २ मा जुने ए जूना।

मर्थ—“(१) अब तुम्हारा क्य (सौन्दर्य) प्रकट हुआ तभी के हम बसुनों से उसे देखने वाले हैं (तभी मैंने उसे बसुनों से देखा है)। (२) बित दिन तुम्हारा प्रथम क्य घोषित हुआ उसी दिन से मैं उस पर मोहित हूँ। (३) [सर्वगतर उत्तरोत्तर] जिस-जिस प्रकार है (जितना ही जितना) तुम्हारा क्य-जय उचित (प्रकाशपूर्ण) होता रहा उसी-उसी प्रकार है (उतना ही उतना) मेरा जीव तुम्हारे बिरह के बंध में होता गया। (४) तुम्हारा एप और मेरा [बिरह] तुम (शरीर के विवरण) देख-देखातर में का पहुँच और [उमके संबंध में वहाँ] वंचारा (मन्त्रा आख्यान) बन गया। (५) [किन्तु] क्योंकि तुम्हारा क्य दिन-दिन (उत्तरोत्तर) अधिक होता जा रहा है, अब मुझे बिरह से मुक्ति कहीं?

(६) जितने भी [तुम्हारा] मुख जोलकर [तुम्हारा] क्य निरीक्षण करके देखा (७) उसी ने 'बन्ध-बन्ध' कहकर बँडकर और जाकर मेरे बसुनों का बंधन किया।”

टिप्पणी—(१) (७) बसु < बसु < बसु। (४) पवार < प्रवार—कन्वा आख्यान।

(५) बह < बत = क्योंकि। (६) निहा < निह्ना < नि + ह्य = निरीक्षण करना।

[३२०]

बाँक नैन कटास सोहाए। तुमहु पसन्न बिच रगत^१ तिसाए।
बिरह अगिनि जग^२ दह^३ न जेता^४। तोह बिरह^५ मोहि दाह^६ तता^७।
अब न सह^८ पारों बुल तोरा। तौर जस जित पाहन^९ नहि मोरा^{१०}।
जेज जेज^{११} बिरह अगिनि पर पार^{१२}। समुझि समुझि अज तोहि^{१३} समार^{१४}।
बिधि यह^{१५} पेम पीर कत कीर्ती^{१६}। जी तुम्ह^{१७} चित न बाया^{१८} दोन्ही^{१९}।

एहि दुख मोह एक होइ^{२०} म निज जाना ओय^{२१}।

के हम भुख वस तुम्ह गरे^{२२} के तुम्ह हय हम गरीय^{२३} ॥

पाठान्तर— मा में उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अर्द्धाधियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ मा मा यहू बब लमि मोहि रक्त ए बुद्ध पलक मो रजन।
- (२) १ रा मोहि ए जो। २ ए वहा। ३ मा मा यता ए एता। ४ मा तुम बिरह मा तुम बिरहैं ए तुह बिरह। ५ मा मोहि दाहेउ जता ए जो उपजा एता (तुल पूर्ववर्तीकरण वा तुल)।
- (३) १ ए नहीं। २ मा पाष मा पाषर। ३ ए में पाठ है—तोर बुन बेलि जम हाथ संकोरा (किंतु यह ३२३४ है)।
- (४) १ मा रा जो जो ए जो निब। २ मा तनु जारै ए मो जारै। ३ ए मे यह पाव नही है।
- (५) १ मा इमह। २ मा पम प्रीत ए परम पीर। ३ रा बिहे। ४ ए उन मा तुम। ५ ए मामा ना मा क्या नहि। ६ रा दिहे।
- (६) १ मा एम्ह दुहुं यह येन होइ के ए यह दुम मो व हो एक। २ मा जीउ।
- (७) १ ए के तुह मजवर हाथ परे, मा के तुम्ह मज बर मान गम रा के तुम भुन बर हम परे। २ मा नइ तुम्ह हाथ हम मीम ए के बल हम तुह बीम म। के हम हय तुम्ह मीम रा के हम गल बीय।

अर्थ—“(१) तुम्हारे बकि नयन को कटावों से सुहाबने हैं दोनों बलकों के बीच रक्त के प्यासे हैं। (२) जितना कि संसार भर [मिलकर] बिरह को अग्नि में दग्ध नहीं हुआ वा उतना मुझे तुम्हारे बिरह ने दग्ध किया। (३) अब मैं तुम्हारा (तुम्हारे बिरह का) बुझ नहीं सहन कर सक रहा हूँ [क्योंकि] मेरा जो तुम्हारे [जी] बीसा वायाव [का] नहीं है। (४) जैसे-जैसे मुझे [तुम्हारे] बिरह की अग्नि जला रही है मेरा जीव [अधिकाधिक] सजस-सजस कर तुम्हें स्मरण कर रहा है। (५) बिपाता ने [मेरे हृदय में] यह प्रेम की बीड़ा ही कहा (क्यों) की यदि बलने तुम्हारे जी में क्या नहीं की?

(६) इस बुल में झकेला होकर मैंने जो मैं भलीभांति जान लिया (७) कि वा तो तुम्हारी भुजाएँ मेरे गले में बलपित होंगी (बलप की भांति लपेगी) और वा तो तुम्हारे हाथ में [बड़ी हुई] मेरी बीबा होगी।”

टिप्पणी—(१) बांक < बंक < बक। रजन < रजन। निमाए < निमाइय < नृपिन = सुपातुर प्याता। (२) वाहन < वापाव। (४) बरजार < पउजार < प्र + वाम् = बजाना। (५) कन < कुन। (७) मीप < मोषा = पला।

[३२१]

मैं एकभर एहि^१ अनल^२ म^३ दहा^४। कीन^५ सो जग जई^६ तोहि न चहा^७।
 मोर तोर पम न जानन^८ कोई। जो न कहन सुद्ध लायम रोई।
 जो मापन जिउ तोहि घट पाव।^९ सो तुम्ह सउ^{१०} जिउ निज म आब^{११}।
 गणउ गोइ जिउ। नाजि^{१२} न पावा। जहि पूछउ^{१३} मो मोहि दगावा।
 में फनि^{१४} हो जिय गों जिउ ओरा^{१५}। जब मोहि छाडि जाइ भा^{१६} तोग।

कौन बनिज ग बनिजलं का म बिद्वएल जाह ।
अतरहि मूळ गवाएल लाभ क कौन गियाह ॥

पाठान्तर— उपर्युक्त १ ४ ५ बर्दास्मि का कम मा भा मे है ५, ४ १ ।
ए मे उपर्युक्त ४ तथा ५ परस्पर स्वाभावित हैं ।

- (१) १ मा अकसर यही ए एकसर बोह । २ ए अमिन ए म 'त' नहीं है ।
३ मा भा ए बाह्य । ४ ए मे बहुसंख्य नहीं है । ५ मा भा ए बाह्य ।
(२) १ ए जानी । २ मा भी न कहते थे ।
(३) १ भा मैं कृति आपुन उस बीच पावा मा आपन अस बीच जो पावा ए
आपुन मात बीच न पावा । २ मा भा ती तुम्हें ही (सो—भा) मैं बीच जो
(अति बिज—भा) कावा ए ती बोले बिज अयत सावा ए ती तुम्हें ही
बिज बिज की बावा ।
(४) १ ए यी छोड़ जग मा नरुज करी जिज । २ मा ए खोज । ३ मा
पूछी मा ए पूछी ।
(५) १ ए ए पुनि । २ मा भा यही बिज से बीच (बिज—भा) छोड़ बोह
बीज बिज जोरा । ३ ए मोहि थोड़ भाह बी ।
(६) १ मा मैं बनिजी ए मैं बनिज । २ मा बीहवी (< बीहूवी) ए
बिहवा ।
(७) १ ए ही । २ ए ए यंवावा । ३ मा भा काम की (क—भा)
कौन गियाह (गियाह—भा) ए काम कीनि उपाह ए कावह कौन उपाह ।

अर्थ—“(१) मैं लोका इस जन्म में नहीं रहूँ दुःख; संसार में बीच देता है जिसने तुम्हें न
बाधा हो? (२) ऐसा कोई नहीं है जो मेरे और तुम्हारे बीच को न जानता हो और उसका कथन बोली
लोचनों से टोकर न करता हो। (३) बरि [कोई] अपने भी जो तुम्हारे घट में पा सकता, सब तो
बहु पुन (तुम्हारे घट) से छूट के जाता। (४) [मैं ही] जो गया और अपने बीच को [तुम्हारे घट
में] बीच न पाया और जिससे यी मैंने [अपने बीच के बारे में] पता लगाया, उसने तुम्हीं को
[उसको अपना लेने वाला] बताया। (५) तब तो मैंने अपने बीच को तुम्हारे बीच से संयुक्त कर
दिया, जब [मैंने देखा कि] वह मुझे छोड़कर तुम्हारा हो गया है।

(६) मैंने [भी] बाहर पक्ष बीच-सा बाधित किया और बाहर मैंने क्या उपायित किया
(७) कि इस [बाधित के] अंतर (बीज) में लुप्तमान हो गया बैठ। फिर लाभ का कौन
सा लाभ (प्रप्त) हो सकता है?

टिप्पणी—(६) बनिज < बाधित्य । बिहव < बिहव [रे] = उपायित करना कमाना ।
(७) गियाह < व्याह ।

[३२२]

महं सुनि कवळ कळी निगसानी । कुले मधर दुहं अंघ्रित खानी ।
लाज न पारो कहि सखि जागें । जिय न साज रहं पेय के जागें ।
पमै कहा साज जनि मागहु । मोर तोर सखि एक के जानहु ।

तव तजि राज^१ कहै दुख दाधी । भइउ^२ मांह तुम्ह दुख रहि आभी^३ ।
 कहिउ^४ न साज कहै एह^५ पीरा । सहिउ गुपत प^६ दाह^७ मरीरा ।
 एक दिसि^८ पीर^९ पिरम के एक दिसि^{१०} कुल ब कानि^{११} ।
 माहि दुखी निसिदूबर^{१२} भइसि^{१३} इन कुल उत जिय^{१४} हानि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा इमह। २ मा मा ए बिहानी। ३ मा मुसी। ४ मा रह
 मा दुख ए म यह दाध नहीं है। ५ ए रा बमी बिहरानी मा अमिअ
 निराभी।

(२) १ मा पारै। २ ए कहै मनि आय। ३ मा ए पै। ४ मा ए एह।
 ५ मा आगे ए आग (पूबवर्ती चरण का भी तुल्य नहीं है) रा लागै।

(३) १ ए मा। २ मा मा ए मैं तजि संगी। ३ मा मा त्रिउ।

(४) १ ए मम तजि दुख। २ मा मई ए रही। ३ ए माह तारे दुख आभी ।

(५) १ मा कहैउ ए कहौ। २ मा भावाहु इमह (यह—भा) ए बाहु एह।
 ३ मा मा सहउ गुपुन जीअ ए महा गुपुन त्रिब। ४ ए डाह।

(६) १ मा ए दिस। २ मा म 'साज' नहीं है रा साज ए जान।
 ३ मा ए दिस। ४ ए हानि (तुल्य परवर्ती चरण का तुल्य)।

(७) १ रा शोक विनि भागे। २ ए भइ । ३ ए तजि उत कुल।

अर्थ—(१) यह [बाने] मुनकर कमल-कलिका (मधुमाश्रयी) [प्रतप्रता से] बिहसित
 हो गई (निल उठी) और अमृत की लागि [उसके] दोनो अपर [बोझने के सिंग] झुल पड़े।
 (२) [उसने कहा], “मैं लग्ना [की बात] लक्ष्मी के आगे नहीं कह सकी हूँ। [बिनु] प्रेम के
 जाने पर भी मैं लग्ना [की] नहीं रहती हूँ।” (३) वेंमा ने कहा ‘तुम [मुझसे] लग्ना न
 मानो मेरा और अपना है लक्ष्मी तुम एक [जान] कर जानो। (४) तब वह कुल-जग्या
 लग्ना दयाग कर कहने लगी “हे नाथ मैं तुम्हारे [बिचह] कुल में दण्य होकर आभी हो गई हूँ।
 (५) मैंने लग्ना के कारण किसी भी प्रकार से यह बीड़ा नहीं बताई है और गप कप से ही शरीर
 का यह बाह मैंने सहन किया है।

(६) एक और वेंम की बीड़ा थी और एक (दूसरी) और कुल की लागि (लग्ना) की।
 (७) [अतः] मम [तो] दोनो दिसाएँ दूबर हो गई क्योंकि दूबर [अर्था] कुल की हानि की
 [बहा] उबर जीव की की।”

टिप्पणी—(१) बनी < बनिवा। (४) मांह < नाथ = स्वामी। (५) बह < बीदू =
 जैसे किसी प्रकार। (६) पिरम < प्रेम।

तुम्ह कुनि^१ बाहु^२ दुग मो गायी^३ । महहु^४ बजिन विमि बिग^५ ब जागी ।
 म साजह^६ अम^७ पम छावा । एहि बाहु महि^८ चरण पाया ।
 मगो महमो मय^९ जा आहा^{१०} । तउ मग्म यट जानहि माहा^{११} ।

एक दिसि^१ जम एक दिसि^२ मुख तोरा । तोर दुख देखि जम हाथ संकोरा^३ ।
जम जिउ ल एक बार^४ निबार^५ । यह^६ र बिखरु सिन सिन जिउ मार^७ ।
मुम्ह^८ चित नचल निरखई^९ बसेहु सभ^{१०} जग कलि ।
म अबका किमि निरबहौं^{११} तिरु तिरु बिबरा पलि ॥

- पाठांतर—(१) १ रा मुम्ह पुनि ए तुह जो। २ रा का पाठ स्पष्ट नहीं है।
३ भा पुन मोहि लागी मा जो मोहि भिन्न लागी ए दुख हम जाग।
४ भा सहेउ। ५ रा पीर। ६ ए मे चरण का पाठ है सहेउ बिखरु
दुख हम जागे (तुम्ह पूर्ववर्ती चरण)।
(२) १ रा लागि अछ ए लागहु जो। २ मा मा ए अब कहि काहु न।
(३) १ भा ए सखी सहेली (सहेली—मा) संव। २ मा जो रूही भा रूही।
३ भा न (<बहु कारखी किपि) जानहि नाही मा यहि जानहि पाही
ए जानि नहि पावहि।
(४) १ ए दिस। २ ए दुसरे।
(५) १ ए जम की प्रियु जनक। २ मा नरबाई ए निरबाई भा निबाई।
३ मा इजह, ए येह। ४ भा जम नित नित बाहू मा जम नित जिउ
बाई ए सिन सिन बाई।
(६) ए तुह। २ ए निरखै। ३ ए बैनु सब।
(७) १ ए निरबहौं। २ मा तिरु खेबर (एक 'तिरु' छूट गया है सगता है कि
आरंभ में 'तिरु' के बाद २ बना था) ए तिरु तिरु जीरा मा तिरु तिरु
बिबरा रा तिरु तिरु जोरा (?)।

अर्थ—“(१) तुम छिद्र, मेरे लिए कुछ [उठाने की बात] कहते हो; [तो यह बताओ कि]
तुमने बिखर की कठिन जगि को कैसे सहन किया। (२) मैंने तो लज्जा के कारण इस प्रकार से
प्रेम को छिपाया कि [मेरे] प्रेम की कोई चरख (चीज) भी नहीं उका। (३) [मेरी] सखियाँ-
सहेलियाँ जो [मेरे] साथ थीं वे भी इस गर्म को नहीं जानती हैं। (४) [मेरे] एक और धन
(काल) या और बूतरी और तुम्हारा (तुम्हारे बिखर का) कुछ वा किन्तु तुम्हारे (तुम्हारे बिखर
के) कुछ को देखकर धन (काल) मैं भी [हार जान कर] हाथ सिकोड़ (हटा) लिया।
(५) धन (काल) तो जीव (प्राणी) को लेकर एक बार मैं ही निवृत्त कर देता है, किन्तु यह बिखर
जब प्रतिक्षण जीव (प्राणी) को मारता है।

(६) तुम बचल-चित और निर्बन्धी के और तुम समस्त जगत् को लेने लगे—उतका मुख लेकर
—जा बैठे (७) किन्तु मैं अबका जीव (प्राणी) को [तिरु की भाँति] तिरु-तिरु (सनिक
तनिक करके) पैर कर किस प्रकार निरबहूँ कहे ?”

टिप्पणी—(४) संकोर < संकोर < संकोट्य = सिकोड़ना।

[३२४]

कुबर बचन जायनि सुनि^१ रोवा^२ । कहसि^३ मोर दुप तोहि न गोवा^४ ।
जो किछु^५ तुम्ह^६ मोहि जियपर^७ कीन्हा^८ । सभ जानति हह^९ आपन^{१०} कीन्हा ।

सो का कुन पूछ तहि करा । हिय माह जहि कर बसरा ।
मोर दुख मोहि^१ पूछनि^२ कहा^३ । आपुहि पूछु बिह जम अहा^४ ।
सदा ठाठ^५ जिय^६ भीतर सोही^७ । मोर दुख का^८ पूछहि^९ मोही^{१०} ।

मदा हिए मह^१ बासा ठाठ रह^२ कर सोर ।
बानि बूझि सम^३ मग्न हिय^४ का पूछसि^५ दुस मोर^६ ॥

पाठांतर— उपर्युक्त अर्द्धांश १ ४ ५ का जम मा भा ए म है ५, ४ १ पुन उपर्युक्त अर्द्धांश ३ के चरण इनम परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए कामिनि बचन मुनि कै । २ मा रोजा । ३ ए बहू । ४ मा गोवा ।
- (२) १ मा कुछ । २ ए म यह घण्ट नहीं है । ३ भा मोहि जिस ए मारे जिउ । ४ ए कीन्हा । ५ ए सब जानौ ज रा मम जानति हम मा मा मुम जानति छु । ६ रा अपनी ।
- (४) १ ए माही । २ ए पूछै । ३ मा भा ए बाहा । ४ भा मा जिय बहु काहा ए किय जो काहा (तुल पूर्ववर्ती चरण का तुल) ।
- (५) १ ए सदा ठाठ । २ मा जिय ए जिब । ३ ए सोही । ४ ए मरम का मा भा कुल का ठह । ५ मा ए पूछनि (पूछनि—ए) । ६ ए मोही ।
- (६) १ ए हिमे मा । २ ए रहन ।
- (७) १ भा सब । २ ए जीब कै । ३ ए पूछै । ४ मा बिहुन तुम्हारे औ जिब मोरा लबुके दुमी बेचि मुय तोर (तुल परवर्ती छंद की दूसरी अर्द्धांश) ।

अर्थ—(१) कुमार कामिनी (मधुमालती) के [इन] बचनों को सुनकर रो पड़ा और उसने कहा "मेरा कुछ तुम से छिपा हुआ नहीं है। (२) जो-कुछ तुमने मेरे जी पर किया वह सब अपना [दिया हुआ] बिह तुम जाननी हो। (३) वह उसका दुःख क्या पूछता है जिसका उसने हृदय में निवास हो? (४) मेरा कुछ तुम मुझसे क्या पूछनी हो? तुम अपने से पूछो बीता बीता तुमने कर रक्खा है। (५) तब [मेरे] जी के भीतर तुम्हारा स्थान (निवास) है [फिर] मेरा कुछ क्या मुझसे पूछनी हो?

(६) हे बाता [मेरे] हृदय में तब तुम्हारे रहने का स्थान [रहा] है; (७) [तब] [मेरे] हृदय का सब मर्म जानकर क्या (क्यों) [मुझसे] मेरा कुछ पूछनी हो?"

टिप्पणी—(१) गोवा < योगिन = छिराया हुआ । (६) ठाठ < स्थान ।

[३२५]

यन तोर^१ का^२ माहि छावत । ओ तुव^३ चिट्ठरन पूषट आपन ।
चिट्ठर^४ गुहार और^५ जिउ मोरा^६ । लबुप दुयी^७ दधि मुग तोरा^८ ।
जमें तुपूर गरी दिन राग^९ । मोह न जाठ गूर ठन^{१०} हग ।
नन गूर^{११} बिष आहि म बाई^{१२} । आपनि जमनिवा आपुहि मोई^{१३} ।

छोटे हाथ न पहुँच पायी ।^१ तो मुख ऊपर सज कच टारी ।^२
 चिहुर संकल्ल^३ माला दिनयर^४ उद कराइ ।
 सोयन जर बियोग^५ क पियहि सरूप^६ अयाइ ॥

पाठांतर— मा मे उपर्युक्त पहुँची तथा बूझी अर्थात्किया परस्पर स्वानांतरित हैं।

मा मे उपर्युक्त अर्थात्की २ पिछले छंद मे चली गई है।

- (१) १ ए टोर। २ मा को ए कोर। ३ मा तुम ए तुह।
 (२) [मा के पाठांतर पिछले छंद से हैं] १ मा चिहुर। २ मा तुम्हारे बीर, ए
 तोहार बीर, मा तुम्हारे बीर। ३ रा मोरीं। ४ ए कुनी। ५ रा तोरीं।
 (३) १ मा मा अस तुह पहर परी बिर (बिन—मा) बेच ए अस दुपहरी
 करपरि बेच। २ मा तुम तनु, ए सुरत मा।
 (४) १ मा सुर। २ मा बहा न कोई। ३ मा आपन बमका आपुहि सोई,
 मा आप जमनी का आये सोही ए अपने जागनि का आपन सोई, रा आपु बोठिका
 आपुहि सोई।
 (५) १ रा जठन किए रोहि पहुँची नाही ए छोट हाथ ना पहुँच पायीं। २
 रा सो कच लांब छोटि मोरि बाही मा तुम मुख पर सेज किमि करि टारी
 ए तुह मुख से ऊपर केज टारी।
 (६) १ ए सकोरहु। २ मा दिनबर, ए दिनकर।
 (७) १ मा बियोग। २ ए कच।

अर्थ— (१) तुम्हारा मुख [अपने को] मुझसे क्या छिया लेता यदि तुम्हारे चिहुर (बास)
 घूँच [के कपमें बीच में] न आ जाते? (२) तुम्हारे चिहुर बीर मेरा बीच—दोनों तुम्हारा
 मुख देखकर [उस पर] लज्ज हो उठे। (३) [किन्तु] जिस प्रकार दिन में दोपहर की बरी (कड़ी)
 देला होती है [जिसमें] सूर्य की ओर सम्मुख होकर देला नहीं जाता है, बीर (४) [यद्यपि]
 मेरी बीर सूर्य के बीच कोई पदार्थ नहीं होता है फिर भी वह (सूर्य) [हमारे मैत्री के सम्मुख] अपनी
 जमनिका (व्यवहार) आप ही [अपने तैज के कारण] जग जाता है [वही प्रकार तुम्हारा कप
 मेरे मैत्री के लिये व्यवहार जग गया]। (५) [अपने] छोटे [मानवीय] हाथों से मैं पहुँच नहीं
 पाता हूँ कि तुम्हारे मुख पर से मैं तुम्हारे कपों को हटा सकूँ।

(६) ऐ माता तुम अपने चिहुरों को बढोरो कि [जिससे] तुम्हारा [मुख] दिनकर उदय
 करे (प्रकाशित हो) (७) और [मेरे] लोचन की विपीयानि के बड़े हुए हैं [मेरे] स्वस्व
 की कक (तृप्त हो) कर दिए।”

टिप्पणी—(१) चिहुर < चिहुर < केच। (२) सँह < सजह < सम्मुख। (३) सकिन् <
 संकल्ल [रे] = सिकोचना। दिनयर < दिनकर = सूर्य। (७) लोचन < लोचन।

[३२६]

जो कोई देखे भाह^१ मम रूपा । सुनहु यात एक^२ कहौं^३ अनूपा ।
 क^४ सकोष मम नैन पसारा^५ । दिष्टि मागि छे^६ जात उपारा ।

ताहि दिस्टि चाहइ मम रुपा^१ । इन्हननन्हि^२ दखि^३ जाइ^४ नरुपा^५ ।
जो मम नैनन^१ निम्ति हृषिआव^२ । मोहि दखि तोहि ओर^३ न भाव^४ ।
कहौं कंबर म निहव^२ तोही । इन्हननन्हि दखि^३ मक न^४ मोहा ।

क जिउ जोवन सब मन^१ नन सबन^२ द^३ बाणि ।

तब तो^१ लोयन^२ उषरहि^३ जहि^४ मूम अन आदि ॥

पाठान्तर—(१) मा देखि चाहै ए देखै चाह। २ ए जो। ३ मा बहउ।

(२) १ ए चिमि। २ मा भा मम नयन बिमारा (पमारा—मा) रा मुहि
(?) नैन पमारा। ३ मा लेइ।

(३) १ मा तहि दिस्ती देखै मम रुपा ए मा ताहि दिस्ति चाहै (देखउ—मा)
मम रुपा। २ ए नैनहु। ३ मा एक नयनन्हि देखै। ४ भा ए जा। ५ भा
मा ए सक्का।

(४) १ भा जो मन नयन ए मम नैनन्हि। २ मा हव भाई मा हाप भाई
ए ठहराई। ३ ए माहि बल ताहि ओर न भाई भा मोहि ऐसी ओ ओर
जो भाई मा माहि देखै ओ जा कुछ भाई।

(५) १ मा कहेउ। २ मा निरखै ए निरखै भा निरखै। ३ मा मा देख
लायन दखि ए यह दखि नैन। ४ मा मरहि न ए मरै ना।

(६) १ भा कं जा जिउ जावन ओतन मन मा कं जिउ जोवन तन मन। २ मा
नयन। ३ मा भा ए मयन। ४ मा दइ।

(७) १ ए त रा ठै। २ मा लायन। ३ मा बरहि ए उपरै। ४ ए जा।

अर्थ—(१) [उत्तर में उस कामिनी ने कहा] “यदि कोई मेरा रूप देखना चाहता है तो मैं एक अनुपम बात कहती हूँ उसे सुनो। (२) वह मेरे नेत्रों के प्रसार का संकीर्ण कर [मत है] दृष्टि उपार जीव के और [तब] आये (३) और उसी दृष्टि से वह मेरा रूप देखे इस (सामान्य) नेत्रों से [मेरा] रूप देखा नहीं जाता है। (४) यदि तुम मेरे नेत्रों की दृष्टि हस्तपन कर [मने देख] लो तो तुम देख लेने पर तुम्हें और [कुछ] नहीं मालूम। (५) हे कुमार, मैं निश्चित [तब] बता रही हूँ इस (सामान्य) नेत्रों से [तुम] मुझे नहीं देख सक्ते हो।

(६) अथवा तुम जीव (प्राण) जीवन तन, मन नयन सभी की प्रत्यक्ष कर (रख) दो (७) तब तुम्हारे [बास्तविक] नेत्र लगने बिलसे तुम्हें आदि तथा अंत—सब कुछ—ज्ञान होवे।

शिष्टार्थ—(१) जो < जठ < यदि। (२) उपार < उपार = क्षण। (३) निरखै < निरख। (४) मयन < भक्षण = बाण। (५) उपर < उपर < उपर = तुम्हारा।

[३२७]

दिय मोह मगन^१ तुब^२ ठाऊ । ओ रमनी बग^३ जप तुव माऊ ।
ओ मगह मर^४ ठाऊ तुम्हारा^५ । निम्ति मांगि का बगो उपाग^६ ।
तुनी^१ निम्ति ननह^२ मह मार^३ । लोयन अथ जाति बिनु तोर^४ ।
जब सहि त न हाहि बगु माहा^५ । दिस्टि बाझु^६ थगु दगनि बाहा^७ ।

जहाँ न तोर रूप^१ उजियारा । तह दिनयर^२ आछत अधियारा ।
 माझा जहाँ न^३ उष नर^४ तोहि^५ मुख^६ ससि उजियार^७ ।
 सहस सूर जो उगवहि^८ तौहु^९ सो ठाठ अधियार ।

पाठांतर—

ए में उपर्युक्त अठ्ठासी ३ तथा ५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

मा में उपर्युक्त अठ्ठासी ४ के अर्थ परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए संतति। २ रा तोहि। ३ मा ए पर। ४ मा जौ ए जपहु मा जम।
 (२) १ ए मो। २ ए तोहारी। ३ ए बिस्टि माह तुह मुठि अवाटी।
 (३) १ मा मा लही ए तोरि। २ मा मोरी। ३ मा जब लही तह न होहि जप मोरी। (तुछ परवर्ती अठ्ठासी का प्रथम अर्थ)।
 (४) १ मा मा जब (जो—मा) लही तह न होहि (होसि—मा) जपु माहें ए जो नहि नैन सब जसु मोही। २ रा बाबु मा बाहु। ३ मा जप बैपे काहे, ए जो देखी तोही मा जसु देखी जाही।
 (५) १ ए तोय मुख। २ ए लही दिन। ३ मा ए जछत।
 (६) १ ए मे यह छव्य नहीं है। २ ए करे। ३ मा मा तुम ए तुह। ४ रा मे यह छव्य नहीं है। ५ ए उम्मार।
 (७) १ मा ऊनबही ए उटवै। २ ए तबहु। ३ ए ठाँव अचार, मा लही अधियार।

अर्थ—(१) [मह सुनकर कुमार ने कहा] (मेरे) हृदय में सर्वत्र तुम्हारा स्थान [रहता] है [इतना ही नहीं मेरी] रसना भी तुम्हारा नाम अपनी रहती है (२) और [मेरे] नेत्रों में तुम्हारा स्थान है, तो [तुमसे] बुद्धि उधार लेग कर मैं क्या करूँ? (३) मेरे नेत्रों में तुम्हीं बुद्धि [लेग कर रहती] हो और मेरे नेत्र तुम्हारी ज्योति के बिना अंधे हैं। (४) जब तक तुम मेरे जसुओं में नहीं होती हो बिना बुद्धि के [मेरे] जसु किते बेलें? (५) जहाँ पर तुम्हारे कर्म का प्रकाश नहीं है, वहाँ दिनकर के होते हुए भी अंधकार है।

(६) हे बाबा, जहाँ पर तुम्हारे मुख सखि का प्रकाश उदय नहीं करता है (७) वह स्थान यदि एक सहस्र सूर्य उदय करें तो भी अंधकार [नृच] रहेगा।”

टिप्पणी—(१) संतत < सतत = निरंतर, सदैव। (२) ठाठ < स्थान। (३) सोपन < सोचन। (४) जसु < जसु। बाबु < बाबू < बगई = बिना। (५) दिनकर < दिनकर = सूर्य।

[३२८]

संबत सपत बाना^१ जा कीन्हें । भोहि आपुहि बिधि अतर^२ दीन्हें ।
 ससि पूनिब^३ मुख जग उजियारा । सो किमि छप छपाए^४ बारा ।
 सदा हियें मह^५ रहमि तुम्हारी । कामोसउ^६ गोवसि मुख नारी ।
 देहि अघर रस अमिअ^७ अपाई । तजत जो प्रात गया बसवाई^८ ।

बगि दग्गाठ रूप मोहि^१ भारी । क निजु भइ सि^२ जीउ समहारो ।
कोन दोष^३ बहि ओगुन^४ वदन छपावसि^५ मोहि ।
ओगुन इह जो मकर सिस्ति पर म अम्यापेउं तोहि^६ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा संवद मपठ मोहि बचा मा मिवर मपनि बाचा । २ ए मोहि
अनर बाचा मा ।

(२) १ ए पुनीब । २ ए छपाव ।

(३) १ ए हिये मा । २ ए तोहारी । ३ मा मा ए भारी ।

(४) १ ए वेहु अमी रम अवन । २ मा उवन प्रान का मा बेलमाई, ए जाठ
प्रान काया बलमाई, मा उवन परान क्या बेलमाई ।

(५) १ ए माहि । २ ए ती निजु भई ।

(६) १ मा बाव रा ए दुख । २ रा बारन । ३ ए छपावे ।

(७) १ मा मा ओगुन इह जो मकर मुन्नी पर म अम्यापेउं (अम्यापे—मा)
ताहि ए ओगुन इह मकर मिमि परी अवस्था ताहि रा ओगुन इह जो
मिमि मह भई अवस्था ताहि ।

अर्थ—“(१) तुम उन छपकों और बच्चों का स्मरण करो जो तुमने किए थे और [इतना
कि] अपने और मर बोध तुमने विधाता को रक्खा था । (२) तुम्हारा मुख पुष्पिमा के शनि के समान
संसार में प्रकाशित है; वह, हे बाला छिपाने से कैसे छिप सकता है? (३) सदा [मेरे] हृदय
में तुम्हारा निवास है फिर क्यों मुझसे वे मारी तुम [अपना] मुख छिपा रही हो । (४) तुम
[अपने] अपनों का अमृत रस भर वेद हो (विलासी) कि मेरी काया प्राणों का त्याग करने से एक
बाप । (५) ऐ बालिका सीध ही तुम [अपना] रूप विधाता को; अवस्था क्या तुम जीव (प्राणों)
को लेने वाली ही हो गई हो ?

(६) तुम [मेरे] किस वेष और किस अवगुण के कारण अपना मुख मुझसे छिपा रही हो ?
(७) मेरा अवगुण यही [हो सकता] है कि समस्त सृष्टि पर मैंने तुम्हें स्थापित किया है ।

टिप्पणी—(१) सवण < गवण । (२) पुनिब < पुनिषा । (३) हिय < हृदय । गाव <
गोवम् = टिपाना । (४) अमित्र < अमृत । अपा < अप्या [है] = गृह्य करना । (७) जो <
जो < मण = कारण कि कि ।

[३२९]

बंवर बनम मुनि गनुज करो^१ । विगमि^२ होइ रम बाउन धरा^३ ।
पहेमि^४ मोहि बह बल कर मांमा^५ । कुबग्म^६ व को मरबमु^७ मांमा ।
एक^८ म ममो^९ सउ^{१०} बुझ गारो । लाजहि^{११} कटुब पिना महगारो ।
बापा दहि^{१२} जो मो कह^{१३} पोऊ । करो आइ तोहि पर बमि^{१४} जीऊ ।
गपग^{१५} बरह जो मोमउ^{१६} माही । मिलउं आइ^{१७} तुम्ह दइ^{१८} गम^{१९} याही ।

निरह गप बह जिय गही होउ म एहि नर आगि ।^{२०}

मनि मम धरम बीर पर^{२१} पर गाव कर जागु^{२२} ॥

- पाठान्तर— ए में उपर्युक्त तृतीय बहोली के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।
- (१) १ मा कसी ए करी। २ मा प्रकसित। ३ मा मा मै ए भो।
४ मा बातम्ह बरी मा बातम्ह छमी ए बातम्ह बारी।
- (२) मा ए नहेसि। २ ए कुसगारी नासा। (तुम परवर्ती चरण का तुम)
मा बड कुसकर संसा। ३ मा थकरम। ४ मा भापुहि ए भापुहि।
- (३) १ ए एत। २ रा ए नासी। ३ मा नही (<नही) ए नही। ४ ए
काजी।
- (४) १ मा बेह। २ ए मी के। ३ मा मा तुम्ह पर बलि ए तोर पर बल
(<बलि फारसी लिपि)।
- (५) १ मा सपति ए एत। २ ए नही। ३ मा मो सड ए मो सी। ४
रा मिळहू आह, ए मिले आबु तुहू। ५ मा वी ए मे वह शब्द नहीं है।
६ मा गके।
- (६) १ मा मा बिरह बलिब बड बीब सही येही डर होउ न भग (भाणि—भा)
ए बिरह भाणि जो बिर सही तेहि डर होउ न भायु।
- (७) १ मा मा मति मम (हम—मा) चरम बीर पर, ए मति मम चरम जरि
परी। २ ए नही पाप के बागु, रा परी पाप के बाग।

धर्म—(१) कुमार के बचनों की तुलना उस कमल-कलिका ने विकसित होकर बातों का रस
चाख लिया। (२) उसने कहा “मुझे कुल का बड़ा संशय है कुलम कर के कौन [अपना]
संबन्ध नष्ट करे? (३) उससे एक तो मैं नष्ट हुँपी और [हृदये] मेरे कुल की गाली अड़ेपी
[किर] मेरे कुल व पिता और माता अभिमत होंगे। (४) हे प्रिय यदि तुम बचन दो तो मैं
आकर तुम पर अपने बीब (बीबन) को बलि दूँ। (५) यदि तुम हे नाथ मुझ से शपथ करो तो मैं
तुम्हारे पले में बाहुँ देकर आकर तुम से निभूँ।

(६) मले ही मैं बिरह का बाह [अपने] जी में लहलहा रही हूँ किन्तु इती डर से [प्रकट
कम से] भाव नहीं हो रही हूँ (७) कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे धर्म-बीर पर शत्रु लग जावे।

टिप्पणी—(१) करी <कलिया <कलिका। (२) सांवा <सपवा। (५) सपत <शपथ।

[३३०]

बंही कुंवर में। सोहि^१ सति भाऊ। पानिप उठरि चड नहि^२ काऊ।
पानी तात करि^३ जो रे बूझाइय^४। पहिल सवाह न तहि^५ नह पाइय^६।
सुसे फूल के^७ वासु न जाई। ओ न रुप किछ तहि^८ क नसाई^९।
प न पहिल अस गारो रोई। ओ आदर सत^{१०} लेइ न कोई^{११}।
तस तिरिया^{१२} जो^{१३} पानिप ससै^{१४}। सो निभु आवि अंत नह नस।
जो सहि^{१५} पिता सकलप नहि^{१६} मोहि^{१७} क^{१८} कन्यादान^{१९}।
तो रुहि^{२०} होइ^{२१} न सुरत^{२२} रस ओइ सबे रस मानु^{२३} ॥

गठान्तर—

मा में प्रथम अर्द्धांश नहीं है तथा द्वितीय का द्वितीय चरण नहीं है।

- (१) १ ए में यह शब्द नहीं है। २ मा तुम्ह ए तोहि। ३ ए पाप के भाव कई मा भा पानिप उगिरि फनि कई न।
- (२) १ ए कै। २ ए जुडाई। ३ मा भा ए पहिल सवाद कि तामह (कै तापह—ए) पाई (पाइय—मा)।
- (३) १ मा मूचे कुमुम की ए भा मूल कुमुम कै। २ मा मा भीन रप कुछ बोहीक पटाई ए और रप कै बोहि पट माई।
- (४) १ रा ए सौ। २ मा म यहाँ निम्नमिलित चरण और है पर बाहिर सम हासी हाई।
- (५) १ भा सैस तिरि मा तमि तिरिया। २ ए म यह शब्द नहीं है। ३ मा ए पानिप पासी भा पानिप रमै। ४ रा सा पुनि आदि अठ कहि नम मा सा निम्न आदि अठ कहि नमै मा सुनी पु अंत म नानी ए जानि बुनि जा ताहि न नानी।
- (६) १ ए लगि। २ मा भा ए न संकल्पै। ३ रा कैई ए मा करै न। ४ ए वान।
- (७) १ ए लगि। २ मा हान मा हाउ। ३ ए मुरत भा भिट्ठि। ४ मा रनि भा रम तोहि माहि। ५ ए मान।

अर्थ—“(१) हे कुमार मैं तुमसे साथ भाव से बह रही हूँ बी [एक बार] उतर जाती है तो कभी नहीं बढ़ती; (२) सब को तप्त करने यदि उसको ठंडा कीजिए, तो उसमें पड़ता (पड़ते जैसा) स्वाद नहीं पाइएगा। (३) सुनने पर कल की सुषय नहीं जाती है और न उत्तरा रूप (रंग) ही कुछ मध्य होता है (४) किन्तु [पुनः] न पहले जैसी बुद्धता [उत्तम] होती है और न जैसी कोई आबर के साथ ग्रहण करता है। (५) उसी प्रकार स्त्री यदि पानी (बी) पिरा देनी है तो वह मसी भीति आदि और अंत के लिए मध्य हो जाती है।

(६) जब तक [मेरे] पिता कन्यादान करके पुत्रको [तुमको] संकल्प नहीं देते, (७) तब तक [हममें-तुममें] मुरत रत न हो तुम अग्न्य लगी रत (मते हो) जानो।”

टिप्पणी—(१) बाम < वासना = सुषय। (४) गारी < गौरव = महत्त्व मुरत। (५) तिरिया < स्त्री।

[३३१]

कहै कवर मनु पम पिपारी। उनपनि मपन जाहम् मुह गारी।
जाहि मपन जाहम् मुह निगऊ। रद ग्रस हनि अनर निगऊ।
यह गन मोहि तोहि मनि भाऊ। पाप पय पा परों न काऊ।
अर फनि बाबा मपन मोहि तोरी। बिरचि न रचौ बाबा यह मोरी।
ओ सहि परम तरु फर म मोरी। मोहि अग्या अंजिन पल तोरी।

दोहरा—बर पामिनि जब ताह तोहि मोहि होइ न परम बियाह।

पाप न अतर मपर विधि याबा निम्न याहि ॥

[३३३]

जिअ की बात ओ कुछ जिय होई । सहि कर मरम न जान^१ कोई^२ ।
 सुरसरि जानु पियासा परा ।^३ भुए पिड जनु जित^४ अनुसर^५ ।
 दुइ बोधन ग उरहि समान । अघर अघर^६ रस मियत अमाने^७ ।
 मिस्त^८ पिरीतम जो^९ सुख होई । सो का जोभि कहि^{१०} पार कोई ।
 बिबि^{११} सरीर एक होइ गए^{१२} । बटे^{१३} पहर एक दुइ मए ।
 नीर नाक रुहि बूझ^{१४} रह पियासे दोड ।
 परगट भाउ^{१५} सो बरनेउ^{१६} गुप्त जान^{१७} का कोउ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए दुमी बिब होई, मा कुछ बीब होइ। २ मा ए रोहि का मरम न जानै मा रोहि कर मरम जान का। ३ मा ए कोई।

(२) १ ए जो रसार पिया असबाउ मा सुरसरि जान पियासा पीरा। २ ए भुये पिड पानी मा भुये पीड जनु बीर। ३ मा ए अनुसर।

(३) १ मा नै ए रहि। २ मा बेसी। ३ ए न जानै।

(४) १ ए मिस्तहि। २ ए बीस। ३ मा सो कि बीहि कहि मा सो कहि बीम कि ए सो किमि बीम कहि।

(५) १ मा बेसी। २ ए नै बीऊ। ३ मा बीर। ५ ए मयेऊ।

(६) १ ए लमि बुडेउ।

(७) १ मा मा मयेउ ए नै। २ ए बरगिया। ३ मा जानै।

अर्थ—(१) बीबी उस बात का अर्थ जो बीबी (बी प्राणिमों) के बी के प्रीतिर होती है, कोई [अर्थ] नहीं जानता है। (२) [किन्तु प्रत्यक्ष रूप में ऐसा प्रतीत हुआ] बाली प्यासा सुरसरिता (संध्या) में आ पड़ा हो, जबका माथो मृत पिड (शरीर) में बीब आ गया हो। (३) [मधुमास्ती के] बीबी बीधन (बुझ) [कुमार के] हृदय में आ लपाए और [कुमार के] अघर [मधुमास्ती] के अघर-रस का पान कर लुप्त हुए। (४) प्रियतम के मिसने बर जो सुख होता है, उसे क्या कोई बिबूरा कह सकती है? (५) बीबी शरीर एक हो गए, और बीटे-बीटे [बीबी को] एक-बी पहर हो गए।

(६) नाक भर पानी में है बीबी बूझ को प्यासे है; (७) बीबी का प्रकट (प्रत्यक्ष) नाम देने बताया [उक्त] गुप्त नाम क्या कोई जान सकता है?

टिप्पणी—(३) समाय < सम् + आप = आपात होता। मया < अया [३] = मृत होता। (५) बिबि < द्वय। पहर < प्रहर।

[३३४]

फुनि ग बुबी^१ सेज पर बसे । सोमित रति मकरध्नुज^२ जसे ।
 कबहु^३ बुबी पाछिस हुल कहली^४ । कबहु आपु माहि मिलि रहली^५ ।

मधुमाखरी

रवि अथवा^१ सगि निय पगमा^२ । एक सन दुहु^३ कीन्ह^४
जग जीवन पर कहत मो एही^५ । अहि^६ विष्टर दुह मि^७
रमि विहानि दुबो सुन जाय^८ । जिन्ह^९ बगुमी^{१०} भार
अघर अघर उर उर सउ^{११} मरइ^{१२} रह सुल
दलत समुसिम^{१३} निय परहि^{१४} दहु^{१५} हहि एक कि

- पाठान्तर—(१) १ मा कनि उठि दुबी छ ए पुनि मै दुबी। २ मा
ए मधुकर मकर छ रवि मकरधुन (बागरी आर्त्त)
(२) १ ए कहहि। २ मा मा आयुन मह वल मिलही
रही।
(३) १ मा जंबवेठ अ अथवा। २ ए कीहु। ३ मा म
(कीन्ह—या) ए एक सन दुह जिजा छ बिमनी
(४) १ ए फरकत कम एही रा कम जोतार म छोही।
३ ए मा मिले मिलेही।
(५) १ मा बिहानी दुहु मुप जायी (< जाय चारली मि
रम जाय। २ मा कह ए बगु। ३ मा कह ए
(६) १ मा मे रा ए नी। २ ए मेरी।
(७) १ ए रेमि समुसिम। २ रा मन पर मा जीम
रही ए रह हहि।

अर्थ—(१) फिर बीना जाकर सध्या घर बैठे और ऐसे सीमित हुए बी
(बाय) हो। (२) अभी बीना पिछला कुछ कहते, और लम्बी आवस में
करते। (३) सुई जस्त हुआ और जगि में प्रकाश दिया एक समय (समय)
किया। (४) [लोम] बगु में जीवन का सब [इतिहास] यही कहते
सही [परस्पर] मिल जायें। (५) दोनों के मुप में आने आते राम बी
उनकी जानों में न बजा लगी और जिसकी जानों में न होनी है उनकी ल
(६) वे अघरी को अघरी से और हवज को हवज से मिलाकर मुप से
हए के जो [वर्तक को] में नहीं जान कहने के कि एक ही को हो।

जिणगी—(१) मम < सध्या। (३) अथवा < आपात्र < अम्मायु = म
मम < मयन = सध्या। (५) बगु < बगु < बगु।

इही सखिन सभ^१ पर्मा कर सहज रम कलि ।

उही रूपमजरी^२ जिय^३ बड़^४ भरम क बलि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पाठबार सब ए पाठ पन्बर । २ मा बुबारी । ३ मा मा पेमा
मह पहरै, ए पेमा भी पहर रा पेमहि भोर मएउ । ४ मा चित्तसारी ।

(२) १ ए सहेसी । २ ए बेरी । ३ ए मा जो । ४ मा मा ए सय ।
५ ए पचपच । ६ ए बरी ।

(३) १ मा सब । २ मा ए सबप । ३ मा बारी । ४ ए जो । ५ मा
अनुहारी मा उनहारी ।

(४) १ ए कसै हँसै । २ भा मा सबै ए रहे । ३ ए ठाई । ४ मा बाइ
जनु, भा बै मई । ५ ए मे जरण का पाठ दे—पमा बहुरि देखै सब मई ।

(५) १ ए दिस । २ रा चित्तसारी । ३ भा दिमा । ४ रा मा कापर कोट
क्रिएसाज बुबारी ए केलि कछ है राजबुबारी भा केलि कछ है साज बुबारी ।

(६) १ ए सखी सग मा सखिन सय ।

(७) १ मा ए मे यहाँ के और है । २ ए जिउ मा चित । ३ ए बरी ।

अर्थ—(१) पेमा ने द्वार पर का रेशमी परचा डाल दिया और वह चित्रकारी के पहरे पर
[निपुण] हुई । (२) पेमा की सहेलियाँ साथ थीं और [उनमें से] प्रत्येक के साथ बार-बार
बातचीत थी । (३) वे सभी कपली और यौवन-संपन्ना थीं वे एक बपु की और एक-ही उनहार
(मुलाक़ात) की थी । (४) वे सभी एक स्थान पर खेल और हँस रही थीं : पेमा झल्लि की और वे
सब तारिकाएँ थीं । (५) उन्होंने चित्रकारी के आसपास चारी ओर तथा द्वार पर कपड़े का परकोटा
[लगा] कर दिया था ।

(६) यहाँ सखियों के साथ पेमा सहज बात की रस-स्वीड़ा कर रही थी (७) और वहाँ रूप
सजरी (पेमा की माँ) के मन में भ्रम (तन्त्रय) की बेसी बड़ रही थी ।

टिप्पणी—(२) बरी < बेरी = बारी । बैस < बपु = भवस्था । उनहारि < अनुहार <
अनहार = अनुकूलि । (४) ठाई < तारिका । (५) कापर < कण्ड < कपट = कपड़ा । (७)
देकि < वस्त्रि ।

[३३६]

रूपमजरी बसि जो अही^१ । अकम्माद^२ चिता चित गही^३ ।
चक्रि^४ पिस ओ मग भग्मानी । भई ठाढ़ि उठि हिये^५ सुगानी^६ ।
फुनि^७ मधुरा सेउ^८ कहसि बोसाई । भियम^९ वह^{१०} तहि^{११} बिधि मोकराई^{१२} ।
गई साम हुते^{१३} दुबो ते बाला^{१४} । अही^{१५} म जानी कोने हासा^{१६} ।
कौन काज पुइ राज बुबारी । पर तजि राति रहहि^{१७} चित्रसारी ।

मधुर कहा म । बरी पठई ह^{१८} ओन्ह पास ।

ओइ अव निम मह^{१९} आइहहि^{२०} वसहु^{२१} राजहु^{२२} उदास ॥

ठाग्यर—

रा मे उपयुक्त अर्थाभिप्रायः ४ ५ का क्रम है ५, ४ ।

(१) १ भा बीनी अभी रा बीति जा अभी मा बीनी अभी ए मा बीनी अभी
२ मा भा अथममान ए अथमम ते। १ ए दही।

(२) १ १ भा अविता। २ ए अ अर्थ मुलागी। १ ए जा हिय। ४ ए
मुलागी भा रा सखानी।

(३) १ रा ए पुनि। २ रा मा मपुरा सा मा मपुरी ती ए मपुरा ते।
१ मा कहैनि बुझाई मा कहैनि बालाह, ए कहा बोलाई। ४ भा मा बीज
कि ए बी बी। ५ मा देह ए जाति। ६ मा यहि मा यहि ए
म यह छत्र नहीं है। ७ ए माचलाई।

(४) १ ए सोस कि गई, मा नर सोस बी। २ रा कुभी मो बाला। ३ मा
रही। ४ मा बाला।

(५) १ मा रैनि बनी ए राति रही।

(६) १ मा भा मपुरी कहा अवहि मैं ए मपुरी कहा मैं। २ मा पत्नी ही। ३
ए उच्छ्रुत।

(७) १ ए छिन मो। २ ए एही मा बीही। ३ मा रा ए अंशु। ४
ए उज्जी।

अर्थ—(१) कथमन्तरी अब बीनी हुई बी, अकस्मात् चित्ता ने उसके चित्त को भर पड़ना।
(२) चित्त में भरलाई मन में भरलाई और दुःख में लविह करनी हुई वह उठकर जाड़ी हो गई। (३)
तत्पश्चात् उठने मपुरा से उसको मुलाकर कहा "बाला होता है कि" कथा इत प्रकार अपना देह
(विह) छुड़ा कर गई है। (४) संस्था से ही वे दोनों बालार्थ गई हैं, पता नहीं वे चित्त बसा में हैं।
(५) क्या प्रयोजन है कि दोनों राजकुमारियाँ घर छोड़कर रात में बिचसारी में [बड़ी] रहें?"
(६) मपुरा ने कहा "मेने उनके पास बेरी को भजा है। (७) वे अब लक्ष में ही आबैगी।

टिप्पणी—(१) जी < उठ < यथा = अब । अथममान < अथम्यान् = अथमम । (२)
गाना = गुरु बी बानि मदेहापुर होना। (३) चिय < बुझा = बुझा। (४) नाम < मप्या।
(५) बरी < बरी = दानी (७) निज < धन।

[३३७]

बहमि निमित्त म दगों तहाँ । मधुमालनि भी पमा जहाँ ।
अनु जिय भरम मोहि चित्त भारी । भोगन निष्ठु दगों चित्रगारी ।
मपर बता' गुनहु तुम्ह' रानी । बतुर मुबुधि हटु' मग मयानी ।
मय आहु' जो' निमि अधिपारी । कोन बाज जाह चित्रगारी ।
मद बगहु म भोगहु हुहु रावों । बरद तो म सद य' ल मावों ।
भोर हु' बार मरमो' मलहि कलि बगहि ।
भोर ठार कोन पराजन जो' मग्गिन' म' जाहि ॥

पाठान्तर—

मा तथा ए में उपर्युक्त ३ ४ तथा ५ अर्द्धाक्षियां यथा १ २, ३ आती हैं और उपर्युक्त १ २, के स्थान पर उनसे यथा ४ ५ निम्नलिखित आती हैं भोह आपुस महं (भो—ए) बार सहेलीं। करहि (केहि—ए) पिता घर न रखेसी। बिसुरि मिली बहु दिनहु (बहुते दिन—ए) दोऊ। तेहि बरख जोन्ह (उन्ह—ए) बरख न कोऊ। या तथा रा में ये अगले छत्र में आती हैं।

(२) १ मा चित्तसारी।

(३) १ मा भी पुनि कहै ए भी पुनि कहा। २ ए धनु ठै। ३ ए हो। ४ रा में इस अर्द्धाक्षी के स्थान पर है —

मधुरा बरजि रही बहु जाती। पै रानी बिय भई न साती।

छोय समस्त प्रीतियो में यह अर्द्धाक्षी अगले छत्र में आती है।

(४) १ ए बोटा। २ ए न यह खम्ब नहीं है। ३ मा चित्तसारी।

(५) १ ए उन्नि पीराबी। २ ए कही लो यही उन्हें।

(६) १ ए बाछ सहेली भा बार समेही।

(७) १ ए जे। २ मा करिकेन्ह मा करिकेन्ह। ३ ए यह।

अर्थ—(१) [अपमंजरी ने] कहा 'एक पल में वहाँ [जाकर] देखू [तो], वहाँ दोनों और मधुमाखरी हैं। (२) अन्यथा जित में मुझे भारी भ्रम हो रहा है और चित्रसारी में मैं कोई बुराई देख (तमस) रही हूँ। (३) मधुरा ने कहा "ऐ रानी तुनी तुम बहुत बुद्धिमान और सर्वज्ञ स्वान [रही] हो। (४) [चित्रसारी का] पक्ष बीहड़—पीछे हटा हुआ है और रास अँबेरी है तुम किस प्रयोजन से चित्रसारी को आ रही हो? (५) तुम बीहड़, मैं उन दोनों को बुलती हूँ; और कहो तो मैं स्वयं जाकर उन्हें ले जाऊँ।

(६) वे दोनों बाल-सेहेलियाँ हैं वे खेल रही और केति कर रही हैं (७) मेरा पुत्रहारा क्या प्रयोजन है कि लड़कियों में जाऊँ?

टिप्पणी—(१) निमिष < निमित्त = क्षण-मीलन। (२) अनु < अन्वहा < अन्यथा। (३) स्यात् < सन्नान। (४) बीहड़ < बीहड़ < अपसृत = पीछे हटा हुआ। (५) राव < रावपु = पुकारना आह्वान करना। सहे < स्वयं। (६) बार < बाल। (७) परोक्ष < प्रयोजन। जी < जमो < वत = कि।

[३३८]

मधुरा बरजि रही बहु जाती। पै रानी हिय भई न साती।
 भोह आपुस महं बार सहेली। सहि पिता घर क रस बली।
 बिसुरि मिली बहुते दिन दोऊ। तहि सेहत उम्ह बरख न कोऊ।
 बरजी न मानेसि गह पित्रसारी। मधुरहि साज भई बिय भारी।
 बेरी बीस सिहसि मय साई। सह आपुन पित्रसारी आई।

बरजि रही बहु मधुरा रानी सजन न कोह।

सह गयनी पित्रसारी न देखसि सब चीन्ह ॥

मा ए म उपर्यक्त प्रथम अर्द्धांश तथा तृतीय है और द्वितीय तथा तृतीय अर्द्धांशों के स्थान पर तथा प्रथम तथा द्वितीय है —
बहेमि निमित्त वी (एक—ए) देवीं तहां। मधुमासती जी (ए म 'जी' नहीं है)
पमा (पेम है—ए) जहां।
उपमर (अव जो—ए) मग्म मोहि (जी—ए) बिग (जी—ए) भारी (भारी —मा)। जीपुग किछ (कृष्ण—मा) बेरी बिगमारी।

(१) ? ए बिग मा बिग। २ ए म इम अर्द्धांश के स्थान पर है —
मपुरा कहा गुनह गुनह रानी। कपुर बुझि गुनह मरा सयानी।
(किम्पु यह पूर्ववर्ती छंद की तृतीय अर्द्धांश है।)

- (२) ? रा बास।
(३) ? मा बहु बिग से।
(४) ? मा बग्जो ए बग्ज। ७ ए मारी गी। १ रा मपुर। ४ ए जी जो।
(५) ? ए भीम्ह। २ मा ए मोग। ३ ए जी पुनि बिगमारी जा।
(६) ? ए जा। २ ए ए मा बपम।
(७) ? मा आयु जा ११ जी बीनी। ८ मा बिगमारी। ९ रा रमा।

अर्थ—(१) मपुरा बहुत प्रकार से मना करती रही किन्तु रानी (वपमंजरी) के हृदय में मति नहीं हुई। (२) [मपुरा ने कहा] “बे आपस में बाल-बहेलियाँ हैं पिता पुह में रस-केलि कर लें। (३) विमुक्त होकर वे बहुत जियों पर मिली हैं इसलिए उन्हें तलते हुए कोई मना नहीं कर रहा है।” (४) [किन्तु] मना करने पर भी [वपमंजरी ने] माया नहीं और वह बिगमारी भी नहीं [इस पर] मपुरा को भी मैं भारी लगजा हुई। (५) उस (वपमंजरी) ने बीस तियाँ ताव लीं और स्वयं अपने से ही बिगमारी आई।
(६) मपुरा बहुत मना करती रही किन्तु रानी (वपमंजरी) ने काम न किया (७) वह बिगमारी भी और जाकर उसने सब बिहल (लज्ज) डैले।
टिप्पणी—(५) गद < स्वप्न। (६) मवन < अवपन = वान।

[३३९]

जी रानी बिगमारी आई। ममि सा जा कहन मजाई।
ममि मडल रवि किरनि छपानी। रवि दगत गसि जानि हुरानी।
गत राहु जगि भई नारी। पमा पाम आइ दई गागी।
हूँ निलजताहि नानि न मोरी। गग दिहमि कम पाजिया नारी।
एहिं सजी भरामें तोरे। कम कमक कम पाजिया मारे।
मनि भागा सनह नर सगत जा र नह्नि समुनाइ।
काग होइ सो निम्प कार सप जो बमाइ ॥

- (१) ? मा बिगमारी। २ ए कहा न जाई।
(२) ? मा ममि बरिद रवि ए रवि बरिद जो। २ मा. गमानी मा. समाना।
१ ए देग मा देगेनि। ४ मा हेरना।

- (३) १ ए बेला राति भई जो। २ मा बिजा ए बिहू।
 (४) १ मा ए है। २ ए है निसज्ज गुह मा हियें दे निसज्ज। ३ मा मा राम
 बिहू कस पीतिमा (बठिया—मा) कोरी रा बाग बिहू कस ठोबी (?) कोरे,
 ए बाग बिये कर पीति अकबोरी।
 (५) १ रा है, ए येह मा हज्जी। २ ए भरोसे तोरे। ३ मा कारिख। ४
 मा मा ए माये।
 (६) १ रा सत भाखा सो सतव यह रै कहेनि ए सत भापा मुनि तिन्ह कैं सत कही।
 (७) १ मा ए कार। २ मा ये और है 'अठहि'। ३ मा निरनै ए मा
 निरनै। ४ मा मा ए सग। ५ रा ये यह सज्ज नही है।

अर्थ—(१) जब राती (कर्मजरी) चित्रकारी भाई उसने यह बेला जिसको कहते सज्जा
 शात होती है। (२) अलि-अदक (प्रेमिका की कोड़) में सूर्य (प्रेमी)-किरण छिन्न रही थी, और
 सूर्य (प्रेमी) को बेला (पा) कर सखि (प्रेमिका) की ज्योति मुप्त हो गई थी। (३) यह बेला
 ही वह राहु बंदी काली हो गई और येमा के पास कलने जाकर घाली दी (४) "तु मिलेज्जा है और
 तुझे मेरी कानि (मर्दावा का ध्यान) नहीं है। तुने कोरी साड़ी बर लीसे (क्यों) बग लगया?
 मने तो इसे तेरे मरोसे छोड़ रक्खा था [तो] तुने [मेरे] फुल को कलक कंसे (क्यों) लगया?"

(६) संतों की भावा लवै सत्य होती [रही] है, जिन्होंने सपना कर कहा है (७) कि
 "यह अकस्य ही काला हो जाता है जो काले के संप निवास करता है।

टिप्पणी—(१) बी < बज < बजा = बज । (४) मोतिबा < पोतिमा < पोतिका = पोती
 साड़ी। (६) सति < सत्य। सतव < सतत = सदैव। (७) निरनै < निरनय।

[३४०]

पम कहा सुनहु^१ मैं कहूँ^२। तुम्ह माँता बोलहु सो^३ सहज^४।
 मोहिनमाख किछु^५ तुम्हरी^६ गारी। जसि भपुरा तसि तुझ^७ महसारी।
 प किछ^८ जोरि^९ साह लै^{१०} मोही^{११}। तौ गरिबाउ भाउ जत^{१२} ठोही^{१३}।
 भरम न किछु^{१४} मानहु जिय^{१५} रानी^{१६}। त^{१७} दूनी जस^{१८} सूरसरि पानी।
 म पाछिलि इन्ह^{१९} गुह^{२०} क^{२१} प्रीती। सम^{२२} जानौ अत आदि जेउ^{२३} बीती।
 उतपति आव कही सम पेम^{२४} मिल दुबो^{२५} जेहि^{२६} माति।
 पालक^{२७} फरि बदलि^{२८} कर^{२९} मुंबरी पहिरिन्ह^{३०} भइ जिय^{३१} सीति ॥

पादान्तर—(१) १ ए सुनहि। २ मा माइ कही। ३ मा जो। ४ मा सही ए कह्यं
 (गुल० पूर्ववर्ती अर्थ का गुल)।

(२) १ ए मा। २ ए तोरी। ३ मा तब ए मा है।

(३) १ मा गुह। २ ए सीह। ३ मा ए क। ४ ए मोही। ५. मा ठी
 गारी अत भावय ए ठी गरिबाय भाव जत। ६ ए तोरी।

(४) १ मा गुह ए ज। २ ए जीव। ३ ए गारी। ४ मा येह, मा केह,
 ए एक। ५ ए गुह अत।

- (५) १ रा में पछिनी पण्डु दुहं रं ए मा भी पाछिनि कुण्ड रं (कि—मा) ।
२ भा मव । ३ भा मा ए जा ।
(६) १ ए ओ पयै भा मव पयै । २ मा मिस ह्यो ए ग्रीनि मिमी । ३ मा मणि ।
(७) १ मा पार्यय । २ रा म यइ मय्य मही है । ३ ए रं । ४ मा पहरोग्ग
मा पहिरिन्ह । ५ भा मइ जिय मा ये जिय ए जीव भी ।

अव—(१) पेमा न कहत तुम [मेरा भी] मुनो में कह रही हूँ। तुम [मेरी] मन्ता
हो धीर सो बोली हो वह मैं सहन कर रही हूँ । (२) भुम तुम्हारी माती का अवर्ण नहीं है [बर्णिक]
सीता मधुरा मेरी माता है, बीसी हो भुम भी हो । (३) किन्तु कुछ छोटापन (बोप) भुम में लपा
(प्रभावित कर) सो हो जितना तुम्हें आछा लगे पायी हो । (४) हे राणी भुम भ्रम न मानो ये
दोनो ऐसे [निष्कर्षक] हैं जैसे मंगा का जल [होता है] । (५) मैं इन दोनों को वह पिछनी प्रीति
[तथा] सब कुछ जानती हूँ जो इनमें आवि है अंत तक बीत चुकी है ।”

(६) पेमा ने आवि की वह सब बार्ता बताई जिस प्रकार दोनों [एक-दूसरे से] मिले व (७)
[और जिस प्रकार दोनों ने परस्पर] वर्णों परित्तित की थी और मुखिकाएँ बरत कर हाथों में बहनी
थी और सब [उनसे] भी को दानित हुई थी ।

टिप्पणी—(२) माछ < मयप । (७) बाग < बता < बार्ता । पालक < पर्यक । मुदरी <
मुद्रिका ।

[३४१]

गता पमा निवट बुझाई^१ । बहसि जा पूछी^२ बहहि बुझाई ।
कहु माहि एहि बहि^३ माति बषहाय । राख दुखी^४ रं नरस^५ मुबार ।
कृण कर ऊव क र^६ कुल हीनी । व र विरह दुग हुते मलीना ।
व सह मुनि बाहु मउ^७ बाता । क र देगि^८ ओहि^९ क रंग राता ।
सब पमै निजु बाग जा मही^{१०} । रूपमजरी सउ^{११} मय^{१२} बही ।
गइह^{१३} मुहावन बनगिनि^{१४} सुदजमान मुवार ।
निबइत अह^{१५} राज कर ठाकुर^{१६} कबला^{१७} प्रानअधार ॥

- वाक्यार्थ—(१) १ ए बोझावा । २ मा ए बरेमि । ३ रा भा. जा मो मा ए पूछो ।
४ भा बह नयुझाई ए. बह गन यावा ।
(२) १ रा बह ओहि एहि बहि भा बह माही मही वा ए बह माति एव ।
२ मा. दुख । ३ भा रं माहि ए की माहि ।
(३) १ ए बीर किहे । २ ए. हन रा हुना ।
(४) १ भा बह नयमप पुरख बी ए रं नन नगुर रं रा मा केई मदे मुनि
काट गी । २ ए रं न देगी । ३ मा एहि ए मति ।
(५) १ मा जाही । २ रा ए भा. सो । ३ ए. सब ।

- (१) १ रा मा कुल सुहाव कर्न गिरि ठाकुर, मा यह (<मरह) सोहावन
कनका गिरि, ए गढ़ सुहावन कर्न गिरि।
(७) १ मा बाही ए उहवा। २ ए रावा ठाकुर। ३ मा नेवस। ४ ए
निमार।

अर्थ—(१) रानी (कर्मजरी) ने बेगों को [अपने] निकट बुलाकर कहा “जो मैं पुछनी
हूँ वह तु लपसा कर बता। (२) मुझसे यह कह कि इसका व्यवहार कैसा है, यह रंक बुझिया है
या मरेरा भूपाल है। (३) यह कुल का उजब है या कुल का हीन है अपका बिरह के दुःख से मलिन
है? (४) यह स्वयं ही किसी से [उत्तमी] बात गुनकर उसके प्रेम में अनुरक्त हुआ है अपका उसे
देख कर? (५) सब बेगों ने जो ठोक-ठीक बात की, कर्मजरी से सब बताई।

(६) उसने कहा, “[एक] सुहावना वह कनकगिरि है, [जहाँ का] भूपाल सुरजमान है।
(७) यह [कुमार] उषी का विधेय (सुराज) और राज्य का स्वामी (उत्तराधिकारी) है
और यह [अपनी माता] कनका के प्राणों का [एकमात्र] आधार है।

टिप्पणी—(२) बेबहार < बबहार। (२) (६) बुवार < भूपाल। (४) सइ < स्वयम्।
(४) रात < रक्त = अनुरक्त।

[३४२]

सुनु मांता प^१ इन्ह बुहु माही । दरस^२ परस छाड़ि मन^३ क्रिछु^४ नाही ।
म काहें^५ असि भइउ^६ अयानी । मरवो^७ निर्मरु^८ और महु^९ पानी ।
अजित कुंड अस^{१०} ओतरा । अजहु दबु ओइस ह भरा^{११} ।
पम सोन^{१२} हहि^{१३} पाप न नास^{१४} । अजहु सुरसरि नीर^{१५} पियास^{१६} ।
कबरु करी^{१७} नहि सीन्ह बिगासा । भवर बिमोहि कूरु नहि^{१८} बासा ।
अजहु सवातो बार सीप^{१९} रुगि थोरि^{२०} गगन^{२१} बहुरति^{२२} ।
अजहु असि जनमी^{२३} मधुमालति वई राखी^{२४} तेहि भाति^{२५} ॥

पाठांतर— मा प्रथि इस छंद के अंतर छंद ४२४ एक संक्षिप्त है।

- (१) १ मा मा कुनि ए जो। २ मा येन्ह बुहु ए बुई बिब। ३ ए कूर।
४ मा मा छाई ए थोरि। ५ मा कुहु, ए जो।
(२) १ मा बाहे। २ मा असि भइ, ए को भई। ३ मा ए अवतार।
४ मा ए निरमल। ५ ए और भी मा कीरही।
(३) १ मा जाइस ए तीस। २ मा ए अवतार। ३ मा बोइस है भाप ए
बोइसे है बारा मा तीस है भरा रा बीसी है बरा।
(४) १ रा सीन्ह। २ मा हही मा हहि। ३ ए ए न पावे मा बिगारें।
४ मा तीर। ५ मा पियासें।
(५) १ मा रा ए कली भा करी। २ मा कंबल मा बिजा ए काहु मा।
३ मा मा मांन (मंवर—मा) बिमोहि रूप भी ए और बिमोहि रूप भी।

(६) १ मा अमहु सवती पार सीपहु, ए भा अमहु सवानी पार सीप रा अमहु स्वात नीर। २ मा ए पार। ३ मा ननर। ४ मा पुनती भा ए गुमाति।

(७) १ मा दीति पनी ए बीम जननी भा बीम जनम। २ मा बिधि राणी ए पहिर जीउ भा बीय राणि। ३ मा सेति जाति ए जी साति।

मर्म—“(१) शिशु माता मुनी, इन दोनों में [परस्पर] दर्शन और स्पर्श के अतिरिक्त इनके मन में कुछ नहीं है। (२) मैं क्यों ऐसी मजान होने लगी कि निर्मल दूध से पानी मिटाऊँ ? (३) अमृत कुंड (स्त्री मुह्याय ?) किस प्रकार अवतरित हुआ था आज भी वैसा तो उसी प्रकार बना हुआ है। (४) [दोनों] प्रेय-सीम हैं पार से मध्य नहीं [हए] हैं, [दोनों] मुरतरि के नीर (मुरत रस ?) के लिए विचारार्थ हैं। (५) कमल-कलिका (स्त्री मुह्याय ?) ने [अमी तक] विकास नहीं वहन किया है और नैवर (पुत्रव मुह्याय ?) ने विपुल होकर दूत (स्त्री मुह्याय ?) में बात नहीं किया है।

(६) आज भी स्वामी की पारा (पुत्रव मुह्याय ?) सीपी (स्त्री मुह्याय ?) के लिए धुनइ कर आकाश में घहरा रहा है। (७) भयमालतो आज भी बीसी ही है बीसी वह अम्बी (अम्ब के समय) भी देव ने [अमी तक] उतकी उती भाँति रक्खा है।”

टिप्पणी—(२) अमानी < अजानि। और < सीर। (५) करी < कनिमा < कलिका। (६) सेवारी < स्वामी। पार < पोल < पुम्प < पुर्प = धूमका चचाचार फिरना।

[३४३]

पमो वषन सुनमि अब^१ गता । मई माँति तब जिय^२ मुत्ताना ।
महानि फरहि यह सतत^३ राव । बिया भाजि माहि सत^४ यह गाव ।
बबहु खनि^५ हा^६ बह^७ निमिदया । बबहु मोन होइ^८ रह अलगया ।
बबहु सीम धरि^९ बनि तवाई । बबहु ठाढ़ पुनि^{१०} हम हमाई ।
बबहु वह दग्न सत^{११} वना । बबहु रहिर भरि भावहि^{१२} तना ।
बबहु दस चारि अन छाड़^{१३} कबहु राव दुग^{१४} गोइ ।
बबहु वारी^{१५} बिहविपाकलि^{१६} वदन डाकि रह^{१७} मोइ ॥

वाक्यम्बर— भा ए य उपर्युक्त तीवरी तथा बीपी अर्द्धाधियाँ परम्पर स्थापनारिष्ठ है।

(१) १ मा सुप्री अब ए गुता जी। २ ए मा मगोग जिठ।

(२) १ ए बगुवनति त। २ ए येमा भाव मो सी, भा बिधा सात्र न मोमां।

(३) १ मा खनि। २ ए मे मह राध नहीं है। ३ भा, रह ए रह। ४ ॥ पुप मे भा सूप हाइ। ५ भा अयेमा।

(६) १ मा निर पुनि, ए सीम ये। ६ ए मे।

(७) १ रा नटे दरपन या ए हैनी दरपन से मा नई दरपन से। २ ए रहिर मे भाई।

(८) १ ए अन्न छाई। २ ए मे वह एम्ब नहीं है, भा, बुइ।

- (७) १ ए न यह खम्ब नहीं है, भा मोली। २ ए म्याकुमी। ३ ए बाँपि रह, भा बाँकि रह।

अर्थ—(१) पेमा की बातें जब रागी (बपनंजरी) ने सुनीं उसे हासि हुई और वह भी में स्वस्थ हुई। (२) उसने कहा “सबमुख यह सबैव रोली है, और अपनी व्याप्य लज्जावत्त मुक्तते छिपाती है। (३) कभी यह बकरा कर चारों ओर देखती है और कभी मीन होकर घुम-घुम रहती है। (४) कभी यह तिर पकड़कर बैठ जाती है और तमोनिभूत हो जाती है और कभी बड़ी होकर हँसती-हँसती है। (५) कभी यह बर्षव [के प्रतिविम्ब] से बचन बहती है तो कभी [इतके] नेत्रों में बहिर [का अप-बल] भर आता है।

(६) कभी बार-बार विनों तक जाय [जाणा] छोड़ देती है तो कभी अपना कुछ छिपा कर रोती है (७) और कभी बालिका बिछु-व्याकुल होकर मुख डेककर लौ रहती है।

टिप्पणी—(२) सतत < सतत = निरंतर, सबैव। (४) तव < तम = तमोनिभूत होत। (६) गोब < गोपय = छिपाया। (७) बाये < बालिका।

[३४४]

सहि ऊपर पापिनि त बाहे^१ । बुझी आगि पर धित स बाहे^२ ।
एन एसह^३ सहि^४ धित^५ बरागी । सहि पर त का बई बजागी^६ ।
एहि आपन कछु^७ हुत न^८ समारा । त का बय ताहि पर पारा ।
पासव एन हम नय धरी । एहि के मदिस^९ काहु^{१०} लै धरी ।
तहि दिन सेठ यह मरि मरि जिय^{११} । अम न साह खडवानि न पिय^{१२} ।
आजु बाठ सम जानिउ^{१३} ओ बुझिउ सम भम^{१४} ।
त कत हरिम डारि बति काटी^{१५} आगें^{१६} कौन यह भम^{१७} ॥

पाठांतर— उपर्युक्त तृतीय अर्द्धांकी के अरज ए न परस्पर स्वानांतरित हैं।

- (१) १ ए तै एह का कीन्हे। २ ए धित ऊपर कीन्हे।
(२) १ ए बिसहि। २ ए में यह खम्ब नहीं है, भा येहि। ३ ए, रही भा हुति।
४ ए, उतर तै बई बय आयी।
(३) १ ए में यह खम्ब नहीं है। २ ए न हो।
(४) १ भा मदिर। २ ए, काहु।
(५) १ ए ते जो मरि मरि पीजह। २ ए आगु और खडवानि न पिये ए अम न साह पानी न पीजह।
(६) १ भा जिनु जानिउ ए सब जाणा। २ ए ओ बुझा सब भमं।
(७) १ ए तै काजर बाह तिर काहे भा तै का डारि हरी बगि कसी। २ ए आगु भा एक। ३ ए भमं।

अर्थ—“ (१) उसने ऊपर (यह सब होते हुए भी) ऐ बालिगी तु क्यों बुझी जल्लि पर की लेकर बला (बैक) रही है? (७) एक ती वीं ही उसका धित निरलत बा, [धिर] उत पर तुने यह

बयाजि क्या (बनों) को ही ? (३) इसको अपना कुछ भी स्पर्श नहीं था फिर उस वर तुने क्या क्या बात बिबा ? (४) एक पर्यंक स्वर्ग और नग-अटित इसके भंदिर (भवन) में कोई [एक दिन] लाकर रक्त गया (५) उसी दिन से यह [मानी] नर-नर कर बीती है और न यह मद्य जाती है और बौद्ध का बानी (रक्त) बीती है।

(६) आज मैंने सब कामें जानी और सब कर्म समझा। (७) तुने यह हरी बात क्यों पित कर कष्ट वाली और फिर यह कौन-सा कर्म किया ?”

टिप्पणी—(१) बाह < बाह्य = बलाया। (२) बव < वप = बोया। (३) पार < पाद < पानय = गिराया। (४) पालक < पर्यंक = पर्यंक। (५) अन < अन्न। (६) हरिय < हरित = हरा।

[३४५]

अति किए^१ रिसि बिछु^२ खेत न रखा । रानी राइ सगिह मउ^३ पहा ।
अस बेगराबहु इन्ह दुहु जानी^४ । जमें गिर पांग मउ^५ पाना ।
सगिन्ह^६ दुहु बिच करबट होन्ही^७ । एक म्ह जनु^८ दुइ ठां कीन्हा^९ ।
असि माहनि बन्नु^{१०} जिहा लागे^{११} । करबट होन्ही मवहु नहि^{१२} आग^{१३} ।
कुंवरहि ल सो कनगिरि जारा^{१४} । मधुमासनि स भदि^{१५} उगारा^{१६} ।
बिचमारि^{१७} मउ^{१८} रानी फनि^{१९} गह^{२०} मधुग पाम ।
कहुसि^{२१} हाइ^{२२} जो अम्मा बल्हु मवर^{२३} बाग ॥

वाक्यान्तर— ए ने उपर्युक्त सुटीय तथा बन्नु के अर्द्धाभ्यास परस्पर स्थानान्तरित हैं।

- (१) १ ए को। २ न यह राइ नहीं है। ३ रा हाइ भक्ति या ॥ बहुरि मन्दी से या राइ सगिह को।
- (२) १ ए अम बेगराबहु दुहु जानी या रा अम बेगराबहु इन्ह दुहु (दुहु—रा) जानी। २ ए जैम समम पन से या जैम पन को रा जैम मिरे पांग या।
- (३) १ रा सगिह। २ ॥ बीच दुहु करबट होइ या दुको बिच करबट होइ। ३ ए लव। ४ ए या विरह।
- (४) १ रा बिच। २ ए जानी (< लागे जारानी निदि)। ३ ए दम बहुरि या या कई लवहु नहि। ४ ए पायी (< जाय पागमा निदि)।
- (५) १ ए या जिहा मद्य से जारउ (जारेहि—भा)। २ ॥ उगारउ या उगारेहि।
- (६) १ या या बिचमारि। २ या ए रा सो। ३ रा ए बुनि। ४ ए यो।
- (७) १ रा मव। २ ए लहु। ३ ए मउ मवरा रा पाऊ अपने।

अर्थ—(१) अनि रीज करने से [कर्मजरी को] चल नहीं रहा [नरनंतर] रानी (करनजरी) ने रोकर लज्जा से कहा (२) “इन दोनों अनों को इन प्रकार को (मलय-जलय) कर दो मैंने [बली के] चल से जानी फिर [कर जलय हो] जाया है। (३) लज्जा से दोनों को

बोझ से करबट हो मानीं जगहों में एक बह को ही स्थानों पर कर दिया हो। (४) वे आँखों की ऐसी मोहनी मित्रा में समे (बड़े) हुए थे कि करबट ही गई और तब भी वे नहीं आये। (५) कुमार को लेकर [कनकजरी की सजियों में] कनकगिरि में आन दिया और मधुमासती को से [बा] कर जगहों में [उत्तरे] मंदिर [भवन] में उतार दिया।

(६) चित्रसारी से तत्पश्चात् रात्री (कनकजरी) मधुरा के पास गई (७) और उसने कहा, “यदि भ्रात्रा हो तो सबैरे (झीझ) ही [अपने] बास (निवास) को प्रस्थान करें।”

टिप्पणी—(२) बगर < बिहङ्ग < बि + बट् = छाड़ना याचित करना। (५) कर्न < कनय < कनक। (७) मधुरा < माता।

[३४६]

कवर इहां जागेउ^१ जह आनां । चक्रि^२ चित^३ भा मरमि मुकानां^४ ।
 सौमुख सपन न जा किछु^५ कहा । दसत चरित चक्रित होइ^६ रहा ।
 याहि लह सिर बुनि बुनि राव । नन रगत मुख अबुज घोव ।
 कहाँ सो चित्रसारि^७ कविलासा । कहाँ सो आछरि जहि सब^८ वासा ।
 रजनी अत^९ होत भिनुसार । चक्रउ कुवर तह जह दूत दारा^{१०} ।
 कह कविलास नवास वास^{११} वह^{१२} कह आछरि कर सब^{१३} ।
 निमिष माह वह^{१४} राजसुख कह रेकीन्ह अव भग ॥

पाठांतर—(१) १ ए जाया। २ भा चक्रित। ३ ए जो। ४ भा मन मरमाता।

(२) १ सौमुख सपना जात न। २ ए देखा चक्रित चित न भा देखि चरित चक्रित होइ।

(४) १ भा चित्तसारि। २ ए सो रही बाहि सय भा सो सुरहिनि जहि सय।

(५) १ ए यत। २ ए कह होत हियाय छ उठि जहां सो बारा।

(६) १ ए में यह शय्य नहीं है। २ ए जो। ३ ए जहां सुरज बस सय भा कई सुधि निकर संग।

(७) १ ए जो। २ ए कह कहि कीन्हा।

अर्थ—(१) कुमार यहाँ जया जहाँ [वह] के जया जया वा वह जित में चक्राया और अभित होकर मृता रहा। (२) यह [सब] संस्थान वा या स्थान कुछ कहा नहीं वा सत्ता वा। इस चरित को देखकर वह चक्राया हो रहा। (३) निंदी बालकर वह सिर पीट-पीट कर रोता वा और भेजों के रक्त (रक्ताम्) के मुख-कमल को पीता वा। (४) [वह सोचता वा] “कहाँ वह चित्रसारी का स्वर्ग होगा और कहाँ वह अप्सरा होगी जिसके साथ उसने निवास किया वा।” (५) रात्रि के अंत में सबैय होते ही कुमार यहाँ [के लिए] चल पड़ा जहाँ वह बारा (रजनी) की।

(६) [वह सोचता जाता वा] “कहाँ [रहा] वह स्वर्ग का निवास और कहाँ [रहा] वह अप्सरा का साथ? (७) निमेष (पल) मात्र में कितने उस राज-मुग्ध को इस प्रकार मग कर दिया?”

टिप्पणी—(२) गौतम < गौ + प्रत्यय (?) । (३) बाह < बाह्य < बाह्यता । गम
रक्त । (४) (६) बाह्यता < बाह्यता = बाह्य । (५) (६) बाह्यता < बाह्यता < बाह्यता =
बाह्यता । (७) निमित्त < निमित्त = अति-भीषण नैव-महाबाह ।

[३४७]

बाह्य मय माय^१ न^२ त्रिनु बन्नाग^३ । गेवन चन्तु घाप्ति^४ मित्र छाग^५ ।
नन मकर गहिय यन साग^६ । जग जीवन मय^७ माहि जिन्त भाग^८ ।
मय^९ न माय पम यन माता । पिमम म यन वचन नहि^{१०} ज्ञाता ।
आइ बाता एकमर निन गनी । मधुमासनि कर पम मयानी ।
वन मायर जन भाग^{११} पन । पम प्रताप ते गम आइ निर^{१२} ।

यहू तो उहाँ^१ चला तहि मारग अहाँ प्रथम भइ मित्रि^२ ।

मधुमासनि जो जाग^३ मय जो^४ लोभमि निद्रि^५ ॥

पाठ्यार्थ—(१) १ न माय । २ न म यन माय नहीं है । ३ न बाग बाह्यता या बाह्य
मयि ।

(४) १ न जो गे लोभाई न गेह यन माय । २ न म यन माय नहीं है ।
३ न इनी नहि भाई भा लेहि छाग अर्थ (?) ।

(५) १ न मा मय । २ न न बरनी कहीं जो मा म यतो वचन नहि ।

(६) १ न जा माय । २ न लेन उबर मा म यद्वे ले ।

(७) १ न म य तो इहाँ । २ न नहि प्रथम जो निधि भा जग परथम भइ मित्रि ।

(८) १ न इहाँ जानी भा इदनी जानी । २ न म यन माय नहीं है । ३ न
माय निधि ।

अर्थ—(१) चलाकर अनितरित [धुमार के] संग-साथ जाई नहीं या [विष्णु] वह [इसो
प्रकार करने] निर कर राग हासकर चल पड़ा । (२) [उपन माता] “तबों में उत्तरा स्वयं
[स्वयं] मय को [उत्तरी] लयाए दू जयन्त वा बीजक अब मुझे मिल जाय (बाम) का
छा ? (३) उसके संग-साथ [कोई] नहीं या और वह प्रेम-भर (मरिचा) से मत या
उमरा प्रथम मय हो रहा या और वह [मित्री से] चले नहीं बोल रहा था । (४) वह करनेला
दिन राग बला का रहा या, [वचन] मयबाणी का प्रथम [उत्तरा] मयी था । (५) वन और
मायर दिनने भी उत्तर मायने (माय मे) कहे प्रथम प्रताप से उन मय को कृपा कर गया ।
(६) वह [धुमार] तो कहीं के लिए उस मार्ग से चल बढ़ा अहाँ इसे प्रथम बार (प्रार्थम य)
मित्रि माया हुई थी (७) और कहीं मधुमासनी अब जागनी है वन जंगली है चि उनने निधि या
नी ।

श्रुति—(१) बाह < बा + [६] = बाह्यता बाह्यता । छाग < छाग = छाग । (२) बाह <
मय । पिमम < पिम । (४) माय < माय । नैव < नैव = नैव । (५) नि
मा < न = निरता । (६) जो < जो = यज्ञ । (७) माय [६] = मायता हाता मया
जाता । जो < जो = यज्ञ = बाह्य वि ।

मधुमासति ओ सोबति आयी । बिरह भयिनि^१ नससिख तन^२ सागी ।
 ऊमि सांस हिय गह भरि^३ आव । तजि रज्या बसु रहिर बहाव ।
 नन भरनि^४ भरि धार ओ छूटी^५ । सन पूरि जनु^६ वीर बहूटी ।
 जबहीं^७ दसन बफारत खोला^८ । दामिनि भमकि भमकि जनु बोला^९ ।
 मुकमिल कस रजि^{१०} अनियारी । सहज भाउ भावौ अपकारी^{११} ।

रदन^१ करति मधुमासति बिरह बिषा^२ तन सास ।

सोगन्ह बचरिखु मा यह भारी^३ अब दुइ बरखा^४ काल ॥

पाठांतर—(१) १ ए बापि । २ ए ती रा सा ।

(२) १ ए पिउ बहि बहि या हिय बहि बहि ।

(३) १ रा सैन रचत ए नैर्नाह भरि । २ ए छूटी । ३ ए नैन वीर (<वीर
 फारसी लिपि) बल, रा सैन पूरि जनु ।

(४) १ ए जानो । २ ए दरसन बफोरत खोला । ३ ए ती बोला रा जत
 बोला ।

(५) १ ए रही । २ ए अब दुइ बापे मुक अनियारी ।

(६) १ ए रोबल । २ भा बिषा ।

(७) १ रा बचरिखु मा यह भार, ए सोगन्ह बचरिख उचन या सोगन्ह बचिनु
 सबा बरखा एक । २ रा दुइ बरखा एक काल ।

अर्थ—(१) मधुमासती जब सोने-बीटे लगी बिरह की अग्नि उसके सरीर में बस से सिका
 तक लग गई । (२) उसकी श्वात् ऊर्ध्वत हो गई थी और उसका हृदय तर-तर जाता था । वह
 लज्जा झेड़ कर जलुओं से बहिर [के जल] बहा रही थी । (३) उसके नेत्रों से भरभरी (बर्षा
 के एक लक्षण) की बरी धारा जो धूल चढ़ी तो उसकी जम्बा [उसके रक्तान्धुओं के कारण] जानो
 वीर-बहूटी से पुरित हो गई । (४) उछारते (बुकार झेड़कर रीते हुए) अब वह वंशों को बोसती
 थी, तब (ऐसा लगता था) जानो बिजली भमक-भमक कर बोसती हो । (५) उसके मुक्त केस
 जेबेरी रज्ज से [सिनके कारण] कहूँ माव से भारी की अपकारी (व्यापक रूप से डेक लेने वाली
 कालिमा) हो रही थी ।

(६) मधुमासती वदन कर रही थी, [वर्षादि] बिरह-व्याध उसके तन को सात (अस्त्र की
 भाँति फट्ट है) रही थी; (७) लोगों को यह भारी आश्चर्य हुआ कि अब वो वर्षा काल [होने लगे] हैं ।

टिप्पणी—(१) ओ < बउ < बडा = बस । (२) ऊमि < ऊर्ध्वत । बसु < बससु < बसु =
 नेत्र । बहिर < बहिर । (३) बिषा < व्याध ।

मधरा मर^१ अग्यां जी पाई । रानी मगर महारस आई ।
 बाइ बाइ मधुमासति पासा । दससि रोने ऊमि स^२ सांसा ।

कनक देह सभ मिलि ग^१ मो^२नी । नन मोर घोएमि बिघू^३ पा^४नी ।
फारेउ तार तार तन बोला । रोवत भ^५ गत दुइ डो^६पा^७ ।
सवरि सवरि प्रीतम उजिहारो^८ । रोव या^९मि सेह^{१०} मि^{११} वारी ।
प्रथमहि^{१२} पम जो^{१३} उपनउ तब हुति^{१४} बारिअयानि^{१५} ।
अब भर जोवन किमि रह^{१६} प्रीनम कहन पगन ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए मो। २ रा ए मया।

(२) १ ए देखि रई बिउ ऊ^१ये या देखत रई उयि रई।

(३) १ एके सब मिलि मो या सब मिलि यै। २ ए बाव निधि।

(४) १ ए मो। २ ए बोला।

(५) १ ए मगुहारी। २ ए रई जा नइ बाहि।

(६) १ ए प्रथमहि। २ ए म यह गण्य नही है। ३ ए हवी ज। ४ या अयानि।

(७) १ ए रहो। २ ए मिसेउ या पापी प्राण।

अर्थ—(१) मधुमा से अब आत्मा पाई रानी (कनकवरी) मगुहारी नगर आई। (२) वह मधुमाक्षी के पास बीड़ी आई और उसने देखा कि वह ऊर्ध्वत स्वात सेवर री रही है, (३) [तथा] उसकी कनक [बीड़ी] देह तब मिट्टी में मिल गई है (विषय हो गई है) और उसने बिघू-मट्टिका (?) को पो बाता है। (४) उसने सरीर पर को बोली को तार-तार काड़ बाता है और रोते-रोते उसक दोनों नेत्र लाल हो गए हैं। (५) प्रियतम की उजहार का स्मरण कर करके बारिअयानि तिर पर पूल बालकर री रही है।

(६) वहुके जो प्रेम उत्पन्न हुआ या उस समय बारिका अन्नान (अनात बीचना ?) की, (७) अब बरे जीवन में उसके प्राण 'प्रियतम' कहते (प्रियतम का स्मरण करते) कैसे रह सकते थे ?

टिप्पणी—(१) मयूपा < माया। (२) ऊयि < ऊयिय। (३) पाटी < पट्टिका।

(४) डोल < डोल [रे] = नेत्र। (५) रोह [रे] = चुन्नी रज। वारी < बारिका। (६) अयान < अन्नान।

[३५०]

पम प्रीति बाउर जो^१ होई । नान न बर नन जम को^२ ।
जोहि भा नइ विरह^३ तन^४ राजा । तोहि न ग^५ मति ब^६ि नाना ।
ममूसा^७ रिछ^८ ममूसा न वारी^९ । रोइ रोइ घरनी^{१०} ग^{११} पछारी^{१२} ।
एनि निव^{१३} रानी बलि आई । बहमि साइतुइ क^{१४}हि ववा^{१५} ।
मारमि तुबो हाथ^{१६} ओहि^{१७} मोगा । ह^{१८} क^{१९}बोरिन^{२०}बा तोहि^{२१} मगा^{२२} ।
रूप भन त वारी नहि दु^{२३} रोन मियाग^{२४} ।
ग^{२५} मोग घ^{२६} रहमिम तो^{२७}लि जो^{२८}हि मि^{२९} ननाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बाहर भिड़। २ ग भी सोई ए जत होई, भा जत कोई।

(२) १ ए जहाँ भैय बिरहा तन भा जहि तन भाई बिरह भा। २ ए तनो न रहे भा तेहि न रहे। ३ भा मे 'भी' जीर है।

(३) १ ए समुझाये तौ रा बुचरि निकट। २ भा बारा। ३ ए बरनि रा बरखी। ४ भा पछाए।

(४) १ ए पुनि आवें। २ ए तैं कुछहि सबाई, भा तैं कुछहि सबाई (<गबाई)।

(५) १ भा बुझ बुभर ए हाथ दुनौ। २ ए बोह। ३ ए है। ४ ए तोहि भा है। ५ भा साया।

(६)—(७) १ रा सोय। २ भा होइ। ३ भा तब कहि। ४ रा म यह सम नहीं है। ५ ए मैं बोहे का पाठ है —

बुझ बाध बिरहे बर जट न भिन्न अचार।

मेम बिबोध देख अनि काहू अमठ एहि संसार॥

अर्थ—(१) जो प्रेम-व्यसि का बाधका होता है वह कोई जितना भी कहे काम नहीं करता है। (२) जब बिरह आकर शरीर में राजा हो जाता (अधिकार कर लेता) है, तब बुझि-बुझि और लगना नहीं रह जाती है। (३) बालिका (मधुमाञ्जरी) समझाने से कुछ समझ नहीं रही थी और दो-दोकर बरती पर पछाड़ का [कर फिर] रही थी। (४) फिर राती [उसके] निकट बसी आई और उसने कहा, 'तुने कुल की साम नैया की। (५) उसने [अपनी] माँ में दोनों हाथ मारे (विर पीठ लिया) और कहा "तु कुछ की बुझोने वाली है तुझे क्या [मृत प्रेय] लग पया है?

(६) हे बालिका, तू तो [मिरी] दुग्धस्त की है (ऐसी है जिसने माँ का दूध पीना छोड़ा ही है) [अतः] बता नहीं तुझे कैसा (कमी) विषय हुआ। (७) जब तक [बर कर] संयोग न प्राप्त हो तब तक तू बुझ (निर्वोध) और घात हुई क्यों नहीं रहती है?

टिप्पणी—(१) बाहर<बाहक<बाहुक=बाधका पावक। भेत<वैतिज<वावत्=जितना। (२) (७) भी<बिह<मया=जब। (३) (७) तौ<तव<तया=तब। (४) बारी<बालिका। (५) नियर<निकट। (६) बोर<बोहयु=इवाना।

[३५१]

मता^१ पिता कुल साएहि^२ खोरी । अनमति कस न मुदसि^३ कुसखोरी ।
बुझ मुल काज किहे^४ करमुखी । तोहि जरमें मैं भइ अति^५ दुखी ।
जो वारें^६ भरतसि कम्पनीसी^७ । होति न नस माह् असि हांसी^८ ।
यह^९ कारिख कस दहु साइय^{१०} । कारिख आन^{११} होइ तौ बोइय ।
वहुत भाति समुझावा^{१२} रानी । सबन^{१३} न कीन्ह^{१४} पम यौरानी ।

रानी बहुन^{१५} जठन के वसा^{१६} कसहु^{१७} समुझ न सोइ ।

का तोहि पर सिस सागे^{१८} अहि जिउ हाथ न होइ ॥

- पाठांतर—(१) रा ए माता। २ ए मा काये। ३ ए मूर्ति।
 (२) १ ए भागिनि किये। २ ए जगमग मयैरें मैं भा लोहि जगमें मैं भग्न बनि।
 (३) १ भा बायेहि। २ ए कुलवारी। ३ ए देन मा होमी योगी भा
 अग्नि देन यहू होमी।
 (४) १ ए एह। २ ए भा बोई (मुल परवर्णाचरण का मुक)। ३ ए बीर।
 ४ ए भा बाई।
 (५) १ ए कुसिलाबी भा मधुमाएउ। २ रा ए यवन। ३ रा करी।
 (६) १ रा बहूनी। २ भा देखउ। ३ ए बीमहु।
 (७) १ ए रा लहि सिता विर लई भा इमहि भिन्न बुधि हर लई।

अर्थ—(१) तुने माता-पिता के कुल को बर्तक लगाया है, [इत्यति] ऐ कुल की उभाने वाली,
 तु जगमग करते हो कीते (क्यों) न मर गई? (२) तुने कुल के मुल को, ऐ काते (बालिक
 लय) मुल वाली, बाला बर दिया [इत्यति] तुने कल्य हेने के (अथवा तेरे जगमग लय) के कारण
 मैं बलि हु सित हुई। (३) यदि तू बालकन में ऐ कुल-नामिनी, मर जाती, तो देस में एनी हूँती न
 होती। (४) यहू कालिदास पता नहीं दिख अवसर मिलेया; अन्य बालिक हो तो वो भी डालिए।
 (५) रानी ने उते बहुत प्रकार से समझाया किन्तु उस प्रेम की पाली ने उते काल नहीं दिया।
 (६) रानी ने बहुतेरा पल करके देखा, किन्तु वह किसी प्रकार की नहीं समझ रही थी। (७)
 अवसर ही उते गिता क्या लगे (अवर्णित करे) जितका भी उसके हारों में न हो?

टिप्पणी—(१) कार < काक। (४) जान < जग्य। (५) लवन < यवन = वान। बाउ
 < बाउल < बाहुल = बाबला पापक। (७) गित < विल्ल < गिता।

[३३२]

जो मधुमासति^१ रानी हारी। बिछ रस बचन हकर किछु भारी^२।
 कान न कीहु अननि जग लपा^३। जनु हकार कया कर जपा।
 जो गर गिय बुधि बिछ नहि लगी^४। रानी बनिन रही जनु टगी।
 गिल बुधि मुन जाहि बुधि^५ हाई। बीरहि का गिय बधि नई^६ बाई।
 ठो जिय^७ डरी बहसि का कण्ठ। एहि मजोग म कम बह डरक^८।
 तब बिदधा मर लक पडि छिग्यनि मुन पानि^९।
 लागन गिन^{१०} मधुमासति^{११} पछो हाइ उड़ानि ॥

पाठांतर— ॥ में उद्युक्त वाली तथा दूसरी अर्द्धांगिणी सम्पन्न स्थानांतरित है।
 रा म उद्युक्त चौथी तथा पाँचवी अर्द्धांगिणी सम्पन्न स्थानांतरित है।

- (१) १ ए मधुमासति। २ ए बर बिछ रस मरी।
 (२) १ ए जग लपा भा बहु लपा। २ ए निज जोपी ली बागुर मारा भा
 मोन परें बीनी होइ मारा।
 (३) १ ए न लागी।
 (४) १ ए बरि बिछ भा जाहि बुधि। २ ए बीरी बटा। ३ ए ३।

(५) १ ए तब थिउ। २ ए कुसहि डराउं।

(६) १ ए तब थिरवा भर पानी पड़ि छिटवा मुख राति भा तब भँकर
थिरवा पड़ि छिरनेसि मै मुख पानि।

(७) १ ए सन। २ भा मे महीं 'मुख बल' और है। ३ ए पछी भै रे उकानि
भा पसि होइ बहुराति।

अर्थ—(१) जब समसाते समसाते रानी हार गई उसने कुछ रस के बचन हलके और भारी
[सभी प्रकार के कहे] (२) [किन्तु] जितना भी जगती में आलाप किया (कहा) उसने कल
गड़ी किया मानो वह काया के झूँकार का रूप करता रही। (३) जब विश्रम हुई उसे मिला
तकें आदि कुछ नहीं सने रानी बकरा गई मानो वह ठगी हो। (४) मिला तथा बुझि (तकें)
बहु सुगता है जिसे बुझि होती है पागल को कोई क्या मिला और बुझि बेमा? (५) तब वह
[अपने] बी में डरी और कहने लगी "क्या कहे? इस संयोग (मनोहर के साथ मधुमासती के
संबंध) से मैं अपने कुल के विषय में डर रही हूँ।

(६) तब बुलू भर पानी लेकर उसने [जब] पड़ कर [मधुमासती के] मुख पर छिटका;
[उस पानी के] लगते (पड़ते) ही [मधुमासती] क्षण [मात्र] में पत्नी होकर उड़ जाती।

टिप्पणी—(१) हृत्प < हृत्पु < कचुक = हृत्पुका। (२) रूप < रूप = बहना। हकार <
बहकार। (३) (४) सीक < सिक्क < पिला। (४) बाउर < बाउल < बातुल = बावला
नामक। (५) ती < तउ < तवा = तब। (६) थिरवा < बलब < बुलक = बुलू, पसर, एक
हाथ का सपुटाकार रूप। (७) सन < सन। पछी < पत्नी।

[३५३]

पछि रूप मधुमासति भई^१। कोउ^२ न जान कहां उडि गई।
एसिय^३ अही पेम क^४ बीरी। तहि पर पसि जो^५ भए ठगौरी।
पीनहु चाहि अधिक उडि भागी। बहुत पाछ गए^६ हाथ न सागी।
सगर नगर उठि पकर धावा^७। पछि मात्र नहि पांखी पावा।
रामजरी मन पछितानी^८। कहू कहा^९ म कोन अमानी^{१०}।

मता^१ पिता तहि पुत्री कारन रोबत^२ भए अचत।

पुतरी नन कारि ओ बोइ कीन्हि दुह^३ सेत ॥

पाठान्तर— ए म उपर्युक्त वीरवी तथा बीबी अर्द्धलिप्ता परस्पर स्वानांतरित हैं।

(१) १ ए होई। २ ए केउ।

(२) १ ए भा ऐसहि। २ रा मे भै नहीं है ए बी। ३ ए तापर पछी।

(३) १ ए किआ।

(४) १ ए वेसै भाई भा हेरै भावा। २ ए पछी रूप पस नहि पाई।

(५) १ ए पछतानी। २ भा बाह, रा बाहा। ३ ए कीन्ह छायी रा कीन्ह
अगानी।

(६) १ रा ए भाव। २ ए रोइ रोइ।

(७) १ ए पुत्री (< पुनरी प्रारणी बिधि) मैं जो बार लीहि बिनु राख राख
बीम्हा मा पुनरी मैं बारि पाइली बाद बीम्हा दुहुँ रा पुनरी मैं स्वाम जो
बाद बीम्हा मो।

अर्थ—(१) मधुमालती पत्नी-रुच में हुई [तो] कोई नहीं जान सका कि उड़कर वह कहीं गई।
(२) [वह] यों ही प्रेम को पागल भी उस पर जो उसे पंख (प्राप्त) हो गए, वह उसके लिए
ठगौरी हो गई। (३) वह पंख से भी अधिक [बिगले] उड़ भागी बहुतों [उतरे] पीछे गए,
किंतु वह बकड़ में न आई। (४) समस्त नगर ही उड़कर उसे बकड़ों के लिए दीड़ा किंतु उस बत्ती
के नाम पर उसके पंख भी नहीं पा सका (५) करमंजरी मन में बछनारी [भीर कहने
लगी] “मैं ने [मी] क्या मूलता की!”

(६) माता-पिता उस पुत्री के कारण रोते-रोते अचेत हो गए (७) मेजों को पुतलियों को
जो काली भी होनी ने [रो] भी कर इरेत कर डाला।

व्याख्यान—(१) (४) पछि < पछि। (२) बाहर < बाह्य < बाह्य = पागल। (३)
पंख < पंख = ईना। (४) मगर < मकर। (५) बचानी < बचपानना। (७) मेन < मैं।

[३५४]

पीतम पीतम^१ मधु जिम मजा^२ । मधुमालति मम^३ धपा तजा ।
छाड़^४ मया मोह मयमारा^५ । छाड़ बुद्ध लाभ परिचार ।
छाड़ी मनी मम^६ जो मनी^७ । छाड़ रहम^८ बाठ मुम^९ कमी^{१०} ।
छाड़ मोग भुगुति जिम^{११} मामा । छाड़ मता पिता पर बामा ।
छाड़ अरु दरु मम^{१२} भाषी । छाड़ बन परिजन मप^{१३} मापी ।

छाड़ राजपाट मुम मया^{१४} रनि मोहि निज भूग^{१५} ।^१

छाड़ बित^{१६} बाठ मुम^{१७} बीम्हा बमरा मन^{१८} ॥

व्याख्यान—(१) १ भा पीतम पम। २ ए मयूर नाम मुनि ब्रिहस्पति। ३ मा म मम।
(२) १ ए छाड़मि। २ रा ए ममारा।
(३) १ रा मम। २ मा छाड़ मनी बाहि मम मनी ॥ छाड़ ने मम बारि
मनेनी। ३ ए मम। ४ ए मम। ५ ए मनी।
(४) १ ए ममि मम। २ रा ए मम।
(५) १ ए मम। २ मा ए मम।
(६) १ रा मम। २ रा रनि निज नीह बी मम। ३ ए मे मम का मम
६ छाड़ राजपाट मम मुम मया नीह मम।
(७) १ मा मम। २ मा म मम 'मने' और है। ३ रा मम। ४ मा
छाड़ मम बाठ मम बिह मम मम मोम।

अर्थ—(१) मधुमालती का जो 'प्रीतम' 'प्रीतम' ब्रह्मने लगा, और मधुमालती ने
[मम] मनी पने छेड़ दिए। (२) उसने ममारा का माया-मोह छोड़ दिया और अपने दुहुँ

लोक (प्रजा) और परिवार को छोड़ दिया। (३) उसने ललियों को छोड़ दिया जो उनके साथ खेती हुई थीं और उसने हर्ष जलाह तथा गुह-केल को छोड़ दिया। (४) [अपने] भी में उसने नौप और भोजन को खाया छोड़ दिया और उसने माता-पिता के घर का निवास छोड़ दिया। (५) उसने अर्ध-द्रव्य तथा अस्ति (प्रवेश) छोड़ दिया और उसने स्वजन, भृत्यादि तथा संवी-साधियों को छोड़ दिया।

(६) उसने राज तिष्ठान, मुक्त की शय्या रात की निद्रा तथा दिन की भूख को छोड़ दिया;

(७) उसने चित के वस्तु तथा शुभ को छोड़ दिया, और वृक्ष पर बसेरा दिया।

टिप्पणी—(१) रहस्य < एवम् < हर्ष। (४) भूपति < भुक्ति = भोजन। (५) मापि < अस्ति < अस्ति = प्रवेश। (६) पाट < पट्ट = सिंहासन। नीद < निद्रा। भूख < भुनुरा = भुषा। (७) दृष्ट < दृष्ट < वृक्ष।

[३५४]

मधुमालति सम छाडि^१ उठानी । ओषति^२ ओषति करति हैरानी^३ ।
 व्याकुलि भई भव^४ बिकरारी^५ । अस बाहर हो खोखु क^६ मारा^७ ।
 गिरि सायर^८ बन फिरि फिरि^९ हेरा । कतहु न खोज पाठ ओहि^{१०} केरा ।
 रन पट्टन^{११} जग^{१२} फिरि^{१३} उगासा । प नहि हिय क^{१४} पूजी आसा ।
 तब तब घर घर^{१५} दस बिहसा । जग जग बुँडे^{१६} राक नरसा ।

कजली^{१७} बन गोदाबली^{१८} मधुरा गया प्रयाग^{१९} ।

दब द्वारिका ओ सम^{२०} तीरथ फिरि फिरि मांग^{२१} सोहाग ॥

पाठांतर— रा मे उपर्युक्त विसीय अर्द्धांसी नहीं है।

- (१) १ ए, सब छोड़ या सब छाडि। २ रा मे पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ रा ओषति ओषति करती हैरानी।
- (२) १ ए मे भव। २ ए बिकरारी। ३ या बाहर हो खोखु। ४ ए मारा।
- (३) १ ए सायर। २ रा मे बुरा फिरि नहीं है। ३ ए फिरि।
- (४) १ ए, पट्टन या पाटन। २ ए, न वह शब्द नहीं है। ३ ए भव। ४ ए मे ओहि कीना या मे न हिये की।
- (५) १ रा पुरपुर। २ ए बुँड।
- (६) १ ए केली या कजली। २ या गोदाबरी। ३ ए बनारस प्रयाग या मधुरा गया बनारस प्रयाग।
- (७) १ ए या सब। २ रा मारी।

अर्थ—(१) मधुमालती [अपने त्रिय को] देखते ओखते और [उसके लिए] हैरान होते हुए सब कुछ छोड़कर उड़ गई। (२) वह व्याकुल होकर [इस प्रकार] अर्द्धांश भ्रमण करने लगी जैसे कोई बिजुल का मारा (झटा) हुआ बाबूता हो। (३) उसने गिरियों सायरों और वनों को घूम-भ्रम कर दिया किंतु कहीं भी उसका दीन [उसने] न पाया। (४) वह जगजग

और बटन (महानगर) में उदास करी बिनु [उत्तरे] हृदय की आशा नहीं पूरी हुई। (५) उसने बुल पुन घर-घर बेग-बिदेग अब अब और रंक-नरेग सभी [के बाब उन] को दुँडा।

(६) बहली बन गौदावरी मजुरा गया, प्रयाग (७) (अगला) देव डारका और समस्त तीर्थों में घूब-घूब कर उमने [अपना काया हुआ] सीमाय (पनि) पाया। :

टिप्पणी—(२) बिकरार < बहरार [पा] अनाग, बचन। बाउर < बाउम < बाभुम = पापक। बीछ < बीचक = बिछू। (३) मापर < मागर। (४) रन < बरन। (५) हिय < हरय। (७) माहाग < सीमाय।

[३५६]

खाजनि बिबल फिर^१ दिन रानी । पय मुरा ब्याक^२ म^३ मानी ।
एक निन उही जानि हुति^४ बारी । पनी निमि एक कबर उन्हारी ।
पिर क^५ गिनक जात पय बाग^६ । दबसि एक कुबर उजियारा^७ ।
ताराचद नाहि कर नाऊ । पुरि पौरि^८ मानगद गऊ ।
यनि मंदर रुपवन मग्ना^९ । मन्त्री बला मन्नाह^{१०} वन्ना^{११} ।
हगन मपुरन बिदा^{१२} मुरनि म^{१३} बलीम ।
बहून उन्हारि मनाह^{१४} क^{१५} नाहि दगि भई मयु लान^{१६} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए घुमन फिगत हेरन भा घुमन करछपनि। २ ए मर मा होइ।

() १ ए हाग। २ भा परा रिमि काइ।

(३) १ ए बिगन। २ रा देवु बाग ए पय बारी। ३ ए देवा कुंभर का मय उन्हारी (नम पूर्ववर्ती अड्डोनी का द्वितीय चरण)

(४) १ ए पनेरि, भा पनेरि।

(५) १ ए मुरना। २ ए उनी बरिमाऊ जा रा उवा बरी मयानि।

(६) १ रा चारि पुरान देग गनि बिदा भा और मयब मुर मुन बिदा।

(७) १ ए म मय गाण नहू है। २ ए देगन बिधि (मय : डारका निरि) श्री मीन रा देगन कहु बिनि नान।

अर्थ—(१) वह मीनत्री हुई दिन रात बिबल (बेबल) फिर एही बी [बर्गेस] का अब मुरा का पान कर ब्याकुल और मर-मरती थी। (२) वह जानिक एक दिन उड़ी जा रही थी, तो उसकी दृष्टि कुमार (मनोहर) की एक उमरार पर पड़ी (एक एने अश्विन कर पड़ी का कुमार मनोहर को उमरार का)। (३) [अने] मार्ग में जाने (उड़ने) हुए उस बाला ने एक राय [चित्त की] गिर कर एक उमराल (बानि-मंदा) कुमार को देगा। (४) उमरा नाम ताराचंद का और उमरा हवात बागड़ में बीनेरि (बघ मयरी) पुरी में का। (५) वह अनि मंदर करवान, तथा लगेन (आरी) का वह बनी लजिब अय्याह (उत्तरेजिब) देव का का।

(६) वह [अने] मगधी बाग, बिद्याजी म मंयुं बाग की मुनि और मुनीन का।

(७) उसकी उमहारि (आकृति) बहुत (अधिकोश में) मनोहर की भी [अतः] उसको देख मधुमासदी [उसके ध्यान में] लीन हो गई।

टिप्पणी—(१) मात < मत। (२) बारी < बालिका। (३) (७) उमहारि < अनुभार < अनुकार = अनुकृति आकृति। (१) निर < स्मिर। बारा < बाला। (४) पौनैरि < पथ नगरी। (५) सरेल < समिक्षित जिसने उपर्युक्तों से शरीर आदि का खोपन किया हो। लभी < क्षत्रिय। अमाहृत < अमहाहृत < अम्याहृत = उत्तपित। (६) लखन < अलख।

[३५७]

लब^१ धीरहर बखी आई । दलत अतिहि सुख^२ सोहाई ।
हरिम पक्ष^३ पग^४ बदन^५ सुठोरा । नन फार^६ जनु मानिक ओरा ।
कुंवर उमहारि नम बुद्ध काएसि । परति बिरह दो^७ आसरी पाएसि ।
कुंवर दिस्टि^८ पुनि पछी^९ लागी । बसत मोह मया मन आगी ।
रहे मम स्निह लाए^{१०} ध्याना । बसे राय राक^{११} परधाना ।
समनि^{१२} कहा अस पछी यहि^{१३} कलि दिस्टि न^{१४} भात ।
कोटि बरिल जग प्रबनि^{१५} तबहु न देखा^{१६} काउ^{१७} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा फुनि। २ ए अतिरे कप मा अती सुकप।

(२) १ ए हरे पांछ। २ ए मा मे यह धन्य नहीं है। ३ ए बे। ४ ए फारि।

(३) १ ए म यह धन्य नहीं है। २ मा अस रम।

(४) १ मा नैन। २ ए ती पछिहि, मा फुनि पछिहि।

(५) १ ए रही (< रहे; फारसी लिपि) देखि जसि (< बस; फारसी लिपि) काह (< लाए; फारसी लिपि) मा रहेउ देखि जिन काए। २ ए देखत राय राक मा पुनि केज राए राय।

(६) १ ए सवह मा सबहि। २ रा ए येहि। ३ ए कबहुं न मा सिद्धि न कबहुं।

(७) १ ए कोटि नैन की होहि जग धा-बात जो कोटि नैनकर बाकर। २ ए देखै पाउ धा देखै काउ रा देखा जाउ।

अर्थ—(१) वह तब [उस कुमार के] जबलगुह पर आ बैठी; देखते हुए (देखने में) वह बसि ही सुकप और सुहावनी थी। (२) उसके पंख हरे तथा पैर अलख थे और (चोंच) सुवर की और उसके स्फार (विशाल) नेत्र लाली मानिक-युगल थे। (३) कुमार (मनोहर) की उस अनुकृति पर उसने अपने दोनों नेत्रों की लगाया (स्मिर किया) ती बिरह की दायाजि में बसते हुए उसने आहवा (सहारा) पाया। (४) तबनंतर कुमार (साराधन) की वृद्धि उस पत्नी पर [जा] लगी और उसको देखते ही उसके मन में [बली के लिए] मोह और मया (ममता) जाग उठी। (५) उसके नेत्र एक क्षण [उस पत्नी पर] ध्यान लगाए रहे और [उस बली को] रात्र, रंक और प्रजाओं (नरिणी) [तभी] ने देखा।

(१) [किर] लमी ने कहा 'ऐसा पत्नी इस बलि [युग] में दुष्टि में नहीं जाती है (७) [इतना ही क्या] अणु के करोड़ बने हुए हो गए, तब भी किसी ने कभी [एसा पत्नी] नहीं देखा।'

टिप्पणी—(१) बीराहर < बरह < ब्रह्म = ब्राम्हण। (२) हरिम < हरिम् = हरि। का < सार = विद्याम विष्णु। (३) उन्हारि < अनुवार < अनुवार = अनुवर्ति समान आहति वा स्मृति। ही < ह्य = क्षाति। आमरी < आभय। (४) मया < माया (?) = मयता। (५) गिन < क्षय। रोक < रुद्ध = बन्ध। (६) पूब < पूर < पूर्य = पूर्ण करना। बाउ < बापि = बन्धी।

[३५८]

रज्जुमा दनि^१ कुब^२ उनिहार। बमि^३ माइ तहि आम^४ अगरी।
कहुमि जर तह^५ नन मिराबो^६। बिछ^७ आगि तहि इय बुसाबो^८।
बूढत पाइ आम सिनु मई। निनुवा बूढन^९ आमरी दई।
ओम विद्याम न जिगा^{१०} बुसाई^{११}। भाबि माब बव^{१२} अविष्ठा जाई।
बिछ^{१३} आगि जहि उर^{१४} पग्वारा। हाड मनोम न^{१५} न्वि उन्हारी।
मधुमाखनि^{१६} मुग^{१७} कुब^{१८} निहारन न्वि न्व भगउ^{१९} लीन।
ताराब^{२०} कुब^{२१} जिय पटपनि^{२२} जिमि जल बिछर^{२३} मान ॥

- पाण्यन्त—(१) १ ए म 'कै' और है। २ रा मा बँडि। ३ ए आइ ('माइ' पक्षक हा मा बुवा है)।
(२) १ ए तेहि मा वेह। २ ए अमी मिराबो। ३ ए ती जग बाराही मा भेहि इय बुसाबो।
(३) १ मा बवन।
(४) १ रा निरिण। २ ए बुसाई। ३ ए बी।
(५) १ मा जहि हिय ए हीयर। २ ए मा म यर नर नही है।
(६) १ ए बछी न्व ('न्व' आग ही आया है)। २ ए म बह गाल नही है।
३ मा मा मा. भइ।
(७) १ ए ताराबरहि चरनो २ ए ज्यों जल बिउने मा जिमि जल बिछरे।

अर्थ—(१) [मधुमाखनी-पत्नी] कुबार (बनोहर) की उस जगहार की देववर हरिम हुई और उस [को देवने] की आज्ञा से अथा घर आ बैठी। (२) [मन में] बह रहने लगी 'मेरा जल बने है उन्हें [इस कुबार के दर्शन में] जीवन बच और उस [इस] दर्शन में विरहानि को बुसाई।' (३) बूढ़ता हुआ निम्ने का आशय लेता है और निम्नता की बूढ़ने को आशय (महारा) देता है। (४) [पटपि] ओम [के पाठने] से न ध्यात [जाती है] और न मुका बतानी है। आज की मुग बहो इतनी से पूरी होती है? (५) बिछ की अग्नि जिमने हृदय को जमाना खनी है उसे [जिय बी] उन्हार (माब) देतार संनोप ग्री होता है।

(६) मधुमाखनी कुबार का मुग देवने-देवने उसका बप (मोदय) देववर [उमने] लीन

हो गई (७) और उधर ताराचंद कुमार के भी में [उसे जाने के लिए] ऐसी बटपटी (अनुष्ठा) हुई जैसी जल से बलब होने पर भीन की होती है।

टिप्पणी—(१) रहस्य < रमस्य = हर्ष। (१) (५) उमिहारि < अमृभार < अनुभार = अनुहति समान आह्वय का व्यक्तित्व। (१) मटारी < मृदास्य = मासाव या भजन का ऊपरी भाग। (२) विपव < वीमलाव < वीतलावय। (३) बूझ = बुझ < बूझ = बूझना। तिन, तिमिका < तुम। (४) ओस < ओषाम < अवधाय। पियास < विपासा। साव < सदा < भदा = स्पृहा अभिषापा बाधा। (५) निहार < निमाल < नि + माल्य = देवता निरीक्षण करना।

[३५९]

पंछि रूप दक्षि कुंवर भुजाना^१। नेगी कहसि भीह द^२ साना^३।
नेगी^१ समुसि जना^२ दौराए। व्याधा^३ नगर सम^४ भरि आए।
कहसि समै^५ दिसि^६ आल बिछावहु^७। ओ ले तहां अन्न छिटकावहु^८।
पछित^९ पम प्रीति^{१०} जिय गही। लाए^{११} नम दुह कुंवरहि^{१२} रही।
जाल फादि भी नित^{१३} न आना^{१४}। रही कुंवर मुख लाए ध्याना^{१५}।

जिन एक गए^१ सबग भ^२ पछी^३ उबन के^४ मनसा कीय।

कुंवर कह्यो औ उठि^१ यह जाइहि साथ^२ बलिहि मन जीय ॥

पाठान्तर— रा मे उपर्युक्त छीछरी तथा चौबी मर्दासियां परस्पर स्थानांतरित हैं।

(१) १ मा कमाना। २ ए नेगिन्ह कहा ओ भीह भा नेगिन्ह कहसि भीह है।
३ ए गिखाना।

(२) १ ए नेगि भा नेगिन्ह। २ ए व्याध। ३ ए सबै।

(३) १ ए मा. जहूँ बिठ। २ ए पसारेहु। ३ ए ओ तेहि ऊपर छे बन
विषायेहु भा और तेहि पर ले बन छिरिवावहु।

(४) १ रा ए. पंछी। २ ए बिठ। ३ ए लाह। ४ ए कुंवरहि।

(५) १ मा भी पितहि।

(६) १ ए भी भा बैठि। २ ए ये होइ। ३ भा में 'कुनि' और है।
४ ए को।

(७) १ ए जब उठि भा जबही। २ ए येह। ३ ए संग।

अर्थ—(१) कुमार [उस] बली का कम देकर मूल गया (मुग्ध हो गया) और नेगी को भीह से संक्षिप्त देकर [उसे पकड़वाने को] कहा। (२) नेगी [संक्षिप्त] से समझकर सेबकों को बीड़ाया ओ नगर के समस्त बहोसियों को पकड़ लाए। (३) [नेगी ने] कहा 'सभी बिछावों में जाल बिछावो और वहाँ अन्न के [जाल] कर छिटकाओ। (४) यही मे भी भी में प्रेम-प्रीति पहुँच की और यह अपने दोनों नेत्र कुमार को (की ओर) लगाए रही। (५) जाल में बँध (कँस) कर भी छका पित जग्य [प्रकार का] नहीं हुआ और वह कुमार के मुख पर ध्यान लगाए रही।

(६) एक लज्ज ब्रीतने पर बली सज्ज हुई और उतने उड़ने को इच्छा की (७) [यह देखा कर] कुमार ने कहा "यदि यह उड़ जाएगी तो इसके साथ ही मेरा जीव भी [उड़] जलैया।

टिप्पणी—(१) मेरी < मैपमिक (१) = निगम (मगर) का अधिकारी (१)। मान < मकेट। (२) म्याब < म्याब = बहमिया। (५) आम < अम्य। (६) भिन < लभ।

[३६०]

रोपा बाल बहू दिशि घेरा। ठाठ ठाठ आनि। अन्न विपरा^१।
पछी होइ ली अनहि^२ सोभाई। यह भूखी बिह^३ बौराई।
जिनक उन्हारि मास जिउ लाएसि^४। बहुरि उड कह पय उवाएसि^५।
पछि उड कह^६ पल मकारा^७। कवर ठाठ भा^८ हाब मरोरा।
बहसि औ रे^९ यह^{१०} जाइ^{११} उड़ाई। सुधि बुधि मोरि साथ एहि^{१२} जाई।

बहा कंवर उड़ि जाइहि^१ हाय^२ धरो म^३ जाइ।

पावत मट्ठक सोस छेउ उछ^४ मोति^५ गण छिरियाइ^६ ॥

वाक्यान्तर—उपयुक्त तृतीय अर्द्धांश के अन्त परस्पर स्वाभाविकरित हैं।

(१) १ ए ठाठ ठाठ जा। २ भा बितरा।

(२) १ ए बिह^३।

(३) १ ए आमरा पावसि। २ ए उड़ को चिम बोगमिमि भा उड़ नर चिम उवाएसि।

(४) १ ए पनी उड़ने को भा पछि उडन छह। २ रा मकोरा। ३ ए म^४।

(५) १ ए मे कह पय मही है। २ ए मेह। ३ भा पई। ४ ए निधि निधि। ५ ए मेह भा लेहि।

(६) १ ए मे यहाँ और है अब मैं। २ रा हाग। ३ भा एहि।

(७) १ ए ते उछरा रा सा छटक। २ रा माली। ३ ए मी छितराइ, ४ गण छटवाइ।

अर्थ—(१) [म्याबों में] बाल लमाया और [बली को] बारों और से घेर लिया; स्थान स्थान पर उड़ाने ला कर लज्ज फैला दिया। (२) बली हो तब तो लज्ज बर नृत्य हो, यह तो भूखी हुई और बिह में पागल [मही] को। (३) एक लज्ज इतने [जन्मद्वार को] उन उन्हार (ताराबंद) पर भी मैं आता लगाई और तदन्तर उड़ने के लिए पंख उड़ाए। (४) बली ने उड़ने के लिए पंखों की तिकोड़ा ली कुमार (ताराबंद) [उठ] साड़ा हुआ और हाथ मारने लगा (५) [और] उतने कहा "यदि यह बली उड़ जाएगी है तो मेरी बुधि-बुधि इली में साथ जाएगी।"

(६) कुमार ने कहा, "यह उड़ जाएगी, [अतः] मैं जाकर इने हाथों से पकड़ लूँ।" (७) उड़ने समय उसका मुँह उतके तिर से उछल गया और [उतने] मौनी छटक गए।

टिप्पणी—(१) बिह^३ < बिहार < बि + हार < ईमाना। (२) भव < अत्र। (३) उछराइ < अनुभा < अनुहार < अनुहति मयान आहति वा व्यति। (४) मकारा < मकोरा < मकार < मकोरा। (५) बुधि < बुद्धि < बुद्धि < वेदना। (६) मट्ठक < मुट्ठक।

[३६१]

मुकुता परे^१ आल उहाराई । नलि पलि लो दिस्टि^२ किगई^३ ।
 उड़न रु^४ मनमा जो बित अही^५ । रही खिनक मुकुता तन^६ वही^७ ।
 तव कुंवरहि^८ अस कहा पुकारी^९ । यह पछी निजु मोति अहारी^{१०} ।
 मुकुता बहुत आनि जन दीन्हा । कुंवर आपु कर भरि न लीन्हा^{११} ।
 बहुत आनि अनबेच^{१२} मोती । दिए बिचराइ गगन गुन^{१३} भोती ।
 तव मधुमालति मन गुना पम पम मिठ सेठ ।
 आपु फराइ आल एहि करे^{१४} बाह मनोहर कउं ॥

- पाठांतर—(१) १ ए पय । २ ए देखि पछी ली दिस्टि ए देखि पछि तव । ३ भा बहुरई ।
 (२) १ ए में कै गही है । २ ए माई । ३ भा वेव । ४ ५ एही मुकुता
 ते खिन पित लाई ।
 (३) १ ए ठवहि कुंवर, ए तव सो कुंवर । २ ए कहा बिचारी भा कहेहि
 पुकारी । ३ ए निज मान बधारी ।
 (४) १ इस बड़ीली का पाठ ए तथा भा ये है —
 ए अनबेचे मुकुताइल नीरिआ । मर्म देखि का पाव न मरिआ ।
 भा आनि मार मुकुता हल वेरे । मर्म येहिउ पाएउं मन धरे ।
 (५) १ ए बाये जन लै अनबिचै भा बाए जन अनबेचे । २ ए आनि बिबोर
 गगन कहि भा आनि बिखेरे गगन ।
 (६) १ ए आपु बसाई जाठ महु ।

अर्थ—(१) [ये] मुकुता हल्क कर आल पर पिये, लो उन्हें देखकर पत्नी ने [उनकी ओर]
 दृष्टि घुमाई (२) जो उड़ने की इच्छा करने के लिये मैं भी [बसते] एक कर एक आपस में मोतियों
 की ओर देखने लगी । (३) तब [व्याप्री ने] कुमार से पुकार कर इस प्रकार कहा “यह पत्नी
 केवल मोती का आहार करने लगी है ।” (४) तबकों ने बहुत-सा मोती लाकर दिया और कुमार ने
 उन्हें अपने हाथों में भर कर ले लिया, (५) [और] बहुत से अनबिचे मोती लाकर उसने इस प्रकार
 कहा कि जैसे गगन में ज्योतिर्-स्फुट हैं ।

(६) तब मधुमालती ने मन में सोचा, “मेरे के भाई में [अब] मैं [बचने] कीज (भावी)
 को हूँ (७) और इसके आल में अपने की सेवाकर मनोहर का कुल-समाचार प्राप्त करूँ ।”

टिप्पणी—(४) बिचरा < बिचारा < बि + चारम् = फैलाया ।

[३६२]

जो निहर्ष^१ मधुमालति जाना । कुंवर जोय मम हेतु समाना ।
 एक भरिम मोहि भा एहि मया । कतहुं न पाएउं^२ कुंवर सदेवा^३ ।
 एहि उमहारि भास मिठ लाई^४ । मुझी खिन एक बसिउ माई^५ ।
 अब हौं वाकि मरम एहि^६ सेऊ । जो फुमि^७ मरम जीय^८ कर वऊ ।

मक पावों किछु^१ प्रीतम चाहा । मरौ त^२ लहौ पम पम साहा ।

यह मनसा क पम दीप मह परी बगि होइ^३ आइ^४ ।

पाव^५ पाव मबु अरुसानी^६ रही निकमि नहि^७ आइ^८ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए निरखै। २ ए भा जीउ।

(२) १ ए पावा। २ ए उरमा।

(३) १ भा लाई रा लाइउ। २ ए बहुरि कुयरी जी भाषा आई। ३ रा मं हम बरण के स्थान पर यी अगली बर्तानी का दूसरा बरण है। ए मबु येह कुंवर बाह जो लाई भा मूली लिन एक बैसिउ आई।

(४) १ ए अब मैं बूनि मर्य यह भा अब मैं कदि मर्य येह। २ ए निर रा पुनि। ३ ए जीव रा जीउ।

(५) १ ए बछ। २ ए तो।

(६) १ भा भय यह। २ ए येह मन बीप पमह परेउ कलि वा मैं बाहि (गुन० परबनी बरण का गुन)।

(७) १ भा ओठे ए चार। २ भा बाइ ए पाँच रा पाव मोह। ३ ए अरुसानी भा लछ। ४ ए निमन निमनि नहि भा निप रै निमनि म ५ ए बाहि।

अर्थ—(१) अब मधुमासती ने निश्चित रूप से यह ज्ञान लिया कुमार क जी में उसका प्रेम समा गया है (२) उसने मन में कहा, "मुझे इस वेष में एक कर्प हुआ और कुमार (मनोहर) का स्नेह (समाचार) मैंने नहीं मही पाया (३) और [मनोहर की] इस उमहार पर जो मैं आया लगा कर मूली हुई एक लज के लिए आकर मैं बैठ गई (४) [तो] अब मैं ज्ञान में बँधकर इस [कुमार] का मर्म भूँ और फिर [इसे भी अपने] जी का मर्म दूँ। (५) संभव है कि [इस प्रकार ही, कुछ कता प्रियतम का वा काई, [किन्तु] यदि [इस प्रयास में] कर जी काई तो प्रेम पम का लाभ प्राप्त करूँगी।"

(६) यह विचार कर वह [बैठने के लक्षण] प्रम-बीप [लक्ष्य उस ज्ञान] में बह प्रीम बाकर बह गई; (७) [उसने] पाँच [उस ज्ञान में] दबाए और मधुमासती उसने [इस प्रकार] उतारा रही कि उससे निकला मही का सखता वा।

टिप्पणी—(१) निरखै<निरख। (२) मर<मर। (३) उमिहारी<मधुमारि<मनुवारि=मनुइनि। गिन<गण। (४) बाइ<बप=बैठना बैठना। (५) लाइ<लाभ।

[३६३]

पछि कदि तो^१ 'याधा'^२ धाए । जाम सहित जियन^३ ए भाए ।

रनि^४ कंवर मन मरुउ^५ हुमाया । मूर उ^६ जिमि^७ कंबल बिगाया ।

विदग एउ कदव^८ बर माना । तहि मह कीट पछि^९ मन माना ।

दिमि हने गिन एक म टार^{१०} । मनि मबुना ह^{११} भागे टार^{१२} ।

जत गाओ^{१३} पछिह^{१४} क^{१५} जानी । सभ^{१६} कूर तहि^{१७} भागे जाना ।

निमित्त न पिजरा^१ पछिहर ओ न काहु पतियाह ।
हिये^१ ऊपर निसि बासर पिजरा^१ लिहू^३ रहाह ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा पछि करी तब ए पछी बाँम ली। २ मा ब्याये। ३ मा बीजत।
(२) १ ए कहेसि। २ ए मो। ३ ए उचित मो रा मूर उरे अनु।
(३) १ ए ठामहूँ पछी क्रिया। २ मा जाना।
(४) १ ए टारी। २ ए मान टारी (टारी पिछले बरख म जा चुका है)।
(५) १ ए बासी। २ मा पछिन्हकर। ३ ए मा सबै। ४ रा म यह अर्थ नहीं है। ५ ए जाने।
(६) १ मा पिजरा।
(७) १ रा ए हिये। २ मा पिजरा। ३ ए किये मा छिए।

अर्थ—(१) पत्नी फेंक गई तब ब्याह आय, और बाल-सहित उसको जीवित ही [कुमार के पास] ले आय। (२) [जस पत्नी को] बेल कर कुमार के मन में उत्साह हुआ जिस प्रकार सूर्य के उदय से कमल [के मन में उत्साह होता और वह] विकसित होता है। (३) वह एक सोने का पिजरा लाया और उसमें पत्नी को [बंद] कर दिया तब उसका मनमाला। (४) वह उसको अपनी दृष्टि से एक मन के लिए नहीं हवाता था और मणि तथा मुक्ताफल (मोती) [उसके लाने के लिए] उसके आगे डाला करता था। (५) जितने भी बाघ पत्तियों के जात हैं, उन सभी को कुमार ने उसके आगे ला रखा।

(६) एक मन के लिए वह पिजरे को नहीं छोड़ता था, और न वह [जस पत्नी के संबंध में] किसी का विश्वास करता था। (७) वह [अपने] हृदय पर रक्त-बिल उस पिजरे को लिए रहता था।

टिप्पणी—(१) ली < लउ < लबा = लब। (२) हुकास < उल्कास। मूर < मूर्व। (३) मुकुटाहुल < मुक्ताफल = मोती। (४) बासी < बाघ। (५) निमित्त < निमित्त < निमित्त = अवि-भीक्ष्ण भेद-सकोच। पिजरा < पज्जर। पतिय < पतिब < पति + इ = प्रतीति करना विरवास करना।

[३६४]

लीनि ववस बीत एहि^१ माबा। कुवर पसि दुहु किछी^२ न सावा।
पुनि उपजउ^३ बासा मन माहें^४। यह^५ मोहि लागि मरे कहि लाहें^६।
यह^७ सो^८ राज कुवर सुकवार। मर ली^९ हस्या बड़ कपारा।
यह^{१०} गुनि बोल^{११} राज कुमारी। कौन^{१२} जरख तुम्ह कुंवर^{१३} दुसारी।
मोहि तोहि यह^{१४} कह^{१५} कसि पिरीती^{१६}। पछिहि^{१७} मानुस^{१८} कौन प^{१९} सीती^{२०}।
मे पछी जिउ जोखन य करि^{२१} यह पुल लिएउ^{२२} बेसाहि।
ते ली^{२३} राजकुवर सुल भोगी दुल कहि भरख^{२४} सहाहि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बीता येहि। २ रा कुवर पछि दुहु बस ए कुवर पछी ली किछी।
(२) १ ए उरबा। २ ए, बासावन माहें। ३ ए एहि। ४ ए कहि ला

- (३) १ भा बाप ए भिना । ७ ए में यह मर्य नहीं है । ३ भा त एना ।
 (४) १ ए जो नही भा पूछी । ७ रा कोन । ३ ए ते नुमर रा गुम्ह हा ।
 (५) १ ए भा माहि ताहि दहु । ७ ए भा म यह दाय नहीं है । ३ ए भा
 बनी रीनी । ४ ए पछिहि । ५ भा मनुमाहि । ६ ए भा प्रीनी ।
 (६) १ रा मैं पछी जित जावन है ए आप जीठ जीवन है भा जित जोवन
 मर है करि । २ रा यह गुन मिष्ट ए येह गुन निना भा बहु गुन
 सिष्ट ।
 (७) १ ए म य हो मर्य नहा है । २ रा काम ।

अर्थ—(१) इस भाष में (इस प्रकार) तीन दिन बीत गए, और कुमार तथा सभी दोनों ने कुछ भी न खाया । (२) तबन्तर उस बाला (मधुमासती) के जन में यह [विचार] उत्पन्न हुआ “यह मेरे लिए किस काम से मर रहा है? (३) यह तो कुमार राजकुमार है यदि यह करता है तो मेरे कपाल पर हत्या चढ़ती है । (४) यह साबकर राजकुमारी कहती है “हे कुमार, तुम किस प्रयोजन से बुन्नी [हो रहे] हो? (५) जल्द, पुनसे-पुनसे तुम्हीं बहो बँसो प्रीति? पत्नी और मनुष्य में कौन-सी रीति [संभव है] ?
 (६) मैं पत्नी हूँ और (आप) और पीवन को [मनुष्य में] देखर यह गुन मैंने मोल लिया है; (७) किन्तु तुम तो राजकुमार और गुन भोग करने वाले हो; तुम किस प्रयोजन से गुन छोड़ो?”

टिप्पणी—(२) काहू < काम । (३) बपार < बपाल = मिर । (६) बेमाह < बिमाह < वि + माप = बिमप रूप से मित्र अबका वम में करना मात केना ।

[३६५]

बहुरि पछि^१ अग्रिन गुन मोना^२ । कहू अबन रम भर अमाता ।
 मैं पछी^३ तुह^४ राजकबाग^५ । माहि तोहि कम^६ पम बवहाग ।
 तुम्ह^७ तो राजकुंवर सुन^८ भोगी । म बगगिनि पछि^९ दियोगी ।
 कौनि प्रीति आपनि^{१०} मोरि जानी । तौनि दबम छाडहि अनपानी ।
 पहिण^{११} रूप^{१२} औ दगनह^{१३} मोरा । तौ जत बिछ कगनह^{१४} मम^{१५} योग ।
 मर राज हरि सीह^{१६} पछि^{१७} कोह^{१८} बरनाग ।
 भो पनि आगु म जानी^{१९} दहु^{२०} वा गिया गिनाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुनि परी । २ ए घाता ।

(२) १ ए भा तौ । २ रा कुमार । ३ ए बँसे ।

(३) १ ए तुह । २ ए म । ३ ए बैगपी परी ।

(४) १ रा जगनी । २ ए छाडे ।

(५) १ रा मर्य । २ भा दगनेह ए देगनमि । ३ रा जौ बर बरनाग
 तन मर या तौ जन बिछ बरनेह मर ।

(६) १ भा, हरि लै करि । २ भा पछि बिष्ट ए पनि बिना ।

(७) १ ए बी पुनि और न जानै मा बी पुनि जान न जानौ रा बी पुनि मापु न जानौ। २ ए बिधि।

अर्थ—(१) पत्नी ने फिर [अपना] अमृत [सुख] बचन कहने वाला मुक्त बोला और वह उस से अमृत बचन कहने लगी (२) “मैं पत्नी हूँ और तुम राजकुमार हो। मुझमें-तुममें प्रेम व्यवहार कैसा? (३) तुम तो राजकुमार और तुल-मोम करने वाले हो, [बच कि] मैं विरक्त और विमुक्त पत्नी हूँ। (४) तुमने अपनी और मेरी कौन-सी प्रीति समझी कि तीन दिन तक तुमने सप्त-पत्नी छोड़ दिया? (५) यदि तुम मेरा पहिले का बच देखते तब [मझे ही] जो कुछ करते वह बोझा था (होता)।

(६) कर्तार ने मेरा रूप और राज [मुक्त] हर लिया और पत्नी कर दिया (७) और फिर जाने (इसके अनंतर) यही ज्ञानती कि उसने [मेरे] ललाट (भाग्य) में क्या लिखा है।

टिप्पणी—(१) अमोक्त < अमृत्य। (२) बेबहार < व्यवहार। (४) जन < जप्त। (७) लिसार < निराश < कलाट।

[३६६]

हरलित कुवर पछि^१ सुनि बना। जिमि र^२ बकोर दसि^३ नना।
पछि बचन सुनि राज कवारा^४। रहा बकित^५ मन^६ कर बिचारा।
बहुरि सपत व पूछसि^७ बाता। कहु आपनि^८ सति बात निराता^९।
सपत तोहि जो फुर न रहाही^{१०}। पसु पछी^{११} क मानुस आही^{१२}।
जो सा पछि रूप जिमि लोही^{१३}। सपत तोहि^{१४} फुर माकु न^{१५} मोही^{१६}।

कौन नास जो ठाठ^{१७} कहा^{१८} तोर^{१९} बास कहि^{२०} बेस।
कौन पाप केहि बचरम^{२१} मइसि पछि क भेस॥

पाठान्तर—(१) १ ए पत्नी। २ ए मे यह बच नही है। ३ ए बाद देख।

(२) १ रा राजकुमारा। २ ए बकित। ३ ना होइ।

(३) १ ए पूछेसि। २ रा अपनी। ३ रा हिपठा।

(४) १ ए ना कहूँ। ना बस पछि ए पसु पत्नी। १ रा नहाही ए नहूँ।

(५) १ ए पत्नी रूप जो लोही या पछि रूप बेहि तोही। २ ए बाह (बाहि पारकी लिपि)। ३ ए माक न ना माकसि।

(६) १ रा मे वे दो शब्द नही हैं। २ ए मे यह शब्द नही है। ३ ए पही और और है। ४ ए कौन तोर है भा बाद बहुत बेहि।

(७) १ रा कारण। २ ए मैं जो पत्नी।

अर्थ—(१) पत्नी के बचन सुनकर कुमार इतित हुआ जिस प्रकार बकोर चंद्रमा जो मैनों से हैसकर [होता है]। (२) पत्नी के बचन सुनकर राजकुमार लजित हो रहा और मन में बिचार करने लगा। (३) सप्तपत्नी अपन केहर [जसने पत्नी से] बाता पूछी [जसने कहा] “तु अपनी

सत्य बातों निरन्तर (समझा कर) कह। (४) तुम प्रपञ्च है यदि नृ स्पष्ट (स्पष्ट) न कहे कि नृ बगु, बली या मनुष्य है (५) और जिस प्रकार तुम बली का दब हुआ, तुम प्रपञ्च है यदि स्पष्ट (स्पष्ट) नृ न कहे।

(६) [तेरा] भाग कीमती है स्वाम नहीं है और तेरा निवास किम देश में है? (७) नृ किस बात से और जिस अर्थ से बली के देश में हुई?"

टिप्पणी—(१) बगु < बपन < बचन। (२) (६) मपन < मपन (३) बगु < बगु < बली। मनि < मरय। निराणा < निरन्तर < निरन्तर = निराणा। (४) जी < जड < यदि। (५) फर < फुड < फुड = फुड अर्थ बिसर (४) मानुष < मानुष < मानुष = मनुष्य।

[३६७]

यह मुनि पछि गहिर भनि ननी । गड रोह कह कुकर मउ^१ बना ।
जो रे मपन न पूछहि मोही^२ । बहो मय मभ^३ आपन^४ तहो ।
नगर महारम विजय गऊ । पिना राज^५ अनि बल बीमाऊ ।
अबू शीप भाग्य^६ लड गजा । और मिरछान पाट मन^७ छाजा ।
म तहि^८ घर पुनी ओनरी । अकर अवस्था मोहि मिर^९ परी ।
नाउ मोहि^{१०} मधुमालनि राज गिरिह^{११} ओनाग ।
कुकर का म^{१२} विधि निगा जो किछ करम निगाग ॥

पागमर—(१) १ या यह मुनि बचन गहिर यदि, या नृ यह मुनि बली दनि भनि (मै-न) ।
२ ए सी रा उम ।

(२) १ ए पूछ मही । २ या बली बाग नहीं है न या नहीं मय मभ ।

(३) १ या मउ ।

(४) १ ए मपन । २ ए जी मय पाट छन मिर, या और मय राज पाट अनि ।

(५) १ ए बाहि । २ ए देगु यह या देगु अनि ।

(६) १ ए नाउ मार । २ ए राजा पिर या जी राज गिरि ।

(७) १ ए जीरे निगारे विधि निगा या का म^{१२} पाग या कुकर का म^{१२}
विधि बना निगा जो करम निगाग ।

अर्थ—(१) यह मुनि बली नेत्रों में बहिर [के अंगु] भरकर और पी पी कर कुमार से बचन कहने लगी “(२) यदि नृ प्रपञ्च देकर मुझसे पूछना है तो मैं अपना लज बर्न मुझसे कहनी हूँ । महारम मगर में विजय राज है के केरे पिना है राजा है और बल और अचलाय (पुरवार) में मयविजय है । (४) अबू शीप से भरतमज के राजा है उनका मिर घर छन है तथा [उन्हें] निराणम [बाहि] लज बीमा देने है । (५) मैं उनकी घर से पुनी उन्मुख हूँ और अचलाय ही या अचलाय से मिर का आ बली ।

(१) मेरा नाम सधुमाश्रयी है और राजघर में मेरा जन्म हुआ है; (७) (बिन्दु), हे कुमार, बिन्दुता से जो कुछ कर्म (काय) [का लेक] ससाठ में लिख दिया है उसे कौम मित्रा सक्ता है ?”

टिप्पणी—(१) इतिर < इतिर = रक्षत। ईन < वयन < वचन। (२) सपठ < सपथ। (३) बीसाठ < व्यबसाय = पुरुषार्थ। (४) छात < छात < छन। पाठ < पट्ट = सिद्धान्त। छाव < छम्ब [वे] = सोमित होना अपरम्भा। (७) बिसार < बिसाह < बकार।

[३६८]

पुनि^१ पाछिनि सभ^२ बाठ जो अही। सधुमाश्रयी^३ कुबर सठ^४ कही।
उत्तपति^५ रैन जो भएउ^६ मरावा। अस किछु अहा^७ कहा^८ सति भावा।
ओ जठ बुक बिछरे^९ पुनि^{१०} सहा। सो सभ^{११} एक एक करि^{१२} कहा।
ओ पुनि^{१३} कहंसि जो^{१४} दोसरी वारी^{१५}। मिले सुधी^{१६} पमा^{१७} वित्तवारी^{१८}।
ओ सोवत^{१९} जसे^{२०} विहराने। अब जागे तव विसि विसि^{२१} आन।
ओ बिमि जननि नीर पड़ि छिरका^{२२} लोग कुटुब क बानि^{२३}।
सो सभ^{२४} भादि जंत लहि^{२५} एक एक कुबरसठ^{२६} बहुसि^{२७} बसानि ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा रा ए पुनि। २ मा पाछिनि सब ए पकी सब। २ रा में यह शब्द नहीं है। ४ ए कुबर सौ मा सब कुबरहि रा कुबर सभ।
(२) १ ए रैन जो बी। २ ए कछु बाह। ३ भा कहेसि।
(३) १ ए जठ बुक बिछरे। २ भा बहु, रा पुनि ए मे यह शब्द नहीं है। ३ ए भा सब। ४ मा रा की।
(४) १ रा ए पुनि। २ ए मे यह शब्द नहीं है। ३ भा दोसरी वारी। ४ रा मेरे दोस। ५ रा पम वित्तवारी।
(५) १ ए बीस। २ ए देस देस।
(६) १ ए पुनि जननी पानी पड़ि छिरका मा ओ बिमि जननि नीर पड़ि छिरकेउ रा ओ बिमि जननि नीर वरि छिरका। २ मा कुटुब काज कुछ बानि।
(७) १ ए मा सो सब रा वे सभ। २ रा जठ सवि रा बानी (?)। ३ ए कुबर सौ कहा रा एक एक कहे मा एक एक कुबरहि कहेसि।

अर्थ—(१) फिर पिछली कल्पत वाली को भी वह सधुमाश्रयी ने कुमार से कही। (२) उत्तपति (जाति में) राशि में जो [बनीहार से उत्पन्न] मिलाप हुआ था वह बीता कुछ [हुआ] था, सन्ध भाव से उत्पन्न बताया। (३) और फिर जितना कुछ [उत्पन्न] बिन्दुबिन्दु पर उत्पन्न रहा था वह सब उत्पन्न एक-एक करके बताया। (४) और फिर उत्पन्न वह बताया जो (जित प्रकार) के हुमाही वार पैमा की विचलता में मिले थे (५) और जित प्रकार के लोहे हुए ही [एक-दूसरे से] ब्रह्मा कर दिए गए थे और [जित प्रकार] जब आपने मेरी उन्हीं देखा था कि वे निम्न-निम्न विधाओं में ला दिए गए थे;

(६) और जिस प्रकार लोह (रेद्य) और कुटुम्ब की बर्पाश के ध्यान से जलनी में [मंत्र] पड़कर उस पर जल छिड़का या (७) वह सभी आदि से अत तक एक-एक [वार्ता] उसने सुनार से विवृत कर कही।

टिप्पणी—(१) वात < वता < वार्ता। (२) रीति < रयसी < रजनी। मरग < मेलाव < मेत = मिमाप मिमन। सति < सत्य। (३) बारी < बेला = बनसर। (४) बिहुर < बिहुर < बि + घट = बसग होमा। (५) बकलाम < बकलाव < व्याख्यानम् = विवृत करना कहना।

[३६९]

औ फुनि राजकुमार क^१ जाना। आदि अत सभ कहसि निराता।
आदि रनि जिमि भई^२ चिन्हारी। औ बिधि बचा बीष द^३ सारी।
औ जिमि तजेर पिता घर बाग^४। औ बूढ़ज जिमि अरब भडाग^५।
पमहि जाइ मिलत^६ जहि आंती। नुनि मोरि चाह हिमै भई^७ सानी।
राकस हनि पेमहि^८ सै आभा। मा आदर बहु मान^९ बपाबा।

फुनि पेमा^१ पित्रसारी^२ विषन^३ स मरए हम^४ दोउ।

रिन एक मन पसक सेउ^५ सायत भएउ जो एउ बिछोउ^६ ॥

पाद्यन्तर— ए में उपर्युक्त पंचम अर्वाली के चरण परस्पर स्वानांशित हैं।

(१) १ रा नुनि राजकुमार भै ए तब राजकुमार की। २ ए तब कहा।

(२) १ ए आदि अत जिमि बी मा आदि रीति जहि भएउ। २ ए औ जिमि बीष बिध।

(३) १ ए तब पिता घर राजू मा तब पिता घर बाग। २ ए औ बूढ़ा जिमि सहन संडाक रा और बूढ़ज छय अरब भडाग।

(४) १ ए पमहि मिला जाइ रा पमि जाइ मिलेउ। २ ए मा बीठम चाह पाए मा (भइ—मा) सानी।

(५) १ ए रावन बारिबीहि। २ ए तब जर्मद बहु नाम रा भा आदर बहु मानि।

(६) १ ए नुनि पमि रा नुनि पेमा। २ मा पित्रसारी। ३ ए बिधि।

४ ए सै बेरवा हन रा सै बेरए जिमि।

(७) १ रा ए सा। २ ए बिधि हम बिचा बिछोउ रा बी जो एन बिछोउ।

अर्थ—(१) और फिर उसने राजकुमार (जमींदार) की वार्ता आदि से अत तक सब निरस्त कर बरी (२) जिस प्रकार आदि राशि में [दोनों में परस्पर] बरिषप हुआ या और दोनों ने बिपाता का बीष में रसते हुए बचन-बडता की बी, और जिस प्रकार [राजकुमार ने] पिता का घर बार छोड़ा या और जिस प्रकार [बूढ़ा बार करते समय] उसका अर्थ-आदर दुब गया या, (४) और जिस प्रकार वह पैसा से आकर मिला या, और [जिस प्रकार] बेरा लमाचार मुनकर [उसे] दूरय में म नि हुई बी, (५) और [जिस प्रकार] वह रासत की बार कर पैसा को नि आभा या, और [जिस प्रकार] उसका [पैसा के घर पर] बहुत सम्मान और आदर हुआ या तथा [वही] बारा हुआ या,

- (६) फिर [जिस प्रकार] दोनों की बिजलीतारी में बिजली ने सेकर हम दोनों को मिलाया था,
(७) और [जिस प्रकार] एक शब्द के लिए नेत्रों के पलकों से लगते ही जो इस प्रकार का [दोनों
में] बिछोह हुआ था।
टिप्पणी—(१) बाता < बता < वार्ता। निराता < निराश < निरास्त = निराश्रुत। (२)
रिमि < रयनी < रजनी। (३) बार < डार। (४) बूझ < बुझ = बुझा। (५) राकस < रासस।
बयाव < बर्बापन = जगमग बयाव। हर्षयूचक बाध। मेरय < मेरयू = मिलाया।

[३७०]

पाप न घटत^१ कुवर हम माहें^२। यह दुख पर न जानीं बाहें^३।
राज कुवर बहु बहु ल^४ बारा। नहि जानीं हृद जियत क^५ मारा।
भए पाँस जब मो तन आई^६। रहि न सकित निसरित^७ बीराई^८।
बूझि^९ उब अस्त^{१०} सयसारा^{११}। मिला न कितहु पम पियारा।
पहिलिहि चाह^{१२} परा^{१३} दुख मारी। तब अवत अव^{१४} जोवन वारी।
सकल सिस्टि म हेरी होइ पछि क^{१५} भेस।
कोई एस नहि^{१६} मोहि^{१७} मिला कहै जो कुंवर संदेस ॥

- पताखर—(१) १ ए ए मएत। २ ए माहे। ३ ए काहे।
(२) १ ए कै कहा बहु। २ ए बहु बीबत। ३ ए म यह पद्य मही है।
(३) १ ए जा पड़ी जब मा तन आई, रा मइत पछि जित एहा न आई।
२ ए वेम अलि निसरी रा रहि न सकित निकसित।
(४) १ ए बूझि। २ जा बारि अंत रा पाठ स्पष्ट नहीं है। ३ ए ससाप।
(५) १ ए पहिले बाद रा पहिले चाह। २ मा परेत। ३ ए जब।
(६) १ ए पंखी के जो मा होइ पछि के रा पछि के।
(७) १ ए न ऐसा। २ ए मोहि।

अर्थ—“(१) हे कुमार, हम [दोनों] में पाप (अनिवार) नहीं घटित हुआ। [तब
यह दुख न जानीं बारी [हमारे सिर पर] बड़े बया। (२) बता नहीं [मोमें में] राजकुमार
से जाकर कहीं छोड़ा और नहीं जानती कि वह बीबित है या मृत। (३) जब मेरे लरीर में
मा हुए (निकल आए) तब मैं एक न लकी और पायल होकर निकल पड़ी। (४) जबमा
अस्तावत तक संसार की ईड डाला किमु मेरा प्रेम-प्रिय कहीं नहीं मिला। (५) प्रथम अलि
में ही मारी दुःख [हमारे सिर पर आ] पड़ा था, [किन्तु] तब मैं अवेत (अज्ञात-बीबना
और अव बीबनवती [नोत-बीबना] हूँ।

(६) सारी वृद्धि में मैंने पसी के पैर में होकर [जसे] ईड डाला, (७) किन्तु मुझे
पेसा नहीं मिला जो कुमार का संदेश (समाचार) कहता।

टिप्पणी—(१) पाँस < पस = पैसा।

[३७१]

कुंवर मरम मोर अत किछु^१ अहा । लाज छाड़ि म तुम्ह सठ^२ कहा ।
 जो खोजत किछु नहि पाइउ^३ । सवति आइ तुम्ह जाल बसाइउ^४ ।
 बसिउ^५ तोहि^६ प्रांसम उनहारी । बसिउ आस तहि^७ आइ^८ यटाउ ।
 अब जो छाड़ि दहु मोहि^९ राऊ । पम पम पुनि होउ^{१०} बटाऊ ।
 न हेरत^{११} मिलि जाइहि पोक । न सागिहि ओहि^{१२} माग्य जीऊ ।

मसन बड़ि क पम सर^१ कर^२ न जिय नर लोम ।

प्रीतम बाजओ^३ जिउ घट^४ सो बीउ^५ दुनहु जग^६ सभ ॥

ठाठार—(१) १ ए कुंवर मरम मोर जो बिउ ए आपन बने कुंवर जन । २ जोड़ि मैं सो भी था छाड़ि मैं सब तोहि ।

(२) १ ए जब मोनव किछु नहि पाइउ ए जो ब्यापन जिब तुम भैंऊ मा जो व्यापन हिजु जनि तुम्ह पाइउ । २ ए मा आपु तुम जाल बसाइउ (बसाइउ—मा) ।

(३) १ ए देखि तोहि मा देखि तोहि । २ ए बीनी जिब परि, या बीनिउ जिब परि । ३ ए मा जान ।

(४) १ ए देह मोहि । २ ए होउ ।

(५) १ ए मा कुंवर । २ ए मैं यह धार नहीं है । ३ ए बोहि मा बड़ि ।

(६) १ ए ए पम । २ ए परिस ।

(७) १ ए जो । २ ए जिब । ३ ए मैं यह धार नहीं है । ४ ए तुमी जुम ।

अर्थ—“(१) हे कुंवर मेरा नर्म प्रियता-कुछ था, [बहु सब] लग्ना छोड़कर मैंने तुम से कहा । (२) जब मोनव-लोमले [अपने प्रिय को] जिने नहीं नहीं पाया [तब] बलपूर्वक आपन मैंने मुझारे जाल में [अपने को] बंधा दिया । (३) तुम्हें मैंने प्रियतम की अनुहति का देखा इसी आशा से मैं तुम्हारी सदा पर आकर बैठ गई । (४) अब यदि हे पम (राजकुमार) तुम मुझे छोड़ दो तो मैं अपने प्रेम-पथ का बचिक पुनः शुरू । (५) [अब] या तो दूँडले-दूँडले मेरा प्रिय ही मिलेगा और या तो उसके मार्ग में मेरा बीब लगेगा ।”

(६) संसन कहते हैं प्रेम की चिता पर बड़ कर बीब का लोम [कोई] न करे । (७) जो बीब (बीबन) प्रियतम के निमित्त लग जाता है वह बीब बीनी अपन में रोमिल होता है ।

टिप्पणी—(१) जैग < जैतम < वाचपु = जिनता । (२) जो < जउ < यदा = अब । बसाइ < बापपु = बँसाना । (३) उनहारि < अनुहार < अनुहार = अनुहति । अगरी < अटाल्य = नवन या ऊपरी भाग । (४) नर < पर = चिता ।

[३७२]

मुमन राम^१ पछी^२ दुग बना । मया भीमू मरि आप^३ मना ।
 दुपर बना मुनि न जिउ^४ रयागो । मोर दुग मुने^५ उ उ जागो ।

जनि किछु कर बिता बिस^१ माही । ओटवीं^२ सोइ उद्भरसि जाही ।
 अगम गहौं^३ बाला तोहि लागी । जिमि बुझाइ तो हिय उर^४ आगी ।
 मोर बीसाउ भाग सोर वारा । मेरजन हार एक करतारा ।
 राजपाट सम^५ परछरि मुख अगवी^६ तोहि लागि ।
 महु^७ माहस सेउ^८ ही^९ सिधि पावजं^{१०} बस हिय तोहि आगि ॥

पाठाभ्यां—(१) १ ब राह या राघ। २ ए पछित। ३ छ भर बाँध।

(२) १ ए कुंवर सुनी आपन बिस रा कुंवर कहा सुनि रे जिय। २ ए जा मुनव।

(३) १ ए मे यह सख गही है। २ ए बिछा करसि बिज। ३ ए उठनी।

(४) १ मा अगम करी ए अब सवन सी। २ ए तोरे हीबर।

(५) १ ए मेरबिहार।

(६) १ जा मुख ए सब। २ अगरी या प्रह्व।

(७) १ रा महुव। २ रा मा सी। ३ राउ होइ। ४ रा ए मे यह सख गही है। ५ ए बूझी हीबर या बझी हिय तोरि।

अर्थ—(१) बली के पुत्र के जन्म सुनते ही राजा (राजकुमार) के भयनों में राजा के अग्र पर आत्। (२) कुमार ने कहा, “हे बीच (जीवन) का त्याग करने वाली तेरा पुत्र मुनकर हृदय में आग उठ रही है। (३) तु बिस में कुछ भी बिताया मत कर; मैं वह कहेया जिससे तू उठार ना जाये। (४) हे बाला, मैं तेरे लिए अपना [असंभव] को भी पहन (सम) करनेवा जिससे तेरे हृदय की आग बुझे। (५) मेरा व्यवसाय (पुष्पार्थ) [होना] और, हे बाला तेरा भाव्य [जिन्से तेरे जिय की तुलसे] मिजाने वाला तो एक [मात्र] कर्तार ही होना।

(६) मैं राजा तथा सिंहासन सब छोड़कर तेरे लिये पुत्र की अंगों पर बूना (सर्पू)। (७) संभव है कि साहस [करने] से मैं छिड़ि पा ही जाऊँ और तेरे हृदय की आग बुझे।”

टिप्पणी—(१) ओटव < आउट < मा + वृत् = करना। (५) बीसाउ < व्यवसाय = पुष्पार्थ।

[३७३]

जह लगि सकी^१ जीत ओ^२ जाती । मेरवीं^३ साइ जाहि हृति राती ।
 प्रथमहि^४ मगर महारस आऊ । कृनि^५ हेरी ने^६ बिस बिसराऊ ।
 महु मोहि जस वै चाल बिधाता । बहुरि मिले^७ तोहि पम संधाता ।
 मिसहि न ओ^८ लहि^९ प्रीतम तोही^{१०} । तो लहि^{११} सति नाहि उर मोही^{१२} ।
 ओ लहि^{१३} पहिल रूप नहि पावसि^{१४} । तो लहि^{१५} कृबर काज नहि आवसि^{१६} ।
 मगर महारस जाइ के पहिल रूप तुव^{१७} वेइ ।
 सोबि^{१८} कृबर तोहि^{१९} मेरवीं ओ विधि जाउ न लेइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ग सकी। २ रा बीर। ३ ग मेरबी।

(२) १ ए प्रथमहि। २ रा ए भा पुनि। ३ ए गी।

(३) १ मा मिसहि।

(४) १ मा मिलै न जब। २ ए सगि। ३ ए ताही। ४ ए ती लगि
मा सब लगि। ५ ए हाइ न मोही भा न हिय उर मोही।

(५) १ ए जो लगि भा जब लगि। २ ए ना पावहि। ३ ए लगि। ४ ए
ना आवहि।

(६) १ ए ताहि।

(७) १ मा ए मानि। २ ए तोहि, मा ताहि।

अर्थ—“(१) जहाँ तक अपने बीच तथा शक्ति से कर सकूँगा मैं उसको [तुम्हें] मिलाऊँगा जिससे
तु अमुरगता है। (२) [सोचता हूँ] पहले तो मैं महाराज नगर जाऊँ, और फिर वित्त बिसराव
नगर जाकर [उठे] दूँ। (३) पता नहीं [कहाँ] मुझे विधाता यज्ञ दे ही डाले और तेरा प्रेम का
साथी मुझे फिर मिल जावे। (४) जब तक [तेरा] प्रियतम तुम्हें नहीं मिलता है तब तक
मुझ हृदय में शक्ति नहीं है। (५) [किन्तु] जब तक तू अपना पहले का [नारी] रूप नहीं पतली
है, तब तक तू कुमार (मनोहर) के काम नहीं आ सकती है।

(६) [इसलिये] महाराज नगर जाकर तुम्हें पहले का रूप दे (दिला) कर (७) कुमार
(मनोहर) को खोज कर मिलाऊँगा यदि विधाता [इस बीच] मेरी आयु न ले ले (न समाप्त
कर दे)।”

टिप्पणी—(१) रात < रक्त = अनुरक्त। (७) मरब < मरब < मेसम् = मिलाया।

[३७४]

गर दुग हियें दुगज जहि होई । एहि^१ नलि मोह सो विग्न होई ।
सहम जोर सहि^२ पर बन्धहारी^३ । जो बमार पर आपु उजारी^४ ।
म्यगू तर भा बीस जो मारी । ओहि ऊपर भा कल टपकारी^५ ।
मोपहि दगि जगत^६ जा मोसा । सहि बट दइ मोंति भरि^७ हाया ।
जा र कराव^८ बचन रानी । साम दइ सहि बागह बानी ।

गगहि नूची^(१) घागुगे जो पर ग^२ मुग^३ मगि ।

गहहि पठिन दुग आप गिर हिम गग मुग आगि^४ ॥

पाठान्तर—ग म पर छ^१ नहीं है और भा म यह जगदे छ^२ न बार है।

(१) रा एहि। भा ते बिपदे।

(२) रा मे। ३ रा बिनगरी। ४ रा जा पर दग लाधि हा टुगरी।

(५) रा म अडोनी है

बनि मो जगज जियन छिदि बेरा। पर दग आगि गहै जा दीरा ।

- (४) १ रा सोकहुं वेद कल्पि। २ रा एहि(।)।
 (५) १ रा पाव काइ।
 (६) १ रा बारि दु। २ रा परार। ३ रा दुल।
 (७) १ रा कापि।

अर्थ—“(१) दूसरों के कुछ से जिसके रूप में कुछ होता है वह इस कवि में बिरता ही बोई होता है। (२) उस पर [एक ही नहीं] साहज बीच बलिहार हैं जो अपने को उबाड़ (बिमाइ) कर दूसरे को बसाता (बनाता) है। (३) मूर्खों के नीचे हीकर [मिथी के] डेसे जिसने मारा (को मारता है) उसके ऊपर कर्णों की उपकान हुई (होती है)। (४) सीपों को देखकर जम्बू को जग पर मत [होता] है [वह इसलिए कि] वह उसे हाव (अंजली) भर मोती देता है। (५) जो कंजल (सोने) की खान को कुदेरता है, उसे वह बाण्ड बर्न का (करा) सोना देती है।

(६) मूर्खी (?) बेकारी को देखी, जो घर के कुछ के लिए (७) रूप में रक्त और मुख में जल [रक्तकर] अपने सिर पर कलिन कुछ सज्ज करती है।”

टिप्पणी—(१) बिरता < बिरत। (२) कस < कस < कुज। डील < डल [दे] = डला जोर डेला। (४) सीप < सिपि < मुपि < धुपि = सीपी। मोंति < मुतिन < मौस्तिक = मोती। (५) कपन < कम्पन = सुबर्ण सोना। बारहबानी < बारहबानिन् = दाद पहले सोने के खरेपन की सोकहुं कलाएँ मानी जाती थी (दे बीसलदेव राव छन्द ४८—हिंदी परिपक्व संस्करण) किन्तु मुस्लिम-शासन काल में बाण्ड बर्नों की कसौटी का व्यवसन। हुआ। बाण्ड बर्नों का सोना खरा माना जाता था और जिसमें ही बर्न कम होते थे सोना खरा ही छोटा माना जाता था। खरेपन की कसौटी के लिए बर्नों के अनुसार दाकाकाएँ बनवा कर रख ली जाती थी जिन्हें ‘बनकारी कहते थे [दे परमानन्द छन्द ३ ५, १० < हिन्दुस्तानी एकेडमी संस्करण तथा बाईने-ए-अकबरी, बाईने ६] (७) रगत < रक्त।

[३७५]

कहि रस बचन पसि^१ सतोखी । स बिदेस निखरत बिज^२ जोखी ।
 पर सुख लागि दुखस बिय^३ मावा । परिहरि सुख दुख अकम^४ सावा ।
 राज^५ जाउ सम^६ सुख परिहरा । दुख कर सात रहसि^७ सिर घरा ।
 न बलि बलि तिन्ह परसे परा^८ । पर दुख दुखी हिया^९ जिन्ह करा^{१०} ।
 कारन आपु दुखी सम होई ।^१ पर दुख दुखी सो^२ बिदला कोई^३ ।

साराबन कूर^४ पर सुख लागि^५ सिपुन दुखस^६ सिर मार ।
 पर सुख लागिज दुख सहहि^७ गनियते अन^८ समसार^९ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मरम। २ ए पंजी। ३ रा ल बिदेस निखरत सम ए सैज बिदेस की आसिर ।

(२) १ ए पीव। २ ए मम।

- (३) १ ए काज भा में घण्ट कीड़े डारा कटा हुआ है। २ ए भा सब। ३ ग छत्र रहमि ए मोन आनि।
 (४) १ ए लुब बर्नहू केरी (लुल० ३० १) रा दिन पगने वेरा। २ रा लामि हिया ए बुलिया (< दुसरा हिया आरसी भिनि) ३ ए मिहू केरी।
 (५) १ ए भा सब हार्द रा मब कारी। २ ए जन। ३ रा हार्द।
 (६) १ ए म यह घण्ट नहीं है। २ ए लामि। ३ ए लीगू भापु।
 (७) १ रा ए जा दुल सही। २ ए पन लहि न रा पदन ठेज न।
 ३ ए संसार।

धनं—(१) [इस प्रकार] रसीले बचन कहकर उसने बली (मधुमालती) का संतोष किया और उस बीच की ओसिम में डालने वाले [राजकुमार] ने [बली को] सेहर बिदेरा ने लिय प्रस्थान किया। (२) पर-भुल के लिए उसे भी में भुल भाया और लुब छोड़कर उसने भुल को आतिपन किया। (३) राज्य का बाब और सनसत भुल उसने छोड़ दिए, और हयपूर्वक भुल का छत्र तिर पर चारण किया। (४) [भजन करते हैं] में [आर] बनि बनि गया और मैंने उनके चरणों का स्पर्श किया जिनका हृदय पर-भुल से बुझी होता है। (५) अपने लिए तो सभी दुर्लभ होता (भुल उठता) है पर-भुल से बुझी बिरता हो कोई होता है।

(६) ताराचंद कुमार ने पर-भुल के लिए तिर पर भुल का चारण किया। (७) पर-भुल के लिए जो भुल सहन करते हैं उन्हें [ही] संसार में जन (मनुष्य) गिनिए (सपत्ति)।

टिप्पणी—(१) निगर<विस्तर<निर्+गृ=बाहर निकलना। (३) छान<छत<छन। (४) हिय<हृदय।

[३७६]

फनि घालउ^१ गुनि^२ बाल मधाना । बंजर मनें राणउ^३ अधिगण्डी ।
 नहुमि परा^४ मोहि^५ मिर बड^६ बाजू । होइहो परमा राजि यजू ।
 जो तुह बाल^७ मधानी मोरा । रहू^८ मोहि^९ पर अइ^{१०} तारनिहोरा ।
 एहि^{११} परोग मोर सब^{१२} आवमि । बाल प्रीति ल मिर पदुवाबति ।
 पदो न कोइ जगत भन^{१३} तोहो^{१४} । एहि ठां जो मय दमिन मोहो^{१५} ।

एन तुह^{१६} बाण सधानी ओ बधौ हमि मोरा ।

आवहि^{१७} काज एहि^{१८} और सखहु आतु निहार^{१९} ॥

पाठांतर—(१) १ रा गुनि घाल गुनि भा गुनि घाल नब न पाप गुन है। २ ए मने पावे।

(२) १ भा परेड। २ ए मारे। ३ ए में यह घण्ट नहीं है।

(३) १ ए री हमि भा गी हाणि। २ ए रे। ३ भा परा ए मो पर।
 ४ ए नै (<उड) रा त्रिमि।

(४) १ ए मरि रा एहि। २ भा जी। ३ ए भा गन। ४ ए बाण प्रीति रूप, ए मय प्रीति है।

- (५) १ ए कही न मला जात बर माप ना कही न केउ जगत भर दोहीं। २ भा संभ। ३ ए यहि ठीं थै सग बैठ न तोरा।
 (६) १ ए भा सी। २ ए बबी रहि ना पै बबी।
 (७) १ ए जापु, या जाउ। २ भा एहि। ३ ए साबो न मापन मोर, रा जाउ न जापुहि कोरि।

वर्ण—(१) फिर (तबसेतर) यह पुनकर [ताराचंद का] एक बाल-सला बौद्ध बड़ा भाबी रत्न को उसे पुनार (ताराचंद) ने मज्जा के लिए बुलाया था। (२) [ताराचंद ने कहा] “मेरे फिर पर एक बड़ा कार्य [आ] पड़ा है, [जितके लिए] मैं राज्य छोड़कर परेसी हुँवा (निदेश बाज्ये)। (३) यदि तू मेरा बाल-सला है और मुझ पर तेरा निहोरा (रूपावर्ध स्नेह) है (४) तो तू इस प्रयोग में मेरे साथ आ, और बालपन की प्रीति को सिरे तक पहुँचा। (५) तुम जल्द मैं कोई मला न कहोगा यदि तू इस स्वप्न पर [येरा] लप न देया।

(६) एक तो तू [मिरा] बाल-सला है और दूसरे तू मेरा बालच है; (७) तू इस अवसर पर मेरे काज आ मैं तुम्हें अपना निहोरा मना रहा हूँ (अपने स्नेह की पुर्नवाई दे रहा हूँ)।

टिप्पणी—(१) राज < रावण = बुकारना आह्वान करना। (४) परोन < प्रयाण। (५) ठा < स्वप्न। (६) बंभी < बागवत।

[३७७]

कंवर सुहिरवीं सुनि यह^१ जाता । सिर पां हुत कापेउ सम^२ गाठा ।
 कहसि होहि^३ जो^४ सो^५ जिय मोरें^६ । खेउ सम^७ नेउछाउरि तोरें^८ ।
 जो न बाजु^९ तोर सब^{१०} जइह^{११} । फुनि^{१२} कहि काज काहि^{१३} न अइह^{१४} ।
 जो जित नेग न लागिहि तोरें^{१५} । सो जित बहुरि काज कहि मोरें^{१६} ।
 तुम्ह सब जो^{१७} न जाउ एहि^{१८} बेरा । इहाँ रहौ नै न^{१९} केहि कोउ ।
 तुम्ह बिदम कह^{२०} योनहु^{२१} छाड़ि राज कटवाइ^{२२} ।
 मैं जो रहौ तुम्ह^{२३} परिहरि को भर मोहि^{२४} बहाइ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा सुहृद पुनत वह ए सी हिरवीं मुता सी। २ भा सिर पालाहि कापेउ सब ए सिर पावहु ते काया।

(२) १ ए हो। २ ए न यह सम्ब नहीं है। ३ भा सी। ४ ए मोरा। ५ ए भा सबी। ६ ए तोरा।

(३) १ ए जाज। २ भा ए संग। ३ ए बीहौ। ४ रा ए पुनि। ५ ए काहि। ६ ए पही।

(४) १ ए जाने तोरे। २ ए ना मोरे।

(५) १ ए सुहृदगी या तुम्हर्नगी। २ ए बहि। ३ रा मयह सम्ब नहीं है।

(६) १ ए योनव या नीनव। २ ए या समुदा।

(७) १ ए तुम। २ ए को मोहि मला रा मोहि बल कोद न।

अर्थ—(१) कुँवर का मुहूर्त (मित्र) यह बात सुनकर घैर से छिर तक कमल पात्र से पीप उठा। (२) उसने कहा “यदि ली बीब मेरे हों, तो मैं उन्हें भी तेरी ग्यौछावर दे (कर) डालूँ। (३) यदि मैं आज तेरे साथ नहीं जाऊँगा तो कल मैं तेरे दिस काम आऊँगा? (४) यदि मेरा बीब तेरी नेग (बेट) नहीं लयेगा (होगा) तो वह बीब छिर मेरे दिस काम (आवेगा)? (५) यदि मैं इस बेला में तुम्हारे साथ न आऊँगा तो मैं यहाँ किस का होकर रहूँगा?

(६) तुम राज्य तथा सेना को छोड़ कर निवेस जा रहे हो (७) तो मैं तुम्हें छोड़ कर यदि (यहाँ) रह जाऊँ तो मुझ कीम भला कहेगा?”

टिप्पणी—(१) मुहिराँ < मुहुरय = मुहुर मित्र। बाल < बला < बाली। (२) निवछावरि < पिबच्छ [दि०] + भावसि = उतारे (धारे) हुए पत्राओं का समूह।

[३७८]

पुत्रि अवधि^१ राजा^२ बनवारा^३। राजकुवर अधिरानि ह्वाग^४।
अग्या^५ कुँवर परिछि^६ सिर^७ सीन्हा^८। आइ^९ जाहार भाणु होइ कीन्हा^{१०}।
कहा जाइ सी^{११} तुर पलासहि^{१२}। मासिहोव जिमु रह त आनहि^{१३}।
बूझ अरय^{१४} तम जानहि^{१५} अही। सहम माहि^{१६} म^{१७} आठ^{१८} उबहा^{१९}।
पाठि बाहि^{२०} पातर मानषानी। तुर मीक तब आण^{२१} पषानी।
मस्त न पूज तज तिन्ह^{२२} करन रन सुरियाहि^{२३}।
करहि रीम ज^{२४} भावत निरनि निक्क^{२५} परिछाहि^{२६} ॥

वाग्वार—(१) १ आ कवि ही बंश ए पुत्रीवध। २ रा राज। ३ ए बनवारा।
४ ए ह्वाग।

(२) १ रा ए अग्या। २ ए प्रछि। ३ ए न रा मे यह शब्द नहीं है।
४ छ लैऊ, भा लीन्हेड। ५ ए आग (<आ कारमी लिपि)।
६ ए भाग मे ईऊ भा अशीम मे कीन्हेड।

(३) १ ए कहा कुवर न रा कहेमि जाइ नी। २ ए तुर पलासु। ३ ए
मात्र हान की मम आनु भा मासि होठ ज बए है।

(४) १ रा बाक अब ए मीक क अरय भा माक अबर। २ ए जी जान
भा पंथ जानहि। ३ ए सहमह मा। ४ ए मे यह शब्द नहा है भा
मह। ५ ए मा आनु।

(५) १ ए पाठि। २ ए मुरिग मुरमय मात्र।

(६) १ ए ते मम भा तज विधि। २ ए अरन रन मुरि जाहि रा अरन मम
मुरियाह।

(७) १ ग करी जा रीम मित्र पारे ए करहि रीम म^{२५} पारनि। २ ए
प्रपाठि भा निह जोठ (<छोड़)।

अर्थ—(१) पुत्र-अवधि [मावका] राजा का बानेदार (वा बीबीदार) वा; राजकुमार
मे उठे बाबी रान की बुलावा। (२) उसने कुमार की आज्ञा की कटन कर उसे निरंतर चारन किया,

भीर सातने आकर उतने कुमार की नमस्कार किया। (३) [कुमार ने] कहा 'आकर सी घोड़े साजो भीर जिते (जिन्हें) आलिङ्ग्य (सदय-आस्थ) कष्टता (बचावता) हो तुम उसे (उन्हें) ले आओ।' (४) जो कूक (बील) का समस्त अर्थ जानते हैं सहुनों में से [ऐसे बुने हुए] घोड़ों को बात-समस्त कर के आओ।' (५) जब पीछों पर सोने के वर्ण की पाखर बाने हुए सी-एक घोड़े पत्तान (सुसज्जित) कर लाए गए।

(६) [ऐसे वे कि] उन घोड़ों के चरण-रेषु का लेख (की लेखी) हुआ नहीं पाती थी (७) [ऐसे वे कि] जो बीड़ते समय [अपनी] परछाईं की भी देखकर रोव करते थे [अपनी परछाईं को जो अपने समकक्ष देखना नहीं सह्य कर सकते थे।]

टिप्पणी—(१) वनवार < बाबवार < स्वानपाठ = बानेवार या बीबीवार। परित < परिष्ठ < प्रति + इप् = ग्रहण करना। (२), (३) सुखि < सुरख = बोझ। (३) (५) पत्तान < पत्तान < पर्याप्त = अवकाशवाधि से सुसज्जित करना। (४) कूक < कोक [दे] = बात आश्रित। उबेह < उम्बेह < उप् + प्र + ईस् = जानना समझना। (५) पाखर < पक्कर = बरख कवच। बानी < बनिन्। (७) परिछाह < प्रतिच्छाया।

[३७९]

दरद लाधि गाड़ी^१ दस सीन्हा^२। सुविन साधि पस्याना^३ कीन्हा^४।
सोग^५ कटुन परिछरि सहुवेसी^६। पर सुस थायक^७ भएउ^८ विदेसी।
जेते अहे इस्ट सम बासी^९। भए^{१०} साध मिलि सम^{११} उबासी।
फुनि^{१२} कृवरनि कह परोहन बाने^{१३}। पोन बेग जिन्ह पांस^{१४} न काट।
धावत बरन लखिय नहि जाए^{१५}। अनु मन मों हहि पाव बराए^{१६}।

सुकल पन्थ^{१७} सनिवार सातवे^{१८} सुलान^{१९} कीन्हा^{२०} पमान।
मधुमालति कर पीजरा^{२१} सज^{२२} छे^{२३} उतरे जाह मलान^{२४}॥

पाठांतर—(१) १ रा ए बाड़ी। २ ए सीन्हा। ३ ए कीन्हा।

(२) १ ए निज। २ ए परिछरि सवेसी। ३ ए लाधि। ४ ए की।

(३) १ ए इहाँ रहे सेपवासी भा अहे इस्ट सम बासी। २ ए भी। ३ ए थाय जो छै भा साध मिलि सवै।

(४) १ रा ए पुनि। २ ए कृवरन कह परोहन बाटे भा फुनि कुरवरन कह परोहन बाने। ३ रा बेहि पाव ए को पक।

(५) १ ए कलाना जाई भा कले नहि जाए। २ ए मन यो छी बुझ पाव हेराई भा अनु मन गह सों बहु बाहर आए।

(६) १ भा पकन। २ ए छो बरछाई रा तुम साधि कै। ३ ए सुलान। ४ भा किएउ।

(७) १ भा कर पिजरा रा ए कै पिजरा। २ ए भा मंग। ३ ए भा मे उतरे भीर है। ४ ए जाह मरान भा जाह मेछान रा बनि मजान।

अब—(१) उसने वस गाने इन्ध साब लिया और अगला दिन निश्चित करके प्रस्थान कर दिया। (२) [अपने देश के] लोगों, और कुटुंबियों और देशवासियों की छोड़कर वह परमुक्त देशवाला (परमुक्त के लिए) बिदेशी हो गया। (३) उसके साथ जिनमें भी इष्ट और सगी में है सब उसके साथ आकर उबासी बन गए। (४) फिर [कुमार ने] कुमारों को [एते] प्ररोहण (सवारी के आनंद—खोड़े) बाँटे पवन वेग (तीव्र गति) में जिनके पक्ष नहीं काट सकता था—समस्त नहीं हो सकता था। (५) थोड़े समय जिनके कारण आप आकर भी बेल नहीं सकने से जानो उन्हेंनि घन में ही पेर कराए (लगाया रखें) हों।

(६) ध्रुव पक्ष की सप्तमी को शनिवार के दिन अच्छी लम्प में [कुमार तथा उसके साथियों ने] प्रयाण किया (७) मधुमालती का पित्रङ्ग साथ में लिए हुए है उसान (पड़ाव) करने के लिए आ उतरे।

निष्पत्ती—(१) दरब < इन्ध। प्रस्थान < प्रस्थान। (४) पराहन < प्ररोहण = सवारी का आनंद। (६) पवान < प्रयाण।

[३८०]

पूछन^१ नगर महारम जाहीं । इह चित विगत चित माहा^२ ।
महिल मरुन पाव^३ जो^४ एही । सी^५ बूढ़ी ग^६ एहि क सनही ।
मधुमालति पित्रर^७ उर शायें^८ । जला जाइ चित बाय पराए^९ ।
जेठ^{१०} जेठ^{११} पाव महारम जाहा । तउ^{१२} तउ^{१३} हिय मह होइ^{१४} उछाहा ।
दगि महारम नगर सोहावा । जरत हिया जनु^{१५} अमिअ मिरावा^{१६} ।
पुनि जौनां मानिनि क^{१७} बारी^{१८} उतरउ^{१९} राजनमार^{२०} ।
मालिनि पुहुप किए भरि डालिइ^{२१} कीन्हैउ^{२२} आइ जाहार ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए पूछन। २ ए बिना मन भीतर आही।
(२) १ आ पाव। २ ए जब। ३ ए तब। ४ ए जा।
(३) १ मा पित्रर। २ ए हिय तार मा त्रिप लाएँ। ३ ए बन मोन जा राई रा था जाह पराएँ।
(४) १ रा ए मा जो जी। २ रा ए मा ती ती। ३ ए बिउ मा होत रा मन मह हाइ।
(५) १ ए ज। २ ए मवाया।
(६) १ मा जानां मानिनि कं ७ जौना मानिनि रा जौना कं। २ मा बारी।
३ ए जने। ४ मा कुमार।
(७) १ ए पुहुप म मणि डारी। २ ए बीगडा।

अर्थ—(१) वे महारम नगर को पूछने को जा रहे थे बिना में [ताराचंद] यही बिना कर रहा था। (२) "यदि यह बूढ़ीको स्वयं पा जाये तो [ताराचंद] जा कर इनके स्नेह को बूढ़ी। (३) [कुमार] मधुमालती का पित्रङ्ग हृदय से लगाए हुए और बिल में बराए (के मुन) की बाय (उपेय) में जला आ रहा था। (४) जैसे जैसे वह महारम नगर का समाचार जाना था जैसे जैसे उसे हृदय

में उत्साह होता था। (५) सुहावने पट्टारत नगर की देखकर उसने भागी चलते हुए हृष्य को समुद्र से घीसल दिया।

(६) तत्पश्चात् बीजा माझि की बाटिका में राजकुमार उतरा (७) और उस माझि ने दाली भर पुष्प लिए हुए आकर [उत्ते] नमस्कार किया।

टिप्पणी—(४) उल्लाह < उल्लाह = उत्साह। (५) बारी < बाटिका। (७) पुष्प < पुष्प।

[३८१]

कुनि जीना कह^१ बूझ^२ राऊ । बिसमो^३ नगर कहहि^४ कहि^५ भाऊ ।
 हरपवत कोउ^६ कतहु न देखिय^७ । कारन कोन दुखी सभ पसिय^८ ।
 जोन कहा^९ सुनहु नरनाहा^{१०} । बिसमो^{११} नगर बात मोहि पाहा^{१२} ।
 बिक्रम राउ जिपति^{१३} एहि गाऊ । रानिहि रूपमजरी नाऊ ।
 बिक्रम^{१४} राज अनख अनु बर । सुखज^{१५} बस जहि कलि उठर ।

पुत्री एक अत क तहि कुल^{१६} आइ लोन्ह^{१७} अवतार ।

नाउ ताहि^{१८} मधुमालति निभुवन कर^{१९} उजियार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पुनि ए जे। २ ए पूछे भा पूछे। ३ ए भा बिसने।

४ ए कहौ। ५ भा केहि।

(२) १ भा केउ। २ ए कोउ काहु न देखी। ३ ए सभ पक्षी भा सभ पेखी।

(३) १ ए जोने। २ ए नर नाहा। ३ ए भा बिसी। ४ ए पाहा।

(४) १ ए राज नग। भा राम निशि। २ भा एहि।

(५) १ रा बिक्रम राउ। २ ए जे बरई। ३ भा सत रा सत ना।

४ ए मे यह खल नहीं है। ५ ए कुल छबरई।

(६) १ ए पुत्री एक अत है तेही रा पुत्री एक है तेहि के। २ ए कुल कीम्हा, भा आइ कियत।

(७) १ ए नाम ठासु। २ ए तीन भुवन।

अर्थ—(१) फिर जीना को (ते) राजा (साराधन) बुझने लगा “किस भाव (कारण) से नगर में विस्मय (विषाद) है? (२) यहाँ कोई भी हर्षित नहीं दिखाई पड़ रहा है; क्या कारण कि सब दुखी दिखाई पड़ते हैं?” (३) जीना ने कहा, “ये नरनाथ नगर के विस्मय (विषाद) की बाताँ मुझसे सुनिप। (४) वह यौव (नगर) बिक्रमराज राजा का है [और यहाँ की] रानी का नाम रूपमजरी है। (५) उनके बिक्रम का तेज ऐसा है मानो अगल चलता हो; वे सूर्य बंध के हैं जिन्हने कलि (इस युग) का उद्धार किया है।

(६) उनके कुल में अंत में एक पुत्री ने आकर जग्य लिया, (७) उसका नाम मधुमालती है और वह निभुवन का प्रकाश है।

टिप्पणी—(२) देख < देख = प्र + ईक्ष् > देखना। (३) पाह < पाव = स्वायी। नाउ < नाता < नाती। (५) बर < बर = बरना।

[३८०]

निहि^१ पणि बि^२ अम^३ मा आई । ओहि क हाव रही^४ मोरई ।
 राहि व माय मरनि आहि^५ सोई । पछि रूप क बूझ बिछोई ।
 सहि नि नि पुन^६ राजा ओ रानी । यिसमो तजा बुझ^७ अन पानी ।
 नन निमि^८ तस रोइ बहाए^९ । जगत हरि हार महि पाए^{१०} ।
 राजपरहि^{११} ओ विममो^{१२} होई । हग्नवत सहि मगर न^{१३} कोई ।

गम घट कर^१ जोउ^२ जो^३ आह^४ मधुमालनि एहि^५ गाउ ।
 मो जिउ गाउ^६ शरीर तजि सहि^७ गुन मगर बिराउ^८ ॥

- वाक्यान्वय—(१) १ भा में क बीर है। २ ए म यह गण्ड नहीं है। ३ ए एत। ४ ए बाहि के हाव आई।
 (२) १ ए बाहि माय मरनी बोहि। २ ए से।
 (३) १ ए रा तेहि दिन मा ए रा दिन से। २ ए विम मी तजत बुझ ए विम
 बहुत तजा भा बिरमै बुझ तजा।
 (४) १ ए ओ रो बिहाई भा दुर रोइ गैबाए। २ ए जग मी हरि डेरि
 मा आई।
 (५) १ ए राजा नय बिरमै अ भा राजपुत्र ओ विमै। २ ए भा म यह
 गण्ड नहीं है। ३ ए महि।
 (६) १ ए मम कर घट भा मम घट कर। २ ए भा म यह गण्ड नहीं
 है। ३ ए मा। ४ ए ओ आहै भा बिउ आहै। ५ भा एहि।
 (७) १ ए मी। २ ए येह। ३ ए बिराउ।

अर्थ—“(१) रिनु विवाहा का करिब आकर कुछ देखा हुआ कि वह हाव करके (रक्त)
 पाता हो रही। (२) [तब] उसकी जाना मे उसकी [जानबीय] शक्ति को (तमाप्त कर)
 हा और अभी-जब में कर उसे बुझ ब से विमुक्त कर दिया। (३) उसी दिन से राजा और रानी दोनों
 मे बिरमय (विवाह) में अम-रानी छोड़ दिया। (४) मैत्रों की दृष्टि उन्होंने रो-रो कर बहा रो
 और ब उते संसार मर में बुझ कर हार गए, किन्तु उसे न पा सके। (५) और क्योंकि राजपूत में
 बिरमय (विवाह) है इतीति मगर में कोई जी हर्षवत् नहीं रहा।

(६) इस महि (नगर) में लमन घटों (शरीरों) का जीव मधुमालनी ओ है (७) वह
 ओर [इन] शरीर (नगर) को छोड़कर जाता गया, इनी कारण इन नगर में बिराम (बोवाहि
 से विराम) है।

श्लोक—(१) बीग^१ < बागुना = पापजन। (५) जी < उभा < यन = वाग्म वि।
 (७) दिगउ < बिराम = बिरति उरग्न निवृत्ति।

[३८३]

जोना कठ^१ मुनदु मरपाया^२ । जहि नि हने^३ गई कठ^४ बाया ।

बान्हू^१ नगर विसूरा पर। सुल जनक घट घट कर हरा^२।
मठा^३ पिता कर पुत्र विससा^४। जस मिन जीउ^५ कया कर लया^६।
मे तहि दिन हुत^७ फूल न गांधी। फूल गांधी बापों केहि मांवे^८।
केहि लगि मांवेहु फूल क मारी^९। बिधि हरि सोन्हि सो^{१०} पहिरनिहारी^{११}।
जोन बचन मुनि कामिनि^{१२} कुवरहि^{१३} बहेउ^{१४} हकारि।
जो मुन्ह^{१५} जग्या^{१६} पावौ एहि सेउ करौ^{१७} बिन्हारि॥

पाठान्तर—(१) १ ए भा जीने बही। २ ए मुनह बेह हाका। ३ भा हुत ए ते।
४ ए यह बोह भा यह छलि सो।

(२) १ ए तब से। २ ए ते रहा भा परिहरा।

(३) १ रा ए माठा। २ ए ज जो बिससा भा के के हुल मेला। ३ रा
जस ते मए। ४ ए कया है सेरा।

(४) १ ए ता दिन से मैं रा मैं तेहि दिन सो। २ ए मांवी के मांवे भा
मली केहि मांवे।

(५) १ ए जेहि निति गवै पुत्र कर माका भा केहि कनि गांधी पुत्र क मारी।
२ ए बिधि हरि सोन्हा भा बिधि हरि लई सो। ३ ए पहिरनहारी।

(६) १ ए जोना बचन सब मुनि भा जोना बचन सब कामिनि मुनि।
२ ए कुवरी। ३ ए कीन्ह।

(७) १ ए मुह, रा मुह। २ रा ए जग्या। ३ ए तो सौं करौ मारा
एहि सो करौ।

(१) जोना कहने लगी "हे नरपाक पुनो; जिस दिन से यह बाला (मधुमालती) यई है
(२) मालो मगर में खेद पड़ गया है, और प्रत्येक घट (जोषबारी) का पुत्र और अलंकार हर उठा
है। (३) माता-पिता का दुःख [स्वभाव] विज्ञाप है जैसे बिना जीव के शरीर का हाल
होता है। (४) मैंने उस दिन से बूल नहीं ली [वयोकि] बूल पूँपकर कितने मस्तक पर उगड़े
बांध? (५) कितने लिय मैं बूल की मालिका लीबार करके, [जब] बिबाहा ने उस पहिरने वाली
को हर लिया?"

(६) जोना के बचन सुनकर कामिनी (मधुमालती) ने कुमार (ताराचंद) को बलाकर
कहा (७) यदि तुमसे माता पाई तो इतना परिचय करे।

टिप्पणी—(२) विमूरा < विमूरा [रे] = खेद पीडा। (४) मांघ < गड < ग्रन्ध = पूँपना
(५) मारी < मालिका।

[३८४]

कुंवर कहा कीन्हति^१ हहि एही^२। कहेसि मोरि यह बार^३ सनेही^४।
मालिनि कंबर निकट तय^५ आई। मधुमालति सेउ^६ मेंट करई^७।

तय जीनां^१ पिजरा कठ साबा^२ । रोइ रोइ^३ नमन मलिन बहावा ।^४
 मधुमान्ति फूनि^५ गहमरि रोई । रूप मलिन^६ जी^७ कुटुब बिछाई ।
 सोमन दुनो^८ गीर न^९ बहै । रोइ रोइ दुल पाछि^{१०} सन^{११} बह^{१२} ।
 फनि ग^{१३} राजकुंवर दुखी बरज^{१४} अव रावहु कहि जान^{१५} ।
 तुम्ह दुग रनि वितीति^{१६} म परगामउ मुग मान^{१७} ॥

- शब्दान्तर—(१) १ ए चीन्हा (< चीन्हा छि प्रारंभी लिपि) । २ ए ही लक्ष्मी भा है एही ।
 ३ ए बहेछि मारि है बाज ।
 (२) १ ए चमि । २ रा भा ए नी ।
 (३) १ भा जीनी । २ ए भा पिजरा कठ साई । ३ ए राजन नैन मलिन
 छटाई भा रोबत नैन कुटुब मलिन बहाई ग रा नैनन मलिन बहावा ('रोइ'
 के अन्तर बारन में जी मागरी में रहा होवा बन्धि पुनरावृत्ति सूचित करने
 के लिए २ वा अंक बना रहा होवा जो पीछे छू गया होवा) ।
 (४) १ ए में यह सण नहीं है । २ ए हीन । ३ ए जी ।
 (५) १ ए दुनी । २ ए ली । ३ ए भा बहै । ४ ए में यह सण नहीं है
 भा लख । ५ भा ए बहै ।
 (६) १ रा ए फुनि नै । २ ए से प्रजा । ३ ए रोई बहि ध्यान भा आईति
 का जानि ।
 (७) १ ए मुग दुग दुग ध्यापि जी भा तुम्ह दुग निमा विनीत भै । २ ए
 परगामा मुग मान ।

सर्व—(१) कुमार ने कहा (प्रश्न) "क्या इसे (जीनी को) बहुमानती है?" तो
 [कुमारी ने] कहा "जह [ता] बेरी बाल-स्येही है।" (२) मलिन लव (यह धूमकर)
 कुमार व निरुद्ध भा गई और [कुमार ने] उसे मधुमालती से मिला दिया । (३) जीनी (मलिन)
 व पिजरा को गले से लगा लिया और रो-नोकर नेत्रों से उसने जल गिराया (आँसू गिराए) । (४)
 सत्यनर मधुमालती [मलिन के] आर्त से भर (प्रति हो) कर रोई उनका रूप मलिन वा ।
 गीर वह दुट्ट से चिपुका की । (५) उसने दोनों नैन जल (आँसुओं) की नदी बहा रहे थे और
 वे रा रा कर उनका पिछला सपत्त दुग बह रहे थे ।

(६) फिर (तत्पश्चात्) राजकुमार ने जाकर जीनी को (रोने से) बचा दिया [और कहा]
 जह दिय जान ते (कहा सत्यनर) रो रही हो ? (७) [कुमारी] दुग की रजनी ध्यापि जी
 नी और [कुमारी] मुग-मुग प्रकाशित हो गया ।"

टिप्पणी—(१) बार < बाज । (२) रा [दे०] = जानन हर्ष । (३) १ < नर = न ।
 (४) जान ~ जान । (५) रनि ~ रयनी ~ रयनी ।

बाग सँवर फनि^१ जोरहि गई^२ । गउर बाह जनावहि^३ जाई ।
 पद ग मज गिरहि^४ मुग बाह । भीमम^५ बटुव जोग जन^६ भाग ।

जो मालिनि यह अग्या^१ पाई । रहमत राज बार अहि^२ आई ।
 रानी राउ^३ बस हुत जहाँ^४ । जोमें चाह कही ग^५ तहाँ ।
 विक्रम राउ^६ रूपमजरी । रहसे सुनत चाह सुत मरी^७ ।
 अर^८ उव मुख सुह^९ कर गहा जो हुत दुस^{१०} राह ।
 पुनिव भ^{११} परगास तस^{१२} सुनि^{१३} मधुमालिनि चाह ॥

वाक्यान्तर—(१) १ रा तब ए ली। २ रा आई। ३ ए कमावहु।

(२) १ ए नै पाठ पिता रा नै मोठ पिता का नै मठा पिता। २ ए जो। ३ ए जत।

(३) १ रा अग्या। २ ए बार राजा के।

(४) १ ए राज। २ ए हुत (<हुत फारसी लिपि) जहाँ रा नह रहा।
 ३ ए जोना चाह कही यी।

(५) १ ए मे यहाँ बैठे और है या मे यहाँ बीं और है। २ ए परी।

(६) १ ए अर। २ ए सुह। ३ रा केत ए होठेव। ४ ए राह।

(७) १ ए या पुनिव भै रा पुनिव होइ। २ ए में नह छम्ब नहीं है।
 ३ ए मुन। ४ ए चाह।

अर्थ—(१) राज कुमार ने जोनी को बुलाकर कहा, “राजस (राजमहल) में जाकर तु
 सभाचार सुचित कर आ। अन्तर [मधुमाखरी के] माता-पिता से [यह] बुझ-समाचार कह आ,
 और जिसने भी पहले कुटुंबी तथा स्वजन हैं, उन सब से [कह आ]।” (२) अब मालिनि ने यह
 आज्ञा पाई, बहुत हर्षित होती हुई राज-द्वार पर खड़ी आई (४) और जहाँ पर रानी और राजा
 बैठे हुए थे वहाँ जाकर जोनी ने समाचार बताया। (५) विक्रमराज तथा रूपमजरी यह सुन-अरा
 समाचार सुनते ही हर्षित हो उठे।

(६) रानी के मुख-अंश को उदय-काल में ही जो बुझ-बुझ से बस लिया था (७) मधुमाखरी
 का समाचार सुनकर (उन्हीं मुखों का) प्रकाश पुष्पिता के (अंश) के समान हो गया।

टिप्पणी—(१) राज < राजप् = बाह्यांग करना बुलाना। राउर < राउठ < राजकुल =
 राजमहल। (२) जेत < जेसिज < भावप् = चितना। (३) बार < डार। (४) पुनिव <
 पुष्पिता।

[३८६]

मुनि^१ रानी मालिनि पग^२ परी । कहसि इहाँ^३ बिधि होइहि^४ बरी ।
 कव होइहि^५ सो दबस बिधाता । कहि दसिहि^६ बुढ़िवा मुन मांता ।
 पूछसि^७ मन दसि तै आई^८ । न र चाह सुनी तसि भाई^९ ।
 मासिनि कहा चाह कसि^{१०} रानी । नन जो बखिउ कहाँ दखानी ।
 पँछि रूप तन मोसु न मांसा । बचन श्रीन्ह मोहि राखिन्ह^{११} पासा ।
 जानन नाउ कहैसि मोहि^{१२} तब सागिउ^{१३} कंठ^{१४} भाइ ।
 हित जन कहं रहु का कहिय^{१५} । सतुह^{१६} दसि छोहाइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए पुनि। २ ए पाँव भा पाँ। २ ए उहो। ३ ए हो-हे।
 (२) १ ए कब होइहै मा कहिहि हाइहि। २ ए जहि रंगव मा कहि
 देखै।
 (३) १ ए पुछनि। २ ए हरो भा यरही। ३ ए मा बाह गुनि मायेस
 बहरी।
 (४) १ ए पुनि। २ ए मैन जा बछड़ै।
 (५) १ ए भीरु भीरु ही रायगह।
 (६) १ ए आपन भाउ बहेउं जब मा भाउ बहगह ती भीगिहउ। २ ए बाबा।
 ३ मा गियं।
 (७) १ ए हिन जन बहं दहु वा कहो रा हिन जन बहिय बहा कहि मा हिन
 जन बहं दहं तपठ वा बहिए। २ ए गनुगी।

अर्थ—(१) [यह समाचार] सुनकर राणी मालिन के घरों पर फिर पड़ी, और उसने कहा "हि
 विधाता क्या ऐसी भी पड़ी होगी [कि मधुमाक्षती हमें मिल जायगी]? (२) हे विधाता वह दिन
 कब होगा जिस दिन दुहिता का मुख माता देखती? (३) [मालिन से] उसने पूछा "क्या तुम उसे
 नेत्रों से देख कर आई है या समाचार मात्र" सुनकर बंसी ही बौड़ पड़ी है?" (४) मालिन ने
 कहा, "समाचार कौता? मैंने तो नेत्रों से का देखा है वह वर्णन करने जाता रही हूँ। (५) वह
 पत्नी-जन में है शरीर में मात्रा भर जी मांस (शय) नहीं है बच्चों से जब उठोने को पहचाना
 तो [अपने] पास बुलाया।

(६) (जब) उसने अपना नाम कहा तब मैं बौड़कर उसके गले लग गई (७) हिन जनो
 को क्या कहिए, छात्र भी (उसकी दशा) देखकर छाह (हृषापूर्व स्नेह) बरेगा।

टिप्पणी—(४) बगान < बकगण < व्याख्यातृ = बहना। (५) रात्र < रात्र्य = बुलाना,
 आवाहन करना। पाग < पार्यं।

[३८७]

राजां बरि मधुमाक्षति रानी । ओ मय^१ तुंर^२ एक मग्गयाना ।
 भागिवन अनि बर^३ निरमग । गामवग जगि पुमिव^४ बला
 ओ मय^१ जन^५ गग्गिन जहु^६ अदा । भग्ग दग्ग अनि वग्गो^७ बहा ।
 गमिग्ग दग्ग भाउ मोर बाय^८ । राजु माहि^९ पग्गहि^{१०} तुम्ह पाम ।
 पग्गि^{११} जननि मउ^{१२} तुम्ह^{१३} बउ^{१४} जा^{१५} । उअनि यि^{१६} जग मउहि^{१७} मग्गहि^{१८} ।
 अग्गो^{१९} नी^{२०} तो आउ^{२१} उठि बल छाहि^{२२} बिगार ।
 दग्ग आद गनि ता^{२३} ना^{२४} जा यिनु अपगय ॥

पाठान्तर—रा मे उगुवा दुमरी और सींगरी अर्जुनियं पग्गय गगानातिन है।

- (१) १ ए भा गग।
 (२) १ ए मूग्ग ब जा मूग्ग।
 (३) १ भा मग। २ ए जग। ३ ए म यद्द मग्ग नहीं है। ४ ए बादा।
 ५ भा गग्गि।

- (४) १ ए भी मोर बावू। २ ए. मायुष भा बबहि। ३ ए मोह पठौ दुब पायू।
 (५) १ ए कहेसि जननी से रा कहेसि आज सो। २ ए में यह प्रम्भ नहीं है, भा नै। ३ ए पुनि भा फुनि। ४ ए भा धीम।
 (६) १ रा ए जग्या। २ ए दीन्ह ती आवय भा दीन्ह ती आवय।
 २ ए उठि बल्लु ठबल्लु।
 (७) १ ए ताहि की भा ताकी बारी। २ ए हतेहु भा हिए।

अर्थ—“(१) हे रानी, [बहो] राजकुमारी मधुमासवी है और उसके साथ [उसके] गुर (स्वर) का जानी एक कुमार है। (२) यह [कुमार] अत्यंत भाव्यवान है और निर्मल कुल सोमवंश का है जिस प्रकार पुत्रिमा की कला ही। (३) और [इस कुमार के] साथ उसके स्वजन तथा भृत्यादि बहुत-से हैं और अत्यधिक अर्चन-प्रभ है जिसका मैं क्या वर्णन करूं? (४) नरे निवास पर उन्हें इतना विन हुआ है, और आज उन्होंने मुझे सुन्दार वस्त्र भेजा है। (५) उन्होंने कहा है ‘तू जाननी से आकर कह, आज मैं इस जगत् में [जपनी] कुता को नहीं लाती है।’
 (६) उन्होंने आज्ञा दी तो मैं बल्लर आई तू [अब] जिससे छोड़कर उठ कर चल, (७) और आकर उसकी गति देख को निरपराध थी।

टिप्पणी—(१) गुर < स्वर। (५) बाहनि < बाहिनी।

[३८८]

सुनत बात रानी उठि आई। पाम बली। मालिनि घर आई।
 ओ पाछ भा^१ बिक्रम राऊ। पाछ उठि नाग दुब^२ पाऊ।
 राजहि^३ बलि कर बगुसरा^४। आवर कीन्ह आगे^५ पगु बरा।
 पाछे बप मजरी^६ आई। जह बिम से^७ काया बगराई।
 प्रान गण अस देखिय काया^८। छाय रह तसिय पुनि पाया^९।
 रोबत ओहि^{१०} क नगर सम^{११} रोषा देखि उठा बित^{१२} छाह।
 कवरत नैन नीर भरि^{१३} आए बपमजरी^{१४} मोह^{१५}॥

पाठान्तर—(१) १ ए पाँच बलि।

(२) १ ए पाछे पुनि भा पाछे नै। २ ए राये उठा कपेट दुब, भा बाएउ उठि गान दुनी।

(३) १ ए भा राजा। २ ए मनुसारा। ३ ए आवर ती आगे।

(४) १ ए पाछे की बपमजरी बलि। २ ए बिम्ब बिछै।

(५) १ ए बप जो बेसी कबा भा गये बग बेसी बया। २ ए छाया रही बीच उठि गया भा छाया रही सैने बिनु पया।

(६) १ मोहि। २ भा बें। ३ ए में यह प्रम्भ नहीं है। ४ ए भा सब।

५ ए उ^१ ओ भा उठे बित ए उठा पत (< पित)।

(७) १ ए कुमार नैन गहवरि। २ ए में बहो के नीर है।

अर्थ—(१) [यह] बात सुनते ही राजा उठकर दौड़ पड़ी और पैरों से [ही] बगल पर मारित के घर आ गई (२) और उसके पीछे विचित्र राज [भी] हो लिए दोनों मने पाशों से बाँधे [आए]। (३) राजा को देखकर कुमार अछतर हुआ आकर किए जाने पर राजा ने पैर जामे बढ़ाए। (४) उसके पीछे रूपमञ्जरी आई जिसने [माने] जीव से [अबनी] बापा को अलग कर रक्खा था। (५) जिस प्रकार प्राणों के निकल जाने पर बापा शोकमग्न है और [पूरे के शरीर की] छाया (मात्र) रह जाती है वैसे ही छिड़, [लोगों ने] उसे भी पाया।

(६) उस (रूपमञ्जरी) के रोते ही सारा नगर रो पड़ा [लोगों के] चित्त में [इत प्रकार] मोह (हृत्पात्र से) स्नेह) उठ (उमड़) पड़ा (७) और रूपमञ्जरी के [इत] मोह से कुमार के भी नेत्रों में आँसु भर आए।

टिप्पणी—(३) नाथ < नम < नम = मंगा। (४) बगल < डि + ड = मध्य बगल।

[३८९]

बहा बंवर अनि राबहि^१ माना । गवन^२ करहि बिछ^३ बहौ जा बाना ।
पछि एक पत्र मँ पाए^४ । बोलन सबद बिचित्र माहा^५ ।
रही आंगि^६ निन छीन न बोयो । बहुरि बहमि मोहि^७ दुख मम^८ मोयो ।
बहमि^९ माहि मधुमानति नाऊ । बिकरम पिना महारम ठाऊ^{१०} ।
मानहि नाउ^{११} रूपमञ्जरी । बनि हिय अनि^{१२} निरन गरी ।

और मम^१ दुख आपन कहमि जो माहि मठ^२ रो^३ ।

मुनत बान दुग^४ मोहि क गड^५ मुधि बुधि^६ मम गो^७ ॥

पाठांतर—(१) १ ए भा राबहु। २ ए भा गवन मुनहु या गवन करहि। ३ ए मे यह छन्द नहीं है।

(२) १ ए म पत्रम पाई। २ ए बिच बिचित्र मुहा^५।

(३) १ ए आंगि। २ भा आंगि बाणी। ३ ए मे यह छन्द नहीं है
४ ए मम मुन भा दुख मम।

(४) १ ए बहै। २ ए बिकरम गय पिना मम गऊ।

(५) १ ए मानहिनाम। २ ए हिन्^५। ३ ए मे यह छन्द नहीं है। ४ ए पर।

(६) १ ए मम। २ ए बहै दुख मम रा बहमि मा मानो।

(७) १ ए मम रा म यह छन्द नहीं है। ए मम। ३ ए मे यह छन्द नहीं है।

अर्थ—(१) कुमार ने कहा, “हे बाबा, तू रो मम मैं जो कुछ बाली करता हूँ उसकी परवाह कर। (२) मैं एक बली बड़ बापा को विचित्र और मुहावरे छन्द बोल रही थी। (३) वह बच रही और तीन दिनों तक नहीं बोली और तब उसने [अपना] सब दुख नीम कर रखा। (४) उसने कहा, “मधुमानती मेरा नाम है [मेरे] निरा विषय है और बचान [मेरा] बगल है (५) [मेरी] बापा का नाम रूपमञ्जरी है जो अनि बहिन हृदय बापी तथा अन्धविश्व निरह है।

(६) और अपना समस्त दुःख जो उसने मुझसे रोकर कहा (७) तो उसकी दुःख की बातें सुनकर मेरी मुक्ति-मुक्ति हो गई।

टिप्पणी—(१) सबन < भवन् = काम। (७) बात < वता < वार्ता।

[१९०]

सुनि ओहि दुख उपजी चित^१ दायी^२। छाड़िउ^३ रोग कटुब^४ सम^५ माया^६।
कहिउ न अब^७ चित चिता करहु। करउं साइ जाहीं^८ उटारहु।
छाड़ेउ^९ राज पाट सुख^{१०} नाक। खोटएउं दया^{११} लागि बीसाउ।
खाटएउं धरम पथ चहि सोई^{१२}। सुम्ह^{१३} उटार जाहि सर^{१४} हाई^{१५}।
वचन^{१६} बाधि पिअर सिर भर^{१७}। निसरिउ^{१८} राजपाट परिहर^{१९}।

कुनि^{२०} रानी के भागे पिअर^{२१} परेउं^{२२} कुमार।

दसि डकार^{२३} छाडि^{२४} कै^{२५} रोई कोवि^{२६} जगिनि^{२७} कै मार^{२८} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बोही। २ ए मे यह सब नहीं है। ३ भा गया। ४ ए छाड़ा।
५ भा बरम जाधि। ६ ए भा सब। ७ भा दया।

(२) १ ए कहा न कहू भा कहिउं न मन। २ ए जाहीं रा बाही।

(३) १ ए छाड़ा रा खोटएउं। २ ए सब। ३ ए उटवा दैय।

(४) १ ए उटवा। २ ए भा सुख। ३ ए ते रा रो, भा मुक्ति।

(५) १ ए भा बाधा। २ ए बरा। ३ ए निसरि। ४ ए परिहरा।

(६) १ रा ए पुनि। २ ए भागे। ३ भा पिअर। ४ ए बरा।

(७) १ ए उफोदि, रा मैं यह सब नहीं है। २ भा जाधि ए मे यह सब नहीं है। ३ ए बो। ४ ए जनि या जागि। ५ रा मे यह सब नहीं है।
६ ए मार, रा बिचार।

अर्थ—“(१) उसका दुःख सुनकर चित में दया उत्पन्न हुई और मैंने नील (स्वयम्) दुःख तथा सब की मत्मा छोड़ दी। (२) मैंने कहा, ‘अब चित में चिता न करो मैं बहुत दुःखी हूँ जिससे मुझरा उटार ही जाये। (३) मैंने राज, सिंहासन तथा सुख-बाध छोड़ा और दया के सिद्ध व्यवहार (पुरुषार्थ) किया। (४) अर्थ-यव पर चढ़कर मैंने वह किया (करने का निश्चय कर लिया) है जिससे मुझरा उटार हो। (५) [इस प्रकार] जन्म-मरण छोड़कर मैंने सिर पर [उत्तम] पिअरा रक्खा और राज तथा सिंहासन छोड़ कर निकल पड़ा।”

(६) तत्पश्चात् रानी के भले कुमार ने पिअरा रख दिया। (७) [जब पिअरे को] देखकर रानी अपनी कुति (मत्ता) की जगि (मत्ता) की जगता से डकार (मुकार) छोड़कर रो पड़ी।

टिप्पणी—(१) बीसाउ < व्यवस्थाप = पुरुषार्थ। (२) {४} खोट < माट्ट < भा + मूठ = करना। (३) {५} पाट < पट्ट = सिंहासन। (७) कोवि < कुवि = उबर, पेट पचाव।

[३९१]

फुनि* पित्ररा लाणमि^१ उर धाई । दमि^२ दुहिना^३ गति रही न रावाई ।
 विन विन नरि* निरग्यगति^४ बारा । नन नीर नहि रहहि^५ पनारी ।
 मनिन कहा^६ तनु रानि उपासा । बरु हार्य मन पूजो आमा ।
 अही^७ जा दुख से^८ दही निरामी । मूर उर अनु^९ कबल विगामा ।
 दुग करार तनु नरनि ज^{१०} भागा । मुक्य मजूर^{११} मिथर बहि^{१२} गात्रा ।

घर घर नगर बघाव^१ आनद सुभ^२ परिवार ।

मधुमांशुति कर बहुनि अनु^३ भा दोसर^४ औनार ॥

पाठाभ्या—(१) १ रा पुनि पित्ररा लाणमि भा फनि पित्रर लाणमि ए ली पित्ररा लावा ।
 २ ए ली । ३ ए दुहिनि । ४ ए ये मह गार नहीं है ।

(२) १ भा सिन सिन निरनि निरनि ए गन तन नरे निरनि । २ ए ना रही
 भा नहि रहहि ।

(३) १ ए लगी कहा भा मगी रहहि ।

(४) १ ए ली । २ ए भा की । ३ ए भा ।

(५) १ ए दुग करार तरनि जतनु ए दुग जो अनि तनु तनि । २ भा मजूर ।
 ३ ए तनि ।

(६) १ ए बघावा । २ ए आनदिन भा आनदिन मभ ।

(७) १ ए पुनि मधुमांशुटी ली है भा मधुमांशुति कर बहुने अनु । २ ए भा
 येर भा भा बामरे ।

अब—(१) तबनेर [बपमजुरी मे] पित्ररे को हृदय से लपटा लिया और दुहिना की गति
 (बया) देखकर [उत्तरा] बरन बर न गारा । (२) वह लक्ष प्रति लक्ष जाँच गड़ा कर (ध्यान
 मुद्रक) देखनी हुई दुहिता की गति (बया) का निरीक्षण करती रही और उससे मैत्री के जन
 (आभुओं) की परावर्ति बर नहीं रही थी । (३) लक्षियों ने कहा, “रानी उदास भाव को छोड़ो
 एवं करो क्योंकि मन की आशा पूर्ण हुई है ।” (४) [कथन] वह जो दुःख से दग्ध और निराश
 थी, [इन प्रकार हसित हुई] जानो मूर्ख के उदय से समझनी बिबलित हुई हो । (५) उसने शरीर
 में दुःख [र धीप्प] का जो करार मूय था वह उसे छोड़ कर भाग गया और मुन [की बरी]
 का [मुबक] मजूर [उत्तरे शरीर कपी मुक्त के] शिपरेतें बर बड़ बर गर्जन बर उठा ।

(६) नगर में घर-घर बघावे होने लगे और समस्त परिवारों में आनंद हुआ (७) जानी
 मधुमांशुटी का पुन हुल्ला अथवा (अथ) हुआ हो ।

टिप्पणी—(२) मेर < पित्रार [दि] = जाँच बडाबर देखना । पनारी < प्रपारी । (३)
 पूर < पूरक < पूर्य = पूरा होना । (४) मजूर = मजूर = मार । (५) बघाव < बघाव <
 बघानि = बमुदय अथवा होने-जुबन बाव ।

घर घर पुर अस पाह^१ जनाई । गह^२ जो^३ हृति मधुमालति पाई ।
 हरसवत सम^४ मगर उछाहा । पर आपन^५ जहवाँ लहि^६ आहा ।
 नगर जो रहा सम दुख बीरा^७ । जस बसत नो रिखु बन मोर^८ ।
 रानी कंवर पाय^९ मिर लाव^{१०} । चरन रनु छे^{११} सीस बड़ाव^{१२} ।
 कहू कंवर^{१३} पुस्पाख तोर । निसरत प्रान^{१४} रहा घट मोरे ।
 बहुरि कंवर कह^{१५} रानी सहित सम समुदाइ ।
 सजि मालिनि क बारी^{१६} अपन छिह^{१७} ल आइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए पुर पुर बाव । २ ए यई । ३ ए ये यह छय नही है ।

(२) १ ए सब । २ रा अपना । ३ ए जहाँ कपु ।

(३) १ ए सब दुख बीरा । २ ए जस बसत निहावन मीला ।

(४) १ ए पाव । २ भा कावा । ३ ए बी । ४ भा बड़ावा ।

(५) १ ए पूछ । २ ए बीउ ।

(६) १ ए के । २ ए सब ।

(७) १ ए की या कै । २ ए भा बारी । ३ ए रावा मर या राव निधि ।

अर्थ—(१) पुर में घर-घर ऐसी सुचना लागू [॥] (मिली) कि जो मधुमालती गई हुई की वह प्राप्त हो गई । (२) समस्त नगर में जहाँ तक पराए और अपने (आत्मीय) के के हृति के और उनमें उत्साह [हो रहा] था । (३) समस्त नगर, जो [छिटी समय] कुछ से पलास का [ऐसा मुकी हुआ] जैसे बसंत में लवणपु के जायज से बन मुकुलति हो उठता है । (४) रानी कुमार के पैरों से [अपने] सिर को लपानी की और उसके चरणों की रेनु लेकर फिर बहुरी की । (५) वह कहती की 'हे कुमार तेरे पुकार से [मेरे] निकलते हुए प्राण मेरे शरीर में रह गए ।'

(६) सर्वप्रकार रानी कुमार की [उसके] समस्त समुदाय के साथ (७) मालिनी का घर छोड़कर अपने घर आई ।

टिप्पणी—(२) उछाह < छछाह = उत्सव । (३) बावर < बावल < बाहुल = पाव ।
 मोर < मउल < मुकुल्य = मुकुलित होना । (७) बारी < बादिका ।

हरसवत सम^१ मृदुल परिवारा । जानहु आज औतनी वारा ।
 बसि बदन सम^२ मविल^३ लिपावा । रास पटोर समे सह लावा^४ ।
 मानि अनूप बसावम^५ बासे । सुरग सुहाम सुवासित^६ बासे ।
 कंवर पाट बसारेउ^७ आनी । धारे बबर ठाढ़ सिर रानी^८ ।
 पुनि^९ मधुमालति राजदुलारा^{१०} । रानी आनि आने^{११} बसारी ।

रूपमंजरी^१ पङ्क्ति क^२ छिरका^३ मधुमास्ति मुम नीर ।
पहिल^४ रूप^५ मई बर नामिनि^६ परिहरि पवि^७ सरीर ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सबै ।

(२) १ मा सब ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा मरिह। ३ ए जे मी
छपावा मा ताहि पर लावा।

(३) १ ए इमावन। २ ए माहाव मुवानिह रा मुवान मोहावनि।

(४) १ ए बीमावा। २ ए अवन समई देनि जो रागी (मुस० अगमे छद की
अनुचं अर्थात्) मा जाने बबर नीम पर रागी।

(५) १ रा ए पुनि। २ ए राजमुमारी। ३ मापू मा भाप।

(६) १ मा यहाँ 'कनि' और है। २ ए मा मे 'ई' नहीं है। ३ मा
छिरकेव।

(७) १ ए पहिल। २ रा मे यह शब्द नहीं है। ३ ए मी मधुमास्ती ।
४ रा पछि।

अर्थ—(१) सभी कुछ व और परिवार [इस प्रकार] हृषित या जानी आज ही बालिका
(मधुमास्ती) अवतरित हुई हो। (२) अवन पित वर समस्त राजमवन लिपावा गया, और तमल
रक्त (रंजीत) रंगीनी बरत बहू (राजमवन में) लगाए गए। (३) लाकर अनुपम बिछावन
बिछाए गए जो रंजीत सुंदर तथा मुवालों से (बसाए हुए) वासित थे। (४) कुमार को बाद
(लिहावन) पर लाकर बिछावा गया और [उतली बलने के लिए] बाबर लिए रागी उस पर तिर
[के बीछे] लड़ी हुई। (५) तदनंतर राजमुमारी मधुमास्ती को लाकर रागी में [उतके] सामन
बिछावा।

(६) रूपमंजरी (रागी) ने [मंत्र] पढ़कर मधुमास्ती के मूल वर को जल छिड़का, (७)
तो बली का शरीर त्याग कर वह श्रेष्ठ नामिनी पहिले के रूप में ही (आ) गई।

टिप्पणी—(१) बाबा < बाबा। (२) वर < वटोल < वटु + वन = रंजीत वन। (३)
पा < पटु = लिहावन। बबर < बाबर।

[३९४]

जब उत्परी^१ पणि मउ^२ बाग । स इयम मव^३ वन मिहाग ।
पहिल रूप आपन जब^४ पावा^५ । हाप जार विधि कह^६ मिनावा^७ ।
पणि स गगिन्नु मुग्नि अम्याग^८ । बमन^९ अनूप आनि पहिराग^{१०} ।
ठी^{११} मनन पहिरावा आनी । अग म ममाद^{१२} दगि व^{१३} रानी ।
परी परी भारनि^{१४} मिग बाग^{१५} । ओ गिन गिन गटि अरम माग^{१६} ।

पनि^{१७} राजा ओ^{१८} रानी दुहु मिलि^{१९} पाग^{२०} विपार ।

ताग^{२१} कुवर^{२२} व^{२३} भाकिपउ^{२४} राजमपाग^{२५} ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए उबरे (<उबरी फारसी लिपि)। २ ए पंखी सों रा पंछि सों
भा पंछि सों। १ ए सै।
- (२) १ ए जी। २ मा पाएउ। ३ ए इरि के मा इरि कइ। ४ मा
माएउ।
- (३) १ ए सब सै सकिगह तुरत नहुनाई रा पुनि सै सकिगह तुरित नहुनाए।
२ ए बसतर। ३ ए पहिराई।
- (४) १ ए सब रा म यह धन्य नहीं है। २ मा मा पहिराएउ। २ रा
ममाह। ३ ए जो मा तेहि।
- (५) १ ए रा सरी। २ ए पानी। ३ ए सारी। ४ ए सवा रा मे यह धन्य
नहीं है (समस्त बारहों में प्रथम दिन के बाद २ का अंक बना हुआ था जो प्रतिनिधि
करने में छूट गया)। ५ ए सारी।
- (६) १ ए रा पुनि। २ ए बा। ३ ए कुहु मत भा कुहु मिनि मत मत।
- (७) १ रा कुमरहि। २ रा दीबिब ए दीबिब मा बनएउ (<बाकिबत)।
३ मा राजकुमारि बरगारि।

अर्थ—(१) जब उस बाला ने पत्नी [सारी] से उद्धार पाया सब वर्षों के बाद [उसने
अपना] मुक्त देखा। (२) जब उसने अपना प्रथम कप धाव कर लिया हाथ जोड़कर उसने विपत्ता
को छिर झुकाया। (३) फिर (तबन्तर) सकिगहों ने उसे से बाहर तुरत स्नान कराया और अनुपम
रत्न लालर [उसे] पहिनाए। (४) तबन्तर उन्होंने आभरण काकर [उसे] पहिनाए; [अब]
उसे देखकर रानी [हर्ष के] सारी में समा नहीं रही थी। (५) वह बड़ी-बड़ी (बोड़ी-बोड़ी देर
पर) उसके छिर पर आती उताली थी और सब-सब उसको पकड़कर आत्मिय करती थी।

(६) फिर (तबन्तर) राधा और रानी-बोनों-ने मिसकर विचार किया (७) "ताराब
कुमार को राजकुमारी अर्पित कीजिए।

टिप्पणी—(१) पंछि < पक्षि। बारा < बाका। निहार < निहाउ < निमास < नि+
मास्य = देखना निरीक्षण करना। (२) तुरित < त्वरित। (३) बनरत < आभरण। समा <
सम् + मास्य = व्याप्त होना। (४) बिब < धन। (५) बाक < अप्य < अप्य = अपन करना
बँध करना।

[३९५]

तब रानी सम कुटुम्ब हकारा^१। एकमत भए सब करहि विचारा^२।
कहा सभनि धिय बयस^३ जो होई। पिता गिरिह भल कह^४ न कोई।
दुहिता जो संजोग होइ^५। जान। मता^६ पिता घर सोम^७ न पावै।
मासे बहुत कूल धिय फे^८ नास^९। धिय घर मली^{१०} कि जम के वास^{११}।
आठ दरिग सहि दुहिता यारी। नभए रहै पिता कह^{१२} गारी।
सम^{१३} गुन कृष्ण सपूरल सौ कृष्ण कूल केर।
एहि सों^{१४} करिय मगाई तुरित न लाइय^{१५} घेर ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा सब रानी सब कुटुब हकाय ह पुनि राभा सब कुटुब हकारे। २ ए एक मन सब मते बिचारे।
 (२) १ ए भा सबम्ह बी बैम। २ ए बीम।
 (३) १ ए भा। २ य मात। ३ ए घोभा।
 (४) १ ए नार्न बहु बी कुल के भा मन बहुत कुल भिय के। २ ना नाग।
 ३ ए घर भी मसीन। ३ भा के फामे।
 (६) १ ए सब।
 (७) १ ए ठ। २ ए गुरत न साई।

शब्द—(१) सब रानी में समस्त कुटुब (कुटुबियों) को बुलाया। वे सब एकमत होकर बिदार करने लगे। (२) सब ने कहा “जब दुहिता की अवस्था हो जानी है तो पिता के घर पर [उत्तरा रहना] कोई मत्ता नहीं रहता है। (३) जब दुहिता [बर से] सयोग [ए योग्य] हो जाती है मत्ता-पिता के घर पर बहु घोभा नहीं पाती है। (४) बहुतेरे कुल दुहिता के मत्त होने पर मत्त हो गए दुहिता का [अपने पति के] घर रहना मत्ता है और या तो उत्तरा घम के पदा निवाता (मरना)। (५) आठ बयों तक दुहिता बालिका रहती है और [उसके अन्तर पर] वह सब धर्म में [पिता के घर पर] रहती है, तो पिता की बाली होती (पड़ती) है।
 (६) [साराबद] समस्त गुणों से संपूर्ण है और कुलीन कुल का है; (७) इससे पुरत उत्तरी सगई घर बीजिए, बेरी न लगाइए।”

टिप्पणी—(२) (४) धिय < दुहिता। (५) बारी < बालिका। (६) गारी < गानि = गायन। (७) बेर < बेला = समय बेरी।

[३९६]

रंवर निवट सब आई। रानी। कहगि^१ बाग जो चित हुनि रानी।
 कहि^२ कुर मोहि जिय अनि^३ मारी। तुम्ह^४ भाकों मपुमानि वारी।
 यह^५ गुनि कवर कहा मुनु माना। बाबा^६ मोहि लहि^७ बीच बिधाना।
 बाग^८ कहिनि मोरि दुहिता तोरी। जम तुम्ह^९ जननि ओहि क^{१०} तनि मोरा।
 मुमुग्ग बना प्रात मय^{११} जाई। जान जाउ औ^{१२} रत्न^{१३} ग्याई।
 जो म बचा बीह^{१४} लहि मन^{१५} अब बीह^{१६} मोहि^{१७} मोद।
 जो लहि मिल^{१८} मनोहर ती मोहि जिय^{१९} मुग होइ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए जा बा^२ भा बहुराई। २ ए बरा।
 (२) १ ए मोहि बी कुल बी। २ ए गुल।
 (३) १ ए देह। २ भा. बचा। ३ ए मोरि तोरि रा माहि एहि।
 (४) १ ए बाबा। २ ए मे यह राग नदी है भा ती। ३ ए जनी मोहि है
 भा मोहि न बहे।

मधुमाखटी

- (५) १ ए मा सं। २ ए जात जम्म ती मा जात बाद जी।
३ मा न।
(६) १ ए जी में बाबा किम्। २ ए तोहि से। ३ ए, मोहि प्रतिपारै मा मोहि
पतिपारें।
(७) १ मा जेहि मिलै एहि कुंवर। २ ए तब हुयके रा ती मोहि जिय मा ती
मम जिये।

अर्थ—(१) तब रानी कुमार के निकट आई और उसने वह बात कही जो वह जिल में ठान
(स्मरण कर) चुकी थी। (२) उसने कहा 'हे कुमार, मेरे जी में ऐसी कालसा है कि तुमको मैं
बालिका मधुमाखटी को बर्षित करूँ।' (३) यह सुनकर कुमार ने कहा 'हे माता सुनो; इसके
और मेरे बीच बिचला को मध्यस्थ रखकर बचन-कहना [हो चुकी] है। (४) तुम्हारी बुद्धि
मेरी बचन को समझती है और [उसके अनुसार] जैसे तु उसकी जानती है, वैसे ही मेरी भी है।
(५) जैसे पुत्रों का बचन उनके प्राणों के साथ जाता है [जैसे ही प्राण] जाएँ तो जाएँ और रहे
तो रहें।

(६) जब मैंने इससे बचन कर लिया, तो अब उसको मर्ते निजाला ही है (७) यदि इसे
मनोहर मिल जाये तो मुझे भी मैं कुछ हो।"

टिप्पणी—(२) जाक < जप्प < जर्पय = जर्पय करना भेट करना। बाटी < बालिका।

[३९७]

माता सो, किछ करहि^१ उपकार। मिल बहुरि एहि^२ प्रान^३ पियारा।
वसि एत पुल^४ जहि क^५ ताइ। बूढसि बिकट^६ विजय भर^७ ठाई।
जगत फिरो जाक^८ मधमाती। जोरहि मिलै सो मोहि जिय^९ सौती।
अग्या कह^{१०} सम परिजन राई। राजकुवर कह^{११} हरहि जाई^{१२}।
पुरखनि^{१३} सुन^{१४} बचा असि जाही^{१५}। जोअत मिल चाह कोइ जाही^{१६}।
माता सो किछु ओटबहु कुंवर मिल जहि^{१७} भाति।
इह इह तपत सिराइ हिय हम हिय होख सौति ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए सी। २ ए कर। ३ ए येम।
(२) १ ए, देया बुल अति। २ ए जेहि की मा कहि कें। ३ ए बुढ।
बहुत। ३ ए बिकट बन।
(३) १ ए जाकी। २ ए, २ ए मोह जो। ३ ए म यह खल नहीं है।
४ ए मोरे मन रा माहि जिय।
(४) १ रा अग्या कह ए अग्या कै। २ ए, रा सब। ३ ए राये। ४ ए
ईहम जाये।

(५) १ ए पुरमम्ह ते मा पुरमम्ह हुने । २ ए म यह मम्ह नही है । ३ ए बचन मा आहे मा बचन मन आहे । ४ ए जी पिन पिनी । ५ ए जाहि जो आहे मा जाहि कोर आहे ।

(६) १ ए ली । २ ए उठवहु ।

(७) १ ए सुभाई । २ ए जब । मा पुनि । ३ मा हो निय ।

अर्थ—“(१) हे माता वह (प्रेता) कुछ उपचार (उपाय) करो कि इसे पुन [इतका वह] प्रायःप्रिय मिल जाए । (२) जिसके लिए इतना कुछ देना (तृप्त) कर इतने भारी बिपद और विषम स्वार्थों को दूँडा (३) जिसके मन (प्रेम) में मत होकर वह संसार में फिरती रही, यदि यह उत्तरे मिल सके तो मुझे भी में शांति हो । (४) सुप्त समस्त परिजनों (मृत्यादि) को बुला कर माता दो कि वे जाकर राजकुमार को दूँडें । (५) मैंने [पुत्र] पुत्रियों से प्रेता बचन सुना था कि कोई किसी को चाहेता है वह जोरते-जोरते मिल जाता है ।

(६) हे माता, वह (प्रेता) कुछ करो कि जिस प्रकार कुमार मिल जाए (७) इन दोनों (इतका और कुमार का) संतप्त हृदय शीतल होया तब हमारे हृदय की शांति होगी ।

टिप्पणी—(२) एम < एतम् < इत्यम् = इतना । (४) राब < राबन् = बुलाना आह्वान करना । (६) आठव < आठव् = आ + वृत् = करना । (७) मिर < मीमत्स्व < दीप्तत् ।

[३९८]

सागवद उतर मुनि गनों । आदि बान मम बह्मि बगानी ।
जाहि दिन किन बिमराउ ब^१ बारी । हुन दुहु दहु दिनि दम दाग ।
सहि निन हुत^२ हम दुबो परानी । दमो दिमा आपनि जिय^३ जाना ।
रिनिन कहत^४ बिछू^५ मनहि तबानी^६ । बुधि गाए पर भाउ^७ दियानी^८ ।
दनि न गई मोहि रिनि^९ बारी । मोहि र गिरिह गहि^{१०} मझारी ।

बामर ठाडि^१ निहार^२ लाए^३ मन अगाम ।

पबरि उन्हारि ममस्त^४ निमि रोब^५ परी निगम^६ ॥

पाठांतर—(१) १ ए बारी । २ ए मन लयि बरा बिचारी मा आदि बान मम बह्मि बगानी ।

(२) १ ए बिमराव मा बिमराउ रि । २ ए मुह म मोह दूनी क मागे मा हुने दुबो स रिनि बगानी ।

(३) १ ए ता दिन ते ग तेहि दिन त । २ ए दुनी । ३ ए आपन जिय ।

(४) १ ए रिनिन कीज ता रिनिन बिण्ड मा रिनिन बनेउ । २ ए ये कह सग नही है । ३ ए तीबाना मा ठेबानी । ४ ए बुधि गोरा परि बी । ५ मा दियानी ।

(५) १ ए देनि न गा जो दुग मा बारी । २ रा ऊँ र रिनिन कीज बरी बगारी । ३ बाह चर नी देह दही बगारी मा बह नूर नई दही पर बारी ।

- (१) १ ए रीति। २ ए निहारि आ निहारो। ३ ए काइत।
 (७) १ रा स्वाम। २ भा रोवत। ३ भा बिरास।

अर्थ—(१) ताराचन्द का उत्तर सुनकर रानी ने व्याख्यापूर्वक प्रारंभ की बार्ता कही (२) [उत्तरे कहा] जिस दिन जिस विभाग [नगर] की बाटिका में बीनी के और बसो बिसाओं में बस बासियों की (३) जती दिन से हम बीनों प्राणियों ने बसो बिसाओं की बी में अपना जान लिया (यह जान लिया कि मनोहर के लिए मधुमासती को और उसके कारण हम बीनों को बसो बिसाओं में भटकना होगा)। (४) रोप बसा ही मैंने [गुछ] कहा, [क्योंकि] मन तमोमिभूत पद, [पद्यति] बुद्धि कोने पर [अब] जान हुआ है। (५) और बासिका को बसकर मेरा रोप नहीं धया, [इसलिए] उसे घर पर और इसे (मधुमासती को) यहाँ डाक दिया।

(६) यह [तब से] दिन भर झड़ी-झड़ी आकाश की और मैनों को लगाए हुए देखती रहती थी (७) और [मनोहर की] उन्हारि का स्मरण कर सारी रात निरास पड़ी हुई रोती रहती थी।”

टिप्पणी—(१) बखान < बख्शाव < व्याख्यातव् = व्याख्यापूर्वक कहना। (२) बिसराव < बिभाम। बारी < बाटिका। (४) तब < तम् = तमोमिभूत होना। बारी < बासिका। (७) उन्हारि < अनुहार < अनुकार = अनुकृति आकृति।

[३९९]

सो' दुस कुंवर परा' मोहि' आई । कहीं तौ' सुनि पावर बिहराई' ।
 अपने करत' कुंवर दुस पाइत' । अचक सीस दुस ठाकर साइत' ।
 म सो किछु कीन्हा निरमोही' । जो न कर एहि कलि' सह कोई' ।
 हाथ हूँ जो' रतन अडाइय' । बुद्धिय' सहत' कहीं सो पाइय' ।
 अब पेना' यह काहु पठावौ' । ओहि कै' सोम कसहु मकु' पावौ' ।

ताराचन्द कुंवर सुनि' बोला सुरित' पठावहु कछु' ।
 मकु' यह' बिख' भभूता मिछि आ हो' निरबाहु ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए सब। २ भा परेव। ३ ए जी। ४ भा तेहि। ५ ए बेगवाई।
 (२) २ ए भा अपने करम। २ ए पावा। ३ रा जस दुस ठाकर साइत
 ए जानु बिधि टक्कर सावा ना सीस दुस पाकर साइत।
 (३) १ ए मो सी कछु कीन्हा निरवाई भा मैं कुंवर अस कीन्हा निरमोही।
 २ ए जी न करै इन्हु कलि। ३ भा को कोई, ए मो कोई।
 (४) १ भा जी। २ ए अडाई। ३ ए भा कूबत। ४ भा बहुरि।
 ५ ए पाई।
 (५) १ रा काहि पठाइय। २ ए बोहि को भा बहि बी। ३ भा मुपत
 यह। ४ रा पाइय।
 (६) १ ए. जी। २ ए गुप्य। ३ ए काहि।
 (७) १ ए. बोह। २ रा पिछे होइ।

मधुमाक्षरी

[३४९]

अर्थ—“(१) वह कुल (जसका कुलमय परिणाम) मुझे (मेरे सामने) [इस प्रकार] आया कि [यदि] कहीं तो पावर भी कुछ (बिचोर्न हो) जाए। (२) ये कुमार घने मयने हो करतब से हुए पाया, और तिर पर मैंने अचानक कुछ को टक्कर (घोड़) खाई। (३) मुझ निष्ठर ने वह (ऐसा) कुछ किया जो इस जल में कोई नहीं करता है। (४) यदि रत्न को हाथ से टाल (गिरा) बीजिए, तो बहुतेरा बूझिए, उसे वहाँ प्राप्त कर सकते हैं? (५) अब वेमों के पास किसी को भेजू, तो संभव है उस (कुमार) की लौज कहीं पा जायें।

(६) यह सुनकर ताराचंद बोला, “सुरंत ही किसी को भजो (७) सभ्य है कि वह बिछ में मानीमृत [येमों] कहीं मिल जाये और [मधुमाक्षरी के प्रस का] निषेध हो जाए।”

गिप्परी—(१) पावर < प्रस्वर = परवर। बिहुर < बिहुर = वि + प = दूटना फटना।
(२) सुरित < रवरित। (३) मयुधि < विमुति = मयम।

[४००]

तब रानी बारी हकराए। मुबुधि लाल जन बुद्धक पठाए।
ममाचार जन इहाँ क रह। त सम लिंगि बागर पर पड़े।
पछी भई जीमि बिधि धारा। फिरी मनाहर गगि मयमारा।
ओ जिमि ताराचंद यमाई। ओ मय बुद्धक मनाहर आई।
तहि पाछे बहु कुंभर हिजारी। मिमी नागि जहि राजकमारी।
ओ बिछ दान इहाँ क आही मो मम^३ मिगा^४ विचारि।
ओ पमो बहु द महिपानी सुरित बलाए^५ धारि॥

पाठांतर—(१) १ भा मुबुधि लाल जन ए मुबुधि लाली बला। २ ए म यर पावर नहीं है, भा बुद्ध। ३ ए बुद्ध (< बीगये पारसी लिपि) भा बुद्धाए।
(२) १ ए भा जल (अत—भा) इहाँ क बहा (बाहा—भा)। २ ए मो मय लिगि बागर पर बहा भा मो मय लिगि बागर पर बागा।
(३) १ ए भी ओभी भा भई ओरी। २ ए ए ममारा।
(४) १ ए ओ। २ ए मय मय भा मय नागि।
(५) १ ए पाछे। २ ए मे यर मय नहीं है। ३ ए की बारी भा की बागी।
४ ए मिमी तो म्याहो भा मिमी न म^६।
(६) १ ए ओ। २ ए बी। ३ ए भा मय रा म यर म^७ म। ४ ए भा मिगा।
(७) १ ए को। २ ए सुरित पनावा।

अर्थ—(१) तब रानी ने बालियों की बुलाया, और उनमें से दो-एक को बुद्धि देकर (वेमों के पास) भेजा (२) वहाँ के जिनमें ममाचार के उन्हें लिखकर [उमने] बाग पर गया : (३) जिन प्रकार बाग (मधुमाक्षरी) वाली हुई और अमीर के लिए लोभार न [उम पाठो] छिरी, (४) और [जिन प्रकार] उसे ताराचंद ने [पाग में] बंसाया और [जिन प्रकार] कुमार

के साथ यह महारस [नगर] आई (५) और उसके अनंतर कुमार (साराबंद) की यह हृदयमातृता लिखी जिस प्रकार (जिसके कारण) यह राजकुमारी मिली।

(१) को कुछ बार्ता यहाँ को भी, वह सब उसने बिचार कर लिखी, (७) और पेमा को [अपना] सामिधान (बिहून्) दे (प्रेम) कर बारियों को उसने तुरंत खाना किया।

टिप्पणी—(२) बैठ < बैठक < यावत् = बिठने। बागर < बागड [फा]। (३) बापा < बापा। (४) बसा < बसना < बसू = बाँधना खँडाना। (५) हिपारी < हृदयमातृता = सीहारे। (६) बाठ < बसा < बार्ता। (७) सहिवानी < सामिधान (?) = बिहू।

[४०१]

फुनि^१ मधुमासति मांयु क^२ जोरी । बारिन्ह सउ^३ बिनबा^४ कर जोरी ।
पेमा^५ सउ^६ अस कहसि^७ बुसाई । यह^८ मोरे हिये^९ आनि ठोरि लाई ।
फिरिउ^{१०} जगत ससि म पिय लागी । प न बुठानी हिये^{११} क^{१२} आगी ।
मकु कतह^{१३} तुव जोअ कुमारी । मिल तो मरीजोगी^{१४} मोहि बारी^{१५} ।
पाछिउ^{१६} बुस आपन सम^{१७} कहा । अठ किहु^{१८} कुबर बिरह हुत^{१९} सहा ।
पछि^{२०} रूप में^{२१} बरिस दिन फिरिउ कुबर क^{२२} आरि ।
ते सम तोहि सउ^{२३} एक एक सुनि ससि^{२४} कहों उबारि ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए माता की, मा यता की। ३ ए बा बारिन्ह सी बिनबे रा बागिन सो बिनबा।

(२) १ रा ए सी। २ ए कहा ना बहहि। ३ ए में यह छम्ब नही है। ४ रा बीय ए हिये।

(३) १ ए फिरी। २ ए ना मे यह छम्ब नही है। ३ ए बुठानी हीबर, रा बुठानी हिय की।

(४) १ ए तो मिले जोन (<जोगि कारबी बिपि) नमबारी मा ठेहि मेरउ जोपा (<जोनी नागरी बाबई) मोहि बारी।

(५) १ ए जो मा सब। २ ए अठ बुस। ३ ए ते।

(६) १ ए पछी। २ ए मे यह छम्ब नही है। ३ ए फिरी कुबर की।

(७) १ आ ते सब ठेहि सेउ ए सो मय तो सी रा ते सम तोहि सो। २ ए हे सची।

अर्थ—(१) तत्पश्चात् मधुमासती ने माता की जोरी (माता को बिना बनाय) बारियों से हाथ जोड़ कर [इस प्रकार] निवेदन किया (२) "पेमा से इस प्रकार खाना कर कहना 'मेरे हृदय में यह (इस प्रकार की) आग तेरी लपलाई हुई है। (३) हे सची, मैं बिय के लिए जगत् भर में फिरी, किन्तु हृदय की (यह) आग [उसके न मिलने से] बुझी नहीं। (४) संभव है ऐ कुमारी तेरी जोअ में (तेरे जीवन में पर) बहुत मिल जाने तो ऐ बालिका तू बस योगी को बुझे बिना। (५) [इसके अनंतर] उज्जने अपना वह सब निजता कुछ [उससे कहने के लिए] कहा, जिसका कुछ उसने कुमार के बिहू में सहन किया था।

मधुमासधी

(१) [उत्तरे कहा] पत्नी के रूप में [बी] में कुमार की आया में बर्ष दिन वि
 एही (७) [अब] उन सब (उसके कुत्तों) को एक-एक करके कुत्तों बहते हैं; ए
 नून।" टिप्पणी—(४) मेरव < मलव < मल्लु = मिलागा। (५) जल < जलिन < मावद् = मित्रन
 (७) उबार < उव्वाह < उद् + वाट् = धोसना।

[४०२]

सावन मास घटा पहुरानी। मवरि पम^१ चनु ओनागड^२ पानी।
 अगम बुक्य दिन जाहि न गाड^३। लोयन गाग जोन होइ^४ बाड।
 रक्त आंगु धर पर जो दूटी। सावन भए न^५ बीर बहूटी।
 सब रवन ओ पम उछाहा^६। तिन्ह पनि कह^७ अग जीवन लाहा।
 न पिप रूप फिरि मम^८ बारी। नन रगन बिहू^९ तन जारी।
 सावन घन तरंग जल दामिनि छपा^{१०} अनन।
 कठिन प्रान जा^{११} पन रहहि^{१२} ए^{१३} मगि बिछुर कत ॥

पाठान्तर—(१) १ ए घटा जा पन बहुरानी या घटा पहरि पहुरानी। २ ए नेह।
 ३ ए अंगवा।
 (२) १ ए जान न काड (< गाड धारणी सिपि)। २ ए गवन जमुन में
 रा गाय जोन होइ।
 (३) १ ए मा सावन से भये।
 (४) १ ए रीम जे पेम उछाहा। २ ए पन लाने।
 (५) १ ए छिटी मव जा फिरि बहू। २ ए नैन रवन मन बिहू।
 (६) १ ए छपा।
 (७) १ मा जे। २ ए रगन। ३ ए हे मा. के यह लख नहीं है। ४ मा.
 बिछाह कन।

अर्थ—“(१) सावन मास में घटा [आवाग में] पहुराई ली [मित्र के] प्रेम को स्मरण
 कर वाली [मेरी] आँखों में उममित हो आया। (२) कुत्तों के गाँव (अनिगाय) अंगव्य दिन
 में [धनीत हो] नहीं रहे वे और मेरे लोचन मंगा-वपुना हो कर बड़ (अनङ्ग) बढ़े।
 (३) [मेजों से] रक्त के अणु जो घरा पर दूढ़ कर गिरे वे सावन की बीर बहूटी बन गए। (४)
 इनके रक्त (रनि) शय्या में होते हैं और जिन्हें प्रेम का उछाह (उछाह पुन जानह)
 ता है उस लिपों की अग्न में [इस जान में] जीवन का लाभ [प्राप्त] होता है। (५)
 पु में तो कोयल के रूप में समस्त बाहिराजों में फिरती रही; मेरे मन में पवन का
 रूप के अणु में और मेरा शरीर बिहू से बना हुआ था।
 (६) सावन में [बारों की] बड़ा तरंगमय जल दामिनी और अनन (नवीन नदी),
 [एते कुत्तों की] बड़ा तरंगमय जल दामिनी और अनन हैं जो [एनी जान] ३ ४ ५
 (मित्र) के बिछुरने पर [शरीर से बने] रहते हैं।”

(१) मोनव < उद्यम = नीचे की ओर जाना मुकना। (२) गांग-जीन < गंगा-यमना।
(४) रवन < रमय = प्रिय। उछाह < उच्छाह < उरछाह। (५) बारी < बाटिका। (६) छपा
< छपा = छवि। (७) कत < कान्त = प्रिय पति।

[४०३]

भादी भरम भयावनि^१ राती । विरह दबा मोहि^२ सज समानी ।
सिध मया^३ पावस^४ झकझोरी^५ । पम सखिल दुहु लोपन ओरी^६ ।
आठो माठ मदन क जाग^७ । साठो सरग मोनइ भुइ^८ लागै^९ ।
वहु बिसि घुमरि घोर पहुरान^१ । म निबु प्रान गोन किए^२ जान ।
भादौ निसि जहि^३ पोट न पासा । सखी कौन तहि जौयन आसा ।

म आरन^१ बन एकजरि बिरह अधिक जिय पीर ।
निलज प्रान अलि पापी सजत जो नहि सरीर ॥

पाठांतर—(१) १ ए भयावनि। २ रा ए दीन मोहि (मोहि—रा)।

(२) १ रा माध सिधा। २ ए बारि ली झकझोरी। ३ ए दुह कायेन बोटी।

(६) १ ए जाये २ ए साठी छन कोने के ना साठी सरग मानि भुइ। ३ ए लाय।

(४) १ भा पहुराना। २ ए गोन के या दीन बिय।

(५) १ ए जेहि ना मोहि।

(९) १ ए भरन। २ ए लन भा जिउ।

अर्थ—(१) भयावय मास की भय (भय) से भयावली लगी हुई रातों में मेरी छम्मा में
बिरह की बाधाएँ ही मेरे संग थीं। (२) सिध और मया लक्षण पावस में घूमे झकझोर रहे थे।
[जिस प्रकार वे बुलावे को झकझोर रहे थे], और मेरे नेत्रों से प्रेम का जल ओरी (ओसती)
[बनकर बपक रहा] था। (३) मदन (काग) आठो [साक्षिक] माध [उत्पन्न] कर जाय रहा
था और छत्तो आकाश उज्ज्वल हो कर भूमि से लग (जिल) रहे थे। (४) [ऐसे समय में बामलों
के] बारी और घुमड़कर और (भयावक कथ में) पहुराने से मैंने लगी भाँति जान लिया कि मेरे
प्रान गमन कर चुके। (५) भयावय में हे सखी जिसका प्रिय पास न हो उसके जीवन की क्या
(कौन थी) आशा (की जाए)?

(६) मैं शरणागत-जनों में अकेली थी और मेरे भी मैं बिरह की पीड़ा अधिक थी; (७) फिर
भी मेरे पास प्रान व्यर्थ मिलेकब से भी (मेरे) शरीर को नहीं छोड़ रहे थे।"

टिप्पणी—(१) दबा < दब = बाधाएँ। सेज < राग्या। (२) पावस < प्राकृष < वर्षा ऋतु।
(३) लोपन < लोपन। (४) जण साक्षिक माध स्वप्न स्वेच्छरीमाञ्च स्वर-विचार, वेपथ
वप-विचार, अथ प्रणय। सख < स्वर्ग = आकाश। (५) घुमर < घुम्म < घूर्म = घूमना
चक्राकार क्रिया। (६) आरन < भरम।

मोगल परब कुबार जगनाबा । सियर मन्म ममोर्ग मुनाबा ।
रनि मग्ग सभि मीउर अगामा । मम कह परब मोहि दनवाना ।
निमुत्री निसि माग्ग मर बोळ । मुरग आइ मयमार ममोळ ।
दरमउ मज पग जग पानी । मण ठाड जग्गु अतिवानी ।
ओ कुबार गिनु परब उछाहा । तस्नी जगत माह गिनु लाहा ।
मनो घग्ग माहि विरह दुग बकउ न आव मुक्क ।
ओ तहि पर लोपन बुबहि लिनी मा कउ करि दुबग ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए नीरिनु । २ ए मा सब मदन मुपनि (मदन मयार—मा) ।
(२) १ मा गिनु मरर ए रिनु मरर । २ ए गीन मा मियर । ३ ए
बशामा । ४ ए मर को मा मर कह । ४ ए मोहि ।
(३) १ ए मार । २ ए मे मर पाव नही है । ३ ए मयारे (मुन परबनी-
वरय का मुक) । ४ ए मयार अमान ।
(४) १ ए हरमु अगलि । २ ए जो । ३ ए मी अपाह सगनी अतिवानी
ए मण ठाड जल-जल अतिवानी ।
(५) १ ए ओ अरब पाव परब उछाहा मा और अरब परब परब उछाहा ।
(६) १ ए मनी हे घट मा । ७ ए बरनि ।
(७) १ ए ता । २ ए बुई । ३ ए लिनी न पाई ।

अर्थ—“(१) नहराज के पर्व बाला बजार [तब] जम बड़ा जब सपीर ने दीपल (दीप का)
सदेस मुनाया । (२) रात्रि में शरद क रात्रि [की दीपलता से] आकाश में तलत [का आयमक]
हो गया था सब के लिए तो [इस मास में नहराज का] पर्व का और मेरे लिए बनवास का ।
(३) रात्रि में अरारय ही शरद सरोवरों (झीलों) में बोलने के और मयार घर में मामिक मुहर
(रमजीय) रंग छा गया था । (४) रंजय विपार्ई बड़ा का जगन् में [सरोवरारि का] पानी घट
बसा था, और जन्म-मय अर्यन बग (रंग) में आकर राई (मियर) ही गग के (५) और
बवार की रिनु में बई और जहाह (जलज) [हो रहे] ने तथा तस्नी जगन् म पग्गु का लाय
[मयार विपार्ई पड़ रहा] का ।
(६) हे तानी विरह [इस समय] मुन पर कुल बर (आल) रहा है मग से बाधय नहीं
निरल रहा है (७) और जल पर मेरे लोचन बू रहे हैं इसलिये मैं [बवार का] अपना कुल
रिउ अरार लिनु ?”

टिप्पणी—(१) मियर < गीमल < दीपल । (२) रैजि < रदनी < रजनी । (३) लोपन
< लोपन ।

विगर्साह कबल भाति त वारा^१ । अनहु^२ कुमुदिनी ससि उजियारा^३ ।
 सरद रनि सीतरि^४ सेहि भाय । जो^५ प्रीतम कठ लागि बिहाव ।
 मोहि^६ उन विरह अगिमि^७ परजारा । सरद चाँद मोहि^८ सेज अगारा ।
 * गह^९ वरसाह से^{१०} देवस अमोल । जिन्ह^{११} सब^{१२} सेज रबन्ह^{१३} मिठ्योल ।
 सरद रनि सीतरि^{१४} तहि जेहि पिउ कठ नेवास ।
 सब कह^{१५} परब देवारी मोहि^{१६} सखी बनवास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सताई। २ ए जरिई।

(२) १ ए भाति छे। २ रा भा बाका। ३ ए जनि (<जानि)। ४ रा
 भा उजियाका।

(३) १ रा सीतरि ए सीतर। २ ए बहि।

(४) १ ए मोहि। २ ए जायि। ३ ए मोहि।

(५) १ ए ते बगसहि। २ ए यह भा मे। ३ ए बहि। ४ भा सपि।
 ५ ए रीम।

(६) १ ए सीतर रा सीतरि।

(७) १ ए सब के। २ ए मोहि।

अर्थ—(१) कालिक में मैं बाला शरद से संतप्तित की इसलिये [एक बटु की] अमृत का
 भी [मेरे लिये] बिष की बारा पिया रही थी। (२) हे बाला कमल इस भाँति विकसित हो
 रहे थे कि बालो शक्ति के प्रकाश में कुमुदिनीया विकसित हो रही हों। (३) सरद की जीतल रजनी
 उस [नारी] को माली है जो उस बटु को प्रियतम के पसे अगकर व्यतीत करती है। (४) [किन्तु]
 मेरे मन में विरह जनि प्रज्वलित कर रहा था और शरद का कमल मुझे अगारों की श्रेय [हो रहा]
 था। (५) वे [विजया] ही [शरद के] उन अमृत्यु विनी का भोग करती हैं जिनकी कुछ-कमल
 पर मिठमायी रसम (प्रिय) होते हैं।

(६) सरद की रजनी उसे सीतर (मुखवासक) होती है जिसका प्रियतम के कंठ (पार्श्व)
 में निवास होता है। (७) सब के लिये देवारी का वर्ष आ, किन्तु मुझे तो हे सखी बनवास था।

टिप्पणी—(१) सताई < सतायि < सतापित = सतप्त किया हुआ। बजिब < अमृत। मुह <
 बिन्दु। (२) (१) सीतरि < सीतर। (३) बिहाव < बिहा (बि + हा) = परित्याग करना।
 (४) अगारा < अगारक। (५) रसम < रसम = प्रिय। (६) देवारी < दीपावली।

[४०६]

अगहन भग जोवन जग सीठ । भइ^१ पावक हित काँप जोठ ।
 मुन दिन भाति बटल नित^२ जाई । दुख थो^३ निसि तिल तिल अघिकाई ।
 ओ तहि पर जुगसम निसिपरी^४ । मैं वन डारि डारि एकसरी^५ ।
 बठिन पीर यह^६ जानै सोई । पेम विछोह पर बहि^७ होई ।
 यह बड़ि लोरि सखी मोहि^८ मई । पिय विछोह सैं^९ मरि किन मई ।

यह कसक बड़ मा कह^१ दोन्ह जो^२ पापी प्रान^३ ।
जेहि दिन पीतम^४ बिछर मुनत न निषम^५ अपान^६ ॥

वाटान्तर—भा में उपर्युक्त अर्थोंमें ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

- (१) १ ए बहु भा बहि ।
- (२) १ ए जो मा तन । २ ए जो रा मे यह पल नही है ।
- (३) १ १ भी तापर ज जुग मम मारी भा जो तेहि वग मम मम मरहरी ।
२ ए मोहि बनवास बाजु तुहु बारी ।
- (४) १ ए मेह ।
- (५) १ ए भा कुमति सनी जो (मोहि—भा) २ ए भा दुष ।
- (६) १ ए मति माने भा सली बड़ मावहें । २ ए जिहा मा भा रं आ हि ।
३ रा बाबै ध्यान ।
- (७) १ ए प्रीतम । २ ए निमक मा निषत । ३ मा परान ।

अर्थ—“(१) अग्रहायण मास में जगन् में मीठ धरे पीवन में हुई पाषाण (अग्नि) प्रिय हुई [बोकि] ओष बाँधने लगा । (२) [मेरे] मुग [अवहन के] दिनों की भाँति निरय घटने जा रहे थे तथा [मेरे] पुग और रानें तिल-तिल (बोझ-बोझ) करके बढ़ते जा रहे थे । (३) उन पर भी रानें पुगों के समान आन बढ़ रही थी और मैं बनों में डाल-डाल पर अकेली थी । (४) यह कठिन पीड़ा बड़ी आन तरता है जिस पर प्रेम-वियोग पड़ा हो । (५) हे सनी यही बड़ा अपराध मुझसे हुआ कि प्रिय-वियोग से मैं भर क्यों न गई ।

(६) मुग की यह बड़ा कलंक हुआ जो मुझे मेरे पाली शायों के बिना (७) जिस दिन प्रियतम विपुल हुए, मेरा अन्धरा (बीज) यह मुझसे ही नहीं निबला ।”

टिप्पणी—(१) नीर < पीन । (४) पीर < पीडा । (७) मान < अपाध < आरमन् = आराम पीन चेतन ।

[४०७]

पूम रेनि अनि कूजरि भारी । म अबला मही^१ जा न म-भार^२ ।
किमि निरबह^३ मुकनि क^४ जानी । पहरहि पहर बारि जुग रानी ।
सम^५ चित चाउ गिरागम^६ मरा । म भारन^७ मन बिगिग बमरा ।
आर पूम ग्नि मग्गहि माह^८ । धन जोबन कुपनि क^९ छाह^{१०} ।
जोबन तुर जान दीग^{११} । बहुरि न किमि आ-हि पणिता^{१२} ।
भाग फिर^{१३} जो १ मगो तो मुग फग नाह^{१४} ।
मानर^{१५} वा मोहि पग्गिरन^{१६} एहि^{१७} एहन^{१८} भर आवन मा^{१९} ॥

वाटान्तर—(१) १ ए भा बहि । २ ए भा आर मभारी ।

(२) १ रा कामनि बहे । २ ए की ।

(३) १ ए भा नव । २ रा ए जो प्रीतम । ३ भा भारन ।

- (४) १ ए बेकरी गाहा। २ ए बी।
 (५) १ ए दीराये। २ ए भावे पछनाये।
 (६) १ ए किरा ना फेरै। २ ए गौह।
 (७) १ ए मातरि। २ ए परिहरी। ३ ए हम भा एहि। ४ ए मा मे बहु
 लख गही है। ५ ए मा गौह।

अर्थ—(१) पीय की रजनी अर्थात् अधिक दूधर हुई में जवला पी [इसलिए] यह [मुससे] सही और सैमाही नहीं का रही पी। (२) पुष्टी की बात कि जिस प्रकार निर्वाह करे जब कि [उसके लिए] बार वहाँ की रात्रि बार धुनों की हो रही पी? (३) [जब कि] सब [पुष्टियों के] पित में विपत्तन [के मिलन] का बाव (उत्साह) या में अरथ और बर्षों में पुनो पर निवास कर रही पी। (४) पीय आया तो पति-जन बन्धु का बिलास (जीन) करने लगे [स्वर्गिक] जन और बीकन दुपहरी की छाया होती है [जो बीम ही सरकने लम्बी है]। (५) और बीकन का बोझ [जीन को] बीकन हुए किए जाता है तथा वह फिर बलताले बर लीज कर नहीं जाता है।

(६) क्याकि मेरे नाम बिरे हुए के इसलिये मेरे नाम में मुससे मुक्त कर लिया था; (७) नहीं तो वह क्या (क्यों) मुझे इस लहरे लेते हुए (उपम में आए हुए) और भरे पोषन में छोड़ देते?"

टिप्पणी—(१) रैन < रयनी < रजनी। दूधर < दुर्धर = कष्टकारक भार बाधा। (२) मारन < जरम। बिरल < वल। (३) दुरै < दुरय < दुरय = वीर। बहुर < बाहुद < ब्यामुद = बापस आना। (४) जी < जओ < जल = काश्क कि। ती < तमा < ततम् = इसलिये।

[४०८]

दूधर माध सकी सुनु बाता। पित विवम मोहि^१ बिरह सभाता।
 विमि निरबाहो दुसह सियाला^२। पित न सब म जीवन^३ बाता।
 बिरह डारि^४ पर वसी^५ बाला। रैन गमे^६ मिन बरिसं पाता।
 माध रैन पिप बिमु जा^७ आही। मरन मला तहि जीवन^८ आही।
 किम करि^९ दुसह माध मभु बाढ। बिरह देबस^{१०} यह तिल सिल माढ़।
 सखि सुख साजन साब गा^{११} दुक्क रहा मोहि^{१२} पासु ॥
 सहि पर कासी बिरह मा^{१३} सिन हाइहि खिन^{१४} मासु ॥

वाक्यान्तर—मा ए म उपर्युक्त सीखरी बीबी तथा पाँचवी अर्द्धालियाँ का कप है ५, १ ४।

- (१) १ ए जो ए म यह धव्य नहीं है।
 (२) १ भा निरबाहो दूधर सियाला ए निरबहो दूधर न उवाला। २ ए म
 दूधर ('दूधर' ए मधुबैरती चरण के भी पाठ में भी है) भा मोहिबोधन।
 (३) १ ए डारि। २ ए बीठी। ३ ए गेवाही या गेवी।
 (४) १ ए जो। २ ए मरना मला न जियता।
 (५) १ ए बी। २ ए दुगह। ३ ए जो।

- (१) १ ए पीउ यन। २ ए दुप जे रहा मोहि।
(०) १ ए कै। २ भा विन हाई गिन ए यन हाइ यन।

अर्थ—“(१) हे सती, [मेरी] बातों सुनो माघ मास [मेरे लिए] दुहर हुआ [व्यक्ति] प्रिय विदेय में था और बिरह मेरे साथ था। (२) मैं बुद्धिहीन सीतलकाम किस प्रकार निभानी [अर्थ कि] प्रिय राधा में नहीं था और [मैं] बाला जीवन में थी? (३) यह बाला बिरह से डारों पर बड़ी रहनी रत्नों [चित्री प्रकार से] बीसती भी थी तो तिर पर पाते (हिय) भी बर्षा होती रहनी थी। (४) जिसकी माघ की रात प्रिय के बिना आई (धन्यता ही) उसके लिए उस जीवन की अवस्था करना मना है। (५) मधुमालती किस प्रकार माघ निकालनी (धन्यता करती) [अर्थ कि उसके] बिरह के दिन उसके तिल-तिल करके बढ़ने लगे थे।

(१) ऐ सती, मूल साजन के साथ धमा मया था [उसके बिरह का] दुख [ही] मेरे साथ रह गया था, (०) और उस पर भी बिरह एक लक्ष [सारी की] हृदयों के लिए और दुन्दुभे लक्ष [उत्सुक] मांस के लिए कतरनी हो (यन) मया था।

टिप्पणी—(१) दुहर < दुनैर = बल्लभारक धार वाला। (१) निबाध = धीन नाम।
(१) साजन < मजन < रजजन। कनी < कसरी < कसरी = कतरनी कैरी।

[४०९]

फागुन सगी बिपनि मुनु मोरी । बिरह अविनि^१ तन जरि मा^२ होरी ।
छन्ह^३ पाठ कर रहा^४ म माऊ^५ । जानहु जर बिरह क दाऊ ।
भा पनमार जगन बन^६ वारी । सांगरि^७ भई मर्भ फुलवारी ।
भा पगि मम^८ यन बैगयो । दगि डाव^९ मिर लगन^{१०} भागी ।
जगन मोम मा बिरिय न काई^{११} । जहि डारिहि^{१२} म मगि म राई ।
गगी मजहु माहि^{१३} पित मिला मुदउ बिमुरि विमरि ।
जावन तन माहि लहनहा^{१४} सागर मउ^{१५} ल^{१६} झुनि ॥

- शब्दार्थ—(१) १ भा मावि। २ ए ज जरि यी।
(२) १ २ लक्ष ए उत्तर। २ भा रोव। ३ ए माऊ। ४ ए बिरह के दाऊ।
(३) १ ए जनु। २ ए सांगरि।
(४) १ ए भावगी मम। २ ए हाव। ३ ए लगी।
(५) १ ए माऊ मम बिउ न हाई। २ ए नहि दाव भा जि न दारि।
(६) १ ए लगी हे अरुं व। २ ए मूर्द।
(०) १ ए माहि लहनहा (< लहनहा कारणी प्रिति)। २ ए भाव मर्द।
३ भा मा।

अर्थ—“(१) हे सती [अर्थ] मेरी काव्यमय बात की विपत्ति सुनो; बिरह की अग्नि मे जल पर बेरा सारी हासिया [की भाव] हो गया। (२) कुशों पर रत्नों का भाव भी [मेरे] म रहा सती के बिरह की बालावत के जल गए थे। (३) जगन्धर के दोनों और बाटिकाओं में बसाया

हो (या) बुका वा मीर समस्त पुण्य-बाटिकाएँ बल्लह (बिना पत्तों की) हो गई थीं। (४) सभी पक्षी [इस कारण] बनों में बिरफ्त हो गए जब उन्होंने बाघ (बलाघ) के सिर पर [उसके] बाल फूलों के रूप में] आप लगती देखी। (५) जल्द में वह (ऐसा) कोई फूल न था जिसकी डालों से लगकर मैं न रोई होऊँ।

(१) [किन्तु] हे सभी [मेरा] प्रिय जात्र [मैं] भी नहीं मिला मीर मैं उस पर खेद करता-करती मर गई; (२) [यद्यपि] जीवन मेरे शरीर में लहलहाया (हरा-मरा हुआ), [किन्तु] मैं शुद्ध (संतप्त हो) कर संकाश हो रही।"

टिप्पणी—(१) होरी < होलिका। (२) बाऊ < बाब = बाबागि। (३) बारी < बाटिका। (४) बाँबर < ककाब = बल्लह-खेप पत्र-हीन तब। (५) बिरिख < बिरिखल < बुध। (६) बिसूर < बिसूर [रे] = बर करना। (७) साकर < सकर [रे०] = सुष्क तब। मूर < मि (१) = जीव होता शुक्ता।

[४१०]

बल्लह बरह निवर बन बारी। बनसपती पहिरी नव सारी।
बहु दिसि मा' मधुकर मुंजारा'। पांखुरि फूल बरिह' अनुसार'।
कुसुम' सीस बरिह' सब' काढ़। तरिवर नो' साक्षा म' बाढ़।
फागुन हुते जे' तब पतझारे। ते सम' गए बल्लह हरियारे।
मोहि' पतझार जो' मा' बिनु साईं। सा न सबी मौला अब ठाई'।
हुपु व प्रीतम छाड़ि गा' जननि दीन्ह' बनवास।
औ रवि आठौ म तपा क' मोहि' सिर परगास ॥

वाङ्मय—ए मे उपर्युक्त बर्णनियों १ ४ ५ का क्रम है ५, १ ४।

- (१) १ ए पहिरी। २ मा है।
- (२) १ ए नै। २ ए मुंजारे। ३ ए पक्षुरी बार फूल मा पाघर फूल बरिह' ए पक्षुरिह' फूल पाव। ४ ए अनुसारे (?) मा बसबाप।
- (३) १ ए कुसुम। २ ए बाल ते मा बरिह' के ए बरिह' सहु ३ ए नी। ४ ए होइ।
- (४) १ मा जो। २ मा सब।
- (५) १ ए मोहि'। २ ए मैं यह सम्य नहीं है। ३ ए जी। ४ ए अंतराई।
- (६) १ ए कुल है गये जो प्रीतम मा कुल है गये प्रीतम। २ मा दिए।
- (७) १ ए औ रवि आठौ मा है ए नीर पिना ती नी तपा। २ ए मैं वह सम्य नहीं है। ३ ए मय।

अर्थ—(१) बीस मास में बन-बाटिकाओं में कलसे (नए पत्ते) निकल आए, मीर [समस्त] बनस्पति में नहीं लाड़ी पहिल की। (२) बारों मीर भयरो का मुंजार हो गया, मीर डालों में पते मीर फूल बाहर निकल दिए। (३) कुसुमों ने डालों से सिर बाहर किए मीर तबवर बल-बाकाओं

क होने से पृथ्वी को प्राप्त हुए। (४) काम्युन में जो बुल पते झाड़ हुए थे वे सब चैन में हरे-भरे हो गए। (५) [किन्तु] बिना स्वायी के भूसे (मेरे जीवन-बुल के लिए) जो पतझड़ हुआ (माया) वह, हे सखी अभी तक मुकुलित नहीं हुआ।

(६) [मेरा] प्रियतम [बिरह का] भुज्य बेकर बता गया था जननी में जनबास के ही दिया था (७) और (पुनः) धूर्प आठवां [सारिखक भाव-मलय] होकर मेरे सिर पर प्रकाश करता हुआ तप रहा था।”

टिप्पणी—(१) गिर < बिस्तर < गिर < गृ + बाहर = निषलना। (२) वागुरि < पगुरी < पंथ < पत = पत्र। (३) बुगुम < कुमुम। (४) सार्ई < स्वायी। मौल < मउल < मूहुमपु = मुकुलित होना। माटी = अष्टम सारिखक भाव—प्रलय।

[४११]

गुनु बसाण सगी दुख^१ भारी । बन हरियर मोहि तन दी^२ जारी ।
जिह^३ मुग मज सगी^४ ह कनू । तिनह^५ मनव बसाण बमनू ।
पहिर पुहुप चाह बन भारी^६ । मोहि बसत पिय बामु उजारी ।
बिरहा पन्हि पन्हि जिउ जार^७ । किमि करि^८ मधु बसाण निपारी^९ ।
घरन घरन निबन^{१०} तरु पाता । कोइ पीत कोइ हरियर राता ।
मोर जोषन फर^{११} सुनु सगी^{१२} बामु^{१३} पियार नाह ।
फूल त घरती सरि पर^{१४} जउ मासति बन माह ॥

पाठांतर—(१) १ ए बैसाण गलि दूमर। २ ए मोहि तन दी।

(२) १ ए जहि। २ भा गलि मज रचन। ३ ए तहि।

(३) १ ए पहिर पुहुप जो रचै रा भाबहि जाबहि नमहि निपारी। २ रा मो बसत पिय बामु उजारी ए मैं बन डार डार पीन सारी भा भाहि बनत बाम पिय प्यारी।

(४) १ ए जिब दाहै। २ ए भा कै। ३ ए निरबाहै भा निबाहै।

(५) १ ए भा निमरे।

(६) १ भा ए मे वहाँ 'मठ' (बठ—भा) और है। २ ॥ मुन सगि। ३ ग ए बामु।

(७) १ ॥ कूरी (<कम ते आरपी गिरि) घरनी गरि वरी (<पर आरपी गिरि)।

अर्थ—(१) हे सखी गुनो; बैसाण भात मे [भूसे] जारी बुल का [जोकि] हरा [भरा] बन मेरे शरीर को हावायि से वण्य कर रहा था। (२) जिनकी गुन गय्या पर [उमरे] बसाण होने हैं उमरे लिए बैसाण के वसत में आर्षव होता है। (३) बन और बाटिका गुन [के आभरण] बहिनना चाहने थे [किन्तु] प्रिय के बिना भूसे (मेरे लिए) वसत उखाड़ था। (४) बिरह अपिपात्रिक संकुलित (हरा-भरा) होकर [मेरे] ओ को उगाता था, [इमलिए] रिन प्रकार मैं मधुमाञ्जरी बैसाण का निवारण करनी? (५) तपस्वी मे बर्ष-वष व पत्र निचने हुए थे कोई बीता कोई हरा और कोई माल था।

(६) मेरा यौवन हे सखी प्यारे नाच (स्वामी) के बिना कल रहा (कलने पर जा गया) था, (७) इस [यौवन-सख के] फूस बरती पर जाइ पड़े से जिस प्रकार बग में भातरी के।"

टिप्पणी—(१), (५) हरियर < हरिय + रा < हरित = हरा। (१) बी < बाब। (२) मुक्त-सेव < मुक्त-सय्या। कंत < कान्त = प्रिय। (३) (६) बाग < बग्न < बग्न = बिना। (४) पगहु < प्रगहु = मकुटित होना पणित होना। (५) बरन < बर्न = रन। राठ < रत = बाक। (७) सर < सर < सर = लबना बके बग-कलावि का गिरना।

[४१२]

जेठ सखी बिठ^१ पिठ पिठ लपा^२। सखिठा सहस सेव म लपा^३।
बिरहा गुपुठ हिए दी^४ साव। परगट आगि धूप^५ बरिसाव।
गुपुठ बिरह परगट रवि बह^६। किमि बुह दगध नारि निरबह^७।
जठ सखी मोहि निसि निन पहना^८। सीतरि^९ सख साइ कह^{१०} लहना^{११}।
सिन बिसराउ कर^{१२} जह बारा। बिरह आगि सह उठै दवाप।
एक बियोग दोसर^{१३} वनवासा तिसरे^{१४} कोइ न साव।
बीब^{१५} रूप बिहूनी मर^{१६} सी मिरिगु न हाव ॥

पाठांतर—आ म उपर्युक्त बर्ताधिको २ ३ ४ का कम है ४ २ ३।

- (१) १ ए जठ पीम सखि या जेठ जेठ सखी। २ ए जपा (गुप्त पूर्वकर्त्ता बरन का ए का तुक)।
- (२) १ ए हिय बी। २ ए प्रगटि आगि रवि खिग या परगट आगि सरव।
- (३) १ ए बहई। २ ए बहू दगिध राति निरबहई।
- (४) १ ए सीतल रा सीतकि। २ ए जेहि।
- (५) १ ए बिनाउ लीगु, या किएठ।
- (६) १ ए एक बियोग दुसरे। २ ए तिसरे।
- (७) १ ए बीबे। २ ए मरी।

अर्थ—(१) जेठ नाम में है सखी [मेरा] बीब 'प्रिय' 'प्रिय' कहता (रचता) रहा [जब] सूर्य सहस्र लेख [मुक्त] हो कर वन हो रहा था। (२) बिरह प्रकट रूप से हृदय में बाधात्मक बना रहा था और मूढ़ प्रकट रूप से [बाहर] बगि की बर्षा कर रही थी। (३) [इस प्रकार] गुपुठ (प्रकटन) रूप में बिरह बीर प्रकट रूप में सूर्य [मुझे] बाध कर रहा था [तब] भका किंतु प्रकार में नारी बीबी बर्षों (बर्षों) की जोकसी। (४) जेठ में है सखी मुझे रात-दिन बाध होना हुआ, [बयोधि] सीतल छम्मा भर ल्वापी को मैं बहूँ पाती? (५) एक भान बहूँ पर (बैसे ही) मैं बाका बिनाम करती, बहूँ पर (बैसे ही) बिरह की बाधात्मक उठ (लग) पड़ती। (६) एक तो बियोग या दूसरे वनवास था, तीसरे कोई भी साथ नहीं था (७) बीर बीब मैं बन-बिहूनी थी [इसकिण] सखी (मरणा बाहरी) थी, तो मृग्य हार नहीं आ रही थी।"

टिप्पणी—(१) रूप < रूप = बहना। (२) बी < बव = बाधात्मक (४) सीतर < सीतल। सेव < छम्मा। साइ < स्वामी। (५) बिसराउ < बिनाम। बरीर < बव = बाधात्मक।

[४१३]

दूनर सगा अमाइ जनावा । पयल पमरि^१ गगन दग्गवा ।
 कूजस^२ मय पाग्ह दूग फेरा । गमिनि जनु पांरम गहि बरा ।
 मा^३ अगोर भागुर मनबारी^४ । डाकि^५ उमी^६ दान हरियारो^७ ।
 पिरपी^८ मय अबर^९ अनुमारा । पियहि^{१०} पमन^{११} अबरउ^{१२} बारा ।
 गधि गधि छायन्हि^{१३} मणि अरामा । विगिय पगगन्ह^{१४} कीह नवामा ।

मोहि^{१५} मगा गा^{१६} दुग महु बाख्ह माय अमाइ ।
 अय निछ कर उपचार दइय^{१७} लागि जिमु मा हाइ^{१८} निम्मार ॥

पागलर—(१) १ ए गगन पमरि ।

(२) १ ग कूजस । २ ग निव । १ ग ये अर्द्धांकी । गिन परवा दामिनि
 पमरानी डाउ ग घरनी हरियाली (दे जयरी दा अर्द्धांनियी) ।

(३) १ ए मई जाग । २ ए भागुर पनारा भा गिनपी मनबारा । ३ ।
 डाकि रा डागु मा गहि । ४ मा उमी । ५ ग हरिभारा ।

(४) १ मा गिरपी मय अबर ए मय पिरपी कुआर । २ ए पीअ हीन ।
 ३ ए म महु पाग महु है । ४ ए भूरा ।

(५) १ ए पिय मा छयहि ग जयहि (?) । २ ए बिरग पगग ।

(६) १ ए मोहि । २ ग मा मा प ।

(७) १ ए बीअ । २ ग ज माग हा मा जहि हा मार ।

अर्थ—(१) ह सगो [तवनतर] दूनर आयाइ मास जान पड़ने लगा [अब] बपला
 (बिबली) ने बमर कर आवाग में [अग्ने की] लिखावा । (२) वेप-कुंजर ने दृष्टि करी;
 बाबिनो मानों उतवा बहुत बी । (३) भागुर की मनबारा का दौर होन लगा और दग्ग हुई [हीने
 कर बी] बम की हरीनिया उठ पड़ी हुई । (४) कुशी पर समस्त [बनरपनि] ने अदुर निजाने
 विनु प्रिय के हृदय में ये बासा प्रेम नहीं अदुलि हुआ । (५) [मोगों ने] रच-रच कर बोरियों
 और आवाली की छा लिया और पलियों ने बुलों में निजाल कर लिया ।

(६) मुने हेसगी आयाइ [को लेकर] बाख्ह महीनों का समय दुरा में [ही] मया
 (७) अब मू बी के लिए [लेरा] कुछ उपचार कर बिमने [लेरा] निम्मार (उदार) हो
 आए ।

गिणी—(१) दूनर < दुय < वृजगाय माय बाभा । (२) दूनर < दूनर = हापी ।
 (?) बारा < मशालम (?) < भाग्यान्त (?) । (३) उमी < उमिय < उमिय = उमी हुई ।
 (४) पिरपी < पुरपी ।

[४१४]

ताग^१ गात्र बबर जो ग^२ । गग गग गग^३ माय गग ग^४ ।

गो अग गग^५ माह मुह गगो । गो ग गग^६ गग^७ गग^८ गगो ।

जिन्हू^१ खोज न पाइउ^२ सोरा । मिहज जीउ प^३ तज न मोरा ।
 जसैं बिहू^४ रूप सउ^५ राता । जीउ तस बिहू^६ रस मांठा^७ ।
 कया^८ ओ^९ नहि पहुँच तुम्ह^{१०} ठाई । जिउ निसि दिन^{११} सो सभ^{१२} गोसाईं ।
 जस सउ^{१३} में तुम्ह बिछुरी^{१४} मुझ^{१५} बिसुरि बिसुरि ।
 जिउ तुम्ह^{१६} चरनन^{१७} तर जइ^{१८} संगीर सेउ^{१९} बूरि ॥

पाठांतर—(१) १ या तोरी ए सोरे। २ न कहिनु।

(२) १ ए कहहु। २ ए तुह। ३ ए फिरी जागन।

(३) १ ए काहूँ। २ ए पायेई।

(४) १ ए रा ली। २ ए तू वैं लैस बिहू^६ ली सांठा ना कएउ (< रूपउ)
 लैस बिहू^६ हिय माठा।

(५) १ ए काया। २ ए मे यह दाख नहीं है। ३ ए ना पहुँचै तुह। ४
 ए जोवन तु (< निसि फागसी निधि) दिन। ५ ए तुह सग ना तुम्ह
 पास।

(६) १ या सेतैं ए ली। २ ए मैं तुह बिछुरी। ३ ए मा मुई।

(७) १ ए सोहरे। २ ना बरन। ३ ए लीरा ली। ४ ए हुली ना हुल।

अर्थ—म(१) तुम्हारी खोज में यदि कुम्हार (सलीहुर) हो (बाए) तो मेरा एक-एक कुञ्ज तुम
 पसले होकर कहना (२) और ऐसा (मेरी यह बात) कहना है नाच तुम्हारे लिए मैं खोज (प्राप्त)
 का त्याग कर अन्ध के ली खंज बिर जाई (३) [किन्तु] कहीं भी तुम्हारा खोज न पा सकी। मेरा
 खोज निरन्तर है कि यह मेरा घड (घरीर) नहीं छोड़ता है। (४) जैसे बिहू ने [तुम्हारे] रूप
 से अनुराग कर रक्सा है उसी प्रकार [मेरा] खोज बिहू के रस से मत्त है। (५) यदि [मेरी]
 छाया तुम तक नहीं पहुँच पाती है तो [मेरा] खोज तो रात-दिन हे स्वामी, तुम्हारे बाए है।

(६) जब से मैं तुम से बिछुरी होइ करत-करत मैं मर गई; (७) यदि मैं शरीर से तुमसे
 दूर हूँ तो [मेरा] खोज तो तुम्हारे चरणों के तले है। "

टिप्पणी—(१) माह < माघ = स्वामी। (२) राव < राख = अनुरक्त। मांठ < मत्त।
 (३) कया < काया। ली < लउ < लहि। (४) बिसुर < बिसुर [बि०] = लेव करना। (५)
 बइ < बहि।

[४१५]

जब सउ सोरि^१ प्रीति जिय^२ जागी^३ । सभ^४ सेतैं^५ न परिवे^६ त्यागी^७ ।
 जसैं^८ मोर जीउ सोहि^९ पाही^{१०} । अपनउ जीउ रेहि^{११} मोहि^{१२} नाही^{१३} ।
 क यह^{१४} पेग पीर^{१५} हिय जती^{१६} । काढ़ि लेहु^{१७} मोहि^{१८} हिय तर^{१९} सेती^{२०} ।
 पम सभुव बूझउ^{२१} सुनु बावा । तुम्ह^{२२} जिन कोइ^{२३} न धीर नर^{२४} दावा ।
 बारो यह^{२५} कएउ तुम्ह^{२६} साईं । परगट जीउ लिपहु^{२७} बरिमाईं ।

तन काहल^१ लोपन रगन^२ जीमि रग^३ पिउ पीउ ।
जगन फिगिउ^४ पिउ^५ रूप हाइ हाबलिए मह^६ जीउ^७ ॥

वाक्यान्तर—(१) १ रा ए सब सी तार। २ भा त्रिय। ३ ए गही भा गीरी
४ ए सब सी भा सब सने रा सब सने। ५ ए परने छाडही भा परने
छाडी।

(२) १ ए तैव। २ रा ताहि पाहा ए मुह पाहा भा मुह पाहा। ३ ए
अपना जिउ देवु माहि नाना रा एव जीउ देव मरी माहि माही।

(३) १ ए वी सह भा की त्रिय। २ भा हहि जेनी। ३ ए लउ। ४ भा
मम। ५ ए मम ही मर। ६ भा मनी।

(४) १ ए बुझिउ न बडनि। २ ए ताहि। ३ न काउ। ४ ए भा न।

(५) १ ए पारी नेह मुह सावत रा जेरी मह साव मुह। २ ए जीउ त्रिय
न जिउ जीमि।

(६) १ ए मोइना। २ ए लोपन रगन। ३ रा जीमि री ए जीम री।

(७) १ रा ममह गण्ड ग्याट मही है। २ ए म यही 'व' बीर है। ३ ए त्रिय
देह। ४ भा मे नम बोले व स्थान पर है—

मुहारे वेम विरीम मरी न अनि म होइ।

मुह बिनु जानहु मणि पद बिरह मारी मोइ॥

अर्थ—(१) हे स्वामी जब मे तुम्हारी प्रीति [मेरे] श्री में अभी सब से बड़े लकी मे परिचय
रमाया (समाप्त कर) दिया। (२) जिस प्रकार मेरा जीव तुम्हारे पास है उसी प्रकार, हे नाथ
तुम अपना भी जीव लगे दो, (३) अथवा [मेरे] हृदय में यह त्रिपती प्रेम-सीमा है वह [मह]
मेरे हृदय मे निरास ली। (४) मैं [तुम्हारे] प्रेम-मन्दिर में दूब रही हूँ और मेरी [मह] बाल
सुनी, तुम्हारे बिना मुझे कोई बर्य वेन बाधा नहीं है। (५) हे नाथ तुमने बोरी-बोरी मल से स्नेह
लपाया (बोझा) बिनु [मेरा] जीव तुमने अनपूर्वक प्रकट कर दे है किया।

(६) [जब मेरा] शरीर कोरल बना, लोचनों मे रक्त [के अणुओं की] धारण किया
और मेरी त्रिभुजा पिय-पिय गटती रही (७) पिय-वच होकर और हाथ में यह जीव निपट
मैं अब न माथ में छिपनी रही [बिनु तुम्हें न पा सकी]।

टिप्पणी—(१) काह<काव=स्वाभा। (२) जग<जतिम<मावन्<जिना। (३)
मेह<स्नेह। माई<स्वामी। मणिपद<बनाय। (४) काहल<कोरल। रगन<रगत।

नर गउं नन गमान^१ आ^२ । निमि धाम^३ रोवन माहि^४ आई ।

मविनु ग^५ गी^६ गारा राई । नन गगन^७ भगु मउ^८ पा^९ ।

पिया अति^{१०} भ^{११} बिउ माही । मुह^{१२} पिना बिमग गम नाही^{१३} ।

सम^१ चिता सतें चित^२ भागा । जब सेतं^३ तोहि^४ चिता चित लाग^५ ।
जहि मारग बात्म^६ पगु धारु^७ । मो कह पय^८ रेनु क डारु^९ ।
परग परग मे^{१०} चाहो यह जित^{११} आरति दतं ।
जो विधि घट मह एक^{१२} जित सिरत^{१३} तो^{१४} काह^{१५} करतं ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए जब सा नैन समानेन ए जब सौ नैन समानेन । २ ए मोहि ।
(२) १ रा यह अचरित ही ए अचरित दई जो भा अचिनु एह मै । २ ए
तुह जनु सी रा तुम्ह जनु भा तुम्ह जनु सी ।
(३) १ भा चित । २ ए जहै भा दई । ३ ए तुह । ४ भा चितत ।
५ ए बिसरा सब माहा भा सब बिसरेन माहा ।
(४) १ ए अब भा सब । २ ए चिता चित सी । ३ ए जब सी तुह रा जब
सा ताहि भा जब सा तारि । ४ ए जागा ।
(५) १ ए बन्धु । २ ए डारु (< डारु फारमी लिपि) । ३ सोइ पंख
मोहि रा मोहि किन मग ।
(६) १ ए पै भा पर । २ ए येह जित कहत सी ।
(७) १ ए यह । २ ए सिरा । ३ ए म यहाँ मै जीर है । ४ रा काह
ए काह ।

अर्थ—(१) जब से तुम [मेरे] भोजी में जा समाए, रात-दिन मुझे रोते ही जाता है । (२) आत्मचर्य यही है कि मैं सतत रोती रही फिर भी तुम मेरे बन्धुओं में से योए न जा सके । (३) मेरे चित में जितनी भी [अप्य] चिताएँ हुईं तुम्हारी चिता से मेरे चित में उन सब को विस्मृत कर दिया । (४) समस्त चित्तार्थों से [मेरा] चित भाग (डूर चला) गया जब से तुम्हारी चिता से [मेरा] चित लगा । (५) है प्रिय तुम जित भाग से जानो मुझे उस भाग की रेनु (धूल) क्या को ।

(६) मैं चाहती हूँ कि एक-एक पग पर मैं तुम्हें इस जीब [को बीप की भाँति जलाकर उस] की मारती दूँ । (७) यदि [किन्तु] विधि से [मेरे] शरीर में एक ही जीब का सूजन किया है तो [इसलिए] क्या कहे ? [निबध्ना है कि एक ही जीब जाली कर सक्षी] ।
टिप्पणी—(२) अचिनु < आचर्य । सतत < सतत = निरंतर, सदैव । बन्ध < बन्धु = नेत्र । नेत्र । (३) जेत < जेतन < बावन् = जितना । माह < माव । (४) बात्म < बन्धन = प्रिय । (५) सिर < सुन् = बनाता निर्माण करना । काह < किन् = क्या ।

[४१७]

भहत रेनु मगु पिय तोहि^१ ताई^२ । मरु कसहु^३ सागहु^४ तुम्ह पाई^५ ।
जो भर हुतें^६ जित निसरे मोरा^७ । तो पर हुतें दुग जाइ न तोरा^८ ।
पेम बिछोह दहु जनि माहा^९ । करहु जो तुम्ह भाव जित माहा^{१०} ।
जो सई हाव माह^{११} पिय मोही^{१२} । सौ^{१३} जित दउं एव का तोही^{१४} ।
जो कलि जीत^{१५} दिण प मोरें^{१६} । कस म मुएज जित ताहि निहोरें^{१७} ।

तुम्ह मन^१ जानन विछुरे^२ भट विराना^३ महु ।
जउ जेउ बाङ्गहि नहर^४ उठ उठ अधिब मनहु ॥

पाठान्तर—

मा ए में उरुवत बङ्गीसियाँ २ तथा ३ परम्पर स्थानान्तरित हैं ।

- (१) १ ए मई रेनु महु ('महु परम्परी' रूप में भी आता है) लफ पिड ।
२ मा. जाए । ३ ए महु काँरी तुह पीर पराई रा महु बंमेहु लामिन तुह पाई ।
- (२) १ ए जी जिउ ठह मा जी बर हुन । २ ए ली जिउ हुने मा जिय हुन
दिमरि । ३ मा न जा कुन ठारा रा जिउ जाइ न सोग ।
- (३) १ ए माहा । २ ए तुह । ३ ए माहा । ४ मा बीस बरहु उठ विछु
जिय माहा ।
- (४) १ ए जी हाथ मायु मा नई हथ मायु । २ ए माही । ३ ए मा ली ।
४ ए लोही ।
- (५) १ मा बान्हि । २ मा में यह गाय नहीं है । ३ ए जिय निज माने मा.
जिण निजु मारे । ४ ए मा जानु देउ बिज लोरे (ताहि—मा) निहोरे ।
- (६) १ ए नू हय । २ ए विछुरे । ३ ए मई विराना ।
- (७) १ ए बाई देवहरा मा बाङ्गहि देवम बिब ।

अर्थ— (१) तुम्हारे कारण ही मैं माय की रीज इमलित बन गई हूँ कि समय है किसी भी प्रकार से मैं तुम्हारे पीछे मैं लम सकू । (२) यदि बाँ (मरीर) से मेरा जीव निकल भी जाए, तो इस बाँ (मरीर) से तुम्हारा (तुम्हारे बिछु का) कुरा नहीं निकलेगा । (३) हे माव तुम [अपना] जेव [जनि] बिछोह [मुझे] नहीं [इसके अनिरिक्त] का कुछ भी मुझे [तुम्हारे] चित्त में आए, तुम करो । (४) हे जिय यदि तुम स्वयं (अपने) हाथ से मर्मे मार डालो तो मैं मुझे एक क्या सो जीव । (५) और यदि जीव (मायों) को कैने बर हो मुझे बनि (प्राप्ति) मिलनी है तो मेरा जीव [अथ तब] तुम्हारे निहोरे [निमित्त] मैं क्यों नहीं बरा ?

(६) तुम यह मन लगानो कि विषय होने से पुराना स्नेह यह जन्मा है (७) रित जिनने ही बड़त (अपित होने) जाने हैं स्नेह भी उतना ही अपित हुआ जाता है ।

टिप्पणी—(१) पा < पाह = पीह । (२) पा < पाह [>] = पाह पा के बीच का पीह ।
(४) मा < मयम् । (६) बिगना < बिगपार < बिगनन = पुगनन प्राप्ति । (७) देवरा
< देवरा < देवन = निन ।

[४१८]

जिनि जानउ^१ दुग जह मणि^२ मरा । मोर बटन मुग आगन बहा ।
पाव मणि मयु बिननी कीहो^३ । पुनिभाणमु^४ बाङ्गिह^५ बर दोन^६ ।
बारो नबम बारि मर^७ गए । पमा बार ठाङ्ग^८ म म ।
ग पमरि प्रनिहार जनावा । मधुमाश्रि बर बागे आवा ।
मूनि^९ मधुमाश्रि माउ^{१०} बमारो । भाई बनो बार जन्म बागे^{११} ।

आगे^१ म सय बारा^२ पमहि कीत ओहार ।
पाती दीन्ह कहा^३ मुस आवय उहाँ व अस^४ बवहार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा आगेउ ए माफा । २ ए सगु ।

(२) १ ए ओम्हा मा गही । २ ए आवेस । ३ रा म पारी । ४ ए दीन्ह मा सिही ।

(३) १ ए मा । २ ए ठाढ़ि ।

(४) १ ए पुनि । २ ए राज । ३ मा उठि बनि आई बार पापारी ए उठि बनि आई जहा होनी बारी ।

(५) १ ए आवे । २ ए मा बारिह । ३ ए किया रा कीन्ह ।

(६) १ ए पुनि पाली ई मा पुनि पानी ई । २ ए पेमा जो कस मा उहा क सब ।

संक्षेप—(१) चलने जहाँ तक भी [उसका] कुछ या [पक्ष के रूप में] मिलकर [बारियों के हाथ पेमा के लिए] अल्प किया और बहुत-कुछ पक्ष के असर्गों द्वारा भी चलने कहा । (२) मधुमास्तवी में [पेमा के] वीरों सन कर बिमली की और फिर बारियों को [प्रधान का] आदेश दिया । (३) वे बारी बार दिनों में बहोने और पेमा के द्वार पर आकर खड़े हुए । (४) प्रसिद्धार ने आकर पेमा से बताया कि मधुमास्तवी का बारी अग्रा है । (५) सुबारी (पेमा) मधुमास्तवी का नाम सुनकर द्वार पर बनी आई जहाँ बारी का ।

(६) तब बारी ने आगे हो (या) कर पेमा को कुहार (नवकार) किया (७) और पत्रिका देकर पक्ष के असर्गों द्वारा जहाँ का सैरा बवहार (कुशल-समाचार) था, कहा ।

टिप्पणी—(१) जाफ < अप्य < अप्य = पेमा घेत करना । (१) (७) आकर < बसर । (३) (५) बार < बार < द्वार । (७) पाती < पत्रिका ।

[४१९]

पाती पढ़ि पेमा तस^१ रोई । कीन्हसि^२ सत म्याम चखु^३ घोई ।
बहुरि कह बारी^४ सत^५ बारा । कहि^६ दिनहुत^७ उन्ह कंवर बहारा^८ ।
छहि निन हुत^९ म कोस म पावा^{१०} । दह^{११} ह मियत कि भारि अवाका^{१२} ।
मधमास्तवी^{१३} कोसि के^{१४} आई । तहि बगवानत^{१५} मोह न आई ।
जई न कीन्ह^{१६} पुहिता पर छोह^{१७} । पर जिउ यपम ताहि^{१८} किउ^{१९} मोह ।

जो तहि दिन होइहि जिउ उबरा^{२०} ओहि सत^{२१} राजकमार ।

निम्नी आईहि मनोहन^{२२} जो न पराजम थार^{२३} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा पढ़ि पेमा बति ए पढ़त पेमा बति । २ ए ओतेमि (< कीनेसि ?) ३ ए चख ।

(२) १ रा बारी नों ए मा बारिह सों । २ मा बेहि । ३ ए हुती य सों । ४ ए मे यह यव नही है । ५ ए अवाका ।

- (३) १ रा सों ए हुते। २ ए गाव न पाये भा गोज न पाण्ड। ३ ए बह। ४ ए मारि बडाये भा मारि बडाएउ।
 (४) १ म भा हुति। २ एकाव की भा कोरि। ३ ए तेहि दग माहि।
 (५) १ ए प न किमा। २ रा वर। ३ रा बापन लहि। ४ भा वम ए वत।
 (६) १ ए ज तेहि दिन होइहे जित उपर, ग जी तेहि दिन ए बाभा। २ रा ए बाहि मो।
 (७) १ ए मित्पे जाहिहि मोहि पहे रा जाइहि ना ए पुनर मिदु। २ भा होइहि जाहि अवार।

अर्थ—(१) उस पत्रिका को पढ़ कर वेसा बैठा (ऐसा) सीई कि उसने क्याम बकुओं को द्येन कर डाला। (२) वह बाला पुनः (तबतः) बारी से बहने लगी “जित दिन से उन लोगों ने कुमार (मनोहर) को [हुर] डाल दिया, (३) उस दिन से मैंने उसका तयाबार नहीं पाया कि वह बीता है कि मार डाला गया है। (४) मधुमासवी उसकी कुति है उत्पन्न की और उसे बनवाता हैते हुए [उसकी माता को] मोह न हुआ (५) [तो] जिसने [अपनी] कन्या पर क्या न की उसको दूसरे का बीच मारते वहाँ मोह हो लक्षता है?

(६) यदि उस दिन कुमार के प्राण उससे उबर (बच) पाए होंगे (७) और यदि वह बाल (मृत्यु) को पारा में न पड़ा होगा तो मनोहर निश्चय ही [वहाँ] आवेगा।

टिप्पणी—(१) सेत < सेत। चतु < चतु < चतु = चत। (२) बारा < बाला। (४) कोरि < कुति = उबर गट। (५) जित < कुत = बहो। (६) जी < जत < यदि। उबर < उबर < उर + पु = गत रहता बच आता।

[४००]

उल्ले का मोहि पूछि पठाइन्हि। उन्ह पूछिय ग^१ कहां बडाइन्हि।
 जी मो जियन होइहि^१ जग माही। रहिहि न बिन माग माहि^१ पाही।
 रोव बंवरि क्या जित^१ बाड़ी। वह बात मारी मउ^१ छाड़ी।
 ओइमहि^१ आइ मगी एव घा^१। कहमि बंवरि आण्ड तुम्ह^१ प्रा^१।
 जोगी एक^१ कृप उताही। मा बा^१ हो^१ सी^१ बागी।
 म उता^१ कृप व मग^१ घा^१ आ^१ तुम्ह^१ पाग।
 नि^१ आ^१ मनोहर माछे भग^१ उताग ॥

- पडा गर—(१) १ ए उल्ले का माहि पूछि पठायेनि। २ रा वे जानहि दृष्ट ए उग गूढी है।
 (२) १ भा जी जीवन हा^१ ए जी रे निज न हा^१ है। २ ए रही न बिन बाय न निरपे मो जाइहि माहि।
 (३) १ ए भा रोई पुनर (< पुनरि : फारसी निरि) नाव डर। २ बा^१ मो भा बाणि^१ मउ रा बारी गा।

- (४) १ भा एहि मई ए मोहसहि। २ ए आबा तोर रा तुम्ह भाई।
 (५) १ ए में यहाँ है और है। २ ए बाहर भी। ३ ए भीमहि।
 (६) १ राई देसे ए एक बेवा। २ ए चाई बाइ तुम रा ती आइत तुम्ह।
 (७) १ ए निरख आइहि, ना निरख बाइ। २ ए किउ रे मेह रा काछे मम।

अर्थ—“(१) उन्होंने उससे मुझसे क्या पूछा जेना है? बुझना उन्हीं से चाहिए कि उन्होंने [मनोहर को के] बन्दर कहा जाता। (२) यदि वह [इस] संसार में जीना होना तो वह बिना मेरे पास आए न रहेगा।” (३) कुमार (वेमा) जरीर से जीव (मानों) को निकाल (झोड़) कर दो रही थी और लड़ी-लड़ी घाटी से बाहर कर रही थी। (४) बीते ही (इतने ही में) [उत्तरी] एक लकी बीड़ी बाई और उसने कहा ‘हे कुमारो लच्छार भाई आया है। एक योपी उस कुमार की अनुकृति का आया है, उसे द्वार पर हो (आ) कर पहिचानो।

(६) मैं [उस] कुमार की अनुकृति का [उत्ते] देश कर तुम्हारे पास बीड़कर भाई (७) वह निरूप ही मनोहर है [आ] उवासीय (निरूप) का शेष कारण किए हुए है।

टिप्पणी—(२) बिबल < बीबल। (५) (६) उनहारी < अनुबाह < अनुकार = अनुकृति आकृति।

[४२१]

कुंवर नाउ सुनतहि उठि^१ भाई। ममा गही^२ खलि चारहि^३ भाई।
 कुनि^४ जो बीठि^५ कुंवर पर परी। हिय ठर^६ मोह आनि^७ परजरी।
 पमा^८ धाइ कुंवर गिय^९ लागी। छातिइ यरी मोह क^{१०} आगी।
 दया बित सहि दखत होई। परिग्रही विनु साथ न कोई।
 मांसु न रहा कया महु राती^{११}। लागी^{१२} जाइ हाइ दुख वाती^{१३}।

दुख गहा बिगड़ वहा^{१४} जित रहा मिलन अवार।

मम बिछोह होइ अनि काहु^{१५} जमम^{१६} एहि^{१७} सयसार^{१८} ॥

- वाक्यान्तर—(१) १ ए नाम सुनत। २ मा ममा। ३ ए खलि। ४ ए बाहर रा बाहिर।
 (२) १ रा ए पुनि। २ ए बीठ। ३ ए हीपर, रा हिर। ४ मा अविनि।
 (३) १ ए भा। २ ए मा छाती (छाती—मा) परी पेम की।
 (४) १ ए सबि यरी रा महवई। २ ए आगी। ३ रा पुज गई, ए दुख जाती।
 (५) १ ए कुंवर बाबे बिछो जरा। २ ए मट मा अह मिमल अवार, भा जीठ मिमल आवार।
 (६) १ मा होइ बिधि रा बिहू अनि कोई। २ ए जग रा जीवत। ३ मा बाह। ४ ए संसार।

अर्थ—“(१) कुमार (मनोहर) का नाम सुनते ही (वेमा) उठ बीड़ी और अमता ग्रहण किए हुए वह द्वार पर खड़ी आई। (२) तबनाम उत्तरी कृष्टि जो कुमार पर लड़ी ती उसके हृदय

में मोह (ममता) की आग प्रज्वलित हो उठी। (३) वेमां बीड़वर कुमार के गले से लग गई और उसको छाती में मोह (ममता) की आग जल उठी। (४) उसको देखते हुए चित्त में क्या [उत्पन्न] हो रही थी और उसके साथ उसकी प्रतिष्ठाया के अतिरिक्त कोई न था। (५) मांस उसकी बाया में रसी भर नहीं था [बर्षादि] उसकी हड्डियों में जा (पहुँच) कर कुल की वत्समी लगी हुई थी।

(६) उसका जीव कुल से गृहीत और बिरह से हृष्य होकर बचल [प्रिय से] मिलने [की आशा] के ल्हारे [शरीर में] पड़ा हुआ था। (७) [मगपान करे] बिग्री को रिमी जगम से हल संसार में प्रेम [जनित] जियोप न हो।

टिप्पणी—(१) बार < बार < डार। (२) बीठि < दुष्टि। (३) । गिय < गिव < गीय। (४) परिछाही < प्रतिष्ठाया। (५) रसी < रसी < रसिका = पुत्र की चपचा च बगबर का ठीक। (६) बानी < कसी < वत्समी = वत्समी।

[४२२]

मुननहि^१ राज कुंवर ब^२ माऊ । बाजा चित विमगउ यपाऊ^३ ।
वेमां फुनि^४ कंडर[हि] मय लाई^५ । आगे बिए^६ मरि^७ आई^८ ।
बन्मि बीर अब पावहु^९ क्या । मिद्धि पूरि तुम्ह अपुण^{१०} पया ।
मुग अगुसरि आनर ब^{११} सहू^{१२} । दुग बहू^{१३} उठि जण अजुनि वहु^{१४} ।
बीती तुम्ह^{१५} दुग निमि अधियारी^{१६} । अब दुग अन^{१७} मुस्य उनिपारी^{१८} ।

मतरहि^{१९} पम अमोघ वधि जोवा मरनि^{२०} अघरि^{२१} ।

पार कुमल जो उतरहि^{२२} मिधि साहम क^{२३} घरि^{२४} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मुनते। २ ए भा राज कुंवर की (बर—भा) माया। ३ ए बाजा। ४ ए भा बयाबा।

(२) १ ग पुनि ए मुनि। २ ए नी बहई या मय लाई। ३ ए आग रिने या आगे गिया। ४ भा माबर। ५ रा में पड़ पाद नहीं है।

(३) १ ए भा मिधि पूरी तुह (भी तुम्ह—भा) गायग।

(४) १ ए मुग अगुसरि आनरी बीगा या मुग अगुसरि आग से लड़। २ ॥ के भा की। ३ ए गिन अजुरी बीठा या जग अजनि देह।

(५) १ ए तुम्ह। २ ए अधियारी। ३ ग वगिरि दुग ए अब दग अनर। ४ रा मुग अनम मारी।

(६) १ ग गीगु ए मरन। ३ ग जीवा मय अघरि ॥ भा रिम (रिज—भा) अग गुष (ब—भा) अरि (अघरि—भा)।

(७) १ ए कुमल नी उतरहु या मा कमर उतरहि। ए बा। ३ भा बरि।

अर्थ—(१) राजकुमार का नाम मुनते ही चित्तविषय नगर में बयाबा बजा। (२) तबनर वेमां कुमार को लग गिर उले आले बिए हुए बरि (राजबनर) को ले आई। (३) उलने बजा १ भाई अब मयमा गुरहो का बाज उतारो बघरि [अब] मुनते [अनते] अजुरे [लापना] बघ में सिद्धि प्राप्त कर ली है। (४) अब तुम अघनर होकर दुग की आदरबुध बहू बरी और दुग

को बलाजति वा [क्योंकि वह मर चुका है]। (५) तुम्हारी कुछ की खेरी राशि बीत गई और अब [उस] कुछ [की खेरी राशि] के अंत पर कुछ की उबालो है।

(६) बोवा (मरजीवा?) अपनी शक्ति के अधिकार बराबर (शक्ति भर) प्रेम के अमोघ (अख्यर्थ?) बल का संतरण करता है। (७) [यदि] वह कुशलपूर्वक [तमूत्र के] पार उत्तर जाता है तो सिद्ध [उसके] साहस की खेरी हो जाती है।

टिप्पणी—(१) अबाव < बडाबण < बडापन = अशुभ अबाव हृष-सूचक वाच। (४) अमुसर < अगसर < अघ + सु = आवे जाना। (६) सकति < शक्ति। अवरि < अधिमार < अधिकार। तु 'सकति अवेर'— 'सत कबीर' मउड़ी ४६९। (७) चेरि < चेटी = बासी।

[४२३]

फुनि^१ सभ समाचार जेत^२ अहा^३ । पेमें राज कुवर सउ^४ कहा ।
 ओ मधुमालति लिखि जो^५ पठावा । सो सभ^६ कुंवरहि बाधि^७ सुनावा ।
 फुनि^१ कागर मसि मांगी^८ बारा । पाठी उत्तर^९ लिख अनुसार ।
 प्रथमहि^{१०} उतपति नाउ बिधाता^{११} । ती^{१२} फनि^{१३} राजकुवर कसकाता ।
 और बात नहि^{१४} लिखी समारी^{१५} । दसि जात हहि^{१६} कहिहहि^{१७} वारी ।
 म का लिखी जोनि बिधि आएउ^{१८} राज कुंवर मम ग्रह^{१९} ।
 मासा मासु न तन रहा^{२०} रगत न राखी^{२१} ग्रह ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए पुनि। २ ए जो। ३ ए अत। ४ मा आहा। ५ ए सो रा मा सौ।

(२) १ ए मे यह अर्थ नहीं है। २ मा फुनि ए सब। ३ ए बात।

(३) १ रा ए पुनि। २ ए कागब। ३ मा मा ए मागेउ। ४ ए अवन। ५ रा लिखि।

(४) १ ए प्रथम। २ ए करता की जाता। ३ ए जी। ४ रा ए पुनि।

(५) १ रा सभ। २ ए कहा बिचारी भा लिखहि संघारी। ३ मा हहि रा है। ४ रा कहिह मा कहिहहि ना कहियहि।

(६) १ रा बीस मधु, मा जीविधि। २ रा अबहू (?) ए मे यह अर्थ नहीं है, मा जानेउ। ३ ए कुंवर अब मन माह।

(७) १ मा रखी। २ ए रखी रगत मा रा रखी रगत नहि।

अर्थ—(१) तदनंतर जिसका समाचार था वह [सभी] वेसों के राजकुमार (मनोहर) से कहा, (२) और मधुमालती ने जो कुछ लिख भेजा था, वह सब उज्जने कुमार को पढ़ कर सुनाया। (३) तदनंतर बाता (वेसा) स्वाही और काणब मांग कर पत्रिका का उत्तर लिखने लगी (४) पहले आदि में ही बिधाता (सुखि-निपायक) का नाम दीधना, और उसके अनंतर राजकुमार

का कुत्त [आपना]। (५) और बानें मैंने यह सोच कर नहीं लिखी कि बारी बैठकर जा रहे हैं और वे उन्हें करेंगे।

(६) मैं क्या लिखूँ जिस प्रकार राजकुमार [यही] मेरे घर आया। (७) उसके घातेर में न एक माग मांस [लेव] रहा है और न रसी भर रबन [लेव] रहा है।”

टिप्पणी—(१) जेव < जतिव < जावन् = जितना। (५) गमाव < ग + भाव् = गमराव करना माचना। (७) रगत < रवन। रानी < रविनवा = धूपुषी धूपुषी के बगलर तीन का परिमाव।

[४२४]

म जानां तहि जिन सुम्ह^१ माग। न पगबन न समुद पबारा^२।
मोहि नहि अही^३ कुंवर क^४ आमा। अरममार आणउ^५ मोहि पामा^६।
मैं बाहि^७ जितत दगि^८ सिधि पाई। एहि अग्न सुम्ह^९ पानी आई।
अगिनि मांह जस जग^{१०} परानी। अनधीन^{११} मिर अगिने पानी।
तग मग्न भाणउ^{१२} कुंवर^{१३} मूनि पाती। डरिउं हरगि अनि बिहरे^{१४} छाती।^१
जो निह^{१५} जिय माहें^{१६} ओन्वा सुम्ह यह काज।
आइ निर^{१७} भ^{१८} उगगहु मउ^{१९} आपन मभ^{२०} माज^{२१}॥

पाठान्तर—(१) १ ए मू। २ मा अहारा ए अहारा।

(२) १ मा न बाहि ए न हुती। २ मा की ए केर। ३ न अरममार
आणउ मा भा अरममार आयेउ ए सिधि मैं आउ जायु। ४ ए माहि।
५ भा बापा।

(३) १ मा = बाहि। २ ए देगु। ३ ए मुग।

(४) १ ए जरी। २ ए जयु।

(५) १ मा भा कुमरहि। २ ए डरिउं हरगि अनि बिहरे मा डरिउं हरग
न रिगरे मा डरीओ हरग अनि बिहरे। ३ ए मे अउरिनी वर पाउ १ —
तम वग भो कुमर पति बारी। मू वा जानहि देव वारी।

(६) १ मा निरपे ए भा निरपे। २ मा ए माहे। ३ मा उदपउ मग्न
मग्न = उगगा तै येह मा उगगउ डिर मग्न।

(७) १ मा मैं रा हूँ। २ ए मैं। ३ मा ए अपने भा अपने। ४ ए
मा। ५ मा काज।

अर्थ—“(१) मैंने तो जाना (समझा) था कि तुमने उमे उनी दिन भार डाला [होगा]
और वा तो बर्तन भर वा लकड़ में उमे बँट दिया होगा। (२) मुझे कुमार [के जीवित रहने] की
मागा नहीं थी : वह तो अरममार मेरे पास आया। (३) उसको जीवित बैठकर [बायो] मैंने
बिचि प्राप्त की और इनी बीच तुम्हारी कविता [बी] का पाई। (४) जैसे अग्नि में अपने हुए
बायो के मिर वर अग्निवायु एवं वे पानी की बर्बाद हुआ। (५) बँवाही मुझ कुमार को [तुम्हारी]

को असाजित हो [क्योंकि वह भर चुका है]। (५) तुम्हारी कुछ की अँधेरी रात्रि बीत गई और अब [उस] कुछ [की अँधेरी रात्रि] के अंत पर सुख की उजाली है।

(६) जीवा (भरजीवा ?) अपनी शक्ति के अधिकार बराबर (शक्ति भर) प्रेम के अमोघ (अघ्यर्ष ?) जल का संतरण करता है। (७) [यदि] वह शुश्रूषणपूर्णक [समुद्र के] पार उतर जाता है तो सिद्धि [उसके] साधुस की चेरी हो जाती है।

टिप्पणी—(१) बचाव < बड़ाव < वर्षापन = अभ्युदय अथवा हृष-सूचक वाच। (४) अभ्युसर < अगसर < अघ + सू = जाने जाना। (६) शक्ति < शक्ति। अघेरि < अधिहार < अधिकार। तु 'शक्ति अघेर'— 'सुख कमीर' बरही ४६६। (७) परि < पटी = दासी।

[४२३]

फुनि^१ सम समाचार जत^२ अहा^३ । पेमें राख कुंवर सत^४ कहा ।
 श्री मधुमालति लिखि जो^५ पठावा । सो सम^६ कुंवरहि बाधि^७ सुनावा ।
 फुनि^१ कागर मसि मांगी^२ बारा । पाती उतर^३ लिख अनुसाय ।
 प्रथमहि^४ उत्तपति नाउ बिषाता^५ । ती^६ फुनि^७ राखकुंवर कसलाता ।
 और बात मंहि^८ लिखी समारी^९ । दक्षि जात हहि^{१०} कहिहहि^{११} बारी ।
 में का लिखी जोमि बिधि आएउ^{१२} राख कुंवर सम ग्रह^{१३} ।
 मांसा मांसु न तन रखा^{१४} रगत न राती^{१५} दह ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए फुनि। २ ए जो। ३ ए बत। ४ मा बाहा। ५ ए सी रा आ ता।

(२) १ ए मे यह सख्य नहीं है। २ मा फुनि ए सब। ३ ए बाव।

(३) १ रा ए फुनि। २ ए कागर। ३ मा मा ए मागेउ। ४ ए अपम। ५ रा लिखि।

(४) १ ए प्रथम। २ ए करता की बाता। ३ ए सी। ४ रा ए फुनि।

(५) १ रा सम। २ ए कहा बिचारी भा लिखहि समारी। ३ मा हहि रा है। ४ रा कहिह मा कहिहहि भा कहिमहि।

(६) १ रा बीस मनु, मा जीबिधि। २ रा अबहुं (?) ए मे यह सख्य नहीं है भा जानेउ। ३ ए कुंवर अब मन मंहि।

(७) १ मा रही। २ ए रही रक्त मा रा रती रक्त नहि।

अर्थ—(१) सर्वप्रथम जितना समाचार था, वह [सभी] वेना में राजकुमार (मनोहर) से कहा, (२) श्री मधुमालती ने जो कुछ लिख भेजा था वह सब उसने कुमार को पढ़ कर सुनाया। (३) सर्वप्रथम बात (वेना) त्याही और कागज लान कर पत्रिका का उत्तर लिखने लगी (४) पहले आदि में ही बिषयता (शुद्धि-विधानक) का नाम बीचमा और उसके अनंतर राजकुमार

का कुशल [आना]। (५) और बालों में यह सोच कर नहीं लिली कि भारी देखकर जा रहे हैं और वे उन्हें कहेंगे।

(६) मैं क्या लिखूँ जिस प्रकार राजकुमार [यही] मेरे घर आया। (७) उसके शरीर में न एक माता मांस [सोच] रहा है और न रसी भर रक्त [सोच] रहा है।"

टिप्पणी—(१) जल < जलित < पावन् = जितना। (५) गभार < ग + भार्ग = स्मरण करना माचना। (७) रक्त < रक्त। रसी < रसित = पुपुषी पुपुषी क बराबर हीम का परिमाण।

[४२४]

मैं जानाँ तहि दिन तुम्ह^१ माग^२। क परबन क समुद पवारा^३।
मोहि नहि अहो^४ कुब^५ क आमा^६। अरममा आणउ^७ मोहि पामा^८।
मैं आहि^९ जितत दगि^{१०} निधि पाई^{११}। एहि अमर तुम्ह^{१२} पाना^{१३} आई^{१४}।
अग्नि मांह जम जग^{१५} परानी^{१६}। अनबीनें मिर दगिने पानी^{१७}।
तम मुग भएउ कुवर^{१८} मुनि पानी^{१९}। इरितं हरगि जनि बिहर^{२०} पानी^{२१}।
जो निहच^{२२} प्रिय भाह^{२३} जोन्हा तुम्ह यह काज^{२४}।
आइ निरत म^{२५} उतरहु गउ^{२६} आपन गम^{२७} माद^{२८}॥

वाक्यान्तर—(१) १ ए नू। २ मा अहारा ए अहारा।

(२) १ मा म आहि ए न हुनी। २ मा की ए केन। ३ रा अरममा आणउ मा मा अरममा आणउ ए निधि मैं माउ बावू। ४ ए नहि। ५ मा आमा।

(६) १ मा ए बाहि। २ ए देगु। ३ ए तुम।

(४) १ ए जरे। २ ए जगु।

(५) १ मा मा कुमहि। २ रा दगि हरगि जनि बिहर मा इरितं हरग म निरत मा इरिता हरग जनि बिहरी। ३ ए मैं अहोनी का पा है — मम मुग को कुवर एहि बारी। नू का जानहि देकर मारी।

(६) १ मा निरत ए मा निरत। २ मा ए मादे। ३ मा उदयेउ मुग दमह ए उन्हा मैं देह मा उतरहु निरत।

(७) १ मा मैं रा हाउ। २ ए मैं। ३ मा ए आपने मा जान। ४ ए मैं। ५ मा काज।

अर्थ—“(१) मैंने तो जाना (लज्जा) था कि तुमने उसे उनी दिन बार डाला [होगा] और था तो परत कर या समझ मैं उसे केक दिया होगा। (२) मुझे कुमार [के जीवन रहने] की याद नहीं थी : वह तो अरममा मेरे पास आया। (३) उसको जीवन देखकर [मारी] मैंने निधि प्राप्त की और दली बीच मुगारी बचिवा [भी] आ गई। (४) जैसे अग्नि में जलने हुए पानी के निर कर अमर्यादित रूप में पानी की वर्षा हो जाए (५) वीनाही मुग कुमार को [मुगारी]

पत्रिका सुनकर हुआ; [उत्ते इतना हर्ष हुआ कि] मैं डर गई कि कहीं हर्ष [के अतिरेक] से उसकी छाती न फट जाए।

(६) यदि तुमने निष्पक्षपूर्वक अपने जी में इस कार्य को कर (ठान) लिया है (७) तो तुम अपने समस्त साध के साथ निकट आकर उतरो तो।”

टिप्पणी—(१) पवार < प्र + वारप् = फेरना। (२) (५) पाती < पत्रिका। (५) बिहर = वि + बद् = दूरना फटना। (६) ओटब < आउट < आ + वृप् = करना। (७) सेउ < सम = साथ।

[४२५]

जो हम यह^१ जानहि^२ निजु माऊ । एहि बिसि हम किछु^३ करहि उपाऊ^४ ।
जो^५ निहच^६ करिहु^७ यह^८ काजा । निकट आइ सो^९ उतरहु राजा ।
यह बलि मन्त्र^{१०} कास्तिह^{११} कर काजू । सो समान न लइ जो आजू ।
पेमे पाति^{१२} उतर लिखि बीन्हा^{१३} । ओ मधुमालति कह^{१४} किछु^{१५} बीन्हा ।
बहुरि कुवर बुझ बातु सवाई^{१६} । मधुमालति कह^{१७} लिखि सो^{१८} पठाई ।
कहा कुवर बारी^{१९} सउ^{२०} पाय^{२१} लागि कर जोरि ।
बिहहु^{२२} गुप्त मधुमालती कह^{२३} यह बुझ पाती मोरि ॥

पाठांतर—(१) १ रा सव। २ ए जानी। ३ मा पुनि मा मै। ४ मा कछु, ए म यह छव्य नहीं है। ५ ए कव।

(२) १ ए ली। २ मा निहचै ए भा निहचै। ३ ए कछि। ४ मा इहइ ए जे। ५ मा बहु मा ए की।

(३) १ ए येहि कवि माता। २ मा ए कास्ति। ३ ए का साजू। ४ ए करिमे।

(४) १ मा ए पाती। २ ए के। ३ मा कुहु।

(५) १ ए सवाई। २ ए के मा की। ३ मा भा जो ए मे बहु छव्य नहीं है।

(६) १ मा भा बारिह। २ ए छे रा सा। ३ मा पाये ए पांज।

(७) १ ए बिहहु भा बीनियहि। २ भा को रा ए मै यह छव्य नहीं है। ३ मा लै ए भा ली।

अर्थ—(१) यदि हम यह बात निश्चित रूप से जान लें तो हम इस दिशा में कुछ उपाय करें। (२) यदि तुम निश्चित रूप से यह कार्य करोगे ही तो हे राजा हमारे निकट आकर उतरो। (३) यह तो बलिमुक्ता का मंत्र है कि कार्य कल करो समाना नहीं है जो कार्य को भाव ही कर डाले। (४) पेमा मैं पत्रिका का उत्तर लिखकर दिया और मधुमालती को [बेने के लिए] अपना कुछ बिज्ञा भी दिया। (५) तदनंतर कुमार की समस्त बुझ-बार्ता उत्तम लिख कर मधुमालती को भेजी। (६) [तदनंतर] कुमार ने बारी से उसके पैरों लगकर और उसके हाथ ओढ़कर कहा “(७) तुम मधुमालती को मेरी यह बुझ-पत्रिका गुप्त रूप से देना।”

टिप्पणी—(१) कास्तिह < कम्स < कस्य = कस। (२) समान < समान। (४), (७) पाती = पत्रिका।

[४२६]

प्रथमहि सखी^१ नाउ^२ गोमाइ । जो भरि पूरि रहा मम ठाह ।
दूज सउ नाउ^३ तहि^४ करा । उत्तरव पार सागि जहि बरा ।
मय यह मुन^५ विनयी एक मोरी । जिउ^६ मट रहा मो लिण्ट^७ प्रजोरी^८ ।
बहे कि जो त^९ जिय^{१०} पर आवमि । तीर भलहि^{११} माहि^{१२} दम पावमि ।
मैं ती अहम^{१३} मएउ^{१४} अस चहो^{१५} । सो पतिपाद^{१६} बचन जो^{१७} बहो^{१८} ।

मति भावता बीछर^१ बर जिउ तजउ^२ सरीर ।

कोटि मिरितु^३ माहि^४ पूजहि गिनू^५ बियोग ब^६ पीर ॥

पाठ्यन्तर—(१) १ मा ए मुमिरी। २ ए नाम।

(२) १ ए नाम। २ मा तिहि।

(३) १ मा अब मुनह विनयी मा पिमा मुनह विनयी इजह ए अब प्रीनम
मुन विनयी। २ मा जो। ३ मा लिण्ट ए मीगह। ४ ए मछोटे।

(४) १ रा बहे को को मुन मा बहे कि जो तह ए बह बरी जो मा बहे कि
जो तै। २ मा त्रिब ए त्रिउ। ३ मा मितेह ए भव। ४ ए माहि।

(५) १ मा प्रीमा ए ऐम। २ ए अरी। ३ मा बहे ए बही। ४ मा
पतिपाद। ५ ए जे। ६ मा बहे।

(६) १ मा बिछरेउ। २ ए तनी।

(७) १ मा मित। २ ए मा। ३ मा पुजही। ४ मा गिनू ए गन एक।
५ मा विषय की ए वेम की।

अर्थ—“(१) पहले ही (सर्व प्रथम) मैं अपने स्वामी (ईश्वर) के नाम का स्मरण करता
हूँ जो समस्त स्वामी में श्रेष्ठ पूरित हो रहा है। (२) उसके अनंतर मैं उस (महम्मद ?) का
नाम लेता हूँ जिसने मेरे (जन्मदाता) से लम्बर मैं [अवतार के] बार उभरने। (३) अब यह
एक विनयी मेरी मुनो। मेरे शरीर में जो जीव बह, वह मुझमें अपनी अंजली में बर (छोन) लिया
(४) और बहा कि ‘यदि तू अपने जीव [को देने] पर आ जा, तो भले ही मुझसे देने पाएगा।
(५) [अब] मैं तो ऐसा ही हो गया जाता तू चाहनी थी [अतः] तूने जो बचन कहा था, उत्तरा
प्रतिपालन कर।

(६) भावता (त्रिष) न बिछड़े भले ही जीव शरीर को छोड़ दे (७) [बिजो] बियोग
को एक लप की पीड़ा को कोटि मृत्युएँ भी नहीं का लवनी हूँ।”

पिनी—(१) मर < मर < मृ = मरण करना। डा^२ < स्पान।

[४२७]

मम मित्रि^१ जहू^२ रहि^३ आल^४ । मैं मम आनि जियहि^५ मगग^६ ।
एम^७ पतिरिमाहि^८ मउ^९ बिन माएमि^{१०} । मये मित्रि^{११} ऊर^{१२} माहि^{१३} पाएमि^{१४} ।

अस मा चित तुम्ह रूप भियानी^१ । भट मह^२ सांसहु^३ बाट मुकानी^४ ।
 अस मै^५ क्कित मएउ^६ भिउ सोही^७ । सुमिरन^८ तोर बिउरि ना मोही ।
 तोर जोउ सोहि सतें^९ वारा । का जानसि जिअरे क^{१०} सारा ।
 तोर जोउ सोहि सतें^{११} का जानसि^{१२} पर पुनस ।
 कठिन पीर यह^{१३} सिन्ह प जानी^{१४} जिन्ह^{१५} देखा तुम मुकस ॥

पाठांतर— मा भा मे उपपुनस बबभिम्या १ तथा ४ परस्पर स्वार्थांतरित है।

- (१) १ मा मा रूप क्किति ए रूप क चित्ति । २ मा कहां कहि ए जहां मनु ।
 ३ रा भावा ए माई । ४ ए सब अपने जोउ ।
- (२) १ भा ए सब । २ रा सोहि सेउ मा सोहि लै ए मै ठाके । ३ ए मन
 लावा रा बिउ छाएछि । ४ ए सबै भा सब । ५ मा भा चित्ति
 (किस्ती—मा) । ६ ए, तोहि ऊर वारा ।
- (३) १ मा मा ए अस मा (मो—ए) चित तुम्ह (तोहि—ए) रूप भियानी ।
 २ ए मो । ३ मा सांसहि बाट मुकानी ए सबै बाट मुकानी रा ससवा
 बाट मुकानी ।
- (४) १ मा फुनि रा होइ, ए मोर । २ ए मा । ३ रा चित मा जिअ । ४ ए
 तोही । ५ मा सुमिरन ।
- (५) १ मा ए छेती । २ ए जानहु । ३ मा जिस बेइ कि ए पर पीर कौ
 ना बिउ बेइ कै ।
- (६) १ मा ए छेती । २ ए जानहि ।
- (७) १ मा बबहु, ए मे यह सम्ब नहीं है । २ मा भा जीनी (चित—मा)
 मै जानी । ३ मा जिती ए जो रा मे यह सम्ब नहीं है । ४ मा देखउ
 तुम मुकस मा देपी तुम्ह रुप ए देखा लो मुक ।

अर्थ—“(१) धृति में कहां तक नी कम आए (अवतरित हुए) देने उन सब को लाने अपने
 जीव को दिसाया (२) किन्तु मेरे जीव ने सब को त्याग कर तुम से चित्त लगाया और सभी मूर्खों
 के ऊपर उड़ने तुम्हें बचाया । (३) तुम्हारे रूप के ध्यान में [मेरा] चित्त ऐसा [सम्पन्न] हो गया
 कि अतीत में स्वप्न भी मार्ग भूल गई । (४) ऐसा होकर [मेरा] जीव तुम में [ऐसा] लित हो
 गया कि [तुमसे अनिष्ट होने के कारण] तुम्हारा स्मरण मुझे विस्मृत हो गया । (५) तुम्हारा
 जीव इसीप्रकार, हे वाला, मेरे जीव का हाल क्या जाने ?

(६) तुम्हारा जीव इसीलिए, दूसरे का कुछ क्या जाने ? (७) यह कठिन पीड़ा उभूनि
 ही जानी है जिन्होंने तुम्हारा मुक देखा है ।

टिप्पणी—(१) बाट < बट्ट < बर्त्यन् = रास्ता । (४) क्कित < कित ।

[४९८]

अबल अडोलन ह जग जते^१ । वर कामनि त^२ पापर सतें^३ ।
 तोर जोउ पापर सम बाका । पम बिहून^४ ससल कहि^५ हाला ।

बिन धरि छोड़ न होहु छाहागी । हिए नग्नि मृग* कुअरि^३ रमारो ।
नरिमर जमि^१ प्रीति नग्ग बाग^२ । ऊपर नग्गम हिए^३ रमारो ।
जो तोर दुग मायो हूय^१ मोरा । तो यह सहउ^२ नठिन दुग तोरा ।
सपनें जो जित पावो^१ बारि^२ तुम्हार ठाउ ।
जागे^३ महरि^४ न आव समुझि कया^३ विमराउ ॥

पद्यान्तर—(१) १ भा मा अडोल जीउ वय जेती ए अडोल हे वय जेती । २ ए जे । ३

मा ए सेली ।

(२) १ मा नीउ ए, नेवाम । २ मा कीमी (<किमि) ए मा धिमि ।

(३) १ ए होहु दुगारी रा होहु बवारी । २ ए वेह । ३ मा मुग (<मुरा)
कुअरी रा मुग (<मुग) [कुमरा पात्र नहीं है] ए मा कुअर, मा
मूह कुअरि ।

(४) १ ए तीव । २ रा नक आला मा एक बार । ३ ए हिय । ४ रा
रमाका ।

(५) १ मा हन ए है । २ ए रे सह मा दमह महेउ रा व नहेउ ।

(६) १ भा पावो । २ भा ए बार ।

(७) १ ए जागे । २ रा का पाठ स्पष्ट नहीं है । ३ मा बाया ।

अर्थ—“(१) जगत् में जितने भी [पदार्थ] अचल और अडोल हैं हे जेठ बानिजी के पावर
से [उतरे हुए ही] हैं । (२) तेरा जीव हे आला पावर क सपना है; [चिंतु] प्रेम के बिना
निरंतर बहु विष बसा में रहता है? (३) जिस में दुपापूर्व स्नेह पारय कर तुम दुपास नहीं होनी
हो हे दुमारो तुम दुवय में कठिन हो [केवल] मुल से रसीली हो । (४) हे आला, नारियल
के समान [होकर] प्रीति करो जो ऊपर से बर्कय (बडीर) चिनु दूरय से रसीला होता है । (५)
क्योंकि तुम्हारा (तुम्हारे बिछ का) दुग मेरा साथी था इसीलिए मैं तुम्हारा (तुम्हारे बिछ का)
नठिन दुग सह करा ।

(६) हे बानिजा स्वप्न में यदि मैं तुम्हारे स्वप्न पर अपने जीव को वा भी जाऊँ, (७) तो
आपने पर वह पुन [मेरी] काया को अपना विधान समझकर [मेरे शरीर में] नहीं आता है ।”

टिप्पणी—(१) (२) बाबर<अलर=पावर । (३) (४) रमार<रमाउ । (५)
नरिमर<नारिमेर । (६) जी<जो<यग=बवारि । (६) ठाउ<स्थान । (७) विमराउ
<विभाग ।

[४२९]

जो दग्गन म^१ दग्गम बागी । अनर दुग म जागि^२ दुगारी ।
जागु दगि ध्याग तम^३ पाग । जर मन्न न जागि^४ मरग ।
भाने भोगि^५ जग बिराग । अपने^६ बिछ उ नन राग ।
भानिय^७ पागि पर गिय^८ आ^९ । मागु भवान^{१०} नगि मुरग^{११} ।
जो दरगि^{१२} आपन मग बागी । तो जानगि^{१३} दुग बाग पगरा ।

बपन दसाबहि^१ और कह^२ बरपन म सइ^३ देखु ।
दह^४ तोरें^५ दुख कस दुखी^६ सम^७ जग दकि^८ विसर^९ ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा केह । २ मा ए अपने दुख यी (होइ—मा) । ३ ए ए बाहु ।
(२) १ मा सब । २ मा बहन की मा बहन सी । ३ मा मा मगिमि ।
(३) १ मा ओवरब (<ओपब भागरी?) ए मा बोसब । २ मा मा उपम, ए ताहि । ३ ए अपने । ४ मा बाप ।
(४) १ मा मा आपनि ए अपने । २ ए फांस परे भीब मा फांस बर मीय भीम । ३ मा आपन । ४ ए मुरझाई ।
(५) १ ए दसहु । २ ए जानहु । ३ मा मे बरप है अपने दुख होइ जासि दुसारी (तुल प्रथम अर्द्धांसी) ।
(६) १ मा देखाउ न ए देखाउ । २ ए के । ३ ए सी ए छोड़ ।
(७) १ ए कह । २ मा ए तोर, ए छोरे । ३ ए कस है । ४ ए मा सब । ५ ए देखु । ६ ए विसल ।

अर्थ—“(१) यदि तू, हे बालिका बरपन लेकर [अपने मुख को] देखे तो तू [अपने वन को देखकर] अपने ही [बिरह] दुख से दुखी हो जाएगी (२) अपने-आप को देखकर तेरे सरीर में पीड़ा व्याप्त होगी और मन (काम) की मग्नि से तेरा सरीर जल उठेगा; (३) अपने ही ओपब से बिकार उत्पन्न हो जाएगा और अपने ही बिरह से तेरे सरीर में क्वाका उठने लगेगी; (४) अपनी ही काँची [तेरे] घड़े में आकर पड़ जायेगी और तू अपने-आप को देखकर [स्वयं] मूर्च्छित हो जाएगी । (५) यदि तू अपने मुख को देखेगी तो तू पराए की दुख-बार्ता जानेगी ।

(६) दूसरों को [भंसे] तू अपना मुख बिकारी है, [भंसे ही] बरप लेकर तू स्वयं भी उसको देख । (७) [और] तू [जैसे] देखकर बिचार करे कि समस्त जग तेरे [बिरह] दुख में कैसा (किन्तु) दुखी [ही सचता] है ।

टिप्पणी—(१) ओपधि < ओपधि । (४) फांस < बाण । गिय < गिब < घीबा । बपन < अप्पाय < आराम् । (५) बारी < बालिका । (६) सई < स्वयम् । (७) विसल < वि + सेपम् = विसेपन स अन्विष्ट करना व्यथित करना ।

[४३०]

बारिन्ह^१ पाती^२ उतर सिजि पावा^३ । हरसित ग^४ सुख जाह जनावा^५ ।
सुनत मनोहर के कूसफाई^६ । भई महारस नगर बसाई^७ ।
ताराचंद कूबर कह राई^८ । रामी^९ पाती बाधि^{१०} सुनाई^{११} ।
पानी मुनत्र^{१२} नंबर अस^{१३} कहा । बिधि सो किएउ^{१४} जो मोहि चित रखा^{१५} ।
वरिअे बगि^{१६} बल^{१७} नर साजू^{१८} । बिलन न बरिय धरम क नाजू^{१९} ।
पाँच सवय धन बाज नैयता मम^{२०} परिवार ।
सुदिन साधि न^{२१} कोम्ह पयाना^{२२} बिनम राय^{२३} मुबार ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए बारी रा बारि। २ मा मा पाति। ३ मा भा पाएउ। ४ मा मै ए मै। ५ मा मा मुनापउ।
- (२) १ मा कुमुमाई।
- (३) १ मा कहरायउ। २ ए रानिहि। ३ भा पानि पडाइ। ४ मा मुनापउ।
- (४) १ मा मुगु ए पडि जा। २ ए म यह घण्ट नही है। ३ ए बीटा। ४ ए जा रा मारे, मा जा हम। ५ मा भा भरा।
- (५) १ मा बरिभै बेमि अब ए बरि बेमि भा बरु बमि बग। २ भा बने। ३ मा का माया ए भा कै माया। ४ मा बेमन न बरीम बम के बाजा ए बिनेन न साई कोनी बाजा भा बिनेन न बरिय बरम के बाजा।
- (६) १ ए भा सब।
- (७) १ ए मै है नदी है। २ मा राइ, ए राय।

अर्थ—(१) बारियों ने पत्रिका का उत्तर लिखा हुआ प्राप्त किया और हर्षित आकर उन्होंने [यहाँ का] मुल-समाचार सुनाया। (२) मनोहर को बुझासता मुनते ही महारत नगर में बघाई हुई। (३) ताराबंद कुमार को घलाहर रानी ने पत्रिका बाँध कर मुनाई। (४) पत्रिका को मुनते ही कुमार ने ऐसा बहाना दिया कि वह लिखा जो मेरे दिल में था। (५) [अब] सीमा हो बसने की तैयारी कीजिए; वरम के कार्य में विलंब न कीजिए।

- (६) सब घण्ट (पंचघाण्ट) लगन रूप से बज उठे और समस्त परिवार आमंत्रित हुआ।
- (७) अच्छा दिन निश्चित [करा] कर भूपाल बिजय रात्र में प्रयाण किया।

टिप्पणी—(१) (१) पानी < पत्रिका। (२) बघाई < बघावन < बघावन = अम्भुए या हरे-भूषण बाव। (३) राव < रावत = बुझना आह्वान करना। (४) पयान < प्रयाण। मुबार < भूपाल।

[४३१]

बसउ मात्रि दए बिजय गऊ। बहूनिमि परउ^१ निमानहि पाऊ।
मब^२ निमान जो^३ उठ^४ अदोरा। मग महम पन मकि^५ मारा।
ग ल भणउ^६ बुर अमवार। भागे घोर घरे^७ घनवार।
रानिह ब^८ गावे^९ बोडाला^{१०}। बल^{११} अनलि कम बिन्डाला।
जननि बोर^{१२} मधुमालनि बनी। जग माहि मधुनायर^{१३} जमी।
पला मम^{१४} दए पगिह पगजा पीनि मबाल^{१५}।

हय मय ल^{१६} क^{१७} यह मउ^{१८} मूज गणउ^{१९} लुबाइ^{२०} ॥

पाठान्तर—भा मै उरुका नृनीय अर्थात् दी दय अर्थात् दया व बार म जानी है।

- (१) १ ए परा मा बरे। २ मा निमानह ए निमान।
- (२) १ मा ए मै यह घण्ट नही है जा अनि। २ मा भा उठे ए उग। ३ मा यह ए नाक।
- (३) १ मा नैत भणउ ए मै दए मो। २ ए बरे। ३ मा घनवार (< घनवार)।

- (४) १ ए के साजा। २ रा ए खोला। ३ मा खसी ए खसी। ४ मा अनरित करत कभोला ए अनर कर रस केला।
 (५) १ ए कोरा। २ मा मधि मायेक ए पो मायेक।
 (६) १ मा मा ए खर्। २ ए सबाइ।
 (७) १ मा हुय गय बल की ए येहु जो वल के रा मा हुय मय बल के।
 २ ए से। ३ ए सूर्ज गये। ४ मा छपाई, ए छपाइ।

अर्थ—(१) विक्रमराज बस लडाकर बसे, और चारों ओर चौखों पर बाब (आमत) पड़ा।
 (२) बीसों से सस्त्र से जो और उठने लगा [उसको सुनकर] श्रेय अपने सख्त फर्शों को तिकोड़ने लगे। (३) कुमार [जस] बल के साथ [घोड़ पर] लवार हुआ आये-आये मनबारा (पानेवार) घोड़ा पकड़े हुए था। (४) रामियों के लिए चौखोल साजे गए, और [इस प्रकार सब] कस्बोल करते हुए बसे। (५) मधुमाखरी बननी की कोड़ (गोब) में बैठी जैसे अरुण्यवा (विशाला अनुरावा खेप्या) [की] कोड़ में मधु-नामक (बैज का चक्रमा) हो।

(६) समस्त बल परिग्रह (मुत्पाधि) बला तथा समस्त प्रजा तथा पवनिये (हर्षादि के अवसरों पर उपहार-पुरस्कार देने वाले) बसे। (७) छोड़े और हाथियों की तैना की बुर से सूर्य छिप गया।

टिप्पणी—(२) अहोर < भावोलन (?)। सकोर < सं + कोट् = तिकोड़ना। (३) तै < सम = साथ। मनबारा < बाधबाळ < स्वामनाळ = मानेदार या चौकीदार। (४) खडोळ < खुदोल = चौखोल। (५) कोर < कोड < पोव। वरळ < वरड् = वरड्-मध-बीधि = विसाला अनुरावा और खेप्या नामों में चक्रमा का भाव। (६) परिग्रह < परिग्रह = मुत्पाधि। (७) लड् < लवड् = छिपना।

[४३२]

अरुन दवस वस बाट^१ सुटानी । उतरे गै डोरिया घर पानी^२ ।
 ऊंचे दिऐ^३ तानि सरबाना^४ । बाजे^५ सबद उतग^६ निसाना^७ ।
 निऐ^८ तरे सम महल जो आहे^९ । कया बकृति वसि^{१०} म न सराह^{११} ।
 फुनि^{१२} राज^{१३} सम^{१४} मति^{१५} बुसाए^{१६} । बिरिष समापति ग्यानी राए^{१७} ।
 ताराबद मोझ बैसारा^{१८} । सम मिलि करहि घर आहे^{१९} बिचारा ।
 फनि^{२०} एकमत म^{२१} मनिन्ह कहा राय पहुं^{२२} बाइ^{२३} ।
 बितसनि जी पमा दुषो^{२४} पठाबहि राइ^{२५} ॥

पाठान्त—(१) १ ए बाट (< बाट फारसी लिपि)। २ रा उतरे जाइ समुद्र के पानी भा उतरेउ गै दरिया घर बानी ए चित बिमराउ जाइ तुमानी।

(२) १ मा ऊंचे हिये ए ऊंचा दिआ। २ ए बाजा। ३ मा मा उतार।

(३) १ ए फिआ। २ मा गज ए भा सब। ३ ए जे अहे। ४ मा बाइन बैधि ए पकन (< बकृति: फारसी लिपि) जो रा बकृति से।

- (४) १ रा ए पुनि। २ ए गरी। ३ भा ए मब। ४ मा भा मोग।
५ ए मोलाभा। ६ मा भा बज ममापति मनी गय ए बहु गय मने
होराभा रा बिगिष सभापति ग्यानी भाए।
(५) १ भा बैहगारा। २ मा मम मिमि करही यब ए मब मिमि कै पर बने
रा मम मिमि करहहि भाइ।
(६) १ रा ए पुनि। २ रा होइ। ३ ए भा सी। ४ मा भाइ।
(७) १ ए बुनइ। २ भा पठाणहि राइ, मा पठाइ बभाइ ए पठाभा रा।

अर्थ—(१) बल्ले-बल्ले वस बिर्से में मार्ग सभाप्त हुआ और वे जाकर डोरिया घर पानो (?) में उतरे। (२) वहाँ जगहने ऊँचे सरवान (बड़ शावियाले) तान दिए, और पौतों के जलुय राख बज जडे। (३) को भी महल (कपड़ों के प्रासाद ?) [साब] वे जगहें लड़ा दिया गया। कबा बड़ती हुई बखर मने उनकी सराहना (प्रशंसा) नहीं की [हे]। (४) फिर राजा ने समस्त भद्रियों को बुलाया और बुद्धों सभापति तथा जानियों को बुलाया। (५) [जगहने] मध्य में ताराबद को बिठाया और सब मिसकर घर में आकर बिचार करने लगे।

(६) तदन्तर एवमत होकर जयियों में राजा के पात आकर रहा (७) 'बिचसन और पेम होनी को है राजा आप बला भोजे।"

टिप्पणी—(१) बाट < बट्ट < बयन् = मार्ग। लूट < ली = मयाज हाता। (२) मर्यादा [का] = बड़ पामियात। (४) (७) राब < राबयू = बुझाना आह्वान करना।

[୪୩୩]

यह मम मुनि^१ गजहि^२ मम^३ भावा । बिभ्रमनि बह^४ जम गोगवा ।
 गुप्तुन स्त्रिरी^५ मयमार्गनि पानी । पमां बह बह भानि बिनानी^६ ।
 ओ पुनि^७ मयमजरी बरी । गोवर्गहि बिनना^८ स्त्रिरी^९ वनरी ।
 पमां बाहि^{१०} इही ताहि^{११} चानी । भावहि^{१२} बगि बाव निग्वाही ।
 पानी ल मग लन्वा^{१३} बागी । पिना गिरि^{१४} जह राज इन्दार^{१५} ।

जाऽ जनाश पमहि^१ मीम नाड प्रनिहार ।

जिहें। गढ़^१ बिजमक^२ पापी गग वारि^३ जहि^४ वार ॥

पठामि—(१) १ मा ऋषि भगवन् मुनि त इति मन्त्रा मुनिः २ मा त रात्रिः ३ त सोः
४ त रात्रिः

- (२) १ ए तिगा। २ ए वे। ३ ए बीनी।
 (३) १ ए जी। २ या ए बाहर निरी या बाहर बह। ३ या निरी
 = तिगि या तिगिग।
 (४) १ या ए बहि। २ ए नीह। ३ या अपर (<आर) ए आर।
 ४ ए निरानी।
 (५) १ ए मे-या ग- ए नी नी ठरेवा। २ या बूझी या ए बूझी।

(१) १ मा भा जनाएउ पेम ही (पेमहि—भा) ए जनावहु पेमहि।

(७) १ मा ए किये भा सिणं। २ ए राये। ३ मा बी। ४ मा बारी।
५ ए है।

अर्थ—(१) यह मंत्र (विचार) सुनने पर रामा के मन को भा गया और उन्होंने चित्रसेन के पास [अपना] एक सेबक बौझाया। (२) मधुमाक्षी ने [जो] गुप्त रूप से पत्रिका [उस सेबक के द्वारा भेजने के लिए] लिखी [जिसमें] वेमा से बहुत प्रकार से विपत्ती लिखी (३) और फिर कपमंजरी की पोचर (?) विपत्ती बहुत-सी लिखी। (४) [फिर उसने लिखा] 'वेमा कम में यहाँ तुम्हारा भलाकन चाहती हूँ, तुम सीधे जाओ [जिससे] मैं कार्य का निर्वाह करूँ।' (५) पत्रिका लेकर बारी बहाँ गये जहाँ पिता (चित्रसेन) के गृह में राजकुमारी (वेमा) थी।

(६) वेमा को प्रतिहार ने जानकर और सिर झुकाकर सूचित किया (७) 'बिंदमराज की पत्रिका लिए हुए बारी द्वार पर आई हैं।'

टिप्पणी—(१) मंत्र < मन्त्र = विचार। (२) (७) पाठी < पत्रिका। (५) विरिह < गृह।

[४३४]

बारिन्ह निकट राइ तब बारा ।^१ पूछसि बात भाति^२ बेवहारा ।

फुनि^३ बारिन्ह पाती बर दई^४ । औ मुख कहिन्ह बात बसि भई^५ ।

सौ फुनि^६ कंधर मनोहर राई^७ । पम पड़ि मुख चाह सुनाई^८ ।

सौ^९ पम ग^{१०} पितहि जनावा^{११} । बिक्रम राय^{१२} क^{१३} धावन आवा ।

ओ [ह] हम तुम्ह दुहु पठएनिह राई^{१४} । आपु निकट भै^{१५} उत्तर आई ।

चित्रसनि सुनतहि उठि सपर बिक्रम कर हुवार^{१६} ।

वेमा फुनि^{१७} सब सखिन सउ^{१८} भई^{१९} पारुकि असवार ॥

पाठान्तर—ए मे उपर्युक्त प्रथम अष्टांकी के चरण परस्पर स्थानांतरिण हैं।

(१) १ मा बाहर निकरि बाइ तब बारा ए पुनि बारी ओ कीन्ह बोहाउ। २ रा पूछेसि छेम कूसक ए पूछा बात भाति।

(२) १ रा ए पुनि। २ ए बारी। ३ मा बिही रा बीन्ही ए बीन्हा।
४ मा भा औ मय बहेन्ह बात बीसी (अधि—भा) भई, ए मुख सौ बात कहे
ओ मीन्हा रा औरि ओ बात भई बहु कीन्ही।

(३) १ रा ती पुनि ए तब ओ। २ ए राये। ३ ए सुनाये।

(४) १ ए तब। २ मा बी ए ओ। ३ ए सुनावा। ४ ए राये। ५ रा का।

(५) १ मा औ तुम्ह हम दोउ पठ के बुलाई, ए ओ हम गृह पठवा एक राई।
२ रा होइ, मा फुनि।

(६) १ रा सुनतहि उठि निमर बिक्रम राय मुवार, भा सुनतहि उठि बिचंभर राय
बिक्रम की हुवार, मा सुनन उठि संपरेउ बिक्रम केर हुवार।

(७) १ रा ए पुनि। २ मा सब सखिन्ह संग छेइ, ए सब सखी सग मा सब
सखिन्ह सेइ। ३ मा ए बी।

अर्थ—(१) बारियों को निषट बुलाकर बाला (पेमा) ने [मधुमासती के घरी को] बल
पाति और ध्वजहार पूछे। (२) तत्पश्चात् बारियों ने उसके हाथ में पत्रिका दी और बंसी बजने हुई थी
मुस से वहीं। (३) तब बुन कुमार जगोहर को बुलाकर पेमा ने [पत्रिका] पढ़कर गुण-नामाचार
सुनाए। (४) तत्पश्चात् पेमा ने जाकर पिता को बताया 'बिहमराज का यावन (दोड़कर आने
वाला कर) माया हुआ है। (५) उन्होंने हम और तुम्हें—दोनों को—बुला भेजा है और वे आज
निषट हो (आ) कर उतरे हुए हैं।"

(६) चित्रनेन यह सुनते ही बिहमराज के बुलावे पर बाला (बल पड़ा)। (७) पमा [भी]
तत्पश्चात् [अपनी] समस्त सवियों के साथ वासपी पर सवार हुई।

टिप्पणी—(१) (३) (५) राव < गरव = बुलाना आदधान करना। (१) बाग <
बाला। (२) पानी < पत्रिका। (६) मङ्ग < मारी < मपरि + ^२ = जाना पति करना। (७)
सुत < गम = नाथ। पालकि < पर्वक।

[४३५]

चित्रमनि क चउ^१ पयाना^२ । भग जन महम मग परधाना^३ ।
ममी महम^४ अमनइव मल^५ । पडित गनर^६ मय हाइ^७ बाल^८ ।
भी पमा गंध मगी सभ^९ बली^{१०} । उर ओनत बहु जडिन वला^{११} ।
चित्रमनि जब बारहि^{१२} आण^{१३} । ग राजहि^{१४} प्रनिहार जनाण^{१५} ।
मुनि^{१६} चित्रम बलि^{१७} आण बुबारी^{१८} । भइ नुदु रिपनि हतु जउवारी^{१९} ।
अपने निब^{२०} बरि^{२१} चित्रम राजहि^{२२} मोन्ह नशम ।
पमा जाइ महल^{२३} मह^{२४} पमी^{२५} जहां गम रनिवाम ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा चउउ। २ भी मग मय एव।

(२) १ मा मय मा मय ए मय। २ मा अनेई रा अमनई जा। ३ ए
भने। ४ ए गनिव। ५ मा मय बर ए चउ जा। ६ ए घडे।

(३) १ ग मय मगी जा ए भा मग मगा मब। २ मा मा जनग नान उर (भी
—भा) जावन करी (बली—भा) ए अमनिज जो जोवन बली।

(४) १ मा जवरी बलि ए जवहि बलि। २ मा भा जायेउ ए भाइ।
३ मा मा गउ ए मी गनिहि। ४ मा जनाउउ ए जनाइ।

(५) १ ए मुनि। २ ए म यर बाइ मरी है। ३ मा आण दवारी मा
गउ दुवारी ए भाइ दवाग। ४ मा मा भी नुदु मुनि हेतु धवारी
(बाला—भा) ए भी नुदु रिप हेतु जवाग मा भी ए नवारी मा
बालारी।

(६) १ मा भी कनि निब वर मा जाव निब पाट वर ए भी निब
वर। २ ए राजहि।

(७) १ ए मलि। २ ए मे मल मरी है। ३ रा ए वीरी। ४ मा मल ए
गरी।

अर्थ—(१) चित्रसेन प्रयाण कर चल पड़े; प्रयाण के साप में सहस्र जग हुए। (२) मन्त्री महंत मह अयनैक (मन्त्रीय ?) पंडित और बलक साथ होकर चल पड़े। (३) और पेना के साथ [जयकी] समस्त सवियां बसीं, वे जगमित उरों (उरीयों) बाली बहुत-सी यौवन-कल्पित थीं। (४) चित्रसेन जब [विक्रमराज के] द्वार पर आए, प्रतिहारों ने आकर उन्हें सूचना दी। (५) यह सुनकर विक्रमराज बलकर द्वार पर आए, और दोनों राजाओं ने प्रेम की संकवार हुई।

(६) विक्रमराज ने अपने निज बरत (बल) कर राजा (चित्रसेन) को निवास दिया। (७) पेना आकर जग में प्रविष्ट हुई जहाँ समस्त अनिवास था।

टिप्पणी—(१) पयाण < प्रयाण। (२) अयनैक = आनीय (?)। (३) कसी < कलिका < कलिका। (४) बार < बार < द्वार। (५) संकवार < संकृपाक्षी = आनिमन। (६) बर < वृ = बरत करना चुनना।

[४३६]

राजें सम जन परिजन राए^१ । पंडित गनक गुनीजन^२ आए ।
 ली फुनि^३ ताराखद बोलाए^४ । आनि सभा ऊपर बइसाए^५ ।
 चित्रसनि विक्रम सब^६ कहा । पंडितन सेतें मुना में बहा^७ ।
 जो मत क करिय^८ किन्तु^९ काजा । निहृ^{१०} तहि काजहि सिधि^{११} राजा^{१२} ।
 ली हरिगुन^{१३} पांडे हकराबा^{१४} । कहा दसि^{१५} गनि रासि मरावा^{१६} ।

सुम्भ असुम्भ बिचारिय^{१७} लगन महरत बार^{१८} ।

जिमि दुह^{१९} जम जम निरबाह^{२०} पम प्रीति बबहार^{२१} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा जा राई सम परिजन बहुराए, रा राई सम जन बहुराए, ए ली राई सब परिजन राये। २ ए बनिद्र गुनी जो।

(२) १ ए ली पुनि ए लही जो। २ ए बोलाऊ, मा बोलाएउ। ३ ए बीछाऊ, मा बीछाएउ।

(३) १ ए ली मा ली। २ मा पंडितन सेना मय बहा ए पंडित कहा मुनहु हम पैहा मा पंडितन मुना मुना में बहा।

(४) १ ए मति कै करी (< करियह कारती सिधि)। २ मा बुझु, ए कहु। ३ मा मित्थी मा मित्थी ए मित्थी। ४ ए सिध काज ठेहि। ५ ए काजा।

(५) १ ए हरिगुन (< हरिगुनः कारती सिधि)। २ ए हकराये। ३ मा देपु। ४ ए मेराये।

(६) १ मा मा मुभ अगुम बिचारहु (बिचारि कै—मा) ए सभा जो सम बिचारै (< बिचारिय कारती सिधि)। २ ए बार।

(७) १ ए मे से से हो गण्य नहीं हैं। २ मा मा जमु जमु निरबाह ए जम जम निरबाह। ३ ए बबहार।

अर्थ—(१) राजा (बिक्रमराज) ने अपने समस्त सैवकों-बुर्यों को बुलाया। पंडित गणक तथा गुणोजन [भी] आए। (२) तब फिर उन्होंने ताराचंद को बुलाया और उन्हें साकर तथा के ऊपर बिठाया। (३) बिक्रमराज ने बिक्रमराज से कहा “पंडितों से मैंने गुना था (४) जि यदि संभला कर कुछ (कोई) बात कोझिए तो हे राजा उस कार्य में निश्चय ही सिद्धि होगी है। (५) तब उन्होंने हरिपुत्र पांडे को बुलावाया और कहा “गणना कर राशि का मिलान हैतो।

(६) गुप्त और अगुप्त सग्यों मूढताओं और धारों का विचार करो (७) जिसमें होमो (बर बधू) अगम-अगमंतर तब प्रेम-मीति के व्यवहार का निर्बाह कर।”

टिप्पणी—(१) राव < रावट = बुझाना आह्वान करना। (७) अम < अम।

[४३७]

गनकन्ह^१ गण्ह कुंडरी बिही^२ । बाग्ह गमि ताहि मह लिही^३ ।
ओ पनि नवी गण्ह जत^४ जहां । लिपनि बिचारि पंडितह तहा^५ ।
जनम दमा दुहु लीम्हि बिचारी^६ । अतर दमा^७ पमि लीम्हि ममारी^८ ।
नीमी जठ पाग उजियाग । कुम^९ लगम गनि गन^{१०} बिचारा ।
मुम्म मूहरत गमि^{११} नि साया । बाग नछय वृद्ध अनुगया ।
ओमा मोहाग लच्छिमी मगनि^{१२} मग मुक्य निग्वाहु ।
गनि गुनि गन^{१३} बिचारन्हि^{१४} मधुमालति बर^{१५} स्याहु ॥

पाठान्तर—आ में उपर्युक्त दूसरी अर्थाधी का प्रथम चरण नहीं है।

ए म उपर्युक्त ३री तथा ४ वी अर्थानिधी परम्पर स्थानान्तरित है।

- (१) १ मा गनकन्ह। २ ग कुंडरी बिही मा बाहरी बी/ी १ कुंडरी बी-ग।
३ ए बी/ी।
- (२) १ ए ओ ओ नी बह है मा ओ पनि नी गण्ह हुह। २ मा मा तिये
ए लिपि। ३ ए तहा।
- (३) १ मा जनम दमा दुहुं कहि बिचारी मा जनम दमा दुहुं हि बिचारी
॥ जनम दमा दुहुं बिधि मारी। २ मा जन दमा। ३ मा पनि गने-
ममारी १ ओ गहा बिचारी।
- (४) १ ए गुम। २ ए गनिगन्ह।
- (५) १ ए गुम मूहय गनि बी।
- (६) १ मा ओ गणगय लच्छिमी ओ गननि मा ओ मागग लच्छिमी दह माग
ए गण मागग ओ लच्छिमी।
- (७) १ मा मा गनय बिचारा ए गनिग बिचारा। २ मा व बिचारा
ए व स्याहु।

अर्थ—(१) गणकों ने बहों की कुंडली की (बनाई) और उनमें धारों राशियों को [भी] लिखा (२) और तदनन्तर मधुपह को जिसने भी जहाँ-जहाँ के विचार कर बहनों ने बहों-बहों उनको लिखा। (३) होमो (बर-बधू) को काम-दशाओं को उन्होंने विचार लिया और तदनन्तर

दोनों को] अन्तर्द्वारों को भी सौभाग्य (दिल) दिया। (४) बड़े-छोटे के उज्ज्वल (शुभ) पक्ष की मोती को शुभ की कल्प गणकों में गिन कर निर्धारित की। (५) शुभ मुहूर्त की गणना कर उन्होंने दिन निर्दिष्ट किया। बार बुध था और नक्षत्र अनुराधा।

(६) और सौभाग्य लक्ष्मी रत्नाग तथा सदैव के किम्प शुभ का निर्वाह (७) गिन-गुन कर रत्नों में मधुमावती के विवाह का विचार [निर्दिष्ट] किया।

टिप्पणी—(१) संसार < ॥ + भास्व < स्मरण करना विचार करना (४) पाश < पक्ष।

[४३८]

गति गुनि^१ लगन पड़ितन्ह^२ धरी । सुभ विचारि^३ महरत करी^४ ।
 कुनि^५ उठि^६ राउ^७ महल मह आवा । रानी सउ^८ कहि बात अनावा^९ ।
 सुनि^{१०} रानी किए^{११} मंगलचारा । हरक निसान बजावहि^{१२} वारा ।
 पमा^{१३} सन^{१४} सखी^{१५} अति^{१६} आई । ते सम^{१७} सुगं पटोर^{१८} पहिराई^{१९} ।
 फनि^{२०} कह चित्रसेमि सउ^{२१} रावा । साजहुग^{२२} आपनि^{२३} दिसि^{२४} काजा^{२५} ।

बहु आदर सेउ^{२६} बिक्म^{२७} चित्रसनि^{२८} बहुराई^{२९} ।
 रानी कुनि^{३०} पमा^{३१} कह^{३२} समदउ^{३३} गोचरगीय^{३४} मिलाई^{३५} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए अस्वनि। २ ए विचार। ३ मा ए बरी।

(२) १ रा ए पुनि। २ ए जो। ३ ए रावे। ४ मा मा आएउ। ५ रा ए सी। ६ मा मा अनाएउ।

(३) १ ए पुनि। २ मा किआ ए बहु। ३ मा मा बजावेउ ए बजावा।

(४) १ मा मा ए सग। २ मा सपी। ३ मा असी ए जो। ४ ए आई। ५ ए मा सव। ६ मा मा ए और। ७ ए पहिराई।

(५) १ रा ए पुनि। २ रा ली ए ने। ३ मा गइ। ४ मा अपने रा अपने। ५ मा ए दिम। ६ ए साजा।

(६) १ थ कै ए से। २ मा में राई और है। ३ मा बहुराई ए बहुराउ।

(७) १ रा ए पुनि। २ ए वेमा के रा वेम कह। ३ रा मिसी ए गमरी। ४ मा कै गोचर गीय लाई, ए बहु गोचर गिब लाउ।

अर्थ—(१) पंडितों ने गन-गुन कर कल्प निर्धारित की, और शुभ का विचार कर उन्होंने मुहूर्त [का निर्धार] किया। (२) फिर राजा (बिक्म) उठकर महल में आए और रानी से उन्होंने कहकर [विवाह को] बात बताई। (३) [उसी] शुभकर रानी ने मंगलचारा किए और द्वार पर [सोग] हर्ष के जैसे बजाने लगे। (४) वेमा के साथ जितनी [उत्तली] लक्ष्मी आई थी उन सब को [रानी ने] सुंदर रंगों की रेशमी साड़ियों पहनाई। (५) तदनंतर चित्रसेन ने राजा (बिक्मराज) से बहु, “आकर अपनी और का कार्य लाजिए।”

(६) बहुत आदर के साथ बिक्म राज ने चित्रसेन को वापस किया (७) तदनंतर रानी ने गोचर (?) पीठा से लपकाकर वेमा को बिवा किया।

टिप्पणी—(१) बार < बार < बार। (४) जेत < जेतित < पाद < जिनता। पनोर < पट्टीय < पट्ट-युग = रोगमो माड़ी। (७) भीय < भीय < भीया।

[४३९]

ओ जहि बार लगन^१ ठहराई^२ । मो पमा मउ^३ करो^४ युताई ।
 बड़ि पालवि^५ सब गोनी^६ बारा^७ । बिजमनि सय^८ पिता भुबारा^९ ।
 नगर बजावन पम आई । रबी कुधर ब^{१०} म्याह बघाई ।
 राज अया मम हा^{११} सवारी^{१२} । कुमुभि पनार दुवान बाहारी^{१३} ।
 बवन राजकुवर बर^{१४} बाधा । ओ परिजन मम^{१५} राग^{१६} राया ।
 बुकुह^{१७} मर^{१८} मुगय उवटना^{१९} सार्वहि कंवर ब^{२०} गान ।
 मात नवम क^{२१} लगन बवर मिर^{२२} बीत^{२३} अनु जुगमान ॥

पाठान्तर—मा म उपर्युक्त अर्थांतिपा ४ तथा ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

- (१) १ मा नगर। २ मा बरि आई। ३ मा मा पमा मा ए पमा गा मब। ४ मा कहीन्ही ए बह।
- (२) १ ए पालक। २ मा सब मबनी ए ज पीनी। ३ मा न बाबा। ४ मा मा ए मंग। ५ रा भुबमा।
- (३) १ न रवा कुंजर के।
- (४) १ ए राजा अया मम मा राज अया मब हा^{११} रा राज अया मम हा^{११}। २ मा सवारे, ए सवारी। ३ ए बाहारी मा भावारी। ४ मा में बरन का पा^{१४} है। पर पर बड़िमात्र अनुमारे।
- (५) १ ए के। २ मा बह ए ज। ३ ए राया।
- (६) १ मा कुंजुम। २ मा अगर। ३ मा उवटना ए ज। ४ मा उवटना।
- (७) १ मा बी। २ मा पर। ३ मा बीने। ४ ए म बरन का पा^{१४} है। मात नवम के लगन म कुंजरहि बीनी जुगमान।

अर्थ—(१) और जिन बार को [जिबाह को] लग्न ठहराई गई थी वह वेनों को समझा कर बतला दी। (२) सब पालकी बड़कर बाबा (पमा) [अपने] पिता भूपाल बिजमन व साथ बनी गई। (३) वे बाजे के साथ नगर में आ प्रविष्ट हुए, और उन्होंने कुमार (मनोहर) के जिबाह का बघावा आयोजित किया। (४) राजाज्ञा से समस्त हाटें सवारी गई और कुमाने कुम भी रंग के रोगमी बरनो से ओहारी (बरी से मुनजिमन की) गई। (५) राजकुमार (मनोहर) के घर में बंजर सूज बाधा गया, और समस्त परिजन (कुप्यादि) को राख (सजा बजा) कर तयार रखा गया। (६) वे कुंजुम (नगर) निवासर मुर्षाबिन उवटना कुमार (मनोहर) के तारीर से लदाने थे। (७) मात विनों की लग्न कुमार के तिर बर हम प्रकार बीन रीती थी जैसे मात पुन बीन रहे हैं।

टिप्पणी—(२) पादवि < पादवि। भुबारा < भुवान। (३) बघाई < बजावन < बघ वन = बम्बुदय बघवा हां-मुबब बाध। (४) पनोर < पट्टकन = रोगमी बरन। बाहारा < उवटना = बरन। (५) राय < राख = सजा-बजा हुआ तयार। (६) उवटना < उवटना = उवटना = तारीर व मीन का दूर करने के लिए लगाया जाने वाला जैव। वन < वन = तारीर।

[४४०]

बुधवार मौमी जब आई । धियसनि सम कटक चलाई ।
 चस्त्र सगुन भल आगे । आवा । काग मिरिग बहिन दसरावा ।
 मारि आठ उर बालक लिहें । बाभन तिलक दुवादस दिहें ।
 दाहिन करहा बाए बेसाय । महरि सीस ल बही पुकार ।
 मंछ उफरि पानी देसरायहि । कस्तु भरें तस्नी बलि आवहि ।
 समकरी औ सोब दरसन आई दसाव ।
 सिद्धि होइ सम जानहि ऐस सगुन जो पाव ॥

- पठार—(१) १ मा सब ए जो । २ ए बोलाई ।
 (२) १ ए सब जाय । २ ए भिया दाहिन या मिरिग बहिन ।
 (३) १ मा रानी । २ मा मा आई । ३ ए लिये । ४ ए बाभन । ५ ए
 दास । ६ मा भा दिये ए किये ।
 (४) १ ए बावे । २ मा मा पर । ३ ए बहिन । ४ मा पैसाय या बेसाय ।
 ५ मा महरि सिर । ६ मा बही लिहु लेहु ।
 (५) १ मा मोछ । २ ए उफरि भा उफरि । ३ मा ए पैपराई । ४ ए मा
 मरे । ५ मा जावुनी मा जावे नै ए जावे से । ६ मा ए आई ।
 (६) १ मा ए ए समकरी । २ ए औ मुरखी (?) ए जो सोबा । ३
 दरसन आई देपाव ए जाय नै बरसाव ।
 (७) १ ए जानहि । २ ए स्वाम । ३ मा ए जे ।

अर्थ—(१) बुधवार को मौमी जब आई धियसेन ने [बिबाह की] कटक (बारस्त) चलाई । (२) चस्त्रे समय अष्टा शकुन सामने आया । काग और मृग बाहिन दिखाई पड़े । (३) मारी [अपने] हृदय (बल) पर बालक को लिए आ रही थी और बाह्य दास तिलक किए सिर पर बही किए पुकार रही थी । (४) दाहिन करवीस तथा बाएँ बेसर (बखर) [आए] और गालिन नीर कलत्र मरे हुए तस्नीया बली आ रही थी ।
 (५) समकरी (एक प्रकार की बिल) और सोमड़ी आकर दर्शन दे जाती थीं । (६) ऐसा हुन यदि मिले तो समस्त कार्य सिद्ध होते हैं ।
 टिप्पणी—(१) सगुन < शकुन । (२) बाभन < बाह्य । (४) बेसाय < बेसर = उफर, दखर । (५) मछ < मच्छ < मत्स्य = मछली । उफर < उफड़ < उड़ + फड़ = उड़ना उछलना । (६) सोबा < सोपाक = सोमड़ी ।

[४४१]

जेन साजि को पसी बरता । बाभन जानहि उठ अघाटा ।
 इ कौतुक किए कागर करे । तस मिहास कोठी औ खेर ।

नावद^१ बहुत कमुमी^२ मर्जी^३ । तिहि पर नाबहि^४ पतुरी^५ बजो ।
 बिहल^६ बजावन अतिर^७सोहावा^८ । ओकोसुक बहु^९ गनन म आवा^{१०} ।
 बहुत^{११} विगिगि कि^{१२} पर पर । ठाँठ ठाँठ^{१३} कि^{१४} भाट पर^{१५} ।
 पलीछत्रीमीपीनि कवरमप^{१६} चिनमनि क आन^{१७} ।
 जोवन मान बहु दिमि जग उजियाली मान^{१८} ॥

- पाठ्यपत्र—(१) १ ए मैना मायी । २ भा बहिज । ३ ए बाजा । ४ भा ठे ॥ उठे,
 भा उठाहि । ५ भा ए बजाना ।
 (२) १ भा मय ए बिज । २ ए कम । ३ भा मस्ती हाथ कोनी और परे
 ए तरकरि नाँव कोटि एक पता ।
 (३) १ भा नाठ । २ भा कुछ भइ । ३ ए मर्जी । ४ ए ताग भारी ।
 ५ भा पार्स ए पर्स भा पतुरी ।
 (४) १ भा बिये ए बिजा । २ भा बीज बन भा बिडीना ॥ बिन्दावन ।
 ३ ए मे बहु चल् नहीं है । ४ भा मोहाप । ५ ए जो न मयो ।
 ६ भा गनीन न आवे ए गनी न भावा ।
 (५) १ रा ए बहुत । २ रा कीने । ३ ए ठाँठ ठाँठ । ४ रा भाट ए रिमा ।
 ५ रा जाने पर, ए जहा लरे ।
 (६) १ रा मे बहु गाय नहीं है । २ भा. भा ए मय । ३ भा की जानि
 ए कुमार ।
 (७) १ भा जानहि नमै भुजान ए भा बजोर भिनुवार भा जग बजोर पुनि
 मान ।

अर्थ—(१) मैना तज्जा कर बागन बली बाजे बजने और जवाहे उगने लगे । (२) बाण्ड
 के बहुत से लाल-सिलीने बनाए गए थे [जिनमे से कुछ से] बूझ घर (?) कोटियाँ और लड़े
 [बने हुए] थे । (३) बहुत-सी नावें बनो हुई थीं, जो हुनु भी बरगों से मड़ी थीं और उन पर पानटें
 बड़ी हुई नावनी [रिहाई गई] थीं । (४) बाघ का प्रबंध अर्धन भुजानवा दिया गया था और
 लाल-निलबाढ़ इतने थे कि गिनती में न आते थे । (५) कमों से कलित बहुत से बूझ बनाए गए थे
 और खान-पान पर बहुत (बड़ा) [के लोभ] लगे हुए थे ।
 (६) बिजतेन की अम्मा से छत्तीसो बाबनी आतिवां कुमार (मनोहर) के साथ बली (७)
 और [रात्रि को भी] बार दोऊनों तक बारो और [मयानों के कारण] जग्न में जानु का [ता]
 बजाना हो रहा था ।

टिप्पणी—(१) अबाज < आबाज = अगाऊ भूय-मपीय की मरनी । (२) बाण्ड <
 बाण्ड [बा] । (३) निराल < निरालय (?) = घर मराना । तज्जा < तज्जा = ठेका देना ।
 (४) पीनि = पीनापन के बरमरा कर भुरगवारि जाने वाली रजिदा । आनि < अना । (५)
 जोवन < जोवन = हुरी की मात्र जो बार कोम (= आन मीन) की हामी है ।

मंहुतावीं^१ चरसीक^२ हवाई^३ । और दीपटि अनमिनतिन आई^४ ।
 अंधकाल गजनी कर मांसा^५ । अग्निनि दान सजिमार अगासा^६ ।
 अहनिमि दूरी^७ लक्ष^८ नहि जाई । को^९ बासर को^{१०} रति कहाई ।
 ताजिन्ह^{११} चढ़े भाट बहु बल । बचन सुभ्रम मुख^{१२} बोसत मले ।
 कठ होर^{१३} मुकुताह्व^{१४} माला । कुंवर^{१५} बड़ाइ^{१६} सुसासन बाला^{१७} ।
 चित्रसमि ले चले^{१८} साजि दल राजकुंवर बरियात^{१९} ।
 भनि साहस धनि सिद्धि^{२०} मनाहर भनि जननि धनि^{२१} तात ॥

पाठान्तर— मा मे उपर्युक्त सर्वाभिर्या ३ तथा ४ परस्पर स्थानांतरित है।

- (१) १ मा माहुताव मा महुवा सवी ए अहुवाई । २ मा चर वयी मा चरबक
 ए चरसी को । ३ मा हवाई । ४ मा जी बहु हीकरे यत न जाई, ए
 बहु हीकरे जा मने न जाई, मा जी रियट अनमिनत मुहाई ।
 (२) १ मा कमासा ए कै मासा । २ मा अकास ए अकासा ।
 (३) १ ए बुनी । २ रा लखि ए लखा । ३ बा मा ए कोइ । ४ मा मा
 ए कोइ ।
 (४) १ रा ताजि ए ताजी । २ मा मुख ।
 (५) १ मा ए हार । २ मा मा ए मुकुता मनि । ३ रा म यह छम्ब नहीं है ।
 ४ ए चढ़ि । ५ मा ए बला ।
 (६) १ मा मा चमिठ ए चढ़ । २ ए बरात ।
 (७) १ मा धनि साहु सिमि निमि ए धन साहस बन सिम (<सिमि फारसी
 सिमि) । २ ए बन जननी बन रा धनि सो जननि धनि ।

अर्थ—(१) माहुताविये, हवाई चरसिये, और दीपवटिची अर्थात् आई थी (२) [जिनसे]
 रजनी का अंधकार नष्ट हो गया था और अग्निवाची से जाकाज में प्रकाश हो रहा था । (३) सिम
 तथा रस दोनों समस्त नहीं पड़ रहे थे [अतः] कितने दिन कहा जाता और कितने रस ?
 (४) ताजियों (घोड़ों) पर कड़कर बहुत से भाट कैसे जो मुख से धुब (स्वस्ति) बचन बोल रहे
 थे । (५) कठ में हीरों और मोतियों की मालाएँ बिछा कर कुंवार को सुसासन बड़ाकर दे ले चले ।
 (६) चित्रलेख दल साजकर राजकुमार (मनाहर) की बारात ले चले । (७) मनोहर का
 साहस धन्य था, उसकी सिमि धन्य थी उसकी जाता धन्य थी, और उसके पिता धन्य थे ।

टिप्पणी—(१) माहुतावी—एक प्रकार की आठमबाजी जिसके जमाने से अंधिका या उज्ज्वल
 प्रभाव होता है । चरसीक—एक प्रकार की आठमबाजी जो एक सक्की नाइ कर उसके घुरे में लवा
 दी जाती है और बलाए जाने पर उस घुरी पर तेजी के साथ चित्रवाटियाँ उमरती हुई घूमती रहती
 हैं । (३) अग्निनि दान—एक प्रकार की आठमबाजी जो बाण लगाने पर चित्रवाटियाँ छोड़ती हुई
 बाणात की ओर कुछ दूर तक उछली हुई चली जाती है । (४) ताजी < ताजी [का०] = घोड़ा ।
 (५) मुकुताह्व < मुक्ता कण = मणी । (६) बरियात < बर-बाता = बारात ।

[४४३]

मधुर^१ मम^२ रतिबाम मबारी । कुवरहि^३ चडा रिवाहन नागे ।
पमा^४ चमी मगिन मम^५ कमी^६ । माठि ममी माठिउ एक बमी^७ ।
काइ^८ सुगामन कोइ^९ सोइलोमी^{१०} । को^{११} मजागि पाइ^{१२} जावन भाणी^{१३} ।
जावन ओनत^{१४} करहि^{१५} रस कली । उठत बाप^{१६} उर जठ^{१७} वन घणी ।
कबल बनि नव मन मम^{१८} बारी । मन बन्धछ हनि^{१९} हनिबारी ।
कोइ ओनत^{२०} भर^{२१} जोवन कोई अरप^{२२} अमा^{२३} ।
पांच एकाम्य कोन^{२४} हिय उर^{२५} रनन अमा^{२६} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा था रा मधुरा ॥ मधुरे । २ ए वा मय । ३ ए कुवर रा मे
कह गय नही है । ४ ए ध्याहै । ५ मा बारी ।

(२) १ मा था चमी मगिन मय ए मय मगी गय । २ ए बनी । ३ मा
चनी ॥ बनी ।

(३) १ मा बाउ । २ मा काउ । ३ रा चढापी म मा बीडाता ॥ बढामा ।
४ ए बीम । ५ ए कोउ । ६ मा था ए घोण ।

(४) १ मा अनमन मा जमीन ए जमय । २ ए बरी । ३ ए बाणन ।
४ ए म यह गय नही है । ५ मा था जावन ए जावन ।

(५) १ ए मे यह गय नही है । २ मा हनउ हनिबारी ए वा हने बढारी ।

(६) १ मा अनमन मा जमय ए जमय । २ ए भरि । ३ मा बयम ए बीम ।

(७) १ मा ए पाच एकादमी बीन (बीनहू—ए) मा पाच एकादमी बीन रा
मी सन मात्र बनाए । २ मा ही अरप ए हीवर ।

अर्थ—(१) मधुरा मे लमल रतिबाम (रतिबो) को लंबारा (मुनजिबन रिवा) और वह
मारी कुमार (मनोहर) का विवाह करने चमी । (२) वेयो विल प्रचार अपनी लगियों के साथ
चमी कि उसकी को सा लतियों थी मे साउ एक ही बयम् की थी । (३) कोई मुगामन वर लहार हुई
तो कोई चंडेल वर कोई जममे से लयुणा (बतिपुणा) थी तो कोई अमल-योवना थी । (४)
उनका बीकन उपमिन था और मे रलीनी केनि करली हुई [इस प्रकार माली] थी जेन वन की
बल्लारियों के उरों वर कोपले निबलनी हों । (५) मे लमल बालिवाए वयल-मुनी और मधुमती को
थी और मे हार्यामि मेर-बढालों से [बालों को] मारती थी ।

(६) कोई बारी योवन मे उपमिन थी तो कोई अल-योवना अथवा घोरी (मजा-योवना)
थी । (७) उन लोमट भूमार रिग हुए रमियों के हृदयों वर अनयोन लल (गमानरय) मे ।

टिप्पणी—(१) बडा < बजुल = बीडा । (५) बारी < बालिवा । (७) बढाउ <
बढा । (८) मानन < उपमिन ।

[४४४]

गोप दान गोपुर्गि^१ बाग । भाद यगन रात्र -गारा ।

जनवासा जह^१ राज सवार^२ । तहवां जानि^३ बरात उवाच^४ ।
 मोडीव ऊच थिपति क जय^५ । कनक कलस ले तेहि तर धरा ।
 हीरा^६ रतन^७ पाट मयवाए^८ । बंजनवार क बहुत बिसि छाए^९ ।
 सगुन कलस ले^{१०} सिर^{११} बुझ जनीं । भाई गावत नख सिख घनीं ।
 पुनि नउछाउरि आरति दीन्हीं सासु^{१२} पठाइ ।
 बारि^{१३} कुंवर सिर ऊपर पेम^{१४} द्यु^{१५} बिसि दीन्हि सटाइ^{१६} ॥

- पठान्तर—(१) ? मा गौबुरिनि ए बी बुवरी भा गौबुरिनि रा बी बुवरी ।
 (२) ? रा जो। २ मा भा राइ सवारैव । ३ मा तहवां भा, भा तहवां जानि ।
 ४ भा मा बरिजात उवाचैव ।
 (३) ? मा माइव ऊच थिपति किए परा मा माइव उच नूप कीन्ह जवाय ए
 माइव ऊचा थिप कीजा छरे । २ मा भा कनक कलस लेइ तेहि तर धरा
 ए तेहि पर पाट पटोरा परे ।
 (४) ? मा जाये ए या जाये । २ मा बुवा ए बीजा भा बुवा । ३ रा
 बबवाए, भा पाव मयाए । ४ मा ए बहुत बिस ।
 (५) ? मा लैइ । २ ए मे यह धम्ब नहीं है ।
 (६) ? मा सासुइ बीन ए सासु जो बीन्हु, रा बीन्ही सासु ।
 (७) ? ए बारि । २ रा मा मे यह धम्ब नहीं है । ३ मा बुझ ए बहुत ।
 ४ मा बिना छिरीमाइ ए वे छतराइ मा मे 'छिरीमाइ' मान है ।

अर्थ—(१) संख्या होते-हुते गौबुरि बैला में बारास राजाबार बर आई । (२) वहाँ पर
 राजा ने जनवासा राजा रक्का का कहीं बर डगुनि काकर बारास को बताया । (३) राजा [बिक्रम
 राज] ने ऊँचा मंडप बना कर कनक-कलस ले (४) कर उसके नीचे स्थापित किया । [बिक्रमराज
 ने] हीरे, रत्न और रत्नम [की डोरियाँ] बँजवाई और बंजनवार बना (बनवा) कर [उस मंडप
 के] चारों ओर उसे लपवाया (लपवाया) । (५) छत्रुन का कलस लेकर जो स्त्रियाँ, जो नख से
 सिखा तक बनी (बुझिबुझ) भी गयी हुई आई ।
 (६) फिर [बर की] सास ने नैवछावर और आपसी जेब की (७) बिगुँ पेमां ने कुमार के
 सिर पर बार (उबार) कर बसो बिछावों में कूटा दिया ।

टिप्पणी—(१) सास < सय्या । गौ बुवरी = गौबुरी । बाय < बैला । (३) माडी <
 मंडप । (५) नैवछावर < बिच्छु [दे] + बबली = बारा (उबार) जाने बाछा पयार्न-समूह ।
 (७) बार < ब्यार < उ + बर्यम = त्याग करना छोड़ देना ।

[४४५]

बहुरि जनी^१ दस पाछे आई । सुरस कठ माँतहि गरियाई^२ ।
 बिनसनि बह^३ समधी माण^४ । गारी यहि हरति रम माए^५ ।
 पमां कहं ताराचद साई^६ । गारी देहि ओ करहि भडाई^७ ।

औ मधुरा कह समधिनि जानी । गारो दहि औ कहि न जानी ।
 औ मधुमालति चरि बपाई । पमा कह गरियावहि आई ।
 पुनि० बिछु तरब दबाएउ कुवर(?) ओन्हहि अनुमान ।
 हरण अनद किलोल सठ० फिर सम कहत बरान ॥

पाठान्तर—

यह छंद मा ए में नहीं है।

- (१) १ भा. कनि रे जमी। २ भा माई। ३ भा. मुरम माणि मुग दनि सोहाई।
 (२) १ भा बर। २ भा मानी। ३ भा भागी।
 (४) १ भा बिछ।
 (५) १ भा मधुमालनि कह बनि। २ रा भा गरियावहि।
 (६) १ भा रा पुनि। रा म यह छन्द छूटा हुआ है।
 (७) १ रा भा मा। २ भा कुदरी।

अर्थ—(१) तदनंतर बस रियया उनके पीछे आई जिन्होंने रसीले बर से [कुमार की] माता के संबंध में गालियां गवाईं। (२) बिचलेन को समयी के साथ (पर) से से रस से प्रेरित और हविन होकर गालियां सुनाते लगीं। (३) पमा को बेसाराबंद कलपाव से गालियां देने लगीं और जतने अपमान करने लगीं। (४) और मधुरा को समधिनि जानकर से गालियां देने लगीं और [इसम] से मर्यादा को अवहेलना करने लगीं। (५) और मधुमालती की बेरी बाप (कह) कर पमा को से बाकर गालियां देने लगीं।
 (६) तदनंतर कुमार (?) ने उन्हें अनुमान से कुछ इच्छा दिलाया (७) तब एवं आनंद तथा बस्त्रोत्त के साथ से [कुमार का] बरान करने लगीं।

टिप्पणी—(२) मा=मैंका भूमि होना। (७) वेड < मय < माय।

[४४६]

तब बिक्रम दुद बिग्र पठाए । ल कुवरहि मुगमाली आए ।
 कुवरहि मानि मांज बमार । याए मानि गड़ विण बार ।
 ब मनहि यामन बरामी । होम कहि माहति चौरामी ।
 बंवरहि लाइ पारि । जनम गांठि नुं अंधर मारी ।
 कुवरि बंवर ब मयउ हाग । कुवर हार मपु गाय टारा ।
 पनि मांवरि कुंवर पामि पर बर कामिनि कर रागि ।
 कन्यापान कोन नृप हव पिकर मागि ॥

पाठान्तर—(१) १ भा मा ए पुनि। २ भा ए रा मुगमाली। ३ भा लादे।
 (२) १ रा भा ए कुवर। २ भा माम मा मारे। ३ भा बंज ए रिदु।

- (३) १ ए बायग। २ रा बेदवानी ए मा वषवासी। ३ मा ए होम अप (कर—ए) महुली (आहुति—ए) बीरपसी मा होम चरहि आहुति बीरपसी।
- (४) १ मा पडाही ए पई। २ मा ए घर। ३ ए बारी। ४ मा जरम।
- (५) १ रा कुवरहि कुवरहि, ए कुवरि कुवर के। २ रा मेरुहि। ३ मा मा पुनि मुख (मधु—मा) गीत साध रा मधु पीने काय ए मधु पीना साध।
- (६) १ मा फनि ई भावरि कुवर पानि कर कामिनि कर राकि मा पुनि ई भावरि कुवरहि पानी परवत कामिनी कर रापि ए पुन ई भावरि पानी पकि ई कर कामिनि के राकि।
- (७) १ मा कन्यादान कीन्ह नृप से जस (विक्रम—ए) देवपितर ई सापि। मा कन्यादान किएत नृप से जस देव पानी साधि। २ रा से बोहा निम्न मिलित है —

जिना देव भावरहि होम कामिनि परवारि।

कुवरहि काह पडाहि मधुमासति विक्रम राय भुवार॥

अर्थ—(१) तब विक्रमराज ने दो ब्राह्मणों को लेजा जो कुमार को तुल्य आत्म में निजा लाए। (२) कुमार को लाकर उन्होंने मध्य में बैठाया और बाला (मधुमासली) को लाकर उसके बाएँ कंधा किया। (३) विद्वान् ब्राह्मण बैद-वाद्य कर रहे थे और बीरपसी आहुतियाँ देकर हुवन कर रहे थे। (४) कुमार के लगाने से राजबालाएँ पड़ (स्वस्ति-वाद्य कर) रही थीं और उन्होंने दोनों (वर-वधू) के अंशकों में बीषण [जर के संश्लेष] की गति बाँध दी। (५) कुमारी ने कुमार के कंठ में हार डाला और कुमार ने हार मधुमासली की पीना में डाला।

(६) फिर माँवरें देकर बीर कुमार के हाथ पर श्रेष्ठ कामिनी मधुमासली का हाथ रक्त कर (७) दोनों तथा पितृ-भर्ता को लाली देकर राजा (विक्रमराज) ने कन्यादान किया।

टिप्पणी—(२) मास < मध्य। (४) बारी < बासिन्दा। (५) भावर < बन्धक। (६) पीम < पीष < बीष। (७) साकि < दासी।

[४४७]

मा वियाह सोत। दुह हिया। अनि किभि जेह सोस सँ अस किया।
 बहुत दुल धनुते। ओसरी। बिबन आस पुरी। दुहु करी।
 अनि अनि पुत्र करम जग जहो। अकसमाद मिसि आई सनेही।
 स उठाह कुवरहि ग तहाँ। सुरत सन सुखसाधा अहाँ।
 बहुरि सतिन्ह बाला पृथिसाई। सुरत सेव रस ल मसाई।

किछ अनरजिय मिसम कर। बिछ मो हिय बरह।

प्रथम समागम। बाला दिसि न सौह करह ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भाज। २ ए विपभा। ३ भा भाग हुन।

(२) १ ए बहुनी। २ ए विबना। ३ भा फरी ए पुरी। ४ ए बुद्ध।

(३) १ मा ए भम घन। २ मा पुरव ए पूर्व। ३ भा मा ए भस्ममान।
४ ए मिषी जग हरी।

(४) १ मा मुरत। २ ए मिषामन।

(५) १ रा मपित ए मपी। २ मा मुरन। ३ मा मेज रम ए गन जा।

(६) १ मा भानद मन बरै, ए भनद मिलन नै भा भनद मन मिलन बर
रा भनद जिय मिलना। २ मा बुछ। ३ भा मा ए भै। ४ मा ए
हिये। ५ रा पछइ।

(७) १ भा दुष्ट बुझर मह बासा रा पबम समानय बासा। २ भा भा म गौरी।
३ रा पछइ।

अर्थ—(१) विवाह हुआ और वो (बर-बपू के) हृदय दांत हुए विधाता को धन्यवाद है
जिसने उत बना से बहु बना को। (२) बहुतेरे बुद्धों और बहुतेरी उल्लानों के अर्न्ततर विधानों से हमों
को आताएँ पुरी कीं। (३) यह पुर्वाजिन धर्म धन्य होता है जिसके द्वारा अक्षरमान् प्रम-वात्र मिल
जाते हैं। (४) कुमार को उठारर [बे लाग] वही से गए वहाँ पर गुप्त शास्त्र में मुरत शाय्या को।
(५) तदन्तर शरिषों ने धारा (मधुभास्वती) को फलसाया और से आकर पीरे से उसे मुरत
शाय्या कर बिठाया।

(६) [बहु वाला] मन में कुछ तो आनंद जिय है मिलने का और कुछ भय [प्रथम समागम
का] धारण कर रही थी (७) उत प्रथम समागम में बासा [जिय के] सम्मुख दृष्टि नहीं कर
रही थी।

टिप्पणी—(१) घनि < घन्य। (२) जीमरी < अक्षरद (?) = उल्लान। (४) मन < मन्य
धन्य। (५) मेज < शय्या। (६) भी < भय। हिय < हृदय।

[४४८]

कुबर बाह कामिनि गहि कहा^१ । हिए^२ मिगन^३ जो सुख^४ लग्य रन ।
अबहू^५ तनु^६ पाछिनि^७ रिगई^८ । परिहरि^९ साज लागु उर^{१०} आ^{११} ।
साज छडाइ^{१२} बहुहि रम^{१३} बना^{१४} । मोह^{१५} भा दुहू^{१६} न नीना^{१७} ।
अह^{१८} जो लायन^{१९} आम निगाण^{२०} । दुहू पिया रम रूप अपाण^{२१} ।
दगधि हिए^{२२} बुहू^{२३} बनि जदानी^{२४} । मिगन उरहि उर तरनि मिगना^{२५} ।

मन मन गउ^{२६} लोम मन मउ मन^{२७} भगवान ।

दुपौ हिय उर^{२८} मिगिण^{२९} भ^{३०} भजियउ मानहि^{३१} प्राण ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बरय। २ ए हिय। ३ भा मिगन। ४ भा सुख। ५ भा नना।

(२) १ भा भा अब^३ लग्य ए अब लग्य। ए पाछिनि। ३ रा नरति।
४ रा उर लागहि भा लागहि ए लाग्य नीन। ५ ए बरै।

- (१) १ रा छड़ि साज ए छड़ि साज। २ रा कहि रख या कहू रख पै ए कहू रख छी। ३ या भा छीह ए छीह।
 (४) १ मा बाहे। २ मा लीमेन (< लोमेन नावरी लिपि)। ३ मा बुह पिवाह।
 (५) १ मा बयबि बुह हिय केरि बुहानी या बयबि बुह की हिया बरानी ए बयि बुनी के हिय बोहानी। २ ए मिळन नाव से उपर सिछानी या मिळन नाव ए उर छी सिछानी।
 (६) १ ए छे रा सो। २ ए ते मर रा में वे हो सख नही है।
 (७) १ मा बुह हियाबर ए भा बुह हीबर। २ मा ए मी। ३ मा बी कप रंग ए बी मी एक या मयी सो मानहि रा जनिबद बिछे।

अर्थ—(१) कुमार ने कानिनी (मधुमाखरी) को बाह पकड़ कर कहा "हृदय में जो तुम्हारा (तुम्हारे बिछू का) बुझ या बहु सीताक हो गया। (२) अब भी तुम पिछली निष्ठुरता छोड़ दो, और लज्जा छोड़कर मेरे हृदय से जा लो।" (३) तदनंतर लज्जा को बुझकर (बलाग कर) उन्होंने [परस्पर] रख (जेन) के लक्षण कहे, और दोनों के नेत्र [एक दूसरे के] सम्मुख हुए। (४) क्योंकि [उनके] नेत्र [मिलन और बर्धन की] भाषा से वृत्त के उन्होंने [परस्पर] वृत्त होकर रख और रूप का पान किया। (५) दोनों के हृदयों का बाह उठा हो गया और उर से उर के मिलने हो [दोनों के हृदयों का] साज सीताक हो गया।

(६) नेत्र नेत्रों से लुब्ध हो गए और मन से मन उल्लास गया (७) दोनों हृदय मिल कर एक हो गए और [एक का] प्राण [दूसरे के] प्राणों का लक्षण करने लगा।

टिप्पणी—(२) किहुराई < निष्ठुरता। (४) बी < बयो < वय = क्योंकि। लोपन < लोचन। विसाए < विसादन < वृत्तित।

[४४९]

सोत^१ पियत रूप धनु दुह^२ । रवि ससि बुबो एके भ किहू^३ ।
 मुल मुल सम नहि^४ सीह बराही^५ । प्रथम समागम मन यहराही^६ ।
 कुंवर अघर अघरनि^७ सउ^८ जोर । नृवरि^९ विमुल मै भै मुल मोर^{१०} ।
 घोष गरम मुख फूकि फूकि^{११} बाळा । अधिकी करे रतन खियाला ।
 दुह^{१२} कर ल लाजम्ह^{१३} मुल^{१४} साव । अघर दसन काठ उर^{१५} काप ।
 एक विरीति जिय पियक^{१६} औ भै परधम सय^{१७} ।
 तिसरे साज वियापित^{१८} उपज न^{१९} दुह^{२०} रति रंग^{२१} ॥

पद्यान्तर—(१) १ मा माहे। २ ए दुह। ३ मा बुह मिले मी कहू भा बुह मिलन मी निहू ए मिलि एक मी बोझ (बुझ पूर्ववर्ती बरन का तुक)।

(२) १ भा बा सगा ए मीन। २ मा मा सीह नही करह (करी—मा) ए सीह ना करई। ३ मा. भा. ए उर बरबराई।

- (३) १ ग आरम्भ । २ मा भी भा बर ग न मा । ३ ग म पर रम्भ
मर्त्य है । ४ मा फर ।
(४) १ मा फरि फुरि न फरि ।
(५) १ ए दुमी । २ मा नै जम्भ ग नै लावनि । ३ न लाई । ४ मा
मरु भा बर । ५ मा रडिग डर, न नै गडिग ।
(६) १ मा एरु रिगिनि जाई जो पीआरी ए एर वाय परम् पिआरी ना एर
प्रीति जिय प्यारी । २ मा भी भै परम्भ मग मा जी भै प्रथम ममाग
ए भी भी प्रीति ममम ।
(७) १ मा रिआ पीउ (< बिपापेउ फाग्यो सिदि) न व्यापउ । २ मा
वालय न पलरम्भ । ३ मा रनिगम ।

अप—(१) कप का पान करते-करते होमो के बलु दांत हुए, और किसी प्रकार सुवं (प्रेमी)
और प्रसि (प्रसिका) दोनों एक हो गए । (२) [के] मग क सम्भुग मुन नहीं कर रहे के क्योंकि प्रथम
समायम [के मय] से उनके मन बर्रा रहे थे । (३) कुमार [अपना] अपर [कुमारी के] अपरों से
मिलाता तो कुमारी बिपुल हो-हो कर मुन छोड़ लेती । (४) दीपक के धम से जब जाता [रत्नों
की] कुंवरती सब राम और अविष प्रकाश करते । (५) लज्जा के कारण वह दोनों हाथों से मुन
हँक लेती और जब [कुमार] दोनों से [उत्तरे] अपर रडित करता वह डर से बर्तने लगती ।
(६) एक तो हृदय की प्रीति थी दूसरे प्रथम बार के [गप्या मे] साथ-साथ हुए थे (७)
तीसरे साथ व्याप हो रही थी इसलिए दोनों में रति-रंग उत्पन्न नहीं हो रहा था ।
टिप्पणी—(१) बर < बरनु < बर । (२) मौन < लम्भुग । (५) लाय < मय [६] =
हँकना । (७) बिपापि < व्याप ।

[४५०]

तो ओलट म^१ मगी एन^२ कहा । बाग्य कीन्ह^३ बीर पति बड़ा ।
चौरी मयु^४ गुनिबोल गनि मरी^५ । प बधि लाव^६ दुष्ट बिष गली^७ ।
गुन परगट तो लावहि^८ गोवा । लाव कर^९ तो^{१०} गुन हर^{११} गोवा ।
यह उपमान जानि मन^{१२} हसी । गाररि^{१३} मगुर क्यारर इमी ।
कप बुमन्ह मग^{१४} जायम पर । बिनुम अपर^{१५} बीर म पर^{१६} ।
जब जोयन अवगाह^{१७} गि क^{१८} डाउस कर म^{१९} पिग ।
बना बलम दुर^{२०} द हिय^{२१} सगर^{२२} लाव^{२३} मग्नि ॥

प्रत्यक्ष—(१) १ ग सब लाउग गरी भा मव जोयन भै मा न भी बाग्य भै । २ मा
ग जग । ३ मा बीष न रिग ।
(२) १ मा मायु । २ मा बीलागि न मा बीलाग । ३ मा बीर
ग बरी न रीनी । ४ मा बधिजाल न बिनु लाव । ५ न इमी
दिष दीनी ।

- (३) १ मा जा गुन परगट साबहि सोया मा जो गुन साजहि प्रगट रा गुन परगट तो काम न सोया ए जा गुन साज प्रगट रह। २ ए करी। ३ ए मे यह सम्ब नही है। ४ मा रह।
- (४) १ ए मा उपखानि (उपखान—मा) जानि मन रा उपखान जानि है। २ ए गाबर (<गाबरि प्रगटि लिपि)।
- (५) १ मा ए तब गज कुमह। २ मा जाबर। ३ मा कीर सम के ए श्रीर रख मरे।
- (६) १ मा जब बीना जोवनहु देखि ए जब जोवन बी पाह देखि है। २ ए जो।
- (७) १ मा कुब। २ मा हिवा ए हीबर। ३ मा सवरी ए नै जो मा तर भिय सो रा सवरहि। ४ मा सा।

धर्म—(१) तब छिपकर (जाड़ में होकर) [मधुमांशती की] एक सखी ने [उत्तमे] कहा 'ऐ बाला तूने कोक-यासव पढ़ कर क्या किया?' (२) सखी की यह बोली सुनकर मधु चीक पड़ी किन्तु उसे बुद्धि और लग्ना दोनों ने [परस्पर] बीच में पकड़ रक्खा। (३) परि यह [अपने कोक कला-संबंधी] गुण प्रकट करती तो लग्ना को बोली और यदि लग्ना करता तो अपने [कोक कला संबंधी] भारी पुनो को नोपित रखती। (४) [अतः] वह बहु उपस्थान समस्त कर हूँ पड़ी कि किसी स्त्री को सर्व मैं बुरे (गुहा) स्थान पर उस किया था और उसका वाकड़ी (उपचार-कर्ता) उसका इन्धुर था। (५) [अतः] उसके कुछ-कुछों पर [नायक के] लक्ष-अंकुश पड़े और उसके विद्रुम-अचरों को कीर (नायक) [के बसो] ने धीरे से पकड़ लिया।

(६) [नायिका के] जीवन-काल को अगाध देखकर [नायक का] चित्त धीरे नहीं धारण कर रहा था (७) इसलिये वह [नायिका के] दोनों कनक-कनकों (कुंजों) को हृदय के नीचे दे कर लग्ना की सतिता का संस्कार करने लगा।

टिप्पणी—(१) कोकट <अवसत <अवसुप्त = औप-श्राप। (२) हर <अर = भारी। (३) उपखान <उपस्थान = कथा। (४) गाबरि <गाबर = सर्व के विष को छतारने वाला।

[४५१]

सुरत^१ पम रस अकौ^२ मरेक। रतन अवध^३ वेध जनु परक^४।
 कपुनि तार तार^५ उर^६ फाटी। उषसी^७ शिरहि मांग जो^८ पाटी।
 सेंदुर मिलि गा^९ तिरक सिरारा। काजर नमनि^{१०} पीव रतनारा।
 कठई^{११} कटहार गा^{१२} टूटी^{१३}। दस मलि^{१४} मलै पक^{१५} गा^{१६} छूटी।
 बहुरि फूटि ग^{१७} अत्रित लानी। मई सांति हिय^{१८} साध जुझानी^{१९}।
 पाम सकलि मिशि बीती^{२०} एकहि^{२१} एक म टार।
 उद ग तिन्ह^{२२} जिय^{२३} सांति म^{२४} जब छूटि गगम सें^{२५} बार॥

- वाठानर—(१) १ ए सुन। २ मा मरुम ए मरुम रा मे रा मरु मरी है।
३ मा बनेपहि। ४ मा हिये परेऊ मा ए जो परेऊ (परेऊ—ए)
रा निपेऊ।
- (२) १ ए तरुनि तरुनि। २ मा हाइ। ३ ए बाय विम। ४ मा गीग
ए मे यह मरु मरी है। ५ मा गी।
- (३) १ मा मिलि पी। २ मा मैतम्ह।
- (४) १ मा कउ चोडा ए विवहार। २ मा मा ए क। ३ ए दू
(<दूटी कारनी लिरि)। ४ ए बलिमल। ५ मा मा मने देह ए
हई देह। ६ मा पी ए सी।
- (५) १ मा मै ए पी। २ मा बही माय मे मा कई माय भी ए भी मानी
जो। ३ मा मा माक बिरानी ए माक नि मानी।
- (६) १ मा उर बीनी मा निमि बीनी ए हए जीनि। २ ए येनी।
- (७) १ मा तब मै हूँ ए तब मै दुखी मा हि दू। २ ए मे ए
मरु मरी है। ३ मा ए मानि मे। ४ मा जब मयन निर राही रा रा
मयन मा मयन मे छिन्ना ए मयन मे छिन्ना।

अथ—(१) मुरत और प्रेम क रत में [सोनी मे एक दूसरे को] अंशों में नर लिया, और ऐसा
हुआ सोनी अनेके रत में भेज हुआ हो। (२) [मायिका की] कंचुली उतने हृदय पर ताप-नार
कउ गई और उसके तिर की माय और केरों की पड़ी उन्मत्त हो गई। (३) [मायिका की] माय
के तिर में [मायक के] ललाट का तिलक मिल गया और [मायिका के] नेत्रों का बाजल [मायक
के अंशों की] पीक से लाग हो गया। (४) [मायिका के] कंठ का कंहार दूट गया और बलि-
मृति होकर [उसके अंशों पर मया हुआ] मलय-वन (बनन का लेख) छूट गया। (५)
इसके अनंतर [उसकी] अमृत की लानि कूट गई और हृदय की साथ (बाह) छिरन होने से उसे
धाति [प्रसन्न] हो गई।

(६) राज-मरित [के प्रयोग] में शक्ति बीत गई और एक मे दूसरे को अपने से अलग नहीं
रिया (७) और तब आरर उनका हृदय धाति हुए जब मयन से धारा गूरे (समन्वय हुआ)।

छिन्नी—(१) निगार<निगाह<लगा। (५) अमृत लानि=मारी रा गुप्त मय।
मयन<मडा<पडा=गूरा बांछाया।

[४५०]

मुरत मन मुग रनि बिहाना। बिहानहि दुःखि हिन मिहाना।
राज बबर उरि बारहि आरा। ब अमनान मन तनु गारा।
बस मारि पहिराउठ बापा। पुप्रि जानि कान्ति बिज राना।
बापा पनि मै मगिह जगई। निमरा अन मुग मय मारा।
म मय मगिह गिगार बगई। अमन समन मारि पनि।

पूँछहि सखी' पिरम रस' रस रस सहर लाइ' ।
कहु हम सख' रस बात' रनि' सपत जो' फुरन' कहाइ ॥

- पाठांतर—(१) १ मा हाणि ए मा वगधि। २ ए मे यह छत्र नहीं है। ३ ए हिमे। ४ मा सेछनी ए सुतानी।
(२) १ मा बाहिर ए बाहर।
(३) १ मा केन जराइ मा मलाई लाइ ए मज्जा बाइ। २ मा छिरयेउ ए छिरामेधि। ३ मा पुनि जानि किछु कीयेउ मा पुनु जानी कीन्हेउ ए कीन्हा पुण्या जानि।
(४) १ मा रा ए पुनि। २ मा नै ए मे यह छत्र नहीं है। ३ मा रा सखिन। ४ मा निचरी। ५ मा गुण ए गुन।
(५) १ मा सब सपी रा सब सखिन। २ ए बस्तर जानि।
(६) १ मा सखी। २ रा सहेली। ३ मा रस के बाई ए लहरी लाइ।
(७) १ मा लै ए रा ली। २ मा रस बाँटे ए रस बाँटे मा निचु बाव। ३ मा की ए कि। ४ मा मे मे दो सख नहीं है ए सपत मूर। ५ मा फुर न ए मे मे दो सख नहीं है।

- अर्थ—(१) मुरत-अप्या में गुण की रचनी प्यतीत हो गई और दोनों के हृदय की विरहाग्नि पीतक हुई। (२) राजकुमार उठ कर द्वार पर आया और उसने स्नान कर शरीर में मज्जा (बंबल) लगाया। (३) उसके केशों में कंधी कर उसे बाग (संवा अंधारना) पहिनाया गया और पुष्प समझकर कुछ त्याग (बल) किया गया। (४) बाबा (मधु) को तबन्तर बाहर ससियों ने बताया तो वह [मुरत-अप्या से] इस प्रकार निकली मागे गुण-समुद्र में स्नान कर निकली हो। (५) समस्त ससियों ने उसे ले बाहर गुंगार कराया और समझकर जानूबक-बल पहिनाए। (६) सखियाँ उसके प्रेम-रस के संबंध में बीरे-बीरे फूलमाली हुई प्रसन्न करने लगीं। (७) [जन्होने कहा] 'हम दो रस की रस-बस्ता कहो और तुम्हें टापन है यदि स्वयं न कहो।' टिप्पणी—(१) सँग < छयन < छाया। (१) (७) रीति < रयनी < रजनी। (२) बार < बार < द्वार। अवमान < स्नान। (३) पुनि < पुष्प (६) पिरम < प्रेमन = प्रम। (७) फुर < फूट = स्पष्ट।

[४५३]

पमा पूँछ' कुनो' कर गही। कहु सो बात रनि' निरवही।
अवरि' सखी' पूँछहि फुसलाई। कहहु प्रीतम कस गिय तुम्ह लाई।
राज न बरहु कहहु मुख लोली। निमि तुम्ह पिय भई' प्रीति अमोली।
कुबि माँय लखुइ' क जोय। कह न' बात लाजि' मुस गोब।
तउ' तउ' सखी करहि' बहु आरो। कह न' बात प्रम रस' बारी।
बहुत माँति फसलावहि' पूँछहि' न' न आरि।
हम सख' गोइ बात रस करो' कहिहु बाहि' उषारि ॥

- पठान्तर—(१) १ ए भा पूछ। २ मा हुमहु रा बर। ३ मा रनी रा जम निमि।
 (२) १ मा भा औरो ए भी नव। २ ए मगी। ३ मा पउ कुमलाई
 ए पूछे कमलाई। ४ भा बरहु प्रीति पिय तुम्ह गिय लाई रा ररहु प्रीति
 पम पिय तुम्ह लाई मा माज न कर, पिय मिताई ए ररहु प्रीतिम निमि
 लाई।
 (३) १ मा बरहु प्रीति तुम्ह पित्रही पावा ए लाजत पदो बरहु गग गादी।
 २ मा तुम्ह पित्र भी ए विज मो भी रा मर मर। ३ मा न
 नवेनी।
 (४) १ मा तरहु। २ मा बरन भा बरहि त। ३ मा लाजत न
 लाज। ४ मा भा मुह।
 (५) १ भा मा ए ती तो। २ ए कर। ३ मा बर न बरहु। ४ रा
 बात लाज मुग (मुग पूर्ववर्ती अर्पणी) भा पम बात म। ५ मा भा
 ए बारी।
 (६) १ भा कुमिलाण्ड। २ ए पूछे।
 (७) १ रा न मा। २ ए को बारी नव रा मोह बात म। ३ मा बरहि
 बारे ए पुनि बेहि बरहु भा बेहि मा बरहु।

अथ—(१) वेमो जलके होगो हाव बरहु कर पुछने लयी 'बह बाली बहो को रत में पटित
 हुई।' (२) अथ ललिया कससा कर पुछने लगी 'बहो प्रियतम मे तुम्हें किस प्रकार गो
 लयाया? (३) तुम लज्जा न करो और मुँह कोलकर (फट कर लो) जनाओ कि किस प्रकार तुम
 और तुम्हारे प्रियतम में अप्सुख प्रीति हुई।' (४) कुमारी कस्तक कीचे की ओर बिट्टा देवनी रही;
 वह जल बाली को बह नहीं रही थी और लज्जित हो कर मुँह छिपा रही थी। (५) ललिया जगी
 प्रकार और भी अधिक हठ करती रही बिनु बालिया (मधु) प्रेम रग की बाली नहीं बह रही थी।

(६) ललिया बहुत प्रकार से उसे कससायी रही और हठ कर पुछती रही। (७) [उम्होंने
 बह] "हम से रत की बाली गुप्त रत कर तुम किसने [उम्हें] लालकर बटोली?"

टिप्पणी—(२) गिव < गिव < गीवा। (४) भाव < मगा। (५) बारि < बारि।
 (७) उपा < उ + पाट् = उपाट्मा गोमना।

[४५४]

तब^१ बर भारि अमिर्भ^२ मुग गोली^३ । मुन^४ बरिष^५ पग बाव अमोनी^६ ।
 भ^७ न दीजिय^८ आपन बाह^९ । बोरिहु बह^{१०} रनि न द^{११} लाट^{१२} ।
 पर^{१३} गोह^{१४} हिम^{१५} पम न पुरी^{१६} । नो द^{१७} म^{१८} जगन पड^{१९} मुरी^{२०} ।
 बहो^{२१} भद आपन तुम्ह जाहा^{२२} । प हों लही^{२३} भुद द^{२४} बाटा^{२५} ।
 पूरे^{२६} कुंम भरिय^{२७} को^{२८} पाली^{२९} । गिनु गिनु^{३०} ब^{३१} ब^{३२} प हानी^{३३} ।

पिगनी स्वरों यन न^{३४} लगहु^{३५} बा मो^{३६} को^{३७} ।

को लहि^{३८} मोष रहा घर ऊपर भे^{३९} न बाह^{४०} द^{४१} ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए पुनि। २ भा रा भाति। ३ ए रस लाका। ४ भा कही मा कही ए बही। ५ ए सब बाठ अयोला।
- (२) १ मा ए बीनी। २ मा मा को ए का। ३ मा है सी ए है जो।
- (३) १ भा मा घरहु। २ ए पोबाह। ३ मा ए मैं यह घाय्य नहीं है।
४ मा मा ए बनि कहि। ५ भा बहिय बग मा बडहु बग ए बड़े जग।
- (४) १ मा देठ भा ए देठ। २ मा सब बाही ए सब छाही। ३ मा कुनि हो महुक ए कहिही महुक भा कुनि मन बही। ४ मा ए ले।
- (५) १ मा कुम मरिबै ए कुंम मरै मा कुंम मरै। २ ए जो। ३ ए छिन छिन।
- (६) १ मा ए की। २ मा देपु वहु भा देछहु ठ। ३ मा ए बोइका मा काव पुनि।
- (७) १ ए कवि। २ मा भा आपन ए कहु।

अर्थ—(१) तब उस खेठ वाली ने अपना अमृत-मुक सोलकर किस प्रकार की अमृत्य वाला रही उसे सुनो। (२) [उत्तने कहा] “अपना भेद किसी को न देना चाहिए; कोई बाबली भी क्या क्षति लेकर लाभ [उसके विनिमय में] देती है? (३) हृदय में प्रेम की मूल बोधित रखनी चाहिए, क्योंकि अपना भेद लेकर इस [मिच्छा] जन्म में जीवन [संसार की मोक्ष] धुली पर चढ़े? (४) जब (यदि) मैं अपना भेद तुमसे कहीं तो उस भेद को लेकर कम मैं [उससे] कोई लाभ उठाने लूँगी? (५) यदि कूटे हुए चढ़े में वाली गरिए, तो लाभ-प्रतिफल बूँद-बूँद करके क्षति ही [तो] होती है।

(६) लेखनी मन की लकड़ी है किन्तु देखो, उसने क्या किया। (७) जब तक बसका मस्तक (सिर) घरा पर रहा (जब तक उसका सिर भूमि से अलग नहीं किया गया) उसने किसी को [अपना] भेद नहीं दिया।”

टिप्पणी—(१) बनिज < अमृत। (२) बति < क्षति। (३) पोह < नापित = छिपाई हुई। (४) जाही < जाहे < बरा = जब। काही < काहे < क्या = कब। (५) लकरी < लकुरि = लकड़ी। (७) माव < मस्तक।

[४५५]

छाराबद महता^१ श्री^२ राबा । मोर होत मिलि^३ दाएज^४ साजा ।
पीठि बाहि पावर सोमवानी । भाए^५ हय^६ स सहस पलानी ।
औ ममत गज मथ^७ समानी । दायज दीन्ह^८ जगत सम^९ जाना ।
अमरन सम जरायन्ह^{१०} जरा । शापिन्ह^{११} सहस साज^{१२} क धरा ।
सोन^{१३} रूप वहु सादि पयाबा । मनि मुक्ताहृष्ट^{१४} मनत म आवा ।
कापर पाठ^{१५} जहाँ सगि^{१६} आ नविनहा^{१७} न जाइ^{१८} ।
बहस^{१९} सहस दस^{२०} सादि क आय दिग^{२१} जलाइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा मथ ए महज। २ भा अब। ३ ए ती। ४ भा बाइज।
(२) १ मा भाई। २ ए है।
(३) १ ए सिप। २ मा बाइज बिजा मा दायज दिग। ३ भा सय।

- (४) १ भा पणायन मा ७ जगवत् । २ भा शोपि मा भा शानी ७ शोपि । ३ भा ७ शोपि ।
 (५) १ मा म यत्त यत्त शक्ति है । भा ७ मानि मृता भा मनि मृता मृता ।
 (६) १ मा म यत्त यत्त शक्ति है । २ भा लति । ३ ७ माहि वहे । ४ मा उगाड ।
 (७) १ भा वंग । २ मा म यत्त यत्त मरी है । ३ ७ आग दिना ।

अर्थ—(१) साराबंद महाभाव और राजा से सजरा होते ही मिलकर बायन की सजरा (संघारी) की । (२) पीठ पर सोने के बर्तन की वापन डाले हुए ली सहस्र ब्रह्म वनाम कर आण (साए मय) । (३) और महामल यत्त जो कि यैयों के समान थे बायन में दिए गए, जिसे समस्त जगत् में जाना । (४) समस्त आभरण जो अद्भुत वस्त्रों से बने हुए थे सहस्र पिदारियों में सजरा कर रखने गए । (५) अद्भुत-सा मुक्कन और कप (बाँदी) साद कर रवाना किया गया मयि और मुक्कनल तो गिननी में नहीं आ रहे थे ।

(६) वस्त्रों के बहोत सफे नाम (बेद) होते हैं जिन्हें वस्त्र कहें वही सजरा है । (७) इस सहस्र बर्तनों पर साद कर आये जाता दिए गए ।

टिप्पणी—(१) यत्त < महाभाव । (२) वापन < वस्त्र = ब्रह्म वस्त्र । शानी < शक्ति । वनाम < वर्षावपु < ब्रह्म-वस्त्रादि म सुमंगल करता । (३) वापन < वपन < वपन = वपन । (४) वमत् < वमत् < वपन = वपन ।

[४४६]

चरि । मत्त मो मम वनाद । मिह दनि पर वान मृग शा ।
 ओ मय भद्र म माति महसी । म्निवा मय गहा जो गान ।
 बरियाती जन गहन जाग । प्रागा मय भय नि मय पाग ।
 भावन मोन मय व भाग । गान गन्ध वरनि म गान ।
 गाना आठौ दू जगद । मय गान शिनि मय उगाद ।

अगर कपूर ही शिगम परिमल माग जो भाति ।

मयिग मय वानग छागरी यग मय दम मयि ॥

वापन—(१) १ मा ७ वरि । २ मा जो मय ७ लो मय । ३ मा ७ शक्ति । ४ मा चर । ५ मा ७ मय ।

() १ मा भा ७ मय । भा मयि मा मयि मयि ७ मयि । ३ ७ मयि ।
 ४ भा ७ मय मा ७ मय माय । ५ ७ मयि ।

(१) १ मा ७ मय । २ मा मयि । ३ ७ मय । ४ मा भा ७ मय (माया —मा) ली ली (ली मी—मा) मिह मय (मय—७) मय ।

(५) १ मा भावन । ३ ७ मयि मय व । ३ मा भा ७ मय । ४ ७ मय म भाग ।

- (५) १ मा टक जरावा ए टूक जरावा। २ मा पीनी उषावा ए बीमि उषावा।
 (६) १ मा ए जो परिमल (प्रमल—ए)। २ मा ए कुकम मा कुकुइ।
 मा साख जो आदि मा साख जवावि ए सावि जवावि।
 (७) १ मा मंस। २ मा सारि। ३ मा बराम सुहारे और बहु बसह सविह।
 सावि ए बराम सुहारे और बरीमी बसह सहस्र दिय सारि।

अर्थ—(१) मधुमासधी की सप्तम केरियाँ (बाधियाँ) जो उन्हें [उसके] साथ रखता किया; [बे ऐसी थीं] जिन्हें देखने पर चंद्रमा के [जी] मुख पर छाई पड़ जाए (वह काकिमा पुस्त बीजने लगे)। (२) और उसके साथ वे सात सहेलियाँ हुई (बली) जो [उसके] साथ बचपन में खेल चुकी थीं। (३) जिसने बाराती [बार के] साथ आए के उन सबों ने अच्छे-अच्छे लपे (अँपरले) पार। (४) सोने और चाँदी के कर्तन हुए (दिए गए) और रेशमी कपड़े तथा बराम [इसने] दिए गए कि उनका वर्जन नहीं हो सका (सकता है)। (५) उसे पत्तों की गई जो जाँठों दुकड़ों (बार पायों और बार पट्टियों) में बड़ाव की थीं वे अच्छे रंगों के रेशम से बनी हुई थीं जिसमें बूल उड़ाए (जमाइ के साथ बिते हुए) के।

(६) अगुह कर्पूर नूपमह (कस्तूरी) और जो आदि से [ही] परिमल की साखाएँ रही हैं (सुर्बलित बनस्पति आदि) (७) नारियल झाका (किसमिन्न-मुनक्का) बाबान और सुहाइ बस सहस्र बीजों पर जाये गए।

टिप्पणी—(१) चेंटी < चेंटी = बासी। (४) रूप < रौप्य = चाँदी। (७) बास < बासा = बँबूर किचमिन्न-मुनक्का। बसह < बसह < नूपम = बीज।

[४५७]

जो दायज सब छावि बसावा। उठि क कुंवह कुवरि पहु आवा।
 पूछेसि कौन महल तोर भाई। हम सब सह वसावहु जाई।
 ग आपन जिउ ओहि पर बारों। बरन रनु बरमिन्ह सउ शारी।
 सीस घरी ओहि पांव लगाई। बरननि सउ बुझ भाष बड़ाई।
 ओहि मोहि लागि सहा दुस मारी। मैं ग करो जीउ बलिहारी।
 सोजि यहू किछु ताही जो आरति ल जाउ।
 जिउ अति किञ्चित बोरा आरति करत सजाउ ॥

भाव—मा ए ने उपर्युक्त तीसरी तथा चौथी अवस्थितियाँ परस्पर स्थानांतरित हैं।
 (१) १ मा जो दायज सब मा. बाहज सब पुनि ए दायज सब बी। २ ए कुवर
 (< कुवरि : प्रारम्भी कियि)।
 (२) १ मा कहिषी ए पूछे। २ ए भाई। ३ मा मा ए सग बल्लु। ४
 मा देपहु। ५. भा. भाई।
 (३) १ मा बी पू. बी। २ मा नैन। ३ मा बारहु, च बासनि। ४ मा सी
 रा पर, मा ए. सी। ५. रा आरी।

- (४) १ मा नीन भा ए नीन। २ ए परी। ३ मा मा बोह पायेह पाई
ए हु पावह माई। ४ मा मा ए चरन। ५ मा मा ए नीन ए हु
नीन।
- (५) १ मा बोह। २ ए मागि हम गहि दुग भारा। ३ मा ए मय।
४ ए बनिहारा।
- (६) १ मा ए देवि। २ ए रहेउ।
- (७) १ मा मा ए देव।

अर्थ—(१) जब समय होकर खाना दिया गया तब कुमार (मनोहर) उठकर
कुमारी (मधुमाक्षती) के पास आया। (२) उसने पूछा “तुम्हारा भाई (साराधर) किस
महल में है? हमें संस लेकर चल कर उसे विन्यासी। (३) मैं जानकर अपना भी उस घर निडर
बर्फ और [उत्तर] करकों को रेनु अपनी करीबियों से लाई। (४) मैं अपना मिर उत्तरे दोनों
परी से लगाकर रख और उनसे दोनों करकों को चलकर कर चड़ा लू। (५) उसने मेरे लिए भारी
हुल सहन किया [इसलिए] मैं जानकर [उत्तर पर] जीव बनिहार करे।

(६) मैं सोचता रह गया किनु एता कुछ नहीं है जो उस घर आरती करने के लिए से जाऊँ,
(७) [मिरा] यंत्रिकिन् जीव तो [उत्तर] आरती के लिए बोझा (अपव्यक्त) है और
[उत्तर] लेकर उत्तर] आरती करते सज्जन होता हूँ।”

विन्यासी—(१) जो < उठ < यश = उठ। (२) बार < उम्बार < उ + वर = व्याप
करना। (५) माय < मयन। (७) अनिकिन् < यंत्रिकिन् = जा कुछ।

[४५८]

यह^१ गुनि रात्रि मई प्रज^२ बाग। कुवर्हि ल माई जह तारा।
तागल^३ मयि भा^४ मग। पाइ मनोहर पा^५ ल पर।
जो जो^६ तागल उवाव। पाइ पाइ मिर पावहि^७ लाय।
बहमिबीह तुम्^८ मो मयि^९ जमा^{१०}। बलिबुग बा ब पार^{११} एमा।
छाट^{१२} राव पाट मोहि^{१३} मयि। जग मिरात^{१४} मा हिय आमा।
तुम्^{१५} मार बिउ ल आत^{१६} पविहिरि आवन राव।
जो म बिउ न बगो^{१७} मोरि^{१८} आरनि पनिमह बिउ बहि^{१९} पाव॥

वादात्मक—(१) १ मा इह। २ ए मय ती।

(३) १ ए उं भी। २ मा पाई ए पाव।

(४) १ मा जग जग। २ मा मीन बा नी ए मिर भूई नी।

(५) १ मा बरेमि बीह नी मा बरीहरी बीह नी ए बरे बि नी। २ मा बरि
लापी ए मयि मयि। ३ ए एमा। ४ ए बलिबुग भी बा बरे नी।

(६) १ ए छाट। २ ए मयि। ३ ए जग मयन हिय। ४ मा हय।

(७) १ ए तुम् मिर बिउ नी आव।

(७) १ मा ए जीव। (जीव—ए) वही गहि (न—ए)। २ मा पुनि वह जीव ए ती जाई। ३ मा केहि।

अर्थ—(१) वह पुनकर वह ब्रजवासा (मनुमाधुरी) कही हो गई और कुमार (मनोहर) को वहाँ से भाई वहाँ ताराचंद था। (२) [मनोहर को] बेचकर ताराचंद सड़ा हो गया और मनोहर बीड़कर बसले पैंरों में गिर पड़ा। (३) जब-जब ताराचंद जलको प्यसता, वह बीड़-बीड़कर [पुन] अपना सिर बसले पैंरों से लपसता। (४) [मनोहर ने कहा] “तुमने मेरे लिए बीसा किया कलियुग में ऐसा (बीसा) कौन कर सकता है? (५) तुमने मेरे लिए अपना राज्य और [अपना] सिंहासन छोड़ दिया, और मेरे लक्ष्य की बसती हुई [बिरह की] अग्नि की क्षीतक किया।

(६) तुम अपना राज्य छोड़कर मेरा जीव (मेरा प्रेयसाय) के लिये; (७) [अतः] यदि मैं अपना जीव तुम्हारी मारतो न करूँ, तो फिर वह जीव किस काम का होगा?”

टिप्पणी—(१) वारा < बाका। (२) जी < जत < मया = जब। (५) पाट < पट = फलक सिंहासन।

[४५९]

बिनती एक करौं^१ कर जोरी। पुरखहु भास कुंजर जौ^२ मोरी।
जौ रहि^३ फलै^४ आएसु^५ पावहि^६। एक ठार^७ मए^८ दिन बहुरावहि^९।
बिघनाइ^{१०} इहाँ राखु जव^{११} ठाई^{१२}। हम तुम्ह^{१३} दुख रहि^{१४} एक ठाई।
सम^{१५} कोई इहाँ माहि सहवसी^{१६}। हम प रहि^{१७} बुधौ जन^{१८} परवसी^{१९}।
जौ राउरि^{२०} अग्या^{२१} में पावौं। य राखहु सव^{२२} बात जनावौ।
ताराचंद बात यह भाई^{२३} सय मिल^{२४} बुधौ कमार।
रखसव आए हुलास सेर^{२५} विक्रम राइ के बार^{२६}॥

पाठान्तर—(१) १ मा वही। २ ए कुंजरि (< कुंजर फारसी लिपि) है।

(२) १ मा ए लजि। २ रा चले का मा मा चले की ए कुंजर की। ३ मा ए बावेस। ४ मा रा पावौं। ५ मा बेरहि ठाव ए एकहि ठाव। ६ ए भे। ७ ए दिन बहुलावहि, मा दिन बहिरावहि, ८ मा बिठ बहुलावौं।

(९) १ मा राप हाय नठाइ ए रजौ इहाँ जव ठाई, मा हम राजहि जव ठाई। २ ए हम तुह बुनी रहै।

(१०) १ ए लज। २ ए जई सवेनी। ३ मा ए हम बुनटु जन पै रा हम बुनट जानहु।

(११) १ ए राउरि। २ मा ए रा अग्या। ३ मा रा राखहु जौ ए मा राजा सी।

(१२) १ मा मन भाई मा ए पुनि वह (वही—ए)। २ मा सय मिले जा ए मा लज बिलि।

(७) १ मा हुनी जन ए दुनी जन रा हुनाम गीं । २ त रास विमल र रत्ना ।

अर्थ—“(१) मैं एक बिननी हाथ ओझर कर रहा हूँ यदि है कुमार तुम मेरी आमा धुरी करो; (२) जब तक [हम दोनों] चलने का आदेश पावें एक स्थान पर हो (एक) घर हम दिन बहलावें (आमोद-प्रमोदपूर्वक दिन व्यतीत करें) । (३) विषादा यहाँ जब तक रहने हम तुम दोनों एक स्थान पर रहें । (४) यहाँ सभी कोई साथ कः (एक) देश है कि तुम दोनों जन परदेगी हूँ । (५) यदि मैं आपकी आज्ञा पाऊँ तो जाकर राजा से इस बात (निश्चय) की बनाऊँ ।”

(६) साराचंद को वह बात अच्छी लगी और दोनों कुमार साथ बिसहर (७) एवं मानते हुए उत्साह के साथ बिकमराज के द्वार पर आए ।

टिप्पणी—(१) आमा < आमा । जी < जउ < यणि । () जी < जउ < यण = जब । आणु < आयाण । (३) ठाढ़ < स्थान । (७) हुनाम < उम्नाम । मउ < ममम् = माय । बार < बार < द्वार ।

[४६०]

कुंवरन्ह^१ बर^२ आउब^३ मुनि बाग^४ । मर जाण^५ चलि आप भुवारा^६ ।
 ली कुंवरन्ह^१ बिननी ओपारी । वहा राय^७ मन इउ^८ तुम्हारा ।
 मगर महारम बिज बिगाऊ^९ । घर तुम्हारा^{१०} आह दु^{११} ठाऊ ।
 मन तुम्हारा मानन ह^{१२} जहाँ । मिति क रहह^{१३} दुषी जन नहीं ।
 इहाँ दुषी तुम्ह नमह^{१४} ओगी । उहाँ मन मीपनि सह मानी^{१५} ।
 तुम्ह दूनह^{१६} कर मन जह मान^{१७} मिमिमयतता^{१८} रता^{१९} ।
 यह सम^{२०} राज पाठ तुम्ह^{२१} दुह^{२२} कर मुर मउ^{२३} पकि वगाह^{२४} ॥

पादालर—(१) १ मा कुबर कर त कुबगर गीं । २ मा मा आप त आपम । ३ मा राजा । ४ मा मा मे आयउ त मा आउ । ५ मा पा तियाउ त राज दुआरा मा बार भाराग ।

(२) १ मा कुबगर त वी कुबर । २ त वही राउ । ३ मा उछा त इपरा । ४ त हागरी ।

(३) १ मा बिगाउ । २ मा त माराग । ३ त दुषी ।

(४) १ मा त मन मानी पनि तुम्हारा (मांसी—त) । त गी ।

(५) १ मा इमी नैनर तुम्ह मा दुबर तुम्ह नैनर त इमी नैव दुषी जन । मा मा = नैन मीपन (मीप—त) दत्र मानी ।

(६) १ मा तुम्ह दुनर कर मनु यहाँ त तुम्ह दुमी ह कर मित्र त मि । २ मा मग मित्र यहाँ मा मित्र ३ मग त मर तुम्ह मग ।

(७) १ मा म मग त है मर मा म मर । त म मर मर मरी है । ३ त दुमी । ४ त त मा गी । ५ मा मर मर ।

अर्थ—(१) द्वार पर कुमारों का आना सुनकर, भूबाल स्वयं बल्लभर अपने-आप [द्वार पर] आ गए। (२) सब कुमारों ने मिलती की ओर राजा ने कहा “तुम्हारे मन की इच्छा [बैठी हो]। (३) मन्दारक नगर और बिल विधान दोनों ही स्थानों पर तुम्हारा घर है। (४) जहाँ तुम्हारा मन मानता हो वहाँ तुम दोनों बग्न मिलकर रहो। (५) यहाँ तुम दोनों [हमारे] मैत्री की स्मृति हो, और वहाँ [भी] मैत्र-सीपियों के तुम भोली हो।

(६) जहाँ तुम दोनों का मन भागै, वहाँ दोनों मिलकर साज-साज रहो (७) यह समस्त राज्य और सिंहासन तुम्हीं दोनों का है। तुम दोनों [यहाँ] सुकपूरक केलि करो।’

टिप्पणी—(१) छह < स्वयम् । भूबाल < भूपाळ । (२) बीघार < बघ + भार्य = निश्चय करना। (३) सीप < सिपि < सुपि < सुक्ति = सीपी। (४) पाट < पट्ट = फलक सिंहासन।

[४६१]

जो राजा सउ^१ अग्या^२ पाई । दुवो कुवर सहुरे सिर नाई ।
महा^३ पिता सउ^४ मिलि बज^५ बाटो । पड़ी बलन^६ बीबोर^७ कमारी ।
पाछे^८ बली^९ ते साठि सहली^{१०} । जनम सधासिनि^{११} साज जे^{१२} सोली ।
जो जनगिनिज जो बरी जाही^{१३} । बवि मुह ते ननि नाहि सिराहा^{१४} ।
जोबन केसि^{१५} करत सम जाह^{१६} । बिजसनि पर पनि बजाई^{१७} ।
कहना^{१८} म न बलाना^{१९} समवत^{२०} राज कुमारि ।
दुवो बकरि^{२१} जव बलिहहि तव किछु^{२२} कहव बिचारि^{२३} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा ए सी। २ मा ए रा अग्या।

(२) १ मा ए माता रा माता। २ रा ए बी। ३ ए मे वह सम्ब नहीं है।
४ मा बड़ी बली या बली बड़ी। ५ मा बीबालि रा ए बबोर।

(६) १ मा पाछ। २ ए बला। ३ ए सहली। ४ ए संवालिह। ५ मा मा जो।

(७) १ मा बी अनेग जो बेरी जाही या ए अपनिज सपी सम (ए मे 'सम' सम्ब नहीं है) मा कमारी। २ मा ए सने (सबै—ए) बली (बली—ए) जो साज कुमारी।

(८) १ मा पीनि छपीली या सबै बने हुती रा जोबन केसि ए जोबन हुते।
२ रा करत सम जाई, मा ए मा सग जो जाई। ३ मा पीनी जाई, ए पीनु बजाई या पीनी सजाई, रा पीठि बजाई।

(९) १ मा पीना। २ ए बलान। ३ ए समवति।

(१०) १ ए कुवर। २ ए जव बलिहै, मा जव बलिहै बरन्हु वह। ३ ए जो।
४ मा ए बचारि।

अर्थ—(१) जब राजा से उन्होंने आज्ञा पाई दोनों कुमार [जहाँ] तिर मुका कर बल्लभ

हुए। (२) ब्रह्मनिष्ठा (मधुमासगी) माता-पिता से मिलकर चलने के लिए चौकोल पर चढ़े। (३) उत्तर पीछ [उत्तको] के साथ सहैलियाँ बनीं जो जम्ब से उत्तको साधने की ओर जा उनके साथ लसी हुई थीं। (४) और [उत्तक साथ] को अगलित खेरियाँ थीं जबकि कमल से वही जाकर वे समाप्त नहीं हो सक्ती हैं। (५) वे सभी योग्य भी केलि करती हुई जाइ और विवर्तेन के घर में प्रविष्ट हो कर बाछोत्तक करने लगीं।

(६) राजकुमारी को विवाह के समय को बरपा [प्रवट] हुई उत्तका बचन देने लगीं विद्या। (७) जब दोनों कुमारियाँ [अपनी समुराती को] अपनेी तब कुछ विचार कर [उत्त बरपा के संबंध में] कहूँगा।

टिप्पणी—(१) जी < जउ < जग = ब्रह्म। (२) बारी < बानिषा। पीछान < पनुर्गेन = बंडान। (४) बरी < बरी = दानी मेरिषा।

[४६२]

पमी मगर बगल बजाई^१। छनिमी^२ पीनि आगनि म आ^३।
घर घर बाजा^४ नगर बभावा^५। मुग्म^६ बठ बग्निह^७ बह^८ गाबा^९।
बाहर^{१०} नगर पनेग्निह^{११} राना^{१२}। भीतर बरि बह बा बाता^{१३}।
मिन्दि^{१४} जहां मुग मन मबारा^{१५}। मधुमालनि म तहा उनागी^{१६}।
मुग्ममाला एक^{१७} महल मबारा^{१८}। तह म ताराव^{१९} उनाग^{२०}।

भीतर मधुमालनि भी^{२१} पमी मध मिन्दि^{२२} मुग बग्महि^{२३}।
बाहर^{२४} ताराव^{२५} मनोहर दूनी^{२६} बलि बग्महि^{२७}॥

पाठान्तर—(१) १ ए जब आई। २ रा छतीन।

(२) १ मा बाजन ए बाई। २ मा बपा^२। ३ मा मुनर। ४ मा मल
पापन ए मापन। ५ मा मब ए जी। ६ मा आई।

(३) १ ए बाहर। २ मा छाना। ३ मा जा वही बचाना ॥ मल वही बा
बाता।

(४) १ मा मा मरिद।

(५) १ मा ए मम। २ मा जा माग मा उबावा। ३ मा बीमाबा।

(६) १ ए जा। २ मा मा मम बिदि ॥ दूनी। ३ ए बग्महि।

(७) १ मा ए बाहर। २ मा बाउ जन मा हुनी जन।

अर्थ—(१) कारण बाछ-वचन करती हुई मगर में प्रविष्ट हुई [ता] छमीन पावनी
(उत्तर-पूरवार जाने वाली) आनियों की निष्ठा आरती लेकर आई। (२) मगर में घर-घर
बजावा बजा और [मपुर] बंड बानी निष्ठा के रनोंके बंड में बग्मेरा गान किया। (३) मगर
बाहर से ही रोगी बग्मे से [आच्छादित होकर] रक्त बग्मे का (महर) [मग एर] बा, फिर
मगर के भीतर की [मजाबट की] बाग जीव रहे? (४) मरिद (राजबन्ध) में जाई मुग-पाया

सँवारी हुई थी, मधुमासदी का से बाहर वहाँ उतारा गया। (५) और एक महल में सुख-साता सँवारी गई थी; वहाँ पर से बाहर ताराचंद को उतारा गया।

(६) [राजसदन के] भीतर मधुमासदी और दोनों एक साथ मिलकर सुख का विकास करती थी (७) और बाहर ताराचंद और मनीहर—ये दोनों कैलि करते थे।

टिप्पणी—(२) बजाव < गङ्गावण < वर्षापण = अश्विपण अथवा हर्ष सूचक वाद्य (३) पनोर < पट्ट + कूक = रेघनी वस्त्र। रात < रत्त < रक्त। (५) सैन < समय = शय्या। सँवार < स + वार = सजाता।

[४६३]

दूनी सय मानहि^१ रह कली^२। भोग भुगुति^३ औ^४ प्रीति^५ नवली^६।
 खाइ खलि हसि दिन बहरावहि^७। रनि सोइ सुख नीव^८ वितावहि^९।
 निमिस न आपु माहि^{१०} बेगराही। सतन दुबो^{११} ए^{१२} सय^{१३} रहाही^{१४}।
 बबहु^{१५} बहर मन बहरावहि^{१६}। कवहु होइ हँगुरे लावहि^{१७}।
 पमा^{१८} औ^{१९} मधुमासति^{२०} वारी। भीतर इन्ह दुहु^{२१} रबी^{२२} धमारी।
 सदा पुनी सुख बेरसहि^{२३} सुप क^{२४} न जान वात।
 बाज सोधि नी^{२५} जोबन औ^{२६} सिर ऊपर तात ॥

पाठान्तर— ए म उपयुक्त प्रथम अर्थात्नी के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ ए दूनी कम मानत भा बुबी बना मानहि। २ मा में अर्थात्नी का प्रथम चरण मही है। ३ मा भामु भुगुती। ४ ए औ। ५ मा परत।
- (२) १ रा जगु दिन बहरावहि मा हसि बिच नवावहि ए जो दिन बहमाही। २ ए रनि नीव सुख सेव। ३ मा लावावहि ए ज पावै मा बिहावहि।
- (३) १ मा आपु आपु, ए आपुच मही। २ ए सतति दुनी। ३ मा मा ए सय। ४ भा रहाही।
- (४) १ भा सय ए बबही। २ भा बनेरे जित बहमावहि मा बहरे होइ मै लावहि ए होइ र होइ लमावहि। ३ भा कबहु हानर होई लावहि, मा कवहु आपु आपु न जितावही ए बबही कोइ जित बहमावहि।
- (५) १ ए बी। २ मा कोइ दुहु ए दुनही। ३ भा वाक।
- (६) १ ए दुनी सुख बेरनी। २ भा बी ए मे मही है।
- (७) १ मा बाज सधी मो ए बाका नजि नी मा बाका छधि नी। २ मा राता।

अर्थ—(१) दोनों (मनीहर और ताराचंद) साथ-साथ रत (चारों) और कैलि मानते थे और साथ-साथ ही वे [सुख] योग, भोजन और नई प्रीति [मानते थे]। (२) मैं का-कोल पर और हँस कर दिन बहलाते (आनन्दपूर्वक बिताते) थे और रातें सुख की निद्रा से भर धरती करते थे। (३) वे एक पल के लिए आपस में अलग नहीं होते थे और बीबी सतत ही एक-साथ

रहते थे। (४) कभी तो वे आलोट में मन बहुकाले थे और कभी हँसुर (बीगम) में होड़ लगाते थे। (५) [उबर] ऐसा और मधुमासती वातिकार्य जो भी उन्होंने [राजमन के] भीतर बमार रख रखी थी।

(६) दोनों सरस मुख का बिलास करती थीं कुल की बात [भी] नहीं जानती थीं; (७) बचपन की मध-वीर्य से संभि [की अवस्था] भी और सिर पर बिता थे ही (उन्हें बिना की छत्र छाया प्राप्त भी ही)।

टिप्पणी—(१) भुगति < भुक्ति = भोजन। (२) रीति < रम्यो < रजनी = रात्रि। (३) संतन < गन्त = निरंतर। (४) अहोर < आगट। (५) बारी < बासिया। (६) नापि < गमिपि = जाड़।

[४६४]

निन एक कुबर पारपी राग^१। राज हकार^२ मुनन मम घाग^३।
 कुंवर पारपिन^४ राउ^५ अम बहा। इहां अहर मियर बहु^६ अग।
 कठहि^७ इहां लहि^८ नाम अडाई। अनि अनग साउज अपिबाई^९।
 गोम^{१०} मिगि औ^{११} महिन बराहा। नाभर मगुन^{१२} रोस बहु आहा^{१३}।
 कुवर महा जन पाष पठावहु। धान हाइ तो आइ^{१४} जनावहु।
 जने कान्हि^{१५} पहर एक^{१६} आवाहि मम यहराइ^{१७}।
 जाइ^{१८} पारपिगह^{१९} अम बहुहु^{२०} बासि म बोइ बहु^{२१} जा^{२२} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा साए। २ मा राजा वर जो ए राज हकार। ३ मा मा गव पाये ए मम आए ए उठि पाये।

(२) १ मा पारपिगह ए पारपी। २ रा ए ली। ३ रा गाव।

(३) १ ए बहा ए बहिन। २ रा ए ली। ३ मा भा. नाबन बट्टाई ए लोबन है राई।

(४) १ मा मय ए मय। २ ए म यह गण नहीं है। ३ मा नाबर मगुन ए नाबर मगुना मा नाब बरन मुनी। ४ मा रोस जो आहा ए रास न आहा।

(५) १ मा आनि।

(६) १ मा जेने नहीं ए जेन बासि। २ मा धे 'मह और है। ३ मा यहराई ए बहाराइ।

(७) १ मा पाइ। २ मा पारपिगह ए पारपी रा पारपिन। ३ मा ए बहु। ४ मा बासीन बाउ ए बासि न बो आ बासि न बाउ। ५ मा न।

अर्थ—(१) एक दिन कुमार (जमोहर) के निवारियों को बलाया; राजकीय बलाया मुदर मय [निवारों] होड़ बड़े। (२) कुमार के निवारियों के रोसा बहा, “यहां कभी निर-आगट है?” (३) उन्होंने कहा “यहां ल हाई जोन (लगभग ५ मील) वर जनेन बंधुओं की

अति अधिकता है (४) सौंज मूय, महिय बारछह, सौंजर, कमुन और रौस (नीलमाय) बहुतोरे हैं। (५) कुमार ने कहा "सौंज जनों को नेको और बहि [सिंकार का] बात (बाँध) हो तो आकर बताओ।

(१) सौंज (बाछप यह है) कि कब एक प्रहर मत बहका आनें। (७) सिंकारियों से बालर ऐसा (यह) कहो कि कब कोई कहीं न जाए।

टिप्पणी—(१) (२) (७) पारथी < पारठिअ < पारथिक = धिकारी। (१) एअ < एअय = बुलाना। (२) बहेर < आसट। निबर < निकट। (३) छारअ < स्थापन = बनु। (४) झाल = एक वाति का हरिब। महिल < महिय = बगकी रीछा। बारछह = बगकी सूसर। सौंजर = एक वाति का हरिब। कमुन = एक वाति का हरिब। रौस < रौस्स = नीलमाय। (७) कास्हि < कस्स < कस्व = कस।

[४६५]

भीर पारथी आए^१ सवेरें^२। धात बाहि^३ उठि बसहु अहेरें^४।
सुनताहि सभ^५ अहेरिया बाए^६। सोनहा बच बित अयोन^७ बसाए।
बागुर जाल कहारन^८ काथ। धानुक बहुत^९ बसे सर सांघ।
छेकि गाँव फुनि^{१०} साठब बाह। आगे भए धनुकार उसाह^{११}।
भीतर हाँका इन्ह कीन्ह^{१२} कररा। बाहेर दिए^{१३} बागुर चहुं फेर^{१४}।

पड़ पड़ ग धानुक^१ साग^२ औ साणन्हि^३ बन आगि।

धनुकन्हि^४ कै सिर ऊपर बने झाल^५ सभ^६ भागि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए सब पारथी आये। २ मा ए सवेर, ए सवेरे। ३ मा बाहे, ए बसे। ४ मा बसहु अहेर, ए बसे अहेर ए बसहु अहेरे।

(२) १ मा सुनताहि सब ए सुनत सब। २ मा ए बाए। ३ मा सुनहा बाच बित आय, ए सोनहा बीच अयोन ए सोनहा बाच बित सोनहा बच बित आये।

(३) १ मा भा ए कहारनह। २ मा बगुर बहुत ए बगुर वार।

(४) १ मा छेकि कौरै मा छकी कबर, ए हाँकि कबला। २ मा जान बर धनुपी होइ जाहे, ए अब आगे जो धनुस उसाहे, मा जान भए धनुकार उसाहे।

(५) १ रा हाँका इन्ह दिए जो मा ए हाँकन्ह कीन्ह मा हाँकन्ह कीन्ह। २ ए करेरे। ३ मा बाहेर दिहु ए बाहर कीन्ह। ४ ए फेरे।

(६) १ मा कै धानुपी, मा कै धानुक ए कै धनुस। २ ए कन। ३ ए लावा।

(७) १ मा ए धनुपन्ह। २ मा मा बाह जनु, ए बाए जनु। ३ मा बा ए सब।

अर्थ—(१) सिंकारी [हुसरे दिन] प्रातःकाल लोहे (तड़के) ही जाए [और चम्कते रहें] [सिंकार का] घना (बाँध) है, जोसेब के लिए प्रखर बलौ। (२) यह सुनते ही

सभी मान्य करने वाले बीड़ पड़े और [उन्होंने] [मिहारी] कुत्तों बघचीनों को आगे रवाना किया। (३) बागुर (फन्डे) और जाल बहारी ने कर्षी पर रक्खा और बहुत-से धनुर्धर शर-संघान कर चल पड़े। (४) तबन्तर गोंडों ने अंतुओं को [मिहल भापने से] रोक कर [मिहारियों की ओर] बसाया और धनुष चलाने वालों ने आगे हो (आ) कर उन्हें बसाया। (५) [इस प्रकार] भीतर से इन्होंने कराक हुआ दिया और बाहर-बाहर चारों ओर बागुर (फन्डे) दिया गया।

(६) पेड़-पेड़ पर जाकर धनुर्धर लग (बठ) गए और [लौनों ने] धन में आग लगा दी (७) [परिणामस्वरूप] धनुर्धरों को अपने तिर के ऊपर कर लजस्त जाल आग बसे।

टिप्पणी—(१) मर < स + मेसा। (२) मोनह < रवान। बघचिन < ब्याघ + चित्र + (३) (५) बागुर < बापुरा = अंतुओं को फेराने का फन्डा। (३) (६) धानुः < धानुः < धानुः = धनुर्धर धनुर्धरा म प्रवीण। (३) मांघ < मघ < स + धा = गघान करना। (४) साडम < स्वापद = अंतु। (४) उसाह = भयाना। (७) ताग = एव जाति का शृंग।

[४६६]

सम धनुः^१ हरि^२ कांड बिसारे^३ । मार जाल^४ भए बिसार^५ ।
बतहु गड धाए^६ बीरान । बतहु रोस पोटहि^७ महराने ।
भर्वोहि^८ भानु^९ धायल^{१०} बिनगरा । पर महिग^{११} डारहि^{१२} गरबारा^{१३} ।
बहुत मिरिग बघ चीत^{१४} मारे । मोनह^{१५} बहुत बराह पछार ।
बहुत^{१६} जतु जियत^{१७} धरि^{१८} आए । बहुत^{१९} भुए मादर महराण ।
पहर एव मह^{२०} गमि महरा^{२१} राम^{२२} बटन पर आइ ।
दुवो^{२३} बजर जल त्रीहां^{२४} लाग मरिग महरा^{२५} ॥

पागन्धर—(१) १ मा मब धनुःगड ॥ मब धनुःवार। २ ए ज। ३ मा मा ॥ बिसारा। ४ मा मारेहि अंतु ए मा मार अंतु। ५ मा भइ बिसारारा ए मब बिसारारा मा भय बिसारारा।

(२) १ मा गैडा या ए मडा याब। २ मा मोन ए ला^१।

(३) १ मा डिरहि ॥ मरे। २ ए म मर लपर मरी है। ३ मा धायल ए बघाफह। ४ मा मा महिग ॥ मरिग। ५ ए डारहि। ६ मा मुरपुरा ए मुरपाग।

(४) १ मा मिरिग बघचीनह मा बघचीनग ॥ मिरा बघ चीन। मा मा मुदग ॥ मजग।

(५) १ मा ए बहन। २ रा म मर लपर मरी है। ३ ए मरी। ४ मा बहन।

(६) १ मा ए म य लपर मरी है। २ ए अरेरा मा बर। ३ ए मा मरी।

(७) १ ए दुवो। २ रा ए मा बीडा। ३ रा री अहा।

अर्थ—(१) तमस्त वनुरी ने विद्यापत काँच (बाच) [संयाम] कर शीशों को मारा त के बेलरार (विह्वल) हो उठे। (२) कहीं पर गड़े बाचके होकर बौड़ने कने कहीं पर रोने (मीलपाय) बिय के व्याप्त होने से व्यथित होकर सौटने लगे। (३) मायत भात बेलरार होकर बसकर लगाने लगे और मैंसे [आहत होने पर गिर कर] पड़े-पड़े सुरताम (पुर्तों की बपेट) लगाने लगे। (४) बगचीलों ने बहुत से मूर्खों को मारा और शिकारी कुत्तों ने बहुत से बाराहों को पिछड़ा दिया। (५) बहुत-से बंधु भीषित पकड़ कर लाए गए और बहुत-से [बाचों के] किय से आक्रान्त होकर मर गए।

(६) आठोठ लोक कर एक ग्रहर में सब [आखेड] कटक घर पर आई (७) और जल-झोड़ा करने के उद्देश्य से दोनों कुमार सरिता में स्नान करने लगे।

टिप्पणी—(१) वानुक < वायुक्क < वायुक्क = वनुरी, वनुरिवा म प्रवीष। विचार < विपास्त = विपत्ति। (२) रोस < वृषय = मीलपाय। (३) भात < मस्त [दि] = रीछ। (४) बिकरार < बेलरार [का] = बगचा। बार < रात = बपेट। (५) सोनहा < श्वान। बगचीला < व्याघ्र + चित्रक। (६) अहोर < वासट = शिकार।

[४६७]

कहनि तेज अलि ह^१ रवि करा । अवही जाव^२ घर सीतरि^३ यरा ।
जल मीड़ा^४ दोउ^५ रहे सोमाई । पमा इहां कुंवरि^६ पह आई ।
कहसि^७ कि^८ आनु कुवर^९ घर नाही । जलु^{१०} चित्रसारी भूलहि माहीं^{११} ।
आनु मोरें^{१२} मन अस^{१३} मा^{१४} आई । भूलहि ग हम^{१५} पय अघाई ।
फुनि अस दाउ^{१६} कहाँ हम पाउव^{१७} । बहुरि कि नहर^{१८} भूलह आवव^{१९} ।
सुनि मधुमालसि रहस सव^{२०} ठठि गीनी ससरव^{२१} ।
सव^{२२} सली सम धाई^{२३} सुनि भूलन कर नाउ ॥

पाठांतर—(१) १ मा कहिहहि, ए कहहि। २ मा आई। ३ ए अवहि जब। ४ मा सीतली ए सीतल ए सीतलि।

(२) १ रा कीडा। २ मा केह ए जो। ३ रा मे यह धाव नहीं है।

(२) १ रा कीडा। २ मा केह ए जो। ३ रा में यह धाव नहीं है।

(३) १ ए कहा। २ मा ए मे यह धाव नहीं है। ३ रा राज। ४ ए जलहु। ५ मा ए नाही।

(४) १ मा मा ए मोर। २ रा मे यह धाव नहीं है। ३ मा मा ची। ४ मा मा नी नी ए नी जो। ५ मा पेंब ए पेस।

(५) १ मा फुनि अस बाउ रा ए फुनि अस बाउ। २ ए पाइव। ३ मा इह ठी। ४ ए भूल आईव।

(६) १ मा रहसि ए रहमी भा रहस सा। २ ए लपराउ।

(७) १ मा मा ए मय। २ मा सय पाइ ए सव बा।

अर्थ—(१) उन्होंने [मायत में] कहा "सूर्य का तेज [इत सभय] अधिक है इसलिये

पर अभी [बुध देर में] पीतल बैठा होने पर आएंगे।" (२) [अतः] दोनों [कुमार] जलबीड़ा में सरप हो रहे। यहाँ [राजभवन में] यमा कुमारी (मधुमासगी) के पास आई (३) और उसने कहा "आज कुमार (मनोहर) घर पर नहीं है इसलिए यमा हम इस बीच में बिजमारी में झुनें। (४) आज मेरे मन में आकर ऐसा हुआ है कि हम [यमा] आकर भरपट झुल झुल। (५) फिर ऐसा अचानक हम वहाँ पाएंगी क्योंकि क्या फिर हम नहर (पीहर) में झुलने आएंगी ?

(६) यह सुनकर मधुमासगी हर्ष से लज्जित गई (७) और उसने ताब तमात मन्दिपा [भी] झुलने का नाम सुनते ही बोड़ पड़ी।

टिप्पणी—(१) गीतरि < गीतम् । (२) माहि < मयि । (३) राजम् < रजम् = हाँ । मन्दिपा < मन्दिपाम = मन्दिप वड़ा रा बाग ।

[४६८]

'पैप' गढ़ी 'गमहि' श्रव' याग । गावहि' सुग्म' बर जननाग ।
झुलन बिहुर बाहु व छूर्निह' । बाहु बर' हार उर' टूर्निह' ।
उपरि गाम बहुरह व' जाही । बहुरन्ह' उर आंचर पहराही' ।
झुलहि घर्' पप व' टोरी' । बटि' जनु' पाद् दूब दूड जोरी ।
झुलन निम्हि' त आवहि' वमा । जनु बवान' बटि' मुग्निनि वमी ।

मयत्रोधन उर उपन' बानपन व माधि ।
सूर्निह मम' मट बाउरा' अंघर बनि' गमि बाधि ॥

वाग्व्या—(१) १ ए पहिले । २ मा पप त वम । ३ त बटि । ४ मा नीपति त पमि भा पीगी रा झुलहि । ५ त मे मर मर गरी है । ६ त गरी । ७ मा सुगर ।

(२) १ मा बाउ नीउ छरी । २ त व । ३ त हार उरहि जा ।

(३) १ मा बहुरह का रा बहुरह के । २ रा बहुरह । ३ मा अचानक गरी मा अचर बहुरही त आंचर पहराही ।

(४) १ मा बटि । २ मा पप त वम । ३ त वी । ४ त टोरी । ५ मा त गरी । ६ त जा । ७ रा दूट ।

(५) १ मा झुली । २ त जो आई । ३ मा बिनाम । ४ त वर । ५ त बीगी ।

(६) १ मा जो लजा । २ मा बानपन गापी त बापान के माधि भा बानपन के गधि ।

(७) १ ए मम । २ मा बीगी । ३ मा बागी ।

अर्थ—(१) [बिजमारी में आकर] झुने पर बड़ी हुई के अचानक झुल रही थी और रानीने बठ बी तंवार के साथ के पा रही थी । (२) झुलने समय जिन्नी के बिहुर मन रहे के ली जिन्नी के हृदय पर का हार दूट रहा था । (३) बहुरो व निर पर का अचानक दूट जाना था, और बहुरो के हृदय पर का अचानक दूटाने लगता था । (४) [अच] के वर के (झने) की टोरी वजने

हुए मूल्यों (वेप मारती) [तो ऐसा लपटा] मानो घनभी कटि हो ठकड़ों को मिलाकर बोझी हुई हो। (५) मूल्यही हुई वे ऐसी बीस पड़ती थीं मानों विमान पर बेबागनहीं बैठी हों।

(६) [उनके] हृदयों पर बालपन [और बीजन] की संधि के कारण सब मौख (कुच) उत्पन्न (अंकुरित) हो रहे थे (७) [और] वे समस्त साङ्ग से बावली [नव-युवतियाँ] कटि में [मपनी] साड़ी कस कर बाँधे हुए मूल रही थीं।

टिप्पणी—(१) बाटा < बाटा। (२) बिहुर < बिहुर = बेल। (३) उबर < उम्बर < उद् + उद् = मुम्मा। आबर < अम्बर। (४) नवान < विमान। (५) उपन < उद् + पद् = उत्पन्न होता। संधि < सन्धि = जोड़। (६) बाउर < बाउल < बाहुल = बावला।

[४६९]

बीचें पहर सिमरि मह^१ वरा । मएउ^२ नितज तज रजि करा ।
ताबी साजि^३ आने बनवारा^४ । पुनीं कुंवर भए^५ असवारा ।
अस बुहुं तेज तोसार अलाए । राज^६ बार खिन एक्^७ मह^८ आए ।
बहा कहीं दुवो^९ राज कुमारी^{१०} । मूलन गई सखीं सख वारी^{११} ।
सुनेन्ह^{१२} जो राज कुवरि^{१३} घर^{१४} नाही । सुन मदिल^{१५} कहन्हि का^{१६} जाही ।
पुनि^{१७} एक सय^{१८} दुवो^{१९} जन बलि आए भित्तसारि^{२०} ।
ससिन्ह^{२१} संभ^{२२} जह^{२३} मूल^{२४} विक्रम तनी^{२५} कुंवारि^{२६} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बीच पहर सीतल मो भा बीचें पहर सीतल मह। २ मा मडो ए जो।
(२) १ मा तबी सपी। २ मा बागु बनवारा ए मा आनि बनवारा। ३ मा अदेठ भा मए तुरै।
(३) १ ए राजा। २ मा जनक। ३ ए मो।
(४) १ भा बहा बाहु दुवो मा बहा काह जो ए कहीं गई दुवो। २ मा कुमारी। ३ भा मूलन गई सखिन सग वारी मा मूलै नै सखीं भित्तसारी ए मूलन गई दुवो भित्तसारी।
(५) १ रा सुना मा सुनीन्ही। २ ५ कुंवर। ३ मा रह। ४ मा भा मीवर। ५ मा कहीन्ह कह, ए कहीन्हि कठ रा कहीन्ह बा।
(६) १ मा ए पुनि। २ मा भा ए सय। ३ मा दुई, ए दुनी। ४ भा भित्तसारि।
(७) १ रा सखिन ए सगी। २ मा सग। ३ मा लहा ए लई। ४ रा मूलहि। ५ रा मा ए राह। ६ मा मा ए कुमारि।

अर्थ—(१) बीचें पहर में बैला झीतल हुई [और] सूर्य का तेज हीन हुआ (२) [तब] घोड़े लगा कर बनवारे के आए, [विमान पर] दोनो कुमार तयार हुए। (३) दोनो [कुमारों] ने घोड़ों को ऐसी तीव्र गति से चलाया कि वे राजद्वार पर एक क्षण में आ गए। (४) वे कहने (पूछने) लगे “दोनो राजकुमारियाँ कहाँ हैं?” [उत्तर मिला] “वे सखियों के साथ बाटिका

में झुलने गई हैं। (५) जब उन्होंने सुना कि राजकुमारिणी घर पर नहीं हैं तो [उन्होंने कहा] 'सुने राजभवन में क्या आए।

(६) तबन्तर एक साथ ही दोनों जन चित्रमारी में चले आए (७) जहाँ पर चित्रमारा की कुमारी (मधुमाक्षती) ललियों के साथ झूल रही थी।

टिप्पणी—(१) पहर < प्रहर। मियर < मोमल < धीमल। निनेत्र < निम्नेत्र। (२) तात्री < तात्री [का] = पोड़ा। बनवार < बाघवास < ध्यानवास = चौरी करने वाला आरामी चौरीदार। (३) ताबार < तुम्मार = तुवारिस्तान का पाठा [पीछे 'पाठा' का पर्याय मात्र] (४) बारी < बाटिया। (५) मंदिल < मन्दिर = भवन।

[४७०]

जब दूनों^१ खडि आए बारा^२। उपर^३ दग्गिह पौरि बबारा^४
माइ^५ मनोहर उतर^६ दुयारी^७। बाहु न दगि गण्ड^८ चित्रमारी^९।
जात^{१०} न बाहु भारी^{११} पावा। जान^{१२} न बोड^{१३} बबर^{१४} बय आवा।
ओइ^{१५} अपनै^{१६} रम मउ^{१७} बोगनी। झूलहि गा^{१८} गाइ पिर यानी।
झूलहि सम^{१९} जोवन मद मानी। आंचर उडहि^{२०} न तापहि^{२१} छानी।
झूलहि पराहि^{२२} डोर गह्वर^{२३} बीरी^{२४} चमरहि नाम^{२५}।
जानहु मुरहिनि मग्ग मउ^{२६} आवहि पट्टी^{२७} बयान ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तब दूनी। २ मा बारा। ३ ए उपर। ४ मा बगिह। ५ ए पौरि दुयारी।

(२) १ ए बाइ। २ मा उतरा ए उतर। ३ मा दुयारी। ४ मा बाहु न ए मा बाहु न। ५ मा हेतु गय ए देगा मो। ६ मा चित्रमारी।

(३) १ मा ए बहो मा उहा। २ ए बारी। ३ मा जमी। ४ मा वेड। ५ रा मे यह गण्ड नहीं है।

(४) १ मा डोइ ए बाई। २ मा अरन। ३ ए रंग नब मा रग्गम।

(५) १ ए मब। २ मा अंचर उडाहि रा आंचर उडे। ३ मा छारहि।

(६) १ मा ए पम डोरी बर गरी मा रंग डरी जनि। २ मा बबर मा बीर ए बीरी। ३ ए दगि।

(७) १ मा वेड रा ए मो। २ रा ए मा चरी।

अर्थ—(१) जब वे दोनों चल कर [चित्रमारी के] द्वार पर आ गए [उन्होंने उनकी बीर के चित्रों की मुला देना]। (२) मनोहर आकर द्वार पर उनका और चित्रों को न देख कर चित्रमारी में चला गया। (३) उसके [जीवर] आने समय किसी ने आकर नहीं पाई और किसी ने नहीं जाना कि कुमार बच आया। (४) [उपर] वे [पुष्पिणी] करने रम में बावनी हुई फिर-अंत में बा-या कर झूल रही थीं। (५) वे लयल [पुष्पिणी] योवन-अर से चल हुई गल रही थीं; [उन्हे] अंकल पड़ रहे थे घर के अरनी छानियां नहीं टूट रही थीं।

(६) वे हाथों में [लते की] डोर पकड़े हुए झूल और रंग बार रही थीं उपर बानों में

धीरियां चमक रही थीं; (७) वे [जस समय एली लग रही थीं] मामो स्वर्ग से बेबागगार्गे बिमान पर चढ़ी हुई आ रही हों।

टिप्पणी—(१) बार < बार < डार। पीर < प्रतापी = मुख्य द्वार इत्यादी। (२) दुबार < डार। (३) भारी < भा + र्ण = सव्य भाइट। (४) बाउर < बाउल < बागुल = बावला। (५) मुटहिनि < सुरागना। सरय < स्वर्ग। बेबाग < बिमान।

[४७१]

पाछूँ हुत^१ ताराचंद राऊ। भरत पौरि भीतर बुह^२ पाऊ।
 सीही^३ दिस्ति पमा पर परी। पवति^४ आहि^५ पध पर खरी^६।
 झुल्ल उर आचर^७ उचिरानां^८। दसि^९ कुबरचित गण्ड^{१०} गियानां^{११}।
 सिनुन^{१२} जो अहे उठत उर उमे^{१३}। बरबस कुबर नन गै^{१४} जूम^{१५}।
 परत दिस्ति^{१६} जिउ छ ग^{१७} हरी। विनु जिउ^{१८} कया^{१९} पुहमि ससि^{२०} परी।
 जिउ दसि नन^{२१} परबस मो^{२२} घर भरती^{२३} बिसमार^{२४}।
 जस कोइ सांप डसा तस कांप^{२५} बकत^{२६} न सक उधारि^{२७} ॥

वाक्यान्तर— मा ए मे उपर्युक्त बीबी तथा पीचबी बर्बाकियां परस्पर स्थानीतरित हैं।

- (१) १ मा पाछ जो हुत मा पाछ जो होत ए पाछ होत। २ ए होत।
- (२) १ मा सीह मा सीही ए गै। २ मा पीगति नही रा झुल्लि नही ए पीगति आहि। ३ मा वेध पर खरी ए वेध बर खरी।
- (३) १ मा अचर, या अचल। २ ए बिहराने। ४ मा पधे ए वेत। ५ ए हेराने।
- (४) १ मा सीनुन ए सीन मा चुवन। २ ए ऊमे। ३ मा गै मा ए के। ४ ए जूमे मा जूमे।
- (५) १ मा जिस्ती। २ मा ए गी। ३ रा जिप। ४ मा नाया। ५ ए ससि मा पर।
- (६) १ मा बरबस मा में वे बो सव्य नही हैं। २ मा भएत। ३ मा बरती। ४ ए मे बरब का पाऊ है जीव बरबस या बरती पप अहे बिसमार।
- (७) १ मा डसा भीसभर ए डस बिसभर, मा डसा बिम ब्यापी। २ मा बवती ए बवति। ३ मा मा पुकारि, ए पुकार।

अर्थ—(१) [मनोहर कै] पीछे होकर ताराचंद राज पौरी के भीतर अपने दोनों पैर रख रहे थे (२) कि सम्मुख ही उनकी दृष्टि वेमां बर आ पड़ी जो भले बर खड़ी-खड़ी वेध बार रही थी। (३) झुल्ले समय उत्तरा अंचल चपड़ (चड़) गया और यह बैलकर कुमार (ताराचंद) के चित्त से ज्ञान चला गया। (४) उसके स्तन जो कि उसके हृदय पर उठते हुए चमक रहे थे बरबस जाकर कुमार के नेत्रों में जूम रहे। (५) दृष्टि के चढ़ते ही वे उसके बीच को हर ले गए, और [ताराचंद जी] कामा निर्वीच होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

(६) [उत्तरा] बीच उसके नेत्रों में जस (जा) कर [इत प्रकार] परचम हो रहा और

[उत्सवा] पड़ घरती पर बेतैबास [जा पड़ा] । (७) बीसे कोई लप या बाटा हुआ हो इस प्रकार बह जाँच रहा था और [उसके मुँह से] बाक्य नहीं निकल सकता था ।

टिप्पणी—(१) पौर < प्रतापी = मुख्य द्वार बघाई । (२) उतर < उठर < उड़ + ट = उड़ार उठना । (३) गिहून < रगन । उम < उम्भित = उठ हुए । (४) गूढ़मि < गूढ़ी । (५) उपाय < उपाय < उड़ + पाय = लायना ।

[४७२]

सारी एक गद्द अही^१ दुआर^२ । दसमि^३ बुँवर परा बिमभारे^४ ।
मधुमालि मउ^५ बहमि^६ पुकारो । झूलमि^७ बा उठि लागु गोहारो ।
ताराबद बार^८ ह परा । ब बानी क चुगइमि^९ छरा ।
ब अवार^{१०} ब तावरि आई । ब पित दुन^{११} परउ^{१२} मुरछाई^{१३} ।
ब मो आहि डिडिबाबा बाहो^{१४} । लो परा साइ गर बाहो^{१५} ।

लापन^{१६} पलक म लागहि रहिह सुवान^{१७} सरीर ।

बिनु मुषि परा घरमि^{१८} मरु^{१९} जानि मजा कहि^{२०} पीर ॥

पाठान्तर—(१) १ भा गी आहि ए न हुने (< हुनी प्यागी विधि) । २ भा प ए दुआरे । ३ ए देगी । ४ भा बेमभारे ए ग बिमभारे ।

(२) १ भा मी रा मा ए नों । २ ए बहा । ३ ए झूमहि ।

(३) १ रा परा है बारा ए बाहर है परा । २ भा चुगइमि ।

(४) १ भा अषाढ, अषारि ए मिगबह । २ रा विर दुनी भा पीत द्य ए पीत हुए । ३ भा ए परा । ४ ए मुरछाई ।

(५) १ भा के द्य है डींगी आबा बाहु ए के रे डींगी माय है बाबा भा के रे आहि डिडिबाबा बाहु । २ भा गलबाहु भा गदिबाहु ए गति बाहु ।

(६) १ भा बीगेर । २ भा ए रगन म रग ।

(७) १ भा घमि । २ भा मी भा^२ भीर है । ३ भा विधि = डा । ४ भा ब ।

मर्थ—(१) [मधुमालती बी] एक लम्बी द्वार पर गई हुई बी [तो बही] उलने देता डि दुआर (ताराबद) बनेबास होकर पड़ा हुआ है । (२) उलने मधुमालती से दुआर पर बहा "तु क्या झूल रही है? उठकर गोहार (आज मे) लय । (३) ताराबद द्वार पर पड़ा हुआ है उने या तो शानब भीर या तो बहल मे छल लिया है । (४) अषा उमे अषेना [बा बघ्ट हुआ] है बा उतर मा गया है अषा बह बिल के कुल मे झूलि उठार गिर पड़ा है । (५) अषा विभी के द्वारा उमे मउर लगाई गई है जिसमे बारण बह गले में कपि बाल कर [भूमि पर] पड़ा हुआ लोट रहा है ।

(६) उलने कैरी को बलक मरी लय रही है और [उलने] धरीर में [बा] रगन मुच

मपा है; (७) यह बात नहीं हो रहा है कि किस पीड़ा से बिना बेल का होकर यह बरबी में बड़ा हुआ है।"

टिप्पणी—(१) बार < बार < द्वार। बुरहसि < बुर + हसि = बुरैल एक बात की प्रेतिनी बिलक सिर पर लम्बी चूड़ा होती मानी जाती है। (४) बवार < न + बेका = [मोबनासि की] बेका का अतिक्लम—उपम पर मोबनासि के न मिलने से उत्पन्न विकलता। ठांवर < ठाप = बवार। (७) मुभि < मुडि = बैठना।

[४७३]

सुनठहि^१ मधुमासति उठि^२ धाई। बीर बीर के रोवसि^३ आई।
सिर उवाइ क^४ कीन्हेसि कोरे^५। बिषना सउ^६ बिनव^७ का जोरे^८।
बहु कलाप क रोव रानी। पीठ^९ बारि बारि सिर पानी^{१०}।
का तोहि भएउ बीर परदेसी। जइ सोण किरि^{११} मोरि गबसी।
त मोहि^{१२} सानि जीउ परिछवा। मे न कीन्हि^{१३} तोरी किहु^{१४} सवा।
नन उधारि पीर कहु बिबक^{१५} औगुन बौनु^{१६} सरीर।
सो उपगार^{१७} करो मे^{१८} तो कह औ सुनि^{१९} पाबौ बीर^{२०}॥

पाठांतर— भा. मा में उपर्युक्त चौथी तथा पाँचवीं अर्धार्धियां परस्पर स्थानांतरित हैं।

- (१) १ मा सुनठहि, ए सुनठै। २ भा की मधुमासति। ३ मा ए रोवस।
- (२) १ ए सु उवाइ की। २ मा कीवसि ए किहेसि वा कीन्हेसि। ३ ए कोरे। ४ मा के रा ए लीं। ५. मा बिमवै। ६ ए जोरे।
- (३) १ मा वीमइ वा वीवइ। २ ए में अर्धार्ध की पाठ है पड़ी रूप में अर्धार्ध निसानी। तै मनुषाइ की हौं निस्तारी। (तुम अपने स्व की तीवरी अर्धार्ध।)
- (४) १ ए मा वा नन साकत छु।
- (५) १ ए मोहि। २ मा करो ए बटी। ३ वा बितह।
- (६) १ मा ए बीर की रा म मे हो खय नहीं है। २ रा अपने औगुन ए औगुन।
- (७) १ मा उपकार। २ मा ही ए मे यह खय नहीं है। ३ ए नि। ४ वा ए बीर।

अर्थ—(१) मधुमासकी सुनते ही उठकर खड़े पड़ी वह 'बाई' 'धाई' करती हुई रोती आई। (२) उसका सिर उठाकर बतने मोड़ में रख दिया और वह बिपत्ता से हाथ जोड़कर बिपय करने लगी। (३) रानी (मधुमासकी) बहुतैरा कलाप (कपल) करती हुई रोने लगी और उस पर पानी बार-बार कर सिर पीवने लगी। (४) वह कहने लगी 'हे परदेसी भाई तुम्हें क्या हो गया कि ब्रितते तुम किस (निदिधात कम है) हे मेरी (मेरे मित्र की) गवैषवा करने वाले सो गए? (५)

मुझने मेरे लिये [अपने] बीब का परिछेदन (बिनास) कर डाला किन्तु मैंने तुम्हारी कुछ भी सेवा नहीं की।

(६) कुत्र गोल कर अपने जी की पीड़ा कहो तुम्हारे शरीर में कौन-सा अथमुष (दोष) हो गया है? (७) यदि मैं [तुम्हारी] पीड़ा मुन पाऊँ, तो मैं तुम्हें वह उपहार (तुम्हारी पीड़ा के दामन का उपाय) दूँ।

लिंगी—(१) बार < उषार < उ + र्णप् = स्वागता छोड़ना। (४) निरि < निर < निर = निरिचन ग ग। (५) परिछ < परि + छप् = मष्ट करना। (६) औमुन < अथमुष।

[४७४]

आम^१ निरास पूरि तुह^२ मारी । म मबा बिछ कोन्नि न मारी ।
राज पाट तजि माहि न आगद^३ । अनमिन्^४ रहा मा आनि मिम्याद^५ ।
पछि रूप क^६ जननि निमारा । त मानुम^७ क हौ निम्पारी^८ ।
जननि मोहि^९ गुन बाणि बहापउ^{१०} । त मोहि^{११} बीर मार न म्याउ^{१२} ।
हुग ममु^{१३} जहि^{१४} बार न पाग । बही जान ययु वासु^{१५} अपाग ।
बहा^{१६} जान मोग बरा बिनु गुन बिनु बहहार^{१७} ।
ता मझपार^{१८} महे^{१९} बूझन तुम्ह मोहि दीन अपाग ॥

पाण्डुर—(१) १ ए जान। २ मा पुरी में मा बरी में त पुरी। ३ त मा में न मेर बिछ कीडा। (कोन्नी—मा)।
(२) १ त मोहि में माय। २ मा अनमिन्। ३ त रहे। ४ त म यह गद मरी है। ५ मा मिम्याद ए मिम्याये।
(३) १ मा में ए म यह गद मरी है। २ त बनबामा। ३ मा मनुमाद। ४ मा में त हौ ही। ५ त म बरक का पाग है मैं मरि बीर बीर कर बामा।
(४) १ त मरि। २ मा त बहापउ त बन्। ३ त मरि। ४ मा मा त मरउ त मर।
(५) १ मा मम। २ त मा। ३ मा रिउ बाट त बिनु वासु त हुग वासु।
(६) १ त मरी। २ मा मर।
(७) १ मा मा माग बार त मर बार। मा मरि। ३ त मर। ४ मा दीन त त बीन।

अर्थ—“(१) मुझने मझ निरास की आजा पुरी की किन्तु मैंने तुम्हारी कुछ भी सेवा न की। (२) मुझ बदमा राजत तथा निहासन छोड़ कर बसे मे आए, और मा न मिम्ये माय का उमकी भी निमाया। (३) बही के रूप का कर बसे जमनी मे निहास दिया था तुम्हरी मे बसे मनुष्य करके मेरा उधार दिया। (४) जमनी मे मुझे [येरी बरक-बीब को] यय (संगर की रक्ती) बर कर [हुग-मागर मे] बर दिया था [तक] हे माई तुम्हरी मे बसे माकर तोर कर मगाया। (५) हुग-ममु मे (जमकर बार-बार मरी का मैं बिना बिनी आचार के मरी का रही थी।

(१) बिना सुन के (संगड़ की रस्सी से विच्छिन्न होकर) और बिना कनधार के मेरा बेड़ा बहा जा रहा था; (७) उस मसभार में बूझती हुई [सुन] को सुनने आचार दिया।”

टिप्पणी—(२) पाठ < पट्ट = फलक सिद्धासन। (३) पछि < पसिन्। निवार < निस्तारय = निकालना। (४) बेरा < बेसम = मलक [बे०] = लोका बहाव। कंडहार < कर्णधार।

[४७५]

कुबर मनोहर हुत^१ चित्रसारा^२ । सुनि मंदोर^३ बलि आह^४ दुवारी^५ ।
 देसत ताराचंद क^६ माती । गई मनोहर^७ जिय^८ हुत^९ सांति ।
 सीतर^१ नीर नम बुद्ध सावा । बड़ी वार गए^२ जित घट^३ आवा ।
 ती उर^४ लिहसि^५ ठमि क सांसा । जपु उधारि वससि^६ बहु पासा ।
 अब जानसि^७ किछु जित^८ सुस्ताना । पालकि बाहिमविल^९ तब^{१०} आना ।

जह छगि यह^१ सयान मगर यह^२ सम कह^३ मएउ हकार^४ ।

सुनत राज के^१ अग्या बलि आए सम^२ बार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा ता ए तहें। २ मा चितवारी रा ए मा चित्रसारी। ३ ए सुनी खोर। ४ मा ए आह। ५ रा ए मा दुवारी।

(२) १ मा ए की। २ मा पये ए, नी। ३ ए मधुमाक्षि रा मे यह छम्प नही है। ४ मा यह, ए जहें। ५ ए बुद्ध।

(३) १ रा ए सीतर। २ मा हुत रा गई। ३ मा ए कै। ४ मा था पर।

(४) १ रा तब उर मा तीरे ए ती खी। २ ए लिहें। ३ मा बेप ए देखा।

(५) १ मा जानेसि ए जाना। २ ए नी था जिय। ३ मा मा मंदिर। ४ ए ती।

(६) १ मा जहं जपु रहें। २ मा ए सयाने। ३ त मो। ४ ए राज के। ५ त लिहें हकारि ए परा हवार।

(७) १ मा ए यह की। २ मा आग्या रा त आवा। ३ ए मा तब।

अर्थ—(१) कुमार मनोहर चित्रसारी में जा धोर सुनकर बल पड़ा और डार पर जा बसा।

(२) ताराचंद की मांति (पत्नी) देवसे ही मनोहर के नी में [नी] सांति की यह जमी गई।

(३) उसने [ताराचंद के] दोनों नैनों में दक्षिण बल लगाया [धीरे] धीरे धीरे के बाव बीच [ताराचंद के] शरीर में आया। (४) तब ताराचंद ने उठकर अपनी छाती में लीप ली (नदी) और अपनी मांति को जोलकर उसने अपने चारों पात (धोर) देखा। (५) अब [मनोहर ने]

जाना कि उसका बी कुछ स्थान हुआ है, तब उसे बावकी में डालकर यह राजमदन की ले आया।

(६) जहाँ तक (जितने) भी सयाने (विभिन्न प्रकार की व्याधियों के समन का उपाय जानने वाले) नगर में थे सभी को बुलाया हुआ (किया गया) (७) और राजा की आज्ञा सुनते ही वे चलकर [राज] डार पर जा गए।

श्लेषी—(१) मानर < वीरल। बार < वरा। (४) ली < लउ < लण = लउ। ऊप < उप्प < ऊप्प = ऊँचा हाना उप्पा। चणु < चणु < चणु। (७) बार < बार < डार।

[४७६]

गम पुनी^१ मिलि आए सही^२। मोहा बुबरा माह रम अहा^३।
दगा बुबरा^४ नाटिया गही^५। भदम रिछ बाया नहि^६ अही^७।
दयन्हि^८ रहिर लह गा सुगो^९। रजि ममि दुखो बया^{१०} निगुगो^{११}।
ओ पुनि^{१२} पण्ड^{१३} न ननन्हि लाग^{१४}। माहा मोह न बमह जाग^{१५}।
कहन्हि^{१६} एहि ब^{१७} जिउ बिनह^{१८} लाग^{१९}। ओ सति रम नोहि^{२०} १^{२१} जागा^{२२}।
कहन्हि^{२३} जाहि मउ हनु ह^{२४} मा पुण्डि^{२५} यनला^{२६}।
मउहि नाउ अह अहि गता^{२७} ओम^{२८} न बिछो उपा^{२९} ॥

पाण्डुर—(१) १ मा मा ॥ गब पुनी उन। ॥ मज्झम।

(२) १ मा गनिगन दणि मा ॥ दगा मनिह। २ मा ना^३ बा। ३ मा रिछ न बया मउ मा रछ न बाया मउ ॥ बाउ रया म।

(३) १ ग दाहि ॥ देगा। २ मा नारी। ३ मा ॥ रया। ४ मा ॥ निगुगो।

(४) १ मा मा बा ॥ पुनि। २ ए भलर। ३ ग नैन ना^४ लगे मा नैन मा लगे ॥ नैनहि ना^५ लगे मा न नैनह लगे। ४ ॥ बमह। ५ मा ॥ जाग।

(५) १ ग बनेनि ॥ बने। २ मा बिहि बा ॥ यहि बा। ३ ए बमह। ४ मा ॥ पाव। ५ मा मउहि ॥ लउहि। ६ मा पुनि।

(६) १ मा बनेही ए बनेहि ग बनेनि। २ ग ॥ गो। ३ ग रागा (मुउ परबनी बरग)। ४ मा यहा पुण्ड रम ला^५ ॥ पुण्ड रम ला^६ ला^७ मा यहि पुनी रम लाह।

(७) १ मा नैरि नाउ अहि गता ॥ निरै नाम अहि गता मा बरिहि नाउ अहे अहि गता ग मउहि नाउ न^२ मन। २ ॥ ओम।

अर्थ—(१) लयी पुकी मिलकर वहीं बर मान (उपरिबन हूँ) अहाँ बर बुबाए (ताराबंद) मोह-रम म भोरित (बुलियन) [पड़ा] बा। (२) उगहोने कुमार (ताराबंद) को उमरी माड़ी बरह बर देना बिनु [देना बि] उमरी बाया में कुछ भी बेहना [बा बरग] नहीं है। (३) उगहोने देगा बि उमरे दे बरह मम मया है और उमरी बाया में मम नवा बर—रागा [नारिदी] निरोध है (४) छिर [भी] उमर मेरों म पमर नहीं लय रही है तथा बर माह मे भोरित (बुलियन) है और रिनी प्रहार जाना नहीं है। (५) उगहोने कहा, 'हमका जीव बगी [अप्य] लगा हुआ है [और] अब यह उसे देना, लयी यह जानना।"

(६) उगहोने कहा "जिमने हने मर है (हो) बर हमने बालीनार बर पुणे। (७) [उमर] यह उमरा नाम देगा जिस बर यह अनुबध है [अप्य] और कुछ (कोई) भी उपाय नहीं है।"

टिप्पणी—(२) नाटिका < नाडी। (३) रहिर < रहिर < रस्त। रहि सति = मृत
 नाडी तथा बंद नाडी। (४) जी < जउ < यवा = बब। ती < तउ < तवा = तब। (५)
 नाउ < नाम।

[४७७]

फुनि नियरें^१ आई बर^२ बारी। रस रस सम^३ बात^४ अनुसारी।
 एकसर^५ आइ कुवर पंहि^६ बसी। पूछे^७ बीर पीर तोहि^८ कसी।
 जो तोर जीउ लागे कहू^९ होई। मरबौ जानि जान तोहि^{१०} कोई।
 घोष न^{११} कोई जानी^{१२} एह बात। क तुह^{१३} क म क रे^{१४} बिभाता।
 कहसि^{१५} बकत मुख आब न मोही^{१६}। कसें कहौ पीर म तोही^{१७}।
 जो मोर बिउ हरि ल गह^{१८} तहि क^{१९} न जानौ नाउ।
 जो फुनि एसी बात तोहि आगे^{२०} कहत^{२१} लजाउ॥

पाठांतर—(१) १ रा बहुरि नियर, ए पुनि निकरे। २ रा सो। ३ मा बीसि मा खै
 ए आइ। ४ ए बहत।
 (२) १ मा अकसरि। २ ए पहुँ। ३ ए पूछी। ४ ए ताहि।
 (३) १ रा लाग बहू मा लागे केहु। २ मा जा जानन ए मा जानना।
 (४) १ मा जो नाहि। २ मा कोउ जानै ए कोइ जान। ३ मा मा ए सी।
 ४ मा बी बी जानै ए बी सो जान।
 (५) १ ए केहोसि। २ ए बलाव मोही। ३ ए बीसे बहौ पीर ना ताही।
 (६) १ मा नै ए जी। २ ए का।
 (७) १ ए ऐसी बात तोहि जाने रा जी जी पुनि ऐसि बात। २ ए मैं पुनि
 बहत मा कहौ बिताहि, रा बहत सो सोख।

अर्थ—(१) तबन्तर बहु अयेत नाटिका (मधुमाखती) उसके निकट आई और सनी बातों
 उसने पीरे-पीरे कही। (२) वह युवावस्था में आकर कुमार के पास बेटी और पूछने लगी “हे भाई,
 तुम्हें कंती (किस प्रकार की) पीड़ा है? (३) वहि तुम्हारा जो बहू (मिली) पर लगा हो, तो
 मैं उसे लाकर तुम्हें भिलाऊँ और कोई जानने न पाए। (४) बीबा कोई इस बातों को न जानने
 पाएगा या तुम या मैं और या बिभाता ही [इसे जान पाएँगे]।” (५) [लाटाबंद ने कहा]
 मेरे मुँह से बाण्य तो निकल नहीं पा रहा है मैं कैसे अपनी पीड़ा तुमसे कहूँ?

(६) जो पैरा जीव हर के वई उसका मैं नाम नहीं जानता हूँ (७) और फिर ऐसी बात
 तुम्हारे जाने करती हुए मैं लग्ना का अनुभव [भी] करता हूँ।”

टिप्पणी—(१) नियर < निगट। बारी < बालिका। (२) (३) बात < बात
 बात।

[४७८]

बोर म्मा मो मों^१ कम^२ तोही । पच्छिर सात्र बात बहु मोही ।
जो म माउ^३ तहि बा^४ मुनि पावों । मरग मुग्गिनी^५ आनि^६ मगावों ।
बहमि बेग में झूलनि ठाही । परम जिस्टि^७ जित स गइ^८ बाडो ।
बमरु दुबो नन उजियार । जनु भूइ उग डबम दु^९ मार^{१०} ।
जो गिन^{११} मुनमि^{१२} वान ब वमी । बहों^{१३} मो ताहि म्माउ ही^{१४} जमा ।

जमि^{१५} किछ मनन्ह दगिउ^{१६} मय न जोम बहि हार^{१७} ।

सहम भाउ मह भाउ एक मुनहु मगाहों माइ^{१८} ॥

पागलर—(१) १ न मात । २ न बा ।

(२) १ न मात । २ न बा न तहिवा । ३ बा मरग मरगिनी मा मरग
क मुग्गिनि । ४ बा नाहि ।

(३) १ मा दुग्गी । २ मा मी न मी ।

(४) १ न जनु मुनीव उग वचन मुमारा ।

(५) १ ए ती गिनरु । २ मा मुनरि न मुनीव । ३ बा बहो । ४ मा
ताहि मो न ताहि मो मा मा नाहि । ५ बा मा न म वर गछ मही है ।

(६) १ रा म वही 'क' और है । २ ए मी मीनरि वरा ।

(७) १ मा मगाही ठाही ।

अथ—(१) [मधुमासती ने उत्तर दिया] “हे भाई असम तुम्हें बंसी लगवा ? लगवा
छोड़कर (बह) बार्ता सुनते बहो । (२) यदि मैं उसका माथ मुक चारों, [और यदि वह]
स्वर्ण की मुराफा [हो तो उस] को [भी] मारकर तुमने जिना दूँ ।” (३) [साराबंद ने कहा]
“मैंने उसे लड़ी-लड़ी झुझी देगा [और] मेरी बुद्धि बड़ते ही वह मेरा जीव निरापम मे गई । (४)
[उमड़े] दोनो उगज्जल मेव [इत प्रकार] बमरु पड़े मानो दिव में हो [और] भूमि पर ही तारे
उदित हुए ही । (५) यदि तुम एक लाख बाज बेहर बंटी हुई तुमने, तो मैं न अभी उनको देना है वह
सुनते बहो ।

(६) जंगा कुछ मैंने मेरी ने देगा है बीना जिह्वा से बड़ा मही का लचना है । (७) [उमड़े
लौकिक के] लख लाखों में मे एक लाख [बाज] मुने, [देवम] उमी [उमड़े ही] को लतापना
म कर रहा हूँ ।”

गिनपी—(१) मरग < मरगें । मुग्गिनी < मुरागिनी । (२) भू < भूमि । (३) गिन <
गण ।

[४७९]

जानि गन^१ डगनि बनी^२ मांगा^३ । ममि घर जानु^४ माम पर मांग ।

म जन^५ ताहि मरग बर मागा^६ । जणउ^७ टूट टूट मरग बाग ।

दीपा टेंक^१ रनि जनु वरी^२ । लोहनुहान^३ सिर पित्त सरी^४ ।
 तहि पर^५ बिहुर नाग घरि सावा^६ । गारि यहाँ^७ जो छहुरि घुसावा ।
 देखि सलाट जो^८ घोषित^९ बारा । अजहू नैन सूझ^{१०} बधियारा^{११} ।
 असि^{१२} रबि किरिन^{१३} सेज कर^{१४} सौह निहारि न^{१५} जाइ ।
 तस^{१६} सिलाट^{१७} देखि^{१८} ओहि करा^{१९} घोषि^{२०} परेत^{२१} मुखछाह^{२२} ॥

पाठांतर—(१) १ मा बरनी उह, २ बरनी के। ३ ए जगा। ४ ए जानी। ५ ए भागा ए कागा।

(२) १ रा सो। २ मा भाता। ३ ए जी। ४ मा इपहु मा देखतहि।

(३) १ या बीपक टेक मा बीपक बेबी ए बीबा टमि। २ रा बारी। ३ मा लुहनुहान ए लुहनुहात। ४ ए बेबा ठाड़ी रा सेबुर छरी।

(४) १ ए तापर। २ मा होइ बाबा ॥ ३ यै पाबा भा मोहि बाबा। ४ ए कहा।

(५) १ मा बिकार जो ए सिमारा। २ मा बीकेउ ए बीब। ३ रा छोट मा सूसत। ४ ए बधियारा।

(६) १ ए बस। २ मा किरिनि ए किरिनि। ३ मा बरी। ४ मा मा ए न बितवी।

(७) १ मा ए तस। २ ए सिमारा। ३ मा बेपत। ४ ए बोहिके। ५ मा बीकि ए बीबि। ६ ए पय। ७ ए मुखछाह।

अर्थ—(१) जाहि में सुनो, मैं [उसकी] नाँव का वर्णन कर कह रहा हूँ; वह मानी अच्छे तालवार है जो सिर पर नम (म्याल के निकाल कर) [रखी हुई] है। (२) मैं वाली उस वाला को देखते हो उस बड़ग के अजहू हुआ (होकर) बी दुकड़े हो बसा। (३) वह माली बीपक की ली है, जो रबनी (बाली) में बल रही हो मैंने उसे उसके सिर पर मायबिक रखत मैं सिस्त देला। (४) उस पर जो उसके बिहुर (केल) बालों में लगे बकड़ कर का (काट) लिया। वह गारड़ी कहा है जो [उस नाग के बिप की] लहुर की छाँत करे। (५) [किरि] जो उस वाला के (देवीपमान) सलाट को देखकर मैं बीब गया, [ली] आज (इस समय) बी मैत्रों ने अंधकार ही घुस रहा है।

(६) जिस प्रकार सूर्य की किरण का प्रसर तेज कम्युल से निहार (देला) नहीं जाता है, (७) उसी प्रकार उसके सलाट को देखकर मैं बीबकर मुच्छित होकर मिर पड़ा।”

टिप्पणी—(१) नाप < नम। (३) बीपा < बीमज < बीपक। (४) बिहुर < बिहुर = नम। गारि < गारह = गर्व के बिप को [सजावि उपचारों ने] दूर करने वाला। (५) बाप < बासा। बधियार < बधवार < बधवार। (६) गौह < बउह < धम्मुर। मिश्रा < नि + भाक्य = बकरी तरह से देवता।

[४८०]

भी^१ बाम अनिया^२ बिया^३ । मारहि सामि जीउ हतियार^४ ।
 नम दिस्ति^५ जा^६ तनु किरि^७ हुरा । जिह हरि लोह^८ तबहि ओहि^९ करा ।

वर्गनि धान^१ नावक^२ बर स्या । धिस्ति न आव स्यापु प स्या^३ ।
 दलि नामिका^४ रहुत अद्याप । बा बरनी मम मिष्टि^५ प माला ।
 मधर विव अघिन रस^६ पूर । धिरही रहिर पियन अगि^७ मर ।
 अगिनि धरन ओ अघिन^८ अपरन्ह उपजउ णि धिवाग ।
 अमिअ न जानी^९ बाहि बहु^{१०} मो बहु भाग जगाग ॥

पाठान्तर—(१) १ ए हयारि ।

(२) १ मा धिस्ति । २ मा अ ए जा । २ मा धरि । ४ मा धनि । ५ ए बाहि ।

(३) १ मा धान । २ मा नावक ए नाव । ३ ए धिस्ति न आव णाग गुग्गा । मा धिस्ति परन साव प देवा ।

(४) १ मा नामिका । २ मा रहुत आद्याप ए रहे अद्याप । ३ मा मम धिस्ति ए मम मिष्टि वा मम मिष्टि ।

(५) १ मा अघिन कन अमनाद ए अपर बिनु अघिन रग । मा धिरही रहिर पियन ए बीरही निअन अघिन वा धिरही रहिर पियन ए धिरही रहे पियन । ३ ए अग ।

(६) १ मा अगिनी बरन बा अपर ए जानि बरन हा । अघिन अपर मा अगिनि बरन अघिन तेहि अपरन्ह रा अघिनि पवन ओ अघिन । २ मा ए उपाग दणि रा उपाजउ धिरह ।

(७) १ मा अगो अन जगो । २ ए वेदि बहु भा बाहि बा । ३ ए मो

अर्थ—(१) उसकी जीहें मुझीसे और विवास्त बाण हैं और वे हयारे बीबों को देन-देगवर मारते हैं । (२) उसने अपने नेत्रों की दृष्टि से जितनी और भी घूमकर देगा उगने तारान उतारे बीच का हरण कर लिया । (३) उसकी बरीनियां नावक के बावों से लबान हैं बा [बेध को अपनी ओर आते हुए] रित्ताई नहीं चढ़ते हैं और लयमे पर ही बिगाई चढ़न हैं । (४) उसकी मार देन कर तो मैं अवार रह गया; उतका क्या बर्बन करूं जो सनन मृष्टि का मृष्ट्य है (समन मृष्टि जगने कर को आ घरनी है) ? (५) [उसके] मुँह के पचे पचों जैसे मधर अमून रन से घुगिन हैं और धिरही के धिर बा बाण करते लव के अगि दूर ही जाने हैं ।

(६) उसके अगि बर्न के और अमून (मृष्ट्य) अपरों को देन कर [मुते ता] बिचार उन्मप्र हुआ; (७) क्या नहीं अमून के विमसे निग हैं मुनरो तो वे अवार ही हुए ।”

टिप्पणी—(१) ओह < झ । (२) नावक = नाव प्रकार का पाग चक्र विमर बाण भी पा जाने प । (३) धिस्ति < धिस्ति । (४) अमिअ < अमूना ।

[४८१]

धोन चमा^१ णि म म^२ मभाग । पणउ^३ मुगठि जय पावक माग ।
 तनि मर^४ वम^५ जो^६ जोम जमा^७ । बाग अमिअ गानि^८ रन गा^९ ।
 पण निस्ति निउ गुनु मनि भाऊ^{१०} । भाणउ जग निउ निनु मिर गा^{११} ।

दक्षि कपोल क^१ झरुन^२ सोनाई । नित ठठि मुकुर^३ छार मुख साई ।
 चमकहि^४ बीरि^५ सवन^६ दुइओग^७ । बीनु छटा जस भएउ^८ अजोग ।
 नन रेह^९ माजर^{१०} क^{११} दीसि^{१२} सोम कस देह ।
 जामहु सोयन सवन^{१३} सेउ^{१४} जाए^{१५} मता करइ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए बीक चमकि रा बीका चमक। २ मा रेपि मै न। ३ मा पगै ए पर। ४ मा बीक समारा ए बीकु क माउ।
 (२) १ मा ठेहि पाइ ए ठामहै। २ मा बस। ३ मा ए मे यह सव्य नहीं है। ४ मा अहित पानि ए अठि जानी। ५ ए ता बीसी मा अहि लोकी।
 (३) १ रा परत मुबिस्ति सुनत रस बाठा मा भा परत दुस्ति ठिल सुनु सत माभा (भाऊ—भा) ए परत विस्ति सुनहु सत भाऊ। २ रा परै सो वेम मुरा जस माठा मा भउ बइस ठिल किनु सर पाबा ए भी बैस ठिल किनु सिर पाऊ।
 (४) १ मा कपोल की ए कपोल मा कपोल कि। २ मा सनक। ३ ए महु र।
 (५) १ ए बहत रा चमकत। २ ए बिहू। ३ मा रा ए खवन। ४ मा ए बोरा। ५ मा भउ ए भी मा महर।
 (६) १ मा रेपि। २ ए कज्जल। ३ मा ए की। ४ मा देह ए देखी।
 (७) १ मा रा ए खवन। २ मा सेउ रा ए सी। ३ ए जाइ जो।

अर्थ—“(१) उसके बीबी (छायने के बार बीतों) की चमक देखकर मैं [अपने को] संबाध नहीं सका और मूर्च्छित हुकर गिर पड़ा जैसे बिजली से झटका होता है। (२) उस [इत-पंक्ति] में जो अमृत्यु बिहुवा निबाध करती है वह जोरसे सवय माली अमृत की जान खोल देती है। (३) उसके तिल पर दुष्टि बड़ते ही मेरा सज्जा माथ सुनो मैं एक क्षण के लिए जैसे बिना सिर-पैर का हो गया। (४) उसके कपोलों की सनक और वनका सावज्य देखकर मुकुर गिरा ही उठकर (उठाया जाकर) [निर्बल होने के लिए] अपने मुख में छार (राख) लगाता (चमकता) है। (५) उसके कानों में शीमो और बीरिया [इत प्रकार] चमकती हैं जैसे बिजुल्ला से प्रकाश हुआ हो।

(६) [उसके] नेत्रों की कज्जल की रेखा [जो उसके कानों तक फैली हुई है] किस प्रकार शोभा देती हुई बीबी (७) मागो [उसके] नेत्र [ही] उसके कानों से मंत्र (विचार-विमर्श) करने आए हों।

टिप्पणी—(१) बीक < चमक < चतुष्क। चमक < चमकदार। बीन < बिभु = बिजली। (२) अमित्र < अमृत। (४) बीनाई < सावज्य। (५) (७) सवन < सवय = जान। (७) सानन < सीसन = नेत्र। मता < मत = विचार।

[४८२]

गिय^१ गटतर गा काहु म छाबा । जनु विमकरम सह निरमाबा^२ ।
 लीनि रर मुख^३ गीय निरायी^४ । यई त मम^५ ग्रिय नमन्हु^६ फागी ।
 मेंदुर कृंकहु^७ मेरे^८ पिमावा । मुखर फटिष गिअ मार भरबा^९ ।

बिधि बच म्याम छत्र मिर नीन^१ । गड आइ ननहि^२ अनधीन^३ ।
छरते^४ दुवो धोर^५ जित हरिया^६ । जौन हार हान^७ बिच^८ घग्हरिया ।
पून^९ बग्नम भंजित रस पूर बिधि बच बग्नि^{१०} बग्न ।
जोवन बाणा उमगन दगड^१ बिपरित बनर बधोर^१ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए बीब। २ रा ए आनु बनाबा।

(२) १ ए मपु। २ भा बीब निरामी या मित्र निरामी ए गीर निरामी।
३ रा भइ मां बाइ मा भा भई ते मम ए श्री नेहि। ४ रा मृग नेही
मा विधं नहु बी।

(३) १ रा कुमुमु। २ मा मति। ३ भा मुरर पटिब मित्र मान
मराबा ए मूनन पटिब गाव माबा पाग रा मुहरि गाव पटिब तटि लाया।

(४) १ भा मिर बीह मा मिर बन ए बिधि बन। ३ मा ए मनबन
मा अनधीन।

(५) १ रा अति जी। ए बीब। ३ मा पिउ हरिया ए बीन हरिया
मा मा बरिया। ४ मा हाना। ५ रा म बाह पाग नेही है।

(६) १ ए पीन मा बग्न रा कबन। २ मा बठन।

(७) १ मा जावन मनन उमग ऊर दोषो भा जावन बन उमग दग ए जावन
बन उमगन दगा। २ मा मन क चार।

अर्थ—“(१) [उत्तरी] घीबा की सामानता बिनी से न की जा तभी जानो उसे बिचरमा
ने स्वयं निमित्त किया हो। (२) उस मुग्धा की निराशित (जिन्होंने अभी बिनी भी घीबा का आशय
नहीं किया है) घीबा में जो तीन देवार्थ हैं वे मेरे मदन-मूर्खों के लिए [तोष] पाग हो गई। (३)
जैसे सिकुर और कुंठुन (केतर) को बिलावर पिलाया गया हो और उसे छद्म (निर्मल) लहरि
[बाग] की घीबा-नाम में भराया गया हो [इस प्रकार स्वाध्यायपूर्ण रत्न से सिद्धमिलानो हुई उत्तरी
घीबा है]। (४) उत्तरे दोनों कुछ इयाम छत्र तिर पर दिए हुए हैं और वे अनधीन हो आकर [मेरे]
मैंनों में मड़ गए। (५) वे दोनों जीवापहारी धीर [आपन में ही] लड़ बढ़ने यदि उन दोनों के बीच
में [उत्तरी] हार बीच-बचाव करने वाला न होना।

(६) उत्तरे दोनों कुछ बडिन और बठोर अमृत रस से दूरित पूर्व बलता है (७) [मेरे]
उत्तरे पर रखने हुए बनक के बठोरी [के सहूरा] उस बाला के उर्वरपूषक निरालने हुए बीबन (दुबों)
को बंधे देना।”

श्लोक—(१) म < इयम्। () निगम < निगम = निगमिन। बासी < पाग = बग्न।

(१) कुमुद < कुमम। (३) मुरर < मुग < मुड = निर्मल। मित्र < मित्र = दीरा। (८)

(६) बिच < इय। (९) पून < पुष।

[४८३]

भुअ^१ पन्तर हरउ^१ जग माहो। कटि द जार मगनी बानी।
ब मनि हनि^१ जो बग्नि म भाए^१। बं विपन भुअ छानि उता^१।

काहू जलज^१ गिनाल मखानी^२ । काहू कदलि^३ गाम^४ मन मानी^५ ।
 एहि बलाई^६ बित मोर^७ मोहा । कनक भाउ तहि माहें^८ सोहा ।
 दुबो ह्वरि^९ सुसर कर बीसा^{१०} । फटिक सिला जस^{११} इगुर पीसा^{१२} ।
 गहि कर पखो टोरी झूमस ही खलि मग^{१३} ।
 कर वारी नस देखेउ^{१४} जनु फरह्व करो सुरग^{१५} ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मुज। २ मा बटवर। ३ मा बा जोहेउ। ४ मा किही
 जोषद।

(२) १ ए मे मखिहीन। २ ए मे वह खय नही है। ३ मा बरनि
 जाये ए बरनि ना आई। ४ भा मुज समु उपाई रा कुह सखीहि उपाए
 मुज समु उपाई ए मुज सीमु उपाई।

(३) १ रा काहू बालि मा काहू लज ए मा काहू जल। २ मा ए
 बखानी। ३ ए कर मा गहर। ४ भा खान। ५ मा ए मा
 मानी रा सा जाना।

(४) १ ए कमा। २ भा मोर मन मा बित मोर। ३ मा भा कनक
 लामह अति ए कनक परे तहि माहू बे।

(५) १ मा ए इपीरी। २ भा सुरी बीसी ए सुसन कस बीसा। ३ मा
 जनु, ए ओ। ४ मा पीसी।

(६) १ भा झूठि हुति खलि मग मा—खलिनि सग ए झूठि इहि खलि

(७) १ मा बेपिउ ए सारेउ। २ मा जनु फरह्व कली रन ए जनु फरह्व
 सुरग रा फरह्व कली सुरग।

अर्थ—“(१) उसकी मुजामों का उपमान मैंने दूँद बाला किमु देता कि वह संसार में नहीं
 इसलिये किसी कोड़ा (सामुख) देकर उसके बाहों को सराहना करे? (२) या तो मेरी मति
 हीन है कि वे बर्चित नहीं हो सक रहे हैं, अबका बिचलता मे स्वयं ही उन मुजामों को उत्पन्न (निर्मि-
 किया है [इसलिये वे अवर्ण्य हैं] (३) [जसे ही] कोई उन्हें कलक-मुखाक कहु कर उ-
 बखान (बर्चन) करता है, तो किसी ने मन में उन्हें कलसी का नाम मान लिया है। (४) उ-
 कलाइयों को देखकर मेरा बित जोहित हो गया उनमें [पहले हुए आचरणों के] कनक का
 (सीमर्य) अत्यधिक घोषित था। (५) उसकी बीसी हूबेलियाँ किम प्रकार भुज (निर्मल)
 पड़ी बँते वे वरुचि-सिसलें हों जिन पर ईगुर पीसा गया हो।

(६) वह अपने कर-पलकों से [सूते की] डोर बकड़ कर सन्धियों के साथ जुल रही
 (७) जो उस कालिका के करों में जलों को देना, तो वे ऐसे लवे मानो प्रसन्नता की रंजित करि
 हों।

टिप्पणी—(१) (२) मुज < मुज। (२) खई < खयम्। उपाई < उम् + पाई = उ-
 पना। (३) गाम < गर्भ = बीज वा भाग। (४) मुसर < मुस < मुज = निर्मल। (५) क
 < बालिना। फरह्व < फरह्व [फर] = प्रसन्नता भावव।

[४८४]

उबटन^१ लाह^२ पट मम कीन्ही । अन म पाइअ तामह^३ नीन्ही ।
 नानी कुँइ अमोष^४ खपाहा । पर जो आइ न^५ पाव^६ थाग^७ ।
 पौगि पप^८ बडि लति जो झूका^९ । बटि^{१०} अनु होइ बाहन^{११} नुइ टका ।
 गहव निव न दग^{१२} समारा । अनु बिबि गिगि भा^{१३} एक पहाग^{१४} ।
 बिपरित^{१५} कनक कइनी गाभा^{१६} । जइ दग जायि न जानिय का भा^{१७} ।
 बिरह^{१८} मारि लतारउ^{१९} उन्ह^{२०} हनिपारी जान ।
 प्रगट दगु^{२१} रवतार^{२२} तरवा निदु क गन^{२३} ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा अँवत । २ ए लाव । ३ ए आ नन पाइ लावहँ या अन न पाँ तामह
 मा अँव २ (< न—मागरी भिनि) पाँअ नयह ।
 (२) १ मा अभास । २ मा आ आइ न ए भा नहि । ३ ए पाँ आ
 आइव । ४ मा बाहा ।
 (३) १ रा पैग पन ए पौडि पन । २ ए पैग उमूवत । ३ भा वर । ४ मा
 मा हागि दूटि ए हाइ चरी ।
 (४) १ मा आ गुर निवव दपि मै न ए गुर निवव मै मै न । २ मा बरी ।
 ३ मा मा बाव ए बावा या भा । ४ मा भा ए एक (न—ए)
 बाग ।
 (५) १ मा बिडी रति । २ मा बैयवी क वषा भा बगि उम पासा ए
 केन्नी मँम मा । ३ भा बिउ देयि जाँप न जानी का भा मा जोउ दे जाय न मै
 पंभा ए मिम देनि जोन जाने काभा ।
 (६) १ ए बीरहि । २ भा मगारी भा मगारीडा ए मगारे ए मगार मा ।
 ३ मा उनी । ४ ए हनिमारे जान भा हनिगिनि अन ।
 (७) १ मा बरी भा लहि । २ ए वरनागु या गनार । ३ मा वरना ग
 के वरन ए लखा गिगि वर गन भा लखा गिगि के वर ।

अर्थ—“(१) उसका पट उबटन लगा-लगा कर लक लिया हुआ है और उसमें बिना हुने
 है कि उसका अंत न मिलेगा । (२) उसकी नाभि अमोष (अमर ?) और अमर कुँइ है; जो कोई
 उसमें आ बड़े वह उसका लहू लूँ के लवता है । (३) पैग (सने) पर बड़कर बाँग (आने
 वर) पर जब वह सोँगा (सकीर) लेगी है तो माँसे उसकी बटि से टुकड़ा होना चाही है ।
 (४) उसके गुर निववों को बैनकर मैं [अपने को] मँबाव न पावा के तेरे हैं माँसे एक वषन ही
 [डिपा होकर] हो गिरि बन गया हो । (५) उसकी ओर [इन प्रकार के] उन्ह (उन्ह कर
 रण हुए) कनक-कइनी के गाभों अँनी हैं कि उन जाँघों को देखकर [मैंने] न जाने क्या हो गया ।
 (६) हाथों की जान [जो उन जाँघों] ने बिरह ने मार कर [मुझे] लगा (रौंठ)
 बागा; (७) (इतीन्द्र) प्रहर ही बैलो, उसके (उसने बैलों के) लकड़े रण में लाने हैं ।”

टिप्पणी—(१) उबटन < उबटण < उब + वटन = धारि की धीन को डर करने के लिये
 लगाया जाने वाला एक प्रकार का ढाँचा । (२) बिह < बिह । (३) वरनाग < वरनाग ।

जो कुदरहि कहि^१ बात सिरानी । सुनि क रही औगि^२ भै^३ रानी ।
मनहि गुन औ कर बिचारा^४ । काहि देखि यह भएउ बिकारा^५ ।
औ असि सखी मोरि नहि^६ कोई^७ । पेमा मकु त^८ होइ तौ होई ।
कहेसि^९ कि^{१०} करहु बीर मनु धीरा । में उपधरौ^{११} जाइ तोरि^{१२} पीरा ।
समुदासति निहृष^{१३} क^{१४} जाना । पमा छाडि होइ^{१५} महि माना ।
में सम^{१६} सखिन्ह हकारि क^{१७} पूछौ^{१८} खोज करेउ^{१९} ।
क कुमारि^{२०} कै बियाही तन तोहि आइ कहउ^{२१} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए मे यह खब्ब नहीं है। २ ए जीव। ३ रा होइ।

(२) १ मा मनहि नुनाई करी बिचारी। २ मा किहि देखियहु भव
बा बिचारा मा किहि बेपी इन्ह बा बिचारी ए काहि देखि मेहि मा
बिकारा।

(३) १ ए मा। २ मा मा बीर न जैसी सपी योगी कोई। ३ मा मकु ए
मरहु।

(४) १ मा कहेसि। २ मा मा ए मे यह खब्ब नहीं है। ३ मा ए
उपधारी। ४ मा गुन।

(५) १ मा निहृष मा निहृष ए निहृष। २ मा मन। ३ ए होइ।

(६) १ मा ए सब। २ मा मा सखिन्ह हकार (हकारि) कै ए रा सखी
हकारि कै। ३ मा बुझी। ४ मा ए कपड।

(७) १ ए कुमारि। २ मा बियाही। ३ मा ए कहाउ।

अर्थ—(१) जब कुमार की बात कही जाकर लगाने हुई तो उसे सुनकर रानी (बकुमासती)
अवाक हो रही। (२) वह मन में गुनने और विचार करने लगी 'किसे देखकर [ताराखंड को]
यह बिकार हुआ।' (३) और, मेरी ऐसी कोई सखी है भी नहीं 'पेमा जले ही हो तो हो।' (४)
उसने कहा, "हे भाई मन में बेवश [धारण] करो मैं जाकर तुम्हारी पीड़ा का उपचार करती
हूँ।" (५) बकुमासती ने निश्चय करके (निश्चित रूप से) जान लिया कि पेमा को छोड़कर यह
और कोई नहीं हो सकती है।

(६) [उसने कहा] "मैं तनस्त सखियों को बुलाकर उनसे पूछनी और उसकी खोज
करती हूँ।" (७) [बीर तपनंतर] वह कुमारी है या बिवाहिता बीमा में गुम ने जाकर
पहचाने हैं।"

टिप्पणी—(१) जीव < बवाक = बुद। (२) गुन < गुणप = वषणा करना विचार करना।
(५) निहृष < निरुषण। (६) हकार < हृकार < मा + वारु = पुकारना आह्वान करना
बुलाना। (७) कुमारि < कुमारी।

मधुमासति उठि^१ क घर आई । कहैमि कुवर मउ^२ भान बुझाई ।
जन^३ बिछ बहा^४ कुवरमउ^५ अहा । भाइ रविन रावन मउ^६ कहा ।
मुनत्र कवर मन भएउ^७ हुलासा । कहिमि^८ कीनएहि^९ कउ दह^{१०} गांसा ।
जब राकम हनि आमिउ^{११} आही । तहिय आहि^{१२} रानी हनि^{१३} माहा ।
तब न मान्हि^{१४} माहि पाह^{१५} न आही । अब ल कुवरहि दउ विपाहि ।

यह^१ कहि दुखी एक मय चित्रमन पहि^२ आइ ।
एष ठाउं फुनि^३ बमि क^४ मधुरहि मात बोलाइ^५ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा मुनि । २ ए कहा । ३ मा री रा ए मी ।

(२) १ ए जन । २ मा मा कुछ मुना । ३ मा मुनु ए भा मी रा रा ।
४ भा मा ए राव नी रानी रा रविन रावन सा ।

(३) १ ए मी । २ भा कहिमि । ३ भा मा ए ये । ४ ए दह ।

(४) १ मा जानउ मा जानउ ए जाना । २ भा कहियहि माहि । ३ मा
तहिआ बरह दीह हन ए तहिआ उरु रानी हनि ।

(५) १ मा मीउो ए मिया । २ ए माहि पाह ।

(६) १ मा दहह ए मरि । २ भा मग भै मा मग मिक ए मग मी ।
३ ए क ।

(७) १ मा मरुन ये कीनी बेनी की (< री पागमी निनि) ए मा मरुन
एगन (एकन—मा) बैनि क रा एष ठाउं फुनि री री । २ भा मरुन
मीन बोलाइ मा मरुन कीने बाबा ए मरुनी (< मरुन पागमी निनि)
निमा बाबा रा मरुनि मीन बाबा ।

अर्थ—(१) मधुमासकी उठ कर घर आई और उमने कुमार (मनोहर) ने [यह] बातें
सबसा कर रही (२) [और] जो कुछ उमने कुमार (ताराचर) ने कहा था वह
[भी] रमणी ने प्रिय (मनोहर) से कहा। (३) [यह बातें] सुनने ही कुमार (मनोहर)
के मन में उल्लास हुआ और उमने कहा “ममता हन का क्या अंशय है ?” (४) अब मैं रासम को
बार बार उमने लाया था उमी दिन उमने [उल्लेख दिया-माया ने] मांगे दे दिया था। (५) बीने
उमने तब मही चरन विमा का बयाज सुने पाह (घर) गरी की [विनु] अब उमने केवर कुमार
(तामचर) का प्याह देना है।

(६) यह बहुर रीमी ने चित्रमन के नाम आकर (७) और तदर्थमर एष (एषान) स्वाम
कर बीचर मरुन को बुला लिया।

शिक्षा—(१) रविन < रमणी । रावन < रमन = प्रिय । (२) हुलास < उल्लास । (३)
गांसा < गमय । (४) पाह < पार (?) ।

कुंवर ठाढ़ मा' दुहू' कर जोरी । कहैसि' पिता बिनती एक मोरी ।
 आएसु' होइ सो बिनति पराऊ' । कहत' पिता सउ' यात लजाऊ' ।
 राय' कहा म आएसु देऊ' । कहा तुम्हार' परिछि सिर लऊ' ।
 तब तूनहु' मिलि बात उमारी । ताराचद कंबर कुल मारी ।
 गदव गरिष्ट मान गढ़' पती । पंडित पर उपगारी' सती ।
 राज बुलारि तुम्हारी' बचा बहिनि' है' मोरि ।
 कहिय तो' ताराचद कह' बहु' गांठि छुड़ जोरि ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कुंवर (<कुंवर कारसी किपि) । २ मा ए दुहू मा दुबो ।
 ३ मा कहिधि ।
 (२) १ ए जायसु । २ मा बिनती करी ए बिनती करऊं । ३ मा सी
 ए रा सी । ४ मा कहिधि । ५ मा बात डरउ मा बात डरऊं ।
 (३) १ मा रा राय ए राजै । २ मा रिजो ए रीजो । ३ मा ए, तोहा ।
 ४ मा छिर कीजो ए छिर सँऊ ।
 (४) १ मा तब दुनी ए जब दुनी । २ मा मा उमारी ।
 (५) १ मा बह (<परह नापरी किपि) । २ मा ए उपकारी ।
 (६) १ मा तुम्हारी रा तुम्हारी है मा तुम्हरी । २ मा बाबा बहेन मा
 बाब बहिनि ए बाबा बहिनि । ३ मा उमह मा बह ।
 (७) १ मा मा कह्युत ए कै तो । २ मा मा सेउ ए सी । ३ रा में से
 यहाँ और है ।

अर्थ—(१) कुमार (मनोहर) [तबान्तर] बीनों हाथ जोड़कर लड़ा हुआ और उलने
 कहा "पिता मेरी एक बिनती है । (२) यदि आयेस हो तो बिनती कर्क; पिता से वह बात कहूँ
 हुए कमिस्त हो रहा हूँ ।" (३) राजा ने कहा मैं आयेस है रहा हूँ और तुम्हारा कबल सिर पर
 पहन कर रहा हूँ ।" (४) तब बीनों (मनोहर और मनुमास्ती) ने मिलकर बात कयाड़ी । [उन्होंने
 कहा] 'कुमार ताराचद माँरी कुल का है; (५) वह गुरु-गरिष्ट मायनद का स्वामी है तथा पंडित
 करोपकारी और सरपण्ड है ।

(६) [और] तुम्हारी राजकन्या बचन के अनुसार मेरी बहिन है; (७) यदि तुम बहो तो
 बीनों की गाँठ जोड़कर उसे ताराचद को दे दूँ ।
 टिप्पणी—(२) आएसु < आयेस = आज्ञा । (३) परिछ < परिच्छ < प्रति + इप् =
 प्रहम करना । (७) उमार < उमाव < उप् + वाटप् = उपपाटित करना जोरना ।

सुनि के राय' कुंवर युल जाहा' । कहमि मोहि' तुम्हें पूछत' काहा ।
 रावम हनि' जय लिपड़' मजोरी । तेहि दिन नेउ' वह' चरी तोरी ।

जह तुम्हार^१ मन मानत अहा^२ । दह हाथ पर^३ तह म बहा ।
बोस छाहि^४ जब राज दीन्हा^५ । दुबो^६ बपाइ आइ पर कीन्हा ।
कंवर^७ जोतिरी सुरित^८ बोभाए^९ । रामि बग्न दूनो^{१०} ब गनाए^{११} ।
मोग बन्दुब मम^{१२} नवता ओ परिजन परिवार ।
पर पर बाज^{१३} बघावा^{१४} पुर पुर^{१५} मगल बाज ॥

प्रमाण—(१) १ रा = राज मा गय। २ भा मग बहा मा मग बाहा (< बाहा)
ए मग बाहा। ३ मा बहिष् मोह। ४ भा यह पूछहु मा इतर पूछहु ए
बाहि पूछहु।

(२) १ रा मा। २ रा भिष्ट, ए मीह। ३ भा महि मा ४ ए की।
५ रा तेहि मा ए बाह।

(३) १ मा ए जहा ताहार। २ मा आहा। ३ मा ए हाथ ये मा बिधाहि।
४ भा मा ए तहा।

(४) १ ए छाहि। २ ए दीन्हा। ३ भा दुबउ भा ए बई। ४ ए बाग।

(५) १ मा बुरी। २ मा सुरत। ३ मा बभाये। ४ भा भा दुहु की
(< क—भा) रामि मनि बग्न मगय ए रह व रामि बगमन वनाए।

(६) १ ए नष्ट बन्दुब जन भा नगर बुर ब मम।

(७) १ ए बाजेउ मा अनर। २ भा भा बहू दिय। ३ मा बाहि।

अर्थ—(१) [यह] सुनकर राजा ने कुमार (जयोहर) के मुख को देखा, और कहा
'मुझ मुख से क्या पड़ते हो?' (२) राजा को मारकर जब तुमने [पेशों को] अंजली में लिया (उसने
प्रिय लिया) उमी दिन से वह तुम्हारी बाती है। (३) जहाँ (जिसे) मुन्टारा मन मानता है (हो)
उसका हाथ पकड़ कर वहाँ (उसे) ले जा वहाँ (इस विषय में) मैं क्या हूँ (मुखसे क्यों पड़ते
हो)? (४) जब [इस प्रकार] राजा ने बचन छोड़ (दे) दिया बानो (जनाए और
मधुमालती) ने घर आकर बसाई की। (५) कुमार (जयोहर) ने दीप ही ज्योतिरी बनाए
और दोनों (पेशों और ताराबंद) के राग और बग मिलाए।

(६) लवत लोक (मजा बर्ग?) और दुहु बियों को तथा नृत्यों और परिवार वालों को
कार्यरिग लिया [मया]। (७) घर-घर में बघावा बजा और [राज्य में] पुर-पुर में मंगलबाज
हुआ।

प्रमाण—(१) बरी< बेरी=दासी। (२) बपा= बपाए< बडाए= बर्पाए=
अपुन बपवा हर्न मुख बाव। (३) सुरित<स्वर्ग। (४) माय<माय।

[४८९]

पमरा^१ बाज बिपाह जनाया^२ । मरगि मोमबाज मि पा ।।
र पर मगर बघावा बाजा । पुर पुर^३ मगल मम^४ गा ।।
रामवार मरगि जय आ^५ । बिगनि^६ बदनार बाई ।

ठासन आनि अनूप बसाम^१ । राम सभापति^२ सभ बसाम^३ ।
 वसि समा पसरी^४ जवनारा । जन जन आगे^५ सहस परकार ।
 मगर ओ^६ लोग राम ओ राने^७ पब^८ जवित जेवनार ।
 एक एक जन^९ आगे^{१०} सहस^{११} सहस परकार ॥

पाठान्तर—(१) १ रा पासर । २ भा भा बनाव ।

(२) १ भा बरियाली । २ ए नेवता सब ।

(३) १ ए बिबसेल ।

(४) १ रा बसावा ए बसावे । २ ए छमा लै । ३ भा लहा बैसावे ए भा लह बैसावे ।

(५) १ भा ए बैसी सभ (समा—ए) पसरी भा बैसि समा पसर ए बैसि सभापति सभ (वे पूर्ववर्ती अर्थकी) । २ ए या जान ।

(६) १ भा बामन ए भा बाँमन । २ या राजा । ३ भा पचा या पाँच ।

(७) १ भा या जना के । २ ए जाने । ३ या परे ।

अर्थ—(१) [बिबाइ] कार्य पैसा और बिबाइ सुचित हुअे तथा सोमवार को प्रयोगी का दिन प्रत्यक्ष (निर्धारित) किया गया । (२) मगर में सर-बन बसावा बसा, और [राजा ने राज्य के] समस्त पुरों और कस्बों [के नागरिकों] को आमंत्रित किया । (३) सोमवार को जब प्रयोगी या पई बिबसेल के स्थानार कराई । (४) अनुपम मिछावन लाकर मिछाय [ए], और राजा-बन तथा समापति-बन—सभ को बिठावा [बसा] । (५) [जब] समा बैठ गई, स्थानार कंपनी (पसरी पई) एक-एक व्यक्ति के साथे सहस्र प्रकार [का खाद्य पदार्थ] था ।

(६) मगर में जो [अज्ञा के] लोग, रामे राने [जाते] थे वे सब उस संज्ञानुत की स्थानार में [थे], (७) और एक-एक व्यक्ति के साथे सहस्र-सहस्र प्रकार [का खाद्य पदार्थ] था ।

टिप्पणी—(१) पसर < प्र + सु = फैलना । (२) बसाव < बसावन < बसावन = अन्मुख अपना हृदय वृक्ष बाध । पुर = छोटा मगर । पट्टन = महानगर । (३) जवनारि < जीवन-आरि = रक्षा । (४) पचामुत = दूध बही थी मनु और खरक का मिश्रित फल ।

[४९०]

जवन उठा लोग बहुराए । जन जम^१ कह पाम बसाए ।
 तहि पाछे^२ मम^३ गमन हुकार । आनि तो^४ मोड़ी तर बैसार ।
 ताराबंद^५ पाग बसाए । होम अगिनि माहुति परजाप^६ ।
 बाए कुंवरि आनि जिय^७ ठाढ़ी । जानहु चाँद चौरि के काढ़ी ।
 पमहि पडहि^८ कुंवर सउ^९ साई । नाँठि जोरि सठ फेरि किराई^{१०} ।

समुपत बरत^१ कुंवर गिय^२ पमे^३ धाका^४ हार ।

कुंवर पुहुप माभा गहि^५ अ बामिनि गिय सार^६ ॥

पाठान्तर—(१) १ भा जना जना मा जना जना ए जन जन।

(२) १ ए तेहि पाछ बहै। २ भा सब। ३ भा भा जानि ने छ जानि तो रा जानि मो।

(३) १ ए मे 'मै' और है। २ भा बजबारा।

(४) १ मा किही मै ए कीहु मै।

(५) १ भा पहहि मा पहही (<पहूही भाषी लिपि) ए पड़े। २ ग मो। ३ मा फर बरार्है ए फरी छरार्है।

(६) १ मा म यह शब्द नहीं है। २ ए गीब। ३ ए म 'मो' और है मा पर्मा। ४ मा मा मेलेउ ए मेला।

(७) १ मा कुंजरु कहु बसल कर गहि ए कुंजरु पुन मास कर गहि मा कुंजरहु पुन मास कुंहु कर गहि। २ मा मै बाबिनि (<गिब कारणी लिपि) मार (<सार भागी लिपि)।

अर्थ—(१) भूमीमार समाप्त हुआ और सोय बापस हुए (होने लगे) प्रदेस व्यक्ति को पाल दिलाए [गए]। (२) उसके (इसके) बाद समाप्त गजब (व्योमिषी) बुलाए [गए] और साकर सदनतर संवत् के नीचे बिगाए गए। (३) ताराचंद बीड़ पर बिडाए [गए] और हुबन की जगि में अष्टुतिराई बसाई गई। (४) [बर के] बार्हें कुमारी (बेनी) को साकर सदा दिया [गया] [को ऐसी लग रही थी] यानों बंधवा को औरकर उससे बिहाली गई हो। (५) कुमार (ताराचंद) से [संबंध] लगा (बोड़) कर बेनी के विषय में [संभावि] पड़े [गए] और [कुमार से] नांड ओड़कर उसे लाल करे डिराए [गए]।

(६) कुमार (ताराचंद) के यत्ने में लकुचते-उरते बेनी ने हार दाखा (७) और कुमार (ताराचंद) ने पुणों की आला लेकर बाबिनी (बेनी) के यत्ने में डाखी।

टिप्पणी—(१) जवन<धीवन=भाजन। (२) मारी<मह। (३) पार<पट्ट=कान पीड़ा। (४) (७) गिप<गिब<धीबा।

[४९१]

पान्न बंवाह^१ बाहि^२ पिमावा । मरद अमर^३ मम मन्नि गिमावा ।

मीनर भौ^४ याहिर बा^५ ओग । साबा^६ भीनिर^७ शन^८ पन्नेग ।

मन जानि तति ठाब^९ दगार्ह । बंवन अनन्नि बगा आ^{१०} ।

र गिगाग आनी^{११} बज बारी^{१२} । मृग मम ग व^{१३} यगागी^{१४} ।

पुनर पमठ बाप मन मोगा^{१५} । उपजा हुनर प्रपम मप बागा^{१६} ।

बासा^{१७} मानु म^{१८} परिहर बालमु^{१९} लाति बगा^{२०} ।

पुपग ओग^{२१} को^{२२} भा^{२३} मर निमर^{२४} को^{२५} जाइ^{२६} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा कुकुन। २ रा बिनी। ३ रा बजबाबिनि ए मैनी जग। ४ भा मन मदिर मा मज मरन ए मज बरिन।

(७) १ भा लाएउ मा मेन। २ ए भीनर रा भीनर। ३ ग ए मार।

- (३) १ ए मरिच मा मरिच। २ मा बीसो मा बीसो।
 (४) १ मा जानेमि, मा जाई, ए जाइ। २ मा डजबारा। ३ ए सै। ४ मा
 मा रस रै ए कै सै। ५ मा बीसारा।
 (५) १ मा कलकल सेठ कप जनसासा ए पलक पसेठ कापै वनसासा मा पुनक
 प्रसिद्ध कपिपठ सर सासा। २ मा उपजेठ हनु प्रथम सग बासा, मा उपजेठ हनु
 आपु सग बासा ए उपबा कुभी प्रथम सग बासा।
 (६) १ ए मोल। २ रा मे न गही हू। ३ मा बाकभू, ए बलभू।
 (७) १ मा कोरि भी ए कोट नाम। २ ए कै निर। ३ मा जो। ४ ए
 जाइ।

अर्थ—(१) कंठम और कुकुम बला (बेल) कर उन्हें विलबाया [पया] और उसमें मधु
 मिला कर समस्त भँवर (जयम-बूह) लिपाया [ववा]। (२) भीतर और बाहर चारों ओर
 भीलों (हीनलों) पर काम रैखी बरब लगाया [पया]। (३) उस स्वाक पर प्रम्या का कर
 बिछाई [गई] [मिल पर] कुमार (सारबंद) आनंदपूर्वक भाँवर बैठ।। (४) कुंवार कर
 के बलबालिका (पेमा) को लप्या [पया] और उसे कै (का) कर सुत-अप्या पर बिछाया
 [गवा]। (५) [हीनों के] लरीर में पुनक (रीमाँव) प्रसिद्ध कप और प्रसक्त [अर्थ
 प्रसक्त] हुए, [बब] हीनों को प्रथम बंम (प्रमाण) की बालना उत्पन्न हुई।

(६) बाबा नाम नहीं त्याग रही भी और बलभ (मिष) उसकी लालि कर रहा था। (७)
 [बला के लिए] कुंवर का जोर कोर (परकोषा) हो रहा था [अतः] कौन उसके [बुद्ध के]
 निकट जा पाता ?

टिप्पणी—(१) कुकुह < कुकुम = केसर। बाह < बाह्य = बलाया। (२) भीति < भित्ति =
 दीवाल। एय < रक्त = लाल। पटोर < पटोह < पट्ट + दूर = रेशमी बल। (३) सैम < सवन
 = सम्बा। (४) बारी < बाधिका (५) बाल < बास = बाधना। (६) लालि < लालि [३]
 = बाटु, सुसामद। (७) निर < निकट।

[४९२]

उठा कोह^१ कुनि^२ मम मय बापा^३। माम डील^४ भा^५ नाम^६ बियापा।
 बर^७ समान गही जो बाला^८। मै रवि उही सोम^९ जो पाका^{१०}।
 कुंवर पवरि कर^{११} जगुरी^{१२} बापी। सयन^{१३} माहि^{१४} बामिनि अनु बापी।
 बहुरि जो कर कुब मर्यत गए^{१५}। सकुचि ठ सांस उसासठ भए।
 नकल मेह नो^{१६} जोबन अंगा। रनि बिहानि सुह^{१७} रति रगा।

राज कुंवर नह पंखनी तिल तिल सुकल बिहाइ।

पमा बिहइ बियाकुलि^१ मूर मूर बिहसाइ^२॥

पाठ्य—(१) १ मा उठउ बयान मा उठउ बाबा। २ ए रा पुनि जो। ३ मा
 बीपा (< बापा नामी लिपि)। ४ रा ए, मन डीका। ५ बरा सभ न
 बी। ६ रा ए बात।

- (२) १ मा भरर। २ ए ग बाह (बाह—ग) बा ध्याता (दे पूरवर्ती करण का तुक)। ३ ए भी रवि उई भा भी रवि उई। ४ ग मूर ए मार (<मूर फ़ारसी लिपि)। ५ ए भी बाता रा हा ग गाता।
 (३) १ ए कपरि की। २ मा वमव। ३ भा पग। ४ मा भा ए म्याम। ५ मा जग।
 (४) १ भा मगन भाए, मा मंगन मयेउ। २ मा मनुवि मारी मरिन मयेउ भा मनुव मंग मर मरिन मए ए मनुविन माग उमाविन मये।
 (५) १ ए ली। २ ए कुमी।
 (७) १ मा भा बिमानी ए ध्याकुनी। २ मा ए मूर मूर (मूर—ए) बीलमाह भा मूर मूर बिम्या।

अर्थ—(१) [बामिनी का] कोष (रोष) समाप्त हुआ और तदनंतर [उसके शरीर में] ममय (काम) द्रवित हुआ; मान प्रियतम हुआ और काम ध्याप्त हुआ। (२) जो बाला [मान वय] वय के समाप्त हो रही थी वह [काम] पूर्ण के उदित होने पर चंदमा और वाला [बाली] हो गई। (३) [जब] कुमार (ताराचंद) ने उसके हाथ की उँगली पकड़ कर बर्बाद कर इस प्रकार कोष उठी मानों बादलों के बीच में बामिनी [रूपित हुई] हो। (४) तदनंतर उसके हाथ जब [बामिनी के] कुलों का मर्दन करने लगे उन्होंने मनुविन (सिधुड़ी-रमित हुई) श्वालों को उष्णतित कर दिया (काम-वैय के कारण श्वालों का वेग बढ़ गया)। (५) मरल स्नेह का और शरीरों में मयदीवन का [अतः] रजनी होने (रंजित) की रति-रस में ध्वनीत हो गई।

(६) राजकुमार को रात्रि तिल-तिल मुग में ध्वनीत हो रही थी (७) [दिगु] वेमा बिट्ट (प्रथम समागमजनित कैवला) से ध्यापुत होकर 'सूर्य' 'सूर्य' चिल्ला रही थी (सबेर होने की आवाज कर रही थी)।

टिप्पणी—(१) कोह < बाप = आवाज राग। (४) भी < जउ < पग = जब। (५) रति < रसपी < रजनी = रात्रि। (७) मूर < मूर्य।

[४९३]

रनि लु^१ सुग मज^२ बिगानी। भोर मगा ए आद^३ पानी।
 तागप^४ बर^५ उरि आद^६। मधु माननि पमा ए आ^७।
 पूछ^८ मगा मल का^९ मानी^{१०}। बगै भा पिठ मगम गा^{११}।
 गम कहा पूछि म गने^{१२}। तु^{१३} ममान रि^{१४} मामउ^{१५} मनी^{१६}।
 मा बिठ^{१७} हम हु^{१८} निमि निगनी^{१९}। मो रिछ^{२०} ओभि म आर का^{२१}।
 दुद मिय यि^{२२} जा निरया^{२३} बेन्मि मनहा बग^{२४}।
 गा बगहा मरि^{२५} आव^{२६} मगि ल^{२७} आभि का^{२८} ॥

पारंगत— भा म इन छं का दाहा गया आर्य छः की बर्षादि की ?।

- (१) १ मा दुध भा ए ली। भा मूर ए भा मूरि। ३ ए भा मनी आ^४ मी।

- (२) १ ए बाहर। २ मा षठ। ३ ए आई। ४ ए आई।
 (३) १ मा मा मुछीसि ए पूछी। २ मा मा कहहु बहू। ३ ए मोही। ४ मा मे यह बरन नही है, ए कैसे बी पिज सी रंग तोही मा कैसे मा रंग पिय सों मोही।
 (४) १ मा मे यह बरन नही है ए पेमा पहे ओ पूछि मैं रही। २ मा मुम्ह, मा तुम्ह ए तुम्ह। ३ ए कछु। ४ मा मांस ए रा मो सी।
 (५) १ मा मुम्ह, ए कछु। २ ए हमहि निशि निषहा मा हम छु निशि निषहा। ३ मा तुम्ह मा सपि ए सली। ४ मा काही मा ए कहा।
 (६) १ मा पुछु जिज चित ए पुछी बीज बीज। २ ए मे यह सख नही है। ३ ए नीर बह। ४ मा सपने सबे येकटी ए सली है नी एकट रा जेलसि सनेही कर।
 (७) १ ए कैसेहु मा। २ मा मे यह 'बनी' नीर है। ३ मा मे ए हे।

अर्थ—(१) होमो (रंघसि) की रात्रि मुक्त-मय्या में व्यतीत हुई। सबेरा होने पर [वेमा की] सखियाँ [मुम्ह बीजे के लिए] पानी लाई। (२) सातार्चक उठ कर द्वार पर पया [तो] मधुमाञ्जरी वेमा के बात आई। (३) वह पूछने लगी 'है सली मुसके सख कछो प्रिय से तुम्हारा संवन (मिलन) किस प्रकार हुआ?' (४) वेमा ने कहा " [जब] मैं तुमसे पूछती रह गई थी तुमने वह पायाँ मुमसे कुछ भी नहीं बताई थी। (५) जो-कुछ [बतल] हम दोनों में निजी यह मुक्त नीर बिह्ला से बहने में नहीं आ रही है।

(६) लोही कांस के साथ विकास कर जो बीबी (रंघसि) में जो कुछ निजी (हुई), (७) बह, हे सली, इन बिह्ला से कहने में किसी प्रकार नहीं आ रहा है।"

टिप्पणी—(१) रैमि < रयनी < रजनी = रात्रि। सेव < सय्या। (२) बार < वार < द्वार।

(६) कट < कान्ठ = प्रिय वरि।

[४९४]

दूनी राज कुंवर^१ रह^२ हिली। सखहि हसहि एक सख^३ निमी।
 दुबो रहहि सखत^४ एक सगा। नी ओवन तन बरित अनगा^५।
 राज सुख ओ ओवन बारी। निमित्त^६ न विछरहि^७ वेम पियारी।
 राज कुंवर दूनों अस मिल। जस वास प्रीति क हिल^८।
 हिये^९ प्रीति गुन कही^{१०} न आई। जिमि न ससि कुमुदिनी सोहाई^{११}।

मधुमाञ्जरी ओ वेमा राज कुंवर^१ दुबो^२ नीर।

पावस रिनु^३ गुन बेरसेहि^४ बहुरि घटा जग नीर^५ ॥

पाठान्तर—(१) १ ए राजकुंवर (< कुंवरि प्रारम्भी निमि)। २ मा हिम - ० है (< हिय कारली निमि)। ३ मा ए संग।

(२) १ ए दूनी रहै हेमत। २ मा अनग ए अनगा।

(३) १ मा निमिनि। २ ए बिहुरे।

- (४) १ ए मअर्पाणी है मिने बुझी एक गय मीना। तिमि बाटी तिमि मो बा मीना।
 (५) १ ए होय। २ बहू (< बहू करमी तिमि)। ३ ए तिमि मीनि कुमुरीनि मिगार्ह।
 (६) १ मा राजकुमरी (< कुमर करमी तिमि)। २ ए दुठ।
 (७) १ ए बाल। २ मा बग्गेहि ए बल्गहि। ३ मा पुनि जा पटा जग नीर, ए पुनि मरजा पन नीर रा. पुनि दे- परजि पन नीर। ४ मा मे अर्पा तिमो ४ ठबा ५ गही है और बहू पर निम्नतिगिन पचिनया और है —
 कुनि पयै माठिउ मपि हैरी (—मय मगी हैवारी—ए)।
 केर पाइ पीज पा- बेरी (एक बार मुनि बाद मा नारी—ए)।
 अनि मयग (मु बरि—ए) पुनवन (कपवनी—ए) बुमारी।
 नाउ (भाव—ए) मुरगा जावन बारी।
 जानिनी जाइव मासुरे वाउ तिम मगन जात्रि (जानिम मसुर कां तिम मार गंग नाहि—ए)।
 जा मउ बरवी बाग जीज बगी डअह पुनि बिजिन बिगल (जाया बन्द लात्र बिउ करी यह पुनि बीगहा ध्याहि—ए)।
 मय जगन बी (कै—ए) मालव गही (गारी—ए)।
 कुमर मुझीरवही (मुझिगई—ए) बिह गारी (बोना ध्यारी—ए)।
 जानिमि बुझी (जानेमि दुनी—ए) मय हय (मिमि—ए) गहरी।
 दुस मुग एक माय (मय—ए) निरबही।
 बाळ मपानिनी (मबानी—ए) जावन बायी (बाही—ए)।
 बी दुनी एन दुस बी पायी (दुनी एक बाय बी छाही—ए)।
 ए म मे पचिनया मयग एउ के रूप म भाहि है तिमम इन पचिनया के बीच म जाया हुआ बाहर अठ म जाया है। या म निर्पागिन पाउ बी अर्पाणिमो ४ ५ जो गही है वे हागिए बी नुम व बारम लगी मगनी है।

अर्थ—(१) दोनों राजकुमारियाँ (बम्ब और मधुमासली) [आपस में] हिन्दी रटनी की वे मिलकर एक-साथ ललती-हँसती थीं। (२) दोनों तरह एक-साथ रटनी थी दोनों के मधुपोवन मुरम घाटी में काम का उद्यम हो गया था। (३) [उन] बागिचों में जो राज-मुग [बाग] था तथा पोवन और वे प्रेम-प्रियाएँ [बरखर] एक साथ के मिष्ट [भी] नहीं जगमग होती थीं। (४) दोनों राजकुमार [भी] ऐसे मिल गए थे जैसे वे वास्तविकता की प्रतिनि से ही जगमग से हिले हुए हों। (५) [बरखर] उनके हृदयों में जो प्रीति की बह बहो नहीं आ रही है वे शक्ति और मुरर बुझिनी जैसे हो रहे थे।

(६) मधुमासली, वेवा और दोनों भाई (प्रातः मुग्य) राजकुमारों के (७) बाग (बगी) धनु के मुन का भोग दिया और तदनंतर [रात्र का आगमन होने पर] मंगार के जल [का आबिरण] पहना।

श्लोका—(१) बागी < बागिचा। (७) बागम < प्रातः = प्रातः व मु।

पावस गा^१ दुह^२ योग बेरासा^३ । रात^४ कुबार सोहिस^५ परगासा^६ ।
 भएउ^७ अगास सुभर^८ निरमसा । सूर सहुस^९ मसि सोरह कला^{१०} ।
 सिमिटे^{११} मोष गगल अत^{१२} आहे । बाहू भए^{१३} अल हर^{१४} आगाहे^{१५} ।
 बमि^{१६} दुह मस^{१७} कीन्ह बिभारा^{१८} । नीर घटा जग भा उजियारा^{१९} ।
 कै मत हुवी^{२०} राज^{२१} यह^{२२} आए । चित्रसनि ग^{२३} महल^{२४} बोलाए^{२५} ।
 हुवी^{२६} कुबर कर जोरि कै^{२७} बिनसी ठाठ^{२८} कराहि ।
 कहिन्ह^{२९} दह जो^{३०} अग्या^{३१} दस अपन^{३२} कह जाहि ॥

- पठान्तर—(१) १ भा मा यत। २ ए जा। ३ मा बियासा ना बिलासा। ४ भा हुत मा ए रिनु। ५ मा सोहिका ए सोहिव। ६ ए कबिलासा।
 (२) १ मा भडा ए जी। २ मा अकास सुभन (< सुभर—नामरी लिपि) ए अकास सुभ। ३ मा सारस हुवहु ए सुभर सहुत। ४ मा सिटी सोरह। भासा ७ जो सोरह कला।
 (३) १ भा सीमिटे। २ मा अत ए अ। ३ ए सी अबाह। ४ रा अल पल मा अल पर। ५ मा अलपहे।
 (४) १ रा बैलि। २ भा दुबहु ए हुनी। ३ मा मस ए मति। ४ भा बिभारी। ५ भा अब रिनु उजियारी ए जो रिनु उजियारा मा अब रिनु उजियारा।
 (५) १ ए मति हुनी। २ मा रावे ए राह। ३ मा यहि। ४ ए बाई (आए—कारसी लिपि)। ५ मा भा भुनि ए जी। ६ रा सहुत। ७ ए बीलाई (< बीलाए—कारसी लिपि)।
 (६) १ ए हुनी। २ मा भा राय मह। ३ ए ठाड़ि।
 (७) १ भा कहिन्ह। २ ए जी। ३ भा अवस ना आवेनु। ४ मा भा ए अपन।

अर्थ—(१) बीबी (राजकुमारी) को वापस जोय-बिलास में गया लखनंतर रहत (रैंबीके) बहार [मात्र] में गुहावना प्रकाश हुआ। (२) आकाश घूट और निर्मल हो गया सूर्य तल्ल कलाओं-किरणों तथा चंद्रमा लौकह कलाओं का हो गया। (३) आकाश में त्रिलो जी बारन से के सिमिट [कर पीछे ही] गए और [बहने के] पहरे अल-न्याम (अलासव) बाहु [मले] हो गए। (४) [सहस्रतर] बीबी [राजकुमारी] ने बैठकर यह अर्थ बिचारा कि [अब] अल घट गया था और अल प्रकाश-मुक्त ही गया था। (५) बीबी अर्थ (बिचार) कर राजा के बात आय, और चित्रलेख आकर बीबी को बहुत [के भीतर] सुना के गए।

(६) बीबी बुलाए हुए जीह कर और जाड़े ही कर [बिचारे के] बिनसी करने लगे। (७) उन्होंने कहा, 'यदि तुम जाना हो, तो हम अपने देवी को आये।'।

नियमा—(१) पावन < प्रावृत् = बर्षा ऋतु। बराम < बिनाम। माश्व < माश्वि < माषावृत् = मुष्मावृत्। (२) मुमर < मुमर < मर = निम। मूर < मूर। (३) बरगाह < बरगाव = गहरा। जलहर < जल-स्वल = जलाशय। पाह < स्वाप। (४) (५) मन < मन = विचार। (६) बर्षा < भासा।

[४९६]

हृग्य हाइ जो^१ आप्मु^२ पावहि^३। सुन्नि तावि^४ पम्पान^५ बगबहि^६।
 अर्षा^१ होइ तो गोन बराई^२। अपने^३ जनम भुम्मि बह जाई^४।
 गोन कर बर माव बराई^५। मधुमामनि बह माय बराई^६।
 बलिय^१ बगि निन बलब म लाइय^२। मना पिमहि^३ मर जायन पाय^४।
 उन्ह^५ सब^६ बरिय तहि^७ बरा। चा^१ मनाइम जिउ मिह बरा।
 त्रम भिनुमारे^२ दीपव पियरि धप जम भास^३।
 तम जीवन^४ उन्ह^५ बरा^६ मांम पाय निन भास^७॥

पात्रान्तर— ७ म यहाँ उपयुक्त द्वितीय अर्षाकी वा दूसरा बरन तथा तृतीय वा चतुर्थ द्वाका उठे हैं और उपयुक्त चौथी अर्षाकी नहीं है।

- (१) १ मा भा मया यौ ॥ मया दे। २ मा रा अया। ३ ॥ पायी। ४ मा भा ॥ मवि। ५ मा ए प्रम्पान। ६ ॥ बरायी।
- (२) १ रा ॥ अया। २ भा बरायी। ३ भा आरया। ४ भा आरी।
- (३) १ मा भा विन उगई (उगई—आ) आया (आया जो—आ) पायी (पायी—आ)। २ मा भा विन माय विमि चरन उचारहि ॥ मधुमामनि ब मग बराई।
- (४) १ मा मे यहाँ बालक बटा हुआ है। २ मा बलबन ला-आ भा विमम म लाई। ३ मा रा ए माय पिता। ४ मा मनु जीवन पा-आ भा मनु जीवन पात्र रा मनु विमम पाई।
- (५) १ मा पिहरी की सेवा ॥ उगरी सेवा। २ भा बरिय तहि रा बराई तहि भा बरिई बर ॥ बरि उठ। ३ मा भा जीवन ॥ जीउग। ४ भा मदे बिह बरा भा मवि उठ बरा।
- (६) १ ॥ भिनुमारे। २ भा पित्रा (< पित्रि) पुत्र। ३ ॥ गौह।
- (७) १ मा मन जवन ॥ मग जीउग रा मम जीउ। २ ॥ मयह इत् ४/१। ३ मा बरे। ४ ॥ गौह।

अर्थ—“(१) हर्षे हर्ष हो यदि मुग्धाका आदेश पाएँ, और मुक्ति देणकर [अथवा] प्रभाव कराऊँ। (२) यदि आत्म हो तो गीना बराबर हम अपनी अन्ध भूमियों की आँ (३) [और] गीना करने की तैयारी बराबर मधुमामनी को माय प्रभाव कराएँ। (४) [इसका विचार है कि] हम धीरे धीरे और बिनाब मलमले मिलने कि लजब है माना-विना को जीवन वा भा (५) और

इस बेला में उनकी सेवा करें [व्याक्ति] उनका जीवन (जीवन) इस समय सत्ताईसवें (अंतिम) वयस का संक्रमा हो रहा है।

(६) जिस प्रकार महाकाव्य का बीपक होता है और संघ्या की पीली धूप होती है (७) उसी प्रकार उनका जीवन [बचों में नहीं] यहीनों पल्लवारी और रिलों [की अवधि] में है।

टिप्पणी—(१) हुरक < हुर्य। प्रस्थान < प्रस्थान। (२), (३) गीम < गवन < ममन = बच्चा का घर के घर जाना। (४) पाक < पक्क < पक्क = पक्कह रिलों की अवधि।

[४९७]

गोन वचन सुनि गिप चुप रहा^१ । तरहुड^२ मांघ पुहुमि^३ तनु बहा^४ ।
 रहा मचकि^५ दह का जिउ गावा^६ । पलक न पर टकटका^७ सागा ।
 जिउ सरीर हुत^८ गएउ उबाई । बडो बार ऊपर^९ सुभि आई ।
 कहन्हि^{१०} राय बिनम यह आई । गोन करि ग^{११} बिननि कराई^{१२} ।
 बी आएसु तुम्ह आफहु^{१३} राजा । रू गौनिह आपन^{१४} सभ^{१५} साजा ।
 बिनसनि चित बिता फुनि मन कीन्ह बिचार^{१६} ।
 बी सवत^{१७} दुहिता रह मरक^{१८} अल सो बहुरि^{१९} परारि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा गुनत बीन चकिउ होइ रहा। २ रा तरहुत। ३ रा मुमि।
 ४ ए को बहा मा तेउ बहा।

(२) १ मा ए मचक। २ मा एहु का बीम जगा ए के नाय न कावा।
 ३ ए टकटकी।

(३) १ रा सो मा हुते ए ते। २ ए ते। २ मा पर बी मा बार मै जिउ।

(४) १ मा बहेह रा बहेमि ए कहा। २ मा केरि न ए करि कर।
 ३ ए छान सबाई।

(५) १ मा भाऊ ए आकी। २ मा रा मवनहु अपना ए बीमहु अपने।
 ३ ए बिन मा सब।

(६) १ मा फुनि मन बहनु बिचारि, रा पुनि मन कीन्ह बिचार।

(७) १ मा मन ए सतति। २ मा माइके ए मे यह सख नहीं है।
 ३ ए अल बहुरि मा अल मो भी ग अवहु बहुरि।

अर्थ—(१) पीने की बात गुनकर राजा चुप रहा और फिर पीने की ओर [करके] मुन्नी की ओर देखता रहा। (२) वह चकिउ हो रहा कि नता नहीं यह क्या बरगपात [उसके] बीम पर हुआ उसकी पलकें नहीं गिर रही बी टकटकी लग (बैठ) गई थी। (३) बीम बसके सरीर से उड़ गया था और बड़ी बेर बाव उसे बैत हुआ। (४) [तब कुमारी ने] कहा आज बिकमराज के पास जाऊँ और आकर पीने की निमती करें। (५) यदि, हे राजा आप आवैस बें तो हम अपना सब छान केकर [पर] पसन करें।

(६) [यह गुनकर] बिजलेम के बिल में बिता हुई [बिनु] तत्पतर उन्होंने मन में बिचार

दिया (७) "यदि सर्वत्र ही दुष्टिता मायके में रहे, फिर भी जंत में वह कराये की ही तो [हीनी] है।"

टिप्पणी—(१) पुद्गलि < पुष्पी। (२) बचकि < बचिज। माज < गज्ज < गज्जं = गज्जना मड़पड़ाना बज्जगान हाना। (३) बार < बैला। मुपि < मयि = बैलना। (४) आरु < अपरु = देना। (५) मगल < मगल = निरमल।

[४९८]

कहि^१ रम बचन बुंवर बुहाराई । आपु राय बिक्रम पर आई ।
राजा मउ^२ ग^३ बहिन्हि^४ बुझाई । बुबरन्ह गोन क^५ बिनती लाई ।
मुनि यह बात^६ त्रिपति चुप^७ रखा । पुनि^८ अम चित्रमनि^९ मउ^{१०} कहा ।
कहि^{११} दिन बिधि दुहिना ओगारा^{१२} । तहि निज जानहु^{१३} भई पगारी^{१४} ।
अब राग^{१५} कर नाही बाजा । ग माजहु उन्ह गोन कर^{१६} माजा ।
चित्रमनि मन मारे^{१७} बिसमो महिम^{१८} पर आइ ।
बहिन्हि आइ बुबरन्ह मउ^{१९} कहा जो बिक्रम रा^{२०} ॥

पाठान्तर—(१) १ ए कहा।

(२) १ रा ए मों। २ मा ए मों। ३ रा बहेनि। ४ मा आ गजन की बिनति कराई ५ गोन क माज कराई।

(३) १ ए बाच। २ मा आ अचर मुप ए अचर भै। ३ रा ए पुनि। ४ ए चित्रमन। ५ मा मों ए मों रा मा मा।

(४) १ मा बिहि। २ ए जा निज बिधि हम बैरवा आनी। ३ मा आ नि (नेहि—आ) दिन हम जानी। ४ आ बि पगारी मा में बापय बना है। ५ ए ता निज दुग परा महि जानी।

(५) १ मा रनिवे ए रनिवे। २ मा आ न माजहु की (उर—आ) मन कर (बहु—आ) ए मी माजहु आने निज रा अब माजह मी गोन।

(६) १ ए मारे। २ मा बिसमारा ए बिमै मी आ बिसमारे।

(७) १ मा बहिन्ह आइ अब बुबरन्ह कहा जो बिक्रम राग ए कहा आ बुबरन्ह मी राजा बिनती बगाइ ए बहेनि बुबर मा राजा बिनती अपन बना।

अर्थ—(१) रम (प्रेम) के बचन वह वर पुकारों की [चित्रमेव मे] कारण दिया और बाद स्वयं विजयराज के पास आए। (२) राजा ने आकर उन्होंने लज्जा कर कहा 'पुकारों के पीने की बिनती लपाई (की) है। (३) यह बात सुनकर राजा (विजयराज) जब रहे लज्जनर उन्होंने चित्रमेव से इस प्रकार कहा, "(४) जिस दिन विद्यापति ने कण्ठा की जगह दिया, उनी दिन आगे बि बज्ज की हो गई। (५) अब उन्हें रगने (रीजने) का कोई प्रयोजन नहीं है; कारण उनके पीने का साज करो।"

- (६) बिबेक मन मारे हुए (उदात्त मन से) और विस्मय (विषाद) के साथ घर जाय
(७) और उन्होंने कुमारों से यह कहा जो विक्रमराज ने [उनसे] कहा था।

टिप्पणी—(६) जिसमें < विस्मय = विषाद।

[४९९]

'सुनत बात बाहर' कोइ^१ कहा । उइ सो जाइ मधुरा सउ^२ कहा ।
रही अचकि^३ मधुरा सुनि बाता । कहसि^४ काह^५ यह^६ भएउ^७ विधाता ।
मुइउ^८ रोइ जब^९ एकस^{१०} हरी । अब यह^{११} गाव^{१२} कहाँ सउ^{१३} परी ।
अब सो बिछुरन मा^{१४} मोहि भारी^{१५} । वरु न विपाहिउ^{१६} रहसि कुमारी^{१७} ।
नन आसु भरि मधुर रोवा । कहसि मरनहु^{१८} कठिन^{१९} बिछोवा ।
प्रथम बार^{२०} राकस^{२१} हरी मरई^{२२} जानि करतार ।
अब बिछुरे^{२३} नहि मिलता^{२४} जियतें महु^{२५} सयसार^{२६} ॥

- पाठांतर—(१) १ मा मे इसके पूर्व निर्धारित छ ५१५ की अपांक्षियां १—४ और है यक्षि
के कहा भी उसमें आई है। २ ए बाहर। ३ मा कोइ ए भा केउ। ४
मा येते वै मधुरा सउ वै ए मा तिन्ह वै कै मधुरा सी।
(२) १ मा ए अचक। २ ए कहेउ। ३ मा ए कहा। ४ ए जी। ५ मा
भउो ए जी।
(३) १ ए मुई रोइ जो। २ मा अब इह ए अचक। ३ मा कहा सै ए
कहवां सी।
(४) १ ए मे यह छव्य नहीं है। २ ए जी। ३ मा मा बिछुरन केर मोहि
हुल भारी। ४ मा न बिहगित मा न विमहविउो ए न ब्याहनी। ५ ए
रहती भारी मा ए रहत कुमारी ए रहति कुमारी।
(५) १ मा हुते ए मे यह छव्य नहीं है। २ मा कठन (< कठिन कारनी
किये)।
(६) १ मा जा प्रथमहि जब। २ मा न तेहि^२ जीन है। ३ ए मरै
(< मरई^३ करती किये)।
(७) १ ए बिछुरे मा बिछुरल। २ मा मा हुते (हुत—मा) लाही निम्न
ए मा मिलता। ३ मा जीअए कै ए एहि जग मा जियत। ४ ए
मा नतार।

अर्थ—(१) बाहर कोई [उत्त] कार्ता को पुन रहा था तो उसने जानकर मधुरा से उसे
बताया। (२) मधुरा [इत] कार्ता को पुनकर कथित हो रही और उसने कहा "हे विधाता
यह क्या हुआ? (३) अब [वेनी को] रासल मे हर लिया था [तभी] मैं रोती रोती मर गई
थी अब [पुन] यह क्या कहाँ से पिरा? (४) अब मुझे [वेनी से] अलग होने का भारी
हुल हुआ; इसी अलगा रहता यदि उसका विवाह न किए होती और वह पुकारी रहती। (५)
मेरी मैं आसु भरकर मधुरा की पत्नी; उसने कहा "बिछोह करके से [भी] कठिन होता है।

(६) पहली बार, जब उसे रास्त में हरा या उसे कतार में लाकर मिलाया (७) सब [की बात] जोरित (जीवन) में इस सतार में [उससे] मिलना नहीं [होया]।”

टिप्पणी—(४) बुझारी < कृमारी। (७) जियन < जीवित।

[५००]

मनि कवरिहू^१ घर गोम बसावा^२ ।^३ भए दुहु रिग घर बिममा^४ ।
 मुनतहि पात छप मजरी । भइ^५ अल मुरछि भुद^६ परी ।
 बिप्रम राय बसि^७ ममुभाब । धिय रि रह जमु^८ नहर पाब^९ ।
 ससुरे धिय^{१०} बर^{११} होइ^{१२} निरबाहा । मउ^{१३} बाब म धिय बह^{१४} आहा^{१५} ।
 नन मर^{१६} जल बित्त उदामा । गइ^{१७} रानी मधुमा^{१८} पागा ।
 मधुमा^{१९} मोर^{२०} रानी बह बान ममुभा^{२१} ।
 बुबरि बलिहू तहि नम बह^{२२} जहा मउ^{२३} कोउ नहि आद^{२४} ॥

शङ्कातर— भा मे उपर्युक्त अर्थान्वितां ३ तथा ४ परस्पर रचानान्वितां हैं ।

- (१) १ मा बुझरह । २ ए अवाग रा बुझावा मा बसा मा बसाइ । (<बुसावा) । ३ ए मुनी बुझर बर घौन अवावा । ४ मा मउ दुजह निग ए मो कृती रिग । ५ मा बिममाइ ।
- (२) १ ए बी । २ मा भा मुरछि महि ए मुरछावन ।
- (३) १ रा बीनि मा बीमा । २ ए बी के रहे जम । ३ मा पा— ।
- (४) १ ए मसुरे पी । २ मा भा ब । ३ ए हो । ४ ए मरे । ५ ए बी कर । ६ मा जहा ।
- (५) १ ए बी । २ मा भी ।
- (६) १ ए रा बी भा ब । २ मा बाणि रिपे मर मा भा बरे बाणि हिय मा ए बहा बाण बन मा ।
- (७) १ मा बुझरी बनीहू मुग देम ली मा ए बुझरि बलिहू तहि देम ब । २ ए जहंगो भा जह नि रा जहा । ३ मा बाउ मा टिरि मा भा बाउ न मा ।

अर्थ—(१) बुझारियों के बीने का बुझाव बुझकर दोनों राजपराने बिचारपूर्वक हो गए । (२) [मोने को] बाण मुनते ही वपर्वजरी अचेत हो गई और मूर्छित होकर जूबि घर गिर पड़ी । (३) बिचमराज बैठ कर उसे समझाने लगे “बुझिना क्या जगम (जीवन) भर मायके में रहने वाली है ? (४) बुझिना का निर्वाह लगुराज में होना है मायके में बुझिना को [कोई] कार्य नहीं होना है ।” (५) मेरों से आंगु बरे हुए और उदाव बित्त से रानी मधुमाक्षी के बाण गई ।

(६) मधुमाक्षी ने रानी बाण समझा कर चहने लगी “(७) है बुझारी, मुन जब उन देग को बनी जहा मे [लीटकर] कोई नहीं आया है।”

टिप्पणी—(१) साह < सह < सव्य । विसमाधा < विदिमत् = विपाद-भूरित । (१) (४)
मिय < मुहिय ।

[५०१]

रूप मजरी पमा राई । मधुमासति क सय^१ मसाई^२ ।
मधुग^३ दुबो^४ नन भरि पानी । आई जहां^५ कुंवर^६ औ^७ रानी ।
जागी धियन्ह^८ दह^९ उपवसा । पीय^{१०} पल्लव^{११} तजि कुटुब^{१२} बिदसा ।
तुम्हाहि नाह^{१३} से सेहि भुं^{१४} जाइहि^{१५} । जहां^{१६} हुते वहरि न कोऊ^{१७} आइहि^{१८} ।
जलिहि^{१९} नाह^{२०} से^{२१} तुम्ह^{२२} परदेसा^{२३} । जहां^{२४} न पारव^{२५} केहु^{२६} सवसा ।
कोनि^{२७} भाति हम राखव तुम्ह^{२८} बिछरे^{२९} बट जोर^{३०} ।
अब सो^{३१} दवस तुह^{३२} चारिमह^{३३} स^{३४} गौनिहि तुम्ह^{३५} पीठ ।।

- पाठांतर— मा ए मे उपर्युक्त पाँचवीं अर्धश्लोक के चरण परस्पर स्थानांतरित हैं ।
- (१) १ मा बुलाई, ए राई । २ मा मा. ए सन । ३ ए बीसाह । ४
(२) १ रा मनुई, ए मनुरे । २ भा रोनी । ३ मा कही जाहा । ४ ए कुवर ।
५ मा बी ।
(३) १ ए बिम को । २ ए देन । ३ भा भा कहिणी ए कही ।
(४) १ मा तुम्ह कह नाह उहा से जाइहि, ए जीहि नाह वहां से जाइहि । २ रा
जह क सवेस न कोऊ से (तुम परवर्ती अर्धश्लोक), ए जहां क सवेस न कोई
से । ३ ए जाइहि ।
(५) १ भा जली । २ मा जा कैद । ३ मा मा सेहि ए राहि । ४ ए बिदेसा ।
५ मा बिमव ए जहां केर । ६ ए पाइव । ७ मा कबहि मा कबहु ए
मे यह मय्य गही है ।
(६) १ भा अबनि । २ ए तुह बिछुरत से पीठ (तुम परवर्ती चरण का तुक) ।
(७) १ मा ए जो । २ ए मो । ३ मा कैद । ४ ए तुह ।

अर्थ—(१) कल्पवृक्षी ने पमा को बुलाया और उसे मधुमासती के साथ बिठाया । (२)
मधुग [बी] दोनों ने जो मैं जाँच भर कर जहाँ मा गई जहाँ कुजारिया और रानी (कल्पवृक्षी)
की । (३) वह दुहितियों को उपवेश देने लगी, 'हे दुहितियों, तुम कुटुब छोड़कर बिदेस जा रही
हो । (४) तुम्हें तुम्हारा पति पल भूमि (देस) की से जायया जहाँ से लौटकर [अथवा पुनः]
कोई नहीं जायया । (५) तुम्हें तुम्हारा पति लेकर परदेस असेवा जहाँ [का] संकेत हम किसी
प्रकार न पाएँगी ।

(६) तुम्हारे अलग होने पर हम किस प्रकार सरीर में जीव को रक्त पार्यी ? (७) अब तो
ही-बार दिनों में ही तुम्हारा मिय (बसि) तुम्हें लेकर जायया ।”

टिप्पणी—(१) राय < रायप् = बुलाया । (३) पीय = दुधिय । (४) नाह < नाव = पति

[५०२]

माद मय करब^१ चिन साए^२ । जनि डोन्^३ मन^४ दहिने बाण ।
महा दुष्ट अति^५ पुरुष क^६ जाती । बिा पग्गित^७ रहई^८ नि गनी ।
करिहु मय^९ दिन जाहिहु जसे^{१०} । मगरी रनि पा^{११} पापिहु लमे ।
जो धरि^{१२} बाह ओम्हारिहि^{१३} मगा । आलरि^{१४} मज सप^{१५} मानिह^{१६} रगा ।
औ पिय सत्र^{१७} बहु करिय न मानू^{१८} । करियइ मान प्रीति अनुमानू^{१९} ।
जइ^{२०} धनि अपन कत सत्र^{२१} मानु कीन्ह^{२२} अधिवाइ ।
तिन्ह^{२३} धनि साई^{२४} आपना सोतिह दीन्ह^{२५} बना^{२६} ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा भा सबा (सव—भा) कहेहु ॥ सेवा करब । २ मा साय ॥
सायें । ३ मा जानि जो ली । ४ ए चिन । ५ मा बाय ।
(२) १ ए बा । २ मा की ए क । ३ ए परगन । ४ मा रगिह मा रगिह
ए रहै ।
(३) १ ए कहेहु सेवा । २ मा बीनी । (< बीने पारंगी लिपि) । ३ मा पाऊ
ए पाड । ४ ॥ बायब । ५ मा बीनी । (< बीने पारंगी लिपि) ॥ बीन ।
(४) १ ॥ बी । २ मा जामारिहि ए उम्हरी । ३ मा बोयनि ए बयनि ।
४ मा मग । ५ मय । ५ मा ॥ मानेहु ।
(५) १ मा पिय लो ए लो पिय । २ भा मा बहु करिय न माना ॥ मा करी न
माना रा बहु करिण मानू । ३ मा कहेहु मान पीउ लि बिह जाना ॥
कहेहु रग प्रीति अनुमाना भा करिहु मान प्रीति अनुमाना ।
(६) १ मा भा बिनी ॥ बिन्ह । २ रा ए ली । ३ मा बिनेउ मा रिणउ ।
(७) १ मा भा लीनी मा^२ जनु ए निग्न ली मा^३ । २ मा भा गरवीरि
दिउ (दिपा—मा) = मीनिह दीह । ३ मा भा ॥ मना रा मना (१) ।

अर्थ—(१) मुन स्वामी को सेवा बित्त लगा कर करना मुझ्ारा मन [स्वामी की सेवा में]
बाहिने-बाएँ (अप्य चिनी ओर) न बिचलित हो । (२) पुरुष की जानि अत्यधिक और महा दुष्ट होतो
है । उसका बित्त दिन-रात चरतते (कैतते) चला जाहिह । (३) दिन में बित्त प्रवर सबाका
उमारी सेवा करना और उली प्रवार लारी रात उसके र दबाया । (४) जब वह मुझ्ारी बाएँ
बाएँ कर अपने साथ सेवाएगा, [तब उसके साथ] शय्या में गेहवर रंग (गुन) मानना । (५)
और दिय (बनि) से बहुत मान न करना चाहिये, प्रीति क अनुमान में ही मान करना चाहिये ।
(६) बित्त ली में अपने बनि से अधिपता के साथ मान दिया (७) [तब लो बि] उन
ली में अपना बनि लीनी को अपनी जानि के डाला ॥

शिपी—(१) साई = स्वामी । (२) पग्गित = परि + ईष्ट = चरणदा देयता । (३)
मगर = मरन = मारा । बीनि = रयनी = रजनी = रजि । (४) ली = लउ = दण = दण ।
ओम्हार = ओम्हार [दे०] = मुमाना विमाना । ओम्हार = ओम्हार [दे] = माना मना । (५)
बनि = बयना = ली ।

जो जानिहु अति रिसि मह^१ साह । बरवस^२ ग^३ सेउब बरियाह^४ ।
 सबा के बर पीठ मनाउब^५ । पिय क सब बहुत सुख पाउब^६ ।
 सोइ सुहागिनि दुहु जग माही^७ । जइ^८ सबा के राघउ^९ नाही^{१०} ।
 जो पिय बर मन राखि ना पाई^{११} । बित अपन^{१२} मुख तुम्ह सेउ^{१३} जाई^{१४} ।
 साइ सब जनम सुख सार । साई सब परसर सार^{१५} ।
 साई सेवा प कीजिय^{१६} क अपन जिय^{१७} हानि ।
 साई सबा जाहि जिउ^{१८} सोइ दुहु जग रानि^{१९} ॥

पाठान्तर— मा मा मे उपर्युक्त अर्थाभिप्रा २ ३ ४ या ३ ४ २ जाती है।
 मा मे उपर्युक्त पौचही अर्थाभी नहीं है।

- (१) १ ए जो जानहु अतिरस मो । २ मा बरवसि । ३ ए की । ४ मा सेबहु बरियाई ए सेइब बरियाई।
- (२) १ मा अपनाइब मा अपनाइब ए मनाइब । २ मा मा पित्र की सेवा (सेब—भा) बहुत कर पाइब (पाइब—भा) ४ पीठ क सेब बहुते सुख पाइब रा सेवा पिय के बहुत सुख पाउब ।
- (३) १ ए दुइ जय माहा । २ मा मा जिनि ए जो । ३ मा राबी ए राभा । ४ ए नाहा ।
- (४) १ मा मा जोह (है—भा) राजा बहु कोभी (बाधम—भा) बहूनी (बहूनी—भा) । २ मा मा ए जनतै । ३ मा तेहि सी रहूनी ए हम सी कहा मा तुम्ह सेउ रहूनी ।
- (५) १ ए मे अर्थाभी का पाठ है पीठ क सेवा कियेहु सुख सारे । साई सेवा परतर सारें ।
- (६) १ मा मा सेवा कीजीअहु ए सेवा कीजिए । २ ए जिउ ।
- (७) १ मा जिनि निहूी ए जो जिउ नैबा भा जिनि साबे । २ मा सो दुहु जय मह रानि ए सो बारी जय रानि भा सो हुलहु जग रानि ।

अर्थ—“(१) और [जब] जानना कि स्वामी अति क्रोध में है तब बरवस जाकर बसुपर्क उत्तकी सेवा करना । (२) सेवा के वक्त से प्रिय (पति) को मनाना प्रिय की सेवा से पुन बहुत सुख पाओगी । (३) बही दोनों जगत् (बहुलोक और परलोक) में सुहागिनी [होती] है जिसने सेवा कर नाब (पति) को प्रसन्न कर लिया है । (४) यदि पुन पति का मन नहीं रब पाई तो [उत्तरा] बित अपने-आप से और [उत्तरा] मुख मुनते फिर जाएया । (५) स्वामी की सेवा [स्त्री की इस] जग्य में सुख सारतो (बहुबहनी) है और स्वामी की सेवा परम (परलोक) में [उत्ते] सारतो है । (६) अपने जीब (जीवन) की हानि उठाकर भी स्वामी की सेवा करनी चाहिए । (७) स्वामी की सेवा में मिलका जीब रहता है वही दोनों जगत् (बहुलोक तथा परलोक) में रानी [होती] है ।”

टिप्पणी—(१) बर<बल । (४) जो<जउ<बहि । (५) परतर<परम=परलोक ।

[५०४]

बन अपने कर^१ करबी^२ लाजा । मरबि^३ साइ^४ छाडि मभ^५ बाजा ।
 मामुहि^६ उत्तर न दीबी^७ बाऊ । मइ^८ दुइ जूनि^९ पगारवि पाऊ ।
 हमि^{१०} क पलबि^{११} मासु के^{१२} गारी । पलटि उत्तर महि^{१३} दीबी^{१४} बागी ।
 मामु^{१५} क^{१६} बोल परिछि^{१७} सिर सीबी^{१८} । ऊच बोल^{१९} नहि^{२०} उत्तर दीबी^{२१} ।
 ओ^{२२} सोतिन^{२३} सेठ^{२४} करवि मिलाई । रहवि जानु एक^{२५} जननि क^{२६} जाई^{२७} ।
 ऊच बोल^{२८} जनि बोलबि^{२९} रिसि राखबि मन^{३०} मारि ।
 सतत^{३१} साज घरबि जिय^{३२} कुरुहि न आव गारि^{३३} ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा बी। २ भा करई मा रापव ए करई। ३ ए मद्य। ४ मा लावी। ५ ए मा छाडि (छाडे—मा) मब।

(२) १ रा ए भा बीबी। २ मा ए बी। ३ मा जुन।

(३) १ मा पलबि ए पलब। २ मा बी। ३ ए उलटि उत्तर ना। ४ मा दी भा दीय भाटी रा दीयि बाटी।

(४) १ मा बा। २ ए प्रछि। ३ भा मय रा बीबी। ४ भा बल उत्तर न देय ए मुन उत्तर न बीबी।

(५) १ ए जो। २ ए मौनिह। ३ मा मौ ए रा बी। ४ मा रोहु जु ए ए रहव एक जु। ५ मा ए बर। ६ मा माई ए माई।

(६) १ रा बोमिह ए बालहु। २ भा मा रापबि मिम = राग म न रा रागिह मन।

(७) १ ए मनन। २ मा मे यहाँ 'अपने' और है ए मिड। ३ मा बीने मुन न आरि मुन नहि जाई मारि।

अर्थ—(१) अपने पुन की लज्जा करना और लज्जा कार्य छोड़ कर स्वामी की सेवा करना। (२) मात की उत्तर कभी न देना और स्वयं (अपने-आप) हीमें समय (पान-आप) [उमरे] बर बना। (३) मात की माती हँसते-हँसते डोल (डाल) देना, और हे बालिवाओ [गाली के] करने में कभी [कोई] उत्तर न देना। (४) मात के बचन सिर पर चढ़ा करना और ऊँची आवाज में उसे उगार न देना। (५) और लक्ष्मियों से मित्रता करना; [उनके साथ] हम प्रहार करना माती एक ही जगती से जनी हो।

(६) ऊँची आवाज में न बोला और बीच की अव में बारबार (बिना कहे) रचना। (७) जो मैं लदे लज्जा रचना, [जिन्हे] पुन की गाली न आये (५३)।”

टिप्पणी—(१) माई < ग्याबी। (२) मात < स्वयु = प्रति की बाता। (३) वत < वत < व + ईयु = वतना ठगना धातना। (४) बरिह < बरिह < व + ईयु = बरह वरना। (५) गीत < गायी। जाई < जात = उगम।

सुना सखिन्ह^१ मधुमालति बली । सुनतहि मोह^२ अग्नि उर बली^३ ।
 जो बसिहि^४ सो सखिहि धाई^५ । रोइ सखी^६ सम^७ 'अंकम' साई^८ ।
 रोवहि^९ सम^{१०} गसैं^{११} लागि सखली^{१२} । सबरि सबरि सघ^{१३} साथ जो सखी^{१४} ।
 कहहि सुख धालैं जो^{१५} माना । यह सुख एहि दुख रूप बिसाना^{१६} ।
 सुख अवित सघ^{१७} सखि जो पिया । ओहि सुख यह दुख कैसे जिया^{१८} ।
 तुम्ह^{१९} हम माना एक सघ बाजेपन कर^{२०} रग ।
 जब कैसे बिठ राखब तुम्ह गौनहु पिय सघ^{२१} ॥^१

- पाठान्तर—(१) १ मा ए सखी । २ मा सुनतेहु मोह ए सुनते मया । ३ मा अग्नि उर बली ए मायि उर बली ए मोह बिठ बरी ।
 (२) १ मा जो जैसे हूँ ए भा जो बसिहि । २ मा सो जैसे आई, ए भा सो (हुत—भा) ठेकाई आई । ३ मा सुनति, ए सखी भा रोइ । ४ मा सखि । ५ मा मा कंठ ।
 (३) १ ए रोसै । २ भा सख । ३ मा मा यल ए बले । ४ ए साइ सहेली । ५ मा मा सुख । ६ ए खेजी ।
 (४) १ मा मा कहिन्ह जो सुप बाजे सग (बाछपन—भा) ए कहिति कि सुख बाजे जो ए काहु सुख बाजे संघ । २ मा मा बोह सुप ये दुख रूप बिसराना (नसाना—भा) ए बोह सुख एहु दुख दुगौ बिसाना ए यह सुख एहि दुख कैसे बाजा ।
 (५) १ मा सग ए रस । २ मा बोह ए बोह भा बै । ३ मा मा बोये देह (नए—भा) सुप पीबा ए ए यह दुख कैसे बिया ।
 (६) १ ए तुम । २ मा भा मेरु सग सग (सब—भा) माने ए एन सन माना । ३ मा भा बालपन के ए बाजेपन की ए बासापन कर ।
 (७) १ मा जब कैसे कै बीज धरने तुम्ह बनती ही पिय सग ए जब कैसे बिठ राखब तुम्ह गौनहु पिय संग भा जब कैसे पट बिठ परब तुम्ह गौनति पिय संग ए हम कैसे बिय राखब तुम्ह गौनहु पिय सग ।

अर्थ—(१) सखियों ने सुना कि मधुमालती का रही है; यह सुनते ही उनके हृदयों में मोह की अग्नि बल उठी । (२) जो बसती थी वे बसती ही बीड़ पड़ी और रो-रोकर समस्त सखियों ने पतका आतिथन दिया । (३) समस्त सखियाँ उसके गले लगाकर और उसके संघ-साथ जो उन्होंने खेल रहे थे उनका स्मरण कर-कर रोने लगीं । (४) वे कहने लगीं 'जो सुख हमने बचपन में माला (अनुभव किया) था वही सुख अब इस दुःख के रूप में हम पर आ बिसाया है । (५) जो सुख का अनुभव हमने [तुम्हारे साथ] खेल कर लिया था उस सुख पर इस दुःख से हम कैसे जीवित रहेगी ? (६) तुमने और हमने एक साथ ही बालपन का रंग (गुण) माला था (७) [अतः] अब हम कैसे अपने प्राण रखनी जब तुम पिय (पति) के साथ जा रही हो ?"

टिप्पणी—(१) मकर < समर < स्मृ = स्मरण करता। (४) विनाय < विपाय = विग बन जाता।

[५०६]

जो बिछुरन दुग जनतिउ^१ एहा । बग बगनिउ बासपन^२ मटा ।
अब तुम्ह बरु^३ बिन्स पयामी । हम बने^४ घन घरव परानी ।
जो हम तुम्ह नहि होति^५ निम्हारी । यह^६ दुग आगे^७ न आवन भाग ।
अब तुम्ह नाहु तहाँ^८ स जाइहि । अह^९ न मवस^{१०} न बोउल आइहि ।
ममुनि ममुनि सय^{११} माध जो सेला^{१२} । अब बिछुरन दुग^{१३} बनि^{१४} दुह^{१५} ।
तुम्ह^{१६} बिन्स कह गोनब^{१७} हम इहि^{१८} जियन^{१९} रहाहि ।
पेम सजावन पापि जित^{२०} जो निमरसह^{२१} नाहि ॥

- संग्रह—(१) १ मा जानित। २ मा करनी बासपन ए बरनेउ बासापन।
(२) १ ए गुरु करी। २ न केने।
(३) १ ए न होन। २ मा इकर ए एन। ३ मा आवु न भाग।
(४) १ ए ताहि नाह तहेंवा। २ रा अह वा मा अय न तहाँ व।
३ मा मदेमा। ४ न न काई लाहि।
(५) १ मा मुग न भये। २ मा जा गमी न न गमी। ३ न में पर घर
नही है। ४ मा कठन (< बठिन : कागमी भिनि)। ५ मा न दुमेनी।
(६) १ मा मा मवसहु। २ ए गुरु। ३ मा आनब न अब। ४ न इनी।
(७) १ न पारी जिय रा पापि जिय। २ न जा निमन मा जा निमन
ए जा अब निमन।

अर्थ—“(१) यदि हूँ इस प्रकार का विधोय का दुःख [होना] जानती तो बचपन में क्यों
नेह करती? (२) अब तुम विदेह की वास कर रही हो तो हम अपने तरीके में प्रायः चित्त
प्रकार रखती? (३) यदि हममें-तुममें बरिषय न [हूँ] होता, तो [अब] पर जारी
[विधोय-] दुःख [हमारे] आर्य न जाता। (४) अब तुम्हें सुगहारा बति वहाँ से आगता वहाँ का
मदेमा कोई न लाएगा। (५) हमने भी संग-भाव मला का उसे समझ-नमनकर अब विधोय-दुःख
बनि और दुःखपूर्ण [हो रहा] है।

(६) तुम विदेह की आओगी और [यह देखते हुए भी] हम यही जीवित रह रही हैं। (७)
हमारा जीव प्रेम की मज्जित करने वाला और जारी है जो [तरीके से] निरन्तर नहीं है।”

टिप्पणी—(१) नेह < स्नेह। (२) पयाव < प्रयाव। (४) नाह < नाव = स्वाधी पति।
(७) वय < वय।

[५०७]

जो जोवन महि उरगन भगा^१ । मग रगन बासपन गग^२ ।

बह सतत^१ विधि रासन बाणा^२ । सकनि आनि सइ^३ जोवन पाळा^४ ।
 जो र रहुत जोवन तन गोवा । हम तुम्ह^५ होत नजनम^६ विछोवा ।
 यात्रु सभी तुम्ह गोम सुहामें^७ । कास्ति फिर यह^८ नि हम आगें^९ ।
 जोवन जोग जो मिले पियारा^{१०} । नासर^{११} जोवन जमु^{१२} असार ।
 जो^{१३} बिधि जोवन सन्धि^{१४} क बहुरि^{१५} बासपन^{१६} देह ।
 स^{१७} जोवन दे बाला^{१८} बाल अवस्था सेह^{१९} ॥

पाठांतर—

ए मे प्रथम अर्धली के स्थान पर पूर्ववर्ती छव की ५वीं तुहराई हुई है इस छंद की प्रथम उत्तम जाने के छंद मे आती है जिसे प्रतिष्ठ मान कर परिशिष्ट में दिया गया है। नीचे प्रथम अर्धली का ए का पाठांतर उसी स्थान से दिया जा रहा है। पुनः ए में उपर्युक्त वर्द्धाभियों १ ४ ५ का क्रम है ५, ३ ४।

- (१) १ मा मा नहि उपजत अया ए ना उपजत रया। २ मा मा बालपन रया ए बालपन अया।
- (२) १ ए सति। २ ए बारे, मा बाके। ३ मा मा बाइ इन्ह ए आनि तिन्ह। ४ ए बाके मा बालें।
- (३) १ मा जो रे रहुत न जोवन ए जो न रहुत जोवन तन। २ ए तुह। ३ मा ए मैस।
- (४) १ मा ए सघने। २, मा कास्ति बहुरि देह, ए मा कास्ति बहुरि एहि। ३ ए मयिक जाने।
- (५) १ मा मिली जी परा ए मिली स पियारा। २ मा ए नासरि। ३ ए मा जमन।
- (६) १ ए जो। २ मा पसति। ३ मा मा पुनि ए पुनि। ४ मा ए बालापन ना बालपन।
- (७) १ मा सन। २ ए बेह बाला मा जमह सेई के। ३ मा-तो हम सम रहाइ।

अर्थ— (१) यदि जीवन हमारे अंशों में न उपजता, तो हमारा वह बचपन का साथ तब तक जाता रहता। (२) इससे अच्छा होता कि बिनाता हमें तब तक बालिचार्य ही रहता [किन्तु] बलपूर्वक आकर उससे [हमारे शरीर में] जीवन बाल दिया। (३) यदि हमारे शरीर में जीवन नीति रहता तो हमारा-तुम्हारा जन्म भर बिछोह न होता। (४) हे सभी आज तीकाग्र के साथ तुम्हारा जीवन है कम फिर यही दिन हमारे आने [आने वाला] है। (५) जीवन सभी योग्य (तार्किक) है जब धिय मिले, तब तो जीवन और जन्म (जीवन) तारहीन हैं।

(६) यदि बिनाता जीवन बदल कर पुनः बचपन है, तो बाका तो जीवन देकर [उसके बारे में] बास्यावस्था के (स्वीकार करे)।”

टिप्पणी—(१) उकन < उकनन < उक + इप्पु = उकड़ना। (२) सतत < सतत = निरंतर। (३) गोवा < गोपित = छिपाया हुआ। (४) पियार < पियामु = प्यारा। जंम < जन्म = जीवन। (७) सै < सत = सी।

[५०८]

मिस्त्रु^१ मगो तुम्ह^२ मा गल^३ हागो । उपनी मोह मया उर आगो ।
 बाम्हि^४ बहुनि पिय घरिह^५ बाहो^६ । धरिहि^७ दम अपुने स^८ नाहो^९ ।
 योग कुटुब तजि परमुमि^{१०} जाइब । फनि बिधि मगइहि आनि^{११} मगइब^{१२} ।
 अंकम^{१३} दहु साइ गिय^{१४} बाहो^{१५} । जियन मिलन फनि^{१६} हा^{१७} बि^{१८} नाहो^{१९} ।
 मधुमालति कर बनि विछोवा । ऊंथे सव^{२०} मगिह^{२१} मम^{२२} रावा ।

बहुन राबहि पाय^{२३} परि^{२४} ओ बहुने गिय^{२५} आयि ।
 का^{२६} रोव पुहुमि परि^{२७} मया मोह क^{२८} आगि^{२९} ॥

- वाक्यान्तर—(१) १ रा मिलिय । २ मा भा जावु ॥ ३ य वह मय नहा है । ३ भा
 मय गल मा माहि यम ए माहि गीब ।
 (२) १ मा ए बामि । २ मा भा मगीय परि ए मगी रिठ परि है ।
 ३ ए बाहो । ४ मा बाम्हि । ५ मा मी- । ६ ए नाहो ।
 (३) १ मा प्रमुई ए परमुइ । २ रा पुनि बिधि मगइहि आनि मा फनि
 बिधि बहुनि मिरै लो भा फनि ओ बिधि परगइ तब । ३ ए मियान्द भा
 जाइब ।
 (४) १ भा मा अका । २ मा रा ए मय भा यम । ३ मा वन
 रा ए पुनि । ४ ए हाइहै ।
 (५) १ रा मगिम । २ मा मुनि ।
 (६) १ भा भा काई मयि राई पाये वरि ए बटनी राबहि पांय परि । २ मा
 भा का राई यम (गिय—भा) ए ओ बहुरी गीर ।
 (७) १ मा कुहनी परी मुकठिन रा का^{२६} राई भुमि परि । २ मा माया मागहि
 ए मया मोह उर भा मया मोह बें । ३ ए आगि ।

अर्थ—(१) [मधुमास्तवी मे बहो] हे लगिनी तुम मेरे लगे लग कर जिन्को मेरे हृदय
 में [गुहारो प्रति] बाँट-भावा की अग्नि उत्पन्न हो गई है । (२) वन पुन जिय हमारी बाँहें
 बरह्या, और बहु माय (कवि) अपने देश से जातेया । (३) लीज (प्रकाश-वर्ण) और
 बुद्धिमें की छोड़कर मैं कर भूमि (बन्धन) जाइये और पुन अब विद्याया लाकर विद्याया
 तब हम बिापी । (४) लगे में बाँट लगा (दान) कर भूत अँकहार दो [क्योंकि] पुन ओरिन
 एने निमना हो कि न हो । (५) अचमाननी का [घट] बिटोह [भुन] देन कर ऊँचे स्वर
 से [उमरी] सवाल मनिपां रो बड़ी ।

- (६) बटनेरी [उमरे] वरी में बटकर रोने लगी बटनेरी [उमरे] लगे मे लग कर
 (७) [तब] कोई बुद्धी कर पड़ो-बड़ी जाया-मोह की उबाया मे [हममें हई] रो ली थी ।

शब्दांती—(१) लग = लग । (२) जिय = विरह पीडा । (३) गुमि = गुम ।

भोर होत सविता^१ परगासा । भा अबोर किछु^२ राज अवासा ।
 पूछहि^३ सभ^४ ऊभि कै बाह्या^५ । का अबोर हो राउर^६ माह्या^७ ।
 जिन्ह जानी^८ तिन्ह कहा^९ सुझाई । मधुमालति^{१०} ससुर कह^{११} भाई ।
 सुनि अबोर राउर मह^{१२} पय । जाइ सोग सभ राउर मरा^{१३} ।
 पर मापन जहवां लहि^{१४} आहा^{१५} । राज गिरिह आए सुनि बाहा^{१६} ।

चलत^१ गोन^२ मधुमालति परी महारस राउर^३ ।

राज कुबेरि तब समय रोइ रोइ^४ सभ^५ परिवार ॥

पाठान्तर—(१) १ मा सपता । २ मा कुछ ।

(२) १ ए पूछहि । २ मा ए सबै । ३ ए बाहा । ४ मा कैस अबोर हात जर रा का अबोर होइ राउर ।

(३) १ मा जो जानत आहा तै ए जइ जान तइ मा जो जानत हुत । २ मा नहेसि । ३ मा राजकुबेरि । ४ ए कल ।

(४) १ मा सुनत अबोर ए सुनत अबोर राउर भो । २ मा कुभारा ।

(५) १ ए जहां क्यु । २ रा ए बहा । ३ मा राज सीही सुनी जाई बाहा ए राजपिह सुनि आवे तहां रा आए सुनि चहा ।

(६) १ मा ए सुनत । २ रा मे यह सख नहीं है । ३ ए महा असतर ।

(७) १ ए राजकुजर (< कुजरि : फारसी लिपि) तब रोइ कै समरा रा राज कुजर सभ समई रोइ रोइ । २ मा ए सब ।

अर्थ—(१) प्रातःकाल में सूर्य का प्रकाश होते ही राजा के आवास (निवास-स्थान) में कुछ भोर हुआ । (२) सभी बाँहों उठाकर बूझ रहे थे “राजल (राजमन्त्र) में क्या (क्यों) भोर हो रहा है ?” (३) जो जानते थे उन्होंने समझा कर कहा “मधुमालती ससुराल को जा रही है।” (४) वह सुनकर कि राजल (राजमन्त्र) में भोर पड़ (हो) रहा है तत्पश्चात् लोक (प्रजा) मानकर राजल में भर गए । (५) बराए और अपने जहाँ तक भी लोग थे यह समाचार सुनकर राजमन्त्र में आए ।

(६) मधुमालती के पीने के लिए चलते ही महारस [की जन-संख्या] में चिन्ताहट मच गई । (७) राजकुमारी (मधुमालती) तब दी-दीकर तत्पश्चात् परिवार से बिदा होने लगी ।

टिप्पणी—(२) ऊभ < उभ < ऊर्ध्व = उठाना । (२) (४) राउर < राउर < राजकुल = राजमन्त्र । (६) राउर < राउर < राउर = चिन्ताहट ।

समय मम^१ परिजन परिवारा । समय फिर फिर पोरि कबाया^२ ।

समय पाछा सेज तुराई^३ । समय राज मन्त्रि कठ^४ लाई ।

समद सम पाटन^१ पटसारा । समद राइ रोइ पोरि पगारा^२ ।
निमि मोव जह राजहुमारी । समद पायन^३ परि चित्रसारी ।
निरम जीउ धावउ मुग^४ योला । ग समद गिय^५ लाइ^६ हिडोला ।
सम^१ पर बार समनि क तो सम^२ परिवार^३ ।
फुनि^४ समद जन परिजन जम^५ निछु^६ जग ब्यहार ॥

पद्यान्तर—(१) १ ए भा सब । २ मा मम पर बार ए दरबार ।

(२) १ भा पल्लव ज जली साई । २ भा मरिद । ३ भा भा गिम ए भीव ।

(३) १ ग पटन (?) मा ग पाटन । २ मा ग राइ रोइ परिवार (मुम० प्रथम बर्षाभी तथा दोहा) रा हुमि पर गवमग (?) ।

(४) १ भा पाव ग पीव ।

(५) १ भा रावत जो पावउ मुग मा निगमन जो धाउउ मपु ग निगमन जीउ बके मपु । २ भा भी मम^१ जग ग ती मयई बाव रा मयई गिय गा । ३ भा सागि ।

(६) १ भा ग गव । २ भा फनि ममदा भा फनि ममदउ ।

(७) १ ग गव भा ती रा पुनि । २ ग जा । ३ भा फुल ।

मर्म—(१) बहु भूयों और परिवार क लोगों से बिहा हो रही है [अब] वह बार-बार [अथवा लौट-लौटकर] प्रगोली (मुग्ध द्वार) के रिक्कातों से बिहा हो रही है (२) [अब] वह पूर्व से और लोग से बिहा हो रही है [अब] वह राजमहल से घने जंगल बिहा हो रही है (३) [अब] वह समस्त देशी बरगामों से बिहा हो रही है [अब] वह दो-दोहर प्रगोली (मुग्ध द्वार) और प्राकार (बदौटे) से बिहा हो रही है । (४) वही वह वह राजमहल राज से लौट रही है [अब] वह उस चित्रसारी से [उसके] पीछे बहकर बिहा हो रही है । (५) उसका जोष नीरस (निर्मल) हो रहा है और मल से जोष बह गया है; [अब] वह हिडोले से आकर घने जंगल बिहा हो रही है ।

(६) लवण घर-बार से बिहा होकर लवण परिवार से बिहा हो रही है (७) और लवण वह लवणों से बिहा हो रही है अर्थात् जगन् का व्यवहार है ।

टिप्पणी—(१) (१) पोरि < प्रगोली = मुग्ध द्वार । () पाव < पाव = पाव । (१) पगार < प्राकार = बरगाम ।

[४११]

मधुमालति छाड़ा पर बार^१ । छाटा मम^२ परिवार परिवार^३ ।
पानी^४ गुनगुन मगो पगारी^५ । पानी मम मग^६ मलिनार^७ ।
त्रि मग^८ मग^९ मानी^{१०} मग^{११} । छाटा^{१२} ग मम बार^{१३} मग^{१४} ।

छाड़ा मया मोह जेस^१ भाव । अति मरोह भर छाड़ि^२ न भाव^३ ।
क गियान अपने जिय^४ बारा । तब जठि बली छाड़ि^५ भर बारा^६ ।

छाड़ा सम^१ परिवार आपना^२ जन परिवजन सम^३ कोउ^४ ।^५
छाड़ी^६ लंक भमीछन जो भाव सो होउ^७ ॥

पाठान्तर—(१) १ रा बारा । २ ए सब । ३ रा परिवारा ।

(२) १ ए छाड़ी । २ मा ए पुठरी भा गुडियाँ । ३ ए मरी पेढारी ।
४ रा ते ए मा सब । ५ मा मा ए संग । ६ ए लछनिहारी ।

(३) १ रा जेहि सख भा बिम्ह सख ए जेहि सख । २ ए सतति । ३ मा केही ।
४ ए छाड़ी । ५ मा मा मानवी ए मानी । ६ मा मा ए सब बाल
(बार—मा) रा बाल सख । ७ ए मा सहेही ।

(४) १ मा छाड़त माया मोह मन ए छाड़ा मया मोह जत । २ ए छाड़ि । ३
ए भावै (तुल पूर्ववर्ती चरण का तुल) ।

(५) १ मा ए पित मा मन । २ ए छाड़ि । ३ मा मा ए परिवारा ।

(६) १ ए सब । २ मा अपना ए आपन । ३ ए सब । ४ रा ए कोउ ।
५ मा छाड़ा मर महारस जन परिवजन सब केउ ।

(७) १ ए छाड़ा । २ मा भमीपनी ए भमीछन । ३ रा ए होइ भा लेउ ।

अर्थ—(१) मधुमावली ने घर-बार छोड़ा और तमस्त भूयावि तथा परिवार को छोड़ा ।
(२) उसने पुतलियों (गुडियों) से मरी अपनी पेढारियाँ छोड़ दीं और तमस्त तम बसने वालियों को छोड़ दिया । (३) जिनके साथ उसने सख केति वाली थी उन बाल-सहेलियों को उसने छोड़ दिया । (४) उसे जिसका भी माया-मोह आ रहा था वह सब छोड़ दिया, [फिर भी] अत्यंत मरोह (ममता) के कारण घर छोड़ा नहीं आ रहा था । (५) [सर्वगत] अपने जी में मान करके बाला उस घर-बार को भी छोड़ कर उठ बसी ।

(६) उसने अपना तमस्त परिवार छोड़ दिया बाल-बाधियों तथा भूत्यों—सब किसी को छोड़ दिया । (७) विभीषण ने लंका छोड़ दी चाहे [मने ही] जो हो वो हो ।

टिप्पणी—(१) (५) बार < बार < बार । (२) पुठरी < पुठली < पुठिका = पुठली ।

(३) पेढारी < पेढा = मञ्जूषा पटी । (४) सतत < सतत = निरंतर । (७) भमीछन < विभीषण ।

[५१२]

बिनवाहि^१ पुकी कुंवर सत^२ रानी^३ । बसतु मोर छे प्रान परानी ।
बिनही करहि^४ कोलि कै^५ आगी । य दूनों तुम्हरे^६ बिअ^७ सागी ।
इन्ह बुहु^८ कर हितु उहाँ^९ म^{१०} कोऊ । तुम्हरे^{११} जीय सागि य^{१२} दोऊ^{१३} ।
बगम न होइ माय^{१४} बाप क हाथें । भूजहि^{१५} सिखा^{१६} दइय जो^{१७} भाथें^{१८} ।
मता^{१९} पिता कर^{२०} एतन आह^{२१} । सुत बुहिता प्रतिपारि बिआह^{२२} ।

तहि^१ पाछे^२ जा बिधि सिखा छटी कि गन म्लार ।
सा भूजिहि ग^३ आपन^४ मन् मंद निग्वाहिहि जमुभार^५ ॥

पाठान्तर—(१) १ ग बिनई । २ ए रा मी । ३ मा भा रा ए राती ।

(२) १ रा बरी । २ भा के मा की ए रा । ३ मा तइ दुओ ताछे
ए येह दुनी ताछे । ४ ए बिब ।

(३) १ ग बुनो । २ मा उही । ३ ए मयह मयह नही है । ४ मा भा
मुह दुह । ५ रा मयह मयह नही है । ६ = तुह मिउ मायि महे एर बाउ ।

(४) १ मा मरही माउ भा माह माह । २ मा भुजिहि मिता ए भुजिहि मिता ।
३ भा बीन्ह । ४ ए माध ।

(५) १ रा मा ए माना । २ रा बह । ३ ए लनई अह मा लनना
आह । ४ मा प्रनि मी बीआहै रा प्रनिवासि निबाहै ए प्रनिवारन अह
(मुल पूबधनी चरण का तुल) ।

(६) १ मा ताहि । २ ए पाछ । ३ रा पूरब अर ।

(७) १ मा म भुजिही है ए मा भुजिहि ने रा गा भुजिहि वै । ग
मरना । ३ भा भला मय मीरबाह है जमुभार ए अलमह मिर जमहार ।

अर्थ—(१) दोनों कुमारों से रागिणी विनय करने लगीं 'तुम हमारे प्रान-प्राप्तियां दो से जा
रहे हो। (२) हम तुम से अपनी बुझि की आय (ममता) के कारण विनयी कर रही हैं कि वे
दोनों तुम्हारे (तुम दोनों का) बीच (बीचम) के लिए हैं; (३) बिनु इन दोनों का हिन करने
वाला कहीं कोई नहीं है तुम्हारे बीच (बीचम) के लिए ही वे दोनों हैं। (४) किसी का बर्ष उसके
मा-आप के हाथ (बल) में नहीं होता (रहता) है; [भोग] वह भीसे हैं जो ईश उनके बलकों
में लिय रहता है। (५) माता-पिता का [बल] इतना ही है कि बुध तथा ब्रह्मा का बालन-बीचम
कर उनका विबाह कर दें।

(६) उसके बाद [तो] जो-कुछ विधाता ने [प्रायेक का भाग में] उसकी लट्टी की रागि
को लिय दिया है (७) वह उसे ही बाहर भीषया और अपना भला-बरा (शुभाशुभ) धन के
द्वार कर निभायया (बाणाय)।

टिप्पणी—(२) बागि < बुझि = उतर पट । (४) (३) भूत्र < भूत्र < भत्र = भाग
करना । (७) बार < बार < द्वार ।

[४१३]

बुझि^१ जननि गी^२ मायो धाई । गनी गरि उता^३ गिय म्म^४ ।
बागि^५ मागि महि पा^६ म बिछावा । बाहि पाह^७ गनी मय गोपा ।
अगि^८ ब^९ बरि म्मगि^{१०} गिय^{११} रही । छादि म मय मय ब^{१२} म्म^{१३} ।
जननि ब^{१४} मरि छा^{१५} पार^{१६} । अगिरी म म^{१७} पयम मार^{१८} ।
जननि अगोम नी^{१९} मन जानी । मय मोग^{२०} मय मय गनी ।

जो लहि^१ घरती गय^२ जल श्री ससि सुख^३ तार^४ ।
श्री लहि^१ राज सोहाग तुव^५ रासो सिरजनि हार^६ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए कुम्हार (<कुम्हिर फारसी कियि)। २ मा पाइ। ३ मा मैं उठि
जीव समाई भा मैं उठाइ गिय साई ए जीव उठाइ मैं साई।
(२) १ मा कोयि की ए कोय की। २ ए बापी सहि। ३ मा भा
बाइ (बाइ—भा) बाहि, ए बाइ बाहि रा भारि बाइ।
(३) १ ए अस कहि। २ भा बिय काए, रा कुम्हिर सामि मा पाइ लाइ,
ए बी सायि। ३ ए बीव। ४ ए छाडि। ५ ए माह की। ६ ए रही।
(४) १ ए नहि छाई। २ रा ए भा भारी। ३ रा बेइ मिली भा बेइ बह।
४ ए अकम सारी रा अकमारी। ५ भा अधिक बेइ गहि गहि अकमारी।
(५) १ मा ए बीम्ह। २ मा मानी। ३ मा सुहागिन। ४ मा बनी।
(६) १ मा ए लयि। २ मा गगन ए वगा। ३ रा मूर अकास ए मूर
अवार।
(७) १ ए लयि। २ भा तुम्हारा मा तुम्ह। ३ रा रासै बिषना आम
मा रापी सीरीजन हार।

अर्थ—(१) कुमारी बीड़ कर जननी के वंशों में लकी (पड़ी) [तो] रानी ने उसे पकड़ कर
छठा लिया और गले से लगा लिया। (२) कुम्हिर (संतान) की थाप (नमस्ते) से बिछोड़ रहा
नहीं गया जब रानी बाड़ लगा (मार) कर रोने लगी। (३) कुमारी [नी] उसके गले ऐसी
सज रही कि त्रेमाबिष्ट होने के कारण छोड़ न सकी। (४) वह जननी का कंठ छोड़ नहीं सक रही
भी और अधिक ही [आत्मिय] होती हुई वह [उसका] आत्मिय कर रही थी। (५) जननी ने
धन में [उसकी नमस्ते] आगकर उसे आशीर्वाद दिया 'सदैव तुम्हारा सीनाम्य रहे और तुम
राजपूत में रानी [बनी] रही।

(६) जब तक घरती पर वंश का अल है और [आकाश में] बंझमा सुर्ष तथा तारागण
हैं। (७) जब तक लुपिकर्ता तुम्हारा राज्य-सीनाम्य रखे।”

टिप्पणी—(१) (३) बिय < बिय < प्रिया। (२) कोयि < कुयि = उबर। (५) (७)
सोहाग < सीनाम्य। (६) तार < शारफ = नशाब।

[५१४]

यदुरि पिता पौ^१ शमी भारी^२ । पिते^३ हत^४ सख^५ अकम सारी^६ ।
राजा बगु नहि रही^७ पनारी^८ । कह विधिकत जग बिय^९ ओसारी^{१०} ।
श्री न^१ होत दुहिता अकतारा^२ । कोउ^३ न सहत एव दुग भाग^४ ।
पद^५ कहा जनि होहु मिरासा । पर भुइ^६ नदम^७ कोम्ह बिय^८ वामा ।
रदिहि जात^९ जन परिजन मोरा । राम बस^{१०} ल अहहि^{११} तोरा ।

पिता बन् नहि छाड़ कमहु^१ राजकुमारि^२ ।
जो जो^३ लाग छोड़ावहि^४ तो तो गहि गहि दइ अववारि ॥

पाठान्तर—(१) १ ग पम। २ ग बारा। ३ भा मा गइ ए गय। ४ ग हेतु।
५ मा मे रा भा ए नी। ६ ए माग।

(२) १ मा रहै ए गहा। २ ए पनाग। ३ मा बाइ बिधि जग पी भीतारी
मा कहै कि जग धिय बत भीतारी रा बाहे बइ बिधि दुहिता भीतारी त
निगरी बिबट आस की पारा।

(३) १ मा नहीं। २ मा भीतारी। ३ ए कहै बिधि बत जग पी भीतारी
(मुन द्वितीय अर्द्धाली वा दूसरा चरण)। ४ मा वो ए बा। ५
मा भारी।

(४) १ ए राम। २ मा बज बोगहा ए बँध दीगह। ३ ए मुज।

(५) १ भा रक्षि जान ए गहिहहि जान। २ ए गहिह मा भा माइति ग जेहे।

(६) १ ए गहि छाटे केगहु। २ भा कुवारि।

(७) १ भा मा ए जो जो। २ मा छावरे ए छावरे मा छावरे। ३ ग
गहे मा गहि गहि ब ए तो तो गहि दे।

अर्थ—(१) तदनंतर बाला पिता के घरों में कभी और पिता न प्रेक्ष से उन छापी में लपाया।
(२) राजा के घरों में [आगुओं की] पमाली नहीं रह (बक) सही उसने बहू, “विधाना
मे अयम् में बुहिता को कवी अम्प दिया? (३) यदि दुहिता का अम्प न होता तो बाई इतना दुःख
भार न सहन करता। (४) राजा ने बहू, “निराज न ही बरम्पि में [ही] बह मे बुहिता
का निवास [निमित्त] दिया है। (५) मेरे सेवक और भूय [बही] जाले रहेंगे और मे मुहारा
सेव-भूय [समाचार] से आर्यम्।”

(६) राजकुमारी किसी प्रकार भी पिता का गला नहीं छोड़ रही थी (७) अब अब लोग
उसे गृहस्थ के तब तब वह उसे पकड़ पकड़ कर अंत्यार देनी थी।

टिप्पणी—(१) बारी < बालिका। (२) पनागी < प्रपत्नी = अथ प्रपत्नी। (३) (४)
पिय < दुष्टि = बप्पा। (५) गम < दाम। (७) जो < जठ < वरा = बह। गो < गउ < गग =
तब। अववारि < अवगारी = आविनयन।

[४६५]

ननि बंवरि बर^१ बन्ध पिछाया। गणग^२ लाग मगर बर^३ राया।
रोव नगर लगीयो जानी। पार बड राइ^४ अगिया।
मगर ब^५ जाउ बाडि जन गाना। विनु बिउ^६ नमनगर गम^७ बाना।
बदरि बन्ध मम ममना^८ जगे^९। पम गम^{१०} गमना पति मगे^{११}।
राव टाड़ मम^{१२} पगियाग। रिउ^{१३} न पण गगि का पाग।

रोवै कटुव सोग अनपरिजन काहुक किछु न बसाइ^१ ।
कत^२ बसाई सो धनि^३ कौनु^४ सन बिसबाइ^५ ॥

- पाठान्तर—(१) १ ए कै। २ ए भा सगरो। ३ ए सोग नपर कै भा नपर महारस।
(२) १ भा बारबूढ करहि रा बारबूढ रोवै भा बारबूढ मेवा (बिहवा ?)
(३) १ रा का। २ ए कै भीन्हा। ३ रा बिय। ४ भा नपर महारस भा
जानु वेस ए कया सून। ४ ए सन।
(४) १ रा सयबे। २ ए बैसे। ३ ए सब। ४ रा ए पुनि। ५ ए ठैसे।
(५) १ ए छबै। २ भा प्रीठ ए जीठ।
(६) १ भा रा बाहु का कटु न बसाई, ए परजा पीमि सबा^६।
(७) १ रा कतहि। २ भा मा कत बसा कै आपनी ए कत बसा बिह अपने
लै। ३ ए कोह न सकै। ४ भा बिसबाइ।

अर्थ—(१) कुमारी का कुटुम्ब से अलग होता देखकर नगर की समस्त प्रजा रोई। (२) नगर की छत्तीसो जातियाँ रो रही थीं; बालक, बूढ़ और युवायुगीन स्त्रियाँ रो रही थीं। (३) मल्लो नगर [भर] का जीव [क्षीर से] निकाल लिया गया था और समस्त देश और नगर को जीव रहित कर दिया गया था। (४) कुमारी (मधुमावती) जिस प्रकार समस्त कुटुम्ब से बिदा हुई उसी प्रकार तबलेतर वेमों भी लक्षों बिदा हुई। (५) समस्त परिवार बड़ा रो रहा था [किन्तु] जब [कन्या को उसका] पिता [पति] से चलाता है, तो [उसे] रक (रोक) कौन सकता है? (६) कुटुम्ब प्रजा सेवक भूय सभी रो रहे थे किसी का कुछ भी बस नहीं चल रहा था। (७) जिस स्त्री को उसके पति ने प्रस्थान करा दिया उसे कौन रोक सकता है?

नियमी—(१) सगर < सकल। (१) (६) लोग < लोक = प्रजाजन।

[५१६]

फनि ग कवरि जो राज^१ समानी । दोरि रोइ मधुरा पां^२ श्यामी ।
कहनि समबु मोहि मा^३ गरु^४ साई । म परसिमि^५ आबु पराई ।
ओहि मां सउ^६ मोहि अरम^७ निहोरा । त प्रतिपार^८ कोन्हु सम^९ मोरा ।
छाड़ि^{१०} बाप माइ घर बारा । आबु गोम परसम^{११} हमारा ।
मधुरे अम गहमनि^{१२} क रोसा । नन मोर सम पीर निबोवा^{१३} ।

हुबो कुंवरि मम कटुव समदि कै चढ़ा^{१४} सुखामन जाइ^{१५} ।
छाड़िन्हि^{१६} सम^{१७} परिवार आपमा^{१८} बहुरि न दनिन्हि^{१९} माइ^{२०} ॥

- पाठान्तर—(१) १ भा फनि गै राजकुंवर रा फनि गै कुंवरि जो राज भा फनि गै राजकुंवरि,
ए पुनि गै कुंवरि [‘जा’ भा ए दोनो म मही है] राज। २ ए पां।
(२) १ भा बही गो मम मा माहि। २ भा हिआ ए पीव मा मिय।
३ भा मैं परदेमनि ए मैं परदेमी रा मइ परदेमी।

- (३) १ मा भा ए बोहि मागी (मागी—भा माग—ए) बाहि (बाहि—ए)
जन्म रा मातहि मा माहि जन्म। २ रा ए प्रतिपात्त। ३ ए भा मब।
(४) १ मा छाडुत ए छाडा। २ मा परदमि।
(५) १ मा आमु गहीबणि ए भा अम गहबणि। २ भा मभ बीर (< पीर
फारमी भिनि) निबावा भा मब बीर निबावा ए मम मीर म पारा।
(६) १ मा बही (< बगही) ए बही। २ ए पा।
(७) १ ए छाडहि मा छाडि रा छाडा। २ ए मब भा मरी। ३ ए
अपना। ४ भा देपहि भा दगम ए देनी। ५ ए पा।

अर्थ—(१) फिर कुमारी (अधुनामस्ती) को [अब] राग्य और मुहाग बाली बी, पई और बीडरुत तथा रोकर मधुरा के वीरों में लग गई। (२) उसने कहा "हि माता मुझ गले लगाकर बिदा करो मैं आज बरसेल-निबातली और पराई हू। (३) उस माता (अपमजरी) से तो [केवल] अम का मिहोरा (मिचित) है सुने ही मेरा समस्त पालन-पोषण किया है। (४) मैंने बाप चाई घर-बार [तभी] को छोड़ दिया [क्योंकि] आज मेरा परदेश-गमन [हा एरा] है।" (५) [यह सुनकर] मधुरा ने इस प्रकार यत्ना भर कर दहन किया कि मेजों के जल से [मानो] अपनी समस्त पीड़ा निचोड़ डाली।

(६) दोनों कुमारियाँ समस्त दुःख से बिदा होकर गुरात्म पर आ बहीं। (७) उन्होंने अपना समस्त परिवार छोड़ दिया और फिर कर (लौट कर) उने नहीं देना।

टिप्पणी—(३) जन्म<जन्म। (४) बार<बार<बार। बीर<गमन। (५) पीर<पीड़ा।

[५१७]

पनि दुयो निगि जहो हुन^१ गर । दुबो^२ कुंवर^३ म पाग^४ पर ।
बठ ला^५ वह^६ दुबो^७ भुयाग^८ । इहो ग^९ हम मिर मभ^{१०} भाग ।
हम मभ^{११} घ^{१२} बर प्राण अयाग^{१३} । अग गा^{१४} तुम्ह नउछाव^{१५} माग ।
बिनभी बहनि कही^{१६} मति जा^{१७} । तुम्ह^{१८} जानू^{१९} शउ^{२०} ब^{२१} क^{२२} यग^{२३} ।
तुम्ह परनन^{२४} तग मांघ^{२५} हमाग^{२६} । बग^{२७} जम मन मान^{२८} तुम्हारा^{२९} ।
बादि प्राण परिवार^{३०} कर हम तुम्ह^{३१} गग बलाग^{३२} ।
गाग^{३३} मीम^{३४} हमाग^{३५} बग^{३६} जा लय^{३७} बग^{३८} ॥

पागपर—(१) १ रा ए पुनि। २ रा दुयो रावा जा भा दु^३ पनि जा हने ए दुयो
जिन जाई है। ३ रा दुनी। ४ ए म बादेरा रा जाद पद।

(२) १ मा भा कहा गाद ब^२ रा ब^३ ला^४ ई। भा दुख। ३ मा भा
ए गेह। ४ ए लभे निर रा लभ निर मई।

(३) १ भा ए मब। २ भा ए पर। ३ भा निगाग। ४ ग जो।

- (४) १ मा ए कहै (<कही : फारसी लिपि)। २ ए तुह। ३ मा मा रा ए मी (<दोह फारसी लिपि)। ४ मा ए की।
 (५) १ ए तुहँ चरनन भा तुम्हरे चरन। २ मा मा परा जहै (अहा—मा) अब जानु ए किनेहु जैस मन भाव। ३ ए ताहारा।
 (६) १ ए तुह।
 (७) १ रा राजा सो अछ भावहि ए राजि को छीस हमारी। २ ए कहेहु को देखत।

अर्थ—(१) तबन्तर जहाँ दोनों राजा कदुं के [यहाँ] जाकर दोनों राजकुमार [उनके] वीरों में पड़े। (२) [दोनों को] गले लगाकर दोनों भूपालों ने कहा 'जहाँ [अब] हमारे सिरों पर सब भार [ही] रहे वया (३) [क्योंकि कम्पासों के रूप में] हम सब के शरीरों का जो प्राणाधार था वह हमने तुम्हें ग्वाँछाकर कर दिया। (४) बहुतेरी बिनती कही तहाँ का रही है [क्योंकि] तुम दोनों कुलों (जिह्मल तथा इमगुर-कुल) का बहुष्ण जानते हो। (५) [कम्पा देने के कारण] तुम्हारे चरणों के नीचे हमारा मस्तक है [इसलिये] जैसा तुम्हारा मन माने करना।

(६) हमने अपने परिवारों के प्राण निकाल कर तुम्हारे साथ चला दिए। (७) [अब] हमारी बीस की रक्षा करना और जो देव करावे वह करना।

टिप्पणी—(२) सुबार < भूपाल। (३) नेजकावरि < निबन्ध + आवसि = [वार कर] उतारे हुए पदावली की अवली। (५) भाव < मस्तक।

[५१८]

सुनि कुबरन्ह सवनन कर गहा ।^१ पिता अइस^२ तुम्ह बूसिय कहा^३ ।
 ओन्ह मता पित हम जनम बारे ।^४ माइ बाप तुम्ह जेह पतिपारे ।^५
 एहि^६ परिवार गोसाइनि^७ रानी । पितर तरहि इन्ह अजुनिन्ह^८ पानी ।
 इन्ह समि सउ^९ हम कुल^{१०} उजियारे । मेइ ममि हम इन्ह सेउ^{११} मनियारे^{१२} ।
 बन्त^{१३} कमीनी बचन लीका । तस एइ हम कुल माँबे^{१४} टीका ।
 इन्ह कर मोच करहु अनि जिय^{१५} आपन^{१६} नरम ।
 अमा^{१७} यह गोसाई गोनहि^{१८} अपने दम ॥

पाठान्तर—(१) १ रा नुनन कुँबर [शब्द स्पष्ट नहीं है] कहा मा सुनि कुँबरन्ह सरवन कर गहा ए गुना कुँबर तमुरन्ह कर कहा। २ मा जैसा। ३ रा तुम्हें बूसित कहा या तुम्ह पीत अकाहा ए तुह बूसित कहा।

(२) १ मा ओन्ह जानइ हम जनमे बारे, ए माँई हम जयई हीन बाप। रा माँई हम जनमा हुत बाप। २ मा आइ बाप तुम्ह बइ पनीपारे ए माय बाप जो तुह प्रतिपारा रा माइ बाप तुम्हें जई प्रतिपारा।

- (३) १ मा य ए यह। २ ए यायाउनि। ३ मा मा पीनई तर यत् (त्रि-
—मा) आकुरि ए पित्र तरे इह अमुग्गि।
(४) १ मा मा यम्ह ममि (ममि—मा) मेउ ए ये ममि [मा म/ १] म
एहि ममि मों। २ मा ममि। ३ ए मा य ममि हम एते (ममि
मउं—मा)। ४ मा ममिमार।
(५) १ मा मा ममर। २ मा मा मम य मम मम माय ए मम हमरे मम
महं येह रा मम य हम मायें।
(६) १ मा मा येन्हु की साय जीज मरनें जनी कुछ करहु (मिउ बरिय—मा)
रा उन्हु कर मोष करहु अनि मरनें जीउ।
(७) १ रा ए मा मप्या। २ मा मणीमा मउ मा मणीम गा। ३ मा ममरति।

अर्थ—(१) [यह] मुनकर कुमारों ने [अपने] बानों को हाथों से बरझा [और कहा]
“हे पिता तुम ऐसा क्या (क्यों) समझते हो? (२) उस माता-पिता से हम बालक रूप में जन्मे
[सिन्धु हमारे वास्तविक] माता-पिता तुम हो जिन्होंने हमारा वास्तव-व्योषण किया। (३) इस परिवार
में स्वामिनी रानी होती है और पितृ हमकी अंजलियों के कर्म से तरते हैं। (४) हम रागिया से
हमारे पुत्र उग्रवत् [हए] और इन मणियों से हम अक्षिपर [हए]। (५) जिस प्रकार वृक्ष
ममय कभीभी वर कञ्चन की रेखा [बनती है] उसी प्रकार ये हमारे पुत्रों के मातर पर लिख
[बनती]।

(६) इसका लोच है मरेज आप अपने की में न करें। (७) आप आता हैं है स्वामी रि
हम अपने देतों को समझ करें।”

श्लोकी—(१) ममन < ममन = वान। (५) लीट < लगा < रेगा। (५) माय < मगर।

[५१९]

मद^१ पय मित्र दूनी^२ बाग^३। ओ मय दूनी गज कमाग।
ओ दायज दूनी जत^४ पाया। मा बयगन्ति मम म्या^५ पन्नाबा।
गारि मिमन एक मय^६ गय^७। माय हुते^८ दुद माग्य भाग^९।
गागन^{१०} नन मरि पानी। आणउ^{११} जग बर ओ गनी।
बहमि^{१२} बार उठि ममदहु मही^{१३}। मम^{१४} म^{१५} म्या^{१६} म्या^{१७}।
मुग^{१८} पार मिमन व^{१९} जगन जान मम^{२०} वी^{२१}।
मम^{२२} दुग म^{२३} बरिज दुग ग^{२४} म गय मिम^{२५}॥

अर्थ—(१) १ ए मये। २ मा दुनी। ३ मा बयबाग। ४ मा मयदुनी ए मा
मय दूनी।

(२) १ मा औदु बउ बादज जग ए औ बादज जग मयुरे। ए मा मय।
२ मा मारि भा. माय।

(३) १ मा मा ए मित्र मय। २ ए मारि। ३ मा मा उगो हन ए मय
ते। ४ ए मारि।

- (४) १ भा आयेखो।
 (५) १ ए कहै भा कहिसि। २ ए मोही। ३ मा गले भा नम ए नीब।
 ४ ए पोही।
 (६) १ ए मा की। २ भा ए अग जानै। ३ ए भा सब। ४ मा भा
 लोप।
 (७) १ ए भा रा सब। २ मा ए सेठी। ३ मा मा दुहु बिच होत बिरोन
 ए बिचि अनि बेह बिछोह।

अर्थ—(१) बाने के तिर पर दोनों बालाएँ हुई उनके साथ दोनों राजकुमार हुए (२) और बिलसा बायल दोनों ने पया भा यह सब [बोनों] कुमारों ने साथ (सब) कर [साथ] बसाया। (३) चार बिलसों (पदाओं) तक वे एक-साथ गए, [और फिर] साथ ॥ (बाय छोड़कर) वे दो मालों पर [अपसर] हुए। (४) ताराचंद नेत्रों में आँसु भर कर वहाँ आया वहाँ कुमार (मनोहर) और रानी (मधुमावती) वे। (५) उसने कहा “हे भाई उठ कर मुझे बिदा दो और मैं भी तुम्हें वैसे लपटकर बिदा दूँ।

(६) बिछड़ने की पीड़ा दुस्तह होती है यह संसार में सभी कोई जानता है। (७) समस्त दुःखों से कठिन दुःख साथ का बिछोह [किसी को] न हो।

टिप्पणी—(२) अठ अतिव्रत पाक=विषम। (५) मिय गिब घीबा। (७) बिछोह < बिच्छोह [वे]=विरोध विरह।

[५२०]

यह सुनि^१ कुंवर^२ मनोहर राऊ^३। बाइ गहे^४ ताराचंद पाऊ^५।
 इन्ह^६ फुमि^७ हेतु सहित कठ गहा। भागे गीब^८ रोइ अस कहा।
 जहि^९ बिन बिधि^{१०} हम मेरए^{११} जानी। तहि दिन यह^{१२} दुख परा न जानी^{१३}।
 दूनी कवर लागि गिय रोये^{१४}। बहेन्हि^{१५} दय^{१६} बत हमहि बिछोए^{१७}।
 अस दुहु हिये^{१८} हतु^{१९} उदगरा^{२०}। एक न छाड़ एक कर^{२१} गरा।
 रोइ रोइ बंठ^{२२} लगहि नैन पुबहि^{२३} अप्रधार।
 निजु जानहि^{२४} अब नाही जियत^{२५} मिलन^{२६} मयसार^{२७}॥

गाथांतर—(१) १ रा पुनि इन्ह (वे दूसरी बाली) या इह पुनि ए पुनि पुनि। २ ए गाऊँ। ३ मा बरेसि भा घरे, ए बहेसि। ४ ए पाऊँ।

(२) १ मा भा येह। २ ए पुनि रा येवह सख नही है। ३ मा लागत रोइ ए लागि जीव भा लागि घरे रोइ।

(३) १ मा मिहि। २ ए बिब। ३ मा मेरजी ए मेरबा। ४ मा इन्ह ए येह। ५ रा पीर न जानी भा परान पानी।

(४) १ मा दुही कुमार लाग गिय जाये ए दुही कुमार लागि गीब रोये। २ मा बहेन्हि ए बहेसि। ३ मा भरत बिछुराये ए हमने बिछोए, भा मेरद बिछोए।

(६) १ मा मा मधुमासति गै बुझी ए मधुमासती बुझी। २ मा बहु।

(७) १ मा मा ततहु बुझहि मदन (लोग—मा) जलधारा ए तव बुझी नैन
बाल भर, रा तयहु बुझहि जत। २ ए पाछिनि।

अर्थ—(१) दोनों कुमार [परस्पर] गले लगकर रो रहे थे वे विधोय की अग्नि के कारण विमुक्त नहीं हो सक रहे थे। (२) मधुमासती ने जाकर उनके गले छुड़ाए, और दोनों जनों को रोते हुए [एक-दूसरे से] अलग किया। (३) उसने कहा, 'तुम [दोनों] जन-परिजन के स्वामी हो [हिर] कैसे (क्यों) स्त्रियों की भाँति रो रहे हो?' (४) जो भारी धर्मवान् पुरुष होते हैं वे बोझे [ही] कुछ से मुक्त नहीं होते हैं। (५) हम अबला हैं इसलिए हमारे बिल में बुद्धि बोझी है बोझे कुछ से हम [अवश्य] बावली हो जाती हैं [हमारी तरह तुम लोगों को न हो जला चाहिए]।"

(६) मधुमासती ने दोनों को बहुतों के कुछ—सन्नेह (समुदाय) के साथ अलग किया (७) हिर भी [दोनों के] नेत्र पिछले स्नेह को समस्त [समस्त] कर अशुभारा बूझते रहे।

टिप्पणी—(१) गिय < गिब < धीबा। (२) साईं < स्वामी। (३) बावर < बावल < बागुल < बावला।

[५२२]

हम दम्भ दहु^१ अबला जाती। सहा बिछोह^२ बख ब^३ छाती।
हम दुख जनम न जानिन्हि बन्हा। एक जाना जो^४ सिर चडि बसा^५।
बना होत जो^६ आगि ब वार^७। तव आवत बसु लोर^८ हमार।
माता पित^९ जनम हम सारा^{१०}। भूजब जो किछु^{११} सिखा^{१२} लिखारा।
तुम्ह पूछ्य होइ^{१३} रोबहु एतैं^{१४}। धीरज धरहि^{१५} हम अबला कैसे^{१६}।
तुम्ह^{१७} पुहुमी पति चाहिय^{१८} बख ब^{१९} हिया तुम्हार^{२०}।
हम अवग^{२१} दहु^{२२} किमि सहा बिछुरन दुख अपार ॥

पाठान्तर—(१) १ ए तुह। २ मा भा बिजोय ए बिबाय। २ मा देह, ए कै।

(२) १ मा अब जाना जी। २ भा मै यह अबला नहीं है।

(३) १ ए मा अब मा अब। २ ए बारे। ३ मा अमु, भा आमु।

(४) १ मा ए रिता। २ ए जन मब मंगारा। ३ मा कुछ। ४ मा बंक।

(५) १ मा तुम्ह पुरमा मै रा तुम्ह पूछ्य होइ, ए तुह पुर्ब मै। २ ए ऐसे।
३ भा भरे ए बरहि। ४ ए कैसे।

(६) १ ए तुह। २ ए वाली मा ठापुर। ३ मा का। ४ ए हिरदी तोहार।

(७) १ ए बहु मा बुल। २ मा ए सहहि रा सहनि। २ मा बिछुरनि।

अर्थ—“(१) हमें देखो कि अबला जाती की हैं [किन्तु] हमने विधोय को छली पर बख रत कर सहन किया। (२) हमने कभी नर नहीं जाना था कि कुछ कैला होता है हमने उसे सभी जाना है अब यह [अज्ञान] हमारे सिर पर अब बँधा है। (३) अब आग जलाने पर बुझी होता

या तब हमारे बन्धुओं में आँसू आ जाने थे। (४) माता-पिता ने हमें जन्म दिया [बिनु] हम भोगें तो बही को-मुष्ट [हमारे] लप्पाट में लिगा हुआ है। (५) तुम पुण्य होकर इस प्रकार रोने हो [तो] हम अबमारे किस प्रकार धैर्य धारण करेंगी?

(६) तुम पुण्योपनि ह। तुम्हारा हृदय बग का [होना] चाहिये। (७) [देनो] हि हम अबमारे ने बिछड़ने का अपार दुःख किस प्रकार सहन किया।

नियमी—(२) (३) जी < उठ < पडा = उब। (४) कार [६] = आँसू। (५) निहार < निम्हा < मग्न। (६) पुण्यी < पुण्यी। किया < हवर।

[५२३]

मधुमासनि सोयन जल भरी। नागचक्र का पायल^१ परो।
 बंदर हनु राठ^२ बबुरि उगाई^३। गमुमि बिछोह^४ का ल साई^५।
 मधुमासनी रोइ गइ बह^६ बाग। त मां जनम जोउ^७ का दाता।
 माइ बाप ही^८ जन्मि जगार^९। वार^{१०} माहि ल तु प्रणिपारी^{११}।
 मिनद क^{१२} मिरम^{१३} हुती^{१४} म आमा। तुम्ह^{१५} माहि मर नैन्ह परमाया।

राजपात्र सभ छाड़ा तुम्ह मां क्रिय लागि^१।

पड़ा क^२ मां बुझाइहि^३ जगत हिन उर^४ आगि ॥

पारम्पर—(१) १ मा पाय भी ३ पाय भी।

(२) १ मा ग मा ल नी। २ ग उगाई। ३ मा ममुमि विछोहा का बबुरि बिछाई।

(३) १ रा रोइ का मा रोइ रोइ बह। २ मा मा विमल ३ बीरन।

(४) १ रा ए हव। २ ल जन्म अंकारी। ३ मा बी। ४ मा मा नी ए ली। ५ मा प्रणिपारी।

(५) १ मा मा ल विमल बी। २ ल बीरन का मरि म। ३ मा मरि ल मरी। ४ ल म म मरी है। ५ मा मा ल म।

(६) १ मा ल मा आमा (आमा—ल) नी (नी—मा ल) पाया (पाय—ल) माहि (माहि—ल) लागि।

(७) १ मा मीरम ल मरम मा मीरम। २ मा बग ल बजार मा मरम। ३ मा मरि म मा ल मरि बी।

मधु—(१) मधुमासनी केनों में आँसू बरबर ताराचर के बीरों में बही। (२) बुझा (ताराचर) के अंश में बुझाते (मधुमासनी) को उड़ाया और [आग] विषय का भयानक उसे लेकर गले में लगा लिया। (३) मधुमासनी रो-रो कर बाप बहने लगी “तुम मेरे जन्म (भोग) और धीर के दाता हो। (४) माता-पिता ने [तो] हमें जन्म देकर इस (दुःख) दिया है। (५) मां जनम जोउ का दाता (पारम्पर-बीरन) दिया। (६) [मरिपारी] ने विमल के ली में जन्मा [मंभ] मरी बी [बिनु] तुम्हारे विभावर मर पर का निदान दिया।

(१) मुझने मेरे जीव के लिए राज्य तथा सिंहासन छोड़ा (७) [अतः] मेरे हृदय में [तुम्हारे बिषय की] जो भाग बात रही है वह कहीं के गीर (अन्त) से बूझो या ?”

टिप्पणी—(१) सोयन < सोयन = नेम । (२) बात < वता < वार्ता । (३) पाट < पट्ट = सिंहासन । (७) हिय < हृदय ।

[५२४]

कसँ मेँ जमु भरिहो^१ भारी । तुम्ह^२ अब मगर^३ बसहु^४ जिय^५ मारी ।
जसँ पास^६ गए मोहि^७ आई । मरनिउ कतहु जाइ वीरई ।
पुनि^८ कत माइ^९ आप घर औसित^{१०} । कतहु जाइ क जीउ^{११} गबौतिउ^{१२} ।
मोहि घर बास^{१३} बीर तुम्ह^{१४} दीन्हा^{१५} । पछि^{१६} रूम सेउ^{१७} मानुस कीन्हा^{१८} ।
बट जिउ रहत बीर तोहि देखें^{१९} । आयु उजार^{२०} अगत मोहि^{२१} सलें ।

परिहरि सम^{२२} परिवार आपना^{२३} बीरन पर भुइ जाहि^{२४} ।

अब बिछुरन^{२५} हुत मोहि तोहि^{२६} आस भिसन क^{२७} नाहि ॥

पाठान्तर—(१) १ मा भा बींसे (बींसे—मा) यह (इसह—मा) ए बींसे एह । २ ए भरिहो । ३ ए तुह । ४ ए मोहि मग मा मोहि मगर, मा मोहि मगर । ५ मा बसेहु ए बसे । ६ ए बीव ।

(२) १ मा बींसे पव ए बींसे पास । २ ए मा मो वन ।

(३) १ रा ए पुनि । २ ए माय । ३ मा आपसि मा आपसीउ । ४ ए बीव । ५ मा गबौतिउ मा गबौति ।

(४) १ रा बार । २ मा मा टी ए माहि । ३ ए बीन्हा मा बिही । ४ मा पंपी । ५ ए रा छी । ६ ए बीन्हा मा बिही ।

(५) १ ए बिउइ बुल बैल । २ मा उवारि । ३ मा मोरे, ए मोहि ।

(६) १ ए मग । २ मा अपना ए आपन । ३ रा अब पर भूइ हम जाहि ।

(७) १ मा ए मा बिछुरे, रा बिछुरन । २ ए मोहि तोहि मी रा मन मोहि तोहि, मा हुते मोहि तोहि, मा हुत मोहि तोहि । ३ मा ए बी ।

अर्थ—“(१) मैं बींसे भारी जग (जीवन) भरेगी (काफ़ी) [जब कि] अब तुम मेरे जीव को बार कर [अपने] मगर को आ रहे हो ? (२) [इसमे तो अर्पणा रहा होता यदि तुम न मिले होते और] जैसे ही मुझे वन आ मिलते थे मैं वहीं जाकर बावली होकर मर गई होती । (३) फिर मैं माता-पिता के घर कहीं (कहीं) जाती ? वहीं जाकर मैं अपने जीव को रंभा देती । (४) मुझे घर का निवास है आई तुम्हीं ने दिया और यही कब से अनुरूप किया । (५) मेरे मरीर में जीव है आई तुम्हें बैल कर रह रहा वा [अतः] आज मेरे कैल कब उजाड़ है ।

(६) है आई, अपना सब परिवार छोड़कर हम परब्रूमि को आ रही हैं ; (७) अब इस विषय से [मुक्त होकर] मेरे-तुम्हारे भिसने की आशा नहीं है ।”

टिप्पणी—(१) जम < जम < जम = जीवन । (२) पास < पस < पस = पर, ईना ।

[५२५]

अनि पछि^१ क हौं^२ बनबामी । बही जाति थपु^३ बोर^४ उदामी ।
एहि अरर जो दगउ तोही^५ । उपजा पुम्ब पम त्रिय^६ माहा ।
प्रास मणि^७ म यमिउ आई । यामिउ^८ मरनि जाउ बर जाई^९ ।
मुम्ह^{१०} माहि मणि^{११} अनि माहम^{१२} बीन्हा^{१३} । रात्र माहाग म्म माहि^{१४} दीन्हा^{१५} ।
किछु न आम त्रिउ क हूति मोही^{१६} । बोर मिछि भइ^{१७} माहम तोही^{१८} ।

राइ रोइ फिनि^१ पकरमि लागन^२ क पाइ^३ ।

बुवर साइ गिय ममना^४ जम ममद^५ बहिनि बर^६ भाइ ॥

पठान्तर—(१) १ मा ए पवि। २ मा रा ए माहि। ३ रा हुनि मा बी ए मोहि।
४ ए मा बिम्ह।

(२) १ मा बणी मैरी ए मैरी लागी। २ मा उपजी कुब ए उपजा पूर्व।
३ मा ए त्रिब।

(३) १ मा केइ मा बीन। २ मा बीमा ए बीमी रा बीन्ड। ३ ए बामी।
४ मा आम मुम्ह जाइ ए सात्र मुम्ह जाई रा आम अम्मा^१।

(४) १ मा मा ए मै। २ ए रा लागि। ३ मा अनि म्म मा अग मात्रम
रा माहम ए ज माहम। ४ मा ए बीन्हा। ५ ए माहि। ५ मा ए
दीन्हा।

(५) १ मा मम त्रिउ आम न त्रिय हुनि बोरें मा बुउ आम बरि त्रिब मागे रा
त्रिउ न आम त्रिय कै हुनि मागी ए त्रिउ आगा त्रिउ म्म [न मरी] मागी।
२ ए त्रिय मी। ३ मा मागे ए मोरी।

(६) १ मा राइ बहुरि ए पौरि बरनि। २ ए पौरि।

(७) १ मा मा ए उर ममदें। २ मा त्रिमि मम^३ रा दीनैं। ३ ए ने
ए बी।

अर्थ—“(१) अमनी मे बानी [बना] कर मुझ बनबाम दिया और हे आई मैं [बीचन मे]
उदामीन होकर बनी आ रही थी। (२) इसी बीच अथ मैंने मुम्हें देना मेरे बी ने पूर्व [आम]
का प्रेम [पुन] उत्पन्न हुआ। (३) आगा [बी पुनि] के लिए मैं आकर बैठ गई बरि
आकर कमपुर्वक [आम मे] बस गई। (४) मुम्हने मेरे लिए अथर्विह लाग्न किया और म्मो
[मेरा] राज्य लीलाग्य [मेरा कमि] और [पूर्ववर्ती] रूप दिया। (५) अम बीच [बीचन]
की कुछ भी आगा मरी थी, किन्तु मुझ हे आई मुम्हारे लाग्न मे लिउ [प्राप्त] हुई।”

(६) रो-रो कर उमने पुन लागबंद क बर बरु (७) और बुवार (लागबंद) मे
[उत्तरी] गले लगाकर उसे [उगी प्रकार] बिदा दी त्रिम प्रकार आई बरिब को बिदा देना है।

पिप्पली—(२) पुम्ह < पुम्ह < पूर्व। (३) वद < वदन् < वदन्। (४) मा < मोम्मा।

[५२६]

उग मा पमा उर आगा । रा मनाम क म्मि^१ म्मा ।

कहमि समुझि^१ तोहि^२ बिछुरन पीरा । कसैं^३ जनम निवाहव^४ वीरा ।
 जो^१ सुम्ह^२ रूपमजरी^३ डारा । तेहि^४ दिन रोइ गवाइउ सारा^५ ।
 प जिय आहि^१ मिलन क^२ आसा । मिक^३ आइ मोहि धटहुति^४ सांसा ।
 जय बिछुरन हुत^१ आस न मोही^२ । जीयत बहुरि मिलन^३ नहि होही^४ ।
 कटुन बियोग^१ न जानिउ जो^२ मखउ^३ तोहि^४ पास ।
 अब तोहि^१ बिछरै^२ वीरन में सुठि^३ भई निरास ॥

पाठान्तर—(१) १ ए के बीच आ कें वां रा के उर ।

(२) १ ए समुझ । २ मा इजह मा यह, ए में यह शब्द नहीं है । ३ ए कैंते । ४ मा बछोहा मा निवाहल ।

(३) १ रा जनम मा ए जब । २ ए तुह । ३ मा बादे, ए मा डारी । ४ ए ता । ५ मा यवाये धारी ए गैबावा डारी ।

(४) १ रा जीयत नाहि, मा वै जिय अही ए वै जिय आइ । २ मा की । ३ मा मिकहु । ४ मा मा ए जी बर होनी (हुती—ए हुत—मा) सासा ।

(५) १ मा बिछुरे हुत मा बिछुरे हुने ए बिछरन व । २ ए माही । ३ मा मा में मिकरी तोही ए ना मिकरी तोही ए ना मिकरी तोही रा में (< मिलन) नहि होही ।

(६) १ मा ए वीरन । २ ए जानी । ३ मा अब देपउ ए अब देसा । ४ ए तुम ।

(७) १ मा तुम्ह, ए तुह मा रा में यह शब्द नहीं है । २ ए बिछुरे, मा बिछरन । ३ रा ए जो ।

अर्थ—(१) [जब] वेना के हृदय में मोह की आग लठी और वह रोकर मनोहर के घने लप गई । (२) उसने कहा “तुम्हारे बिछुरने की पीड़ा को लगभगते हुए, हे भाई मैं कैंते जनम निमाऊँगी ? (३) जब तुम्हें कर्मजरी ने [दूर] आस (इलका) दिया मैंने उस दिन रो-रोकर [जीवन का] धार (धूल) गँबा दिया । (४) किन्तु [मेरे] जी में मिलने की आशा की और मेरे धरीर में साँस की [तभी] तुम आकर मिल गए । (५) [पर] अब [इस] विनोद से मिलने की आशा मूल नहीं है और जीते जी पुनः मिलना न होगा ।

(६) [माता-पिता से बिदा होने पर भी] अब तुम्हें पास में देसा मैंने कटुन का बियोग नहीं जाना (मुला दिया) ; (७) [किन्तु अब] तुम्हारे बिछुरने पर, हे भाई मैं आत्यधिक निरास हो गई हूँ ।”

टिप्पणी—(१) (६) जी < जउ < यदा = जब । (६) पास < पारस ।

[५२७]

आज क^१ नि निधि कन निर्माणउ^२ । जहि बिछरन कर माउ^३ मुनाणउ^४ ।
 पम गियार जो^१ पिछुराहा^२ । सा दिन जानु जियन^३ मह नाही ।

छोय कटुव सम बिछरा^१ माही^२ । बीरन रहिउ लाइ जिउ^३ मोही^४ ।
मुम्हुतु बलहु^५ अब मोहि^६ परिहरो । जित घट रहन न दगौ^७ घरी ।
पीरज बरन जीउ ताहि दनि^८ पामा । आनु बीर तजि भएउ^९ निगमा^{१०} ।

बिछुरन^१ तिल निल भरन ह जग जान मभ^२ राग ।

ए त्रिभि^३ बाहु न दहि जग^४ जीवन मध^५ बिभाग ॥

पागलर—(१) १ रा बा। २ भा निरमउ (< निग्माउ) रा निरमण्ड, ३ भा निमपि।
४ ए जो बिछरन की नाम भा रा अहि बिछरन कर नाठ। ५ रा जो
पएउ भा मुनाठ ए भा मुनापे।

(२) १ भा शिपिम जी २ जीनि अबही भा जीनि मुनि (२)। २ भा वहि
बिउगरी भा अब बिछरही। ३ भा आनु बिपन भा जन जीवन ॥
आनु बिभन। ४ ए भा।

(३) १ भा सब बिछरन ॥ जी बिछरन रा मभ बिछरे। २ ए माही।
३ भा ॥ रीमा-जिउ (गीर-॥) रा महिउ मागि निव। ४ ए माही।

(४) १ भा मुम्हुतु बलहु ॥ मुम्हु बल। २ ॥ माहि। ३ भा दगौ।

(५) १ रा पीरज बरन जीउ ताहि ए पीरज बरी ऐनि राग। २ भा
मुनि भएउ भा मुनि भई ॥ मी भई। ३ ॥ उगगा।

(६) १ भा भा बिछो- ॥ बिछाह। २ भा म है गरी है। ३ ॥ गब।

(७) १ भा य त्रिभि ए मेह त्रिभि। २ भा भा. दनि जनि ॥ दह जनु। ३
भा भा जीजन मग ॥ जीज राग। ३ भा ॥ बिभाग।

धर्य—(१) आज का दिन बिचाता है कहां (क्यों) निमित्त किया [या] कि प्रसन
बिपोग का नाव मुनाया? (२) अब (जित दिन) प्रेम-प्रिय बिटुने हैं वह दिन आने जीवन
में नहीं रहता है। (३) लोक (प्रजा वर्ग) बीर बुद्धि—सभी मूलम बिपुल गया था फिर भी
है भाई मैं तुमसे [अपने] जीव को लया [जीवित] रही। (४) [बीर] अब तुम भी कुसे
छोड़ कर जा रहे हो इसलिए मैं बीव को शरीर में एक छोड़े भी रहना नहीं देव रही हूं। (५) तुम्हें
नाम में बेतकर देरा बीव धर्य करता, [बिपु] है भाई तुम्हें छोड़कर आज वह निगता हो गया।

(६) बिपुल हीमा तिल-निल का (तनिक-अनिक करके) करता है यह ब्रह्म में सभी लोग
आने हैं; (७) [इतलए] है बिचाता किसी को भी मु जीवन [देने] के नाव बिपोग न है।”

निपनी—(२) शिगर<शिगार=प्याग। बिगन<बीवन। (५) नाम<नाम।

[४२८]

रा^१ जानी हो^२ तं यन गरी । अनि मयन दयन अगिग^३ ।

मां गदि म^४ मोम मभ भाग ।^५ मार^६ जाग^७ रागय यगियाग ।

मां गिगामर मां ॥ भाग^८ । शिगग मभ^९ पगियाग मगियाग^{१०} ।

अर मग जाग बाग मां^{११} राग । बाग यम मां^{१२} भर भाग^{१३} ।

भाण्ड^{१४} शिग^{१५} मां^{१६} तां^{१७} भाग । मय^{१८} निगय मभ भाग

यह^१ कहि छाडि^२ कुवर कठ मधुमालति गिय^३ लागि ।
विछुरत^४ जनम सवातिनि^५ हिय परजरा^६ जो^७ आगि ॥

- पाठांतर—(१) १ मा सेह। २ रा मोहि। ३ ए देव अघ्यारी मा दिवस अधिमारी।
(२) १ रा मोहि स्मि तुम्ह हु सहा बुल मारी मा मोहि स्मि बीठ सीस सन मारा
मा माहि लागी सहीहु सीस सन मारा ए मोहि स्मि सहे बुल मारा। ३ ए
मारे। ४ ए सो मा जस। ५ रा बरियारी।
(३) १ ए मोहि के आवे। २ ए भा सब। ३ ए मिलाये रा मिलाएहु।
(४) १ ए अब तुह चले बीर हम। २ भा डारें। ३ भा भा मोर आज जसारी
(जसारे—भा) ए दुखी जसारी।
(५) १ ए जो। २ भा बिछोवा। ३ भा यह। ४ ए करो। ५ भा बिद।
(६) १ मा इबही ए येह। २ ए कठ छोडि। ३ ए कै।
(७) १ रा बिछरन। २ भा सवातिह रा सवाती। ३ ए हीवर जरी भा
हियें बरपी। ४ भा म यह सख नहीं है।

अर्थ—“(१) शमन ने मे [जा] कर मुझे उस वन में डाल दिया था जो जति जसूम था
और जहाँ विषस में भी अंधेरी रात का अंधकार रहता था। (२) [किंतु] मेरे लिए तुमने तिर पर
समस्त भार सहन (बहन) किया और बीसे बली राजस को मारा। (३) [जस] मित्रावर को
मार कर तुम मुझे ले आए और तुमने मेरे बिछड़े हुए समस्त परिवार को मुझे मिलाया। (४) [यही]
तुम है भाई जब मुझे डाल (छोड़) कर जा रहे हो [इतलिए] बीषण और जगम सेना मुझे
जब मार [स्वयं] हो रहा है। (५) मुझमें-तुममें है भाई विषय हो रहा है [जब] मैं
किते देस कर मन को बीरज बेधाऊँगी?”

- (६) ए कहकर और कुमार (मनोहर) का कंठ छोड़कर वह मधुमालती के पले लग गई
(७) जब जगम की सीपनी के बिछरने के समय उसके हृदय में [मोह को] आय प्रवृत्ति हुई।
टिप्पणी—(६) निव < गिव < गीवा। (७) जो < जत < जथा = जब।

[५२९]

कवरि^१ दुखी रोवहि गिय^२ लागी । आवि^३ प्रीति विछुरत फुनि^४ जागी ।
बहिम्हि^५ आनु हम^६ मिलन निबरा । आनु उदधि हम बिहारा^७ बेरा ।
आनु वम हम दुखी^८ बगराई । आज कृप सजि मईनि^९ पराई ।
बाले जो^{१०} दय एक संघ^{११} रासी^{१२} । भए जीवन हम दिसि दिमि मासी^{१३} ।
मिऊनिहि^{१४} महु^{१५} अग बिछु^{१६} मा आई । कोइ पूरब कोइ पछिय पछाई ।^{१७}
सगरी गए व दिन कलि निन^{१८} सायपम^{१९} मृत चात ।
मोहि तोहि^{२०} आनु बिछोवग^{२१} जियत न सूझ^{२२} मराउ ॥

- पाठांतर—(१) १ ए कुंवर। २ मा गले ए गीब भा मफ। ३ रा माहि। ४ मा
विछग्न जान मारी रा बिछुरल पुनि जागी ए जो बिछुरल लागी भा
बिछुरत जिय जागी।

- (२) १ रा कहिन ए कीगह। २ ए म यह राख नहीं है भा मुगं।
३ मा महि बिहरी ए मह बिहरा भा मह बिहरेउ।
(३) १ मा ए पाउ रा दुद। २ मा मई।
(४) १ ए बनी जा रा बी सहि। २ मा भा ए संग ३ मा ए रागी।
४ भा आनि जावन हम बिमि बिमि मारी मा बीनी जोवन हम दिमा मारी
ए भी जीवन ती द दिम मानी।
(५) १ मा मिलनेह, ए मिय त। २ ए म यह नहीं है। ३ ए बछ।
४ ए काउ पूरब कोठ पछिम जाई रा काइ पूरब कोठ पछिम बमार्द।
(६) १ मा लगी मय बेइ कलि दिन ए राती दिन मदेउ एव मग दिन। २ मा
ओ बाल ए बालापन भा बी बाल।
(७) १ भा हम बह। २ ए बिछावा रा बिछोहा। ३ ए मूमत नाहि।

मर्थ—(१) दोनों कुमारियाँ [परस्पर] गले लप कर रो रही थीं उनकी मादि (बचपन से) प्रीति इस विषय के होने के समय पुनः जाय उठी। (२) उन्होंने कहा 'आज हमने मिलना निश्चया (मह) हमारा अंतिम मिलन है) आज समूह में हमारा बेड़ा (जहाज) अलग-अलग हो गया (३) आज ईश ने हम दोनों को दो स्थानों पर कर दिया आज हम [अपने] बूट ब छोड़कर पराई हो गई। (४) बचपन में भी (जहाँ) ईश ने हम दोनों को एक साथ रक्ता [वहाँ] जीवन में हमें भिन्न भिन्न दिशाओं से ढाल (फेंक) दिया। (५) हम दोनों मिल ही जाए थे कि एता कुछ हुआ कि एक पूर्व से दूसरी पश्चिम की ओर बल्लाई गई।

(६) हे सती मे कलि के और बचपन के मुग-उमय के दिन जाते रहे (७) ममता तुमसे आज [एता] विषय हो रहा है कि बीते की मिलन [होता] नहीं जाय बड़ रहा है।"

श्लोक—(१) गिय < गिय < गीबा = गमा। (२) निबर < नि + बाप < निगमा समाप्त करना। बिटर < बि + प = टटना अलग अलग होना। बग < मगर [४] = बड़ा उड़ा नावा। (३) बगरा < डि + ब = अलग कर देना। (५) पूरब < पूर्व। (५) पछि < पश्चिम। (७) मिराउ < मिलाव = मेल मिलन।

[५३०]

ममा^१ दिम^२ हम^३ मिला^४ नीऊ^५। आजु^६ त^७ आगा^८ म^९ गोज^{१०}।
रह^{११} जीउ^{१२} मागा^{१३} तोहि^{१४} ताइ^{१५}। बब^{१६} म^{१७} त^{१८} हाइ^{१९} एव^{२०} टा^{२१}।
बब^{२२} गमहि^{२३} जा^{२४} अग^{२५}। बब^{२६} म^{२७} गमहि^{२८} पिपगारा^{२९}।
बनि^{३०} शान^{३१} मन्^{३२} पर^{३३} अन्^{३४}। ना^{३५} मोहि^{३६} पिपगम^{३७} मन्^{३८} [मो]^{३९} मन्^{४०}।
मन्^{४१} आ^{४२} मन्^{४३} मन्^{४४} मन्^{४५}। मन्^{४६} मन्^{४७} मन्^{४८} मन्^{४९}।
मनुमासपी^{५०} बनगि^{५१} गोना^{५२} ममा^{५३} पु^{५४} गोना^{५५}।
ममा^{५६} मो^{५७} मप^{५८} ममु^{५९} मन्^{६०} मन्^{६१} मन्^{६२} ॥

वाक्यान्तर—(१) १ मा ए दमग। २ मा मिला ए मिला। ३ मा मा आज दु ए आजु। ४ मा आज। ५ मा आज। ६ मा आज। ७ मा आज। ८ मा आज। ९ मा आज। १० मा आज। ११ मा आज। १२ मा आज। १३ मा आज। १४ मा आज। १५ मा आज। १६ मा आज। १७ मा आज। १८ मा आज। १९ मा आज। २० मा आज। २१ मा आज। २२ मा आज। २३ मा आज। २४ मा आज। २५ मा आज। २६ मा आज। २७ मा आज। २८ मा आज। २९ मा आज। ३० मा आज। ३१ मा आज। ३२ मा आज। ३३ मा आज। ३४ मा आज। ३५ मा आज। ३६ मा आज। ३७ मा आज। ३८ मा आज। ३९ मा आज। ४० मा आज। ४१ मा आज। ४२ मा आज। ४३ मा आज। ४४ मा आज। ४५ मा आज। ४६ मा आज। ४७ मा आज। ४८ मा आज। ४९ मा आज। ५० मा आज। ५१ मा आज। ५२ मा आज। ५३ मा आज। ५४ मा आज। ५५ मा आज। ५६ मा आज। ५७ मा आज। ५८ मा आज। ५९ मा आज। ६० मा आज। ६१ मा आज। ६२ मा आज।

- (२) १ ए रहा भा होठ। २ भा भा तोरे ए तोरि। ३ रा हम तुम हाथे
मा भा मैं तै होवे ए मैं तै बैठव।
(३) १ मा भा सेकति मैं कै (बहि-भा) कबहु ए लेखत गये जो कबहि।
२ मा कबहु मैं मुछती ए कबहि मैं कबहि। ३ भा चितसारी।
(४) १ मा मानुस के येही भा मानुस कर आही ए मानुस कर आहा।
२ मा तोहि मोहि बिछुरत मिलन तरेही भा तोहि मोहि बिछुरत हुस भट
दाही ए तोहि मोहि बिछुरे कठिन बिछोहा।
(५) १ भा मे ए मैं भा ली। २ ए होउ भा बुनी। ३ मा सवाई ए
छोवाई। ३ मा रोबतेह भा रोबताहि। ४ ए रोहि पाककी बड़ाई, भा
लै पाककि बैसाई, रा लै पाककि बैठाई।
(६) १ ए भा कम्पा पिरि। २ ए म बह छव नही है। ३ भा पुषवनेरि
ए परवतनेरि भा पुरपेनेरि।
(७) १ ए बसिहि। १ भा मे यह छव नही है। ३ भा मा ए संग। ४
ए गुनी। ५ ए जो सेरि।

अर्थ—(१) हम दोनों आस के बिग (गहीने-गहीने) बर मिलती रहती थी [किन्तु] आज
से बह आधा भी गई। (२) [अनो लक] की तुम पर (तुम्हारे लिए) लया रहता था कि कब हम
तुम इकट्ठी होगी। (३) [मिलने पर] कभी अदारी बर आ कर लकती थी तो कभी चित्रसारी
में आकर सेकती थी। (४) [किन्तु] मनष के प्राण भी [चितने] कठिन [होते] हैं कि वे
तुम्हारे-हमारे मरन-मृत्यु विषय को [भी] सहन कर रहे हैं। (५) कुमारी ने आकर दोनों के
मते छड़ाए, और उन्हें रोती हुई से आकर पालकियों पर बिठाया।
(६) मधुमासती कर्नगिरि (कनक पिरि) गई और वेना पीनेरपुर (पधनपरपुर)। (७)
वे [अपने-अपने] पति के साथ भागके ली अबसेरी (अबसाव ?) की छोड़कर बस पड़ी।

टिप्पणी—(१) अदारी < अटारम < अटारक = प्रथम का ऊपरी भाग। (४) मगई
< मानव। (६) कनी < कचव < कनक। पी < पध + पीरि < नगर। (७) अबसेरी < अबसेव
(?) = बसप्रान।

[५३१]

तारारबंद मानगढ़^१ साका । कुंवरसा^२ टांड^३ कनगिरिहाका^४ ।
चलत बरिस^५ दुइ पय ओरामा^६ । आइ कनगिरि^७ गढ़^८ तियराना ।
कनक पत्र सभ^९ मदिल काए^{१०} । जगमगाहि त^{११} अति रे सोहाए ।
बावन सहस^{१२} मंगूरा गढ़ा^{१३} । मो सभ रतम^{१४} जराइन्ह^{१५} जरा ।
सूर जोति^{१६} जय^{१७} भाग साई^{१८} । अधिकी वर जोति धमसाई^{१९} ।
भीतर गारह^{२०} कोम सहि दगगति^{२१} गढ़^{२२} बिस्तार ।
दम जोदन सहि दगिय^{२३} बरत^{२४} मन्सि^{२५} ममिआर ॥

पाठांतर—(१) १ मा नहर (< नगर)। २ रा मे 'कुंवर नहीं है' राय म गा' नहीं है।
३ मा टांडा ए कांड। ४ ए. हाहा।

- (२) १ भा. एक। २ मा बोधना। ३ भा बस्यागिरि। ४ मा गह (< गरुह)।
 (३) १ ए मे यह शब्द नहीं है। २ मा भा मदिर (मदिर—भा) माय
 ए मदिर समाय रा महन जराए। ३ ए ती। ४ भा अनी।
 (४) १ ए महय। २ मा घरा ए घरहा (गरुहा)। ३ भा वनव।
 ४ मा भा जगहम्ह रा जहाइहि ए जगवम्ह।
 (५) १ मा भा मूकज जाति। २ ए जी लामै मा माग जब। मा जाई।
 ४ मा भा हाइ माने (गातेहि—मा) ए गीह देगि। ५ मा ना जाई।
 (६) १ रा ए बाहर भा बारह। २ मा कहि रा हम ए मी मा रं।
 ३ ए बगनी। ४ मा बर।
 (७) १ ए मगि देखी मा हम दखिय मा सहि देगिरी। २ रा निमि दिन।
 ३ रा भा मदिर। ४ मा मनिवार रा उजियार।

अर्थ—(१) ताराचंद मै मानवर्ष की ओर [जाने के लिए] दृष्टि की ओर कुमार (मनाहर) मै अपना टीका (सार्थ) कनकगिरि की ओर बसाया। (२) बी वर्षों तक अस्ते-अस्त माग और (समाप्ति) पर आया और कनकगिरि गढ़ निष्कट आ गया। (३) रामस्त धरिरी (प्रासादी) पर सोने के पत्र सवे हुए वे जो अवतल लुहर लगते हुए जगमगा रहे थे। (४) बावन सत्य वंगूरे मनुवर बदाए हुए वे और वे लमी वस्त्रों के जडावीं से जड़े हुए थे। (५) गुप की अ्याति जब [उन पर] आकर लगनी थी तब वह क्योति और अधिक अमारवार करती थी।

(६) भीतर बाटु कोस तक गढ़ के विस्तार वं बली [कंभी हुई] थी (७) ओर उत्तर धरिरा (प्रासादी) में जो बगाने जलमी थीं वे इस योजना (योजन=४ कोस) तर दिवाई चढ़ती थीं।

श्लोक—(५) अवसाई < अवगृहि। (७) मगिबार < मगान [ग]।

[५३२]

यति मर गरा व मन्त्र भवारी । गन निधानु ब्रूपाय सवारी ।
 गन्त्रमान गउ विग भवाई । परब जान इन गांग अगन् ।
 वरर गय इन आवन जहो । महन जान हुन मारग तहो ।
 गगन निगि उह भई बिहारी । हुनहु उनगि कीहि अपारी ।
 पूछिनि मना गिता बगलाई । सो बुझावनि बरब जा ता ।

मना गिता कर बमल । मुनि त्रिय मरु भगउ हगम ।
 गुनन गवन भाग हिय रउ न गरी याम ॥

श्लोक—(१) १ रा. राजावर लव महन मा भा ए घरा मर (मा—ग) राजन मरवा
 (राजा व मन्त्र—ग राजन मय—भा)। मा दुनी। ३ मा मीरी
 नाउ ए जा माय रा मा नाउ। ४ मा दिशारी।

() १ मा मो ए मो ग मे पर द्य नहीं है। मा ए एन (< ए—
 गायत्री निर)। ३ मा ए वय मलाई रा वय अगन् ।

- (३) १ मा म बह धम्य नहीं है ए होत (<हुत : फारसी (लिपि) । २ मा मह्य मा ए मह्या। ३ ए होत (<हुत : फारसी (लिपि) मा ह्य।
 (४) १ रा परी। २ मा उम ए ओ। ३ ए मी। ४ ए हुनी मा हुई जम। ५ मा कीन्ह ए बीन्ह।
 (५) १ मा पुछही था पुछी ए पूछत। २ मा माता रा मात ए, मात। ३ ए कुसक मा कुसकात। ४ मा को पार्ई, था ए की पार्ई।
 (६) १ रा मात पिता कुसकात मा माता पिता कुसक ए मात पिता की कुसक। २ मा कीउ कुयरि जवाह ए मन मी मी जवाह मा मन मह भएउ अनंद।
 (७) १ मा रा ए सवन। २ मा बब। ३ मा मे बरन का पाठ है सुनि अनव मा हिमबर परत सुवन सुप चाह ए मे है सुनि के अनव जिब मा परा सवन सुन चाह।

अर्थ—(१) इसी (इतने ही) मे राजा का एक भंडार का भंडारा (महामास्य) को पुन विपान सिवारी कहुलाय या (२) [कनैगिरि के राजा] धुर्योधन से बिदा भैया (कै) कर [किस्ती] पर्व [के प्रसंग] में नया-स्नान के लिए जा रहा था। (३) कुमार जित्त मार्ग से आ रहा था भंडारा (महामास्य) उसी मार्ग से आ रहा था। (४) दृष्टि पड़ने ही जममें [अपस में] परिचय हुआ (एक ने दूसरे को पहचान लिया) और दोनों ने [बागों से] वसर कर अंकवार की। (५) [कुमार ने] माता-पिता की कुसकता पूछी और अहाँ तक कुट बी के उनकी कुसकता पूछी। (६) माता-पिता का कुसक सुनकर [कुमार के] बी में जसकात हुआ; (७) [कुसक] सुनते ही [उसके] बी में ऐसा लुभ हुआ कि एक भी बातवा (कामवा) [श्रेय] न रही।

टिप्पणी—(१) (३) मह्य < महामास्य। (२) परब < पर्व = त्योहार। (४) अंकवारी < अक्षपात्री = आक्षेपन। (७) काम < वासना = कामना।

[५३३]

जब सठ कुवर गएहु^१ परबसा। राजकाज^२ सभ तजत^३ मरसा।
 राज ब^४ बात न जानहि^५ राजा। हम सभ^६ अगुवा मार्गहि^७ बाबा।
 राज^८ बापर^९ पहिर कार^{१०}। जन परिजन सभ^{११} रह^{१२} मन मार।
 सगरी मगर^{१३} रह बिसमान। सुनिम^{१४} न मनकत^{१५} नाव क सादा^{१६}।
 अहि^{१७} दिन सठ^{१८} तुम्ह गोनहु^{१९} राजा^{२०}। नगर न कतहु बाबन^{२१} बाबा^{२२}।
 अहि^{२३} सठ परबस कहु^{२४} गोनहु राजकमार।
 ठक सठ^{२५} राजभेत^{२६} सभ^{२७} छाड^{२८} सूरजमान भुवार ॥

पाठान्तर—(१) १ भा जब सठ तुम्ह गोनहु रा जवने कुवर गएहु मा जब सठ तुम्हरे बयेह ए जब गोनहु गयेहु। २ भा राज केन मा राज बिता ए राजा बिना। ३ ए जो तजा भा मम तज।
 (२) १ मा ए बी भा क। २ मा ए जानी। ३ मा मव। ४ अगुमा सारी।
 (३) १ ए राजा। २ मा ए बपरा। ३ ए पहिर मारे। ४ मा ए मे 'सभ' नहीं है। ५ भा रहति मा रह।

- (४) १ रा मयर मयर मा मयरी मयरी भा मयरेउ मयर। २ मा मुनिज न मनवनहु ण मुनी न बँड भा मुनिज न बनहु। ३ रा माउ मयरा भा नाउ कर माउ ए नाउ कै स्वावा।
- (५) १ मा जिहि ए जा। २ मा भी ए ल। ३ मा मा मुह मवन ण मुह नीने रा मुह मीन। ४ रा मया। ५ मा ववर वावन वावा ण वाउ वाव मा वावा रा वउहु वाव मवावा।
- (६) १ मा या जहिमा नी (मा—मा) परदेमहु (परम—मा) मुह ए जहिमा मी परदेम वहु, रा जहि नि मा परदेम वर।
- (७) १ मा तब मउ भा तब भा रा तब म। २ मा रा दीन (< मन) ण विन। ३ ए म यह मय नही है भा मय। ४ मा छाउउ ण छाउ मा छावा।

अर्थ—(१) [महंता ने कहा] “हे कुमार जब से तुम परदेस गए, राजा ने समस्त राज-बाज छोड़ दिया; (२) राजा राज्य की बातें नहीं जानते हैं हम सब को मगुवा है वे ही मयस काँट करते हैं। (३) राजा ने काले कपड़े पहन रखे हैं और उनके प्रजापति तथा सेवक-आपादि सब मन भारे रहते हैं। (४) तारा मयर विचारवृत्त रहता है और वही भी माउ (बापारि) के घर बसते हुए (कान में पड़ते) नहीं सुनाई पड़ते हैं। (५) जिस दिन से हे राजा मुम गए हो मयर में वही बाप नहीं बचा है।

(६) बनी (जित दिन) से तुम हे राजकुमार परदेस को गए, (७) तभी (उसी दिन) से राजा मयसत्तु ने राज्य को बेचना (मुचि) छोड़ दो है।

टिप्पणी—(२) बाज < बसा < बाजा। (३) मयर < मयड < मय = मयरा। (४) मय < मयन < मयन। विमयाह < विमय = विचार। माउ < मड < मय। (५) वावन < वाव। (७) मुकार < मृगान।

[४३४]

महता उही गनि^१ मय^२ रहा। हाज बिहान बवर मउ^३ बग।
अप्यां^४ दहु राउ^५ पह जाई। वही जा^६ गउरि वमगा^७।
मयां^८ ल मयता^९ उरि पावा। जोवन माउ पय म आरा।
मयना^{१०} जाद गद पह महु^{११}। ववर वमउ मउ भारा म^{१२}।
गुनि य^{१३} मा^{१४} गउ^{१५} भी गनी। तान मान जग पारा पानी।
मयर महारग रानी बिम मनी^{१६} कमागि।
मुप^{१७} बिपाहि^{१८} ल आगउ^{१९} मयमागनि यगनागि ॥

वायमर—(१) १ मा या मयरा रीन उरि (उरम—मा) ण मयरा रीन उरे। या मा ण मय। ३ मा मेउ ण रा मी।

(२) १ मा. रा ण अप्या। २ मा मयरा। ३ मा वही मयई। ४ ण मयरा (< गउरि : गमभी निनि)।

- (३) १ भा रा ए अम्मा। २ भा महभा जस ए जो महभा। ३ ए मो।
 (४) १ भा महवै भा ए महवै। २ ए रा सौ। ३ भा मा ए कहा। ४
 मा सेठ ए सौ। ५ भा मा ए कहा।
 (५) १ मा जहह ए येह। २ भा बचन। ३ भा भा ए राठ। ४ भा
 जनु पावैठ ए जस पावै भा जनु पावै।
 (६) १ भा लवै (<लनी : कारखी किपि) ए राज रा राह।
 (७) १ ए कुमरि (<कुमर, कारखी किपि)। २ भा बिजाहि। ३ भा जामरो।

अर्थ—(१) महुता बहू रात को [कुमार के] साथ रहा; सबेर होते ही उसने कुमार से कहा (२) 'जामा बीजिए कि राजा के पास जाकर आपको कुमाम्ता कहें।' (३) जामा लेकर महुता उठ बैठा और लाल योजन (योजन = ४ कोस) की दूरी एक प्रहर में आ गया। (४) महुता ने जाकर राजा से कहा, 'कुमार कुमाम से आ रहे हैं।' (५) यह बात सुनकर राजा और रानी रसे हो गए बंसे [बल की कमी से] तप्त लकड़ियों ने पानी शायद किया हो।

(६) [महुता ने पुनः कहा,] 'महारस नगर की रानी और बिजमराज की कुमारी (७) श्रेष्ठ नारी मधुमासगी को कुमार परिचय करके ले जाए हैं।'

टिप्पणी—(१) (४) महुत < मत्तमात्त। (३) वहर < महर।

[५३५]

सन कंवर क^१ आवन जाहा। घर घर नगर अनव उछाहा^२।
 राज बार स बाजम घर। बहु दिसि घाट निसानम्ह^३ पर।
 मा^४ अशोर मिरवग^५ जो^६ बाजा^७। जानहु जलव^८ गगन मह^९ गाजा^{१०}।
 कौला दह^{११} बस पलक न^{१२} लाई। रनि सभ हंसि बलि बिहाई^{१३}।
 गदब भान सुनु^{१४} दरसन^{१५} आसा। जस पानी अनरव^{१६} पिमासा।
 गाबन्हि^{१७} सुरम^{१८} कठ जत^{१९} गावहि^{२०} राज कुवार^{२१}।
 कम्पक^{२२} बहु नट स्वांगी^{२३} मइइत^{२४} करहि^{२५} नवार^{२६} ॥

- पाठांतर—(१) १ भा भा सुनि के कुमर की ए सुनि के राजकुमर। २ भा बनाहा।
 (२) १ रा बाठ निमानइ, भा बने निमानहि ए बाब निमान।
 (३) १ ए मो। २ ए भिगमर। ३ ए मे यह बाज नहीं है। ४ भा बाने।
 ५. भा जलवि। ६ ए से। ७ भा गाजे।
 (४) १ भा कबला देह। २ ए पलकहि। ३ भा रंपाई। ४ ए मई निति
 कागि निराई।
 (५) १ रा मे यह लख नहीं है भा सुनि ए से। २ भा रीयत। ३ ए
 पन पानी उमरई रा जीवन पानी पाठ।
 (६) १ भा भा पावन ए पावेन रा गावम्ह। २ भा सुमुर। ३ भा बहुराने
 भा बगाने ४ बहुम्ही। ५ भा भा ए जामे। ६ भा कुमार।

- (७) १ मा कया। २ मा मन् स्वाणी ए मन्मात्रक मा मन्मात्र मन्मात्र।
३ मा ए बह्विधि मा बह्विध मन्मात्र रा मन्मात्र (२ मन्मात्र?)।
४ मा मा कर्माणि विचार ए कर्माणि विचार रा कर्माणि विचार।

अर्थ—(१) कुमार ने आने का समाचार सुनकर नगर में घर-घर आनंदोत्साह हुआ (२) राजद्वार पर से जाकर बाहर खड़े हुए और बाहों और निगाहों (धीरों) पर आपात पड़ा। (३) जब मूर्छा बसा तो [इस प्रकार का] अंधेर (धोर) हो गया जहाँ आकाश में बारिश पड़ उठा हो। (४) कमला देवी (कुमार की माता) ने अंधों की पलकों को नहीं लगाया (बहु तोड़ी नहीं) और समस्त रात जलने हुल-लेह कर बिताई। (५) सूर्यमान पुत्र के शत्रुओं की आगा में इस प्रकार [हो रहे] ने जैसे प्यासा पानी का आसरा देखा हो।

(१) जिनको भी मुरत कंठ की गायिकाएँ थीं वे सब राज-द्वार पर गा रही थीं (७) मोर
परा बरत से स्वाँग करने वाले नट और खेंसती करने वाले नाच्य कर रहे थे।

(५) बभार < बभ्र = बभ्रम् ।

[୧୩୬]

वज्र^१ गात्र^१ गजदुधारी^१ । वनजगित^१ मो वम^१ भवारा^१ ।
 मात्र^१ गुर जो म्पान्हू ल्हहा^१ । पोन वगि अपग जनु^१ पह्हा ।
 जाही^१ जाकर हल^१ अधिकाग । तम आपुन गभ कीन गवाग^१ ।
 मद्द^१ बली^१ गप महल^१ पोताए^१ । धमि^१ चन्दन मम मद्द^१ पुताए^१ ।
 बाहर मानर पोरि^१ पगाए । मुरग पटार मम रत्ननाग^१ ।
 वनजगव कीन्ह^१ । जल^१ महल^१ मनोहर पाम^१ ।
 विहू^१ मम जोपि गुमर बिा^१ गज रंवर वरु वाम^१ ॥

पाठान्तर—(१) १ मा मा वृजः। २ ए तावा। ३ मा ए दुवारी रा दुवारी।
 ४ मा जः। ५ मा मैत्रिपरि ए ज्ञावरी मा परगवा। ६ मा ए रा प्रवाही।
 (२) १ ए ताजी। २ रा लामन लाम ए लामन लाम मा लामन लाम।
 ३ मा उपमं वृत्त ए उद्विज रा उद्विज वः। ४ ए लाम ए लाम।
 (३) १ मा मा जो मा जो। २ मा ए हा। (<दुवः प्रामो विवि)
 मा रिष्ठ दुव। ३ रा लम वृत्ते मम बीज निवाण मा ए ज्ञावा मरति
 गवाण ए मा मे मम ज्ञावि जीवि (बीज—मा) मवाण।
 (४) १ मा लाम ए मः। २ ए वनी। ३ ए ज्ञा मरवा। ४ ए लामन।
 ५ मा वनि। ६ मा मा उदर तिक्वाय। ७ ए ज्ञावमति मे ज्ञा ए
 मावये।
 (५) १ ए बाहर भीतर घोरि। २ मा मम रनवाण ए मम बावण।
 (६) १ रा वनव ज्ञाव मरम मा वनव ज्ञाव विवि ए वनव ज्ञा मे मति।
 २ रा मम मा ज्ञा मा मम ए मम मरम मरी है। ३ मा मा
 मरि ए मरम। ४ मा वनि।

(७) १ मा ते। २ रा सैन किए, ए मा सुमर के। ३ मा बहू बाए ए के बचाव।

अर्थ—(१) राज-द्वार पर कुंजर (हाथी) सजाए गए, और वे स्वर्ण-वर्णित अंशुवारियों से कसे हुए थे। (२) दुरग (घोड़े) सामने गए जो लालों के मिलते थे जो [ऐसे लगते थे] मानो वायु के पते से जामना चाहते हों। (३) जिस [कार्य] पर जिसका अधिकार था, सब में इसी प्रकार साम किया। (४) गई कुंजोरी से समस्त महल पुताए गए, और बंदन जिस तरह समस्त महल सुगन्धित किए गए। (५) बाहर-भीतर प्रतोली द्वार और प्राकार (परकोटा) सभी रंगीन रेशमी कपड़ों से रतनारे (रंगीन) किए गए थे।

(६) [कुमार] मनोहर के पास (उनके उपयोग में रहने वाले) जितने महल थे वे स्वर्ण से वर्णित किए गए, (७) और उनको राजकुमार को निवास देने के लिए बसकाकर मुड़ (निर्मल) किए गए।

टिप्पणी—(२) सुरै < सुरग < गुरग = घोड़ा। अपसव < अपसु = मागता (५) वीरि < प्रतोली < मुख द्वार। पनार < प्राकार = परकोटा। पटोर < पटोल < पटुकूल = रेशमी बरत। (७) सुमर < सुमर < मुड़ < निर्मल।

[५३७]

होतहि मोर^१ कुंवर घर जावा । सह^२ दामय जत ससुरे^३ पावा ।
ओ सुय^४ मधुमाञ्जलि बोडोला^५ । बहु दिसि भूरहि रतन^६ अमोला ।
कुंवर पिता पा^७ लागत भाई^८ । नैन जोति अघर^९ जनु पाई ।
फनि ग^{१०} कुंवर जननी पा^{११} परा । कवल पूत कठ ल^{१२} घरा ।
रही काइ गिय^{१३} कुंवरहि रानी । तपत मीन जस^{१४} पावा^{१५} पानी^{१६} ।
जवरे कठ ल लाव^{१७} रानी राजकुमार^{१८} ।
तव कौला क सिहुन सत^{१९} निजसे^{२०} दूध क^{२१} धार ॥

पाठान्तर— इन छंद के बाव भा वर्णित है।

- (१) १ मा गपता (< गविता—कारनी क्षिपि) उदै। २ ए सी (< सी)।
३ रा जत मागुर, मा जत ससुरे, ए मा ससुरे।
(२) १ भा मा ए गण। २ रा ए जडोला। मा मा और डोल। ३ घ
जडा मुन्नामन कुंजर।
(३) १ भा बाइ रा पन। २ मा भा लागत भाई ए लागा भाई। ३ मा
ए अपने।
(४) १ ए पुनि नै रा बहुरि। २ रा जगनि बग मा जगनि पाइ। ३ रा
भरि ए भा बहि।
(५) १ मा रहि लाबी हिम ए रही काइ गरे। २ भा जनु। ३ मा पामउ।
४ ए मूने पान बरा जनु पानी। (मुल राम वर्णित मानस २६३३)।
(६) १ मा लै लावउ ए बहि लायउ। २ भा भा राजकुमार।

- (७) १ रा अम्यन से मा गोहन म० ॥ अम्यन मों। २ भा निमरा मा निमरी ॥ निमरु। ३ मा ॥ की।

अर्थ—(१) लोहा होते ही कुमार जिनका हाथ ससुराल में उससे पाया था उसके साथ पर जाया। (२) और उससे साथ में मधुमाश्रयी का कहोस था [जितने] चारों ओर अम्यन रात मूल (सटक) रहे थे। (३) बीड़कर कुमार पिता के दरवाजे में लगा था [एता लगा] मानो अंधे ने चेतों को ज्योति प्राप्त की हो। (४) फिर जाकर कुमार जलनी के दरवाजे में पड़ा [तो] बसता न पुत्र का है (उठा) कर गले से लगा लिया। (५) कुमार का रातो गले से [इस प्रकार] लपटा रही मानो [जल की बभी से] तप्त (तप्त) लछनी ने घापी प्राप्त किया हो।

(६) जब राती ने कुमार को ले (उठा) कर गले से लपाया (७) तब बसता के गले से रूप की धारा निकलने लगी।

टिप्पणी—(७) भीडाम < कुराँड = पडाव। (७) निरुन < गनन।

[४३८]

ममर न हात बाइ जग हार^१ । मरि जामर^२ लहि माय^३ न मार ।
म क^४ मागि महा जइ^५ आंचा । मा जग जनमि काल मउ^६ बांचा ।
मम मरमि जइ^७ आपु उबाग^८ । मा न मर बाइ कर माग^९ ।
एक बार जो^{१०} मरि जीउ पाव । काल बहुरि तहि^{११} निपरा^{१२} न आव ।
मिरिनु क^{१३} प^{१४} अंजित हाइ^{१५} गया । निहम^{१६} अमर^{१७} लहि क^{१८} बया ।
जो जिउ^{१९} जानहि^{२०} काल मी^{२१} मम मरन करि नम ।
कोर^{२२} दुहु^{२३} जग काल^{२४} मी^{२५} मरन मान^{२६} जग^{२७} पम ॥

- पाठान्तर—(१) १ मा अमर न बाई बाहु के पार ॥ अमर न हा को बलि मार ॥ २ मा म वर पाव नहीं है। ३ मा जीरे। ४ मा अम ॥ अम्यु।
(७) १ मा ॥ की। २ मा त्रिनी ॥ जा। ३ मा मी ॥ ने रा गा।
(११) १ मा मरमि जिनि ॥ मरिमि म। २ मा उवासे रा उवाग। ३ मा मान मी न बीड़ कर माग ॥ मा मा मी न बा के बाग।
(१६) १ मा के रा ॥ बरिम जो। २ मा म वर पाव नहीं है। ३ मा केर।
(१८) १ मा मिरिनु मू। २ मा म वर पाव नहीं है। ३ मा मी। ४ मा निमरे।
५ मा मा अमर। ६ मा की।
(१९) १ मा जो जिउ ॥ जो जिउ। २ मा जग ॥ जान। ३ मा ॥ मी न मा। ४ मा मरमि मी।
(२०) १ मा मि^२ दुहु रा जो के जदु। मा व। ३ मा ॥ मी। ४ मा मरमर ॥ मरमि काल। ५ मा म वर पाव नहीं है।

अर्थ—(१) [काल कलता-कलता] कोई हार (वस्त्र) आया [तो भी] अमर से कोई अमर नहीं होता है [केवल] उसी को मरव नहीं पावती है जो [एक बार प्रलय के आग में] बरकर रहता है।

है। (२) जिसने प्रेम की आप की जीब सहन कर ली वही जगत् में जग्न लेकर काल से बचता है। (३) प्रेम की धारण में [जाकर] जिसने अपने-आप को उबार लिया वह किसी के भारने से नहीं मरता है। (४) एक बार जो मर कर जीब (जीवन) प्राप्त करता है पुनः काल उसके निरुद्ध नहीं जाता है। (५) [इस प्रकार] जिसे मृत्यु का कर्म अमृत के रूप में प्राप्त हो जाता है उसकी काया निश्चय ही अमर [हो जाती] है।

(६) वही जीब यदि तु काल का भय जानता (मानता) है तो तु प्रेम की धारण [में जाने] का नियम [अंगीकार] कर (७) तब दोनों जगत्तों का काल-भय नष्ट हो जाएगा [क्योंकि] इस जगत् में प्रेम ही धारण-आका है।

टिप्पणी—(१) मीबु < भृत्य। (४) निवर < निवट। (६) भी < भय। नेम < नियम। (७) कीट < किट्ट [बे] = टूटना व्यस्त होना। धरन < धरज। सास < धासा।

[५३९]

औ अग्रित जह^१ सज असो सुमर सो ठार ।

बबिता गात जबहि लहि^२ रहइ जगत मह नार ॥

पागल्लर— यह छंद रा के अतिरिक्त किसी प्रति में नहीं है।

(१) १ रा प्रतिस्तिपि मे जहि^१ है जो फारसी लिपि मे लिखे 'जह' की विवृति समता है।

(२) १ रा प्रतिस्तिपि मे 'बह' है जो निरर्थक लगता है।

अर्थ—(१) और जहाँ अमृत जोधित होता है ऐसा भरपूर वह स्वाम (प्रेम की धारण-आका) है; (२) जब तक कबिता-गाय (काव्य-शरीर) [बना रहता] है तबसे ही [प्रेमी का] नाम भी [बना] रहता है।

टिप्पणी—(१) ठार < स्वाम। सुमर = भरपूर, सपना। (२) नात < नाथ। नार < नाम।

— समाप्त —

परिशिष्ट

प्रसिद्ध छंद

जना की विभिन्न प्रतियों में पाए जाने वाले वे छंद जो समस्त बहिरंग और अंतरंग साथ के आधार पर प्रसिद्ध प्रमाणित हुए हैं नीचे दिए जा रहे हैं। इनके साथ ही हुई संख्या उन प्रतियों में वे चिन स्वीकृत छंदों के बाद आते हैं इसका निर्देश करती है और इनके साथ दिए हुए प्रतियों के संकेत यह निर्देश करते हैं कि वे असंग-असंग चिन अथवा चिन प्रतियों में पाए जाते हैं। जो छंद एक प्रति में ही है वे उसके अनुसार दिए गए हैं और जो एक से अधिक में हैं वे उनमें से किसी एक के अनुसार दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं भी छंदों में संशोधन का कोई प्रयास नहीं किया गया है और न बाधालार दिए गए हैं।

[२० अ]

ए जसा पीर कहा परवान । तीनिमुवन मर सो जान ।
 गुरु क बचन प्रम (परम) पद पाव । सतगुरु हो सो गमान छसाय ।
 जो अग्या गुरु के न मान । कहा कर गुरु सिखा न जान ।
 हिय का अधा सोइ गबारा । जस जन्म दिन हो अन्धारा ।
 जेतहु मूढ गुरु के उपदसा । नातरि मय होत अन्वसा ।
 जेतहु मुगुष दस यह लहु गुरु औराधि ।
 आठो सरीर सुख होइ करहु समाधि समाधि ॥

[१६४ अ]

भा ए बठ महष सुन बात हमारी । पढ़िन म का करहु मबारी ।
 जोर भठ ग परबस मोरा । दहु कहु कहा सुनौ बस तोरा ।
 बिठ अरु बया कर बित राजा । जहाँ गउ साब सब बाजा ।
 बित गयइ गौ फरि को आना । ग्यानु कर न आकस माना ।
 बित राजा कहैं रह लोमाई । मन सन रसना सग जाइ ।
 त सब गुन मापून (सापूरन) दम्ब बिबेक विचारि ।
 घाट तुरग कि बितमिध्या कर सौं गौ बइआरि ॥

[२०२ अ]

ए कहैं सगरी सब मोहि बुझाइ । पमा तुरित बली अबराई ।
 मात कहा न लावहु बारा । उनक आयसु बर प्रतिहार ।
 कौनो सगरी घर हम छाहा । कौनो जससि दह गले बाँहा ।
 कौनो सगरी पान सिबाव । कौनो सुरस बचन सुनाव ।
 बहु विधि बाढ़ कर ॥ नारी । रूप अपचरा जोवन वारी ।
 त सब मिलि क सगही रहमि बली अवराड ।
 मक विधि तव नमभारा जो अम भो विपाड ॥

[२२१ अ]

ए तुर न पाव तजा घर लाय । जिम बाधि नर पीठ चढ़ाय ।
 हापी बन तजि आकस सह । मोस नाय धूरि मरि रह ।
 ममिन्ह मीग महा दुख भारी । नीब निगल जो बीब मभारी ।
 भडो मयम रोंब तन मार । बरन्म पीठि पफान पमारे ।

कुंअर म तदा पम कर चाबा । जगि खय एम माम मरावा ।
पपिहा जुग एक मास रह पित पित बूट बाहि ।
पित मगहि नहि चीम्ह पमा कुय उर बाहि ॥

[२०९ अ]

० हिजे मांह बम प्रात पिमागे । कम क मा जात विमागे ।
निमि मोरन जा बिधि बगगाय । तहि कारन हम भम फिगाय ।
रहम कोड में बिधि दुग दोन्हा । कौन बग्म हम पूग्ब कीन्हा ।
औ मगि ना जह मिह मुरारी । तौ लगि मरन हो दबहारी ।
छांडा भात पिता घर राजा । बाहि बिन जीवन कौन बाबा ।
औड गो त्रम मधरा तन जरि भो बिमुनि ।
पमा वित न उबर मधुमासनि बग्नुनि ॥

[३०७ अ]

० छोला यहु चतुगा जगो । कति छु गगन मगना ।
अर पगिगा हउ उर दठि । पिअन गुगुन मा बचन जा मा ।
एत दयग गुग मान भागू । अब हम दगु बगन हौ जागू ।
तु विरि विरि करन जनन । हर्षहि न्ह ज मनमय दग ।
तु मान गम भागि बलाया । अरनिगि हम मन सिद्ध नवाया ।
तुम धरु यल्लम भोग विर [म] गहो एक पाग ।
हम अरला कउ निगबही निग निन मग गगम ॥

[३३० अ]

० दगिग गोरन छ ३३० क पागनिग में हो ह अतिगिरा पतिपा ।

[४९४ अ]

मा ० पति पम मर मगा हवाग । मर बाग मनि आ मा मरा ।
औन मगरि गगना बमाग । नार म गग जावन बाग ।
मम अरन र गगन भाग । बअर मगिग भाग दगो ।
आनगि दनो मग मिनि गग । एत मग मर मग निगय ।
बाग मपना जावन भाग । हुनो मर पाग का गगो ।
आनमि मगु का गिग मार मग ना ।
आग कउर मर दिउर म मरि गग दग ॥

[२० अ]

ॐ असा पीर कहा परबान । सीमिमुवन भव सो जान ।
 गुरु क वचन प्रम (परम) पव पाव । सतगुरु हो सो ग्यान लसाव ।
 जो अग्या गुरु क न मान । कहा कर गुरु सिखा न जान ।
 हिय का अन्धा सोइ गवाया । जस उल्लू दिन ही अन्धारा ।
 चतहु मूढ गुरु क उपदसा । नातरि मुय होत अन्धसा ।
 चतहु मुगुध वस यह लहु गुरु ओराधि ।
 आठो सरीर सुप होइ करहु समाधि समाधि ॥

[१६४ अ]

भा ॐ घट महष सुन बात हमारी । पड़ित भ का करहु गबारी ।
 जीत भव ग परबस मोर । वहु कह कहा सुनौ कस तोर ।
 बिज अर क्या कर जिन राजा । जहाँ गज साथ सब बाजा ।
 बित गयद गौ फरि को जाना । ग्यानहु केर न आक्स माना ।
 बित राजा कहे रह लोभाइ । नन सन रसना सँग जाइ ।
 त सब गुन सापून (सापूरन) दखु बिबक विचारि ।
 काट सुरग कि पिसमिध्या कर सौ गौ कइआरि ॥

[२०२ अ]

ॐ कह सबी सब मोहि बुझाइ । पेमा तुरित चली अबराई ।
 मात कहा न लावहु बारा । उनक आयसु बर प्रनिहार ।
 कोनो मजी कर हम छाहा । कोनो जससि दइ गल बाहा ।
 कोनो गगरी पास निभावे । कोनो सुरत बचन सुनाव ।
 बहु विधि कोइ कर ले नारी । बप अपछरा जोदन बारी ।
 त मज मिलि कै सगही रहसि चली अबराठ ।
 मरु विधि तब मसभारा ओ अस भौ विपाठ ॥

[२२१ अ]

ॐ गुर न पाय सभा मर लाय । जिन बाधि नर पीठ बढ़ाय ।
 हापी बन तजि ओकम गह । सीत माय धूरि मरि रह ।
 भमिन्ह गीग गहा दुग मानी । जोक निरत ओ बोन अपारी ।
 भरो सपन राव तन मार । मखन पीठि पकाम पमारे ।

कैशर न सजा पम कर चावा । वरिम ववस एव माम मरावा ।
 पविहा जुग एव माथ रह पित पित बूढ काहि ।
 पित मर्नाह नहि शीम्ल पमा दुग उर जाहि ॥

[२२९ अ]

५ हिप मांह बम प्राण पिआरी । बम ब मो जान विमारी ।
 निमि मोबन जो विधि बगराय । तहि बारन हम भम प्रिय ।
 रहम कोड में बिधि दुख दीन्हा । बोन वरम हम पुरव कीन्हा ।
 जो रगि ना जहु मिल मुरारी । तो रगि मरन होइ दवहारी ।
 छाँड़ा मान पिता घर राजा । बोहि दिन जीवन बोन बाजा ।
 जोउ गौ जम सधरा तन जरि भो विभूति ।
 पमा धित न उबन मयमालति बरलनि ॥

[३२७ अ]

॥ छोट यह चतुर्ग जनी । बनि छ कर म गनी ।
 बष परिहृ द्र उर दोठ । पिअ गुण मा बषम जा मोठ ।
 एन दवग राग मान भोगू । अब हम म्गु बरन हौ जागू ।
 तुह विरि विरि गरद जनन । हमनि दह ज मनमय न ।
 तुह मानत म भोग बलमा । अहनिगि हम नन रिग नरागा ।
 तुम भद्र पल्लभ भोग पिर [म] री एन पाग ।
 हम अगल बउ दिखही निग निग गग उपाग ॥

[३३२ अ]

॥ दक्षिण स्वर्णिम एव ३३२ व पाशानामां मे दीप्ता मणिगिरा पतिष्यते ।

[૪૯૪ અ]

मा. ७ पुनि पक्ष गद्य गद्या हवागी । तत्र धार गति मां गा रगा ।
 भनि म रि स्तगती समारा । भार गद्यता ज्ञानन धारा ।
 गद्य भानन प लक्षण गाता । तत्र गतिन गति रगा ।
 ज्ञानगि दुनी गद्य मिनि रगा । तत्र गद्य तत्र गद्य निगा ।
 बाल मपानी ज्ञानन गाता । दुनी तत्र धार गाता ।
 ज्ञानगि गद्य बो नि मां गद्य गाता ।
 ज्ञाना गद्य गद्य निगा । य गति गाता रगा ॥

[५०२ अ]

ए साईं सेवा किये सुख होइ । साइ सवा दुख जा सोई ।
 जो पिठ क मन दुखित जानहु । सहवा बिछू विरग ना मानेहु ।
 निमहु सब साइ की एसी । तन मन लाय ध्यान रह बसी ।
 तो प हो जो निरखे पीऊ । कहहु प्रीति प्रभु द क पीऊ ।
 साईं सेवा जीवन पछहु । पूछत बात मधुर सौ माखेहु ।
 प्रीति जो करब साइ सौं सवा क वर जानि ।
 साईं सवा नित भई जानी मन अनुमानि ॥

[५०३ अ]

ए न्यमजरी मधुरा रानी । देख पीठ को सिस बुधि जानी ।
 सुनहु कुंभार तुह बूनी बारी । सबन कियहु उपदस हमारी ।
 राज कुंवारी कुल उजियारी । कियत काम ज भाव न गारी ।
 पीठ बिछुर रानी दुख होइ । कोसी भार दुख सह न कोइ ।
 अब ना भेंटव कबहु धारा । ल जाइह तुह सायर पारा ।
 निज जानहु अब रानी पीठ जो भई पटारि ।
 तब कुंभारिहि कंठ छावत रोयेत धांसि डफारि ॥

[५०७ अ]

ए जो जीवन ना उपज तरंग । सवा रहत बालापन अग ।
 जोवन उमगत जी बिछोहा । अब लहते पाउ मग सोहा ।
 पिठ क संग नाहि प लहई । पिठ की प्रीति अत निरबहुइ ।
 पाहू कोन दिन अह समागो । बाहि तोहि पम प्रीति जो एगो ।
 मन मग सुनि कठिन बिछोवा । बिधि बिन्ह पम रह ना गोवा ।
 सब गौं भुगति सयानप अब बिछर दिअ जोग ।
 मुकुति प्रात सौं प गत पहि सौं ओर न योग ॥

[५०६ अ]

॥ दन्ति बभरि क कटुह विछावा । पर आपन ज गहवरि रोवा ।
 जइ येगा मा हिय कर रोवा । मन सम्हि रहत तन भोवा ।
 पापर कर हिआ जहि कर । जायु न रहा नन तहि वरा ।

रगन ताहि टिआ पर माना । बला उडाइ जान कर प्राना ।
सुग अत्रित रग अत्रिज पिआ । एह मुन बोहि दुग विधिन दिआ ।
दूनी चलिहहि समुन गल रहहि न भाउ ।
चलिहि बत सग लक हम कछु कहत न भाउ ॥

[५२५ अ]

० ममुक्ति ममुक्ति बिछग्न घरा । कस जम निवाहव वीग ।
अर प्रदग नहि मग जाइय । आम नाहि जो जितन मिलाइव ।
दहु कहि घाट पिआव पानी । को मिलाव बिछग्न त आनी ।
बा विधन जो लिगा लिगारा । वही जाइ गइव जमुआरा ।
रहेहु बीर मार रत गइसी । म तजि बन्दुब भइ परानी ।
म कस जित रागव तुह बिछग्न घर बीर ।
कम जम निवाहव यहि बिवोग ज पार ॥

[५०५ आ]

० तुनि दाउ गजबुअर बरनारी । रोवहि मिमि क जो अववारी ।
मौरि सौरि घालापन नहा । बिछग्न भी बहुत मदहा ।
निब जानु दुःख जित माहीं । बहुरि बिछगि ते मिम्ता नाही ।
कोन्टु आनु हम मिमन निबरा । आनु उन्धि भा चिरहा बरा ।
आनु द अहम दुहे बगराह । आनु बन्दुब तजि भइ पराद ।
अय बिछग्न नहु मिमिह किमि क बापव धीर ।
कम जम निवाहव एहि बिवोग क पोर ॥

[४२५ इ]

० पाव पावि राव बरनारी । यही मन कु भीर पनाग ।
पा रिमि क मरद दुग मोऊ । मिमन गहा आम गो माऊ ।
पा बन्ना जो हा गरीग । मा जान जहि वम का वीग ।
आनि आनि प्राणि जो जाना । बरनी हम जा वन निव पाना ।
जीव जानि भी जम शिगवा । क पावि ज कअरि रीवा ।
माग नवम पर हम दाऊ मिमन गहा पर बाग ।
माउ आम अय अत्रिज जानन बीन प्रसार ॥

मा ए उतपति जग जती बलि आइ । पुस मारि ब्रज सती कराइ ।
 में छोहन्ह यहि मारि न पारेउं । सही मरिहि जे कलि धौतारेउं ।
 सत सुनौ ससार सुभाऊ । जो मरि जिए सो मर न काऊ ।
 सकति काल तेहि निबर न बाऊ । सो जग पम सजीवन पाऊ ।
 पेम अमिअ जे पाइअ बासा । सेस काल तहि आव न सासा ।
 जहि भौ पेम अमी सौ परिब कर कपार ।
 आँधी सहस वरु कली स निर्बाह पेम अपार ॥

शब्दानुक्रमणी

[ही हुई संख्या रचना के छोटी और उनकी पहिलागी भी हैं।]

बहुवारी < बहुवारी = बहामिगन १३३
 २४८ ५, २८२ ५, २८७ २ ४३५ ५
 ५१४ ७ ५३२ ४
 बंधारा < बन्धारा ४ ५ ४
 बन्धन < बन्धन ३३२ ३
 बन्धन < बन्धन < बन्धन = बन्धन ३३४ ३
 बन्धन < बन्धन १५४ १ ४३३ २ ४३३ २
 बन्धन < बन्धन < बन्धन ४७९ ५
 बन्धन < बन्धन = बन्धन की बन्धी ७३ २
 १९६ ५, १९७ २
 बन्धन < बन्धन = बन्धन का बन्धन १ ६
 २७७ ७
 बन्धन < बन्धन १६२ ७ १६३ १ २३५ १
 ७३६ ४ २५५ ५ २५५ ७
 बन्धन < बन्धन ३३६ १
 बन्धन < बन्धन ३३६ ४
 बन्धन < बन्धन १२४ ६
 बन्धन < बन्धन १५ ७
 बन्धन < बन्धन = बन्धन प्रचार की
 बन्धन ४६२ २
 बन्धन < बन्धन < बन्धन + बन्धन = बन्धन जाना
 ६२२ ६
 बन्धन < बन्धन ३६५ ७ ३६६ १ ४ ५ ७
 बन्धन < बन्धन [३] = बन्धन बन्धन बन्धन ३
 ३७८ ४ ३३३ ३
 बन्धन < बन्धन = बन्धन नृप-नृपिण की
 ८४१ १
 बन्धन < बन्धन ४७७ २
 बन्धन < बन्धन ८३ ६ ८७ ७ ५ ६
 १ ३ ५ १३५ ४ १६ २ ६९६ ७
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ६८ १ १३७ १
 बन्धन < बन्धन १ १
 बन्धन < बन्धन = बन्धन = उन्धन
 ३५६ ५
 बन्धन < बन्धन = बन्धन बन्धन १३८ ६
 बन्धन < बन्धन = बन्धन का बन्धन भान
 ३५८ १ ३७३ ३ ५३ ३
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ७ ७ ३
 ४५७ ७
 बन्धन < बन्धन १६ ४ ६१ १

बन्धन < बन्धन = गांठी गांठी मंडप
 ६४ ५
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ७७ २
 बन्धन < बन्धन ३ १
 बन्धन < बन्धन १७ १
 बन्धन < बन्धन < बन्धन ६२२ ६
 बन्धन < बन्धन ४४७ ६ ३४४ ५ ३६ २
 ३६५ ४
 बन्धन < बन्धन = बन्धन १६४ १
 बन्धन < बन्धन = बन्धन-बन्धन प्रचार का
 १ ६ २ २ ७ ३४ ५
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ३३७ २
 बन्धन < बन्धन २ ३
 बन्धन < बन्धन < बन्धन = बन्धन प्रचार
 ३ ५ १ ६ ३ २ १ ४ ४
 ११ ७ १११ १ ११२ ७ ११२ ४
 ७ ६ १ ७३५ ५ ७३७ ५ ४ ६ ७
 ४२९ ६
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ७ ५ ४
 बन्धन < बन्धन = बन्धन १७ ४
 बन्धन < बन्धन ७ ६
 बन्धन < बन्धन ३९४ ४
 बन्धन < बन्धन < बन्धन = बन्धन १ ५ ४
 बन्धन < बन्धन (१) ५३ ७ ५४ २
 ५ ३ ४३५ ७
 बन्धन < बन्धन ७८ १ ८७ १ १ ८ १
 १ ७ ५ १५ ७ २०२ ५
 ७३६ १ ५६ ६ ३३८ ४
 ६५ १ ६५४ १ ६८० ७
 ६८१ ७
 बन्धन-बन्धन = बन्धन बन्धन ६७१ ५
 बन्धन < बन्धन ३५५ १
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ३३ ६ ३८ ६
 ३६ ६
 बन्धन < बन्धन १६६ ३ ३६७ ७
 बन्धन < बन्धन ३५३ ५
 बन्धन < बन्धन ८ ४
 बन्धन < बन्धन = बन्धन ६ ५ ३
 बन्धन < बन्धन (२) = बन्धन १६३ ३
 ६६७ ७ ५३ ७

ना १२ १ २०८८ नामा
= ४५५ इति $\times १५ = ६८२५$

पन < पानन < पन = इतना १०१ ४ ११३
११७ ७

पन-नीन < अपन-अपयन = मार्ग-अमार्ग ५ ५

पोगिन < पोगनि १५५ ७ १६१ २ ४०९ ३

पोगन < माउट्ट < मावुन = करना १६४

१०२ ३ ३९ ३ ३ ४ ४०६ ६

पौनन < उपमिन ४४३ ६

पानन < उपमन = नीच की ओर जाना लुबना
४ ७ १

पाननन < अवनमन = समझार २०३ ५

पौवरी < उपरिख < अपवर्गिका १०६ ७

पानन < अवनन < अवमन = लप या ल
४५ १

पानन < पाननरि [रि] = माला माला ५ ७ ४

पानन < पाननरि [रि] = मुलाना माला
५ ७ ४

पौन < पौमान < अवमन = नीच ३५८ ४

पौनन < अवमन = बेला बारी ८५ ७

पौन < माउट्ट [रि] = मनुष्य पीछे हटा हुआ
१६१ ६ ११७ ४

पौनन < अवमन = पदारी ४३९ ४

पौन < अवमन = पुन ४८५ १

पौनन < अवमन ४०३ ६

पौनन < अव + पानन = निश्चय करना ४६ ७

पौनन < अवमन + उमुन < अमुन + उमुन [रि]
= मनुष्य-द्वारा १५६ ६

पौनन < उमुन = उर उर म करना
माला ५७ १ ५७ ४

पौनन < उमुन ३७६ ५

पौनन < उमुनरि < पानन १५ १ १०३ ३
१८९ ५ ६ ४ ३ ० ३ ४७६ ६

पौन < पानन = प्रिय ५ ७ ४ ७ ७
४११ ७ ४१३ ६

पौन < पौनरी-मुदरी पुनन पौन म बना हुआ
माला १०७ ६

पौनरिका < पौन-निकन = पौनरिका की माला
माला ७६ ३ ८१ २

पौनन < पौनन = पौनन १८५ ७

पौनरी वन < पौनरी वन १८१ ६

पौनन < पौनन ११० १३ ७ ४४३ ५

पौन < पौन = पौन ३ ५

पौनी < पौनी = पौनी ३१६ ३

पौनरिका < पौनरिका ३१ ३

पौन < पौन < पौन १ ५ ७ ६

१८५ ५ ५३ ६

पौनन < पौनन ६६ ३

पौनलान < पौनलान = पौनलान ३० ५ ३५ ७

८४ ७ १०६ ७ १४६ ४ ३४६ ६

पौन < पौन १ ७ १५३ ७ २९३ ७

४१४ ५

पौनरिका < पौनरिका ३३ ७

पौनन < पौनन = जाग १० ७ १ ६ ३

पौनन < पौनन = जाग ३ ७

पौन < पौन ८ ५ १३ ४ ६७ ४ १० ५
१ १ ३ ७६० ४

पौनन < पौनन = पौन ७१ ७

पौन < पौन १६ १ १७ १

पौनी < पौनिका < पौनिका ३० १ ३४२ ५

पौनन < पौनन = पौनन १ ६ ४

पौनी < पौनिका < पौनिका ३० १ ४३५ ३

पौनन < पौनन ७१७ ५

पौनन < पौन < पौन ५३५ ३

पौन < पौन = पौन ४१६ ७

पौन < पौनरि ८८ ७ ५५ ६ २५ ३
१११ ६ ३५७ ७

पौन < पौनन = पौन १४६ ५ १६१ ६
७७ ५

पौनरिका < पौन = पौन वा टपटा जिने
पौन पर पौन उमर छाटा पर पौन

पौन वा छाटा जाना १ ११५ ४

पौनन < पौनन [पौन] ७८७ ७ ४ २
४६१ ७

पौन < पौन = पौनी १०८ ६

पौनी < पौनी < पौनी = पौनी ४ ८ ६
८१ ५

पौनन < पौनन < पौन = पौन १ ३
३३५ ७ ८५६ ६ ५३३ ३

पौनी < पौनन < पौनन = पौनन १ ८६

पौनन < पौनन < पौनन = पौन ८५ ३ ४६४ ७

पौनी < पौन < पौन = पौन ८५ ४

पौनन < पौनन = पौन प्रकाश की माला
१७ ५ १७६ ३

पौन < पौन = पौन ८७ ६

पौनन < पौनन < पौन = पौनन ४७३ ४

पौनन < पौनन = पौन १६ ६

पौन < पौननी ३ ३ ६

पौनन < पौनन ४८५ ७ ६ ४

पौन < पौनन ८८ ३ ६ १ १

पौन < पौनन ४१३ ७

पौन < पौनन = पौन ३ ३

कुटी < कुल २१५ ४
 कुसर < कुसम २५१ ६
 कुमुम < कुमुम २ ४ ४१ ३
 कुकु [रे] = कोल आङ्गल ३०८ ४
 कुदुबा < कुमुक = मेर २ ४ ४
 कुट < कियत् = कितना २५ १
 कुटु < कुह < कीदृश ३ ४ ५ ३२२ ५
 कुहल < काविक ४१५ ६
 कावम < कावम ८७ २ १७ ५
 कोलि < कुभि = उदर पेट गर्वाभय ३९ ७
 कोव < कुह [रे] = कोमुक ५५ ७ ३४ २
 कोर < कोह = मोह १९७ ४ २१२ ५
 कोराहर < कोलाहल २८७ ७
 काह < काव ४९२ १
 पहराहा < लङ्कारायक २३ १
 लमर < लम्भ = लम्बा ७४ १
 लति < लति ३७ १ ६३ २ १४३ ३
 लती < लति २२८ ३ ३ २ ७ ४५४ २
 लती < लति २५८ ५ ३५५ ४
 लप्य < लप्य = मिमाणा १७२ ३
 लाई < लाह < लाति = परित्या ३४ २
 लावर < ककाल = लवि-सेप पत्रहीन तह
 लाह < लह = लाह लहकर १ ४ ४
 लाह लाहा < लह ५८ ३ २९१ ४
 लिल < लल १३७ ३ १३९ ६ १५८ ३
 लिल < लल २९८ ७ ३३६ ७ ३५२ ७ ३५७ ५
 लिल < लल ३५९ ६ ३६० ३ ३ ४ ५ ४७८ ५
 लीन < लीप २२ २ ३ ६ २
 लीर < लीर = लुप ३४२ २
 लुह < लुप = लुपसना मर्दन करना कुं
 लुह < लुप ७२ ६
 लुह < ली = गमाज हाता ४३२ १
 लडा < लड = छाटा ली ४४१ २
 लड [रे] = लडी लड ३४० ५
 लारि < लाड [रे] = लडी लारि २३७ १
 लीर < लार = लुप २४८ ६
 लप्य < लप्य ५ ३ ८६ ६ १९५ ४
 लप्य < लप्य २४९ ४
 लरव < लरव १९६ ५
 लरह < लरह ५१ ६

गरा < गल = गला ५२ ५
 गदम < गुप ११ १ १४ १ २३३ ३
 गह [रे] = जानव हर्ष ३८४ ४
 गहपह [रे] = हर्ष छ मर जाना २५३ ५
 गांग < गङ्गा ४ २ २
 गांग < गंग < गङ्ग = गङ्गा ३८३ ४
 गाव < गम्बर < गर्भ = गर्भ १४१ ५
 गाव < गम्भ < गम्भ = गम्भापात होता ४९७ २
 गाव < गान = गरीर १ ८ २ ४३९ ६
 गाव ५३९ २
 गाव < गर्भ = बीज का भाप ४८३ ३
 गारि < गारि = कपल १२८ ४ १३ ७
 गारि १४ १ ३९५ १
 गारि < गारि = लप के बिप को उठारने वाला
 गारि ४५ ४ ४७९ ४
 गारी < गारि = महत्त्व गुल्म ३३ ४
 गिय < गिय < बीबा = गला ९२ १ १७३ २
 गिय २ ५ २ ३ २८१ ५ ४२१ ३
 गिय ४२९ ४ ४५३ २ ४८२ ३ ४९ ६
 गिय ४९ ७ ५ ८ ६ ५१३ १ ५१३ ३
 गिय ५१९ ५ ५२ ४ ५२१ १ ५२८ ६
 गिय ५२९ १
 गिरवान < गीर्वाण = देवता ६ ७
 गिरिह < गिरि ४३३ ५
 गीय < गीय < बीबा = गला ३२ ७ ४३८ ७
 गीय ४४६ ५
 गीय < बीबा = गला ५२ २
 गुन < गुन = प्रत्यक्षा १७२ ५
 गुन < गुन = गिनना मन म बार बार लाना
 गुन ३९ ३ ३१२ ७ ४८५ २
 गोह < गोपित = छिपाया हुआ ४५४ ३
 गोह < गोपित = गोप तो लनी हुई भूमि
 गोह १९६ १
 गोव < गोप = छिपाया १५ ६ ३२८ ३
 गोव ३४३ ६
 गोवा < गोप १८ ३
 गोवा < गोपिण = छिपाया हुआ ३ ७ ३
 गोवा ३ ७ ५ ३२४ १ ५ ७ ३
 गोव < गोप = गोप = जाना कप का व
 गोव ४ ६ २ ४९६ १
 गोव ५१६ ४
 गोपु गुरि < गावली (?) ४८४ १
 गेह < गेह ३ ५
 गरिह < गुरिही २५ ४
 गाव बाव < गाव = गापात १४४ २ ७५९

पात < पत्त [दि०] पेंकमा हासना १४७ १
 पिउ < पूत २०७ १
 पुमर < पुम्म < पुर्ण = पुमना अत्रावार किरना
 ४ १ ४
 पोर < पोटर = पोड़ा ५६ ५
 पार < पाल < पुम्म < पुण = पुमना अत्रावार
 किरना ३६० ६
 पार् < अत्रावाकी २०९ ३
 पार < पक २०१ ५
 पयु < वस्तु < वस्तु १५ ५ ८० ४ ८९ ०
 १ ४ ६ १११ ६ १३५ २
 १४६ ३ १८८ ७ २०३ १ ३ ७ ०
 ३२७ ६ ३३४ ५ ३४८ २
 ४१६ ६१९ १ ४४ १ ४३५ ४
 अनुमम < अनु + मम = अन्म अनुम अम्पूरी
 और अन्म का ममभाग में अन्म बनाया
 हुआ अन्म अनुमम अन्म ५० ४
 अमर < अमरार ४८१ १
 अमरार < अमरारि ५३३ ५
 अमरीक < एक प्रकार की अमरीकावासी ४८० १
 अमरीकी < अमरीका = अमर ३६ १
 अमर < अमर ३ ३ ४
 पाह < पाह = मर १९२ ५ ४८६ ५
 पाह < पाह < पक १५ २ २०३ ० २०४ २
 पातिस < पातिस २ ३ ० ३१८ ३
 पिराता < पिरातिस < पिरातिस = पुमना २५० ६
 ४१७ ६
 पिराता < पुमना < पुमना = पुमना पमर
 ३५० ६
 पिराता < पिराता = पुमना ३० २ ७ ५ ७ ६
 ८ ० ८० ४ १३३ १ १८५ १
 २०९ १ ३ ५ १ ४६८ २ ४३ ४
 पुमना < पुमना + अन्म = अन्म एक प्रकार
 की अमरीका अन्म अन्म अन्म अन्म अन्म
 हाती अमरीका अमरीका १ ४३० ३
 पेरि < पेरि < पेरि = पेरि २८० ६ ३३५ ३
 ३३६ ६ ४०० ३ ४५६ १ ४६१ ४
 ४८८ ०
 पोर < अमर < अमर ४८१ १
 पोर < अमर = अमर ४३१ ४ ४६१ ०
 ४६१ ० ५३३
 पोर < अमर १ ५ ५
 पोर < पोर = अमर ४ ० ६
 पोर < पोर [दि०] = पोर पोर अमर
 १ ३ ३६३ ६
 पोर < पोर [दि०] = पोर ३१५ ०

पात < पात < पात ३६० ४ ३०५ ३
 पात < पात = पात २५८ १ २०० ६ ३४७ १
 पात < अमर ३ ३ ३
 पात < पात २१५ ५
 पात < अमर = पात ८४ ४
 पात < पात < अमर १४३ ५
 पात < पात = अमर १६१ ७
 पात < अमर = अमर ३१९ ५
 पात < अमर < अमर ६
 पात < अमर ४१४ ७
 अमर < अमर < अमर = अमर ३
 अमर < अमर ३० ३ ५१ ५ १०८ ०
 १०८ ७ ४३६ ७ ५ ७ ५
 अमरीकी < अमरीका ५१ ६ ६३ ३ ६३ ६
 अमर < अमर < अमर ५ ६ १
 अमरीका < अमरीका = अमर ३३० १
 अमरीका < अमरीका = अमर १०३ ३
 अमर < अमर = अमर अमर अमर अमर
 अमरीका और अमर अमर अमर अमर
 का अमर ६३१ ५
 अमर < अमर १२६ ५ ५१६ ३
 अमर < अमर = अमर ४०५ ३
 अमर < अमर १०१ ४
 अमर < अमर < अमर = अमर ५ ४ ५
 अमर < अमर = अमर ६
 अमर < अमर = अमर २० ५
 अमर < अमर < अमर = अमर ४५६ ४
 अमर < अमर ४० ६ ७
 अमर < अमर ५०३ ०
 अमर < अमर ३१८ ४
 अमर < अमर २६८ २
 अमर < अमर ४४ ४ ५ ६
 अमर < अमर < अमर = अमर ५३ ०
 ५३ ४ ५८ ० ६३ १ ६८ ०
 १ १ ४ १५४ ४ १६३ ० १०५ ४
 २०९ ३ ५० १ ६३ ० ६
 २८६ १ ८९ ८ ५ ६
 ३ १ ० ३१३ ६ ३४३ ५ ३५ १
 ३०१ १ ३८५ ६ ० ४ १ ५
 ३१५ ३ ३१६ ३ ४ ३ १ ३१८ ६
 ४ १ ५३ ०
 अमर < अमर अमर = अमर ६८ ३ ५ ०
 ६८ ३
 अमर < अमर = अमर अमर अमर अमर
 अमरीका ६६१ ३

समुदायकी

४९४]

बोब < बोज [रे] = बेलना ३१ ५, १५५ ३
 बो < बज < यबा = बज २९ ३, २९८ १
 ३३६ १ ३३९ १ ३४० ७ ३४८ १
 ३५ २ ३५ ७ ३७१ १ ३५७ १
 ३५८ ३ ३५ २, ४६१ १ ४७५ ५
 ४९२ २ ५ २ ४ ५१५ ७ ५२२ २
 ५२२ ३ ५२६ ३ ५२६ ३ ५२८ ७
 ५२२ ३ ५२६ ३ ५२६ ३ ५२८ ७

बो < बज < यदि ३४ ४, ११८ १
 २९४ ३ ३ ३ ३२६ १ ३३६ ४
 ४१४ ५ ४१६ ३ ४५९ १ ५ ३ ४

बो < बाबो < यत = बारन कि क्याकि
 ४ ३ ३१ ५, १४७ ३ २२ ३
 २७१ २ २९८ ३ ३२८ ७ ३३७ ७
 ३४७ ७ ३८२ ५ ४ ७ ३ ४२८ ५
 ४४८ ४

बोन < यमुना ४ २ २
 मक [रे] = मत्तप होना मत्तप करना ३४७.७
 मर < मर < यद = मरना ४११ ७
 मास < मकर [रे] = मृगक तव ४ ९ ७
 मास [रे] = एक मासि का हरिज ४१४ ४
 ४६५ ७

मासर < जर्जर ८४ २
 माप < मप [रे] = हकना ४५९ ५
 मार < म्माका १ ५ १५ १ ११६ २
 मर < मि (?) = मीन होना मूलना ४ ९ ७
 मरु < मिमुक २० ३
 मर < स्वान २२६ ५ ३७१ ५
 मर < स्वान २५ ३ ४५६ ३ २७६ ५ ४२६ १
 मर < स्वान ३९ १ २११ १ २२४ २
 २१९ ५ २४९ ३ २८५ ७ ३२४ ३
 ३२७ २ ४२८ ३ ५१९ १

मर < मर २७३ ५
 मरुति < मरुतिनी १८६ ४ १९२ ४ ३८७ ५
 मरि < मार [रे] = मागा २१९ ४
 मीठि < मुष्टि २३३ ५
 मीन < मीन [रे] = मोहन ३ ७ ३ ३९४ ४
 मीन < मर [रे] = मर मीन होना ३७४ ३
 मत < मत < मर १७ १ २३८ ४
 मबीन < मामून = मान ५२ ५
 मत < मर २३५ २
 मरुतम < मरुतम २१८ ६
 मरुत < मरुत ३३५ ४
 मरान < मार १३४ २
 मरुतम < मरुतम ८ ४

तम < तम = तमोनिभूत होना ८९ ५
 ३४३ ४ ३९८ ४
 तावरि < ताप = पजर ४७२ ४
 तात्री < तात्री [फा] = मोडा ४४२ ४ ४६० २
 तात < तात < तात २६५ १
 तार < तार = ताड का बुझ ३७ २
 तार < तारक = मकन ५१३ ३
 तात्री < तात्रिय < तात्रिय = पीटा हुआ बडा
 हुमा (?) ७४ २

तिन < तुन ३५८ ३
 तिर < तर < तु = तरना ३४७ ५
 तिरिया तिरि < स्त्री ३३ ५ १
 तिसा < तुपा २२६ ३
 तिसाए < तिसाएय < तुपित ८७ १ ३२ १
 ४४८ ४

तुरित < त्वरित ३९४ ३ ३९९ ३ ४८८ ५
 तुरिय < तुरिय = पाडा ३७८ ३
 तुरि < तुरग = ४४ ४ ५१ २ १७७ ७
 ३७८ ३ ४ ७ ५ ५३६ २

तुर < तुरी = तुखी १९ ३ ७२ ७
 तकार < तुकारिस्तान का बोडा
 १७७ ७ ४६९ ३ ३ ८ ५

ती < तत < तदा = तव २९ ३ ३ ८ ५
 ३११ १ ३५ २ ३५ ७ ३५२ ५
 ३६३ १ ४७५ ४ ४७६ ५ ५१३ ७

ती < ततो < ततम् = हसकि
 वनवार < वाचवाक < स्वानपाक = बानेवार वा
 बीकीवार ३७८ १ ४६१ ३ ४६९ २

वर < स्वान १२ ३
 वाम < वम < स्वम् = निरोध करना रोकना
 ३ ७ ७

वान < स्वान ६९ ३ १ ५ २ २४६ ३
 वार < ताक = वपेट ४६६ ३
 वाह < स्वाव = ५ ५ ३

पिर < स्मिर ३५६ ३
 वर < वर १३ ७ ३ २
 वरव < वर ५७ ३ १५३ ४ ३ १

वरिमरि < वरिमरि-मरित १३५ ५
 ववा < वव = दावागिन २३३ ३ ४ ३ १
 ववार < वव = दावागिन ४१२ ५

वहु < ववा ३८ ७ १ ५ ५ २६६ ३
 वाऊ < वाव = दावागिन ४ २
 वान < वावा = वगूर किममिग-मुनववा
 ४५६ ७

दाहिम < दाधिम = वगूर २८ २

निरित < मृत्यु १४ ३
 निरार < निराह < लकाट ४९ ५
 निरार < निम्मार < निर + गु = बाहर निकलना
 २१ ४ २१६ ५ ३०५ १ ४१ १
 निरार < निम्मार = निवासना ४७४ ३
 निरार < निम्मार १८६ ५
 निरुद्ध < निरुद्ध १८६ ५
 निरुद्ध < निरुद्ध १२२ ३ १ २ ३ २७ २
 निरुद्ध < निरुद्ध १२२ ३ १ २ ३ २७ २
 २७१ ५ ३२६ ५ ३३९ ७ ३६२ १
 ४८५ ५
 निहार < निमार < निभाकम् = वेकना निरीक्षण
 करना ७१ ६ २९४ १ ३५८ ६
 ४७९ ६
 निहार < निहेमन = घर मकान ४४१ २
 निरुद्ध < निरुद्ध [दि] = मुकुटा २९६ ५
 निरुद्ध < निरुद्ध [दि] = निपन्न निवारण
 १६५ २
 नील < निरुद्ध < निरुद्ध = एक पुराना नाने का
 निरुद्ध ३ ४
 नीलुन < निरुद्ध ५७ ७
 नील < निरुद्ध १६ ७
 नेमी < निरुद्ध (१) = निरुद्ध (मगर) का
 अधिकारी (१) ३५९ १
 नेम < निरुद्ध ५३८ ६
 नेर < निरुद्ध [दि] = नील गड़ावर वेकना
 ३९१ २
 नेह < नेह १३ ६ ४१५ ५ ५ ६ १
 ने < नेह ३८४ ५
 नी < नेह २४७ ३
 नी < नेह १८ ४ १९३ १
 पणि < पणि ३३ ६ १८ ४ १९३ १
 ३९४ १ ३५२ ७ ३५३ १ ३५३ ४
 पंचामृत = दूध बही बी मधु ओषध
 का बाल ४८९ ६
 पणि < पणि ४७४ ३
 पवार < पवार = प्रवाल ५४ ६
 पवार < पवार = प्रवाल ३१९ ४
 पवार < प्रवाल = प्रवाल १७४ ५
 पवार < प्रवाल = प्रवाल ५१ ३
 पवार < प्रवाल = प्रवाल ५१ ३
 पवार < प्रवाल (१) = प्रवाल बग्न प्रेमवी
 नाडी ५३ २ ५४ ५ ७४ १ १५३ ७
 ३ ३ २ ४३८ ४ ४३९ ४ ४६२ ३
 ४९१ २ ५३६ ५
 पदुन < महा मगर ४८ २
 पदुन < पदुन < प्र + पदुन = प्रस्थान करना
 प्रथमा ३१५ ६

पछताव < पछताव २१९ ४
 पछिब < पछिब ५२९ ५
 पतार < पाताळ १ १ ६
 पतिय < पतिब < प्रति + ह = प्रतीति करना
 विश्वास करना १६१ ३ १९२ २ ३९३ ६
 पतीब < पतिब < प्रति + ह = प्रतीति करना
 विश्वास करना ३ ६ ५
 पनब < प्रत्यन्ता ८२ ४
 पमारी < प्रमासी ११७ ३ १९६ ३ ३९१ २
 ५१४ २
 पवार < पवार < प्र + पातपु = गिराना फेंकना
 ४७३ ७ ४७४ १ ४२४ १
 पयान < प्रयाण ३७९ ६ ४३ ७ ४३५ १
 ५ ६ २
 पयाब < पाताळ ११९ ७
 परवात < प्रकाय २४ १
 परबा < प्रबा ५३ १
 परवार < परवार < प्र + प्रवाकम् = बहाना
 ३२ ४
 परतिमा < प्रतिमा = साध्य बचन या लक्ष्य
 का निर्देश १९ १
 परत्तर < परत्त = परलोक ५ ३ ५
 परब < परब = स्वाहार ५३२ २
 परमाब < प्र + प्रोपु = बाध करना जान
 देना ३ ८ १
 परवान < प्रमाय १७ २
 परवान < प्रमाय २९८ ६
 परहेल < प्रहेल = बहनेला या विरस्तार करना
 २७८ ७
 परई < पराईब < प्रकायित = मामा हुआ २१६ ४
 पराब < प्रकाय < पर + प्रयु = प्रामा १२ ७
 २१६ ४ २५४ ५ २५७ ५
 परिय < परि + ईलु = परलमा देलना ५ २ २
 परियह < परिधह = अनुचर मृत्यादि १७६ १
 ४३१ ६
 परिछ < परिछ < प्रति + हयु = प्रहण करना
 ३७८ १ ४८७ ३
 परिछाही < प्रतिच्छाया १२२ ३ १२९ २
 १८ २ ४२१ ४ ३७८ ७
 परिछब < परि + छयु = मट्ट करना ४७३ ५
 परेबा < परावत ११६ १
 पराग < प्रवाय ३७६ ४
 पराहण < प्रोहण = मारी का जानवर ३८ ४
 पराज < पराज < पराज = पीछे की बहाना
 से मुक्तिग्रत करना

पातिया < पोतिया < पातिका = धोनी शाही
३३९ ४

पोरि < प्रतली = मत्स्याहार १ २ ५, २ ६ ७
२ ८ ९ ४० १ ५१ १ ५१ ३
५३६ ५

पोनि = हर्षोत्साह के बबसरा पर पुरस्कारदि
पाने वाली आठिया ५४ २ २८६ ४
४४१ ६

पोनेरि < पदम + नयरी ३५६ ४ ५१ ६

प्रगास < प्रकाश १ २

प्रमान < प्रमाण ८९ ६

प्रापति < प्राप्ति = काम २२८ ३

प्रियमी < पुष्पी ११ ४ ३५ ७

फर < फलम < फलक = कड़ वह फलक जिस
पर कुमा बोला जाता है ३१८ ४

फरसा < परमु २७१ ४

फरह < फरहत [फा] = प्रसन्नता आनन्द
४८१ ७

फासी < पाश ४३९ ४ ४८२ २

फार < स्फार = विज्ञात विपुल ३५७ २

फीट < फिट्ट [दि] = टूटना ध्वस्त होना ५३८ ७

फुर < स्फुर = प्रकाशित होना प्रकट होना
१४ ४

फुर < फड़ < फुट = व्यज व्यसल ३३६ ४
३३६ ५ ४५ ७

फार < फुरा [दि] = मिथ्या २९७ ५

बपी < बाग्ब ३७१ ६

बकत < बनि = बोल कथन १ ३ १ ८५

बगान < बगान < व्याख्यातम् = विवरण देना

बर्चन करना बहना ४ १ ५ ६ १२ ७

४ १ ४३७ ४४२ ७३ ६५ ७

७६ ४ २ ९ ६ ३६८ ७ ३८६ ४

३ ८ १

बबभित < व्याघ + बिभक ६६५ २ ४६६ ४

बबा < बबल < बबल = बबल १०८ ५

१३ १

बज < बज < बज २३ ३ १६३ ७

बना < बगन < बगु = बांधना फैलाया ६ ६

पगाय < बगपु = बंधना ३७१ २

बगई वराध < बडावध < बर्षापाय = ज्ञानवात्मक

अभ्युदय या ज्ञानमूर्ध्न बाध ज्ञानाहार

४ २ ५२१ ५३ १ ५४ ४ ५५ ७

६ ५ ७७ २ ७६८ ७ ७७८ २

७७ ७ ७८६ ७ ७८७ १ ३३७ ७

३३७ ५ ३९१ ३ ४२२ १ ४१ २

४३९ ३ ४६२ २ ४८८ ४ ४८९ २

यनावरि < नासावली ८४ १

बनिग्ज < बाधिग्ज ३२१ ६

बपुग < बण्ड [दि] = बेधारा बीज अनुसूची

३ ३ ८६५ ११६ ७

बर < बल्लु = जलमा २९ ४ २१४ ४

२७ ४ ३८१ ५

बर < बल ३१४ ३ ५ ३ १

बर < बू = बरव करना बुला ४३५ ६

बरल < बल २६२ ७ ४११ ५

बरबल < बल + बल २३५ १

बरियाई < बलाई ४१५ ५

बरियाव < बरयाव = बाराव ४४२ ६

बब < बरनु = बसिक ५२५ ३

बलमा < बलम = बलन बुझी १३६ २

बब < बपु = बोना ३४४ २

बसनी < बसति २७७ ५

बसह < बसह < बसम = बल ४५५ ७ ४५६ ६

बहुर < बाहु [दि] = बापस आना ४ ७ ६

पाउ < बायु ८ ३

बाउर < बाउल < बाउल = बावला बावल

३५ १ ३५१ ५ ३५२ ४ ३५३ २

३५५ २ ३९२ ३ ४६८ ७ ४७ ४

५२१ ५

पाश < बक < बक ८३ ७ २ १ २ ३२ १

बाभन < बाहगन ६४ ३

बाभुर < बाभुरा = बाभुरा की फौजाने का फौज

४६५ ३ ४६५ ५

बाबा < बल्ल < बल्लु = बलन १२८ ६

बाबन < बाघ ५३३ ५

बाभ < बपु = बंधना फैला १ ७ २ ३६२ ४

बाभ < बगु = बंधना फैला २ ६ १६ ५

बाभु < बगु < बगु = बिना २ ६ १६ ५

३६ ३ ९८ २ १३३ ५ १४९ २

१४९ ५ १५७ ५ १७ ५ २४६ ७

३२७ ४ ४११ ३ ४११ ६

गाट < बट < बर्षातु = मार्ग ७८ ७ ४२७ ३

४३२ १

वात < बला < बाला ६३५ १५७ ५ १२२ ६

७ ५ १ ७४१ ५ ७४३ १ २४७ १

७४ १ ७८८ ७ ७९ १ २९ ४

२९१ १ १०४ १ ७ ४ ७७७ ५

२९८ १ ७९ १ ३ १ ५ ३ २ २

३ ५७ ३३१ ३ ३४ ७ ३६६ ३

३६८ ३ ३६ १ ३७७ ३ ३९१ ३

विसाय < विपाय = विपय वन जाना ५ ५ ४
 विसार < विपायत = विपेसा ४६६ १
 विमूर < विमूर [दि] = खोल करला ४ ९ १
 ४१४ ६
 विमुरा < विमुरा [दि] = खोल पीड़ा १८३ २
 विसेक < विसेक < वि + सपम् = विशेषण से
 सम्बन्ध करता २१६ ३ २२५ ४ ४२९ ७
 विहर < विहर < वि + धृ = लस्य होना दृष्टना
 फलना ८१ ३ २३९ ४ २८२ १
 ३६८ ५ ३९९ १ ४२४ ५
 विहा < वि + हा = परित्याग करना वितामा
 २०६ ४ ५ ३
 बीसु < बुरिचक = बिच्छू ३५१ २
 बीज < बिभृ २२९ ५ २२९ ७ ४८१ १
 बीरि < बीर्य [दि] = ताटक कर्मावरण विधेय
 ९१ १
 बुध < बिन्दु १३३ ४ ४ ५ १
 बुम < बुम्भ < बुम्भ = जानना जान करला
 समझना ४२ ४
 बुध < बुध < बुध = दुबला ३५८ ३
 बकार < बिकार ११९ ४ ११९ ७
 बेगरा < बि + ह = द्विषा करना असम करना
 ३४५ २ ३८८ ४ ५२९ ३
 बेर < बैला = समय बेरी १९० २ ३९५ ७
 बरत < बिकम्प = विस्मय करना ९२ ३
 बरा < मल्ल [दि] = लोका ४७६ ६
 बेरा < बैला = समय २३९ ४
 बेरास < बिबास ६३ २ १२ ३ ४९५ १
 बेलि < बल्लरी ३३५ ७
 बेबहार < ब्यबहार ३१ ७ १६ ६ २९९ ६
 ३०१ २ ३ ३ ५ ३४१ २
 ३६५ २
 बेवान < बिमान ४६८ ५ ४७० ७
 बेसाग < बेसर = अश्वतर लम्बर ४४ ४
 बेगाह < बिगाह < बि + गाह = माल लेना
 १६६ ६
 पैसार < पैसाक १८८ ६
 बैन < बयन < बयन १९३ ७ २९९ १
 ३९९ १ ३६७ १
 बैम < बयम् = बयसा ५९२ १७ ३ ३३५ १
 बोर < बोडपु = बडोना ३११ ६ ३५ ५
 बोडिन < बोडिन [दि] = प्रवहण जहाज
 १७ ७ १७६ ७ १७७ १
 बोरा < बागुम्पा = बागमान १८२ १
 पोरी < बाउमी < बागुमी ३०५ ७ ३ ६ ३

बीमाह बीसाउ < ब्यबसाय = पुरपाय २५ ३
 २५ ३ २९१ ६ ३९७ ३ ३७२ ७
 ३९ ३
 ब्याब < ब्याब = बहकिया ३५९ २
 बख < बख २६३ ६
 बमीछन < बिभीषण ५११ ७
 बभुति < बिभुति = राक २६१ ६ ३ १ ६
 ३९९ ७
 बल < बल्ल = बाला २६१ ४
 बलया < बल ४१ ४
 बब < बम्भ = लककर लम्पना १९२ ४
 २ ६ ६ २७५ २
 भाव भावि < भाव १ ६ ४ २ २ १
 बाठी < भट्टिका < भाट्टिका = मट्टी १११ ७
 भाय < भाव १३३ ३
 भाब < भाम्भ (?) = पसह होना उचित
 जान पडना २५५ २
 भीति < भिति = बीबास ४९१ २
 भुज भुजा < भुज भुजा १ ७ ९९ ३
 १८७ ५ २६२ ५ २९६ ६ २६७ २
 २७२ २ २८१ ३ ४८३ १ ४८३ २
 २१२ ७ ५६२ ७
 भुर < भूमि १९८ १ ४७८ ४
 भुपुति < भुपुति = मोहन ३५४ ४ ४६३ १
 भुवार भुवाल < भुवाल < भुपाल ४८ २
 १ ७५, २५ २ ३६१ २ ३४१ ६
 ४१ ७ ४३९ २ ४६ १ ५१७ २
 ५३३ ७
 भूज < भुभुजा = लुबा ३५४ ६
 भूज < भुम्भ = मोप करला १ १ ३१४ ५
 ५१२ २ ५१२ ७
 भेर < भय १५१ ३
 भस < भय २२२ ५ २८ ३ ३६२ २
 भौरी < भमरी = भेरे लपान का भाई १ २ १
 भौह < भू ४८ १
 भौ < भय २२१ ५ ४४७ ६ ५३८ ६
 भंछ < भच्छ < भस्म ४४ ५
 भंजुर < भपूर २ ४ १ ३९१ ५
 भंत < भंय = बिहार १ २ १५ ४ १७ ४
 ४३३ १ ६८१ ७ ६९५ ४ ४९५ ५
 भति < भतिन् २ २ १
 भविष्य < भविष्य = भवन ४६९ ५
 भण-जण < भाग-जण १७७ ६
 भन्क < भुम्भ ८ १ ६ ३
 भनन < भन्ता = जगत् [दार्ढी] २१ ५

मर्द < मात ५३ ४
 मर्ष < मुकाङ्क = पङ्कमा ८१४ ८१८ ८७२
 मरुत < मरुत ४४ ६
 मया < माया (?) = ममता ३५७ ६
 मयान < मयान १८६ ७
 मनिवार < मयात [क्रा] = ५३२ ७
 मरुत मरुता < महामारुत १९५ ६ ४५५ १
 ५३२ १ ५३२ ३ ५३६ १ ५३६ ४
 मरिच < महीनल १२१ ६
 महिष < महिष = [जबरी] भीता ४३४ ६
 मा < भेदना गुणि हाना ८४५ २
 मांदि < मुलित ११३ ५ ११३ ७ ११७ २
 माडी < मलय ८८६ ३ ८९ ७
 मान माता < मत्त ६६ १ १ १ ५ ३४७ ३
 ३५६ १ ४१६ ४
 माघ < मग्न ८५३ ६ ८५४ ७ ४५७ ५
 १७ ५ ५१८ ७
 माघन < मरुत < मईल = मुरज मुरम २७९ ७
 माग < मर्ष ३४ २
 मानुस < मानप १८ ३ ३६९ ४
 मारी < मातित १७३ २ ३८३ ५
 मान < मादेय [क्रा] = मरुमरी १९१ १
 मारुतारी < मादेतारी = एक प्रकार की मानिप-
 माडी ४४२ १
 मांदि < मय ४६७ ३
 मितु < मित = बहाना छल ध्याज २ ५ ५
 मीच < मृत १७७ २३४२ २६३ ३ ५३८ १
 मीन < मित ९१
 मुर < मुर १ ८ ७
 मुर < मुर = छाटना १२५ १
 मुरी < मुदिता १३६ १ १८८ ३ २२७ ३
 ३ ६ ६ ३ ८ ५ ३४ ७
 मुकुताह < मुकुताह = मोती ३६३ ४ ४४२ ५
 मुर < मुर = मुरी ६७ ७ १३९ ३ १९१ ६
 २७८ ३
 मुर < मुर = चारी करना २६३ ४
 मरु < मरुत < मेलन = मिमाता ३७३ ७
 ६ १६
 मेराय मराय < मेराय < मेल = मिमाय मिमन
 १ ५५ १ ८१ ७९९ २ २ ६ ३
 ३६८ ५७९ ७
 माग < माता १६६ ७ ७६ ५ ७८८ १
 २१७ ५ ३ ५ ३ ७
 मांदि < मुनिम < मो माय = मांदि ३७६ ४
 मांदि < मुर = माता मुरा करना ६ ७ ५

मीर मील < मरुत < मुमुलय = मुकुलित हाना
 २७ ४ ३९७ ३ ४१ ६
 रवतार < रवतार ४८४ ७
 रगत < रक्त ८७ १ १ ४७ २१२ १ २१८ १
 २१९ १ ३२ १ ३४६ २ ३७४ ७
 ४१५ ६ ४२३ ७
 रवाणु < रावाण १९९ २
 रती < रतिता = मुमुषी ३१६ १
 रन < मरुष ३५५ ४
 रवि-रवि = सूर्य तथा चंद्र भवता विमला बीर
 इडा मांदि ४७६ ३
 रर < रर < रर = राना विमला १७१ ७
 १८२ ३ २ ३ २
 रवन < रवण = प्रिय १९८ ५ ४ २४ ४ ५५
 रविन < रवणी ४८६ २
 रण < रण = बसना भाषा करना ९ ५
 रसार < रसात १ १ ७ १ ९ ६ ४२८ ३
 ४२८ ४
 रहन < रवण = हण मुर ५५ ४ ६ ४
 ८२१ १३६ ५ १५ २ १५ ६
 १९८७ २ ७ २ १ ६ २ ४ १
 २५३ ४ २७ ५ २८३ ३ २८४ ४
 ३५३ ३ ३५८ १ ६७७ ६
 रांक < ररु = बरीय दीन ११९ ५ ३५७ ५
 रांक < रांक = राका बना हुआ तीमार ६३९ ५
 राकन < राकन १ २ १ २ ९ ३ ३६९ ५
 राक < ररु < ररु = कामना होना अनुयाय
 करना १९१ ४
 रान < रान = अनुयाय ३७ ३ ११६ ४
 १३१ ३ १५८ १ १८९ ६ १ १ ५
 २४५ ४ २६५ ७ २८९ २ २९ २
 २९९ २ ३९९ ३ ३ ७ २ ३४२ ४
 ३७३ १ ४१४ १
 राण < रान = काम रजित ८३ १ ९७ ५
 १४४ ४ २३९ ४ २९९ १ २८७ ५
 २९१ १ ११५ ४६२ ३ ४ १ २
 राती < रती < रतिता = रवणी ८१७ ४२३ ७
 राय < राय < राय = विमला १८३ ६ ५ ९६
 राय < राय = गुणा गुणा भाषा करना
 ५९ ३ ३३७ ५ ३७६ १ ३८५ १
 ३८६ ५ ३ ७६ ६ ३ ६३७ ६
 ४३७ ७ ४३८ १ ४३८ ३ ४३८ ५
 ४३८ १ ४६८ १ ५ १ १
 रायन < रवण = प्रिय ४८६ २

दहिर < दहिर ८४ ३ १८ १ २५९ ५
२७१ १ ३४८ २ ३६७ १ ४०९ ३
४८ ५

कपल < कपल < कपल ० १ ४ ३५४ ७ ३७४ ४
रूप < रूप = बोली ४५९ ४

रसा < रस २६३ ४

रि < रयणी < रयणी = रात ४७ १ ७ ४

७८ १ १४३ ४ १८९ १ १९४ १

२११ ४ २२२ ४ २२७ २ २३९ ७

२४ २ २९८ १ २७९ ३ ३९८ २

३६ २ ३८४ ७ ४ ४ २ ४ ७ १

४५२ १ ४५८ ७ ४ ७ १ ४५७ १

४५२ ७ ४६३ २ ४६२ ५ ४६३ १

५ २ २ ५३५ ४

रोम < रोम = नीलगाय ४६४ ४ ४६६ २

रार < रोम < रम = कामाहक १५३ ६ १९७ ७

रोम < रोम < रम = कामाहक १५४ ४

सारी < सकुटि = सक्ती ४५४ ६

समान < समम २४४ ६

समान < समम ५१ ४ ३५६ ६

समराज < समलाराम < समाराम = एक भाग

बुझा का भाग ७३ ३ १ ६ १

१ ८ ४ ४६७ ६

समुन = एक जाति का हरिण ४६४ ४

समन < समम ४९ २

सम < सम = कहना ३५२ २ ४१२ १

७३ < सम = प्राप्त करना ३१२ ३

सह < सम < [रे] = सकुलत हाना पसकित

हाना १२४ २

साकि < सकि [रे] = समुहार, सुमान ४ १ ६

साह < साम ५२ १ ४२ १ १४३ ३ १६ ४

२३५ ३ ३ ७ ३६२ ५ ३६४ २

किपित < कित ४२७ ४

किमार < निमाड < कमाट ६३ ६ ८१ १

१ ३ ३ १३६ ५ २४ २ ३६५ ७

३६७ ७ ४५१ ३ ५२७ ४

सीक < सगा = देना १३६ ६ ३९८ १ ५१८ ५

रुफ < वरु = छिपना ४३७ ७

रु < रुव = व्याप्त ११ ३

साह < साह = सीप ३८ ५ ४२ ४

सीक भजन < सीक भजन = एक प्रकार का

भजन भजन के संगीत से संगीत की बहुमुख

गति प्राप्त होती जाती है १ २ २

साह < साह १३७ ६ ४८८ ६ ५ ८ ३

५१४ १ ५१४ ६

सीमाई < सावध ४८१ ४
सीमाई < सीमाई = नेत्र ८९ ५ १ ५ ६
१ ६ ६ १११ २ १५५ ४ १५७ ५
२ १ २ २१८ ४ २२६ ६ २२९ ३
२२९ ६ ३२५ ७ ३२७ ३ ४ ३ २
१ ४ ७ ४४८ ४ ४८१ ७ ५२३ १

सीमा [रे] = सीमा ५२२ ६

सीमा < सीमाई = सीमाई ४४ ६

सीमा < सीमाई < सीमाई = सीमा २१७ ५

सीमा < सीमा = सीमा १५ ५ १७ १

सीमा < सीमा = सीमा १९ २ १९ ४ ३२ १ ३३ ३

१७४ ३ १७४ ७ १८१ ६

सीमा < सीमा = सीमा ३७८ ५ ४५५ २

सीमा < सीमा = सीमा ११ ५ ११८ ७ १५ ३ २२१ ३

२९७ ६ ३३७ ५ ३३८ ५ ३४१ ४

४१७ ४ ४२६ ६ ४६ १ ४८२ १

४८३ २

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा करना

सीमा ११४ १

सीमा < सीमा [रे] = सीमा ३२५ ६

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा

३२३ ४ ४३१ २

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा करना सीमा

३ ६

सीमा < सीमा (?) = सीमा (?) ९४ ७

सीमा < सीमा = सीमा २४१ ६

२५ ७ २५१ ३ २६ ७ २ ३ २

३२७ १ ३३६ ६ ३४३ २ ४१६ २

४३३ ३ ४९७ ७ ५ ७ २ ५११ ३

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा गति करना

४३४ ६

सीमा < सीमा ४४ ४

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा

याव करना २७२ २ ४२३ ५ ४३७ ३

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा करना १५५ ५

२२८ ७ ४२६ १ ५ ५ ३

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा ४६२ ५

सीमा < सीमा ४२२ ६

सीमा < सीमा १८ ३ १९७ ७ २२७ ३

३५३ ४ ५ २ ३ ५१५ १ ५३३ १

सीमा < सीमा < सीमा = सीमा २४७ १

सीमा < सीमा ४४ २

मन्त्र < मन्त्र ५१ ०

मन्त्र < मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रियद्वारा ४२५ १

मन्त्र < मन्त्र १०३ ६, १०३ ७ ८ ७
०९ १ ० ७ ७ ३०६ १ ३३१ ३
३३ ६ ३६६ ३ ३३८ ०

मन्त्र < मन्त्र १ १ १ १ ३ ३ १०८ ६
१० ७ १३१ १ २६० १ ५ ३
२ ७ ७ २ ८ १, २९९ ३ ३ ८ १
१०० ५, ३३१ १ ३३१ ४ ३३ १
३६६ ३ ३६६ ४ ३६३ ०

मन्त्री < मन्त्र ३१ ४

मन्त्र < मन्त्रिय ४६५ १

मन्त्र < मन्त्र + मन्त्र = मन्त्र हन्ता ८८ १
११५ ० १ १ ४ १ ३ ६
३३३ ३ ३ ८ ६

मन्त्र < मन्त्र २ ३ ६

मन्त्र < मन्त्र ५ ३ ११३ १

मन्त्र < मन्त्र १५६ १ ८ ३ ३ १
३३३ ३ ८ ५ ३

मन्त्र < मन्त्र = मन्त्र ३३१ ६
मन्त्र < मन्त्र = मन्त्र ५/५
१८६ १ १० ८ ३ ३ ८ ३
४३८ ०

मन्त्र < मन्त्र ५३८ ७

मन्त्र < मन्त्रिय [दि] = मन्त्रिय मन्त्रिय
७३ ६

मन्त्रिय [जा] = मन्त्रिय मन्त्रिय ४३० ०

मन्त्र < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय मन्त्रिय
मन्त्रिय का मन्त्रिय मन्त्रिय हा मन्त्रिय
१० ५, ३५६ ५

मन्त्र < मन्त्र = मन्त्र १ ३ ७ १० ६
१०८ ६ २६६ ० ३ ३ ६ ३२६ ६
३३८ ६ ३५१ ५, ३८ १ ८८१ ५
४११ ३ ५३८ १

मन्त्र < मन्त्र १३६ ६

मन्त्रिय = मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्रिय मन्त्रिय ८५ ३ ८५ ५, ८५ ३

मन्त्रिय = मन्त्रिय ११ ३ ७० ६

मन्त्रिय = मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय ३३१ ६

मन्त्र < मन्त्र ३३६ १ ८८८ १

मन्त्र < मन्त्र = मन्त्र मन्त्र मन्त्र ८६५ ३

मन्त्र < मन्त्र = मन्त्र ८८३ ३ ८८८ ६

मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय ४६४ ४

मन्त्रिय < मन्त्र ३० ० ८८६ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय ४१ ५ ४३० ६ ४३५ ५
७ १ ५ ४ १ २१ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय ४६६ ४ ४६५ ४

मन्त्रिय < मन्त्रिय ८६६ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय < मन्त्रिय १६९ ७ ६ ८ ६

मन्त्रिय < मन्त्रिय १६ १

मन्त्रिय < मन्त्रिय ५ १ ७३३ ४

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय मन्त्रिय ४ ५
८३ ५ ३६ ३ ३ १ ६ ८५ ५

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय १ ६ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय < मन्त्रिय ३ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय ३ ३ ६ ३ ३ ५

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय मन्त्रिय
५८ ५ १ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय मन्त्रिय
१२ ३ ३ ६ ६

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय १ ६ ६

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय ०

मन्त्रिय < मन्त्रिय ३ १ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय = ६

मन्त्रिय < मन्त्रिय ३ ६ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय / मन्त्रिय ३६ ५ ५ ६
३ ३ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय / मन्त्रिय ३ ६

मन्त्रिय < मन्त्रिय < मन्त्रिय ६ ६ ३ ६ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय ६ १ ३

मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय मन्त्रिय मन्त्रिय ३ ३
८१६ ७

मन्त्रिय < मन्त्रिय मन्त्रिय ३ ३ १
३ ३ ३

मन्त्रिय < मन्त्र ९८ ३ ८३१ ३ ५३ ३
मीउ < मन्त्र ६ ६ १

मीउ < मन्त्र < मन्त्र ८८ ६ ३ ३
३५० ६

मीउ < मन्त्र ५३ ३ ६ ३ ६
६१२ ४ ६६३ १ ८५५ ३

मीउ < मन्त्रिय < मन्त्रिय = मन्त्रिय ३ ६ ६
४६ ५

मीउ < मन्त्रिय ९५ ३

मीउ < मन्त्र १ ० १ १ २

मन्त्रिय < मन्त्रिय ० ५ १

गामा < मुक की भाँति सवेहापुर होना ३३६ २
गुमान < गुमान = बानी १ ७ १६५ २
३ ३ १ १८१ ७

गुमर < गुम्मा < गुद = निर्मल ११ १ १६ ४
४८२ ३ ४८६ ५, ४९५ २ ५३६ ७
गुदि गुदि < गुदि = मानसिक बेचना ३३ १
३६ ५, ४०२ ७ ४९० ३

गुमर < गुम २११ ३
गुमर = मरपुर सपना ५३९ १
गुर < स्वर ३८७ १
गुरत = स्त्री-ममता १६२ २
गुरहिनि < गुराकता [?] १३५ ३ ४० २
४३८ २

गुबना < गुब < गुक २१६ १
गुहिन < स्वप्न १६ २
गुहिन < गुहय = मित्र ३७७ १
गुता < गुज २९४ ४
गुता < गुहित ८३ १
गुर < गुप ११ ७ ३ ७२ ६ १५३ १
७ ६ ३६३ २ ४९२ ७ ४९५ २
७ ६ ३६३ २ ४९२ ७ ४९५ २

गुबल < गारमली १६ ५
गेत < गाम = गाव ४०४ ७ ४३४ २, ४४० ७
४५९ ७

मेव < मय्या ६५ १ १३५ ५ १८३ २ ३ ८४
३१२ ४ ३३४ १ ३५३ ७ ४ ३ १
४११ २ ४१२ ४ ४४० ५, ४९३ १

मेव < मेव ८३ १ ९७ ५, ४१९ १
मेवूर < घाईल = गरम १ २ १८१ २
मेवादी < स्वादी ३१८ ३ ३४२ ६
मी < मत = मी ५ ७ ७
मी < गम = माय ४३१ ३

मीन < गमन = घम्या ७ ५ ७३ ६ १ ३
१३८ ७ ३३४ ३ ४४० ४ ४५२ १
४६२ ५ ४ १ ३

मीन < मकेज २ ८ ७
मानहा < दान ४९५ २ ४६६ ४
गात्राय < गीमाय २/ ६ ३५५ ७ ५१३ ५

५१३ ७ १२५ ४
गोहिल < गोहिल < गोमान = गुहावना
४९५ १

गौमुक < गौ + प्रयस [?] = अतिप्रय प्रत्यस
१४ ७ १४१ १ १४० ७ १४८ १
१४८ २, १४८ ३ १४८ ५, २२५ ४
२२५ ५, २२५ ६ २२५ ७ ३४६ २

गौह < गौह < सम्मुख १ ४ ६ ३२५ ३
४४९ २ ४०९ ६

गौत < गौली ५ ४ ५
हंकार < गहकार ३५२ २

हंकार < हंकार < मा + कारम् = पुकारना
आज्ञान करना ४८५ ६

हर < मर = मारी ४५ ६

हरल < हर ४९६ १

हरिय हरियर < हरिम < हरिण = हरा ३४४ ७
३५७ २ ४११ १ ४११ ५

हरब < हरक < तमुक = हरका मोछा ३ ७
३५२ १

हाट < हट [दि] = बापक याबार १९ ३
२८ ६ ७८ २

हिय हिमा < हरय २७१ ६ ३२८ ३ ३५५ ४
३७५ ४ ४४० ६ ५२२ ६ ५०३ ७

हिमारी < हरपाकता = सीहारे ३ १ ३ ३ ३ ४
३ ४ ३ ४ ५

हिकार < हिस्सोस = समुद्र की लहर २२ ५
१३३ ४ २१७ २ २१८ २

हुकम < उस्सम् उक्कास मुक होना १३१ ७
हुकाव < उस्साव ३५ ६ ५५ ४ १३६ २

१३४ ५, २ ३ ५ ७ ४ १ २३५ ६
२५४ १ २७८ २ ३६३ ४५९ ७
४८९ ३

हठ < हेदुठ < अगम् < नीचे ३६ ५ २४८ २

हल < हिल < प्रम १११ ७

हुर [दि] < देवता गिरिलन करना ७७ १

होरी < हायिका ३ ९ ५ ६ १

